पुस्तक-जगत्‌का प्रथम पुष्प—

अगस्त-क्रान्ति

(सम्पूर्ण भारतवर्षकी पृष्ठभूमिमें विहारकी अगस्त-क्रान्तिका विस्तृत और प्रमाणिक इतिहास)

लेखक

प्रोफेसर वलदेव नारायण, विहार विद्यापीठ

भूमिका लेखक

डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद
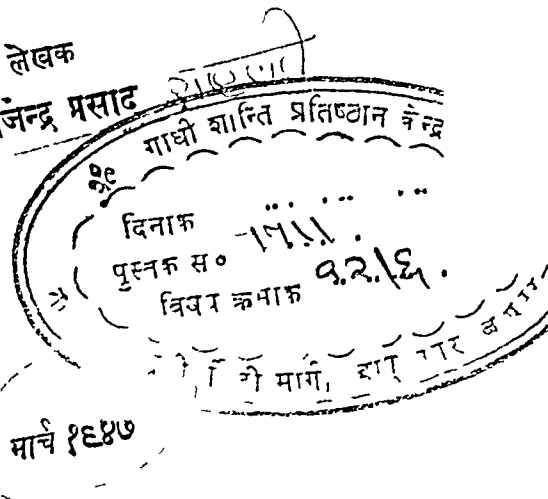
गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र
दिनांक
पुस्तक सं०
विषय क्रमांक

मार्च १९४७

पुस्तक-जगत्
पटना

लेखक परिचय

बलदेव बाबूको मैंने पहली बार तरवारामें देखा था।

तरवारा दरभगा जिलेका एक गांव है। लहेरियासरायसे लगभग २० मील दूर। वहां विहार विद्यापीठकी शाखा है। शायद 'थी' कहना अधिक ठीक होगा। इस गांवके आसपास गरीब किसानों और पिछड़ी हुई जातियोंकी बस्ती है। जमीन बहुत उपजाऊ है परन्तु जितनी उपजकी उससे आशाकी जा सकती है उतनी उपज होती नहीं। हमलोगोंने रास्तेमें जली ऊखके खेत देखे थे जो किसानोंकी परवशताके 'ज्वलन्त' उदाहरण थे। तरवाराके आसपास मुसहर नामक पिछड़ी हुई जातियोकी बस्ती है। इनलोगोंकी दारुण दीनता कहकर नहीं समझाई जा सकती। इसी गरीबीके गढ़में बलदेव बाबूके दर्शन हुए। विज्ञापनकी दुनियासे इस गांवका दूरका भी संबंध नहीं है। इस दुःख दरिद्रताके वातावरणमें बलदेव बाबूकी सौम्य-मनोहर मूर्ति दिखी। ऐसा जान पड़ा कि इस निराशा और पस्त हिम्मतीके खंडहरके दरारोंको भेदकर एक मनोहर पुष्प खिला है जो अपनी सौम्य कान्तिसे घोषणा कर रहा है कि जीवनीशक्ति अब भी बाकी है। आशाका कण खो नहीं गया है।

इतना विनयी स्वभाव और इतनी तीक्ष्ण दृष्टिशक्ति एक ही स्थानपर कम देखनेको मिलती है। बलदेव बाबू गरीबोंका सामयिक उपचार करनेवाले जन-सेवक नहीं हैं। उन्होंने मनुष्यको उसके समूची ऐतिहासिक विकास परम्पराके भीतरसे देखनेकी दृष्टि पाई है। मुसहरोंका उन्होंने गहरा अध्ययन किया है। वे जानते हैं कि मनुष्यके पीछे जो हजारो वर्षका इतिहास है वह 'व्यक्ति' के औद्धत्यका प्रतिवाद है और साथ ही निर्विशेष 'मनुष्य' की दुर्दम विजय-यात्राका प्रमाण है। इसीलिये उनके स्वभावमें विनय है, हृदयमें आशा है और सामयिक दुःखसे अभिभूत न होनेकी शक्ति है। मैं उन्हें जितना ही अधिक देखता और पहचानता गया हूँ उतना ही अधिक प्रभावित होता गया हूँ। चरित्रबलकी उत्तम कसौटी भी शायद यही है।

दूसरी बार जब बलदेवबाबूको देखनेका मौका मिला [illegible]

विद्यापीठकी वह शाखा उजाड़ बना दी गई थी, निर्मम तपस्वीका वह आश्रम नष्टकर दिया गया था, परिश्रमपूर्वक लगाए हुए वृक्ष-लता-गुल्म भी प्रतिशोधकी बलि चढ़ा दिये गए थे, वे 'परिव्राजक' हो गए थे। उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, फिर भी वे इस गांवसे उस गांव घूम रहे थे और न जाने किस अपूर्व शक्तिके बलपर काम करते जा रहे थे। उनमें न कहीं निराशा थी, न थकान थी, न उतराकर बहनेवाली गर्वभावना थी। वे जैसे पहले थे वैसे ही तब भी थे। उतने ही शान्त, उतने ही सौम्य, उतने ही तीक्ष्णदृक्! मैं सोचकर समझ नहीं पा रहा था कि वह कौन सा उत्साहका अक्षयस्रोत है जहांसे शान्ति अपना रस खींचती है। मेरे मनमें बराबर यह प्रश्न उठता रहा कि तरवाराके सेवक और विदेशी सत्ताको उलट देनेका प्रयत्न करनेवाले इन दो पुरुषोंमें सामंजस्य कहां है? परन्तु सामंजस्य है। बलदेवबाबू मूलत जनसेवक है। परन्तु वे सेवा-मार्गके अन्तरायोंको समझते हैं। वे फूंकसे बिजली बत्तीके बुझानेकी बालिशताको समझते हैं। वे दुःख-दारिद्र्यकी गहराईमें पैठ सकते हैं। वे जानते हैं कि सेवामार्गके अनेक विघ्न इस विदेशी शासनके आधारपर ही टिके है। उस मजबूत आधारको ही अगर नहीं हटा दिया जाता तो वे किसी न किसी रूपमें सिर उठाते ही रहेंगे।

जिस समय चारों ओर पराजयका भूत आतंक फैलाए हुए था, बलदेवबाबू पूर्ण शान्त और विश्वासी बने हुए थे। तूफानमें जो न हिले उसीकी जड़ मजबूत समझी जानी चाहिए।

बलदेवबाबूको एक तीसरे रूपमें भी देखनेका अवसर मिला। इस समय भी वे गांव-गांव घूम रहे थे। इसबार वे लड़नेवालोंके दलमें नहीं थे। वे लड़नेवालोंका इतिहास लिख रहे थे। इतिहास किसी कीर्ति-कथाका नाम नहीं है। इतिहास-लेखक महाकालकी गतिका हिसाब रखता है। मनुष्यने अपनी विजय-यात्राके लिये कौन-सा मार्ग चुना है, उसपर वह कितना अग्रसर हुआ है और कितना पीछे हटा है, इसकी जांच करता है। व्यक्ति और घटनायें उसी महाकालकी गतिके पदचिह्न हैं। इसीलिये इतिहास-लेखकको निर्मम होना पडता है, निरपेक्ष होना पड़ता है। यह समझना ठीक नहीं है कि वह केवल ब्योरा पेश करनेका ही काम करता है। इतिहास लेखक उससे बड़ा काम करता है। वह भविष्यकी दिशा बताता है। महाकालकी गतिको ठीक समझे बिना भविष्यकी ओर संकेत नहीं किया जा सकता। यदि इतिहास-लेखक मनुष्यको उसकी महिमाकी ओर उद्बुद्ध नहीं करता तो वह अपना कर्तव्य ठीक-ठीक नहीं निभाता। बलदेवबाबूमें भीतर प्रवेश करनेकी शक्ति है और मनुष्यके महान् भविष्यपर विश्वास है। इसी लिये उनका यह रूप मुझे बहुत प्रीतिकर मालूम हुआ।

बलदेवबाबूको अपने मित्रके रूपमें पाना सौभाग्यकी बात है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी भवन, शान्तिनिकेतन।

भूमिका

इस पुस्तकके लिखनेमें श्रीबलदेव नारायणने बहुत परिश्रम किया है। जिस समय वह इसके लिए मसाला जमा कर रहे थे मुझसे जब तब बातें किया करते थे। घटनाओंके सम्बन्धमें जिनका जिक्र पुस्तकमें आया है उन्होंने काफी सावधानी और छान बीनसे काम लिया है। यद्यपि मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने सारी पुस्तक इस दृष्टिसे पढ़ी है कि इसमें लिखित घटनायें और विचार कहाँ तक सर्व मान्य होंगी तो भी मैं इतना जो जानता हूँ कि इसे एक ऐसे व्यक्तिने लिखी है जो स्वयं बहुत कुछ जानकारी रखता है और उससे भी ज्यादा ऐसे लोगोंसे उसका सम्पर्क रहा है जो बहुत कुछ जानते हैं। इसलिए पुस्तकका महत्व और बहुत हदतक प्रमाणिकता मानी जा सकती है।

सदाकत आश्रम, पटना
३-३-४७

राजेन्द्र प्रसाद

प्रकाशकके दो शब्द

अगस्त-क्रान्तिको लेकर पाठकोंके समक्ष आज उपस्थित होते हुए हमे अतीव प्रसन्नता हो रही है। पुस्तक-जगत्का यह प्रथम पुष्प है। हमने इसको बनाने और सजानेकी पूरी चेष्टा की है, परन्तु फिर भी पूर्ण रूपेण यह हमारी कल्पनाका आदर्श नहीं बन सका। क्या करे हम सब अभाव और कठिनाईके युगमें पल रहे हैं।

इसके निकालनेमे काफी देरी हुई, इसके लिये भी क्षमा मांग ले। सबसे बड़ी दिक्कत जो हमें महसूस हुई, वह थी प्रेसकी। दूसरी कि पुस्तक अनुमानसे डेढ़ गुनी निकली। हमने सूचित किया था कि पुस्तक लगभग ४०० पृष्ठोंमें आ जायेगी, परन्तु पुस्तक पूरी हुई सवा पांच सौ पृष्ठोंमे। तदनुसार मजबूरन इसका मूल्य भी ८) रु० से १०) रु० बढ़ाना पड़ा। अतः पाठक क्षमा करेंगे।

जिन साथियोंने इसके प्रकाशनमें बेहद सहायता पहुँचायी है, उन्हें बिना धन्यवाद दिये यह 'दो शब्द' अधूरा ही रहेगा। सबसे प्रथम मा० अनुग्रहबाबूके प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापन करते है जिन्होने शीघ्र ही सरकारी आज्ञा और कागजका प्रबन्धकर दिया। हमें पूरी आशा है कि उनकी स्नेह-छाया सर्वदा हमे मिलती रहेगी। इसके बाद धन्यवादके पात्र हैं साथी शिल्पी उपेन्द्र महारथी, जिन्होने चित्रोंकी छपाईमें बड़ी मदद पहुँचायी है। साथ ही भाई दिनेश बख्शीके भी हम हृदयसे आभारी हैं जिन्होने बड़ी दिलचस्पी और परिश्रमसे पुस्तकका मुख्य पृष्ठ और बिहारका मानचित्र तैयार किया है।

अपने भविष्यके प्रकाशनके सम्बन्धमें भी दो बात कह लें। हमारा इरादा है कि हिन्दी साहित्यमे जीवन निर्माणकारी और कल्याणकारी साहित्य दें। अतः हम इस महान् कार्यमे पाठकोंका सहयोग और उत्साह चाहते हैं।

पटना
रंगभरी एकादशी

भोलानाथ 'विमल'
शुकदेव नारायण

अपनी ओरसे

बिहारकी अगस्त-क्रान्ति आखिर प्रकाशित हो गयी। बड़ी देर लगी। फिर भी इस किताबके पन्ने-पन्नेमें जल्दबाजीके धब्बे लगे हैं। देर और जल्दबाजीका गठबन्धन कैसे हो गया—कौन बताय? प्रसंग अरुचिकर है और निरुपयोगी भी। अच्छा है चुपचाप आलोचनाकी आँचको बरदाश्त किया जाय।

मैंने अगस्त क्रान्तिको सजीवसा माना है। चेतनाके प्रवाहमे जीव आता है और उस प्रवाहसे विकसित होता हुआ और उसको विकसित करता हुआ चल देता है। अगस्त-क्रान्ति भी उसी तरह आयी, विकसित हुई और हमारी क्रान्ति धारापर अपनी अमिट छाप छोड़ कर चली गयी। अपने इसी दृष्टिकोणको स्पष्ट करनेकी चेष्टामें मैंने स्थान और तिथिको गौण मान घटना और विचारको प्रधानता दी है।

मैं सचाई जाननेकी कोशिश करता रहा हूँ। मैंने कठिनाइयोंका सामना किया है पर उस कोशिशमें ढिलाई नहीं आने दी है। इस किताबको मैं उसकी एक बानगी मानता हूँ। फिर भी अगर इस किताबमे कोई गलत बात आ गयी है तो वह अनजाने आ गयी है। अपने हाथमें कोशिश करना है; फलाफल तो परिस्थितिकी चीज है।

फौज और पुलिसके खिलाफ बहुतसी बातें लिखी गयी हैं। उन बातोंके सम्बन्धमे पुलिस और फौजवाले खुद क्या कहते हैं और उनके संगी साथी क्या कहते हैं—जानना आवश्यक था। उनके सम्पर्कमें मेरा आना तो असंभव था। इसलिये बड़े चावसे मैं उस मौकेकी ताकमें रहा जबकि वे सब अपनी सरकारकी अदालतमें अपनी सफाई पेश करते! जनताके प्रतिनिधियोंने चाहा कि उनको सफाई देनेका मौका मिले पर सरकारने उन्हें वैसी सुविधा नहीं दी। जबतक सरकारका ऐसा रुख रहेगा उसके नमकहलाल नौकरोंकी कलंक कहानियाँ जनता सच्चे मनसे सुनती सुनाती रहेगी जिनके बीचसे सचाई छान निकालना आसान न होगा। आज तक अगस्त-क्रान्तिपर जितनी भी किताबें निकली है उनको जिनने पढ़ देखा है और जो कार्यकर्त्ताओंकी शिकायतोंसे वाकिफ है उनको मालूम हो

जायगा कि मैंने फौज और पुलिसके प्रति न्याय करनेकी कितनी कोशिश की है। इस प्रसंगमें मुझे एक सुधार करना है। पृष्ठ नं० १५३ में कुर्था थानापर जो हमला हुआ उसका जिक्र करते हुये लिखा गया है—"इसी बीच श्यामबिहारी लालपर गड़ासेका कई घातक वार जमादार गुलाम हैदरखाने किया। श्यामबिहारीजी बेहोश गिर गये। फिर वे अस्पताल पहुँचाये गये जहां शहीद बन गये। पर गुलाम हैदरखाने श्यामबिहारी बाबू पर गड़ासेका वार नहीं किया। उनने श्यामबाबूको गोली मारी जिससे घायल होकर वे गिर पड़े। फिर खां साहबके देखते-देखते ही एक चौकीदारने उनपर गड़ासेका ऐसा हाथ जमाया कि उनका पेट कट गया और आँतें निकल आईं। उनके साथी उनको अस्पताल ले चले जहां पहुँचते-पहुँचते वे शहीद हो गये।

छापेकी गलतियां काफी हैं। मैं केवल कुछकी ओर ध्यान खींच सकूंगा। पृष्ठ १७२ में माननीय श्रीजगलाल चौधरीका वक्तव्य समाप्त करके मढ़ौरा प्रकरण शुरूकर दिया गया है। मा० चौधरीजीका वक्तव्य वहां समाप्त नहीं होता। उसका शेषांश पृष्ठ १७४ की चौथी पंक्तिके अन्तिम दो शब्दसे शुरू होता है और यथा स्थान समाप्त होता है। पृष्ठ ४१४ के दूसरे पाराकी तीसरी पंक्तिमें छपा है—"२० मईकी रात सबोंने काटी एक जगह।" बात गलत है। वहां सब जने कुछ ही देर रखे गये। ता० २१ मई थी। उसी दिन सभी हनुमाननगरको रवाना किये गये। पृष्ठ ४१५ की छठी पंक्तिमें छपा है—"एक टांगपर खड़े होकर बोले।" बात गलत है। जो बोले सो बैठे बैठे ही। पृष्ठ ७४७ में लिखा गया है—"आन्दोलन छेड़नेकी" पर होना चाहिये—"आन्दोलन न छेड़नेकी।"

क्रान्तिकालमें बिहारके जेलोंमें जीवन छलकता रहा है। सींकचोंके भीतर इतनी तरहकी घटनायें हुई हैं और इतनी महत्वपूर्ण कि उन्हें अलग ही स्वतंत्र स्थान देना उचित समझा गया है। इसलिये इस पुस्तकमें जेलकी घटनाओंका उल्लेख नहीं है।

इस पुस्तकके लिखनेमें मुझे अनगिनत साथियोंकी मदद मिली है। किन-किनका नाम गिनाऊँ? हां! मुझे सारनके श्रीलक्ष्मी नारायण सिंह, और मुजफ्फरपुरके श्रीअक्षयकुमार सिंह और पटनेके श्रीरामवरण सिंह सारथिका उल्लेख करना ही है जिनने अपने पाण्डुलेखोंका पूरा-पूरा उपयोग करने दिया। मैं श्रीतेजनारायण लाल शास्त्रीको भी नहीं भूल सकता जो मेरे सदा सहायक रहे।

दम मारनेकी फुरसत न रहते हुये भी राजेन्द्र बाबूने मेरी किताबकी भूमिका लिख दी। इसपर मैं क्या कहूँ? राष्ट्रके मेरे जैसे सामान्य सेवकका भी इतना खयाल रखना उनका सहज स्वभाव है जो सभी कार्यकर्त्ताओंको अनुप्राणित करता रहता है।

सदाकत आश्रम
३-३-४७

बलदेव नारायण

विषय सूची

चित्र-सूची

'भारत-छोडो' के प्रस्तावक

लेखक

अगस्त-क्रान्तिकी आगमें जो होम होगये और

जो उस आगको जिलाते हुये जी रहे हैं

उन

शहीदों और साधकोंको—

"Ye shall know the truth, the truth shall make ye free"

—Jesus

"तू सचाईको जान ले, सचाई तुझे आज़ादी देगी।"

—ईशु

'भारत छोड़ो' का मंत्रदाता,
क्रान्ति-यज्ञ का पुरोहित

हिन्दुस्तानकी माँग पूरी करो

पोलेण्डको बचानेके लिये १ सितम्बर १९३९ को इङ्गलैण्ड जब प्रजातन्त्रकी दुहाई देता हुआ, जर्मनीसे भिड़ गया तब प्रजातन्त्रवादियोंको बड़ी आशा हुई। जब इङ्गलैण्ड जैसा राष्ट्र प्रजातन्त्रकी दुहाई देता हुआ लडाईमें कूदता है, दुर्बल राष्ट्रोंकी रक्षाके लिये, तब उसे अनायास संसारके समस्त दुर्बल राष्ट्रोंका ही नहीं, बल्कि सभी प्रजातन्त्रवादियोंका अपरिमित सहयोग-बल मिलता है। उसके सामने लडाके टिक नहीं सकते और ससार भरमे प्रजातन्त्रकी स्थापना करनेमें उसके मददगार बन जाते हैं। फिर न कोई राष्ट्र विजयी दीखता है न कोई विजित। सभी स्वतन्त्र सुखी और समान नजर आते हैं। कुछ इसी ढगकी विचारधारामे निमग्न गान्धीजी बड़े लाट साहबसे तुरत मिले, इङ्गलैण्ड और फ्राससे हमदर्दी दिखलायी और बोले कि मैं तत्काल भारतकी आजादीकी चिन्ता नहीं कर रहा हूँ। वह तो आजाद होकर ही रहेगा, पर वह आजादी किस कामकी होगी जब कि इङ्गलैण्ड और फ्रासका सर्वनाश हो गया रहेगा, या वे विजेताके रूपमें दीख पडेगे, जर्मनीको अपमानित और नेस्तनाबूद करके।

सचमुच ऐसी घटनाये उस नयी व्यवस्थाकी क्या सृष्टि करतीं जिसकी कल्पना गान्धीजी करते थे। इन घटनाओसे तो वैसी ही परिस्थिति उत्पन्न होती जैसी पिछली लडाईके परिणाम-स्वरूप हुई थी। इसलिये गान्धीजीने अपने अनोखे ढगसे बडे लाटके मार्फत इगलैण्डसे अपील की कि वह नई व्यवस्था कायम करनेकी ओर कदम उठाय, जिसका सहज परिणाम होता भारतकी आजादी।

पर इगलैण्डके तो हाथ सुमरनी जेब कतरनी रहती आयी है। वह दुहाई तो देती थी प्रजातन्त्रकी पर पुष्ट करती रही अपनी साम्राज्य लिप्सा। अखिल भारतीय कॉग्रेसकी कार्य-समितिने उसके रुखका विरोध किया जिसका प्रदर्शन करनेके लिये उसने केन्द्रीय एसेम्बलीके कॉंग्रेसी सदस्योंको तत्कालीन अधिवेशनमें शामिल होनेसे रोक दिया।

पर ब्रिटिश सरकारके कानोपर जूँ न रेंगी। वह अपनी चाल चलती गयी। उसने भारतको युद्धलिप्त राष्ट्र घोषित किया, कितने ही फर्मान जारी किये, भारत शासनविधानमे सशोधन किया और दूर तक असर करनेवाली दूसरी दूसरी

117 1711

कार्रवाइयां कीं जिनका हिन्दुस्तानियोंके जीवनसे गहरा संबंध है, और जिनके कारण प्रान्तीय सरकारोंकी शक्ति तथा कार्यकी सीमा संकुचित हो गयी और अधिकार कम हो गये।

अखिल भारतीय कांग्रेसकी कार्य समितिने अपनी वर्धाकी बैठकमें ता० १४ सितम्बर १९३९ को एक प्रस्ताव पास करके सरकारकी इन हरकतोंका घोर विरोध किया। उसने कहा कि सरकारको अपनी नीतिकी स्पष्ट घोषणा कर देनी चाहिये। वह लड़ाई प्रजातन्त्रकी रक्षा तथा विस्तारके लिये लड़ रही है या अपना साम्राज्य बरकरार रखनेके लिये। अगर उसकी लड़ाई साम्राज्य रक्षाके लिये है तो भारत उसका साथ नहीं देगा। भारत साम्राज्यवादी लड़ाई लड़ना नहीं चाहता। वह तो साम्राज्यका जुआ उतार फेंकनेके लिये प्राणपणसे कोशिश कर रहा है। फिर ऐसी लड़ाईमें शामिल होना उसके लिये अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारना है। हाँ, अगर सरकार प्रजातन्त्रके हितके लिये लड़ रही है, तो इस लड़ाईसे भारतको दिलचस्पी है। भारत प्रजातन्त्रकी विजय चाहता है, क्योंकि मानता है कि संसार के सभी प्रजातन्त्रात्मक देशोंके हित एक जैसे ही हैं, वे परस्पर सहयोग करके ऐसी व्यवस्था स्थापित कर सकते हैं जिसमें सभी राष्ट्र सुखी रहें, समान दीखें और स्वतन्त्र होवें। वह फासिस्टवाद और नाजीवादकी जीत हरगिज़ नहीं चाहता क्योंकि साम्राज्यवादकी तरह ये ससारमे विषमता और कलह उत्पन्न करते रहेंगे।

यदि सचमुच ब्रिटेन प्रजातन्त्रका पक्षपाती है तो उसे अधिकृत देशोंको अपने साम्राज्यवादी शिकंजेसे मुक्त कर देना होगा और भारतमें प्रजातन्त्रकी स्थापना करनी होगी। भारतीयोंको स्वभाग्य निर्णयका अधिकार देना होगा, यानी विधान परिषद् द्वारा उसके प्रतिनिधियोंको अपना शासन विधान, बिना बाहरी हस्तक्षेप के, आप तैयार कर लेनेका अधिकार देना होगा और अपने देशकी नीतिको अपना हिताहित सोचकर ठीक कर लेनेके उनके हकको मान लेना होगा।

कार्यसमितिने विश्वास दिलाया कि तब स्वतन्त्र और प्रजातन्त्र भोगी भारत सहर्ष अन्य स्वतन्त्र देशोंसे मिलकर अत्याचारका निवारण करेगा और आर्थिक सहयोग भी। तब भारत इसकी चेष्टा करेगा कि स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्रके आधारपर विश्वमें वास्तविक सुव्यवस्था स्थापित हो और विश्वके ज्ञान और साधनोंका उपयोग मानव समाजके हितके लिये हो।

कार्य समितिने देशी नरेशोंको भी चेताया जो यूरोपमें प्रजातन्त्रकी रक्षा करनेके लिये अपना धन जन ब्रिटेनको दे रहे थे। उसने कहा कि यदि नरेशोंको प्रजातन्त्रसे प्रेम है तो उसका एक ही प्रमाण है कि वे अपने रियासतोंकी विशुद्ध निरकुशताको खत्म कर दें। ब्रिटेनको मदद देना निरंकुशताको मजबूत करना है, क्योंकि इसके लिये वह नरेशोंसे भी ज्यादा जिम्मेदार रही है। हाँ ब्रिटेनने अभीष्ट घोषणा कर दी तब बात दूसरी है।

पर घोषणा कर देना ही अलम न होगा, इसके पीछे सचाई है इसका सबूत देना होगा। तभी जनता विश्वास करेगी, अन्यथा समझेगी कि पिछली लडाईके मौकेपर जिस तरह लम्बी चौड़ी बाते करके जनताको धोखेमे रखा गया अब भी उसकी पुनरावृत्ति है। इसलिये निहायत जरूरी है प्रजातन्त्रकी घोषणा को ज्यादासे ज्यादा जितना सम्भव हो तत्काल अमलमें लाया जाय। कार्यसमिति ने कहा कि किसी घोषणाकी कसौटी तो उसे अभी लागू कर देनेमें है, क्योंकि अभी आजकी कार्रवाईपर छाप डालती है और भविष्यको भी अपने सांचेमें ढालती है। अन्तमे कार्य समितिने जर्मनों और जापानियोंको समझाया। भारतीयोंको उनसे वैर नहीं है। उनका वद्धमूल विरोध है हिंसा तथा आक्रमण मूलक पद्धतियोंसे जो स्वतन्त्रताकी द्रोही हैं। उसने कहा कि भारतीय ऐसी जीत नहीं चाहते जिसका मतलब किसी राष्ट्रकी हार हो, न ऐसी सुलहके पक्षमें है जो किसीपर जबर्दस्ती लाद दी गयी हो। वे संसारकी सभी जातियोंके लिये प्रजातन्त्रकी विजय चाहते हैं जिससे सभी ऐसी दुनिया देखे जहाँ न हिंसाकी आशंका हो न साम्राज्यवादके उत्पीड़नकी।

कांग्रेस कार्य समितिके इस प्रस्तावके उत्तरमे अक्तूबरमे ही सम्राटकी सरकारने अपना वक्तव्य दिया। घोषणा की कि भारतको औपनिवेशिक स्वराज्य मिलेगा। कहा कि लाट साहबकी कार्यकारिणीका विस्तार करनेके लिये हम तैयार हैं ताकि राजनीतिक दलोंके प्रतिनिधियोंका सहयोग लाट साहबको मिले। हम सलाहकार सभा भी संगठित करनेके लिये तैयार हैं। पर मेल मिलापसे काम लेनेके लिये जरूरी है कि कांग्रेस, लीग और अन्यान्य पार्टियोंमें एका होवे, वे सब प्रान्तका कार्य संभालें और केन्द्रकी इन संस्थाओंका उपयोग करें। पर मेल तो होता नहीं, फिर क्या किया जा सकता है।

बड़े लाटके मार्फत ब्रिटिश सरकारके रुख रवैयाको मालूम करके कांग्रेसको

बड़ी निराशा हुई। कांग्रेसने कभी अपने ही लिये कुछ नहीं मांगा। वह उन सभी सम्प्रदाओंके लिये, जो राष्ट्रके बनानेमें लगे है, अधिकारका दावा करती रही है। अल्प संख्यकोंकी हित रक्षाके लिये काफी गारन्टी देनेको तैयार रहती आयी है। उसे बड़े लाटके वाग्जालसे रोष हुआ और २२ अक्तूबर १६३६ को अपनी कार्य समितिकी तीसरी बैठकमे वर्धासे एक प्रस्ताव पास करके उसने कांग्रेसी मंत्री-मण्डलोंको इस्तीफा देनेका आदेश दिया। फलतः सभी प्रान्तोंसे कांग्रेसी सरकार हट गयी; शासन विधानका अन्त हो गया और ब्रिटिश नौकर शाहीकी तानाशाही सब जगह मनमानी करने लगी।

कांग्रेसने सरकारसे संबंध विच्छेद तो कर लिया पर उसी प्रस्ताव द्वारा कार्यसमितिने कांग्रेस जनोंको सावधान कर दिया कि सविनय अवज्ञा, राजनीतिक हड़ताल आदिके रूपमे उतावलीका कोई काम वे न करे। उसने कहा—हिन्दुस्तान में ब्रिटिश सरकारकी कार्रवाईयोंपर नजर रखूँगी और जब जरूरत पड़ेगी तब और कदम बढ़ानेके लिये देशको राह दिखानेसे नही हिचकूँगी।

१६४० के मार्चमें रामगढ़ कांग्रेसने फिर भारतकी मांगको दुहराया। उसने घोषणा की कि ब्रिटिश सामाज्यसे उसका कोई ताल्लुक नहीं रह सकता। भारतकी आजादी साम्राज्यवादकी परिधिके भीतर सार्थक हो ही नहीं सकती। इसलिये औपनिवेशिक स्वराज्य वा इस ढंगके किसी राज्यको जो साम्राज्यवादी ढांचेसे मेल खाये भारतपर लादा नहीं जा सकता। उसे पूर्ण स्वतन्त्रता चाहिये, प्रजातन्त्रकी, राष्ट्रीय एकतासे सम्पन्न। मत मतान्तरका झगड़ा उठाना फजूल है, क्योंकि इसका स्थायी निपटेरा विधान परिषद समिति ही कर सकती है, जहाँ सभी दलवाले समझौता करके अपने हकोंकी रक्षा कर लेंगे और जहां आपसमे समझौता नहीं कर सके वहां किसी पंचायतका फैसला मान लेंगे।

रामगढ़ कांग्रेसने एलान किया कि वह देशी नरेशोंको आजादीकी राहमें रोड़े अटकाने न देगी। भारतीय जनताके हाथमें ही, चाहे वह प्रान्तमें रहती हो या देशी रियासतोंमे, शासन सत्ता रहेगी और उसका हित ही सर्वोपरि रहेगा।

कांग्रेसने यह भी साफ कर दिया कि विदेशियोंके स्वार्थकी रक्षा की जायगी बशर्ते वह जन हितका घातक नहीं सिद्ध हुआ तो।

कांग्रेसकी ऐसी गतिविधिकी खबर ब्रिटिश सरकार रखती थी पर वह बेपरवा थी। भूखी जनतामें रंगरूटोंकी कमी न थी और लोभी पूंजीपति

लडाईकी सामग्री संग्रह करनेका ठेका लेनेके लिये मुह वाये रहते थे। फिर ब्रिटिश सरकारको फिक्र किस वातकी थी? वह उपेक्षाकी फूॅकमें कांग्रेसको विलकुल उड़ा देना चाहती थी।

इसी वीच वेल्जियम जर्मनीका शरणागत हुआ और फ्रान्सने 'हरदी' वोल दिया। फिर हिटलरका हुंकार सारे यूरोपको कंपाने लगा। नाजीवादको नंगा नाचते देख कांग्रेसका प्रजातन्त्र विह्वल हृदय अधीर हो उठा। उसने गान्धीजी को कहा—अव आप विश्राम लीजिये; मैंने युद्ध तटस्थताकी नीति छोड़ी। मैं अव अमुक परिस्थितिमें नाजीवाद्से लड़नेके लिये ब्रिटेनकी पूरी मदद करूॅगा।

कांग्रेसके इस नीति परिवर्त्तनने पूना प्रस्तावका रूप धारण किया।

पूना प्रस्तावके द्वारा ब्रिटेनको कहा गया कि भारतके पूर्ण स्वतन्त्रताके अधिकारको मान लो और केन्द्रमे काम चलाऊ राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना कर दो तव देश रक्षाकी तैयारीको मजवूत करनेमें कांग्रेस अपनी सारी ताकत लगा देगी।

पूना प्रस्तावका उत्तर वड़े लाट साहवने अगस्त घोषणाके रूपमे दिया। आपने कहा—भारतमे औपनिवेशिक स्वराज्यकी स्थापना तो होगी ही। तत्कालके लिये हमे सम्राटकी सरकारका आदेश मिला है कि हम अपनी कार्य-कारिणीमे प्रतिनिधि माने जानेवाले हिन्दुस्तानियोको शामिल कर ले; युद्ध मंत्रणा परिषद्का संगठन कर ले जो नियमित रूपसे समय-समयपर वैठा करेगा जिसमें देशी रियासत और हिन्दुस्तानके प्रतिनिधि रहेंगे।

इससे अव और ज्यादा नहीं मिलेगा। देशकी सुख-शान्तिकी जवावदेही तो ब्रिटिश सरकारके सर है। वह कांग्रेसको नहीं सौंपी जा सकती, क्योंकि देशके वडे-वड़े और मजवूत दल उसकी हुकूमत माननेसे साफ इनकार कर देंगे।

हां, वड़े लाटने कहा कि विधान परिषदके प्रस्तावसे ब्रिटिश सरकारको हमदर्दी है। लड़ाईके वाद सरकार उसे वुलायगी और हिन्दुस्तानके प्रतिनिधि उसमें वैठ ब्रिटिश उपनिवेश संघके भीतर अपने देशको रख कर उसका विधान वनावेंगे। ब्रिटिश सरकार उनपर एक ही रोक रखेगी। लम्वे अरसेसे हिन्दुस्तान मे रहकर उसके कुछ कर्त्तव्य हो गये हैं। उसे देखना होगा, विधान ऐसा वने कि उसके इन कर्त्तव्योंके पालनमें वाधा न हो।

कांग्रेसने मांगा था थोड़ा चावल मिला धानका भूसा। उसने लाट साहब के प्रस्तावको सीधे नामंजूर कर दिया। सरकारने भी चुप्पी साध ली। पर जब तक सास तब तक आस! श्री राजगोपालाचारी आगे बढ़े और उन्होंने खुले दिल से सरकारके सामने अपना प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव क्या था? सरकारकी सचाई को चुनौती थी। उनने कहा—तुम कांग्रेसको अधिकार सौंपनेके लिये तैयार नहीं हो तो लीगका ही विश्वास करो। लीग प्रधान मंत्री चुने और प्रधान मंत्री जैसा सर्वोत्तम समझे राष्ट्रीय सरकारका संगठन कर ले। मैं कांग्रेसको मना लेने का भार गछता हूँ। 'मनमे आन वगलमे ईंट' रखनेवाली सरकार इसका क्या जवाब देती। मौन साधे रही।

देशका क्षोभ बढ़ा। और इस क्षोभको मूर्त्तरूप देना ही था। कांग्रेसके लिये सिवा इसके और कोई चारा न रह गया कि वह गांधी गोहार करे और काग्रेसका सचालन सूत्र फिर गांधीजीके हाथ पकड़ा दे। गांधीजीने समझाने बुझानेका ब्रिटेनपर कोई असर पड़ता न देख एक कदम आगे लिया। १९४० के अक्तूबर से उनने व्यक्तिगत सत्याग्रहका आन्दोलन छेड़ दिया। आन्दोलनका रूप पूर्णतः प्रचारात्मक था। गांधी जी द्वारा चुने चुनाये सत्याग्रही सरे बाजार नारा लगाते कि ब्रिटिश सरकार साम्राज्यवादी लड़ाई लड़ रही है जिसमे शामिल होना हराम है; इसलिये उसे 'न देंगे एक पाई न देंगे एक भाई'। आन्दोलनमें शान्ति थी, शिष्टता थी और विरोध भी था पर मिठास भरा। एक साल आन्दोलन चला। २५ हजारके लगभग सत्याग्रही जेल यात्री बने। १९४१ के अन्तमें परिस्थितिसे लाचार होकर सरकारने अधिकांश सत्याग्रहियोंको जेल मुक्त कर दिया।

१९४१ की परिस्थिति सरकारके लिये और नाजुक थी। आरभमें ही नेताजी श्री सुभाषचन्द्र वोस सरकारकी सी० आई० डी० और पुलिसके घेरेको तोड़ विदेश निकल गये थे। और जर्मनोका सहयोग पाकर हिन्दुस्तानकी आजादी के पक्षमे प्रचार कर रहे थे। उनके प्रचारके प्रभावमे आ पड़ना हिन्दुस्तानियोंके लिये आसान था। फिर हिटलरकी ताकत और बढ़ गयी थी। इसलिये सरकार काग्रेसको मना लेना चाहती थी।

और कांग्रेस सरकारका साथ देनेके लिये कमर कसे थी पर चाहती थी साथ देना गुलाम बने रह कर नहीं, आजाद होकर। उसकी कार्य समिति वारदोलोमें बैठी। सत्याग्रहको स्थगित कर दिया, और फिर एकबार गांधीजीको नेतृत्वके

दायित्वसे मुक्त करके सरकारसे बातचीत करनेका प्रस्ताव किया। उसकी मांग पुरानी थी, शर्तें भी वही १९३९ के १४ सितम्बरकी।

ब्रिटिश सरकार फिर कानमें तेल डाल लेती पर १९४२ परिस्थितिमे नवीन गुरूता लेकर आया जिसकी भीषणता उत्तरोत्तर अधिक होने लगी। १९४१ के दिसम्बरमें ही जापानसे ठन गयी ब्रिटेनकी और अमरीकाकी। धुरी राष्ट्रोंके खिलाफ अब दोनो एक साथ लड़ने लगे। दोनोंका सुख दु:ख एक जैसा हो गया।

पर जापान लोहेका चना साबित हुआ। उसको सर करनेके लिये ब्रिटेनने अपना एक भीमकाय रणपोत भेजा जिसे एक सहयोगी भी दिया। रणपोत अकड़ते हुए चले मानो जपानको देखते ही निगल जायगे। लोगोंने भी यही समझा और जहां-जहां उन्हें देखा सलामी दी। पर वे जापानी मोरचेपर पहुँचने भी न पाये थे कि उनपर जापानियोंका गाज गिरा और दोनो डूब कर रसातल चले गये। फिर तो जापान बाज़की तरह झपट्टा मारने लगा। अंगरेजोका अभिमान जो सिंगापुर का नौ किला था—उसे उसने तोड़ डाला और मलाया वगैरह जीतता हुआ वह वर्मा आया और उसे हड़प बैठा। अब उसकी धमक हिन्दुस्तानको कपाने लगी। और हिन्दुस्तानकी हालत ! उसे भीषण असंतोप। और उस असंतोपको नेताजी श्री सुभाषका प्रचार उग्र रूप देता जा रहा था। नेताजीकी हैसियत अब साधारण सी नहीं थी। प्रवासी भारतीयोंसे मिल कर उनने आजाद भारत सरकारकी स्थापना की थी जिसे धुरी राष्ट्रोंने आजाद कौमकी आज़ाद सरकार मान लिया था।

युद्धग्रस्त चीन और युद्धलिप्त अमरीका निश्चिन्त कैसे रह सकते थे ? हिन्दुस्तान कमज़ोर पड़ा तब तो चीन बिलकुल गया ही था। यो भी उसकी बुरी हालत थी। और अमरीकाके धन-जनकी भी अपरिमित हानि थी। इस लिये दोनोंका आग्रह था कि ब्रिटेन कॉंग्रेसको सतुष्ट करे जिससे देशके साधन बलको लेकर वह धुरी राष्ट्रोंके विरोधमें हमारे कधेसे कंधा भिड़ाकर खड़ा होवे। १९४२ के आरभमें जनरल च्यागकाई शेक स्वयमेव अपनी पत्नी सहित भारत आये सरकारके मेहमान होकर। वे गान्धीजी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा अन्यान्य नेताओंसे मिले। उनने बड़ी कोशिशकी कॉग्रेस और सरकारको मिलाने की। और जब खुद कामयाब नहीं हुए तब अमरीकाके राष्ट्रपति रूजवेल्टको उनने बारबार कहा कि चर्चिलपर दबाव डालो ताकि वह अपनी भारत विरोधी नीतिसे बाज़ आये

और काँग्रेसको सतुष्ट करके मित्र राष्ट्रोंके पक्षमें कर ले। अपने स्वार्थ और जनरल च्यॉगके आग्रह दोनोसे प्रेरित होकर राष्ट्रपति रूजवेल्टने चर्चिलको लिखा कि हिन्दुस्तानके मामलेको निवटाओ ही।

रूस भी निश्चिन्त न था। हिटलर उस पर भी चढ़ बैठा था और उसे तवाह कर रहा था। रूसी वड़ी धीरतासे सब कष्ट सह रहे थे और वडी वीरतासे जर्मनोंके आक्रमणोका जवाब दे रहे थे। यूरोपको रौंद कर एक ओर तो हिटलर यूरोपीय रूसको हैरान कर रहा था और उसे अपने एशियाई भागकी सुविधापर भरोसा करनेके लिये विवश कर रहा था फिर दूसरी ओर एशियापर भी अपना सिक्का जमानेकी कोशिश कर रहा था। रूसको इसकी चिन्ता थी। वह जानता था कि संतुष्ट भारत हिटलरकी दाल उधर गलने न देगा। इसलिये चाहता था कि चर्चिल कांग्रेससे मेल करे और उसने चीन और अमरीकाके आग्रहका समर्थन किया।

• और रूस तथा अमरीकाके स्वार्थसे कहीं ज्यादा खतरा खुद ब्रिटेनके स्वार्थ को था। उसके साम्राज्यके वाये अंगको जिसने काट लिया था शेपागकी घातमें बैठा वह जीभ लपलपा रहा था। उसके साम्राज्यकी पच्छिमी सीमा भी सुरक्षित न थी। मिश्रकी राजधानी काहिरा तक को जर्मनोकी गोलावारी कंपा रही थी। इरान जर्मन गुप्तचरोका अड्डा बन रहा था। इधरकी उसकी कूटनीति जैसी रही है उसको याद रख कर कहना कठिन था कि अरब और अफगानिस्तान कौन सी नीति वरतेगा? परिस्थिति जैसी थी उसमे सत्साहसी घवडा जाता और जिस जिस से मददकी उम्मीद होती, उस उससे मेल करके संकट दूर करनेका उपाय करता। पर दुस्साहसी ब्रिटिश साम्राज्यवादी घबड़ाये नहीं। वे तो ऐसी परिस्थितिके स्रष्टा और भोक्ता दोनो रह चुके है। उनकी नीति रही, काग्रेसी असतोपका साप भी मरे और हिन्दुस्तानके साम्राज्यकी लाठी भी न टूटे। चीन, अमरीका और रूस के आग्रहने और अपने स्वार्थके तकाजेने उन साम्राज्यवादियोको मजबूर किया कि वे तत्काल अपनी उक्त नीतिको काममे लावें।

फलस्वरूप ब्रिटेनके प्रधान मत्री चर्चिलकी पार्लिमेण्टमें घोपणा हुई कि युद्ध परिपद समाजवादी नेता सर स्टैफोर्ड क्रिप्सको खास काम लेकर तत्काल भारत भेज रहा है।

—:॰:—

क्रिप्सका मायाजाल

क्रिप्स साहब मार्च २३ को दिल्ली पहुँचे। कांग्रेसी नेता उनके आगमनपर फूले न समाये और उनने जो प्रस्ताव रक्खा उन्होने उसके शब्द शब्दपर गौर किया।

क्रिप्स साहब कांग्रेस, मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, नरेन्द्रमण्डल, और दूसरे दूसरे अनेक राजनीतिक तथा अन्यान्य संस्थाओंके प्रतिनिधियोसे मिले। उनके आगे ब्रिटिश सरकारकी ओरसे एक योजना रक्खी, वर्तमान और भविष्य दोनोके सम्बन्धमें।

भविष्यके सम्बन्धमें उनने कहा कि भारतमें संघ शासन होगा। उसकी मर्यादा स्वतंत्र उपनिवेश जैसी रहेगी। ब्रिटेनकी राजसत्ता ही उपनिवेश और ब्रिटिश सरकारसे उसे संबद्ध रक्खेगी।

तुरत लड़ाईके बाद प्रतिनिधि सभा बैठेगी जो उस संघ शासनका विधान तैयार करेगी। उस विधानको ब्रिटेन मान लेगा। पर उस विधानमे किसी भी प्रान्तको इतना अधिकार देना पडेगा कि वह संघमें शामिल न होकर जैसा है वैसा ही रहना पसन्द करे। ऐसा प्रान्त अपना अलग विधान बना सकेगा और अपने जैसे अन्य प्रान्तोसे मिलकर सघबद्ध हो सकेगा। तब फिर इस सघको ठीक वैसी ही मर्यादा मिलेगी जो भारत सघको मिली होगी।

ब्रिटेन विधान बनानेवाली सभासे सन्धि कर लेगा जिसकी शर्तोंके मुताबिक भारत सघको अल्प सख्यक जातियो तथा धार्मिक दलोकी रक्षा करनी पड़ेगी। हाँ, ब्रिटिश उपनिवेश संघके किसी सदस्यसे भविष्यमे जैसा चाहे वैसा व्यवहार भारत सघ करे।

लड़ाई खतम होते ही चुनाव होगा और प्रान्तकी नयी साधारण व्यवस्थापिका सभाको विधान बनानेवाली सभामें प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार होगा। आनुपातिक-प्रतिनिधित्वके नियमानुसार प्रतिनिधियोंकी संख्या व्यवस्थापिका सभाके सदस्योंकी संख्याका दसवा हिस्सा रहेगी।

जन संख्याके इसी अनुपातसे देशी रियासते भी विधान बनानेवाली सभामें

अपना प्रतिनिधि भेजेगी। उन प्रतिनिधियोको वहांकी हुकूमत बहाल करके भेजेगी पर उनकी मर्यादा होगी भारतके चुनाए हुए प्रतिनिधि जैसी ही।

हां, प्रतिनिधित्वको इस तजवीजको चाहे तो भारतके मुख्य मुख्य फिरकोके प्रतिनिधि एक मत होकर बदल सकते हैं।

वर्त्तमानके सम्बन्धमे उनने कहा कि लड़ाई भरका समय बड़ा नाजुक है। अबसे जब तक हिन्दुस्तान अपना विधान तैयार नहीं कर लेता, देशकी रक्षाकी जवाबदेही व्यवस्था और मोरचाबन्दी सब ब्रिटिश सरकारके हाथमें रहेगी जो विश्व व्यापी युद्धमें संलग्न है और हिन्दुस्तानकी रक्षाके प्रश्नको अपने सारे प्रयत्नका एक हिस्सा ही मानती है। पर हॉ, देशका हौसला बढ़ाना, लड़ाईके साधनका सग्रह करना और रगरूट भरती करना भारत सरकारका काम होगा जिसे वह हिन्दुस्तानके कौमोके सहयोगसे सभालेगी। मुख्य मुख्य दलोके प्रतिनिधि आवे और अपने देश, उपनिवेश संघ और मित्र राष्ट्रको सलाह मशविरा देना शुरू करे तुरत और जोरदार तरीकोंसे।

क्रिप्सकी योजना क्या थी, भानमतीका पेटारा थी! इसमें नकली स्वराज्य था पर असली साम्राज्यवाद, नामके लिये हिन्दुस्तान था पर दरअसल पाकिस्तान; प्रजातंत्र मौजूद था पर उसके सरपर एकतंत्र सवार—जो भी था सो आगेके लिये, लड़ाईके बाद, अभीके लिये कुछ नहीं, सिर्फ बड़े लाटकी हॉजी करना। गांधीजीने तो इस योजनाको इतना नापसंद किया कि क्रिप्स साहबसे बोले तुमने ऐसे खरीतेको लानेकी नाहक तकलीफ उठायी और अपना अपमान किया। उलटे पांव वापस जावो।

डा० राजेन्द्र प्रसादजीने इस योजनाके खोखलापनको गाधीजीकी तरह समझा। कहते है, "क्रिप्स योजनाको देखिये। उसमें देशी नरेशोको तानाशाह मान लिया गया है। हम उनके रियासती मामलेमे दखल नहीं दे सकेंगे पर उन्हे हिन्दुस्तानके मामलेमे बोलनेका हक होगा। और शासन विधानको अगरेज तभी मंजूर करेंगे जब उसपर काग्रेस, मुस्लिम-लीग, हिन्दु महासभा, सिक्ख दल, दलित वर्गदल और प्रवासी अगरेज दल वगैरह मिलकर अपनी स्वीकृतिकी मुहर लगायंगे। मतलब न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेंगी। इतना ही नहीं शासन विधान तैयार करते समय तक भी जितनी पार्टिया भारतके राजनीतिक जीवनको प्रभावान्वित करती देखी जायंगी, सभी विधान निर्माणमें

सर स्टैफोर्ड क्रिप्स

सर आर्चीबाल्ड वैवेल

(तत्कालीन जंगीलाट)

दो जालीम !

लॉर्ड लिनलिथगो
(तत्कालीन वायसराय)
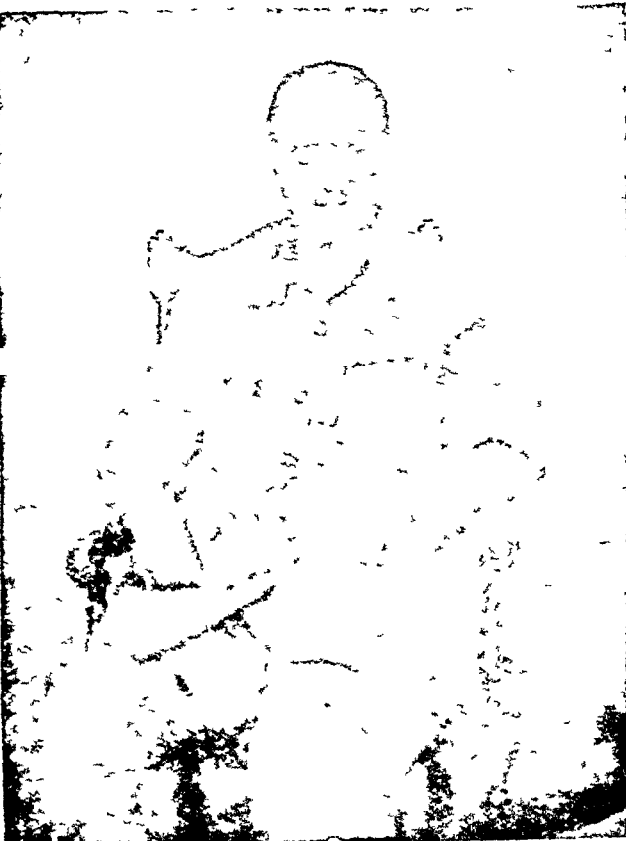
सर रथरफोर्ड
(विहारका तत्कालीन गवर्नर)

हाथ बटायंगी। फिर जिन्ना साहब हिन्दुस्तानसे एक पाकिस्तान काट लेना चाहते हैं, पर क्रिप्स योजनामे एक नहीं अनेक पाकिस्तानकी गुञ्जायश करा दी गयी है। किसी भी प्रान्तको हक दिया गया है कि वह भारत शासनसंघमें शामिल होवे वा न होवे। देखिये, हमें टुक्डे टुकड़े करनेकी कैसी गर्हित चाल है।

जब मैंने कहा, क्रिप्स साहब यह तो फरमाते हैं कि देश रक्षाकी जिम्मेदारी नहीं देंगे, पर क्या देंगे सो भी तो नहीं बतलाते, फिर हम किस आधारपर बात चीत करें, तब मेरी बातपर कार्य समितिके मेम्बर लोग हँस पड़े। लेकिन जब उनकी मुलाकात बडे लाट लिनलिथगो साहबसे हुई तब मेरा क्या मतलब था सो उन्हें मालूम हुआ। बड़े लाट साहबने सयुक्त राष्ट्रीय सरकार बनानेसे कतई इनकार किया। उनके अधिकारपर व्यवस्थापिका सभा किसी तरहकी कैद लगावे ऐसा सोचना भी उनके लिये असभव था। हा, कार्यकारिणी कौंसिलकी काया ड्योढी दुगुनी कर देनेकी बात बडे लाटने उठायी। पर कहा कि हमारे कौंसिलर तो अपने अपने विभागके हेड हैं, बस। मत्री तो वे हैं नहीं। उन्हें जब चाहा बुलाया और रिपोर्ट सुन ली, हो गया। यही उनका हक है, ऐसी ही उनकी हस्ती है।"

किसो बडे लाटने कौंसिलरोंको ऐसा हलका नहीं समझा जैसा लिनलिथगो साहबने। और लिनलिथगो साहबकी क्या बात? उनके मुंहसे तो अगरेजी सरकार बोला करती थी। उनकी बोली सुनकर क्रिप्स साहबके आनेके बहुत पहले ही गांधीजी ताड गये थे कि हिन्दुस्तानियोंको अगरेजी सरकार सिर्फ फोडना चाहती है। लिनलिथगो साहबने गाधीजोसे कहा था अल्पमतोंकी रजामन्दीके बिना हिन्दुस्तानके शासन विधानमे कोई फेर फार करना असम्भव है, आप जानते हैं अल्पमतकी समस्याने ही यूरोपको लडाईमे झोक दिया है, फिर इसी समस्याको यहाँ कैसे टरकाया जा सकता है? गाधीजी बोले कि किसी भी अल्पमतको किसी तरहकी तकलीफ न होवे इसके लिये शासन विधानमे धारायें रखवाऊँगा पर उभाड उभाड कर प्रतिक्रियावादी अल्पमतका सगठन कर देने की सरकारी कोशिशको बर्दाश्त न कर सकूंगा।

इन नेताओंकी सम्मतिके बावजूद काग्रेसकी कार्य समितिने क्रिप्स साहबके प्रस्तावको कई तरहसे परखा। उनसे बार बार मिली। बडे लाट साहबसे मिली और उस समयके प्रधान सेनापति लार्ड वेवेलसे मिली अनेक बार। जानना चाहा कि व्यवहारमें प्रस्ताव कैसा रंग लायगा? अन्तमें खूब समझ बझ कर कार्य समितिने इसे नामंजूर ही कर दिया।

किसी और सस्थाने भी इसे मंजूर नहीं किया। फिर तो अपना प्रस्ताव वापस लेकर क्रिप्स साहब १२ अप्रैलको इंगलैंड वापस लौट गये।

ब्रिटिश साम्राज्यवादकी इस चालबाजीसे कांग्रेस क्षुब्ध हुई जरूर तौभी प्रजातंत्रके रक्षार्थ लड़ाईमें मित्रराष्ट्रोंके साथ रहनेकी इसकी लालसा मिटी नहीं। इसके एक नेता श्रीराजगोपालाचारीने तो चाहा कि पाकिस्तानकी मांगको कांग्रेससे मनवाकर मुस्लिम लीगको पक्षमें करले; फिर सरकारके सामने संयुक्त मांग रक्खें। उन्हें उमीद थी कि ऐसा करनेसे एक रास्ता ऐसा निकलेगा ही जो देशकी रक्षामें हाथ बटानेका मौका हमें देगा। आखिर अप्रैलमें जो ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटी इलाहाबादमें बैठी उसमें उनने अपना उक्त आशयका प्रस्ताव भी पेश किया पर अत्यधिक बहुमतसे वे हार गये और कांग्रेससे अलग हो गये।

इधर गान्धीजी भारतके भविष्यकी कुछ और कल्पना कर रहे थे। ब्रिटिश सरकारकी कूटनीति देख देख उनका संकल्प कठोर होता जा रहा था। देशपर आफत आयी देख कांग्रेसने सरकारकी पूरी मदद करनी चाही। कार्यसमितिके अहिंसावादी सदस्योंने कहा—हम सरकारका नैतिक समर्थन करेंगे। हथियार लेने लिवानेका काम छोड़ और सब काम करेंगे।

दूसरे सदस्य बोले हम सब तरहसे मदद करेंगे। राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजादने तो कहा—"मैं मुल्ककी खातिर तलवार उठाऊँगा और दुश्मनोंसे भिड़ जाऊँगा।" कांग्रेसकी इतनी ही मांग थी कि सरकार हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई वगैरह सबोंके प्रतिनिधियोंकी संयुक्त राष्ट्रीय सरकार बनावें जो केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाके प्रति जवाबदेह हो, जो केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाकी रायसे देशके आमद-खर्चका सिलसिला ठीक करे और देशकी समुचित व्यवस्था करे। स्वभावतः प्रान्तीय शासन व्यवस्थामें भी कांग्रेस अनुकूल सुधार चाहती थी।

कांग्रेसका कहना था कि जनताका मन जीत लेनेके लिये आवश्यक है कि केन्द्र तथा प्रान्तमें सुधार किया जाय नहीं तो उसका विश्वास सरकारपर जम न सकेगा और वह न सरकारकी ललकारपर जी जानसे लड़ सकेगी। पर सरकारने कांग्रेसकी 'एक न सुनी'। उसे हमारे जनमतकी इतनी भी परवाह नहीं थी कि देशको लड़ाईमें शामिल करते वक्त वह व्यवस्थापिका सभासे पूछ भर लेती। कांग्रेसने इसे असत्य, अपमान समझा। उसने शासनसे अपना हाथ खींच लिया। फिर उसने व्यक्तिगत सत्याग्रह छेड़ा पर बराबर उसने ख्याल रखा कि सरकारके युद्धोद्योगमें बाधा न

पहुंचे। फिर क्रिप्स आये। गान्धीजीने उनकी योजना देखी। वह विषकी पेटारी थी। उसे गान्धीजीने अंगरेजोंका भीषण षड़यन्त्र समझा। उद्देश्य था हिन्दुस्तानकी फूटको बढ़ाकर स्थायी बना देना। अंगरेज इतना नीचे कभी न उतरे थे। इंगलैंडके सर आफत है। वह हिन्दुस्तानकी मदद चाहता है और मददकी कीमत देने आया है। तब ऐसी परिस्थितिमें कीमत देनेके बहाने हिन्दुस्तानको जहर पिलानेकी कोशिश करेगा—इसकी कल्पना भी गान्धीजीको न थी। उनका दृढ़ विश्वास हो गया कि अंगरेजी शासन और फूट एक चीज हैं। दोनो साथ रहेंगे। दोनों साथ जायगे। इसलिये ही उनने नारा लगाया, "अंग्रेजो! भारत छोड दो", जो क्रिप्स योजनाका माकूल जवाब है। उनने हरिजनमें लिखा—अभी तक हमारे शासक कहते आये हैं हमलोग खुशीसे विदा हो जाय अगर जान जाय किसको शासनका भार सौंपना है। उनको अब मेरा कहना है—भारतको भगवानपर छोड दो। अगर ऐसा करना अखरता हो तो उसे अराजक अवस्थामें ही छोड़ जावो।

मईके मध्यमे उनने एक मुलाकातीसे कहा—'मैं कहा करता था कि ग्रेट ब्रिटेनको मेरा नैतिक समर्थन प्राप्त है। पर कहते बड़ा खेद होता है कि आज उसे नैतिक समर्थन देनेसे मेरा दिल इनकार करता है। एका लानेकी सारी कोशिशे बेकार गयीं तब सहज ही मुझे यह तर्क मिला कि जब तक इस देशमें अंगरेजी हुकूमत रहेगी तब तक सच्चा एका नहीं होगा, क्योंकि सभी दलवाले विदेशी हुकूमतका मुंह जोहा करेंगे। आगे चलकर वह कहते हैं—"मैं समझ गया हूं, आजकल हमारा रहना व्यवस्थित अराजक परिस्थितिमें हो रहा है। ऐसे शासनको जैसा आज हिन्दुस्तानमें है देशहितके अनुकूल मान लेना शासनके नामको बदनाम करना है। इसलिये ऐसी व्यवस्थित और कायदे कानूनकी पाबन्द अराजकताको मिट ही जाना चाहिये। यदि इसके परिणाम स्वरूप हिन्दुस्तानमें बिलकुल उच्छृंखलता फैली तो भी मैं इस खतरेको उठाऊंगा, क्योंकि मेरा विश्वास है, बाईस सालसे जनताको जो अहिंसाकी शिक्षा मिल रही है वह बेकार नहीं गयी होगी और उस विशृंखलतासे ही जनता लोकतन्त्र विकसित कर लेगी।"

ब्रिटिश साम्राज्यवाद गांधीजीको इतना असह्य हो रहा था तो भी जापानी व्यवस्थासे जो इसका विरोध था वह तनिक भी धीमा न पडा था। उनने हरिजनमें लिखा—जापानियोंको दूर रखनेमे अंगरेजोसे ज्यादा मेरा स्वार्थ है। अगर वे यहाँ हार खा गये तो उनके हाथसे सिर्फ हिन्दुस्तान निकल जायगा, पर हिन्दुस्ता-

नियोंका तो जापानी जीतसे सर्वनाश हो जायगा।

अपनी उक्तिकी उत्तमताके इतने कायल गांधीजी हो रहे थे कि अंगरेज उनको सुन लेंगे—ऐसी उमीद उनको थी ही। हरिजनमें उनने लिखा—ब्रिटिश शासकोंके ईमानदारोंके साथ हमेशाके लिये बिलकुल चले जानेके बाद हिन्दुस्तानके अनुभवी नेता अपनी जवाबदेही समझेंगे और उस मौकेपर अपने मतभेदोंको भूल कर उन साधनोंके सहारे जिन्हें ब्रिटिश छोड़ गये रहेंगे काम चलाऊ सरकारका संगठन कर लेंगे। यदि वह सरकार मेरी आशाके अनुकूल हुई तब सबसे पहला काम उसका होगा रक्षाकी व्यवस्था करनेके लिये सयुक्त राष्ट्रोंसे संधि कर लेना। यदि उस सरकारको रीति नीति ठीक करनेमें मेरा हाथ रहा तब तो वह सरकार संयुक्त राष्ट्रोंको इतनी ही मदद देगी कि उन्हें स्पष्ट शर्तोंके मुताबिक भारत भूमिपर अपना काम करने दे। हाँ, व्यक्तिगत हैसियतमें कोई हिन्दुस्तानी चाहे रंगरूट बने चाहे उन्हें धन देवे।

गांधीजीकी वाणी और लेखनीने जनतामें नई जान डाल दी। 'अंगरेजो! भारत छोड़ दो' असंख्य कण्ठोंका नारा बन गया। ऐसी परिस्थितिमें कांग्रेसकी कार्य समिति १४ जुलाईको वर्धामें बैठी और उसने अपना सुप्रसिद्ध प्रस्ताव पास किया। कार्य समितिने कहा कि गुलामी बुरी है-इसलिये ही भारत आजादी नहीं चाहता है। उसकी आजादी तो दुनियांकी हिफाजतके लिये नाजीवाद, फासिस्टवाद, युद्धवाद और साम्राज्यवादके अन्यान्य विभिन्न रूपोंको नष्ट करनेके लिये आवश्यक है।

जबसे लड़ाई शुरू हुई कांग्रेस फूंक फूंक कर पैर धरती रही ताकि ब्रिटेनके युद्धोद्योगमें खलल न पहुंचे। आशा थी कि वह कांग्रेसकी सद्भावनाको समझेगा और हिंदुस्तानको आजाद कर देगा पर उसकी आशापर पानी फिर गया है।

'आज देशमें ब्रिटेनके प्रति विद्वेष है। जापानकी सफलतापर खुशी है। कांग्रेसको इस लिये बड़ी चिन्ता है। वह भारतको मलाया, सिंगापुर और वर्माकी राह चलते नहीं देखा चाहती। वह उसमें ऐसी मजबूती लाना चाहती है कि वह विदेशियोंके आक्रमणका मुहतोड़ जवाब दे सके। ऐसा तभी संभव है जब उसे आजादी मिल जाय।

विदेशी हुकुमतके हटनेपर ही यहाँ राष्ट्रीय एकता होगी। राजा, जमीन्दार

और जागीरदार अपनी शोषण वृत्तिको समझेंगे और कल कारखाने तथा खेतोंके श्रमिक अपना महत्व पहचानेंगे। और शक्ति तथा सत्ताका सूत्र उनके हाथ आवेगा। फिर स्वतंत्र भारत और ब्रिटेनके प्रतिनिधि साथ बैठकर अपने भविष्य संबंधका रूप तय कर लेंगे।

कांग्रेस इसके लिये राजी है कि मित्र शक्तियाँ अपनी फौज यहाँ आक्रमणोंके प्रतिकारके लिये रक्खे। भारत छोड़ दोका मतलब यह नहीं है कि सभी अंग्रेज यहाँसे चले जायं। मतलब है कि विदेशी हुकुमत उठ जाय और जो अपनेको विदेशी समझते हैं चले जाय। जो यहाँ वालोंके जैसे हो गये हैं, इस देशको जिनने घर बना लिया है उन्हे तो रहना है ही।

कांग्रेस उतावला नही बनना चाहती। वह ब्रिटिश सरकारसे अपील करती है कि भारतकी मांगको मंजूर कर ले।

अगर उसकी अपील नहीं सुनी गयी तब अपने हकपर पहुँचनेके लिये कांग्रेस अपनी सारी शक्तियोंका उपयोग करेगी। जिनका १९२० से अहिंसात्मक नीतिका अवलम्बन करके उसने संचय किया है।

पर यह प्रस्ताव इतना महत्वपूर्ण है कि औल इण्डिया कांग्रेस कमिटीकी राय पर इसे छोड़ देना जरूरी है। और औल इण्डिया कांग्रेस कमिटी बम्बईमे ७ अगस्त १९४२ को बैठेगी।

इस प्रस्तावको पढ़ कर भारतका दृष्टिकोण समझनेके बजाय इंगलैंडके राजनीतिज्ञोंने कांग्रेसको धमकाना शुरू किया और धमकी देनेवालोंमें क्रिप्स साहब भी शामिल हो गये।

---

६ अगस्त

इङ्गलैण्डकी देखा देखी अमेरिकाने भी गांधीजी और कांग्रेसके संबंधमें भ्रम फैलाना शुरू किया। पर जैसे जैसे कांग्रेसके खिलाफ विदेशियोका प्रचार बढता जाता वैसे वैसे कांग्रेस जनोका आपसी मतभेद मिटता जाता। अगस्त आते आते तो ऐसी परिस्थिति हो गयी कि सभी एक स्वरसे ब्रिटिश साम्राज्यवादके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ देनेकी आवश्यकतापर जोर देने लगे। सबोका विश्वास हो गया कि अंगरेजी सरकार अपने पंजेसे राजी खुशी हिन्दुस्तानको निकलने न देगी, वह मिट जायगी पर अपने साम्राज्यवादी शिकजेको ढीला न करेगो, अपनी भेद नोति न छोड़ेगी, हम हिन्दुस्तानियोको एक न होने देगी, ताकि हम आजाद हो सके। यदि सरकार जीत गयी तो हम जैसे पामाल हो रहे है, होते रहेंगे। यदि हार गयी तो विजेता आयेगा, वह हमारी फूटका फायदा उठा—हमें पामाल करना शुरू कर देगा।

इसलिये आवश्यकता है कि हम तुरत अंगरेजी सरकारको हटाये, एक बने, अभीको और आगेकी बला टालें।

ऐसो विचारधारासे ओतप्रोत अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी ता० ७ अगस्तको वम्बईमें वैठी जहाँ पण्डित जवाहरलाल नेहरूने अपना सुप्रसिद्ध अगस्त प्रस्ताव पेश किया। कार्य समिति तो वहाँ ४ अगस्तसे ही वैठी थी और प्रस्तावके शब्द शब्दपर गौर करके नेहरूजीके हाथ उसे सौंपा था। अगस्त प्रस्ताव क्या है कांग्रेसकी विचार धाराका निचोड़ है। प्रस्तावमें कहा है कि—

(१) हिन्दुस्तानकी भलाई और सयुंक्तराष्ट्रोकी जीत इसीमें है कि तुरत यहाँ ब्रिटिश हुकुमतका खात्मा हो।

(२) चीन और रूस वगैरहपर जो सकट आया है उसका कारण है सयुक्त राष्ट्रोकी साम्राज्यवादी नीति। उनकी साम्राज्यवादी नीतिको देख दुनियाको पीड़ित जनता उनकी पीठपर नहीं है। यदि वे उक्त नीतिको त्याग दे तो संसारके अगुआ वन जायं और ससारमे सच्चा प्रजातंत्र स्थापित हो जाय।

(३) हिन्दुस्तानको आजादीका हक मिल जाय तो वह सव दलोकी अस्थाई सरकार बनाय, अपनी और संयुक्त राष्ट्रोकी रक्षाकी पूरी चेष्टा करे, फिर

विधान परिषद बुलाकर वह सर्व सम्मत विधान तैयार करावे, विधान संघ शासनके अनुकूल, किसान और मजदूरके हाथमें ताकतकी कुंजी देता हुआ फिर आजाद हिन्दुस्तान और मित्र राष्ट्रोंका भविष्य संबध कैसा होवे इसे ये सभी एक दूसरेके लाभको देखते हुए तय कर लेंगे।

(४) हिन्दुस्तानकी आजादीको सभी पराधीन देशोंकी आजादीका लक्षण मानना चाहिये। इससे साम्राज्यवादकी समाप्तिका श्रीगणेश हो।

(५) यों तो इस सकट कालमें अखिल भारतीय कांग्रेस-कमिटीका लक्ष्य हिन्दुस्तानकी हिफाजत और आजादी है पर इसका पक्का विचार है कि विश्वकी शान्ति, सुरक्षा, सदुन्नति विश्वसघकी स्थापनापर ही निर्भर करती है। यह विश्वसंघ शोषण और पराधीनताकी समाप्तिका प्रतीक हो, तभी निरस्त्रीकरण हो सकेगा और केवल एक विश्वसघ सेना दल ससारकी लडाई भिड़ाईको रोक अमन कायम रख सकेगा। हिन्दुस्तान ऐसे विश्वसघमें सहर्ष शामिल होगा और अन्यान्य देशोंके कॉधेसे कॉधा भिड़ा वहिर्राष्ट्रीय समस्यायोंको हल किया करेगा।

(६) पर ऐसे विचारको किसीको अपनाते न देख कमिटी दुःखी है। चीन, रूस और अपनी दुर्दशा जो हो रही है उससे त्राण पानेके लिये इग्लैडके लिये आवश्यक है कि वह तत्काल हिन्दुस्तानको आजाद करे, पर वह साम्राज्यवादी घमण्डमें चूर है जो सहा नहीं जाता फिर भी उससे और संयुक्त राष्ट्रोंसे कमिटीकी आखिरी अपील है सभल जानेकी और हिन्दुस्तानको आजाद करके अपना और हिन्दुस्तानका गला बचानेकी।

(७) पर अपील करके ही चुप नहीं रहा जा सकता। हकपर पहुँचनेके लिये जैसी तैयारी हिन्दुस्तान कर रहा है उसे रोका नहीं जा सकता। इसलिये कमिटी निश्चय करती है कि अपने जन्म सिद्ध अधिकार स्वराज्यकी प्राप्तिके लिये हिन्दुस्तान वडेसे वडे पैमानेपर अहिंसात्मक ढगसे जन आन्दोलन शुरू करे। बाईस वर्षोंके शान्तिपूर्ण सघर्षसे जिन शक्तियोंका सचय किया है उन सवका उपयोग करे। ऐसा आन्दोलन अनिवार्यत गाधीजीके नेतृत्वमें ही हो सकता है। इसलिये गाधीजीसे प्रार्थना है कि देशका नेतृत्व करें और जो जो कदम लेना है सो हिन्दुस्तानको सुझावें।

(८) कमिटीने जनतासे अपील की है कि वह साहस तथा सहिष्णुताका परिचय

दे, खतरों और कठिनाइयोंका सामना करे, याद रक्खे कि इस आन्दोलनका आधार अहिंसा ही है। कमिटीने कहा कि जब कांग्रेसका संगठन छिन्न भिन्न हो जाय और ऊपरसे आदेश पानेकी संभावना न रहे, तब क्या स्त्री क्या पुरुष सभी मोटा मोटी जो आदेश मिल गया उसके आधारपर अपना कार्यक्रम आप ठीक करें और काम करते जाय जब तक भारत आजाद नहीं हो जाता

(६) अन्तमें समितिने साफ कर दिया है कि जो जन आन्दोलन होगा उसका लक्ष्य यह नहीं है कि कांग्रेसके हाथ हुकूमत आ जाय। जब हुकूमत मिलेगी हिन्दुस्तानकी सारी जनताको मिलेगी।

प्रस्ताव सुन कमिटीके प्रायः सभी सदस्य अपूर्व उत्साहमें आ गये। मालूम होता था मानो वहाँका वातावरण ही प्रस्तावका समर्थन कर रहा हो। ब्रिटिश साम्राज्यवादसे सभी ऊबे दीखते थे और आन्दोलन छेड़नेके लिये उतावलेसे नजर आते थे। पर नेताओंको अब भी उमीद थी कि अंगरेज सुलह करके रास्तेपर आजायेंगे। कमिटीकी कार्रवायी शुरू करते हुए ही मौलाना आजाद साहबने कहा था कि आजाद होते ही हिन्दुस्तान जापानका दोस्त बन जायगा इसका डर बेबुनियाद है; अब बात करनेका मौका नहीं है, काम करनेका है, इसलिये हम और ब्रिटिश सरकार एक साथ काम करें; यानी ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तानको आजाद घोषित करे और हम संयुक्त राष्ट्रके साथ मैदानमें दुश्मनोंसे लड़ने उतरें। सभापतिजीके बाद गांधीजी उठे थे और उनने कहा था कि मैं संकट में देख उनका सबसे बड़ा दोस्त बन गया हूँ, वे सब हारेंगे नहीं ऐसा मेरा विश्वास रहा है। पर सदस्योंकी भाव भंगिमा इन नेताओंकी प्रचंड आशावादिताका समर्थन नहीं कर रही थी। सदस्योंने संशोधनोंको नामजूर करते हुए नारे और जय जयकारके बीच अगस्त प्रस्तावको पास किया। लग भग २४० सदस्योंमेंसे १३ सदस्योंने विरोधमें हाथ उठाये।

प्रस्ताव पास हो जानेके बाद गांधीजी उठे। अढ़ाई घंटे उनका भाषण हुआ—हिन्दी में और अंग्रेजीमें। गांधीजीने कहा कि—हुकूमत मुसलमानोंके हाथ आयी तो मुझे आपत्ति नहीं होगी। उनकी जो सरकार कायम होगी उसकी मातहती मुसलमान ही नहीं, हिन्दू और दूसरे दूसरे फिरके भी स्वीकार कर लेंगे।

फिर उनने कहा कि प्रस्तावकी सूचना मैं बड़ेलाट साहबको दूंगा जिनका जवाब मिलते ज्यादा देर न होगी। पर मैं चाहता हूँ कि आजसे ही सदस्य ही नहीं बल्कि सारे

हिन्दुस्तानी समझ लें कि हमने गुलामीकी जंजीर तोड डाली और हम स्त्री पुरुष सभी आजाद हैं।

अंग्रेजीमें बोलते हुए उनने कहा कि देश और विदेशमे मेरे कितने ही मित्र हैं। जिनमें कुछको मेरी दानाईमे ही नहीं मेरी ईमानदारीमे भी शक है। मेरी दानाईकी वैसी कोई कीमत नहीं, लेकिन अपनी ईमानदारीको मैं बड़ी कीमती समझता हूँ। मैं अपनेको लार्ड लिनलिथगो साहबका दोस्त मानता हूँ। अंगरेज और संयुक्त राष्ट्रवाले अपना दिल टटोलें और बतलावें कि आजादीकी मांग करके कांग्रेस कमिटीने कौनसा कुसूर किया है? मुझको विश्वास है संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाके सभापति कांग्रेसका अविश्वास नहीं करेंगे। अंग्रेजो और संयुक्तराष्ट्रोको मौका मिला है ऐसा जो दुवारा नहीं मिलता कि हिन्दुस्तानको आजाद करके अपने सदुद्देश्योको प्रमाणित कर दें। फिर गाधीजीने हिन्दुस्तानके लिये दुनियाँकी सभी जातियोंका आशीर्वाद चाहा पर संयुक्त राष्ट्रोंसे तो पूरी मदद मांगी।

भाषणको समाप्त करते हो गाधीजीने कहा—अहिंसाको मानते हुए हर आदमी जो चाहे करनेके लिये आजाद है। वह हर तरफ जिच पैदा करे, हडताल करावे और अन्यान्य अहिंसात्मक साधनोंसे काम लेवे। सत्याग्रहियोंको कार्यक्षेत्रमे पिल पडना चाहिये जीनेके लिये नहीं, मरनेके लिये। जभी लोग निकल पडते हैं ढूँढ़कर मौतका सामना करनेके लिये तभी उनकी कौम मौतसे बची रहती है। बस हमलोग अब करेंगे या मरेंगे।

आज अगस्तकी आठ तारीख थी, अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीकी बैठकका दूसरा दिन। रातके करीब ग्यारह बजे थे। सदस्योंको सूचना मिली कि कल उन्हे फिर मिलना है जब कि झण्डा उत्थानके बाद गाधीजी आन्दोलनकी गतिविधिके सबधमे उन्हे आदेश देंगे। उमंग और आशा भरी उत्सुकतासे सभी ६ अगस्तकी प्रतीक्षामे सोये।

उधर बिडला हाउसमे जैसा कि डाक्टर सुशीला नायर लिखती हैं, सुबह चार बजेकी प्रार्थनाके समय महादेव भाईने बापूजीसे कहा कि रात एक बजे तक टेलीफोन आते रहे कि बापूजीको पकडने आ रहे हैं वगैरा। बापू कहने लगे, "मुझे कोई नहीं पकडेगा, सरकार इतनी मूर्ख नहीं कि मेरे जैसे मित्रको पकडे, और आजके मेरे भाषणके बाद तो पकड ही कैसे सकती है?"

"बापूजीका यह आत्मविश्वास बापूके दलके सभी लोगोंपर असर डाल रहा था। ... लेकिन यह आत्मविश्वास झूठा साबित हुआ। नौ अगस्तको सुबह ५॥ बजे महादेवभाई दौड़ते हुए आये और बोले, "बापू! पकड़ने आये हैं।" बापू झट तैयार

हुए। पुलिस अफसरने तयारीके लिये आध घटा दिया था। सबने मिलकर प्रार्थना की। ६ बजे बापू, महादेव भाई और मीरा बहनको लेकर पुलिस चली गयी। बा और भाई भी चाहते, तो साथ जा सकते थे, मगर बापूजीने समझाया, "तू न रह सके तो चले चल, लेकिन मैं चाहता तो यह हूँ कि तू मेरे साथ आनेके बदले मेरा काम कर।"

लगभग इसी समय कांग्रेस कार्य समितिके सभी सदस्य भारत रक्षा कानूनके मुताबिक गिरफ्तार करके कहीं भेज दिये गये। गिरफ्तारी इतनी झटपट हुई कि किसीसे कुछ सन्देश देते न बन पडा। हां! गांधीजी अपने सहायक श्रीप्यारेलालसे कहते गये कि आजादीका हर सिपाही 'करेंगे या मरेंगे' का बिल्ला अपने कपड़ोपर सीले जिससे कि सत्याग्रह करता हुआ यदि वह मारा गया तब वह अपने बिल्लेकी सहायतासे उन लोगोके बीचमे भी पहचाना जा सके जिन लोगोका विश्वास अहिंसापर नहीं है।

भिन्न-भिन्न स्थानोमे टिके हुए प्रतिनिधियोको घटनाचक्रकी कोई खबर न थी। वे ६ अगस्तको सुबहमे उठे और शिवाजी पार्कमे जहाँ झण्डा उत्थान होता, एक साथ पहुँचनेके लिये अपने अपने साथियोको फोन करने लगे तो देखा फोनका सबंध तोड दिया गया है। उनका माथा ठनका। वे इर्द गिर्दकी हवा सूंघने लगे। तुरत सडक पर नेताओंकी गिरफ्तारीकी घोषणा होने लगी और तरह तरहकी अफवाहें सुनायी देने लगी।

बिहारके प्रतिनिधि दम साधे सारा तमाशा देख रहे थे। एक साथी, गयाके श्री मदन मोहन सिह शिवाजी पार्ककी ओर बढ़े। वहाँ थोड़ी जनता और देश सेविकायें इकट्ठी हो गयी थीं। पुलिसने उन्हे तितर बितर करनेके लिये अश्रुगैसका प्रयोग किया। कुछ देश सेविकाओकी आँखोंपर उसका बहुत बुरा प्रभाव पडा। उन्हे भींजे रुमालकी मदद करते हुए श्रीमदन मोहन सिह वापस कांग्रेस भवन लौटे। देखा उसपर पुलिसका कब्जा हो रहा है। तत्काल स्वयसेवक और देश सेविकाएं कांग्रेस भवनमें घुस पड़े। फिर क्या था? पुलिसने कस कर लाठी चार्ज किया। कितनोका सर लहू लुहान हो गया। श्रीमदन मोहनने देश सेविकाओसे कहा—पुलिस अब खूंखार बन गयी, आप सब घर जायं।

सचमुच पुलिस सारे दिन लाठी चलाती रही और बन्दूक छोड़ती रही। वह स्थानीय नेताओको गिरफ्तार भी करती रही। क्षुब्ध जनताने ट्राम जलाया और ट्रक वगैरह। फिर सड़के काटी और उन्हे अच्छी तरह जाम कर दिया। पुलिसका दमन ज्यों ज्यो कठोर होता जाता जनताकी तोड़फोड़की प्रवृत्ति त्यों त्यों जोर पकड़ती जाती।
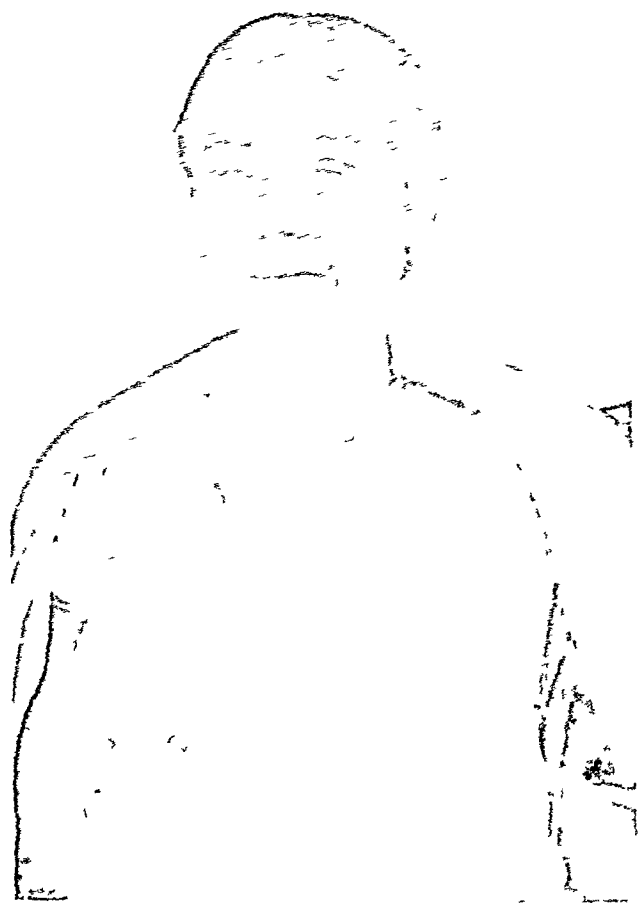
वागी आलइण्डिया काग्रेसकमिटा को
मंत्रिणा
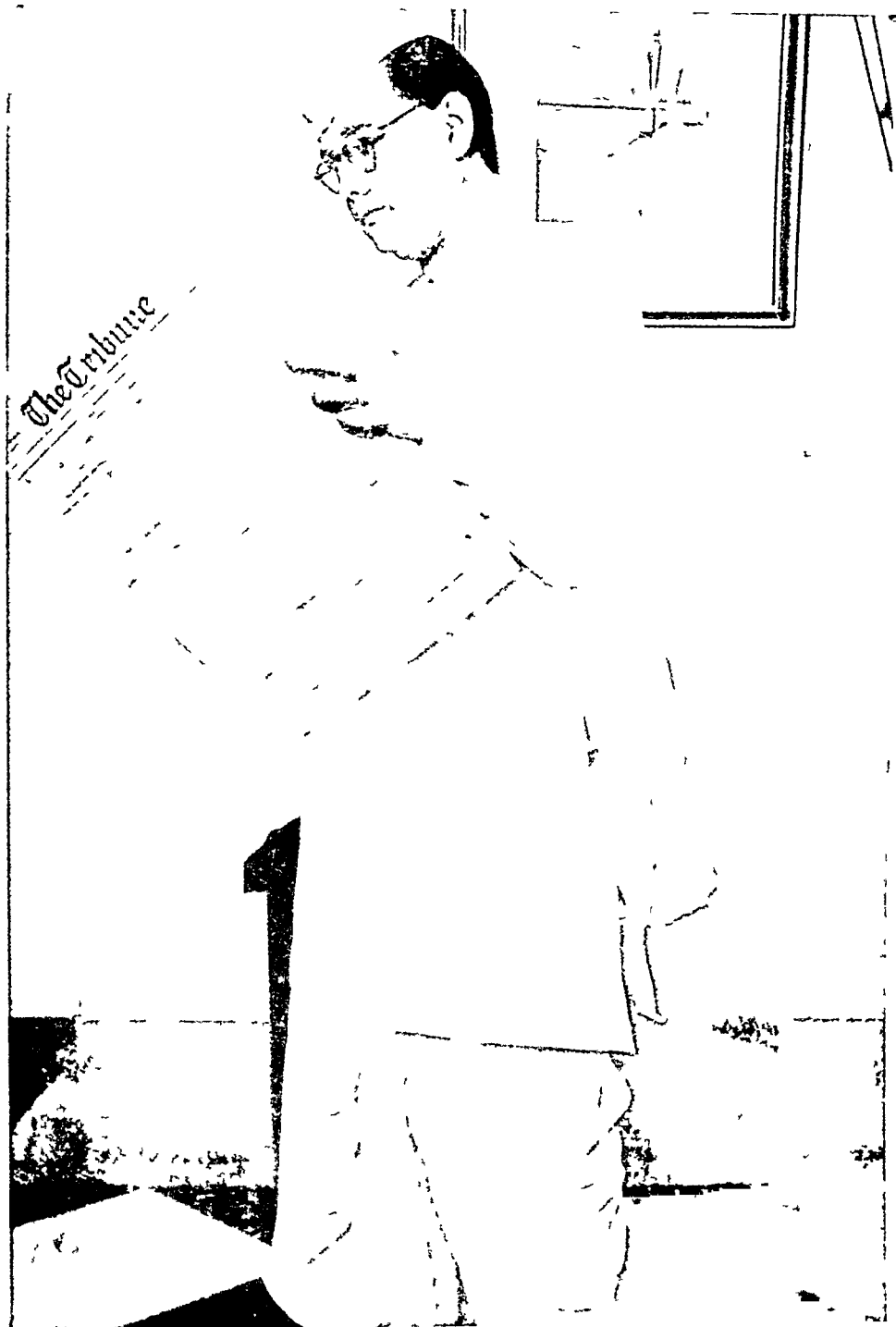
सशस्त्र क्रान्ति का साधक

पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीके कुछ सदस्योंको दूसरी चिन्ता सता रही थी। वे जानते थे, देशव्यापी आन्दोलन होगा। इसलिये वे चाहते थे कि विभिन्न प्रान्तोंके जो सदस्य आये हुए हैं उन्हें एक जगह बैठा कर एक देशव्यापी कार्यक्रम तैयार कर लिया जाय। बैठनेकी जगह बिड़ला भवनमें ही हो सकती थी क्योंकि गांधीजीने सबोंको वहीं बुलाया था और प्रतिनिधिगण वहां इकट्ठा हो भी रहे थे। इधर उधरके दृश्योंको देखती हुई श्रीमती सुचेता कृपलानी, श्रीखुरशैद बेन, श्रीमृदुला साराभाई भी वहाँ आ पहुँची, अपने साथ अनेक प्रतिनिधियोंको वे सब बटोरती आयीं। श्रीसादिक अली भी ऐन मौके पर आ मौजूद हुए।

श्रीमती सुचेता कृपलानी कहती हैं कि आते ही हमलोगोंने श्रीप्यारेलालसे पूछा कि महात्माजी हमारे लिये कुछ कह गये या नहीं? श्रीप्यारेलालने तब सबोंको महात्माजी-का करेंगे या मरेंगे वाला प्रोग्राम पढ़ सुनाया। अब और आवश्यक हो गया कि हम सब बैठ कर सलाह मशविरा करें और इस सन्देशके अनुकूल देशके लिये एक प्रोग्राम बना लेवें। हमने बिड़ला भवनमें जाना चाहा, मगर श्रीप्यारेलालने कहा कि हम वहाँ नहीं जा सकते। क्योंकि बिडलाजीको इच्छा नहीं है कि वहाँ कोई मीटिङ्ग होवे। हमने तब भवनके बाहर हातेमें ही बैठ जाना चाहा क्योंकि डर था यहाँसे हटते ही लोग तितर बितर हो जायगे और देशव्यापी प्रोग्राम न बन सकेगा। पर प्यारेलालजी बोले कि हम उनके मकानके हातेमें भी नहीं बैठें। लाचार हमें उस स्थानसे हटना पड़ा। मगर हम कुछ सतोषके साथ हटे क्योंकि खुरशैद बेनके पूछनेपर कि करेंगे या मरेंगेके सन्देशके अलावा और भी कुछ हमारे लिये है, प्यारेलालजीने उन्हें एक परचा दिया जिसमें बारह आदेश थे।

"बिडलाजीके यहाँसे बाहर होते ही हम छिटपुट हो गये। भिन्न भिन्न गिरोहमें कई जगह मिले पर किसी नतीजेपर पहुँच नहीं सके। सबोंका नाम मुझको याद नहीं है, पर वहाँ निश्चय ही श्रीअच्युत पटवर्धन, डाक्टर राममनोहर लोहिया, श्रीमृदुला साराभाई और श्रीमोहनलाल सकसेना थे। सबोंने तय किया कि ऑल इन्डिया कांग्रेस कमिटीका आफिस चलानेकी जवाबदेही श्रीसुचेता कृपलानीको सौंपी जाय। मैंने उसकी जवाबदेही लेली और डाक्टर राममनोहर लोहियाको सहायक रूपमें मांगा। श्रीलोहियाकी सहायता मुझको मिल गयी। फिर मैं श्रीसादिकअली और गिरिधारी कृपलानीके सहयोगसे ऑल इन्डिया कांग्रेस कमिटी आफिसका संचालन करनेमें तभीसे दत्तचित्त हो गयी।

"श्री प्यारेलालका दिया हुआ परचा श्री खुरशैद बेनसे लेकर मैंने श्री सादिक अलीको

दिया; और मेरे आदेशानुसार उनने उसे सरकुलरका रूप देकर टाईप कर दिया जिसकी एक एक प्रति १० अगस्तको ही मैंने प्रत्येक प्रान्तके मुख्य मुख्य कार्यकर्त्ताको दिया। बिहारका कोई कार्यकर्त्ता मुझको न मिला। इसलिये वहाँ उस परचेको मैंने एक खास आदमीके मार्फत भेजा।"

परचेके सारांशका हिन्दी रूपान्तर ये हैं :—

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीका बारह आदेशोंवाला कार्यक्रम —

आदेश न० (१) देश भरमे शान्तिपूर्ण हड़ताल हो, नेताओंकी गिरफ्तारीका विरोध करनेके लिये और जबतक हम आजाद नहीं हो जाय तबतक हम आन्दोलन करते रहेंगे—ऐसा निश्चय जतलानेके लिये—

शामको सभा हो, जहाँ जनताको अंग्रेजो भारत छोड दोका नारा समझाया जाय। सभामे शामिल होनेको मनाही हो तो न माना जाय।

(२) नमक बनाया जाय। नमक कानून तोडा जाय।

(३) गांवोके तमाम लोग असहयोग करें, सरकारको माल देना बन्द करें। जहां जमीदारी है वहाँका जमीदार अगर जनताका साथ दे रहा है और सरकारसे असहयोग कर रहा है तब लोग उसको लगानमे उसका हिस्सा जो हो सो दें।

(४) १६ सालसे ज्यादा उम्रवाले विद्यार्थी कालेज और विश्वविद्यालयका त्याग करें और इस अहिंसात्मक आन्दोलनको सफल बनावें। हमारे नेता गिरफ्तार कर लिए गये। जो चन्द बच रहे है जल्द जेलमे ठूँस दिये जायेंगे। विद्यार्थी उनकी जगह ले सकते है।

(५) अपने देशके जीवन मरनको लड़ाईमे सरकारके अमलोको उचित है कि सरकारका साथ न देकर देशका साथ दे। वे सब सरकारी नौकरी छोड दें। अगर सरकारी नौकरी छोड़ देनेकी ताकत उनमे नहीं है तब इतनी हिम्मत तो होनी ही चाहिये कि जब सरकार हुक्म दे कि जनताको दबाओ और कुचल दो तब वे साफ ना कर दें। वे बरखास्त कर दिये जायं तो भी परवाह न करें।

(६) फौजका हरेक सिपाही अपनेको काग्रेस जन समझे। अफसरोंके हुक्मको जो विवेक विरुद्ध हो न माने। अहिंसात्मक समूहो तथा शान्त सभा और जलूसोंको लाठी वा गोलीका शिकार न बनाये और न उनपर अश्रुगैस छोडे।

(७) देशी राज्यके शासक आजादीकी लडाईमे हमारा हाथ बटावें और वहाँकी प्रजा भी इस आन्दोलनमें शामिल होवे। उनको लड़ना तो अंग्रेजी सरकारसे है, पर

अगर रजवाड़ोंने सरकारका साथ दिया तब तो दोनोंके सम्मिलित गुटसे सभी प्रजाको लड़ना पड़ेगा।

(८) महिलागण आन्दोलनमे शामिल हो और अपने अहिंसापूर्ण त्याग तथा कष्ट सहिष्णुतासे हिन्दुस्तानियोंमे जान डाल कर क्रान्तिको तेज और तुरत सफल होने वाली बनावें।

(९) हरेक स्त्री और पुरुष करेंगे वा मरेंगेका बिल्ला धारण करे जिससे मालूम हो कि उसका दृढ़ निश्चय है कि आजादी हासिल करूंगा वा इसी कोशिशमे मर मिटूंगा।

(१०) यह ऐसा आन्दोलन है जिसमे हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी और ईसाइयोंको शामिल होना है। आजादी सबकी चीज है। सम्प्रदाय वा धर्म्मसे इसका कोई मतलब नही।

(११) गान्धीजी जेल गये। आज उनकी जगहपर हिन्दुस्तानका हरेक स्त्री पुरुष है। उसे आजाद जैसा रहना है, आजाद जैसा मरना है। यह हमारी आखिरी लडाई है। अगर सब अपना फर्ज अदा करें तब दो महीनेमे हमारी लड़ाई खत्म हो जाय।

विदेशी हुकुमतका खात्मा करना हमारा लक्ष्य है। इस लक्ष्य तक पहुँचनेके लिये अहिंसाकी लक्ष्मण रेखाके भीतर जो जो काम हो सकते हैं सभी करने हैं, सभी जायज हैं। सरकारकी कमर तोड देनेवाले सभी अहिंसात्मक साधनोंको हरेक प्रान्तवाले सोच निकालें और अमलमे लावे। हरेक आदमी आप ही अपना नेता है, आप ही अपनी राह दिखानेवाला है। हरेक प्रान्तको आन्दोलनके संचालनकी पूरी आजादी है।

(१२) हमलोग कताई न छोड़ें। अगर लाखो कातने लगें तो आन्दोलनको बडा बल मिल जाय।

विहारको इन कार्रवाइयोंकी खबर वबईमे न लग सकी। वाबू जगतनारायण लाल शहरमे घूमते रहे। उनने वहाँका लकाकांड देखा। एक सभामे भाग भी लिया पर फिर उनका सम्पर्क श्रीमृदुला बेन, श्रीसुचेता कृपलानीसे न रहा।

विहारके प्रतिनिधियोंको प्रान्त लौटनेकी जल्दी थी। उनका प्रोग्राम तैयार था जिसे तत्काल काममे लानेकी धुन थी। पूर्णियाके श्रीवैद्यनाथ चौधरीके शब्दोंमे कहा जाय तो यह कि वे प्रोग्रामको बबई भी इसलिये ले गये थे कि मौलाना आजाद, सरदार पटेल और गान्धीजीसे उसे स्वीकृत करा लिया जाय। इसका सुअवसर उन्हें न मिला, जिसके

लिये उन्हे खेद था। किन्तु उत्साहमे सरसो बराबर भी कमी नहीं हुई क्योंकि अपना प्रोग्राम ज्योका त्यो बना रहा।

विहारके सभी प्रतिनिधि कृत सकल्प ववईसे रवाना हुए। उनने देखा, खास खास जगहोमे रेलगाड़ी रोक कर स्थान स्थानकी पुलिस अपने यहाँके कांग्रेस नेताओंको गिरफ्तार कर रही है। वे चौकन्ने हुए। कितनोंने सोचा अपने स्थानमे उतर कर गिरफ्तारीकी सुविधाका लाभ उठाकर जेलमें सकुशल दाखिल हो जाना परिस्थितिकी सचाईका तकाजा नही है, हमे तो गांधीजीके शब्दोंमे मौतको ढूँढ़ निकाल उसका सामना करना है, गांवोंमे रहनेवालोंको 'करेंगे या मरेंगे' का सन्देश देना है, उनके बीच अपने प्रोग्रामका प्रचार करना है; हिसा और सरकारको दबानेके लिये सगठन करना है जिसके लिये ठेठ जनताके बीच खुले आम मिलकर काम करना है। इस विचारधारामे बहकर श्री मदनमोहन सिहने नैनी स्टेशन पार करके रेलको छोड़ दिया और गयाकी जनतामें शामिल हो गए। श्री जगतनारायण लालने नेउराके पाससे पटनेमे प्रवेश किया और वैद्यनाथ चौधरीने कुरसेला होकर पूर्णियांमे। इनके जैसे विचार रखनेवाले इसी ढंगसे कार्यक्षेत्रमे उतरे और खुलेआम खतरेको चुनौती देते हुए आन्दोलनकी आग जगाने लगे।

और सरकार भी दमन चक्र चलानेमे क्रूरता दिखाने लगी। उसने अगस्त प्रस्तावके जवाबमे साफ-साफ कह दिया कि कांग्रेसकी बात माननेके लिये वह बिलकुल तैयार नहीं है। उसको मालूम है कि काग्रेस कुछ दिनोसे हिसात्मक कार्रवाई करनेका खतरनाक तैयारी कर रही है, वह हड़ताल करायगी, तोड़ फोड़के काम करेगी; राज भक्तोंको भड़काना, देशरक्षामे विघ्न डालना वगैरह उसका काम होगा अगर उसकी बात न मानी गयी तो।

पर उसकी बात माननेका मतलब है देशमे उपद्रव करवाना, अराजकता फैलाना जो उन चेष्टाओंको विफल कर देगा जिन्हे मनुष्यमात्रको आजाद करनेके लिये सब लोग कर रहे हैं।

फिर काग्रेसकी माग तो भारतकी मांग नही है। बड़े बड़े फिरके, बड़े बड़े नेता उसके खिलाफ हैं। बहुत काफी लोग लडाईमे सरकारका साथ दे रहे हैं। क्या काग्रेसके कहनेसे सरकार उसके इन विरोधियोंको कुचल दे?

देशकी अनेक पार्टियोंमे काग्रेस भी एक पार्टी है। पर यह पार्टी देशोन्नतिकी राहमे बराबर रोड़े अटकाती रहा और आजतक देशमे इसने स्वशासन स्थापित नहीं होने दिया।

उसका कहना कि हिन्दुस्तानकी जनतामें ब्रिटिश सरकारको नीतिको लेकर असतोष है

'भारत-छोड़ो' प्रस्ताव के समर्थक

\ॻ११
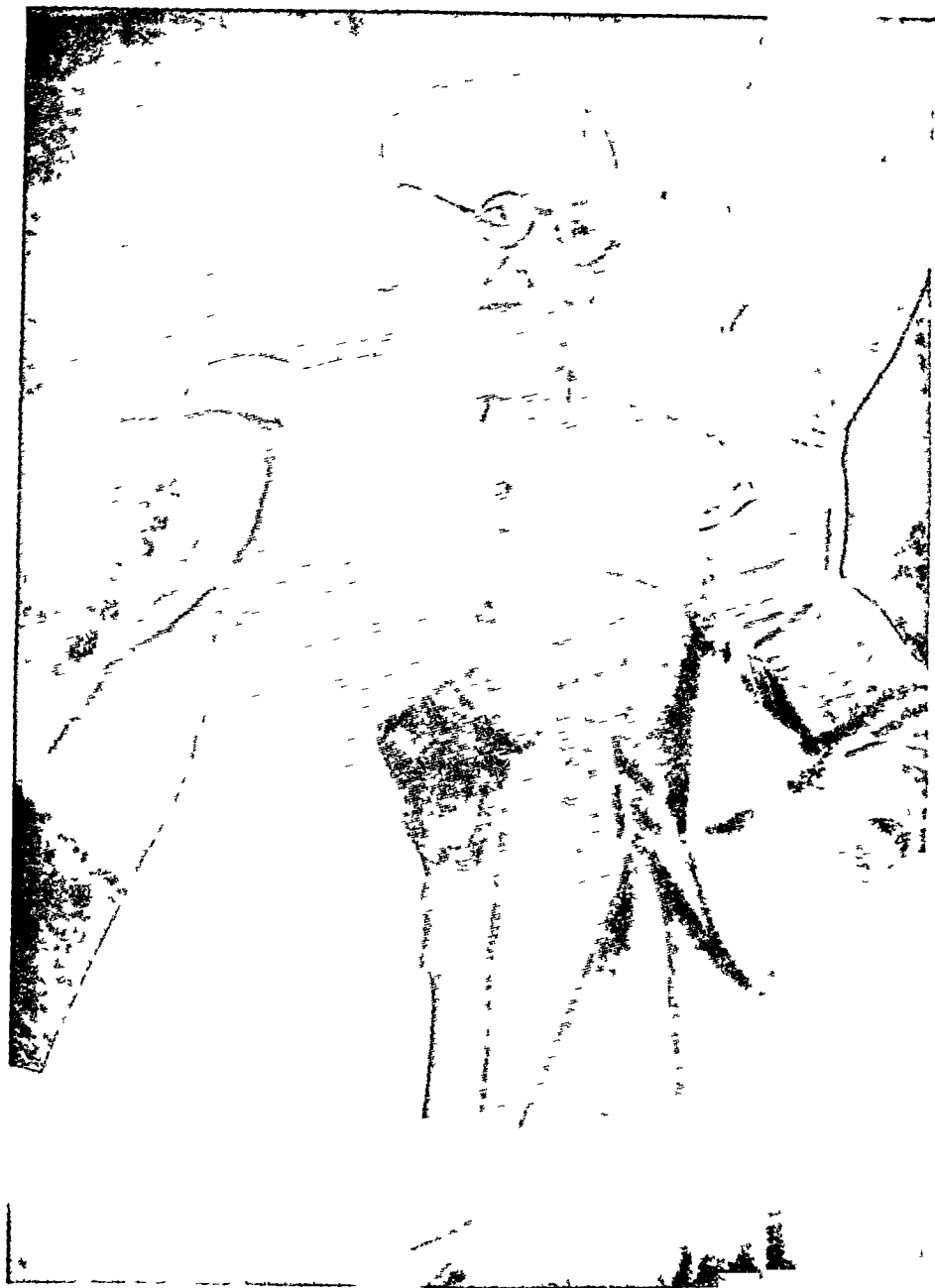
तत्कालीन राष्ट्रपति

और उसके प्रति अविश्वास फैल रहा है—सच नहीं है। ब्रिटिश सरकारने हिन्दुस्तानको स्वशासनकी गारण्टी दी है। कहा है कि लड़ाईके बाद सभी दलवाले मिलकर विधान परिषद् द्वारा अपने देशकालके अनुकूल विधान तैयार कर लेवें। सरकारकी इस घोषणासे हिंदुस्तान तो खुश है प्रसन्न है।

कांग्रेस पार्टीका दावा कि अंगरेजी सरकारके हटते ही हिन्दुस्तानके सब दल मिल कर टिकाऊ अनस्थायी सरकारका सगंठन कर लेगे, बिलकुल गलत है। हिन्दुस्तानमे तो ऐसी फूट है कि कुछ पूछो नहीं, इस फूटको दूर करनेकी कोशिश तो आज तक अंगरेजी सरकार करती आयी है तो भी हालत ऐसी है कि वह हटी कि अमन और आजादीके दुश्मन हिन्दुस्तानपर चढ़ बैठे। फिर अनस्थायी सरकारका सगठन कैसे होगा ?

इसलिये कांग्रेस पार्टीकी बात मान लेना मित्र राष्ट्रोको धोखा देना है, रूस और चीनको धोखा देना है ही, और उन आदर्शोंपर हरताल फेरना है जिनका समर्थन हिन्दुस्तानने दिल दिमागसे किया और कर रहा है, फिर ऐसा करना हिन्दुस्तानके लडाकोको धोखा देना है जिनका इतना यश है और उन सभी सहयोगियोको धोखा देना है जो काग्रेसका समर्थन नही करते, पर जिनने ब्रिटिश सरकार और देशी रियासतोमे युद्धोद्योगके बड़े बड़े काम किये हैं।

आज हिन्दुस्तानमे जो सरकार है उसमे हिन्दुस्तानियोका हाथ ज्यादा है, वह पहले से मजबूत है, और हिन्दुस्तानियोका अधिक प्रतिनिधित्व करती है। ऐसी सरकार को ऐसे नाजुक मौकेपर चुनौती दी गयी है। कितने दुखकी बात है।

पर सरकारका कर्तव्य स्पष्ट है। वह कांग्रेस पार्टीके विद्रोहको दबाएगी। वह कड़ी कार्रवाई करेगी और लोगोंको सजा देनेके ख्यालसे नहीं बल्कि युद्धोद्योगकी बाधाओको दूर करनेके लिये और उन खतरोसे बचनेके लिये जिनका उल्लेख किया गया है। और इसे अच्छी तरह समझते हुए कि हिन्दुस्तानके प्रति इसकी जवाब देही है और इसे मित्र राष्ट्रो तथा सभ्यताके हितको देखते रहना है।

इस लिये सभी हिन्दुस्तानी भेद भाव भूलकर सरकारकी मदद करे ताकि कांग्रेस पार्टीका विद्रोह कुचल दिया जाय, देशकी रक्षा हो और लडाईमे जीत हो, जिससे हिन्दुस्तानका ही भविष्य नहीं बनेगा बल्कि संसारकी सभी स्वतंत्रता प्रेमी जातियोका भाग्य चमकेगा।

इस प्रस्तावको पास करके अंगरेजी सरकार सिर्फ विदेशियोकी आँखोमे धूल

झोंक सकी। उसने मुस्लिम लीग, अम्बेदकर दल, और कम्यूनिष्ट पार्टी जैसी अन्यान्य पार्टियोंको भी अपनी कमर सीधी करनेका मौका दिया। पर कांग्रेस जनोंको उसका प्रस्ताव हतोत्साह न कर सका, उसने इसके खुले विद्रोहकी आगमे घीका ही काम किया।

—०꙳०—

विहारमें ज्वालामुखी फूटी

विहारके प्रतिनिधियोंके पहुँचनेके पहले ही नौ अगस्त विहारमे अपनी करामात दिखाने लगा। कार्यसमितिके अन्यान्य सदस्योंकी गिरफ्तारीकी खबर सदाकत आश्रममे सुबहको ही पहुंच गयी और लोग समझ गये कि अब जल्दी ही डाक्टर राजेन्द्र प्रसादकी बारी आ रही है। यहाँ लोगोंमे उत्साह था, काममे पिल पड़नेकी व्यग्रता थी। चिंता थी केवल राजेन्द्रबाबूके स्वास्थ्यकी जो दम्मेसे बेदम और ज्वरसे जर्जरित हफ्तोंसे शय्याशायी हो रहे थे। उन्हें भी पकड़कर किसी अज्ञात स्थानमे ले जायेंगे क्या! यह एक ऐसा सवाल था जिसे एक दूसरेसे पूछता और जवाब नहीं पाता। पर शीघ्र जवाब देनेके लिये सरकारके अधिकारी पहुँचे और आपसमे सलाह मशविरा करनेके बाद उनने राजेन्द्रबाबूको दोपहड़ चढ़ते चढ़ते जिला जेलके अस्पतालमे पहुँचाकर सुला दिया।

राजेन्द्रबाबू विहारके प्रति अपना फर्ज अदा करके विश्राम मन्दिर पहुँचे थे, मन प्रान्तको खुली बगावत सिखानेके लिये उछल रहा था, और तन शिथिल तथा क्लान्त हो रहा था। पर मन तनपर विजय पा रहा था। जब वाणीको शक्ति रहती तब वाणीसे और जब रोग उग्र बनकर उस शक्तिको भी क्षीणकर देता तब इशारेसे राजेन्द्रबाबू जुलाईके उतरार्द्धसे ही आन्दोलनकी गतिविधि प्रान्तके कार्यकर्ताओंको बतलाते रहें।

३१ जुलाईकी प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीकी आखिरी बैठकमे बोलते हुए आपने कहा, "इसबार महज जेल जाना नहीं है। अबकिका आन्दोलन भीषण है। सरकार घोरसे घोर दमन करेगी, गोली मारेगी, बम फेकेगी, सम्पत्ति जब्त करेगी। अबकी सब सभव है। इसलिये आन्दोलनमे शामिल होनेवाले कांग्रेस जन समझले उनपर सब तरहके खतरे है।" कुछ दम लेकर राजेन्द्रबाबूने अन्तमे कहा—"आइये, हमलोग मिल लेवें, कौन जाने फिर कौन किससे मिल सकेगा।" जिन जिनने भाषण

सुना समझ लिया कितना भीषण आन्दोलन आनेवाला है। गान्धीजी जेलके बाहर रहेंगे ऐसा शायद ही कोई विश्वास करता था। बहुतोंके मुखसे तो यही निकलता था कि अगस्त प्रस्ताव पास होते न होते गान्धीजी ही नहीं बल्कि सभी नेता जेलमें ठूंस दिये जायेंगे। सर्वश्री जगलाल चौधरी, दीपनारायण सिंह, मथुराप्रसाद, वैद्यनाथ चौधरीको भी कुछ ऐसी ही आशंका थी। इसलिये उनने आवश्यक समझा कि राजेन्द्रबाबूसे आन्दोलनका प्रोग्राम ले लिया जाये। हो सकता है फिर किसीको प्रोग्राम देनेका मौका न मिले। पर राजेन्द्रबाबू और कमजोर हो गये थे बोल भी नहीं सकते थे। हां, सर हिला सकते थे। इन लोगोंके लिये इतना काफी था। कागज लेकर राजेन्द्रबाबूके पास गये और बोले आन्दोलनमें जो जो करना पड सकता है एक एक करके सभी हम कहते जायेंगे और सिर्फ सर हिलाकर आप हां ना करते जाइयेगा। हम हावाले कामोंको लिखते जायेंगे और इस तरह आपका दिया अगस्त आन्दोलनका प्रोग्राम तैयार हो जायगा। राजेन्द्रबाबू बड़े खुश हुए और उपर्युक्त विधिसे प्रोग्राम बना दिया। बागी बिहारको यही पूंजी हुई। इस पूंजीकी तावतको पाकर पटना उत्साह पूर्वक उन्हें जेल पहुँचा आया। ..

राजेन्द्रबाबूके जेल पहुँचे थोड़ी देर ही हुई होगी कि श्रीफूलनप्रसाद वर्मा भी वहाँ पहुँचा दिये गये। उनकी गिरफ्तारीके एक डेढ़ घण्टा पहले कुछ विद्यार्थी उनके पास पहुँचे थे और प्रोग्राम मागा था। सर्चलाइट अखबार सामने था जिसमें एमरी साहब, तत्कालीन भारतमन्त्रीका वक्तव्य छपा था। एमरी साहबने तोड़फोड़ और ऐसे ही दूसरे दूसरे खतरनाक कामोंके प्रोग्रामको नेताओंकी गिरफ्तारीका कारण बतलाया था। फूलन प्रसादजीने विद्यार्थियोंको अखबार दे दिया और कहा "लीजिये यही प्रोग्राम है।"

एमरी साहबके वक्तव्यने अफवाहोंको आधार दे दिया। बतकहीको प्रोग्रामके रूपमें पेश किया। रेडियोने उनके वक्तव्यको प्रान्त भरमें प्रचार कर दिया। जिनने न अफवाह सुनी थी और न बतकहीकी खबर रखते थे उनने उस वक्तव्यसे ही जाना कि कांग्रेस क्या करना चाहती थी और उसे क्या करना चाहिये। पर आन्दोलनको जान मिली डाक्टर राजेन्द्रप्रसादके ही प्रोग्रामसे। श्री महेश्वर प्रसादके शब्दोंमें "९ अगस्तको पटनेके कार्यकर्ता नेशनल हालमें इकट्ठे हुए थे—उद्देश्य था आन्दोलनकी रूप रेखा समझ लेना—सभापति थे बाबू अनुग्रहनारायण सिंह। उनने कहा कुछ ऐसा काम करना पड़ेगा जिससे सरकार पंगु हो जाय। प्रश्न हुआ, रेल तार खतम किये जा सकते

हैं ? जवाब मिला..... परचा छप रहा है तैयार होते ही मिल जायगा। उसी परचेके मुताबिक सब काम करना है।

एक रातको सर्वश्री जगजीवन राम, बी० पी० सिंहा, ज्ञान साहा और पटना जिला कांग्रेसके सभापति और मंत्री मेरे डेरेपर इकट्ठे हुए और आन्दोलनकी तैयारीकी चर्चा की।

ता० ६ को राजेन्द्रबाबूकी गिरफ्तारीकी खबर मिली। डेरेपर विद्यार्थी पहुँचने लगे और प्रोग्रामका तकाजा करने लगे। परचे तैयार हो चुके थे। मैंने उन्हे परचे दिये जिनको शहरमे बांटना शुरू कर दिया गया। एक सुपरिचित वकीलने कहा इस परचेको किसने तैयार किया है ? इसपर नाम क्यो नही हैं ? यह किसके हुक्मसे बांटा जा रहा है ?"

पर कर्मठोको इस मौकेपर इस तरहकी छानबीन नही करनी थी। उनमेंसे कितने तो खबर पाते ही कि राजेन्द्रबाबूको गिरफ्तार करने पुलिस सदाकत आश्रम पहुँच गयी है, राजेन्द्रबाबूके दर्शनको दौड़ पड़े थे।

नेताओंकी गिरफ्तारीके विरोधमे शामको शहरने हड़ताल मनायी। पर दिनके तीन बजे ही एक बड़ा जलूस निकला। छात्र सघके प्रयत्नसे लग भग चार हजार विद्यार्थी उसमे शामिल थे। जलूस शहरके खास खास हिस्सोमें अगस्त क्रान्तिके नारे लगाता हुआ बाँकीपुर जिला जेल पहुँचा और बुलन्द आवाजमे अपने वन्दी नेताको वचन दिया—'करेंगे या मरेंगे'। वहाँसे जलूस लाट साहबकी कोठीपर पहुँचा और बिहारके रोब तथा सकल्पका प्रदर्शन करता रहा। लाट साहबकी सुख निद्रा भंग हो गयी।

दस अगस्तको सदाकत आश्रम जब्त हुआ और नेशनल हाल भी। शहरके छात्रोंके बीच बड़ी चहल पहल रही। वे अपनी अपनी सस्थाओंपर धरना देने लगे जिससे कम ही अध्यापक और छात्र घुस पाये। फलस्वरूप स्कूल और कालेज खालीसे नजर आने लगे और इनकी इमारतोपर राष्ट्रीय झण्डा फहराने लगा। छात्रावास भी अपने सरसे झण्डा उड़ा रहा था।

बाँकीपुर कन्या हाई स्कूलपर छात्रोंने धरना दे रक्खा था। उन्हे हटानेके लिये लौरी भर कर पुलिस आयी और विद्यार्थियोको हिरासतमे ले लिया। इससे विद्यार्थी समाजमें बड़ी उत्तेजना फैली और लगभग ५०० विद्यार्थी वहाँ जमा हो गये। सस्था वन्द हो गयी और पर्याप्त सख्यामे लड़कियोने प्रदर्शनमें भाग लिया।

सिटीके विद्यार्थियोंमे भी वैसी ही चहल पहल थी। प्रदर्शन और धरना समान रंग ला रहे थे।

आजकी हड़ताल तो पूरीकी पूरी रही। पटना और पटनासीटी दुकानें बन्दकर अंगरेजी सरकारको कोस रहे थे।

दोपहरको देश सेविकाएँ निकली श्रीभगवती देवीके नायकत्वमे। साथ विद्यार्थियों और अन्य कार्यकर्त्ताओंकी अच्छी तादाद थी। जलूस पटनाकी अदालतमे पहुँचा। वेशुमार भीड़ पीछे लग गयी। 'अंग्रेजो! भारत छोड़दोका' नारा अधिकारियोंको वदहवास करने लगा। अदालत बन्द हो गयी और पुलिसने वहाँ दस प्रदर्शन कारियोको गिरफ्तार कर लिया।

शामको वाँकीपुर मैदानमे सभा हुई। दस हजारकी उपस्थिति थी। निश्चय हुआ कि स्कूल कालेजोका धरना मजबूत किया जाय, और कचहरियो, सरकारी इमारतो और सेक्रेटेरियटपर राष्ट्रीय झण्डा फहराया जाय। सिटीके आन्दोलनकारियोने भी मंगल तालावपर सभा करके ऐसा ही निश्चय किया।

जिलेके भीतर भी ऐसी ही परिस्थिति रही। विहार शरीफमे १० अगस्तको जलूस निकला और श्रीअयोध्या प्रसाद अपने कुछ साथियो सहित गिरफ्तार कर लिये गये। वहाँ किसानोका भी जत्था आया। उसने शहरमे प्रदर्शन किया और कचहरीपर झण्डा फहराते हुए गिरफ्तार होकर जेलकी राह ली।

वखतियारपुरमे हड़ताल हुई दुकानदारोंको और विद्यार्थियोकी, और कई कांग्रेस कार्यकर्त्ता पकडे गये। इन दिनोकी परिस्थितिका वड़ा सुन्दर चित्र श्री जगलाल चौधरीने (आजके आनरेवुल मिनिस्टर, आवकारी विभाग) अपने वक्तव्यमे खीचा है। वे लिखते हैं—

"७ अगस्त १९४२ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटोकी वैठक वम्वईमें होनेवाली थी जिसमे पूज्य महात्माजीके 'भारत छोडो' प्रस्तावपर विचार होनेवाला था। पूज्य देशरत्नजी उन दिनो वीमार थे, अत वम्वई न जा सके थे, वे सदाकत आश्रममें ही पड़े थे।

उक्त तिथिके ८ दिन पहले विहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीकी वैठक सदाकत आश्रममे बुलायी गयी थी, जिसमे सभी जिलाओंके लगभग सभी नेतागण आये थे। पूज्य देशरत्नजी उस वैठकमे भाग न ले सके पर उनने कह रक्खा था कि सदाकत आश्रमसे वापस जानेके पहले प्रत्येक जिलाके दो एक प्रमुख कार्यकर्त्ता उनसे अवश्य मिल ले।

प्रा० का० कमिटीके तीन मंत्रियोंमेसे एक, श्री सत्यनारायण सिंह, प्रधान मंत्री, अनुपस्थित थे और अन्य दो श्री दीपनारायण सिंह और मैं उपस्थित थे। हम दोनोंके

मनमें कभी कभी ऐसी बात उठ रही थी कि बम्बईमे 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव स्वीकृत होते ही नेतागण पकड़ लिये जायेंगे और जेलमें रख दिये जायेंगे और हमलोगोंको राह दिखानेवाला कोई रह न जायेगा। पर कभी कभी ऐसा भी मनमे आता था कि केवल प्रस्ताव ही स्वीकृत होनेपर सरकार गिरफ्तारी न आरंभ करेगी, वरन देखेगी कि प्रस्तावको किस प्रकार कार्यान्वित किया जाता है। महात्माजी भी प्रस्ताव स्वीकृत होते ही उसे कार्यान्वित न करेंगे वरन वाइसरायको पत्र लिखेंगे, उन्हें अपना प्रोग्राम बतलावेंगे और कोई तिथि निश्चित करेंगे जिस दिन तक प्रतीक्षा करेंगे कि सरकार हमारे देशकी मांग स्वीकार करती है या नहीं, उक्त तिथि तक मांग स्वीकृत न होनेपर वे अपने प्रोग्रामको चालू करेंगे। अभी तक महात्माजीने अपना कोई भी प्रोग्राम देशको न दिया था, हां दो एकबार उनने ऐसा अवश्य लिखा था, अबतक सत्याग्रहके लिये जितने कार्यक्रम समय समयपर काममे लाये जा चुके है वे सभी इसबार काममे लाये जायेंगे और कुल काम थोड़े समयमे बड़ी द्रुतगतिसे किये जायंगे।"

मेरा प्रोग्राम गया, डालटेनगंज और गुमला जानेका था। वहॉसे वापस आ छपरे जाना और वहाँ कई दिन ठहरना था। ७ अगस्तको सदाकत आश्रममें वापस आना और ६ अगस्तको बाढ़, मोकामा तथा मुंगेर जाना था, ११ अगस्तको भागलपुर और वहॉसे चाइबासा जाना था। इसके अनुसार मैं गया आश्रममें पहुँचा, जिला कांग्रेस कमिटीका कुछ हिसाब आदि देखा। डालटेनगंज स्टेशनपर ही मुझे पता लगा कि मेरा पत्र वहॉके कांग्रेस आफिसमे अभी पहुॅचा था और इसके पहले ही वहॉके कार्यकर्त्तागण किसी देहातमे चले गये थे। अतः मैं डालटेनगंज उतरा नहीं और वहॉसे गुमला होकर पटने वापस आ छपरे गया। छपरेमे ७ अगस्तको मित्रोंसे बाते करते करते मुझे पता लगा कि महात्माजीके सूत्र वचनोंकी व्याख्या जो हमने पटनेमे की थी उसकी चर्चा कही भी किसी प्रमुख कार्यकर्त्तासे न की, और अब समय न रहा। छपरेमे एक जिम्मेदार मित्रको मैने सारी बाते कही और वहांसे पटनेकी राह ली।

उसी दिन यानी ७ अगस्तको सन्ध्या समय सदाकत आश्रममें मैं आ पहुँचा। अखबारवालोंसे पता लगा कि उस दिन 'भारत छोड़ो' प्रस्तावपर फैसला न हुआ। ८ अगस्तको सन्ध्या समय टेलीफोनपर खबर मिली कि वह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया, केवल १३ कम्युनिस्ट मेम्बराननें विरोधमें वोट दिया।

६ अगस्तको सुबहकी गाड़ीसे मैं बाढ़के लिये चल पड़ा। अपना संदेशा देकर दूसरी गाड़ीसे मोकामा चला। वहॉ भी संदेशा देकर मैं मुंगेरकी ओर बढ़ा। ११ बजे

रातको तिलक भवन मुंगेरमें पहुँच कर फाटकपर आवाज दी। अन्दरसे उत्तर मिला, "यहाँ कांग्रेसवाले नहीं हैं, आश्रम पुलिसकी दखलमें है।"

कह चुका हूँ कि हम दोनों मत्रियोंके मनमें दुविधा थी अर्थात् दो प्रकारकी भावनाएँ मनमें उठती थीं। हम दोनों बहुत चिंतित थे कि यदि नेतागण एकाएक पकड़ लिये गये तो हमलोग पथ प्रदर्शन किससे पायेंगे। महात्माजीने तो कोई निश्चित प्रोग्राम दिया नहीं, उनका सूत्र वचन 'आज तकके सत्याग्रहके सभी प्रोग्राम कार्यान्वित होंगे' सबका पथ प्रदर्शन न कर सकेगा। हम लोगोंने तय किया कि पूज्य देशरत्नजीसे इस सूत्रकी व्याख्या करा कर लोगोंको समझा दिया जाय। हम लोग उनके यहाँ पहुँचे। श्रीमथुराप्रसादजी भी वहीं थे। पू० बाबू तो बैठ भी नहीं सकते थे, बोल चालकी मनाही थी। यह बात तय पायी कि व्याख्या हम दोनों करें, पू० बाबू जिसे उचित समझें उसपर 'हाँ' और जिसे अनुचित समझें उस पर 'ना' कर दें।

इस तरीकेसे उनकी अनुमति लेकर एक लम्बा प्रोग्राम तैयार किया गया और वह प्रोग्राम श्रीमखिचन्द जायसवालके हवाले किया गया कि वे उसे छपवा लें, पर उसे तब तक गुप्त रखा जाय जबतक उसे प्रकाशित वा प्रचार करनेकी आज्ञा पूज्य बाबू वा उनके द्वारा मनोनीत किसी नेताकी ओरसे न हो अथवा एकाएक नेतागण पकड़ न लिये जाय। गुप्त रखनेका अभिप्राय तो यह था कि जबतक अ० भा० कां० कमिटी द्वारा 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव स्वीकृत नहीं होता और जबतक इसे कार्यान्वित करनेकी घोषणा कांग्रेसकी ओरसे न हो जाती तब तक प्रोग्रामका प्रचार करना सत्याग्रहीके सिद्धान्तके अनुकूल नहीं होता, और बात ऐसी भी हो सकती थी कि इस बीच महात्माजी कोई निश्चित प्रोग्राम दे भी देते। पूज्य बाबूने हमें यह भी कह दिया कि सभी जिलाओंके दो एक प्रमुख नेताओंको हमारी व्याख्या मालूम हो जानी चाहिये और उन्हें यह भी जान लेना चाहिये कि इस व्याख्याका प्रचार कब होना चाहिये और कबतक इसे गुप्त रखना चाहिये। मेरे मनमें ऐसी बात भी आयी कि पूज्य बाबूने सभी जिलाओंके प्रमुख नेताओं को अपने यहाँ आवाहन किया है उसका अभिप्राय यही हो सकता है कि उन्हें इस व्याख्याका कुछ आभास दिया जायगा। यहाँ इस व्याख्याका पूरा चित्र खींचनेकी आवश्यकता जान पडती है पर मैं केवल महत्त्वपूर्ण बातें दे देना चाहता हूँ:—

(१) हमारे कुल कार्य अहिंसाके सिद्धान्तके अनुकूल ही होने चाहियें। सत्य परायणता और अभय सबसे आगे रहने चाहिये। प्राण देनेकी आवश्यकता आन पड़े तो हिचकना न चाहिये पर किसी भी हालतमें दूसरोंकी हानि तिल भर भी न करनी चाहिये।

(२) सरकारसे पूर्ण असहयोग कर डालना चाहिये। उसके सभी कार्य बन्द हो जाने चाहिये। जितने उसके नोकरान है सबोंसे अपील करनी चाहिये कि वे नौकरी छोड दे। आम जनतासे अपील करनी चाहिये कि किसी भी प्रकारकी सरकारको सहायता न दी जाय। स्कूल, कालिज, कचहरी, डाकघर, तारघर, रेलवे, जहाज आदि सब बंद हो जाना चाहिये। सरकारकी राजव्यवस्था बिलकुल रुक जानी चाहिये।

(३) जब पुलिस और कचहरीके कार्य रुक जायेंगे तब चोर डाकू आदिके लोगोंकी रक्षा करना भी हमारा ही वर्तव्य हो जायगा। उसीमे हमारी सेवाकी परीक्षा होगी। चोरोंको भी साधु बना डालना होगा।

(४) रचनात्मक कार्यमे पिल पड़ना होगा। कोई भी आदमी बेकार न रहने पावे। अराजकता न फैलने पावे।

(५) पूरा असहयोग हो जानेपर भी कुछ लोग जो हमारे विचारोंसे सहमत नही हैं अथवा विदेशी लोग सरकारी व्यवस्था चलाते रहनेका उद्योग करेंगे ही। राष्ट्रीय सेवकोंके दमनके लिये विदेशी फौज तथा यन्त्र आदि लाये जायगे। उनके प्रतिकारके लिये —

(क) रेलोंको पटरियां उखाड़कर लोगोंका आना जाना वन्द कर दे सकते हैं पर ध्यान रखना होगा कि इस वजहसे एक भी आदमीको जरा भी चोट न आने पावे। जिस जगहपर रेलकी पटरी तोड़ी जाय उसके दोनो ओरके स्टेशन मास्टरोंको सूचना मिलनी चाहिये ताकि वे गाडिया अपने स्टेशनोंसे आगे न बढ़ने दे। पटरी तोड़नेकी जगहपर लाल झण्डा खड़ा कर दिया जाय (रातके समय लाल रोशनी रहे)। और एक समझदार स्वयंसेवक उस जगह मौजूद रहे जिसमे भूलसे आनेवाली कोई ट्रेन उलट न जाने पावे।

(ख) तारोंको काट कर समाचारका आना जाना रोक दे सकते हैं।

(ग) सड़कोंको काट कर और उनके ऊपरके पुलोंको तोड़ कर मोटर आदिका आना जाना रोक दे सकते है।

(घ) किसीके हाथमे हिंसाके साधन अर्थात् बन्दूक आदि हो तो उन्हें छीनकर तोड़ ताड़कर वापस कर देना जरुरी होगा।

अन्य छोटी मोटी बाते जो उस समय तय पायी उन्हे मैं अधिक महत्व नहीं देता। प्रा० का० कमिटीकी बैठक समाप्त हुई, सभी सदस्यगण अपने घर वापस गये। प्रत्येक जिलाके कुछ प्रमुख कार्यकर्त्ता भी पूज्य बाबूसे मिले और वापस गये। मैं भी अपने पूर्व निश्चित प्रोग्रामके अनुसार भ्रमणमे निकला।

विद्रोही विहार का मंत्रदाता
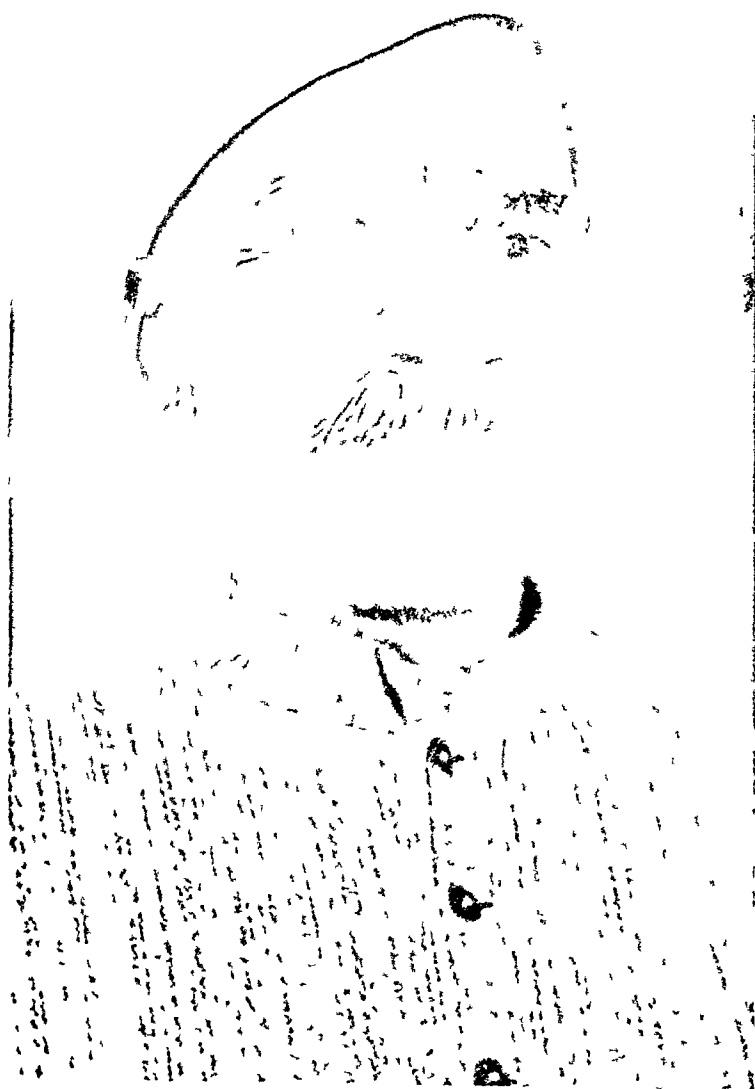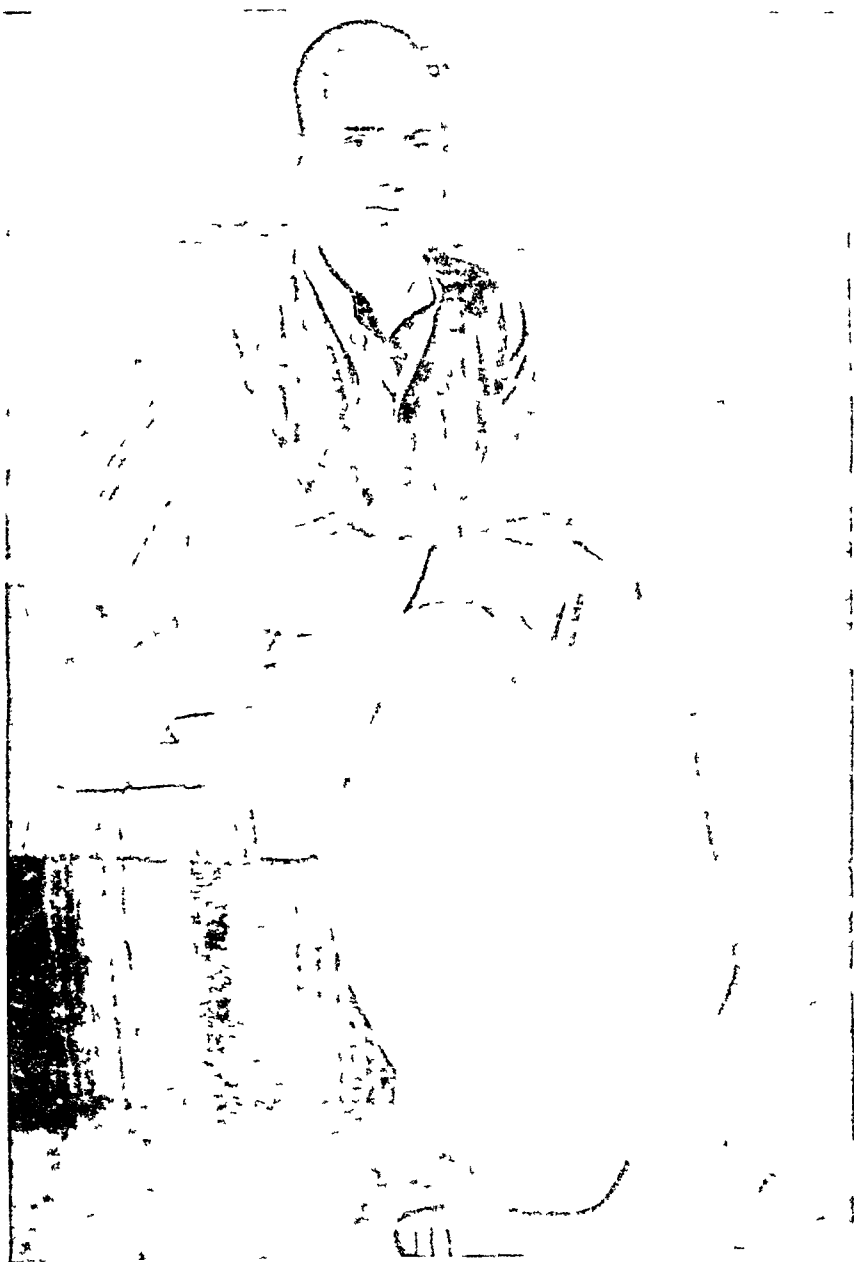
'आजाद्-दस्ता' का संस्थापक

अब तो सारी बातें हमारी नजरोंके सामने आ गयी। मैंने समझ लिया कि अब तक सभी नेता जेलके अन्दर बन्द हो गये होंगे। मैं तुरत मुंगेर खादी भण्डारकी ओर चल पड़ा। उसका दरवाजा बन्द था, पर रोशनी हो रही थी। मैंने आवाज दी। मेरी बोली पहचान ली गयी और दरवाजा तुरत खुला। मैनेजर श्री रामविलास शर्मासे पता चला कि बम्बईमें कार्य समितिके सभी सदस्य गिरफ्त हो गये, वहाँपर ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटीके जो भी सदस्य मौजूद पाये गये वे सब तथा प्रान्तीय काग्रेस कमिटी तथा अन्य का० कमिटियोंके सदस्य भी पकड़ लिये गये, पटनेमें पू० श्री देशरत्नजी, श्री मथुरा बाबू, तथा अन्य जो भी प्रमुख कार्यकर्ता पाये गये सो भी गिरफ्त हो गये, मुंगेरके केवल दो ही कार्यकर्ता अब तक गिरफ्त हो सके थे। मैं तो १० अगस्तका दिन मुंगेरमे ही बितानेका निश्चय कर गया था पर मित्रोंने मुझे सलाह दी कि यदि मुझे अपना सदेश अधिक लोगोंको देना हो तो कहीं भी देर तक न ठहरना चाहिये। उनने कहा कि अब तो मुंगेरके लोगोंको संदेश मिल ही जायगा, अब मुझे जल्दीसे जल्दी आगे बढ़ना चाहिये। अत मैं सुबहको ही गाड़ीसे भागलपुरकी ओर चला।

भागलपुर पहुँचनेपर देखा कि शहरमे हड़ताल है। भारी जलूस राष्ट्रीय नारा लगाता हुआ शहरमें गस्त लगा रहा है। मैं सीधे खादी भण्डारमे गया। वहाँ पता लगा कि भागलपुरमें गिरफ्तारी नहीं हो रही है। पुलिसवाले केवल काग्रेस आफिस जब्त कर उसमें ताला लगा देना चाहते थे पर एक कार्यकर्ता वहाँ बैठा था और हटनेपर राजी न होता था। उसका कहना था कि पुलिस चाहे तो उसे गिरफ्तार कर जबरदस्ती घसीट कर या मार कर ही घरसे बाहर करे पर वह अपनी मरजीसे घर न छोडेगा। कुछ देरके बाद पता चला कि उसे गिरफ्तार कर घरमे ताला लगा दिया गया।

वहाँ दिन भर कुछ बडी घटना या दुर्घटना नहीं हुई। सन्ध्या समय एक बड़ी फुलवारीमें एक सभा हुई जिसमें हर तरहके लोग तथा कांग्रेसी, अकांग्रेसी, हिन्दू, मुसलमान, शहरके कुछ रईस, व्यापारी और विद्यार्थी सभी थे। मैंने अपने सन्देश सुनाये और अच्छी तरह उन्हे समझाया। क्या करना चाहिये सो तो बतलाया ही क्या नहीं करना चाहिये सो बतलानेमें अधिक समय लगाया। रचनात्मक कार्य और अहिंसापर काफी जोर देते हुए विध्वसात्मक कार्यमें पूरी सतर्कताकी ओर उनका ध्यान आकर्षित किया। सरकारसे पूरा असहयोग करनेकी सलाह मैंने दी।

सरकारी कर्मचारियोंसे अपील की कि वे नौकरी छोड़कर देशका साथ दें। सभाके कई मिनट पहले मुझे एक छपा परचा मिला था जिसपर हस्ताक्षर किसीका न था। और उसमें लोगोंके करने लायक काम बतलाये गये थे। पढ़नेसे मालूम हुआ कि उसमे लग भग वे ही आदेश थे जो मैंने अपने साथी श्री दीपबाबू और नेता श्री देशरत्न जीके साथ मिल कर तैयार किये थे, हाँ! इस परचेमें कुल आदेश नही थे, यह भी अधूरा था और एक बात कुछ भूल लिखी थी। वह भूल यह थी—"अस्त्र शस्त्र किसीके हाथमें पावें तो उन्हें छीन कर सुरक्षित स्थानमें रख दें", हमलोगोंने तय किया था, "अस्त्र-शस्त्र किसीके हाथमे पावें तो उन्हें छीन कर तोड़ कर उन्हें ही वापस कर दें।" रेलकी पटरी उखाड़ने वा तार काटनेके संबंधमें कोई आदेश इस परचेमे न था।

उसी दिन यानी १० अगस्तको सांझकी गाड़ीसे बेतियाके लिये प्रस्थान किया और ११ अगस्तके अपरान्हमे बेतिया पहुँचा। राहमे मुजफ्फरपुरमें मुझे पता चला कि श्री एमरी महोदयने एक विज्ञप्ति द्वारा घोषणा की है कि कांग्रेसका अभिप्राय यातायातके साधनोंको तोड़ फोड़ करनेका है। यह तो १० अगस्तके ही अखबारोंमें निकल चुका था पर मुझे पता देरसे चला क्यों कि मैं अखबार उस दिन न पा सका था।

बेतियामें दो एक परिचित कांग्रेस कार्यकर्ता मिले, वहाँ अशान्तिके कुछ भी लक्षण न नजर आये पर कार्यकर्ताओंको आश्चर्य हुआ कि मैं अब तक जेलसे बाहर कैसे रह गया। उनने मुझे बतलाया कि प० प्रजापति मिश्रजी ६ तारीखको ही आधी रातके समय घरपर ही गिरफ्तार हो चुके थे।

पर मुझे तो कोई पुलिसवाले पूछते न थे। स्टेशनसे जब मेरा टमटम चला तो राहमे कई सिपाहियोंने मुझे सलामी दागी, एक सब इन्सपेक्टरने भी प्रणाम किया पर किसीने गिरफ्तारीकी कोशिश तो न की।"

शाहाबाद

आरा शहरमें भी ६ अगस्तको ही नेताओंकी गिरफ्तारीकी खबर पहुँची। पर छात्रसंघके उद्योगसे शहरमे सफल हड़ताल रही ता० १० को। उस दिन ही जलूस निकले। शहरके मानो कोने कोनेसे नारा लगाती हुई टोलिया निकलीं और मस्जिद चौकपर सभी मिल कर विराट बन गयीं। प० प्रद्युम्न मिश्रके नेतृत्वमें जलूस तमाम शहरमे घूमा और वहाँसे कचहरी पहुँचा। जलूसके विद्यार्थियोंकी अपील-पर वकील मुख्तार कचहरीसे बाहर हो गये और बादको मजिस्टर सब भी। पर जिला जजके इजलासमें विद्यार्थियोंको कामयाबी नहीं मिली। उन्हें पुलिसके धक्के भी

खाने पड़े। फिर तो वे उत्तेजित हो गये। एक नामी वकील बहस कर रहे थे। उनके मुँहपर उनने कालिख पोत दी। जज साहब घबडा कर बाहर निकल गये। इजलास बन्द हो गया, पर विद्यार्थी शान्त न हुए। उनने फर्नीचर तोड डाले, शीशे फोड़ डाले और सम्राटके टंगे चित्रको फाड डाला।

तीसरे पहड नागरी प्रचारिणी सभावाले मैदानमें सभा हुई। पुलिसको लेकर ए० एस० पी० साहब आ धमके। उन्हे देख कर उत्तेजना फैली और भीडमेंसे एकने एक सरकारी अफसरपर डडा चला भी दिया। इसपर प्रद्युम्न मिश्र काफी नाराज हुए, ऐसे कामोंकी कडी आलोचना की और उस सरकारी अफसरको खुद कलक्टरके यहाँ पहुँचा आये।

शामको आराके कार्यकर्ताओंकी मुलाकात स्टेशनपर बाबू अनुग्रह नारायण सिंहसे हुई जो शायद रायबरेलीसे आ रहे थे और उसी ट्रेनसे पटने जा रहे थे। आराकी घटना उन्हे सुनायी गयी। वे बोले—सरकारने देशके नेताओंपर वार किया है। जनताको रोकना मुश्किल है। उन्हे हतोत्साहित करना मुनासिब नहीं।

भागलपुरने भी ता० ९ अगस्तको सुना—कांग्रेसके नेता गिरफ्तार कर लिये गये और कांग्रेस कमिटिया गैर-कानूनी घोषित कर दी गयीं। कार्यकर्ता सरकारसे मोरचा लेनेको तैयार थे। हाँ, कांग्रेसके आदेशकी प्रतीक्षा थी। ऐसे अवसरपर वहाँ श्री जगलाल चौधरीका शुभागमन हुआ। सरदार जमैयत सिंहके यहाँ वे कार्यकर्ताओंसे मिले और बोले—गान्धीजीका आन्दोलन अहिंसात्मक आन्दोलन है। रेलकी पटरी उखाडनेका यह अर्थ नहीं है कि बगैर सूचना दिये सैकडो सहस्रोंकी जान खतरेमे डाल दे। पटरी उखाडनेके पहले स्टेशन मास्टर को समय और तिथिकी सूचना दे दी जाय, पुलिससे शस्त्र अपहरण कर उसका उपयोग नही करना है। सरकारी कोषपर हमारा आधिपत्य भी हो जाय तो उसे सुरक्षित रखनेकी आवश्यकता है। एक पाई भी अपने काममें नही लाना इत्यादि।

१० अगस्तको लाजपत पार्कमें बहुत बडी सभा हुई। डेढ़ दो लाख लोग होंगे। जब कांग्रेस कमिटी आफिस जब्त हुआ तब वहा श्री शिवचन्द्रिका प्रसाद आसन जमाये बैठे थे। पुलिसने जबरदस्ती उन्हें हटा बाहर किया। सभामें छात्रोंने पुलिसको चुनौती दी कि कांग्रेस मैदानसे नहीं हटेगी तब कलसे छात्र सत्याग्रह करेगें और भवनपर अधिकार करके ही दम लेंगे।

शहरने पूरी हड़ताल मनायी। विद्यार्थियोंका पूर्ण सहयोग रहा।

मुंगेर

मुंगेरमें ८ अगस्त गिरफ्तारी और जब्तीका दिवस रहा। कांग्रेस भवन जब्त हुआ। श्री नन्दकुमार सिंह और श्री सुरेश्वर मिश्र गिरफ्तार हुए। वहां पहुँचे श्री जगलाल चौधरी ठीक रातको और कांग्रेसका सन्देश देनेके लिये कांग्रेस भवनमें पड़ी हुई पुलिसको पुकार पुकार कर जगाने लगे। पुलिस खीज उठी। बोली कांग्रेस भवन जब्त है। हम सरकारके आदमी हैं। हमसे आपका क्या वास्ता? तब तो चौधरीजी उल्टे पांव पीछे हटे और चर्खासंघके साथियोंसे जा मिले। यथा समय कांग्रेस कर्मियोंसे उनकी भेंट हुई, जिन्हें अगस्त आन्दोलनका प्रोग्राम दिया।

१० अगस्तको शहरमें हड़ताल रही। मुख्तार खाना, पुस्तकालय सभी बन्द। किलेके दरवाजेपर जबरदस्त धरना बैठा। किला मीरकासिमका बनाया हुआ है। सरकारके कब्जेमें है। अदालत, कचहरी, जिलाबोर्ड, म्युनिसिपेलिटी, अफसरों और खास खास रईसोंके डेरे इसके अन्दर हैं। इसलिये इसके दरवाजे परका धरना सरकारी कामको चौपट करने लगा। पुलिसने लाठी चार्ज करके धरना देनेवालोंको तितर बितर करना चाहा। फलस्वरूप भीड़ इकट्ठी हो गयी। दो तरफी मार पीट भी हुई। कई आदमी घायल हुए। पुलिसको भी चोट आयी।

लड़कियोंका जलूस यहाँ आया। लड़कियाँ कलक्टरी और जजी कचहरियोंमें घुस गयीं हाकिमोंको अपना काम छोड़नेको कहा। कुछ लड़कियां ऊपर चढ़ गयीं और मकानपर कांग्रेसी झण्डा फहरा दिया। जनतामें सनसनी फैल गयी। हाकिम आसन छोड़ हट गये। पुलिस आयी और लड़कियोंको किलासे बाहर करने लगी। उसके दुर्व्यवहारका विरोध श्री निरापद मुखर्जीने किया जिस पर पुलिसने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उस दिन श्री श्यामाप्रसाद सिंह गिरफ्तार हुए।

मुजफ्फरपुर

९ अगस्तको ही मुजफ्फरपुर तिलक मैदान जब्त हुआ और कई गिरफ्तारियां हुईं जिसमें उल्लेखनीय है श्री सरयू प्रसाद और डाक्टर रामाशीष ठाकुरकी गिरफ्तारी। १० अगस्तको शहरने हड़ताल मनायी। हड़ताल छात्रों तथा कार्यकर्त्ताओंके सम्मिलित उद्योगका फल था। दुकानें बन्द। स्कूल और कालिज भी प्राय बन्द।

शहरमें कई जलूस निकले और सभी कचहरी आकर इकट्ठे हो गये। उद्देश्य था कचहरी बन्द करवाना। पर मुजफ्फरपुर अंग्रेजी सरकारकी ताकतका अड्डा है—फौज रहती है। इसलिये जब जब भीड़ने इजलासमें घुसनेकी कोशिशकी, घुड़सवारोंने

उन्हें पीछे हटा दिया । पुलिस सतर्क थी और सचेष्ट भी । जनता से कितनोको चोट आयी, पर प्रदर्शन होता रहा । नारे लगते रहे ।

दरभगेमे ६ अगस्त सनसनीका दिन रहा । दोपहड होते होते श्री कुलानन्द वैदिकके नेतृत्वमे रिक्से और तागेवालोका जलूस निकला । मिथिला कालिजके

दरभगा

छात्रोका जलूस भी निकला जो काफी रात बीत जाने तक नारे लगा लगा दरभगा निवासियोको अगस्त-आन्दोलनमे कूद पडनेके लिये उन्हे पुकारता रहा ।

१० अगस्तको सब जगह हडताल रही । मिथिला कॉलेज और मेडिकल स्कूलके छात्रोने हडतालमे खूब भाग लिया । मेडिकल छात्रोने भी अपनी लाज रख ली जिनमे उल्लेखनीया थी श्री विद्योत्तमा देवी और श्री चारुमति राणा ।

विद्यार्थियोका एक बहुत बडा जलूस दरभगा शहरसे लहेरियासराय आया । वह कचहरीमे प्रदर्शन करता हुआ काग्रेस भवन पहुँचा जो पुलिसके कब्जे था । उस पर फिर अपना राष्ट्रीय झण्डा फहरा कर वह किंग्स पार्क आया और सभाके रूपमे बदल गया ।

पर प्रोग्रामकी जानकारी किसीको न थी । विद्यार्थी कमिटीवाले कहने लगे 'चूकि हमें कोई खास प्रोग्राम मालूम नहीं है, हम लोग जहाँतक हो सके रचनात्मक कार्य ही करे परन्तु हम लोग हडताल जारी रक्खे ।' और इन्हे मेडिकल स्कूलका समर्थन मिलता । पर मिथिला कॉलिजवाले इसका विरोध करते ।

ऐन मौकेपर सभामे ही श्री कन्हैयाप्रसाद वर्माको एक परचा दिया गया । कहा गया यही प्रोग्राम है, आप पढ कर सुना दीजिये ।

कन्हैयाजी परचा पढने लगे—

सर्कुलर न० १

जरूरी हिदायते

विहार प्रान्तीय काग्रेस कमिटी (पटना)

... 'इस लिये भारत काग्रेस कमिटीने निश्चय किया है कि केवल भारतके हितके लिये ही नही, सारे ससारके हितके लिये भी और खास करके सारे संसारमे स्वतत्रता और प्रजातत्रकी स्थापनाके लिये यह जरूरी हो गया है कि भारत स्वतंत्र हो जाय । इसी उद्देश्यसे जिसमें संसारकी स्वतंत्रता और प्रजातंत्र और मित्र राष्ट्रोका हित भी निहित है काग्रेसने महात्मा गाधीके नेतृत्वमें निश्चय किया है कि वह अहिसात्मक असहयोग और सत्याग्रह सग्राम ब्रिटिश गवर्नमेण्टके साथ तुरन्त छेड़ दे ।

हो सकता है कि ब्रिटिश सरकार कांग्रेसको यह मौका न दे कि वह इस अहिंसात्मक असहयोग और सत्याग्रहको संगठित रूपसे चला सके। इस लिये कुछ संकेत ऐसे यहाँ दिये जाते है कि यदि कांग्रेसके नेता गिरफ्तार हो जायँ तो लोग उनके अनुसार इस आन्दोलनको चलावे।

यह महात्मा गान्धीके जीवनकी आखिरी लड़ाई है और स्वराज्यके लिये भी आखरी लडाई है। यह किसी छोटे मोटे उद्देश्यके लिये नही छेडी जा रही है। इसमे हिन्दुस्तानकी आजादीके साथ सारे संसारका हित शामिल है और इस भयंकर युद्धको भी खतम करनेकी वात है। इस लिये आशा की जाती है कि सभी हिन्दुस्तानी जिनके दिलमें देशके लिये प्रेम है और जो इसकी आजादी चाहते हैं निःसंकोच शरीक होगे। बिना त्यागके किसी देशको आजादी नहीं मिली है। हमेशा त्यागके लिये तैयार होकर इसमें शरीक होना है। जो देश इस लड़ाईमे शरीक है, अपने खूनको पानीकी तरह बहा रहे है, और अपने धनको समुद्र वा आगके हवाले कर रहे हैं। हमको एक ऐसे ही देशसे आजादी लेनी है। वह त्यागसे ही मिल सकेगी। यह हमेशा याद रखना चाहिये कि गांधीजीके इस असहयोग और सत्याग्रहका मूलमंत्र अहिंसा है। इसलिये हम जो भी करे उसमे अहिंसाको न छोड़े और न कोई ऐसा काम करे जो नीति विरुद्ध अथवा सत्यके विरुद्ध हो। आशा की जाती है कि सभी प्रकारके हिन्दुस्तानी इस यज्ञमे अपनी अपनी आहुति अर्पित करेगे और इसे सुसम्पन्नताके साथ समाप्त करेगे। गांधीजी अथवा कांग्रेसकी ओरसे जब तक आदेश निकलता रहे तब तक उसीके अनुसार काम होना चाहिये। यदि कोई आदेश निकालना अथवा पाना असंभव हो जाय तो नीचे लिखे मुताबिक काम करना चाहिये।

आजादीकी लड़ाईको सफल बनानेके तरीके—

१ नेताओंकी गिरफ्तारी हो जानेके बाद एक दिनकी पूर्ण हड़ताल होनी चाहिये।. ......दिन भर हड़तालके वाद सन्ध्या समय सभायें होनी चाहियें। जिनमे वही प्रस्ताव पास हो जिसको वर्किंग कमिटीने ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके सामने पेश करनेके लिये ता० ५-८-४२ को स्वीकार किया है और जो सब समाचार पत्रोंमें छपा है।

२ कार्यकर्ताओ को चाहिये कि घूम घूम कर महात्मा गान्धी और कांग्रेसके सन्देश लोगोंको बतावे...... ।

हो सकता है कि ब्रिटिश सरकार कांग्रेसको यह मौका न दे कि वह इस अहिंसात्मक असहयोग और सत्याग्रहको संगठित रूपसे चला सके। इस लिये कुछ संकेत ऐसे यहाँ दिये जाते है कि यदि कांग्रेसके नेता गिरफ्तार हो जायँ तो लोग उनके अनुसार इस आन्दोलनको चलावे।

यह महात्मा गान्धीके जीवनकी आखिरी लडाई है और स्वराज्यके लिये भी आखरी लडाई है। यह किसी छोटे मोटे उद्देश्यके लिये नही छेड़ी जा रही है। इसमे हिन्दुस्तानकी आजादीके साथ सारे ससारका हित शामिल है और इस भयकर युद्धको भी खतम करनेकी बात है। इस लिये आशा की जाती है कि सभी हिन्दुस्तानी जिनके दिलमें देशके लिये प्रेम है और जो इसकी आजादी चाहते है निःसंकोच शरीक होगे। विना त्यागके किसी देशको आजादी नहीं मिली है। हमेशा त्यागके लिये तैयार होकर इसमें शरीक होना है। जो देश इस लड़ाईमे शरीक है; अपने खूनको पानीकी तरह बहा रहे है, और अपने धनको समुद्र वा आगके हवाले कर रहे हैं। हमको एक ऐसे ही देशसे आजादी लेनी है। वह त्यागसे ही मिल सकेगी। यह हमेशा याद रखना चाहिये कि गांधीजीके इस असहयोग और सत्याग्रहका मूलमन्त्र अहिसा है। इसलिये हम जो भी करे उसमे अहिसाको न छोड़े और न कोई ऐसा काम करे जो नीति विरुद्ध अथवा सत्यके विरुद्ध हो। आशा की जाती है कि सभी प्रकारके हिन्दुस्तानी इस यज्ञमे अपनी अपनी आहुति अर्पित करेगे और इसे सुसम्पन्नताके साथ समाप्त करेगे। गांधीजी अथवा कांग्रेसकी ओरसे जब तक आदेश निकलता रहे तब तक उसीके अनुसार काम होना चाहिये। यदि कोई आदेश निकालना अथवा पाना असंभव हो जाय तो नीचे लिखे मुताबिक काम करना चाहिये।

आजादीकी लड़ाईको सफल बनानेके तरीके—

१ नेताओंकी गिरफ्तारी हो जानेके बाद एक दिनकी पूर्ण हड़ताल होनी चाहिये।. ..... दिन भर हड़तालके बाद सन्ध्या समय सभायें होनी चाहिये जिनमे वही प्रस्ताव पास हो जिसको वर्किंग कमिटीने ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके सामने पेश करनेके लिये ता० ५-८-४२ को स्वीकार किया है और सब समाचार पत्रोमें छपा है।

२ कार्यकर्ताओ को चाहिये कि घूम घूम कर महात्मा गान्धी और क...
सन्देश लोगोको बतावे...... ।

३ गावों और शहरोंमे तमाम सभायें की जाय और जलूस निकाले जाय .. अगर ब्रिटिश सरकार द्वारा सभा अथवा जलूसपर रोक लगा दी जाय तो उसका लेहाज नहीं करना चाहिये।

४ वकीलों और मुख्तारोंको वकालत और मोख्तारी छोड़ देनी चाहिये और सत्याग्रह प्रोग्रामको पूरा करनेमे उन्हे लग जाना चाहिये।

५ सभी विद्यार्थियोंको स्कूलों और कालिजोंसे अलग हो जाना चाहिये और आजादीकी लड़ाईके प्रोग्रामका पूरा करनेमे लग जाना चाहिये। इस लडाईमे विद्यार्थियोंसे वडी आशा की जा रही है और उमीद है कि वे लोगोंकी आशाको पूरा करेंगे।

६ पुलिस भाइयोंसे अपील है कि वे देशवासियोंके ऊपर जो आजादीकी लड़ाईमें लगे हों लाठी या गोली नहीं चलावे।

७ कार्यकर्ताओंको चाहिये कि यदि उनके ऊपर लाठी चले या गोली भी चले तो उसे वे वहादुरीसे वर्दास्त करेंगे। पीछे वे कदम. हर्गिज न उठावेंगे और अहिंसाको कभी न छोड़ेंगे।

८ लोगोंको चाहिये कि चौकीदारी या युनियनका टैक्स देना वन्द कर दें। चौकीदार और दफादार भाइयोंसे अपील है कि वे सरकारी नौकरी छोडकर देशका साथ दें।

९ पुलिस भाइयों और जेल वार्डरोंसे अपील है कि वे शीघ्र अँग्रेजी सरकारकी नौकरी छोड दें। इनके मार्फत सरकार वह कुकर्म करावेगी कि जिससे देशका वड़ा नुकसान होगा। कांग्रेस कार्य कर्ताओंके ऊपर लाठी या गोली चलानेके लिये ये लोग मजवूर किये जायगे। इस पापसे वचनेके लिये सरकारी नौकरी तुरन्त छोड़ देनी जरूरी है। यदि हमारे सभी पुलिस भाई सरकारी नौकरी छोड दें तो अंग्रेजी राज्यका वहुत वड़ा पाया टूट जायगा।

१० सभी सरकारी कर्मचारियों, स्टीमरपर काम करनेवालों, डाकघरमे काम करनेवालों, कोयलेके खान और दूसरे खानके मजदूरोंसे जहां सरकारके काम होते है, काम वन्द कर देनेके लिये प्रार्थना है।

११ जो अपनी नौकरी कांग्रेसकी पुकारपर छोड देंगे उनको फिर नौकरी पूरे तलवके साथ मिल जायगी, जव अपनी सरकार हो जायगी। ऐसे लोगोंको जिनकी जमीनों और मकानोंको सरकार नीलाम कुर्क कर ले उनके सत्याग्रहमें भाग

३ गावों और शहरोंमें तमाम सभायें की जायं और जलूस निकाले जाय... अगर ब्रिटिश सरकार द्वारा सभा अथवा जलूसपर रोक लगा दी जाय तो उनका लेहाज नहीं करना चाहिये।

४ वकीलों और मुख्तारोंको वकालत और मोख्तारी छोड़ देनी चाहिये और सत्याग्रह प्रोग्रामको पूरा करनेमें उन्हें लग जाना चाहिये।

५ सभी विद्यार्थियोंको स्कूलों और कालिजोंमें अलग हो जाना चाहिये और आजादीकी लडाईके प्रोग्रामको पूरा करनेमें लग जाना चाहिये। इस लडाईमें विद्यार्थियोंसे बडी आशा की जा रही है और उमीद है कि वे लोगोंकी आशाको पूरा करेंगे।

६ पुलिस भाइयोंसे अपील है कि वे देशवासियोंके ऊपर जो आजादीकी लडाईमें लगे हों लाठी या गोली नहीं चलावें।

७ कार्यकर्ताओंको चाहिये कि यदि उनके ऊपर लाठी चले या गोली भी चले तो उसे वे बहादुरीसे बर्दास्त करेंगे। पीछे वे कदम. हर्गिज न उठावेंगे और अहिंसाको कभी न छोडेंगे।

८ लोगोंको चाहिये कि चौकीदारी या युनियनका टैक्स देना बन्द कर दें। चौकीदार और दफादार भाइयोंसे अपील है कि वे सरकारी नौकरी छोड़कर देशका साथ दें।

९ पुलिस भाइयों और जेल वार्डरोंसे अपील है कि वे शीघ्र अंग्रेजी सरकारकी नौकरी छोड दें। इनके मार्फत सरकार वह कुकर्म करावेगी कि जिससे देशका बडा नुकसान होगा। कांग्रेस कार्य कर्ताओंके ऊपर लाठी या गोली चलानेके लिये वे लोग मजबूर किये जायंगे। इस पापसे बचनेके लिये सरकारी नौकरी तुरन्त छोड देनी जरूरी है। यदि हमारे सभी पुलिस भाई सरकारी नौकरी छोड दें तो अंग्रेजी राज्यका बहुत बडा पाया टूट जायगा।

१० सभी सरकारी कर्मचारियों, स्टीमरपर काम करनेवालों, डाकघरमें काम करनेवालों, कोयलेके खान और दूसरे खानके मजदूरोंसे जहां सरकारके काम होते है, काम बन्द कर देनेके लिये प्रार्थना है।

११ जो अपनी नौकरी कांग्रेसकी पुकारपर छोड़ देंगे उनको फिर नौकरी पूरे तलबके साथ मिल जायगी, जब अपनी सरकार हो जायगी। ऐसे लोगोंको जिनकी जमीनों और मकानोंको सरकार नीलाम कुर्क कर ले उनके सत्याग्रहमें भाग

हो सकता है कि ब्रिटिश सरकार कांग्रेसको यह मौका न दे कि वह इस अहिंसात्मक असहयोग और सत्याग्रहको संगठित रूपसे चला सके। इस लिये कुछ सकेत ऐसे यहाँ दिये जाते है कि यदि कांग्रेसके नेता गिरफ्तार हो जायँ तो लोग उनके अनुसार इस आन्दोलनको चलावे।

यह महात्मा गान्धीके जीवनकी आखिरी लड़ाई है और स्वराज्यके लिये भी आखरी लड़ाई है। यह किसी छोटे मोटे उद्देश्यके लिये नही छेड़ी जा रही है। इसमे हिन्दुस्तानकी आजादीके साथ सारे संसारका हित शामिल है और इस भयंकर युद्धको भी खतम करनेकी बात है। इस लिये आशा की जाती है कि सभी हिन्दुस्तानी जिनके दिलमें देशके लिये प्रेम है और जो इसकी आजादी चाहते हैं निःसंकोच शरीक होगे। बिना त्यागके किसी देशको आजादी नहीं मिली है। हमेशा त्यागके लिये तैयार होकर इसमें शरीक होना है। जो देश इस लड़ाईमे शरीक है; अपने खूनको पानीकी तरह बहा रहे है, और अपने धनको समुद्र वा आगके हवाले कर रहे हैं। हमको एक ऐसे ही देशसे आजादी लेनी है। वह त्यागसे ही मिल सकेगी। यह हमेशा याद रखना चाहिये कि गांधीजीके इस असहयोग और सत्याग्रहका मूलमंत्र अहिंसा है। इसलिये हम जो भी करे उसमे अहिंसाको न छोड़े और न कोई ऐसा काम करे जो नीति विरुद्ध अथवा सत्यके विरुद्ध हो। आशा की जाती है कि सभी प्रकारके हिन्दुस्तानी इस यज्ञमे अपनी अपनी आहुति अर्पित करेंगे और इसे सुसम्पन्नताके साथ समाप्त करेगे। गाधीजी अथवा काग्रेसकी ओरसे जब तक आदेश निकलता रहे तब तक उसीके अनुसार काम होना चाहिये। यदि कोई आदेश निकालना अथवा पाना असंभव हो जाय तो नीचे लिखे मुताबिक काम करना चाहिये।

आजादीकी लड़ाईको सफल बनानेके तरीके—

१ नेताओंकी गिरफ्तारी हो जानेके बाद एक दिनकी पूर्ण हड़ताल होनी चाहिये। ..... दिन भर हड़तालके बाद सन्ध्या समय सभाये होनी चाहिये। जिनमे वही प्रस्ताव पास हो जिसको वर्किंग कमिटीने ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके सामने पेश करनेके लिये ता० ५-८-४२ को स्वीकार किया है और जो सब समाचार पत्रोंमें छपा है।

२ कार्यकर्ताओ को चाहिये कि घूम घूम कर महात्मा गान्धी और कांग्रेसके सन्देश लोगोंको बतावें...... ।

३ गावों और शहरोमे तमाम सभायें की जायं और जलूस निकाले जाय . अगर ब्रिटिश सरकार द्वारा सभा अथवा जलूसपर रोक लगा दी जाय तो उसका लेहाज नहीं करना चाहिये।

४ वकीलों और मुख्तारोंको वकालत और मोख्तारी छोड़ देनी चाहिये और सत्याग्रह प्रोग्रामको पूरा करनेमे उन्हे लग जाना चाहिये।

५ सभी विद्यार्थियोको स्कूलों और कालिजोंसे अलग हो जाना चाहिये और आजादीकी लडाईके प्रोग्रामका पूरा करनेमे लग जाना चाहिये। इस लडाईमे विद्यार्थियोंसे वडी आशा की जा रही है और उमीद है कि वे लोगोकी आशाको पूरा करेगे।

६ पुलिस भाइयोसे अपील है कि वे देशवासियोंके ऊपर जो आजादीकी लड़ाईमें लगे हों लाठी या गोली नहीं चलावे।

७ कार्यकर्ताओंको चाहिये कि यदि उनके ऊपर लाठी चले या गोली भी चले तो उसे वे बहादुरीसे वर्दास्त करेगे। पीछे वे कदम. हर्गिज न उठावेगे और अहिसाको कभी न छोडेगे।

८ लोगोंको चाहिये कि चौकीदारी या युनियनका टैक्स देना वन्द कर दे। चौकीदार और दफादार भाइयोंसे अपील है कि वे सरकारी नौकरी छोडकर देशका साथ दे।

९ पुलिस भाइयो और जेल वार्डरोसे अपील है कि वे शीघ्र अंग्रेजी सरकारको नोकरी छोड दे। इनके मार्फत सरकार वह कुकर्म करावेगी कि जिससे देशका बडा नुकसान होगा। कांग्रेस कार्य कर्ताओंके ऊपर लाठी या गोली चलानेके लिये ये लोग मजबूर किये जायगे। इस पापसे बचनेके लिये सरकारी नौकरी तुरन्त छोड देनी जरूरी है। यदि हमारे सभी पुलिस भाई सरकारी नौकरी छोड दें तो अंग्रेजी राज्यका बहुत बड़ा पाया टूट जायगा।

१० सभी सरकारी कर्मचारियों, स्टीमरपर काम करनेवालो, डाकघरमे काम करनेवालो, कोयलेके खान और दूसरे खानके मजदूरोसे जहां सरकारके काम होते है, काम वन्द कर देनेके लिये प्रार्थना है।

११ जो अपनी नौकरी कांग्रेसकी पुकारपर छोड देंगे उनको फिर नौकरी पूरे तलबके साथ मिल जायगी, जब अपनी सरकार हो जायगी। ऐसे लोगोंको जिनकी जमीनो और मकानोंको सरकार नीलाम कुर्क कर ले उनके सत्याग्रहमें भाग

लेनेकी वजहसे तब उनको स्वराज्य सरकार वह सब जमीन और मकान वापस करायेगी।

१३ स्वराज्य सग्राममे सहायता देनेके लिये, काफी गल्ला पैदा करानेके लिये तथा लोगोके जान मालकी रक्षाके लिये ग्राम पंचायतका सगठन होना चाहिये।

१४ स्वराज्यकी लड़ाईकी खबरे बराबर मिलती रहे इसका भी प्रबन्ध करना चाहिये। हर इलाकेके कार्यकर्ता मोकर्रर वक्तपर और मोकर्रर जगहपर किसी न किसी तरह खबर पहुँचा दिया करेंगे।

१५ सरकारी मकानोपर राष्ट्रीय झण्डा फहराना चाहिये। और कर्मचारियोको आजादीकी लड़ाईमे शामिल होनेके लिये कहना चाहिये। पुलिसके हथियारोको लेकर किसी सुरक्षित स्थानमे रख देना चाहिये। सरकारी दफ्तरोको बन्द कर देना चाहिये और ऐलान कर देना चाहिये कि सरकारी कर्मचारी फिर स्वराज्य मिल जाने के बाद बुला लिये जायंगे।

१६ सत्याग्रहके युद्धमें छिप कर किसीको कोई काम नहीं करना चाहिये। छिपनेसे युद्ध और कमजोर हो जाता है। इसलिये सभी कामोको पहलेसे ऐलान करके करना चाहिये।

प्रोग्राम जानकर लोगोमें नई जान आगयी। सभीने निश्चय किया हडतालको और व्यापक बनानेका, और कल ११ अगस्तको सरकारी मकानोपर झण्डा फहरानेका। जनताने करेंगे वा मरेंगेका भैरवनाद करके उस निश्चयका समर्थन किया।

रॉची

रॉचीमें ६ अगस्तको हल्की हडताल रही। शामको जिला कांग्रेस कमिटीका दफ्तर जब्त हुआ। फिर नगर निवासियोकी सभा हुई जिसमें विद्यार्थियोकी भरमार थी। सामने कोई प्रोग्राम न था। इसलिये प्रतीक्षाकी नीति अपनानेपर जोर दिया जा रहा था। किन्तु तय हुआ कि जबतक ऊपरसे प्रोग्राम नहीं मिलता है तबतक स्थानीय नेता ही काम बतलावे और आन्दोलन चलावे।

शहरके डाक्टर यदुगोपाल मुखर्जी जो पुराने क्रान्तिकारी रह चुके है पकड़ लिये गये और सर्वश्री रामरक्षा उपाध्याय, नारायणजी, नन्दकिशोर भगतकी गिरफ्तारीकी खबर भी पहुँची। १० अगस्तको श्री नारायणचन्द्र लाहिड़ी पकड़े गये। श्री अतुलचन्द्र मित्रको गिरफ्तार करने पुलिस कलकत्ते पहुँची। अतुल बाबू वहाँ अपना इलाज करवा रहे थे। पुलिसकी आंखोंमें धूल झोंक १० अगस्तकी रातको वह रांची पहुँचे, कार्यकर्त्ताओसे मिले और उन्हें अगस्त आन्दोलनका प्रोग्राम बतलाया।

नेताओंकी गिरफ्तारीकी खबर सुनते ही ६ अगस्तको जमशेदपुरके एक तिहाई मजदूरोंने हडताल मनायी। दूसरे दिनकी हड़ताल तो कमालकी रही।

सिंहभूमि

मुसलमान दूकानदारोंने भी साथ दिया। हरिजनोंमेंसे तो एक भी अपनी जगहपर नहीं गया और अस्पतालके अधिकारियोंको ताता मजदूर संघकी मदद मगानी पडी। छात्रों तथा छात्राओंका उत्साह अपूर्व था। वे सब तो तीन दिनों तक हडताल मनाते रहे।

इसके पहले जमशेदपुरने न कभी राजनैतिक हडताल देखी थी और न इस तरहका प्रदर्शन ही देखा था।

६ अगस्तकी रातको पुलिसने तीन कार्यकर्ताओंको गिरफ्तार किया और १० अगस्तको कांग्रेसका दफ्तर जब्त। मजदूर संघकी मोटर वसको भी उसने अपने कब्जेमें ले लिया।

पुलिसमे भी काफी चहल पहल रही। श्री रामानन्द तिवारीका पुलिस सगठन जोर पकड़ने लगा। १० अगस्तको ५५० पुलिसने गिरफ्तारीके विरोधमें उपवास भी किया।

१० अगस्तको शिल्पाश्रम, पुरुलियाको पुलिसने जब्त किया और विभूतिभूषण दास गुप्त तथा वीर राघव आचारियरको गिरफ्तार किया। शिल्पाश्रम

मानभूमि

कार्यकर्ताओं और उनके परिवारका निवासस्थान रहा है। उनको आश्रम खाली कर देनेका हुक्म मिला जिसे माननेसे सबोंने इनकार कर दिया। परिणाम स्वरूप श्रीमती लावण्यप्रभा घोप, कुमारी कमला घोप, तथा अन्यान्य कार्यकर्ता गिरफ्तार किये गये।

बादको तुरत जिला कांग्रेसका दफ्तर और उसका मुक्तिप्रेस और निवारण पल्ली संघ भी जब्त हो गया। उसी दिन अनेक थानाओंके भी दफ्तरपर पुलिसका कब्जा हो गया।

उस दिन झरियामे हडताल हुई, जिसमें विद्यार्थी और कोयलाके खानोंके मजदूर भी शामिल थे। वहा एक जबरदस्त जलूस निकला जिसे लाठियोंकी मारसे पुलिसने तितर वितर कर दिया। धनवाद सब डिविजनल कांग्रेस कमिटीके नेता और कार्यकर्ता पकड़े गये।

हजारीवागमे पुलिस ता० ९ से ही कर्मठ हो गयी और नेताओंको गिरफ्तार

हजारीवाग

करना शुरू कर दिया। दो तीन दिनोंके भीतर वहांके गण्य मान्य नेता जेलवासी हुए और पुलिसने समझा कि उसने जन क्रान्तिको दवा दिया।

स्वराजी रेलगाड़ी

अगस्त-क्रान्तिकी चिनगारी विहारके कोने कोनेमे उड़ने लगी और सहायक बने विहारके विद्यार्थी। अपनी शिक्षण संस्थाओको छोड़ वे मैदानमे उतरे ठीक पहाड़ी नदीकी तरह, घहराते, उछलते और कूदते हुए। इधर कई सालसे उनके बीच संगठन और सघर्षकी जोरदार हवा बह रही थी। उनमें जीवन छलकता दीखता था जो इस वक्त काम आया। नेताओकी गिरफ्तारी उन्हें कर्तव्य विमूढ़ न कर सकी। उनमें जोश आ गया और वे जहां कहीं थे, छोटे या बड़े, सभी गाव शहरमे 'करेंगे वा मरेंगे' नारा बुलन्द करने लगे।

अफवाहें सुनी थीं पर प्रोग्राम मालूम न था। तो भी इतना तो सभी जानते थे कि हमारी क्रान्तिको तेज चलना है, इस लिये इसके सदेश जल्दसे जल्द देश वासियोको देने हैं, इस विचारने विद्यार्थियोंको रेलवे स्टेशनपर पहुँचाया। जहाँ उनने देखा रेलगाडीको जो प्रचारका अच्छा साधन वन सकती है। स्वराजी रेलगाड़ीकी यह जन्म कथा है जिसे विद्यार्थियोकी प्रचार बुद्धिका एक आविष्कार मानना चाहिये।

विद्यार्थियोकी टोलियां गयीं और जहा रेलगाड़ी मिली उसपर कब्जा किया। पहले तो इस कब्जेका सिर्फ मतलब था एक जगहसे दूसरी जगह जाना, साथी विद्यार्थियोंको खबर देनेके लिये कि हड़ताल करनी है, सभा करनी है, अमुक प्रस्ताव दुहराना हैं और अमुक स्थानपर प्रदर्शनके लिये इकट्ठा होना है। सफर छोटी मनचाही जगहपर खत्म होनेवाली और विला टिकट। स्वराजी गाडियोसे इतनी सुविधा मिली, वे संदेश वाहिका वनीं।

पर सम्वन्ध स्नेह पैदा कर ही देता है। विद्यार्थियोने इञ्जनको राष्ट्रीय झंडेसे सजा दिया। फिर अगलेसे पिछले ब्रेक (Brake-van) तक, समूची गाड़ीमे, वाहर भीतर, अपने नारे अंकितकर दिये। तव कई ड्राइवर और गार्डके पास बैठ गये। वोले—यह स्वराजी गाड़ी है हमारे कहनेसे चलेगी, हमारे कहनेसे रुकेगी। आप कांग्रेसी सरकारके मुलाजिम हैं। हम जैसा कहें कीजिये। फिर कौमी नारोके वीच शोर करती हुई स्वराजी रेलगाड़ी दौड़ने लगी। जहा भीड़ दीख पड़ती गाड़ी रुक जाती, विद्यार्थी धड़ाधड़ उतर पड़ते और जनतासे

कहते अंग्रेजी राज उठ गया, हिन्दुस्तान आजाद है, अंग्रेजी सरकारने हमारे नेताओंको कैद कर लिया है, सोचा है—न नेता रहेगा न आन्दोलन चलेगा। इसलिये हर एक आदमी एक-एक नेता वन जाओ और अग्रेजोंको निकाल वाहर करो। महात्मा गाधीने कहा है कि अहिंसाके भीतर हम अंग्रेजी सरकारको हटानेके लिये जा कर सकें कर सकते हैं।

फिर वे नारे लगाते—इन्कलाव जिन्दावाद! हिन्दुस्तान आजाद! अगरेजो! भारत छोड़ दो! करेंगे या मरेंगे! चालीस कोटि नहीं डरेंगे! ये नारे प्रान्त प्रसिद्ध थे। पर अलग-अलग जिलावालोंके कुछ अलग-अलग भी नारे थे। सहस्रों कठोंसे जनता इन नारोंको दुहराती।

फिर गाडी वढ़ती। पर जहा जवानोंकी जुटान देखती रुक जाती। विद्यार्थी जितनोंको चढ़ा पाते चढ़ा लेते और गाड़ी वढ़ाते। अन्तमें गाडीका रूप ऐसा होगया मानो वह प्रचार करनेके लिये सजीव हो गयी हो। अपने शत सहस्र कण्ठोंसे नारे लगा रही हो, गीत गा रही हो, जोश भर रही हो, आग लगा रही हो! उसके अगल वगल भीड़ दौड़ने लगी, तुतलाती वोली उसे वुलाने लगी, खखारती आवाज उसे ठहराने लगी। अव वह पूरी स्वराजी गाड़ी वन गयी।

पर स्वराजका अर्थ समता ही हो सकता है। इसलिये स्वराजी रेलगाड़ीमें विषमताका स्थान कहां? विद्यार्थियोंने ऐसा सोचा, समझा और फर्स्ट, सेकण्ड, और थर्ड क्लासकी विषमता मिटानेकी ठानी। पहले तो उनने ऊपरके क्लासोंमें निपट दिहातियोंको विठाया। जगहकी कमी देखी तो गोरोंको ही नहीं हरेक हैट पैंटवालोंको जगह छोडनेके लिये विवश किया ताकि दिहाती उनकी जगहोंपर वैठ सकें। वादको उनने मुसाफिरोंकी वेश भूषाकी विषमताको भी दूर करना जरूरी समझा। फिर तो वे हैट पैंट उतरवाने लगे, धोती कुरता पहनाने लगे। वे विद्यार्थी थे, समझदार थे, जानते थे कि 'अंग्रेजो! भारत छोड़ दो' का मतलव यह नहीं है कि अंग्रेजोंको हम हिन्दुस्तानसे निकाल दें। इसका मतलव तो है कि उनकी हुकूमतको हम हवा कर दें। हा, जो अंगरेज हिन्दुस्तानमें हिन्दुस्तानी वनकर रह सकता है वह शौकसे रहे। इसलिये जिन अंग्रेजोंको उनने पकडा उनको हिन्दुस्तानी लिवास पहनाकर ही वे सन्तुष्ट न हो सके उनको हिन्दुस्तानी खाना खिलाकर पूरा हिन्दुस्तानी वना लेनेके लिये व्यग्र हो उठे। कहीं उनको सत्तू दिया, कहीं चूड़ा दही, कहीं चना चवेना ही। और वड़ी

हंसी खुशीके बीच उन्हें खिलाया ही। जहाजपर लादकर विलायत रवाना कर देनेकी हमारी ताकत नहीं है पर पूरा हिन्दुस्तानी बना छोड़नेका बल बूता तो है—ऐसी विद्यार्थियो और उनके हमजोलियोंकी धारणा थी। और उनके तदनुसार उन अंग्रेजोको झंडे दिये। उनसे क्रान्तिकारी नारे बुलवाये और उन्हें अपने जलूसमें शामिल किया। उपद्रवियोंके कोपका खतरा उठाकर भी उन्होंने अंग्रेजोंकी रक्षा की। जो सरकारी अफसर थे और दूसरे दूसरे जेन्टलमैन उनको भी इन सब सुविधा असुविधाको भोगना पडा।

ऐसी रही भारतीय करणकी स्वराजी पद्धति, जिसका श्रीगणेश १० अगस्तसे ही शुरू हो गया था। स्वराजी रेलगाड़ी क्रान्ति-सन्देश-वाहिकासे प्रचारिका बन गयी थी भारतीयताकी।

बादको तुरत उसके जीवनमे नयी उफान आयी। पटनेसे विद्यार्थी आने लगे, शहीदोंकी चिताकी आग लेकर। उनका विषमता विरोध उग्रताकी सीमाको छू रहा था। उनके लिये मुसाफिरोंमे ही समानता लानेकी जरूरत न थी बल्कि रेलगाड़ीके तमाम डब्बोपर समताकी छायाको दाग देना था। इस मतलबसे विद्यार्थी फर्स्ट, सेकेण्ड क्लासमें घुस पड़े। उनके शीशे तोड़ डाले, आइने फोड डाले और गद्दियाँ उठा फेंकी। पंखे तो कहां उड़े पता नहीं।

अब स्वराजी गाड़ी सर्वहारा बन गयी। क्रान्तिकारियोंके आदेशानुसार चली संहार करने। इसपर चढ़कर जनता और विद्यार्थी दूर दूर पहुँचते, स्टेशन जलाने पुल तोड़ने और सडक काटने। तोड फोडके प्रोग्रामको जानदार बनानेमें स्वराजी गाड़ीका बड़ा हाथ था। पर जिस तोड़ फोड़ और फूँक फाकका यह साधन बनी शीघ्र ही इसका शिकार भी उसे होना पडा। विद्यार्थी, जितना काम इससे लेना होता ले चुकते तब इसको पङ्गु बनाकर छोड़ देते। ब्रेक तोड देते, इञ्जनके कल पुरजे बिगाड़ देते, कहीं कहीं जहाँ तहाँ आग लगा देते जिससे ब्रेक वान जल जाता और कुछ डब्बे भी जल उठते और कहीं कहीं तो समूचीकी समूची गाड़ी प्रचण्ड अग्निमे झोक दी जाती।

११ अगस्तको स्वराजी गाड़ी चलायी बखरी थानाके विद्यार्थियोंने मुङ्गेर जिलामें। इनकी एक टोलीने सलौना स्टेशनपर आयी हुई गाडीको रोक लिया। सबके मुङ्गेर सब उसमें सवार हो गये और खगडियाकी ओर चले। राहमें इमली, ओलापुर आदि स्टेशन आये। हर जगह वे उतरते गये जनताको नेताओंकी

गिरफ्तारीकी खबर देने और अपनी ताकतसे उन्हें छुड़ा लेनेका उपाय बनाने। लोगोंमें रूह फूँकते वे खगड़िया आये जिसे उनने देखा अपनी मामूली चालसे चलते। उनने वहाँ क्रान्तिके नारे लगाये और अगस्त आन्दोलनका जोश भरा। बस वहाँके जीवनमें ज्वार आ गया। काफी युवकोंने टोलीका साथ दिया। फिर सब मिलकर आगे बढ़े और खगड़ियाके सभी सरकारी दफ्तरोंमें ताला लगाया तथा तिरंगा झंडा फहराया। शाम हो गयी और टोलीको सलौना वापस आना था किन्तु खगड़ियाके स्टेशन मास्टरने लौटते समय गाड़ी खोलने नहीं दी। छात्रोंकी टोली इससे न घबडाई न रुकी रही। नारा लगाते, झंडा फहराते, गाते बजाते उनने १६ मीलका रास्ता रातों-रात तय कर लिया। ठहरे एक जगह गगोरस्थानमें जहाँ श्री महथ गोपाल दासने उनके भोजनादिका प्रबन्ध किया।

शाहाबाद जिलेमें बक्सरने भी स्वराजी गाडी देखी ११ अगस्तको। गाडीके प्रत्येक डब्बे क्रान्तिकी आग उगल रहे थे, जिसकी गर्मी कौमी नारोंकी आवाजके

शाहाबाद

साथ साथ चारों ओर फैल रही थी। गाड़ी एक तरहसे विद्यार्थियोंके दखलमें थी और उनके प्रचारका साधन बन रही थी। शाहाबादकी जनताने अपने विद्यार्थियोंसे ही स्वराजी रेलगाड़ी चलानी सीखी।

मुजफ्फरपुरमें सीतामढीने स्वराजी रेल चलायी १२ अगस्तको। हर गाड़ी

मुजफ्फरपुर

पर, जो सीतामढ़ीसे गुजरती, लडकोंके झुण्ड चढ जाते और बाजारोंमे जाकर हडताल करवाते और स्कूलोंमें जाकर विद्यार्थी दलको क्रान्तिकी दीक्षा देते।

दरभगा जिलेमें कई जगह स्वराजी गाड़िया दौडीं। मधुबनी, समस्तीपुर, और रोसडाके विद्यार्थियोंने १० अगस्तसे ही बिना टिकट चढना, जहाँ चाहे उतरना

दरभंगा

शुरूकर दिया था। स्वराजी रेलगाडीका यह मुख्य लक्षण था। और प्रान्त भरमें कहीं भी इसने अपने इस धर्मको नहीं छोडा।

१४ अगस्तको स्वराजी गाड़ी चली सन्थाल परगनाके मधुपुरमें। छात्रोंने

संथालपरगना

रेलगाड़ीपर अपना अधिकार कर लिया और मनमाने ढंगसे उससे काम लेने लगे। समझिये वैद्यनाथधामसे जसीडीह और जसीडीहसे मधुपुर स्वराजी रेलगाड़ीकी ही धूम रही।

१२ अगस्तको आजाद-ट्रेन चली सोनपुरसे छपरेकी ओर। पटनेके विद्यार्थी

सारन

पटना छोड़ मुफस्सिल जा रहे थे, प्रतिहिंसाकी आगको बगलमें दाबे

हुए। आजाद-ट्रेन चलाया इनने ही, और यह ट्रेन तोड़फोड़का सन्देश देती हुई, तोड़ फोडका काम करती हुई छपरे पहुंची खुद जीर्ण शीर्ण।

१५ अगस्तको सोनपुर थानेके डिक्टेटर साहबने सोनपुर स्टेशनपर पधारते ही हुक्म दिया कि ट्रेन फ्री जायगी। उस स्वराजी गाड़ीपर टिकट लेकर चढ़नेकी मनाही थी। जिनने टिक्ट खरीद रखा था उन्हे लौटाना पडा और जो नहीं लौटा सके उनसे टिकट इकट्ठा करके स्वराजी टिक्ट कलक्टरोंने टिक्टोंको फाड डाला। फिर वह स्वराजी गाड़ी सरपर राष्ट्रीय झंडाको चढ़ाये हुए, डिक्टेटरकी हुक्म पाकर छपरे गयी। वह डिक्टेटरकी आज्ञानुसार ही रुक्ती चलती। उसके ऊंचे क्लास तो ग्रामीणोंके लिये ही रिजर्व थे।

पर सोनपुरके डिक्टेटरसे मैरवाके छात्र फुर्तीले निकले। उनने ता० १४ को ही स्वराजी गाड़ी चलायी। मैरवासे तिरगा झडा फहराती हुई एक मालगाड़ी भांटा पोखरकी ओर बढ़ी पर रास्तेमें ही वह ठहरा ली गयी और बहुमतसे कुछ डब्बे खोल उनके भीतरके सामानको जनताके घर जाने दिया गया। एक पसिञ्जर ट्रेन छपरे गयी, खूब सजधजकर। उसपर दो अंग्रेज बैठे थे, उनसे गाधीजीकी जय बुलवायी गयी। पर उन साहबोंका रंग ढग भी कुछ ऐसा था कि उन्हें स्वराजी गाड़ीसे ले चलना मुनासिब नहीं समझा गया। जिस डब्बेमे वे थे उसे काट दिया गया, तब कही गाड़ी बढ़ायी गयी। दोनों अंग्रेज पहले स्थिर रहे, पर जब गाड़ी कुछ दूर निकल गयी तब डब्बेके बाहर हुए और कहीं निकल गये।

चम्पारनके घोड़ासाहनसे बेतिया तक अजाद-ट्रेन दौड़ी। उसके सचालक थे

चम्पारन एक उच्च शिक्षा प्राप्त कानूनदां, और छात्रसंघके पदाधिकारी। समूची ट्रेन झडेसे सजी थी। कौमी नारोंसे गूंजती थी। गार्ड और ड्राइवर साहब भी 'वन्देमातरम्' का जयघोप करते थे।

और आजाद-हिन्द मेलकी तो लम्बी दौड़ थी। वह अगस्त क्रान्तिका प्रचार करती हुई दलसिगसराय, खगडिया, मानसी होती हुई कटिहार चली गयी।

फिर जमालपुरसे क्यूल तक स्वराजी गाडी चलायी शहीद लक्ष्मी चौधरीने।

भागलपुरमें सदल बल ट्रेनपर कब्जा किया श्रीमती अमृत कौरने। आप ट्रेन

भागलपुर सत्याग्रह करने चली थीं, सोचा था गिरफ्तारीका एक अच्छा रास्ता निकल आयगा। भागलपुर स्टेशनपर गया, जानेवाली ट्रेनमें जा बैठीं। सहस्रोंकी भीड़ साथ थी। आप नाथनगर तक गयीं, पर अपनी गिरफ्तारीकी सभावना

न देख फिर वापस आगयीं। आगेका मोरचा ठीक करनेका उनको समय ही न मिला। क्योंकि अगले दिन ही वह गिरफ्तार कर ली गयीं।

सच पूछिये तो शायद ही कोई जिला ऐसा होगा जहा स्वराजी रेलगाडी नहीं गयी और जहाकी गाडीपर सवार विद्यार्थी बुलन्द आवाजमे अगरेजी हुकूमतके खिलाफ खुली बगावतके नारे नहीं लगाये।

पर सबसे कमाल किया पटना जिलाने, जिसकी आजाद सरकारने चार दिन तक बिहार-बख्तियारपुर रेलवेका सञ्चालन किया।

पटना

पर स्वराजी रेलगाडीकी पूर्णाहुति दी पूर्णिया जिलाने। पूर्णियासे जोगवनी जो गाडी जाती है उसको अन्तमें सहारका मत्र सिखलाया, अगस्त क्रान्तिके साधकोंने। पूर्णिया और जोगवनीके बीचके हर स्टेशनपर जनताने देखा, टिकट घरकी खिडकीपर लिखा है—टिकट खरीदना मना है।

पूर्णिया

"पूर्णिया जोगवनी लाईनकी गाडिया पहले तो स्वराजी मैदानमे आयीं प्रचार करने। स्वराजी इञ्जनपर गाडी हकवाते हुए, स्वराजी ब्रेकमे गाडीपर नजर रखते हुये, और स्वराजी डब्बोंमे टिकट चेक करते हुये। जिसको टिकट देखते उतार देते। जो गिडगिडाता, आरजू मिन्नत करता, आश्वासन देता कि आइंदा कभी टिकट लेकर गाडीपर न चढेगा वा दिलजमई करा देता कि वह अमुक नेताका रिस्तेदार है,इसलिये रियायतका हकदार है, तो उसका टिकट फाडकर उसे फिर चढ़ा लेते। गाडीको आगे बढाते, पीछे हटाते, खड़ा करते वा चलाते, प्रचारकी सुविधा देख करके।

आखिरी बार स्वराजी उस गाडीमे सवार हुए अपने साज सामग्री सहित। हर स्टेशनपर वे मनमाना गाडी रोकते गये। किरासन तेलका कनस्तर उडेला और स्टेशनको जला दिया। हॉ! स्टेशनमे जो रुपये पैसे पाये उसे स्टेशन मास्टरके पास अमानतके रुपमें रख दिया और उनकी व्यक्तिगत चीजोंको भी जलनेसे बचाया। कसबासे जोगवनी तकका तो कोई स्टेशन अछूता नहीं बचा। उस गाडीसे सरकारी खजाना भी जा रहा था, हिफाजतमे बन्दूकधारी पुलिस। स्वराजियोंने खजानेकी ओर ताका भी नहीं। हा! बन्दूकें छीन ली शायद सोचा जहा स्वराज है वहा खजानेकी हिफाजत बन्दूकसे क्यो?

आज भी गार्ड और ड्राइवर बडी दिलचस्पीमे स्वराजी गाडीकी चर्चा करते हैं। पर जहा वे उन गाड़ियोंके सञ्चालकोंकी जिन्दादिलीपर खुशी जाहिर करते हैं वहा वे उनकी जिदपर क्षोभ प्रकट करते हैं। कहते हैं कि हम पहले बिलकुल उनके हमदर्द थे पर बादमें उनकी हरकतोंसे हैरान हो गये और पनाह मागने लगे।

— ❀ —

बिहारकी पहली आहुति

११ अगस्त मानो आन्दोलनकी सारी गर्मी समेटकर आया। शिक्षण संस्थाओ पर कसकर धरना पड़ने लगा और छात्रसघके कार्यकर्त्ता घूम घूमकर विद्यार्थियोका सगठन करने लगे। गान्धीजीने कहा था इस आन्दोलनमें जेल जानेके लिये आगे बढ़ना नही है। जेल जाना तो खेल हो गया है। मेरा तो इरादा है जितनी फुर्तीसे हो सके, जितना कम समय लग सके उतनेमे आन्दोलन जीत लेने का। गान्धीजीकी उक्ति आन्दोलन कारियोमे गजबकी फुर्ती ला रही थी। क्या पटना सिटी, क्या गुलजारबाग, क्या बांकीपुर—सभी जगह सरकारी हलकोमे वे हलचल मचा रहे थे।

स्कूल और कालिजके अनेक प्रोफेसर और टीचर सुबहके छ बजेसे ही अपनी अपनी सस्थाको से रहे थे। साइन्स कालिजके दो प्रोफेसरोको तीस तीस विद्यार्थियोकी छातीपर पैर देकर भीतर जाना पडा था और कईको दीवार लांघकर। इसलिये उनका वर्ग बडा सतर्क होरहा था। पर उनकी सतर्कता विद्यार्थियोके आकर्षणकी वस्तु न थी। विद्यार्थी तो सभी सस्थाओपर जबरदस्ती धरना बैठाकर उनका काम असभवकर देनेके लिये सचेष्ट थे।

इसी समय उन्हे मालूम हुआ कि पुलिसने बाबू अनुग्रहनारायण सिहको उनके डेरेपरसे गिरफ्तारकर लिया है। फिर ता बाबू श्रीकृष्ण सिहका सन्देश पानेके लिये वे व्यग्र हो गये। तुरत एक गाडी ली जिसपर बैठाकर उन्हे वे बी० एन० कालिजके हातेमे ले आये। विद्यार्थियोकी बडी तादाद इकट्ठी हो गयी थी। श्री कृष्ण बाबूने धधकती आवाजमे कहा कि महात्मा गांधी, राजेन्द्र बाबू और बडेबडे नेताओको गिरफ्तार करके मदान्ध अग्रेजी सरकारने देशको जो चुनौती दी है उसका मुंहतोड जवाब देना ही पड़ेगा। देशकी आंख विद्यार्थियोपर लगी हुई है, विश्वास है उसकी जजीर तोडनेमे वे समर्थ हो सकेंगे। वे सरकारका, उसकी फौजका, उसकी पुलिसका डर छोड दे। हा! अहिसा कभी न छोडें। हम तो न्याय मागते है। हमारी जीत होगी ही। भाषण देकर आप लौटे ही थे कि पुलिसने आपको भी गिरफ्तारकर लिया।

पर विद्यार्थी हतोत्साह नहीं हुए। यह क्रान्ति नेताओकी नहीं रह गयी थी,

यह तो जनताकी हो गयी थी—छात्रोंकी और साधारण कार्यकर्त्ताओंकी। विद्यार्थी दूने उत्साहसे धरना देने लगे।

गुलजारबागकी शाहशाह रिजवी कन्या पाठशालापर जबरदस्त धरना देखकर अध्यापिकाने गाड़ीवालोंसे कहा कि लड़कियोंको वापस घर पहुंचा आओ। पर कितनी लडकियां धरना देनेवालोंके साथ नारा लगाने लगीं। फिर तो संस्थाको अनिश्चित कालके लिये बन्दकर देना पडा।

बांकीपुर कन्या हाई स्कूलके धरनेको तोड़नेके लिये तो घुडसवार पहुँचे। वे बेंत और डंडे अन्धाधुन्ध चलाने लगे। इसी समय श्री भगवती देवी वहां पहुंची, अनेक देश सेविकाओंके साथ। देश सेविकाओंको देख लडकियोंमें काफी जोश पैदा हुआ और नारे लगाती हुई वे संस्थाके बाहर हो गयीं।

आज सेक्रेटेरियटपर झंडा फहराना था। इस प्रोग्रामका आकर्षण भिन्न भिन्न स्थानोंमें विद्यार्थियोंकी टोलियोंको सगठितकर रहा था।

पटना सिटीसे विद्यार्थियोंका जलूस निकला जिसकी एक टोली सेक्रेटेरियटकी ओर बढ़ी, दूसरी बांकीपुर लौनको रवाना हुई, तीसरी निकली सिटी कोर्टको अपने राष्ट्रीय झंडेसे सुशोभित करने।

कोर्टकी हिफाजतमें पुलिस थी लट्ठधर और हथियारबन्द, और गोरखे भी थे। पर यह निहत्थी टोली बढ़ती ही गयी। हरिचरण वानप्रस्थी नारा बुलन्द करते फौजके देखते देखते साथियोंको लेकर कचहरीपर पहुंच गये। उनकी टोलीने झंडा फहरा दिया। फिर तो उत्साहका समुद्र उमड़ पड़ा! लोग सेक्रेटेरियटकी ओर बढ़े। उनके कई साथी गिरफ्तारकर लिये गये थे। पर गिरफ्तारीकी किसे परवाह थी।

दिनके लगभग तीन बजेसे सभी टोलियोंको पटना सेक्रेटेरियट अपनी ओर खींचने लगा। जो टोली जहां थी वहींसे चल पडी। जिस टोलीमें जितने छोटे विद्यार्थी वह टोली उतनी ही तेज। उधर रास्तोंकी नाकेबन्दी हो रही थी—लट्ठधर, सगीनधारी और घुडसवार सभी पैंतरेमें। अनेक जगह अनेको टोलियोंसे मुठभेड हुई। पर जबरदस्त मुठभेड हुई गोलघरके पास, जहांसे सेक्रेटेरियटका रास्ता सीधा और नजदीक पडता है। वहा लट्ठधर गोरखे और बलूची घुडसवार अपनी नमक हलालीकी बेरहमी दिखला रहे थे। अनेक टोलियोंके कितनोंको उन्होंने बुरी तरह पीटा, बहुत घायल हुए और कुछ तो लदकर अस्पताल पहुँचे। पास ही पुलिस

भी मौजूद थी, जो चुस्त चालाकको चुन चुनकर हिरासतमे ले रही थी। पर टोलीपर टोली उमड़ती आ रही थी। पत्थरोसे पानी नही रुकता। फिर भला इन घुडसवारोसे आदमी क्या रुकते! घुड़सवारोसे दबते पिचते अगलसे बगलसे कितने आदमी निकल गये, आगे चलकर टोलियां बनांयी और चल पड़े सेक्रेटेरियटकी ओर।

लोगोने धारासभा-भवन (Council and Assembly Chambers) के सामने मोरचा बांधा। भवनके प्रवेश द्वारपर पुलिसकी चौकसी थी। सामने, सड़कके अगल बगलके बगीचोमे लोग इकट्ठे हो रहे थे।

पहली टोली पहुँची स्कूलके विद्यार्थियोकी। जनता भी शामिल थी। आते ही विद्यार्थियोने प्रवेशद्वारके पायेपर झंडा फहरा दिया और बगलसे झाड फांद हातेमे घुस गये और भवनकी ओर दौड़े। भवनके पहरेदार कड़े थे। उन्होने अन्धा धुन्ध हन्टर चला चलाकर विद्यार्थियोको बाहरकर दिया। तब तक पुलिसने पायेपरके झडेको उतारकर अपने पास रख लिया था। कई छात्रोको गिरफ्तार भी कर लिया था।

तत्काल दूसरी टोली पहुँची कॉलिजके छात्रोकी। बालेश्वर सिंह, विद्यार्थी साइन्स कालिजको शब्दोमे उसने देखा—"सभी गेट बन्द और सबोपर लाठीबन्द पुलिस और गोरा सर्जेन्ट मुस्तैद। फिर चारो ओर बालछड़ीका कॉटा। भीतर कैसे जाया जाय। इसी बीच आवाज आयी कि पीछेसे तीन-चार सौ विद्यार्थी झडाके साथ भीतर पैठ चुके हैं। फिर तो हमलोग जोशमे आ गये। बायी ओरसे कॉटोको तोड़ मड़ोर डेढ़ सौकी तादादमे भीतर घुस गये। कुछ विद्यार्थी झडेके साथ सीढ़ीपर चढ़े ही थे कि सर्जेन्टने हन्टर चलाना आरम्भकर दिया। देखादेखी पुलिसकी लाठी चलने लगी। लोग मुड़े और आगे बढ़े। इसी बीच एक लम्बी लाठी हम तीनोपर आ पड़ी। इन्द्रदेव (श्रीजगलाल चौधरीके सुपुत्र जो पीछे शहीद हो गये) के सरमे चोट आयी। वह घायल होकर गिर गया। उस लाठीसे मेरे हाथमे और भवानन्दकी पीठपर चोट आयी। इन्द्रदेवको झटसे हमलोगोने बाहर किया, उसे उठाकर अस्पताल ले गये। हमलोगोका बाहर निकलना था कि घुड़सवारोका एक-दल वहीं आ पहुँचा। वे बेतहासा भीड़मे घोड़ा दौड़ाने लगे। फिर भी उमड़ती भीड़ पीछे न हटी।"

तब तक सरकारकी पूरी ताकत वहाँ पहुँच गयी। लट्ठधर पुलिस, पजाबी घुडसवार, फौजी गोरखे और उनके सरपर एस० पी०, डी० आई० जी० और कलक्टर। तो भी जो टोली आती सीधे प्रवेश द्वारपर जाती और घुड़सवारोकी पक्ति चीरकर भीतर

जानेकी कोशिश करती। फिर घुडसवार बढ़ते और उसके बीच घोड़े दौड़ा-दौड़ा कर लोगोंको तितर-बितरकर देते। घुड़सवार थक गये, पर विद्यार्थियोंका धावा जोर पकड़ता गया। इसी बीच एक घुड़सवारकी पगड़ी गिर गयी। विद्यार्थियोंने उसे उठा लिया, उसका प्रदर्शन किया और जला दिया। लोगोंका उत्साह दुगुना हो गया। उनकी संख्या २५, ३० हजार तक पहुँच गयी। विद्यार्थी फाटकपर डटे गये और सभा-भवनपर जाकर झंडा फहरानेकी आवाज लगाने लगे।

मिस्टर आर्चर, कलक्टर आगे बढ़े। विद्यार्थियोंको समझाने लगे। लाट साहबका हुक्म नहीं है, कैसे झंडा फहराइयेगा। पर इधर समझना तो था नहीं। था तो झंडा फहराना। फिर आर्चरने कहा—लाट साहबको फोन करूँ, जो वह कहें हम सब मान लें। विद्यार्थी चिल्ला उठे—No compromise—समझौता हर्गिज नहीं। तब जोशीले-जोशीलेको चुन चुनकर आर्चर साहबने गिरफ्तार करना शुरू कर दिया। पर विद्यार्थियोंको तो गिरफ्तार होना नहीं था। उसने धारासभा-भवनके हातेमें घुस पड़नेकी फिर सरतोड़ कोशिश की। उन्हें रोकने घुड़सवार दौड़े। इस बार एक सवार घोड़ेसे गिर पड़ा और कुछ घायल हो गया। तब उनका पारा चढ़ने लगा। पर विद्यार्थी जैसेके तैसे रहे। घुड़सवार जब फाटकपर सिमटे, वे सामने जा डटे।

इस समय भीड़की बहुत बड़ी तादाद थक सी गयी थी। सड़कके अगल बगलके बगीचोंमें बैठी, लेटी, दिल बहला रही थी। अत्यधिक विद्यार्थी भी लेटे, पड़े, बैठे दीखते थे। कोई व्याख्यान दे रहा था। कोई आर्चरकी नकलकर रहा था, कोई भुने भुट्टे खा रहा था। हाँ! फाटककी ओरसे जब जरा जोरका नारा आता, सब उधरको देखते और कसकर नारेको दुहरा तिहरा देते।

एका एक उनमें खलबली मची। सत्याग्रहियोंको तितर बितर करते घुड़सवार बगीचोंमें आये और लगे सरपट घोड़े दौड़ाने। लोग गिरते पड़ते, साथियोंका धक्का खाते, पेड़ोंसे टकराते, इधर उधर भागकर अपनेको बचाने लगे। कितनोंको चोट लगी, कितनोंकी कलम टूटी, घड़ी फूटी, पर घुड़सवारोंके वापस होते ही अधिकांश हँसते, आह ऊह करते जहां तहां बैठ गये और कितने शहरकी ओर लौट पड़े। और पहलेसे कहीं अधिक विद्यार्थी फाटककी ओर बढ़े। आर्चर साहब सामने खड़े थे। विद्यार्थियोंकी टोलीके पीछेसे उनपर ढेले चलने लगे। आर्चर मुर्दाबाद। सन सत्तावन याद करोका शोर तो हो ही रहा था। ढेले हलके थे पर नारे तीर जैसे चुभ रहे

W31
H7

थे। मि० आर्चर ढेलेको बेतसे रोकते हुए फाटकके भीतर आये, गोरखोंको सामने किया और जब बिलकुल निहत्थे थके मांदे विद्यार्थियोंकी टोली दस बारह कदमके फासलेपर पहुँची, कुछ बोले। धड़ामकी आवाज हुई। पीछेके लोग भागने लगे। अगली कतारने ललकारा—झूठा फायर है, बढ़े चलो। पर उनकी ललकार लोगों तक पहुँच भी न पाई थी कि दूसरी आवाज हुई।

स्तम्भित आँखोंने देखा, बच्चोंकी लाशें तड़प रही हैं। हाँ! प्राय: सभीके सभी बच्चे,- हाईस्कूलके छात्र, जिनके होठोंको जवानी रंग भी न सकी थी! घायल 'पानी' 'पानी' चिल्लाने लगे। लोग जहाँ तहाँ ठिठके। पर आर्चर साहब दौड़ दौड कर वहाँ गोरखे ले गये जिनने राइफल दिखा दिखा लोगोंको भगा दिया। आर्चर साहब हताहतोंकी क्यों फिक्र करते? अगस्त आन्दोलनका बिहारकी राजधानीमें यह पहला प्रदर्शन था जिसको सरकारकी कूबतका नृशंस प्रदर्शन करके वे इस तरह कुचल देना चाहते थे जिससे सारा बिहार थर्रा उठे। किन्तु उनकी और उनके गोरखोंकी सारी पैंतरेबाजी छात्रोंको वहाँसे भगा न सकी। वे अपने हताहत साथियोंको जैसे तैसे अस्पताल ले आये।

इस गोलीकाडकी खबर वनकी आग जैसी शहर भरमें फैल गयी। शहीदोंका खून सबके हृदयमें जोर मारने लगा। कदमकुँआकी ओरसे देश-सेविकाओंका जो जलूस सेक्रेटेरियटकी ओर बढ़ रहा था अपने हताहत बच्चोंको सुध लेने अस्पतालकी ओर मुड़ा परन्तु सायन्स कालिजके विद्यार्थी आर्चर साहबकी रक्त पिपासाको बिलकुल शान्तकर देना चाहते थे। उन्हें मालूम हुआ था कि उनके तीन छोटे-छोटे साथी घटनास्थलपर ही शहीद हो गये हैं और कितनोंको सांघातिक गोली लगी है तो भी सेक्रेटेरियटपर आर्चरने झण्डा फहराने नहीं दिया है। वे लगभग दो सौका जलूस लेकर चल पड़े, प्रण करके कि झण्डा फहराकर ही रहेंगे न तो एक एक करके मर मिटेंगे। जलूस गोविन्दमित्र रोडपर पहुँचा था कि जिला कांग्रेसके पदाधिकारी सामने आये, विद्यार्थियोंको समझाया कि घायलोंकी तीमारदारी उन्हें अस्पताल बुला रही है, उन्हें सेक्रेटेरियटकी ओर न बढ़कर अस्पताल पहुँचना चाहिये और जल्द-से-जल्द। उस समय उन्हें यह भी मालूम हुआ कि एक विद्यार्थी धारासभा-भवनके मुंडेरेपर चढ़ गया था। उसने वहाँ अपने कुरतेको फाड़ डाला था और आलपीनके सहारे एक छोटे राष्ट्रीय झंडेको उसमें साट उसे एक बड़े राष्ट्रीय झण्डेका रूप देकर

पटना सक्रेटेरियट-गोलीकांडके छः शहीद विद्यार्थी
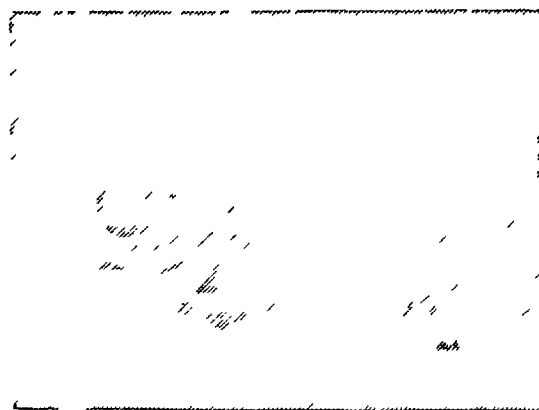
पटना सेक्रेटेरियट-गोलीकाण्डके छः शहीद विद्यार्थी
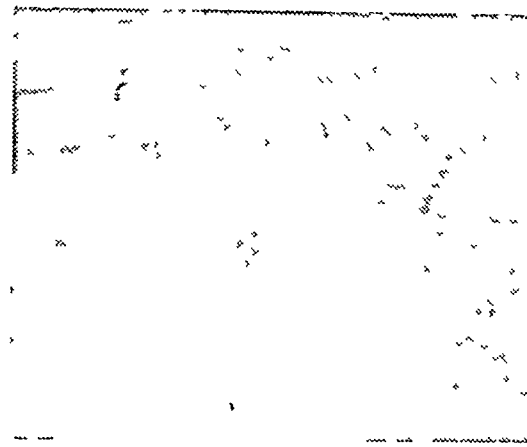
उड़ाया था। जब झण्डे उड़ाता हुआ वह कौमी नारे लगा रहा था, सर्जेन्टकी आँख उधर गयी और वह गिरफ्तारकर लिया गया। इस खबरको पाकर जलूसने अस्पतालकी ओर मुड़ना ही मुनासिब समझा।

उस दिन दानापुरमें भी काफी हलचल थी। खबर आयी थी कि गोली चलनेवाली है। इसलिये बाबू सिंहेश्वर प्रसाद वहाँ जा पहुँचे थे। जब लौटे तब गोलीकाण्डकी खबर उन्हें मिली। तुरत साथियोंको लेकर सेक्रेटेरियटको चल पड़े। जब पटना जंकशन पहुँचे तो देखा—स्टेशनको भीड़ने घेर रखा है। भीड़ अत्यन्त उत्तेजित है। वे भीड़को चीरते चले। मालूम हुआ कि लोगोंने एक अङ्ग्रेज दम्पतिको घेर रखा है। उसपर आक्रमण भी हुआ है। अब वह जान बचानेकी गरजसे स्टेशनकी एक कोठरीमें जा छिपे हैं। सिंहेश्वर बाबू तुरत उस कोठरीमें पहुँचे और दम्पतिको सकुशल दानापुर पहुँचानेका इन्तजाम कर दिया। लोगोंके सरपर खून सवार था। पर वे कांग्रेसके नेताओंको न भूले थे जिनके कड़े रुखको देखते ही उनकी जाग्रत हिंसा हवा हो जाती थी।

जब सिंहेश्वर बाबू स्टेशनसे बाहर हुए तब देखा सभी अस्पतालको दौड़े जा रहे हैं। अस्पतालपर हथियारबन्द पुलिसका पहरा था पर लोग टूट पड़ते थे घायलोंको अपना खून पिलानेके लिये। डाक्टर साहब एकको बुलाते तो दस आते। जिनका खून नहीं लिया जाता उनमेंसे कितने सिसक पड़ते।

जब खबर मिलीकी चार और शहीद हो गये तब भीड़ने अपने सातों शहीदोंका जनाजा जरा धूमधामसे निकालना चाहा। पर अधिकारियोंने लाश देनेसे इनकार कर दिया। अब तो लोगोंका पारा चढ़ा। सिंहेश्वर बाबू और 'सर्चलाइट' के सम्पादक बाबू मुरलीमनोहर प्रसाद बीचमें पड़कर आर्चर साहबसे शहीदोंकी लाशें नहीं दिलवा देते तो कहना कठिन है अस्पतालमें कैसा काण्ड उपस्थित हो जाता।

बुलन्द कौमी नारों और जयघोषके बीच सजधजकर, धूमधामसे, सात शहीदोंका जनाजा निकला। ग्यारह अगस्तकी आधी रात थी। मालूम होता था सप्तर्षि उतरकर पटनेकी सड़क सड़कको अपनी ज्योतिसे जगमगा रहे हैं और समस्त जनताको क्रान्ति ध्रुवकी ओर खींचे ले जा रहे हैं।

सुबह होते होते दीघा श्मशानघाटपर शहीदोंकी चितायें धधक उठीं, अगस्त आन्दोलनकी ज्वालामुखी फूट पड़ी जिसके तापसे पटना ही नहीं सारा बिहार उत्तप्त हो गया।

अबतक जनताकी ओरसे जितनी कार्रवाइयां हुई उनमे साम्राज्य विरोधिनी भावनाका पर्य्याप्त प्रदर्शन था, प्रतिहिंसाका पुट न था। दानापुरमे जलूस निकला था। उसपर सैनिकोंने लाठीका प्रहार भी किया था पर जनता शान्त रही थी। खगौलके गान्धी विद्यालयके प्रधान शिक्षकने किसानो और मजदूरो और विद्यार्थियोका विराट प्रदर्शन किया था और सबोंके देखते देखते पुलिस उन्हें गिरफ्तारकर ले गयी। पर जनता आपेसे बाहर न हुई। हां, नौबतपुरके कुछ प्रदर्शनकारियोंने नहर आफिसकी सामाग्रियोंमे आग लगायी और मनेर थानेके विद्यार्थियोंने रेलोकी पटरियोंको भी उखाड़ा। पर पटनाकी जनताके लिये ग्यारह अगस्त तकके दिन हड़ताल और जलूसके ही दिन रहे और उनका रास्ता सत्याग्रहका रास्ता रहा। विक्रमने ११ अगस्तको हड़ताल मनायी। स्कूल, रजिस्ट्री और नहर आफिसपर झंडा फहराया। इस दिन थाना कांग्रेसके सभापति एक कार्यकर्त्ता सहित गिरफ्तार हुए, और थाना आफिस जब्त हुई।

और और जगहोंमे भी ११ अगस्तकी हवा वैसी ही थी।

मुंगेर जिलेके खड़गपुरमे ग्यारह अगस्तने उभाड़ा एक मांको। वहाँका राष्ट्रीय विद्यालय और राष्ट्रीय विद्यालयमे जो खादी भण्डार था सो, ता: १० को

मुंगेर

जब्त हो चुका था। खड्गपुरके नेता नन्दकुमार बाबूकी गिरफ्तारीकी खबर, जो मुगेर जिला कांग्रेस आफिसके फाटकपर हुई थी, वहां पहुँच चुकी थी। नन्दकुमार बाबूकी मां क्षुब्ध थीं। जनता जोशमे थी। जब्ती और गिरफ्तारीको सरकारी कार्रवाईका जवाब दिया उसने एक विराट प्रदर्शन करके। मांको आगे करके जनता चली नारे लगाती हुई, झंडे उड़ाती हुई।

जलूस थाना पहुँचा, वहाँसे रजिस्ट्री आफिस गया और वहाँसे पोस्ट आफिस। सबोंकी इमारतोंपर उसने झंडे फहराए। उसकी सुव्यवस्थित दृढ़ता देख किसीको आगे आनेका साहस नही हुआ।

जुलूसमे विद्यार्थियोंकी काफी तादाद था। इसलिए जब वह ली हाई स्कूलपर झंडा फहरा रहो थो तब विद्यार्थी उसके नामके शुरूका शब्द जो 'ली' है उसे विलीनकर रहे थे। ली साहबने १९३२ के आन्दोलनमे तारापुरके सत्याग्रहियोंको गोलीका शिकार बनाया था। उस आततायीका नाम मिटा देना विद्यार्थियोंने अपना फर्ज समझा था।

भागलपुरमे ११ अगस्त सत्याग्रहकी दुन्दुभि बजाता आया। कांग्रेस भवनको

दखल करके सरकारने पुलिसका जो पहरा वैठा दिया था उसे जनताके राग-रोशकी
भागलपुर कोई परवाह नहीं थी। सत्याग्रह करनेकी जो चुनौती विद्यार्थियोने
दी थी उसकी पुलिसको क्या चिन्ता हो सकती थी? उसकी लाठीकी पितलिया
मूॅठ विद्यार्थियोकी खोपडीको कड़कड़ा देनेकी काफी ताकत रखती थी।

पर आजादी तो सौ सौ जानोंको भी सस्ती है। आजादीके दीवाने विद्यार्थी एक एक करके वढ़ने लगे और उनने चारो तरफसे अपने कांग्रेस भवनपर धावा किया। धावेमें १३ सालके वच्चे तक शामिल थे। धावा करनेवाले सत्याग्रहियोपर कठोर प्रहार होने लगा। छोटे वच्चे वूटकी ठोकरोकी मारसे वेदम होने लगे। औरोपर लाठीका मजवूत हाथ पड़ने लगा। विद्यार्थी खूनसे तर होने लगे। पर, उनका उत्साह कम न हुआ। आहतोकी मरहम पट्टीकी व्यवस्था जनताने अपने हाथ मे ले ली थी। इसलिये जो घायल होता उसे जनता मैदानसे हटा लेती, पर एकके हटते दस मैदानमे कूद पड़ते। फिर तो पुलिस थक गयी। उसने सत्याग्रहियोको लौरीपर जवरदस्ती विठाकर सवौर छोड़ आनेका निश्चय किया। पर सवौरमे कोई उतरता तव न! पुलिस सवौर पहुॅचकर सत्याग्रहियोको लौरीसे खींच वाहर फेंकनेकी कोशिश करती, पर वे इस तरह चिपक जाते मानो निर्जीव लौरीके ही एक सजीव अंग हो। हार मान पुलिसने अपना प्रोग्राम वदला और सत्याग्रहियोंको तिलका माझा नामक स्थानमे छोड आने लगी। शहरमें हड़ताल जारी था।

११ अगस्त दरभंगाके लिये भी अनोखा निकला। हिसा और अहिसाकी प्रति-
दरभंगा क्रियाओमें जो विपमता होती है उसे जनताने साफ साफ देखा।
सरकार किस ढगसे हिसाको उभाड़ती है सो भी मालूम हुआ।

सुवहसे ही दरभगा और लहेरियासरायके स्कूलो और कालेजोके विद्यार्थी सारे शहरमें अगस्त क्रान्तिके नारे लगा रहे थे। दिन चढ़े सभी किग्स पार्कमे जमा हुए और कतार वांध लहेरियासराय कलक्टरीके सामने प्रदर्शन करनेका निश्चय किया। अभी उस स्थानसे हिले डुले भी न थे कि पुलिस पहुॅची, लाठी चार्ज हुआ, वहुतोको चोट आयी। कितनोंको इतनी सख्त कि वे आगे न वढ़ सके। पर मारसे कहीं आजादीकी भावना मरी है? लड़के वढ़ते गये और कचहरी चौक आ धमके। वहा पुलिसकी मोर्चेबन्दी थी, वड़ी जवरदस्त। जिन्दादिल विद्यार्थी आगे वढ़े और पुलिसकी कतारोमें पिल गये। लाठी चलने लगी। पुलिस हमारा भाई है का नारा

लगने लगा। दर्शकोंकी बडी भीड़ इक्ट्ठी हो गयी। लाठीकी ताकतसे 'पुलिस हमारा भाई है' का नारा लगाती हुई छात्र मण्डलीको पुलिस हटा देती पर तुरत 'अंग्रेजो भारत छोड दो' की आवाज बुलन्द करती हुई मण्डली आगे बढ़ पुलिसका मोरचा तोडनेकी कोशिश करती। ऐसा बार बार होता रहा। पुलिसवाले लाठी चलाते चलाते कुछ ढीले पडने लगे। पर विद्यार्थी मार खा खा कर जोशीले बनते गये। एकाएक वे पुलिसकी लाठियोंकी बौछारके बीच बैठ गये और पुलिस हमारा भाई हैका नारा लगाते हुए आगे घुसने लगे। बस, पुलिसकी लाठी बन्द। डी० एस० पी० ने कडककर कहा—लाठी चलाओ—पर वहां तो पुलिस नहीं, छात्रोंके भाई खड़े थे। डी० एस० पी० की कौन सुनता। बीस मिनट तक ऐसा दृश्य रहा और लगातार 'अंग्रेजो भारत छोड दो, इन्कलाब जिन्दाबाद, पुलिस हमारा भाई है' के नारे बुलन्द होते रहे।

ठीक इसी समय जयनगरके श्री अयोध्याप्रसादने देखा—गंगासिंह, सी० आई० डी० जनताकी भीड़में ढेला फेंक रहा है। वह हां, हां, चिल्लाते ही रहे कि जनताकी ओरसे जवाबी ढेले आने लगे। फिर तो ढेलोंकी झड़ी सी लग गयी। पुलिसको चोट आयी, अफसरोंको चोट आयी, और वहांका समा ही बदल गया। आगे बढ़ते हुए विद्यार्थीयोंपर लाठी बजरने लगी, इस तरह कि कुछ पूछिये नहीं। कितनोंके सर फूटे, कितनोंकी अंगुलियां टूटीं और ९ सत्याग्रही वहीं बेहोश होकर गिर गये। लोग भाग खड़े हुए। फिर पुलिस हट गयी।

तीमारदारोंकी कमी न थी। घायलोंकी सेवा शुश्रूषा हुई और ८ सत्याग्रही अस्पताल पहुंचा दिये गये।

विद्यार्थियोंकी छाती तो गज भरकी हो गयी, और वे दूर दूरके मनसूबे बांधने लगे। उन्हें क्या पता था कि पटनेका गङ्गातट किसी और आगको धधका रहा है जिसकी लू लपट समस्त प्रान्तको आकुल कर देगी।

मुजफ्फरपुर जिलेके लालगंज थानेने भी ११ अगस्तकी कहानी अपने दो दो जवानोंके खूनसे लिखी है। उस दिन झुंडके झुंड लोग इकट्ठे हुए, जिनको लेकर मुजफ्फरपुर विद्यार्थियोंका एक बड़ा समूह थानेपर कांग्रेसका झंडा गाड़ देनेको निकला। श्री वासुदेव खलीफा नेतृत्व कर रहे थे। इस बेशुमार भीडको देख पुलिस घबडा गयी। उसने निश्चय कर लिया कि किसीको थानेके पास फटकने न देगी और अगर किसीने ऐसी कोशिशकी तो गोली खिला उसे सुला देगी। थानेपर

जो हथियार बन्द थे, राइफल ले पैंतरेमें आगये, किन्तु भीड़ आगे बढ़ती ही चली। एकको, जो बढ़ बढ़कर नारे लगा रहा था और लोगोंमे जोश भर रहा था, पुलिसने गिरफ्तार कर लिया। पर लोग तो ६ अगस्तसे ही आजाद थे। उन्हें पुलिस और अंग्रेजी राज जो उठ गया था कैसे गिरफ्तार कर सकता था। लोग बिगड़े और थानेपर टूट पड़नेकी तैयारी करने लगे। उनका रुख देख पुलिसने गिरफ्तारशुदा सज्जनको छोड़ दिया। पर लोगोंको धक्का दे देकर हटाना शुरू किया जिसपर लोग ईंट और रोड़े चलाने लगे। तुरत पुलिसने गोली छोडी जिससे श्री विभीषण महाराज और श्री सिहेश्वर ठाकुर शहीद हुए। यह घटना हुई दिनमे दोपहरको।

शहीदोंके खूँका असर

१२ अगस्तका सूरज स्यापा मनाता हुआ पटनेमें निकला। अस्पतालमें एक औरकी मृत्यु हो जानेसे शहीदोंकी सख्या आठ तक पहुँच गयी और आठ बच्चोंका खून क्या हिन्दू क्या मुसलमान सबोंको आठ आठ आसू रुला रहा था। आजकी हड़तालमे मुसलमान भी शामिल थे। जनताकी ताकत बढ़ गयी थी और उसका क्षोभ तो कई गुना बढ़ गया था।

क्षोभ बढ़नेका कारण था। जनताका विश्वास था कि आर्चर जरा और धीरजसे काम लेता तो गोली चलानेकी जरूरत न पड़ती। थके मांदे लड़के घटे दो घटे प्रदर्शन करके लौट आते। वे बेकाबू न हो रहे थे। गिरफ्तारी मान रहे थे। किसी गिरफ्तार शुदाने भागनेकी कोशिश नहीं की और न उसको भगानेका प्रयत्न हुआ इसलिये जानताकी धारणा थी कि लड़के मारे गये चूंकि वे हिन्दुस्तानी थे। अगरेजी हुकूमतसे अपने हकके लिये लड रहे थे। और अंगरेजोको हक देना नहीं था। उन्हें तो गोलीसे भून भूनकर हक मागनेकी हिन्दुस्तानियोंकी आदत छुडा देनी थी।

जनताके क्षोभमें अभिमानका भी यथेष्ट पुट था। गोली चलते देख लड़के चौंक उठे थे जरूर पर उनने गोली खायी बहादुरोंकी तरह। श्रीबालेश्वर सिंह लिखते हैं—एक १४ वर्षीय बालकके घुटनेमें चोट आयी। वह आगे बढ़ बोल उठा—"कायर ठेहुनेमे क्यो, छातीमें मार। मैं उस लड़केके निकट ही था। भयभीत हो

एक पेड़की ओटमें थरथर कांप रहा था। मै उस बच्चेकी वीरतापर मुग्ध होगया।

एक विद्यार्थी कार्यकर्त्ता शुकदेव नारायण कहते है—"सुबहको सात बजेके लगभग मेडिकल कालिजके छात्रोंके साथ साथ मैंने देखा कि अस्पतालके सामने आमके पेडके नीचे बैठा एक बूढ़ा रो रहा है। मालूम हुआ कि अभी अभी सवेरे उसका लड़का गोलीके घावसे मर गया है। हमलोग उसके पास गये और विनम्र हो बोले—आपका पुत्र देशके काम आया है। आपको इसका गौरव होना चाहिये। बूढ़ेने कहा, "मै इसलिये नहीं रोता हूं कि मेरा पुत्र मारा गया। मै बूढा हुआ, देहमें ताकत नही, अब कौन है जिसका सहारा लेकर मै देशका कुछ भी काम कर सकूंगा। मेरे रोनेका यही कारण है।"

हमलोग फिर उसे कुछ कह न सके। सचमुच उस बूढ़े जैसी भावना औरोकी भी हो सकती थी। उस गोलीकाण्डमे जितने मरे थे प्राय: सभी गांवके थे और स्कूलके ही पढ़नेवाले। रामानन्द सिह, रामगोविन्द सिह, राजेन्द्र प्रसाद, सतीशचन्द्र झा और उमाकान्तजी सबके सब मैट्रिकके छात्र थे। जगतपतिजी कालिजके दूसरे वर्षमें पढ़ते थे।

विद्यार्थियोने स्कूलो और कालिजोको वीरान बना देनेकी ठान ली। ऐसी जबरदस्त पिकेटिङ्ग हुई कि किसीका अन्दर जाना मुश्किल हो गया। हां, सायन्स कालिजके सिनियर प्रोफेसरका राजभक्त हृदय उछला और वे दीवार लांघ दफ्तरमें घुसनेकी कोशिश करते हुए धरना देनेवालोसे घेर लिये गये। उनका कपड़ा फट गया था, बदन जहां तहां छिल गया था। वे सबोसे अनुरोध करने लगे कि मुझको एक बार, आखिरी बार दफ्तर जाने दो। एक दूसरे प्रोफेसरको तो मानो अंगरेजी सल्तनतकी पूरी ताकत मिल गयी। वह बड़े जोशसे धरणा देनेवालोके शरीरपर अपने पैर जमाता हुआ सायन्स कालिजमें दाखिल हुआ।

उधर कुछ विद्यार्थी अपने साथियो और शिक्षकोसे निबट रहे थे, इधर कुछ भिन्न भिन्न टोलिया बना सरकारके सभी अमलोसे सरकारी नौकरीको लात मार देनेकी अपील कर रहे थे। उनका इरादा था सरकारके सभी दफ्तरोको वीरान कर देनेका।

सरकारी अमलोंको भी चैन न था। उनकी आखोमें आठ माशूमोंकी लाशें तड़प रही थीं। उनकी राजभक्ति हलकी साबित हो रही थी और बड़े बड़े इस्तीफा

देनेकी सोच रहे थे। सेक्रेटेरियटका एक किरानी तो नौकरी छोड़ आन्दोलनकारियोंमें शामिल भी हो गया था।

एक बडा जलूस हाईकोर्ट पहुचा। जजो और उनके साथियोंसे सरकारी पत्त छोड़ अपनी कौमका साथ देनेकी अपील करने लगा। वैरिस्टर श्रीमती धर्मशीलादेवी भी अपील करनेवालोमे थीं।

पटनेका भाग्य कि आज ही वम्बईकी ओरसे जंकशनपर पहुंचे श्रीसत्य-नारायण सिंह, प्रधान मन्त्री विहार प्रान्तीय काग्रेस कमिटो। आप स्टेशनपर ही पुलिसकी हिरासतमे ले लिये गये। पर प्रान्तके कार्यकर्त्ता श्री सखीचन्द जायसवाल, वावू चन्द्रशेखरप्रसाद सिह आदिसे दिल खोलकर वाते करनेका मौका उन्हें मिल गया। उनने वम्वईसे वनारस तक तोड़ फोडके जैसे जैसे दृश्य देखे थे उनका वर्णन किया। वे साथ कई परचे भी लाये थे जिन्हें इन कार्यकर्त्ताओंको सौंपा। देशव्यापी आन्दोलनको सिलसिलेसे चलानेके लिये वम्वईमें आल इन्डियो काग्रेस कमिटीका गुप्त सगठन हो गया था और इन परचोको उसी सगठनने निकाला था। पर सत्यनारायण वावूके पहुंचनेके पहले ही यहा वम्वई और वनारसको मात कर देनेवाली गरमी, आर्चरकी गोलियोंसे पैदा हो गयी थी। धारासभा-भवनके सामनेसे जो जनता लौटी थी उसमेंसे कईने लेटर-वक्स और तारपर हाथ साफ करना शुरूकर दिया था। आज उनका व्यापक सगठन शुरू हुआ।

इस सगठनमें पटना और पटना सिटीके मजदूर, रिक्शावाले, टमटमवाले, खोंचावाले और यहाँतक कि होटलो और कुछ परिवारोके नौकर चाकर भी शामिल थे। विद्यार्थियोंने और कांग्रेस कर्मियोंने इस संगठनका साथ दिया और इससे पूरा काम लिया। इसका एक गिरोह गवर्नमेन्ट प्रेस और गुलजारवाग एक्सचेंज ऑफिसपर झंडे फहराता और मजदूरोंसे हडताल करवाता शहरमें घूमता रहा। दूसरा विद्यार्थियोके नेतृत्वमे जेलपर धावा वोलने चल पड़ा।

वांकीपुर जेल क्रान्तिका विजली घर वन रहा था। राजेन्द्रवावू, श्रीकृष्णवावू, अनुग्रहवावू और अव तो सत्यनारायणवावू सवके सव वहाँ मौजूद थे। सवोंमे उत्साह था और क्रान्तिकी एक एक खवर उनके उत्साहको दुगुना चौगुना कर रही थी। कल तक पचाससे ऊपर विद्यार्थी और कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हो चुके थे। जो ८ अगस्तकी आधी रातसे ही अपनेको विलकुल आजाद मान रहे थे।

जेल उनकी भावनाको उभाड़ ही रहा था। किला जैसा घर जहाँ खाने सोनेका अच्छा इन्तजाम। बस, नारे लगाना जेलके मकानकी छतोपर फांद जनताको भिन्न भिन्न नेताओके नामसे सन्देश देना, भीतरकी खबर बाहर और बाहरकी खबर भीतर पहुँचाना उनका प्रोग्राम था। जेलके अधिकारी उनपर अंकुश रख न पाते थे और जेलको पुलिसके हाथोमे रखकर अपनी भद्द उड़ाना उन्हे पसन्द नहीं था। इसलिये उनने इन सबोको पटना कैम्पजेल भेज बला टालनी चाही और उनको लेनेके लिये पुलिसकी लौरियां भी पहुँच गयी थीं, जिनपर ये सवार हो रहे थे।

उसी समय जेलका फाटक तोड़ दो—नेताओको छीन लोकी आवाजसे जेलका हाता गूंज उठा। धावा बोलनेवालोने एक लौरीको तोड दिया और बन्दियोको छीन लिया। पुलिसका ठाट खड़ा ही रह गया। बाहर तो यह काण्ड हुआ और भीतर जेलमे इन कैदियोने ताड़ फोड़का काम शुरू कर दिया।

तोड़ फोड़की छूत शहरको भी लगी और फैलती गयी। लेटरबक्स और लालटेनके खभे तोड़े जाने लगे, तार काटे जाने लगे, उनके खंभे गिराये जाने लगे। रातकी शहीदोकी शिनाख्त करनेमें कठिनाई हुई थी। इसलिये कितने अपना अपना पता ठिकाना नोट किये घूम रहे थे।

शामको शहीदोंकी स्मृतिमें सभा हुई, कांग्रेस मैदानमे। स्त्री पुरुषोकी बडी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। सभाके प्रधान वक्ता थे श्री जगतनारायण लाल। आपने कहा कि हमे सभी अहिसात्मक उपायसे सरकारको लोथ बना देना है और जनतासे आग्रह किया कि वे जो कर रहे है तेजीसे करें। सभामें और भी कितने बोले और बच्चोके खूनकी याद दिलाई। जनतामें उफान आ गया। सभाके खत्म हो जानेपर वह जिधर जिधर गयी तोड़ फोड़की आँधी उठाती गयी। डाकघर भी नष्ट किये जाने लगे और उनके कागजातमें आग लगाई जाने लगी। लोग नोटका बण्डल पाते और उसे आगमे दे देते मानो वह कूडा हो। जो सयोगसे सड़कपर आ गिरता उसे लतमर्दन धूलमे मिला देता। लोग सरकारकी शक्तियोका संहार करने निकले थे उसकी सामग्रियोका सग्रह करने नहीं। अब सडकें काटी जाने लगीं, रेलकी पटरियाँ उखाडी जाने लगीं, पुल तोडे जाने लगे, पेड़ सड़कोपर काट गिराये जाने लगे और जिनसे कुछ न हो सका वे कूड़ाखानाको ही ढनमनाकर सड़कपर रखने लगे ताकि वह जाम हो जाय। सारी

रात तोड़ फोड़की आँधीमें जनता उडती रही, उसकी आँखोंसे नींद भाग गयी थी।

तेरह अगस्त आया सरकारी संस्थाओंपर ताला लगाता हुआ। स्कूल बन्द, कॉलिज बन्द अनिश्चित कालके लिये और अदालत बन्द, फौजदारी बन्द और हाई-कोर्ट बन्द दस दिनके लिये। फिर १४४ दफाकी घोषणा हुई और घर भीतर रहो Curfew order का एलान कर दिया गया। पर आज जनता आजाद थी। अगरेजी सरकारका हुक्म सुन हँस पड़ी। बेखौफ तोडफोडके काममें लगी रही।

पढ़े लिखे क्रान्तिका आवाहन करते है, क्रान्तिके दूत बनते है। पर क्रान्तिके सिपाही बनते हैं गली कूचेके लोग ही। सो तोड़ फोडमें क्या आगे क्या पीछे सभी जगह देखे गये पटनाके रिक्शावाले, टमटमवाले, कुली मजूरे और उनके भाई बिरादर। और उनके इर्द गिर्द त्यागका निराला वातावरण। खोंचेवाले आते है क्या स्त्री क्या पुरुष और काम करनेवालोंके लिये अपना खोंचा खाली कर डालते हैं, पैसे लेनेसे इनकार करते हैं। कहते हैं—एक दिनका उपवास कौन ज्यादा है? स्वराज हुआ तब खूब पैसे ले लेंगे। अगरेजी राजका नामोनिशान मिटते देख उन्हे सुख तथा सतोष हो रहा था। सचमुच उस दिन कुछ ऐसी हवा पटनेमें बह रही थी कि अगरेजी राज और अगरेज ही नहीं, अगरेजी वेशभूषा भी लोगोंकी आँखका काटा हो रहा था। क्या मजाल कि कोई हैट पहनकर उनके बीचसे निकल जाय। तो भी उनमें निर्दयता नहीं आयी थी। हाँ! प्रचण्ड घृणासे वे अवश्य ओतप्रोत हो रहे थे। इसलिये ही उनने किसीका हैट तोड़ा, टाई फाडी पर एक पसिञ्जर गाडीसे जो रेलकी पटरियोंके हट जानेसे रुक रही थी, चार अगरेज और तीन हिन्दुस्तानी सिपाहियोंको उतारकर सुरक्षित यथा स्थान पहुँचा दिया।

आर० एस० एन० और आई० जी० एन० कम्पनी [कार कम्पनी] और बाटाके कारखानोंके मजदूरोंने हडताल कर दी थी और दीघाघाटसे दानापुर तक वे तोड़ फोड़की धूम मचा रहे थे। कम्पनीके जहाजोंको काठ मार गया था। बहुतोंका प्रस्ताव हुआ कि कम्पनीके कोयलोंकी ढेरमें आग लगा दी जाय ताकि न कोयला अगरेजोंको मिले और न वे जहाज चला सके। किसी किसीने तो चाहा कि जहाजकी मशीनरी ही बरबाद कर दे और जैसे तैसे जहाजको गंगामें डुबा दे। पर हिन्दुस्तानी विचारते है ज्यादा, करते है कम और विचारकोंके अनेक रास्ते होते हैं, एक रास्ता नहीं होता। इसलिये दीघावाले न कोयला जला सके, न जहाज डुबा सके। तोड़ फोड़वाले बेतरह चूक गये जो उनके लिये जानमारू साबित हुआ।

बच्चोंका खून तो पटना शहरमे १३ अगस्तको आग उगलने लगी। लोगोंने म्यूनिसिपल भवनमें आग लगा दी जो धू धू करके स्वाहा हो गया। फिर उनने सिटी स्टेशनपर आक्रमण किया। वे पार्सल घर और माल गोदाम सभी जगह घुस पड़े और सब जगह आग लगा दी। काठ, कपडे, अन्न, तेल सभी जलने लगे। आँच तेजीसे वढ़ी और दूर दूर तक शोले फेकने लगी। कुछ सामानपर भुक्खड़ टूट पडे। नोट देखा उन्हें आगमे फेका और खाने पीनेकी जो चीज उठा सके उठा ले गये।

ता' १३ अगस्तके दिन ढलते गोरी फौज पटने आने लगी, भिन्न भिन्न टुकडी भिन्न भिन्न दिशाओंसे सिटी, कदमकुंआ और मुरादपुरमें घुसने लगी।

जो टुकडी अगमकुआ रोडसे गुलजारबाग आ रही थी उसने कुम्हडारके पास कुछ गाडीवानोको देखा और उन्हें रुकनेके लिये कहा, गाड़ीवान नहीं रुके जिसपर गोरोने उनपर गोलियाँ छोडी, कईको घायल किया और रामअधीन गोप, बैरिया कनपुराकी जान लेली। लोग अब क्रोधान्ध हो गये। प्रचण्ड घृणा प्रतिहिंसामें वदलने लगी।

इधर रात भर फौज धमाचौक्डी करती रही। स्कूल और कॉलिज और उसके छात्रावास तथा अन्यान्य सुविधेके स्थान उसके अड्डे बन गये। फिर राइफलकी गोली और सगीनकी नोकसे पटनाकी जनताका सामना करनेके लिये वह सुबहकी प्रतीक्षा करने लगी।

उधर बच्चोका खून जिलेमें और प्रान्तमें अपना रग ला रहा था।

१२ अगस्तको बख्तियारपुर थानेपर जनताने झंडा फहरानेका निश्चय किया। चारो ओर बरसातका पानी लगा था जिसे सत्याग्रहियोने नावसे व तैरकर पार किया। थानेवाले भी आर्चर साहबको तरह दृढ़ प्रतिज्ञ थे कि झडा नही फहराने देगे। उन्हें सत्याग्रहियोने अपने अपने प्रोग्रामकी सूचना दे दी थी। इसलिये अनवारुलहक दारोगा पिस्तौल लिये चौकसीकर रहे थे और अपनी पीठपर उनने हथियारबन्द और लट्ठधर पुलिसको और चौकीदारोको भी जुटा रखा था। पर रामचरणसिंह 'सारथि' धड़धड़ाते हुए थानेमे घुस गये और झडा फहरानेकी चेष्टामे गिरफ्तार हो करके हवालातमे बन्दकर दिये गये। जनता बिगड उठी और हवालातसे उन्हें छुडा लेना चाहा। किन्तु पुलिसका इन्तजाम काफी था। जबतक पुलिसमे भगदड़ न मचती तबतक थानेमे जनताका घुसना सहज न था।

इसलिये जनताने थानेपर ढेले बरसाना शुरू किया। श्री नाथूप्रसाद यादव जनताको ढेले फेंकनेसे रोक रहे थे और साथ ही थानेमे घसे जा रहे थे। अनवारुलहकने थानेमें दाखिल होनेसे उन्हें मना किया और उनकी ओर पिस्तौल सीधी की। पर नाथूप्रसादजी बेपरवाह बढ़ते गये और छातीमे दारोगाकी गोली लेकर शहीद हो गये।

उनकी शहादतने बख्तियारपुरमें खलबली मचा दी। जनता आवेशमे आ गयी और इतनी तादादमें थानेपर इकट्ठी हो गयी कि पुलिससे कुछ करते धरते न बना और सारथिजी हवालातसे छुडा लिये गये।

पुनपुनमे जब सेक्रेटेरियट गोली काण्डकी खबर पहुँची तो लोग आवेशमे आ गये। विध्वंसकी आग भड़क उठी। क्या बूढ़े, क्या बच्चे क्या जवान सभी दिन दहाडे रेलकी पटरिया उखाड फेंकने लगे, पुलोको तोडकर गमनागमनका मार्ग बन्द करने लगे। जहां तहां तारके खंभे उखाड़ दिये गये, तार काट दिये गये। थाना डाकघर और स्टेशनमे आग लगा दी गयी। धू-धू करके जब आगकी लपटे निकलीं तब जनताकी बडी भीड़ लग गयी। लोग अगस्त क्रान्तिके नारे बुलन्द करने लगे और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे कि ब्रिटिश साम्राज्यकी चिता जल रही है। पुलिस पासही खडी व्यर्थ दांत पीस रही थी।

विक्रममे पटनेकी शहादतकी खबर पहुँची १२ अगस्तको। लोग अत्यन्त उत्तेजित हो गये। कुल्हाडी, और गडासी और जिसको जो मिला सो लेकर दौड़ आये और लगे सडक खोदने पेड़ोको काट काट सड़क जाम करने। इनने नहर रोड खोद डाला। ताडके खभे उखाड़ फेंके। आस पासके चौकीदारोंने भी जनताका भरपूर साथ दिया। फिर सबोंने एक साथ आठ दस मील दूर जाकर रेल उखाड़े।

बिहटाने भी खबर सुन १२ अगस्तको और वह तुरत तोड फोडमे लग पडा। १३ अगस्तको उसने विराट प्रदर्शन किया। विद्यार्थी आगे थे। प्रदर्शनकारी बिहटा स्टेशन पहुँचे जहा गोरे चहलकदमी कर रहे थे। पुलिसका भी ठट्ठ था। पुलिसने प्रदर्शनकारियोको स्टेशनसे निकल जानेके लिये कहा। प्रदर्शकारी अड गये और स्टेशनके कमरोमे घुसने लगे। पुलिसने गोरोकी शरण ली और प्रदर्शन-कारियोको डरा भगानेके लिये आवाज करनेके लिये कहा। आवाजका जवाब ईंट, रोडोंसे मिला। फिर तो गोरे खुलकर गोली दागने लगे और सात आदमियोको

भून डाला, जिनमें एक थे सिमरीके उमैर अली उम्र २० साल, और दूसरे गोपाल साहु उम्र १५ साल।

गोली खाकर जनता क्रोधान्ध हो उठी। उसे मरने मारनेपर उतारू देख पुलिस और गोरे हट गये। फिर तो इतने तरहके इतने लोग स्टेशनके हातेमें घुस पड़े कि शुमार व शिनाख्त करना बूतेके बाहर हो गया। लोगोंने मालगाड़ीमें आग लगा दी। कितने तो उस आगमें सामान झोंकने लगे, और कितने लूटने लगे। ८५ डब्बे लूटे गये, ४० सरकारके और ४५ पब्लिकके और सभी तरहके सामान, गेहूं, दलहन तेल, चीनी, दियासलाई, बिलायती दूध, तेलफुलेल, शराब, तबला हारमोनियम वगैरह। इस लूटको देखनेका मौका मिला था बाबू श्यामनन्दन सिंह एम० एल० ए० और अबुलहयात चांदको, जो बम्बईसे वापस लौट रहे थे। लूटके बाद बिहटाका धन भारी हो गया। लड़नेकी जगह माल पचानेकी फिक्र सरपर सवार हो गयी। जिसका बोझा इतना भारी साबित हुआ कि बादको वह कराहने लगा।

मोकामाकी उत्तेजनाने भी बिहटाका रास्ता अख्तियार किया। १३ अगस्तको मोकामा घाटके रेलवे मैदानमें काफी लोग इकट्ठे हुए। विद्यार्थी और रेलवे कर्मचारी जमात बाध कर पहुँचे। लोगोंने तय किया कि रेलवे कर्मचारी इस्तीफा दे दें, मजदूर हड़ताल कर दें और यातायात रोक दिया जाय। झुंडके झुंड विद्यार्थी स्टेशनमें घुस आये और अपने नारेसे प्लेटफार्म और रेलवे दफ्तरोंको गुंजा दिया। वे कर्मचारियोंसे बारबार कहते कि नौकरी छोड़िये पर कर्मचारी टससे मस होते न दीखते। हां कुली और मजदूरोंने उनकी बातें सुनी पर कहा कि नौकरी छोड देंगे तो खायगे क्या? हुक्म दीजिये। हम घाटके मालसे पेट भर लें फिर नौकरी छोड़ ही देंगे।

विद्यार्थियोंको यह सुझाव बड़ा पसन्द आया। मसनदियोंका माल मेहनतकश ले लें तो क्या बेजा है? यही तो न्याय है। बस तुरत उनने कुली मजदूरोंसे कहा—तुम लोग अपने खानेपीनेकी चीज ले लो और आप सबके सब तोड़ फोड़ करने एक ओर निकल गये।

मोकामा घाटमें मजदूरों और विद्यार्थियोंके काम समानान्तर रेखामें चले और इस गतिसे और इतनी दूर कि लोग भौचक रह गये।

पर मजदूरोंकी बाढ़में हर तरहके लोग शामिल हो गये। कंगले फकीर ही नहीं बल्कि डाकू, उठाईगीर, चोर उचक्के और आस पासके सभी ठग बदमाश और

उनके दलाल मोकामाघाटके सामानपर टूट पड़े। नोचाचोथी होने लगी। इधर उधर ढेरका ढेर अनार, नारंगी, अंगूर बिखर गये। सिगरेट और चायकी पेटियोंसे सड़क जाम हो गयी। मोकामा घाटकी पश्चिमी और पूर्वी सड़कें चीनीसे पट गयी थीं। इस तरह एक हफ्ता तक मोकामाघाट हजारों आदमियोंकी लूट खसोटका अखाड़ा बना रहा।

विद्यार्थी एकाग्र रहे। स्टेशनकी चीजोंको बरबाद करके वे टालहाट पहुंचे। वहां टेलीफोनके तार काट डाले, पेट खोल दिये और फिर स्टेशनके दफ्तरोंमें घुसकर मिसिलों और फर्नीचरको जलाना शुरूकर दिया। उनने गाड़ियोंके डब्बोंको तोड़ा और उनमें आग लगा दी, फिर इंजनके कल पुरजे बर्बाद करने लगे। इनकी हरकतोंने रेलवे कर्मचारियोंको भयभीत कर दिया और सबके सब स्टेशन छोड़ भागे। तब विद्यार्थियोंने जरा दम लिया और लूटपाटका नज़ारा देखा जो इन्हें नहीं रुचा। इसलिये जैसे ही व्यापारियोंने कहा कि मोकामा जंक्शनको लूटसे बचाइये, इनने बड़ी मुस्तैदीसे वहां लूट रुकवा दी। हां कांग्रेसके खर्चेके लिये ३००) रु० के सामान जब्त किये। बाकी सामानको, टौमियोंके आनेपर पुलिसने अपने हिफाजतमें ले लिया।

मोकामा घाटसे तोड़ फोड़का दल टला तो बरहपुरमें मिला और तय किया कि तुरत पूरब और पश्चिमके रेल पथको नष्ट कर देना चाहिये। फिर उसी रोज यानी १३ अगस्तको मोरका पुल तोड दिया गया और पुलके दोनों ओर खतरेका पटाखा (Fog Signal) लगा दिया गया, जिससे पञ्जाब मेलकी इञ्जन रुकते रुकते पुलमें गिर गयी पर कोई नुकसान नहीं हुआ।

१२ अगस्तको विद्यार्थियों तथा जनताका संयुक्त मोरचा डाकघर और रेलवे शाहाबाद स्टेशनपर धावा करने चला। श्री प्रद्युम्न मिश्र ११ अगस्तको ही गिरफ्तार हो चुके थे और शहरमें कोई दूसरा प्रभावशाली कार्यकर्त्ता न रह गया था इसलिये धावेका रूप कुछ लूटपाट जैसा हो गया। गागीके पुलके पासकी सड़कको गोरे साफ कर रहे थे। तमाशबीनोंकी भीड़ लग गयी। बेतरह नारे लगने लगे। गोरे पाजामेसे बाहर हो गये। गोली चला दी। एक बूढ़ा मरा और एक बुढ़ियाकी भी जान गयी।

१३ अगस्तको बिहियामें दिन दोपहरको रेलगाड़ी रोक दी गयी। सड़क तार तोड़ दो, रेलकी पटरी उखाड़ दोके नारे लगने लगे। बाजारवालोंकी भीड़ जुट

गयी। गाड़ीमें गोरे जा रहे थे। उनने राइफिल दिखा दिखाकर जनताको धमकाना शुरू किया। फिर तो उनपर ढेले बरसने लगे। जबावमें उनने गोली बरसायी जिससे तीन जानें गयीं और कई घायल हुए।

१२ अगस्तसे बक्सरने भी तोड़ फोड़ शुरू किया। लोगोंने डाकघरके कागज जलाये और स्टेशन तथा थानोंपर हमला करना और उनकी मिसिलें जलाना उनका प्रोग्राम बन गया।

फिर जनताकी भीड़ कचहरी थाने तथा अन्य सरकारी इमारतोंकी तरफ चली।

बक्सर संख्या थी उसकी लगभग चार हजार, झंडे फहरानेके बाद जनताने कचहरीसे मजिस्ट्रेट और डिप्टी मजिस्ट्रेटको निकाल बाहर किया, उनको अपने साथ ले लिया और जहा-जहा गयी उनसे कांग्रेसी नारे लगवाती गयी। १२ अगस्तको ही ब्रह्मपुर थानेपर कांग्रेसी झंडा फहराया गया। थानेके कागजात जलाये गये। भीड़की पुलिससे मुठभेड़ भी हुई। दो-तीन सौकी भीड़ने जब तीन-तीन बार हमले किये, तब थानेमें घुस पायी। वह पुलिसको पीटकर थाना जला देनेके लिए तैयार थी लेकिन श्री ईश्वरलाल सिंहके मना करनेपर रुक गयी।

गयामें फौजोंकी छावनी सुरसा जैसी बढ़ रही थी। कितने गांव इसके पेटमें

गया हजम हो गये थे। इस की सड़कोंपर गोरे काले फौजियोंकी आवारा-गरदी हुड़दंग मचा रही थी। ऐसी परिस्थितिमें सरकारके खिलाफ गया शहरका सर उठाना लोहेका चना चबाना था। पर पटनाके गोली काण्डने जनताको इतना बेचैन कर दिया कि वह चुप और बैठी न रह सकी। १३ अगस्तको गया कॉटन मिल्सके पास उसकी एक बहुत बड़ी जमात इकट्ठी हुई और विशाल जलूसके रूपमें शहरकी ओर बढी। अगरेजी सरकार जनताके ऐसे रंग रवैयाको भला कैसे बरदाश्त कर सकती थी। उसकी कोतवालीमें बन्दूकचियोंका जमघट लग गया। जहा तहां सगीनें ३ बजेकी धूपमें चमकने लगीं। लट्ठबाज पुलिसने रास्ता रोक रखा।

जलूसमें मजदूरोंकी भरमार थी। मशीन जैसी बोली, मशीन जैसी चाल। वे धड़धड़ाते हुए शहरमें आ धमके। उनके कपड़े और चेहरेको शोषणने बदरंग कर रखा था पर उनकी अकड़ और आवाजमें क्रान्तिकी बुलन्दी थी। तमाशाइयोंकी भीड लग गयी। शहरकी दुकानें बन्द हो गयीं। जब जलूस धामी टोला पहुंचा तब पुलिसने रोका और जलूसके न रुकनेपर लोगोंको बेरहमीसे लठियाना शुरू किया। लोग मार सहते रहे नारे लगाते रहे पर तमाशाई पुलिसकी बढ़ती

बेरहमी देख न सके। उनने ढेलेसे लाठीका जवाब दिया। फिर क्या था। अधा चाहे दो आख। मजिस्टर, सुपरिन्टेन्डेन्ट, सर्जेन्ट सभी गोली दागने लगे। श्री जगन्नाथमिश्र तो तत्काल शहीद हो गये। धामी टोलाके श्री कैलाशराम तथा नयी गोदामके श्री भु ईरामको शहादत मिली अस्पताल पहु च कर।

घायल हुए नौ जो सेन्ट्रल जेल पहुंचाये गये, उनमे एक था तारकेश्वर प्रसाद ग्यारह सालका।

श्रीजगन्नाथ मिश्रकी अर्थी धूम धामसे निकली और क्रान्तिकारी नारोंके बीच उनका अग्नि सस्कार हुआ। अधिकारियोंको महसूस हुआ कि उनका गोली चलाना खूने नाहक हो गया। अत· जब श्री कैलाशराम और श्री भु ईरामकी लाशोंको अस्पतालसे लोगोंने लेना चाहा तब कलक्टर साहबने देनेसे इनकार कर दिया, इसपर शहरके कई प्रतिष्ठित सज्जन तथा काग्रेसके प्रमुख कार्यकर्ता जिला मजिस्ट्रेटसे मिले और समझाया कि लाश नही देनेसे भयकर प्रतिक्रिया होगी। अतमें जिलाधीश इस शर्त्तपर जनताको लाश सौंपनेको तैयार हुआ कि लाशे फौजी लारियोंपर गोरी पलटनोंके बीच ले जायी जायगी और साथमें मृत्तकके रिश्तेदार भी जाने पावेंगे। ऐसा ही हुआ। हॉ, गोरोंकी ही लौरियोंपर अग्नि सस्कारका इन्तजाम करनेके लिये श्री मथुरानाथ तिवारी और गया खादी भंडारके श्री रामेश्वर प्रसादको जाने दिया गया। गोरोंसे ठसाठस भरी चार लारिया आगे और चार पीछे और बीचमें गोरोंकी ही दो लौरियोपर दोनो लाशें। और गोरी पलटनके प्रदर्शनके बावजूद जनता की उमड़ती हुई अपार भीड़ वीर शहीदोंकी जयजयकार करती हुई और "इन्कलाब जिन्दाबाद, अग्रेज भारत छोड दो" के नारे बुलद करती हुई ! अभूतपूर्व दृश्य था।

इस गोलीकाण्डने गयावालोंको अत्यन्त उत्तेजित कर दिया और उनने अपनी सारी कूवत तोड फोडमें लगा दी।

सदर सबडिविजनमें भी तोड फोड़ने जोर पकडा १२ अगस्तमे ही।

गोगरीने १२ अगस्तको महेशखूंट स्टेशन तहस नहस कर दिया। रेल तार मुङ्गेर तोड ताड दिया। १३ अगस्तको लोग जुलूस लेकर थानेपर चढ़ आये और झडा फहराया। जलूसके बल तथा व्यवस्थाको पुलिससे कुछ करते न बना। उसने तीन स्वयसेवकोंको गिरफ्तार करके सन्तोप किया पर उन्हें भीं मानसी स्टेशनपर जनताने उनके हाथसे छीन लिया।

खगड़ियाने १२ अगस्तको सभी सरकारी संस्थाओंपर धावा किया। स्टेशनको लूटा और उसके कागजात जलाये। फिर माल गोदाम और डाकघरको लूटकर जला दिया। दूसरे दिन यानी १३ अगस्तको सैकड़ों हथियारबन्द सिपाहीके साथ एस० पी०, एस० डी० ओ० और सर्जेन्ट मेजर आगये और कड़ा रुख दिखलाने लगे।

आन्दोलनकी कार्रवाईमें लूटपाटके शामिल हो जाने और सरकारके हथियार-बन्दोंका पैंतरा देख जनताके आतंकित हो जानेने स्वर्गीय बाबू नेसधारी सिंह जैसे कांग्रेसवादियोंको चिन्तित कर दिया। उनके निवास स्थानपर सभी कार्यकर्ता मिले और तय किया कि अभी गांवोंमे प्रचार किया जाय और तब जनताको अनु-शासनमें रखते हुए आन्दोलनका प्रोग्राम अमलमें लाया जाय।

ऐसे समय आगे बढ़े माड़र निवासी प्रभुनारायण सिंह, काशी विद्यापीठके छात्र जो उसी दिन बनारससे खगड़िया पहुंचे थे। वे छात्र थे इसलिये छात्रोंकी शहादतकी पुकार सुन रहे थे गंगा पारसे। वे संसारपुर गये और आस पासके टोले टप्परमें भी घूमे और घूम घूम कर स्वयंसेवकोंका एक जत्था तैयार किया, झंडा लिया और प्रोग्राम बनाया जलूस निकालनेका। छोटे बड़े बहुतोंने मना किया किन्तु मनाही इस कानसे घुसी और उस कानसे निकल गयी। हृदयमें बस न सकी, जहां शहीद साथियोंकी पुकार गूँज रही थी। उनने कहा—डर काहेका? जलूस शान्तिसे निकलेगा और थानाके पासकी सड़क होकर कांग्रेसके हाते तक जायगा, बस। जलूस जब थानाके निकट पहुँचा तब अफसरोंने रास्ता काटा। एस० पी० बोला तुमलोग डाकू हो; भाग जाओ, नहीं तो गोली खाओगे। प्रभुनारायण बोले कि हमलोग स्वयंसेवक हैं, सत्याग्रही हैं; शान्त रहेंगे; कांग्रेसभवन तक ही जायगे। और वे आगे बढ़े। एस० पी० झपट उठा—पीछे हटो; नहीं हटे तो मार डालेंगे। प्रभुनारायणने कहा—हम चुपचाप रहेंगे, हमको जाने दीजिये। जब निकल पड़े हैं तो पीछे पैर न देंगे। उनने डेग उठाई। कई कंठ कड़क उठे—खबरदार! सुना और देखा राइफल तनी हुईं, पिस्तौल सीधी हुईं। प्रभुनारायणने झंडा ऊँचा किया और नारे लगाये—'इन्कलाब जिन्दाबाद', 'करेंगे या मरेंगे', और आगे डेग उठायी। फटाफटकी आवाज हुई और एक गोली प्रभुनारायणकी छातीमें और दूसरी नाभिमें। झंडा संभालते हुए प्रभुनारायण मादरे हिन्दकी गोदमें गिरे। एक पहलवानको भी गोली लगी जो अपना एक पैर गंवाए प्रभुनारायणकी आत्माहुतिकी कहानी कहनेके लिये बच रहा है।

खुटियाकी जनता भी १२ अगस्तसे तोड-फोड़के काममें खूब जुट गयी। उनने मानसी स्टेशनको लूटकर जला दिया, डाकघरको फूँक दिया और रेल तार बरबाद करने लगे। दूसरे दिन यानी १३ अगस्तको खुटिया बाजार, मानसी स्टेशनसे, जलूस निकला। विद्यार्थी और किसानोंका यह जलूस नारे लगाता हुआ झंडे उडाता हुआ जब बाजारसे निकला तब बनिया बक्काल और उनके लड़के उसमे शामिल हो गये। उसका रूप काफी बड़ा हो गया। जो अगुआ थे जानते थे कि गोरे सिपाही आ रहे हैं जिनके पासके टोंटे निहत्थोकी खोपड़ी चूर-चूर करनेके लिये उड़नेको तैयार रहते है। किन्तु वे शान्त थे, बिलकुल निरस्त्र थे और पटनेके शहीदोंको सम्मान देने चले थे। टोंटेसे डरना तो पाप था। बाजारको पार करते हुए जलूस स्टेशनकी ओर बढ़ा ही था कि टोंटेसे टक्कर लग गयी। माधवसिंह तत्काल शहीद हुआ, बारह बरसका बच्चा अपर प्राइमरी स्कूलका और शहीद हुए धानाप्रसाद वर्मा खगड़िया अस्पताल आकर।

बेगूसरायने १२ अगस्तको तार काटे और रेलकी पटरिया उखाडीं। १३ अगस्तको कचहरी बन्द रही। वकीलोंने एक पखवाडा कचहरी नहीं जानेका निश्चय किया। फिर तीन ऑनरेरी मजिस्ट्रेटोंने अपने पदसे इस्तीफा दिया।

१२ अगस्तको क्रान्तिकी आग भड़की गोपालपुर थानेके नौगछियामें। छात्रो और कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंकी सघटित भीड राजेन्द्र आश्रमकी ओर बढी जिसे पुलिसने भागलपुर जब्त कर लिया था। भीड़ने पुलिसका ताला तोड दिया और राजेन्द्र आश्रमको अपने कब्जेमे कर लिया। फिर उसने स्टेशनपर धावा किया। स्टेशनकी चीजें बरबाद कर दी गयीं, उसे जला दिया गया।

स्टेशनपर देशी फौजकी एक छोटी टुकडी थी। भीडने उसके हथियार ले लेना चाहा। पर सिपाही राइफल लेकर खडे हो गये और भीडपर निशाना साधने लगे। सिपाहियोंको आतकित करनेके लिये भीड रोडे चलाने लगी, जिसके जवाबमें सिपाहियोंने गोलीकी झडी लगा दी। श्री भुवनेश्वरप्रसाद मण्डल घायल हुए और मैट्रिकके एक छात्र मुन्शीसाहुको गोलीका इतना सख्त घाव लगा कि भागलपुर सिटी अस्पताल लाना पडा। भीड तितर बितर हो गयी।

नौगछिया गोलीकाण्डने जनताको अत्यन्त उत्तेजित कर दिया। हजारोंकी सख्यामें लोग स्टेशन पहुँचे और पाच सिपाहियोंको घेर लिया। सिपाही डर गये और सहज ही उनसे पाच राइफिलें लेली गयीं।

१३ अगस्तको सुप्रसिद्ध सियारामसिंह सदल बल निकले और सुलतानगंज थानामें प्रवेश किया। पुलिसने उनके सामने माथा टेक दिया। फिर क्या था सुलतानगंज थानेपर कॉंग्रेसका कब्जा हो गया और उसपर कॉंग्रेसका झंडा फहराने लगा।

१३ अगस्तको ही इसी तरह कहलगांव थानेपर कांग्रेसजनोंका लम्बा जुलूस चढ़ गया और उसे कब्जेमें करके उसपर कांग्रेसका झंडा फहरा दिया। कहलगावने तोड फोडमे अच्छा नाम पैदा किया था। रेलवे स्टेशन और तारघरके सामान नष्ट किये और म्यूनिसिपैलिटीके कागजात फूंक डाले। उसने अड़गड़ा (फाटक-Cattle pond) खोल दिया मवेशियोंको भगा दिया, शराब वगैरहकी दूकाने बरबाद कर दी और स्टेशनके पासकी रेलवे लाइन उखाड़ फेकी।

सनौहला और घोघाकी कार्रवाई भी ऐसी ही रही।

मधेपुरामे कांग्रेस क्रान्तिकी लहर पहुँची ता० ११ को ही जो सारे सबडिविजनमे फैल गयी। इस लहरमे पड़कर उस सबडिविजन भरकी जनताने अगस्त क्रान्तिका अपना अलग ही इतिहास तैयार किया। १३ अगस्तके मधेपुराके वनगांव थानाने जिस उग्रतासे आन्दोलन वहा चलनेवाला था, उसका प्रथम परिचय दिया। थानेमें वरियाही नामका स्थान है जहां एक मेम रहती थी। उसके रेडियोसे ही वहा थानेवालोंको बम्बईकी खबर मिली थी। मेमने स्वभावत सरकारका साथ देना अपना फर्ज समझा। उसने दारोगाको उकसाया कि सैफाबाद कैम्पको जो वनगावसे सटा हुआ ही है, जब्त कर लो। दारोगा उस दिन आया और कैम्पके सारे चरखा वगैरह सामानको लाद कर थाने ले गया। फिर वह सहरसा चला गया। कार्यकर्ताओंको सामानकी जब्ती अखरी। वे थानेपर चढ दौड़े। जमादारने कहा कि दारोगाजीके आने तक ठहरिये। कार्यकर्ता रुक गये पर जब देर तक दरोगा नहीं आया तब स्वंयसेवकोंने थानेको कांग्रेसके कब्जेमें कर लिया और जमादारको काग्रेसकी सभी चीजें हाजिर करनेका हुक्म दिया। जमादार हाथ बाधे सारा हुक्म बजाता रहा। पर जब स्वयसेवक थानेके मकान और मैदानमें झडे गाड अपने कैम्पको चले गये तब जमादार थानेके कुछ कागज वगैरह वरवाद कर मधेपुरा विदा हुआ फरियाद करने कि कांग्रेसवालोने थाना लूट लिया। ता० १२ अगस्तको मधेपुराकी जनताने हर सरकारी मकानपर राष्ट्रीय झडे फहराये। थाना डाकघर और रजिस्ट्री ऑफिस ही नहीं वल्कि अदालत और फौजदारी भी राष्ट्रीय

निशानसे सजे नजर आये। एस० डी० ओ० और दूसरे दूसरे सरकारी अफसर मौजूद थे। उनने अपना विरोध प्रकट किया पर बाधा नहीं दे सके। उसी दिन किशनगजने भी थानेपर झडा फहराया और फिर तो सबडिविजन भरके थाने इनका अनुकरण करने लगे।

सुपौल सबडिविजनमें आगे बढ़ा सुपौल थाना। १२ अगस्तको पुलिसने कांग्रेस आफिसको जब्त किया। जब्तीके वक्त कुछ कार्यकर्त्ताओने कहा कि हमे पुलिसको आफिससे निकाल बाहर करना चाहिये। पर प्रोग्राम मालूम न था। इसलिये मुखियोने धीरजसे ही काम लेनेको कहा। आफिस जब्तकर पुलिस हातेमें आई और वहा सामने जो झडा फहरा रहा था उसे उतारनेको आगे बढ़ी। तब कार्यकर्त्ताओसे धीरज न धरा गया। शिवनारायण मिश्र और चन्द्रकिशोर पाठक झंडा चौकपर कूद चढ़े; हाथोंमे रस्सी थाम बोले—प्राण रहते हम झडा नहीं छोड़ेगे। पुलिस तनी पर स्वयसेवक अडिग, लौह-स्तम्भ सरीखे खड़े रहे। अन्तमें पुलिस वहासे चुपचाप रवाना हो गयी।

बांका सबडिविजनमे अमरपुर कांग्रेस जब्त हुआ १२ अगस्तको। पुलिसने अपना ताला लगाकर कांग्रेस आफिसको सीलकर दिया था। १३ अगस्तको कांग्रेस सैनिकोकी एक टोली आई जिसने हथौड़ेकी चोटसे पुलिसका ताला तोड़ दिया और कांग्रेस आफिसको फिर अपने कब्जेमें लाकर उसपर अपना झडा फहरा दिया। टोलीके नायक थे थाना कांग्रेस कमिटीके मन्त्री।

बाका थाना कांग्रेसने १३ अगस्तको फौजदारी, दीवानी, रजिष्ट्री और पोस्ट आफिसपर झडे फहराये जिस मौकेपर सर्वेश्वर सिह और लक्ष्मीकान्त प्रसादकी सर्वप्रथम गिरफ्तारी हुई। इस तारीखको बेलहर थानेके विद्यार्थियोने अमरपुरके विद्यार्थियोकी मदद पाकर बेलहर थानामे अपना ताला लगा दिया।

१२ अगस्तको सुबहमें श्रीवैद्यनाथ चौधरी कुरसेला पहुंचे और जगह ब जगह सभा करने लगे। चौधरीजी ढिढोरा पिटवाकर लोगोको सभा निमन्त्रण देते और

पूर्णियां

सभामे अपने प्रोग्रामका एलान कर दिया करते। १६ आदेशवाला सर्कूलर समझाते हुए वह जोरदार शब्दोमे जनतासे अपील करते कि सरकारको हर तरहका टैक्स देना बन्द कर दो और रेलकी पटरी उखाड़कर फेक दो।

ता० १३ से जिले भरमें तोड़ फोड़ होने लगा। और कटिहारके जीवनमे तो ज्वार आगया। स्कूलके लड़कोने हड़ताल की और जूट मिलपर टूट पड़े। कुछ देर

लगी पर मजदूरोंसे हड़ताल करवानेमें वे कामयाव हो सके। फिर तो हड़तालियोंकी कोई गिनती नहीं रही। लम्वा जलूस वना जिसके नारोंकी बुलन्दी सुन सुन सरकारी अमलोंको हडकम्प होने लगा। जलूसने रजिष्ट्री आफिस जलाया जिस मौकेपर पुलिसने कुछ लोगोंको गिरफ्तार कर लिया। भीड़ने उन्हें छुड़ाना चाहा पर पुलिस हट गयी और उन्हें थाना ले आई। भीड़ उनका पीछा करती हुई थाना पहुची और इधर उन्हें छोड़ देनेके लिये नारा लगाने लगी, उधर कुछ लोग थानेमें झंडा फहरानेकी सरतोड़ कोशिश करने लगे। थानाके चारो ओर वासका घेरा था जो जोशीली भीड़के दवावसे टूटने लगा और लोग थानेमे धसने लगे। पुलिस उन्हें लाठीके सहारे पीछे धकेलने लगी। इस सिलसिलेमे बहुतोंको चोट लगी और वे उत्तेजित हो गये और थानेपर ढेला फेंकने लगे। थानेकी हिफाजतमें मुस्तैद जो सिपाही थे उनने खाली आवाज करके भीडको भगाना चाहा और काफी लोग कचहरीकी ओर लपके। वहा भी झडा फहराया जाता इसलिये भीड़ उधरको छुटी थी। परन्तु तुरत गोलिया चलने लगीं। भागती हुई जनताको भी हथियार बन्द पुलिस खदेड़ने लगी और तब तक गोली दागती रही जब तक एक भी सामने सडकपर दीख पड़ा।

अनेक हताहत हुए जिनमे एक थे अतुल मिस्त्री और दूसरे श्री जगन्नाथ कुण्डु, तेरह वरसके वालक सुप्रसिद्ध ध्रुव, सुपुत्र श्री किशोरी लाल कुण्डु। मिस्त्रीजी तो तत्काल ही शहीद हो गये थे पर ध्रुवको जो थानेका हाता पार कर सड़कसे कचहरी दौड़ा जा रहा था, गोली लगी जांघमे। वह बुरी तरह घायल हो गया और पूर्णिया अस्पताल लाया गया।

दरभंगा

दरभगा जिलेके समस्तीपुर सवडिविजनमे तोड़ फोड़ शुरू हुआ। वहां चीनी गोदाम और रेलवे कारखानेसे कामके लायक कल पुरजे नहीं मिले बल्कि मजदूरोंकी भी मदद मिली जिससे तोड़ फोड़का खूब काम हुआ। १२ अगस्तको जनताने कचहरी घेर ली और सबोंसे उसे खाली कर देनेकी अपील करने लगी। पुलिसने उन्हें वहासे हट जानेके लिये कहा पर हटते न देख लाठी चार्ज किया। कितने घायल हुए। १६ अगस्तको कचहरीपर विद्यार्थियोंका धावा हुआ। पुलिसका कड़ा पहरा था। तो भी विद्यार्थी श्री चन्द्रप्रकाश छतपर फाद गया और कचहरीपर झडा फहराने लगा। क्रोधातुर पुलिसने दो सौसे ज्यादा विद्यार्थियोंको हिरासतमे लेलिया। पर कुछ घटोंके वाद सवके सब छोड़ दिये गये।

मधुवनीने भी १२ अगस्तसे तोड़ फोडके काममे हाथ डाला। वेनीपट्टी और खजौली उसके प्रधान अड्डे रहे। मकरमपुर निवासी श्री यमुना सिंहने सर्व प्रथम तार काटकर तोड फोडका श्रीगणेश किया। खजौलीने इसका क्षेत्र वढाया। ठाहरमे रेलवे पुल तोडा गया, रेलकी पटरी उखाडी गयी। वराढमें डिस्ट्रिक्ट वोर्डका पुल तोडा गया। कलुआहीका पुल जव तोड़ा जा रहा था तव जयनगरसे लौटते हुए एस० डी० ओ० साहव वहाँ पहुँचे। लोगोने उनकी मोटर तोड दी। पर एस० डी० ओ० के शरीरको आंच नहीं पहुची। उनके ड्राइवरको तो लोगोने यत्नसे खिलाया पिलाया। पर १३ अगस्तने अपनी गरमी दिखालायी जयनगरमें। यहा शुरूसे ही जनतामें उत्साह रहा जो दिन दूना रात चौगुना वढता गया। १२ अगस्तको वाजारवालों और विद्यार्थियोने शहर भरमें धूम धामसे प्रदर्शन किया। जव वे थानेके पास पहुचे तव पुलिसवालोने उनपर लाठी चार्ज किया। वड़ी सनसनी फैली। १३ अगस्तको पण्डौल, मधुवनी और राजनगरके विद्यार्थी वहा इकट्ठे हुए और बहुत वडा जलूस लेकर थाना पहुचे। वे थानेपर झडा फहराना चाहते थे पर पुलिस मानती न थी। इसलिये दोनो ओरसे कुछ धक्कम धक्का हुआ जिसे देख दारोगा डर गया और उसने पिस्तौल चलायी। गोली रामलखन यादवकी वाहको छेदती हुई नथुनी साह नामके लड़केकी छातीमे घुस गई जो तत्काल शहीद हो गया।

उसकी लाशको पुलिसवाले घसीट कर थानेमेले गये और वार वार मागनेपर भी जनताको नही दिया। इसे जनता वर्दाश्त न कर सकी। प्राणोपर खेल थानेमे घुस पडी और लाशको पुलिससे छीन लिया। फिर तो वाजे गाजेके वीच शहीदकी अर्थी उठी। उसका दाह सस्कार हुआ और सस्कार भूमिपर तिरगा झडा गाड दिया गया, जो जव तक जनता राज रहा लहराता रहा।

हाजीपुर सव डिविजनमे चक्र सिकन्दर रेलवे स्टेशन है। उसके दोनो ओरकी रेलवे लाइने हटा दी गयीं। विदूपुरसे गाडी जव इस तरफ वढ़ने लगी तव लोगोने ड्राइवरको लाख समझाया कि आगे मत बढ़ो, लाइन नही है पर उसके दिमागमे कुछ वसा नही। वह गाड़ी बढ़ाता ही आया, और नतीजा यह हुआ कि इञ्जिन जमीनमे वेतरह गड गयी, डव्बोको वेतरह धक्का लगा, एक आदमीकी जान गयी। १३ अगस्तसे तोड फोडका वाजार गर्म हो गया। मुजफ्फरपुर जानेवाली लाइन उखाडी जाने लगी। पुल तोड़े जाने लगे और सड़के काटी जाने लगी, तार तो वात वातमे हवा हो गया। फिर तो हाजीपुरका यातायात विलकुल वन्द हो गया।

मुजफ्फरपुर

सदरका भी ऐसा ही हाल था। सिलौत स्टेशनपर १३ अगस्तको हमला हुआ। स्टेशनके काफी सामान नुकसान हुए। एक भरी हुई माल गाड़ी रोक दी गयी, जिसके कई डब्बोंको नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। काटी और उसके आसपास भी १३ अगस्तसे तोड़ फोड़ शुरू हुआ। उस दिन लोग स्टेशनमें घुस गए, कागजात जलाये और कल पुर्जे वर्बाद किये। एक पसिञ्जर गाड़ी जो खड़ी थी बुरी तरह तोड़ फोड़के चपेटमें पड़ गयी। उसकी इञ्जिन बेकार बना दी गयी और उसका ब्रेक बरबाद कर दिया गया। फलतः गाड़ी अरसे तक वहां ठठरीके रूपमें पड़ी रही।

पारू थानेने १० अगस्तको ही विराट प्रदर्शनकी समाप्ति की तोड़ फोड़का श्रीगणेश करके। उसने स्थानीय पुल तोड़ा, तार काटे और पासकी रेलकी पटरियां भी उखाड़ फेंकी। डाकघरपर झंडे फहराये और कितनी जगह डाकघरोंके कागज भी जला दिये।

सीतामढ़ी भी जिलेके साथ ही अपना पैर बढ़ा रहा था। १२ अगस्तको जबरदस्त पिकेटिङ्ग करके सीतामढ़ीके विद्यार्थियोंने सीतामढ़ी और सीतामढ़ी कोर्टके स्कूलोंको अनिश्चित कालके लिये बन्द करवा दिया। फिर रेलगाड़ीपर कब्जा कर लिया।

पुपरीने थानेपर झंडा फहराया।

१३ अगस्त तक चम्पारन भी उत्तेजित हो उठा था। घोड़ासाहनके विद्यार्थियोंने स्कूल बन्द किया और जनताके साथ मिलकर थाना बन्द किया। उनने स्थानीय ईसाई मिशनपर भी झंडा फहराया। कुछ लोग पादरीके मकानमें घुस गए। शीशे तोड डाले और फरनीचर भी। एक लडकेने ५००) की थैली भी उठा ली थी लेकिन उसपर आंख पड़ते ही लोगोंने थैली उससे ले ली और पादरी साहबको लौटा दी।

चम्पारन

आदापुरने थानेपर शान्ति पूर्वक झंडा फहराया। फिर वहां डाकघर, आबकारी, रेलवे स्टेशन और राज कचहरीपर झंडे फहराये गये। रेलवे स्टेशनको नुकसानी भी पहुँचायी गयी। वहा डैनबी स्टेटके मैनेजरका सामान पड़ा था जिसमें आग लगा दी गयी। राज कचहरीके कागजात भी जला दिये गये।

तिहुत डिविजनमें सारन तोड़ फोड़में आगे दीख पड़ा। पर १३ अगस्त तक सारन मुख्यतः प्रदर्शन करता रहा। सदर सबडिविजनके सोनपुरने १३ अगस्तको रजिस्ट्री औफिसपर झंडा फहराया और रजिस्ट्रारको तीन महीनेकी सवैतनिक छुट्टी देकर औफिसमें कामेसी ताला लगा दिया। डाकघरपर भी उसने इसी तरह

सारन

कब्जा किया। पुलिसने तिरगा झंडा उठा लिया और वह अगस्त क्रान्तिका हृदयसे स्वागत करती हुई जुलूसमे शामिल हुई।

लोग तब स्टेशन पहुँचे जहांके औफिस इञ्चार्जने सबोंके हाथमे अपनेको दे दिया। प्रदर्शनकारियोने औफिसपर झंडा फहरा दिया।

दिघवाराने १२ अगस्तको शानदार जुलूस निकाला। अनेक स्त्रियां अगुवाई कर रही थीं। जुलूस थाना तक गया। थानेमे फौज मुस्तैद थी और एक डिप्टी मजिस्ट्रेट। भारतीय नारीका उत्साह देख पहले तो ये सभी झेपे पर शीघ्र भारतीयताका अभिमान इन्हे उकसाने लगा और ये सबके सब झडे हाथमे लेकर जुलूसमे शामिल हो गये। जनता सौ सौ बास कूदने लगी और अपूर्व समारोहके साथ थानेको जनताने अपने अधिकारमे कर लिया। १३ अगस्तको थानेके सभी सम्मान पूर्वक विदा कर दिये गये और वहा स्वराजी ताला लगा।

फिर लोग तोड़ फोड़मे लगे। रेलवे लाइन उखाड फेके। तार काट डाले और स्टेशनको फूक दिया। भीड़ उत्तेजित थी। एक एक स्टेशनके समानको चुन कर बरबाद कर रही थी, जला रही थी पर जैसे ही उसके हाथमे थली आयी उसने तुरत उसको स्टेशन मास्टरके हवाले कर दिया। स्टेशन मास्टर और दूसरे दूसरे कर्मचारीके साथ वह बडी सज्जनताके साथ पेश आई जिसे वे सब कभी भूल न सके। पर १३ अगस्तने सिवानमे खूनका फाग खेला। पिछले दिन यानी १२ अगस्तको विद्यार्थियोने जलूस निकाला था, थानापर झडा फहराया था और वहांसे चलकर दिवानी और फौजदारी कचहरियोपर भी झडे फहराये थे। फिर वे श्रद्धानन्द बाजारकी सभामे शामिल हुए थे जिसमे कांग्रेसका प्रोग्राम पढ़कर सुनाया गया और समझाया गया था। आज सुबहको मालूम हुआ कि कचहरीपरके झडोंको उतार दिया गया है। सुनकर विद्यार्थी समाज क्षुब्ध हुआ और उसने फिर जुलूस निकाला। १३ अगस्तको बजारका दिन था। इसलिये जलूसके साथ एक बड़ी भीड लग गयी। शहरकी प्रमुख सडकोसे होते हुए सभी कचहरी पहुँचे। तादाद दस हजारकी होगी। फौजदारी कचहरीपर झडा फहराता न देख नारा लगा—झडा हमारा लौटा दो। एक अफसरने तुरत झंडा लौटा दिया तब विद्यार्थियोने उसे फिर फौजदारी कचहरीपर फहराना चाहा। उसी समय एस० डी० ओ० सामने आये। विद्यार्थियोने नारा लगाया एस० डी० ओ० हमारे नेता हैं। एस० डी० ओ० ने कहा अगर हम आपके नेता है तो हमारे साथ आइये। सभी एस० डी० ओ० के साथ फौजदारी कचहरीको छोडकर दिवानी कचहरीके मैदानमे जा पहुँचे।

लोगोनें दियानीपर फिरसे झंडा फहराया और प्रार्थनाके लिये अपनेको सजने लगे। एस० डी० ओ० ने कहा आप लोग हमारे साथ आइये और उस जगहसे प्रार्थना कीजिये। पर उस जगहसे झंडा दीख नहीं पड़ता था। इसलिये जनताने इसबार अपने नेताके पीछे चलनेसे इनकार कर दिया और वहीं झडा प्रार्थना गाई।

पर एस० डी० ओ० धीर नेता थे। असतुष्ट नहीं हुए बोले—आप लोग मैदानसे अब जाइये। इसी बीच हथियार वन्द सिपाही आगये। लोग भी तितर बितर हो गये किन्तु विद्यार्थी मैदानमे डटे रहे। इसपर नेता साहब बौखला उठे, लाठी चार्जका हुक्म दिया और खुद भी डडा चलाने लगे। सात लड़कोंको उनने गिरफ्तार भी किया।

इस हन्टर बाजीके खिलाफ शामको सरायमे सभा हुई। एस० सी० मिश्र हथियार बन्दोंके साथ पहुंचे और लोगोसे कहा,—सरायसे निकल जाओ। पर जनता टससे मस न हुई। तब उनने लाठी चार्जका हुक्म दिया। फिर क्या था ? लोग लोहू-लुहान होने लगे। ऐसा कि सरायके बाहर जो जनता खडी थी उससे देखा नही गया। वह पुलिसपर रोड़े चलाने लगी। तत्काल श्री मिश्रने फायरिंगका आर्डर दिया। धुंआधार गोली चलने लगी। १५२ हताहत हुए। छट्ठू गिरजी, दाउदपुर और झगड़ू चमार, सिवान घटनास्थलपर ही शहीद हुए और श्री बच्चन प्रसाद, ७वी श्रेणी डी० ए० बी० हाईस्कूल और बाबूराम पाण्डेय भादा, अस्पतालमे जाकर—डा० सरयूप्रसादको इतनी चोट लगी कि दस दिन तक खाटपर पड़े रहे।

गोपालगंज सबडिविजनका मीरगंज तोड फोडमे वहां आगे रहा। विद्यार्थियोंमे बड़ी हलचल रही। हथुआ हाईकोर्ट स्कूलपर कांग्रेसका झडा लहरा रहा था और उसके लडके क्रान्ति जगाते घूम रहे थे। १२ अगस्तको स्कूलके अधिकारियोंने झडा उतार फेंका। खबर पाते ही लड़कोंमे बडी सनसनी फैली। १३ अगस्तको एक हजारके लगभग छात्रोंका धावा स्कूलपर हुआ। उद्देश्य था फिर झडा फहराना। पर अधिकारियोंका रुख देख लडके उत्तेजित हो उठे। स्कूलमे घुस गये। फोटो तोड़ फोड डाले और अन्यान्य सामानको भी नष्ट किया। मिडिल स्कूलको तो नुकसान पहुचा चुके थे। सो अब सब डाकखानेकी ओर झुके। तार खंभे सबको नष्ट कर डाला और हथुआको दुनियासे अलग अपनी मुट्ठीमे कर लिया।

कटेया थाना गोपालगजके छोरपर है। वहा भी १२ अगस्तको लोगोंने थानेको चुनौती दी। दारोगासे कहा कि नौकरी छोड़ दो और थानेकी कुञ्जी हवाले करो। दारोगाने समय मांगा जो मिला।

१३ अगस्तको थानेपर एक वडा मजमा पहुँचा जिसने वहाँ झंडा फहराया। फिर उसने डाकघरमें कांग्रेसका ताला लगा दिया, तार खभे तोड़ डाले और रेलवे लाइनको उखाड़ फेके। इसी समय अफवाह उडी कि पुलिस छ खासखास सत्याग्रहियोको गिरफ्तार करना चाहती है। तुरत सभा हुई जिसमें उन छ सत्याग्रहियोको माला पहनायो गयी और जव घटो प्रतीक्षा करनेके वाद भी कोई पुलिस न दीख पड़ी तव जनता उन्हे खुद थाने दे आयी।

रॉंची

पटना गोलीकाण्डकी खवर जव राँची पहुँची तव विद्यार्थी अत्यन्त आवेशमे आ गये। राची जिला स्कूलके छात्रोने स्थानीय विद्यालयोमें हडताल करवाई और शहर भरमे प्रदर्शन किया। उनका क्षोभ इतना उग्र हो रहा था कि पुलिसने उनके जुलूसको रोकना निरापद नहीं समझा। विद्यार्थी कचहरीके हातेमें जमा हुए जहां पटना गोली काण्डकी घोर निन्दा की गयी और वकीलो और दूसरे दूसरे लोगोसे कचहरी छोड़ देनेकी अपील की गयी। वहासे वे जिला काग्रेस ऑफिस आये जिसमे पुलिसका ताला लगा हुआ था। उनने ताला तोड़ डाला और काग्रेस आफिसको दखल करके घोपणा की कि आजसे जिला कांग्रेस आफिस अपना रोजका काम—नियमित रूपसे करने लगी। पुलिस सामने थी पर उसके हाथ उठ नही रहे थे। १३ अगस्तको लड़के यथा समय जिला आफिस पहुँचे और अपनी कार्रवाई दुहरा रहे थे कि पुलिसने गिरफ्तारी शुरु कर दी। एक दर्जन गिरफ्तारियाँ हुई पर विद्यार्थी दवे नही। टोलियां वॉंध वाँध पहुँचते रहे और गिरफ्तार होते रहे।

मानभूमि

जिला काग्रेस कमिटीके सभापति श्री अतुलचन्द्र घोप जो आल इन्डिया कांग्रेस कमिटीकी वैठकमें शामिल होने वम्वई गये थे ता० १३ अगस्तको पुरुलिया पहुँचे और गिरफ्तार कर लिये गये। पर अपने यहॉके कार्यकर्त्ताओको आदेश देते गये कि उन्हे सत्याग्रह सम्मत कार्यक्रमको ही अपनाना है। उनके आदेशानुसार वहाँके लोगोने सरकारी सस्थाओपर धरना देना और उपयुक्त स्थानोमे शान्तिपूर्ण जुलस निकालना शुरु किया।

सिंहभूमि

१२ अगस्तसे जमशेदपुरमे पुलिसकी हलचल रग जमाने लगी। ३०० कौन्सटेविलोने जुलूस निकाला, सुपरिन्टेन्डेन्टके वगलेपर गये और अपनी माग पेशकी। वहॉसे लौट जुलूस ताताके कारखानेमे घुस गया और मजदूरोसे हडताल करनेकी अपील करने लगा। मजदूरोने कुछ समय मागा। फिर जुलूस श्री रामानन्द तिवारीके नायकत्वमे अपने वैठकमे लौट आया।

तोड़ फोड़ और जनताशाही

१४ अगस्तसे पटना ब्रिटिश और अमरीकन फौजियोंका अड्डा हो गया। शहरको विद्यार्थियोंने खाली कर दिया था। न जलूस था न नारे, एक अजीब सी वीरानी थी जिसको फौजियोंका जोर जुल्म सनसनी खेज बना रहा था। स्कूल कॉलिज और यूनिवर्सिटीके मकानात उनके अड्डे हो रहे थे। उनके हाथसे वहांकी चीजोंकी बरबादी हो रही थी।

एक तरफ कार्यकर्त्ताओंकी गिरफ्तारीकी धूम थी और दूसरी तरफ सडकोंकी सफाई जारी थी जिसका तरीका इनसानियतसे खाली था। गोरे वकीलों, डाक्टरों और प्रोफेसरोंको धक्का देकर, ठोकर और घूसे मारकर सड़कोंपर घसीट लाते और साफ करनेके लिये कहते। उनमेंसे कोई गोरोंके दौरात्मका विरोध नहीं कर सक्ता था। हा! प्रोफेसरों तथा अन्यान्य अध्यापकोंने जिनके अड़ोस पड़ोसमें गोरोंके अड्डे थे अपने यहां चायपानी या सिगरेटका इन्तजाम कर रखा था ताकि गोरे देहलीपर पैर देते ही अपनी खातिर तवाजा देख समझ जायं कि ये बागी नहीं सरकार परस्त हैं।

पर पटना अपनी उपयोगिताको खो न सका। बिहारकी राजधानी और कांग्रेस सगठनका केन्द्र बिहार प्रान्तमें इसका स्थान रहा है और रहा। यहांका जन आन्दोलन दब गया विद्यार्थी यहांकी गरमी लेकर भिन्न भिन्न जिलेमें चले गये तोभी यहां कुछ पुराने और अनुभवी कार्यकर्ता रह गये जिनने प्रान्तके आन्दोलनको चलानेकी अपनी जवाबदेही समझी। उनने प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीके नामसे जिला जिलामें कार्यक्रम भेजना शुरू कर दिया। सरकूलर नम्बर एक तो राजेन्द्र बाबूके गिरफ्तार होनेके बाद प्रान्त भरमें बंटा। उसकी भावनाके अनुकूल इस प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीने कितने और सरकूलर निकाले और अपने खास खास संवादवाहकोंके द्वारा जिला जिलामें यथा समय उन्हें भेजा। इसके पास अखिल भारतीय काग्रेस कमिटीके आदेश पत्र भी प्रान्तमें वितरण करनेके लिये आने लगे।

गोरोंने पटनेकी कड़ी नाकेबन्दी कर रखी थी। शहर भरमें चार ही फाटक थे जिनसे होकर गुजरनेके लिये पास लेना पड़ता था। ठोक पीट कर देख लिया जाता

कि आदमी अगस्त क्रान्तिका वागी नहीं है तब उसे पास दिया जाता। फिर भी प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी, पटना अपने सरकूलर नियमित रूपसे भेजती ही रही और किसी तरहकी नाकाबन्दी इसकी गतिविधिको रोक न सकी। यह पटनेकी आगको सुलगाती रही जिसे ले विद्यार्थी निकले और जिले जिलेमे आग लगाते फिरे। इसके सवाद वाहक जिले जिलेमे जाते रहे और कार्यकर्त्ताओंको ईंधन जुटाते रहे।

वाबू श्यामसुन्दर प्रसाद जिन्हें पटनेसे विहार आन्दोलनको देखने और चलानेका सबसे ज्यादा मौका मिला, लिखते है—नेताओंकी गिरफ्तारीके बाद १० तारीखको सदाकत आश्रम भी जब्त हो गया। उसके बाद एक दो दिनो तक आसपासमें ही ठहर कर हमलोग शहरमें जहॉ तहॉ रहने लगे। इसी बीच सेक्रेटेरियटपर गोली काण्ड हुआ और उसके तीसरे दिन पटनेकी सड़के पेड़ो और पत्थरोसे पट गयीं, सड़कोपर गाडीका चलना असभव होगया। ता० १२ की सभामे भाषण सुननेके बाद ही लोगोको ऐसा करनेका प्रोत्साहन मिला और वे इसे करनेके लिये तत्पर हो गये। अखवारोमें बम्बईकी खबरे इसके पहिले भी छप चुकी थीं कि वहा लोगोने तार काट डाले है और सड़कोको आवागमनके मसरफके लिये वेकार बना डालनेकी कोशिश जहा तहा कर रहे हैं। एमरीका ब्राडकास्ट भी हो चुका था जिसमें इस तरहके कार्यक्रमका जिक्र किया गया था। अत पटनेमे भी टेलिग्राफ और टेलीफोनके तार तो ता० १२ की दोपहरके वादसे ही कटने लगे थे। किन्तु शहरमें तोड फोड़का (dislocation) पूरा दृश्य तो १३ को सुबहमे ही देखनेको मिला। फिर टौमी शाही आयी, हर नुक्कड़पर टौमियोका पहरा वैठा दिया गया। एक ओरसे दूसरी ओरका आना जाना पाससे कन्ट्रोल होने लगा। लौनके पूरब जो सड़क उत्तर दक्खिन गयी है, या एग्जिबीशन रोड या कलक्टरी रोड, इन सड़कोके पश्चिम विना पासके कोई नहीं जा सकता था। इस लाइनमे हर मोड़पर काटेदार तार घेर डाले गये थे। हां! पश्चिमसे पूरबकी तरफ जानेवालोपर इतनी कडाई न थी। इस दिशामे विना पासके भी आ जाना सभव था। इसलिये स्टेशनसे उतरनेवाले विना पासके भी पूरबकी ओर चले आते थे। किन्तु विना पासके पूरबसे पच्छिमकी ओर जाना असभव था। इसी तरह गंगाके किनारे किनारे भी हर जगह पहरा था जिससे किसी घाटपर उतर कर कोई वडी जमात शहरमें रेड न कर सके। ऐसा लगता है कि इस रोक थामके दो उद्देश्य रहे होंगे। एक तो लोगोमे भय और

आतङ्क पैदा करना और दूसरा किसी बड़ी भीड़को लौनके पच्छिम चढ़ाई करनेका मौका न देना। सेक्रेटेरियटपर गोली चलनेके बाद लोगोंमें काफी क्षोभ पैदा हो गया था। अत गवर्नमेन्टको यह खतरा मालूम पड़ा होगा कि कहीं कोई बड़ा दल अगरेजोंपर हमला न कर बैठे। उनके मकान और दफ्तर अधिकतर लौनसे पच्छिमवाले हिस्सेमें पड़ते हैं। सितवरके पहिले सप्ताहमे पासका प्रतिबन्ध तो हट गया, लेकिन टौमियोका पहरा और कांटेदार घेरा तो मेरी गिरफ्तारीके वक्त तक (२४ सितंबर) भी थे ही, पता नहीं कब हटे।

अपनी गिरफ्तारीके पहले तक श्रीजगजीवन राम (वर्तमान श्रम सदस्य, अनस्थायी सरकार, दिल्ली) बाबू सिहेश्वर प्रसाद और ज्ञानदा प्रसन्न साहा आन्दोलनके संचालकका काम करते रहे। बाबू जगत नरायण लाल दिहातोंमे दौरा कर रहे थे। अतः हमलोगोंके साथ पटना शहरमें राय मशविरा करनेमे शरीक नहीं हो पाते थे। उस समय काम भी यही हो रहा था कि नोटिसे छाप छापकर विभिन्न जिलाओंमें भेजी जा रही थीं। पटनेसे बाहर जानेवालोंको बिना पासके टिकट नहीं मिलती थी; सड़कोंपर भी चलनेमें रुकावट थी। किन्तु उस समय जोश इतना उमड़ा हुआ था कि बार बार नोटिस लेकर जिलाओंमें जाने वाले किसी न किसी तरहसे निकल ही जाते थे, पहरा और प्रतिबन्ध अपनी जगहपर ही मड़राते रहते थे। जिलाओंसे कोई खास रिपोर्ट नहीं आती थी सिर्फ यहींसे धड़ाधड़ नोटिसें जाया करती थीं। अफवाहके रूपमे जहां तहांसे कुछ खबरें मिलती थीं किन्तु बाहरसे निश्चित सम्पर्क न था। नोटिस लेकर जो जाते वे भी बहुत दिनोंपर लौटते थे और इतना ही समाचार देते कि अमुक जिलेमें नोटिस काफी फैल गयी। पहले डाकियेके लौटनेका इन्तजार किये बिना ही दूसरी और तीसरी बार नोटिसे यहांसे रवाना कर दी जाती थीं।

प्रदर्शनकी भावनाको जिस क्रूरतासे दबानेकी सरकारी कोशिश हुई उसका अमिट प्रभाव जनतापर पड़ा। वह कठोर हो गयी। पहले जैसी शान्ति और व्यवस्था न निभा सकी। अपने शहीदोंकी याद उसे उसका रही थी। करेंगे या मरेंगेकी वज्र भावना वज्रगतिसे उसकी क्रान्ति साधनाको मूर्त्त रूप दे रही थी। प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीके एक संवादवाहक श्री नरसिंह दास लिखते हैं—मैं १४ अगस्तको पटनासे रवाना हुआ सरकूलर नं० २ लेकर, सभी जिलोंमे बॉटनेके लिये, मैं पटनेसे किसी तरह सोनपुर पहुँचा। वहां जो गाड़ी मिली किसी तरह हाजीपुर

श्रीमती अरुणा आसफ अली

सरदार नित्यानन्द,
भागलपुर
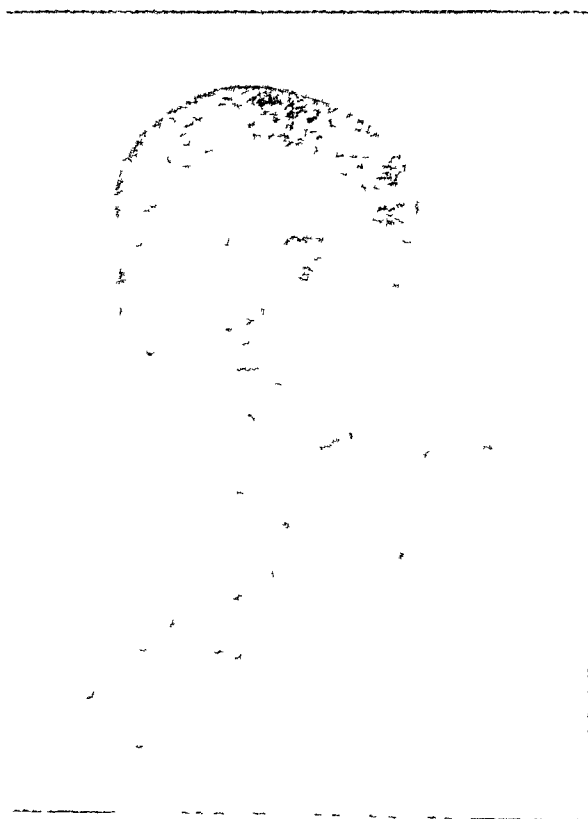
क्रान्तिके दो संचालक

आचार्य बदरीनाथ वर्मा,
वर्तमान शिक्षा मंत्री (विहार)

श्रीश्याम सुन्दर प्रसाद,
विहार विद्यापीठ
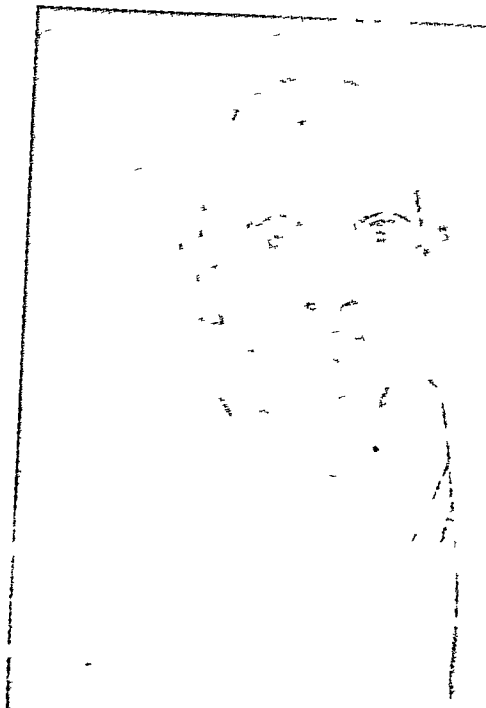
तक गयी। हाजीपुरसे मैं साइकिलपर रवाना हुआ। लेकिन उस सरकुलर नं० २ के पहुँचनेके पहले ही लोग सभी जगह उस कामको बड़ी तेजीसे कर चुके थे और कर रहे थे। तो भी मैं सरकूलर बांटता गया।

सचमुच जनताकी तेजीको सगठनके अभावमें कार्यकर्त्ता छू न पाते थे। सारे प्रान्तमें एक ही भावना लहरा रही थी पर सगठनकी व्यापकता एक जैसी न थी। प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीके आदेश और भिन्न-भिन्न स्थानोकी जनताकी कार्रवाईके तारतम्यमे सम्बन्ध देखा जा सकता था पर तिथिमे तो नहींके बराबर सम्बन्ध था। कहीं हडताल और प्रदर्शनकी अवधि कुछ रही कहीं कुछ। तोड फोड तथा अन्यान्य कार्यक्रमका प्रारभ और समाप्ति भी सब जगह एक जैसी न रही। इसलिये अगस्त क्रान्तिकी गति विधिको समझनेके लिये जनताकी कार्रवाईके तारतम्यको ही देखना पड़ता है।

यों तो तोड फोडके काम ता: १० अगस्तको भी कहीं कहीं हुए पर जोर पकड़ा इस प्रोग्रामने १२ अगस्तको और १४ अगस्तसे प्रान्त व्यापी हो गया। तोड फोडको प्रान्त व्यापी बनानेमें सरकूलर न० २ का बडा हाथ है जो यो हैं —

कांग्रेसकी खास हिदायतें—सरकूलर नम्बर २

हमारी आजादीकी लड़ाई शुरू हो गयी। अब तो इसमे मर मिटना है और विजय प्राप्त करना है। इस समय हर हिन्दुस्तानीके मनमें और मुंहपर यही बात रहे— अजाद होंगे या मरेंगे। स्त्री-पुरुष, बूढ़े बच्चे सभीकी एक ही आवाज हो 'मृत्यु या विजय।' बस इसी बातका खयाल रख कर आगे बढ़ते जाना है। इसके पहले भी कुछ हिदायतें जा चुकी हैं। लेकिन याद रहे उनमें सारी बातें खत्म नहीं हो जातीं बम्बईसे कांग्रेसका ताजा आदेश आया है जो इस प्रकार है'—

(१) टेलीफोन और टेलीग्राफके तार सब जगह काटे जाये। हॉ इस बातका पूरा ध्यान रहे कि हमारी ओरसे कोई हिंसा नहीं होने पाये और सभी काम खुले आम हो।

(२) जहां तक हो सके 'आजाद होंगे या मरेंगे' के पोस्टर सब जगह साटे जायें और इसका नारा भी लगाया जाय।

(३) हर तरहके और हर तबकेके हिन्दुस्तानीकी सहानुभूति हासिल करनी चाहिये। इस बातके लिये पूरी कोशिश की जाय।

(४) इस विदेशी सरकारके लिये काम चलाना असम्भव हो जाय इसके लिये अहिंसाके रास्तेपर चलकर अपनी जगहकी परिस्थितिके मुताबिक जो भी काम करना चाहें करे।

(५) साथ ही अंग्रेजी हुकूमतकी ताकत जैसे जैसे खत्म करते जाय वैसे ही वैसे तत्काल उसकी जगह लेनेके लिये अपनी राष्ट्रीय पञ्चायत कायम करते जायं। इस पचायतमें कांग्रेसके साथ मिलकर काम करनेवाले सभी लोगोंको लेना चाहिये। इसके साथ लोगोंकी जान मालकी रक्षा करनेके लिये स्वयसेवकोंका दृढ सगठन हो।

(६) ब्रिटिश सरकारकी ओरसे आपसमें फूट और लड़ाई करानेका जो जाल बिछाया जा रहा है उसमें हरगिज न फँसे।

बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी,
पटना।

पटना जिलाको इस सरकूलरकी खबर लग चुकी थी और उसे सरकूलरोंकी जरूरत भी नहीं रह गयी थी। पटनाको कब्जेमे रखकर गोरे जिलामे आग और गोली बरसा रहे थे और जनता अपनी अपनी जगहपर अपने अपने ढगसे उनका सामना करती हुई 'अगरेजो भारत छोड़दो'के नारे सार्थक बना रही थी।

थाना विहार तोड फोड़के कामको आगे बढ़ा रहा था। रेलवे उसके कब्जेमें था, सड़कपर उसकी शनि दृष्टि थी। विहार राची रोडपर गिरियकके पास बकरा-चरसुआका पुल है उसे वहाकी जनता जब तोडनेमे लगी थी तब उनके सरपर हवाई जहाज मडरा रहा था। जहाजने बम भी बरसाये पर लोग बाल बाल बच गये। विहार सब जेलमे लग भग २५० कैदी थे। वहाके कार्यकर्त्ताओंने वार्डरसे चाभी छीन ली, जेलका फाटक खोल दिया और कैदियोंको भगा दिया।

एकंगर सरायकी जनताने १४ अगस्तको जलूस निकाला और सभी सरकारी दफ्तरोंपर राष्ट्रीय झंडा फहराया। १५ अगस्तको यातायातके साधन नष्ट करनेके लिये उसने रेल गाड़ीकी पटरियां उलटनी शुरू कर दी जिसपर रेलवेके कर्मचारियोंसे नोक झोंक हुई। जनता और उत्तेजित हो गयी, उसने डाकघरके कागजातको बरबाद कर दिया। गाजा, शराब वैगरहकी दूकानोंको नष्ट कर दिया, कोशियामा और एकंगर सराय स्टेशनोंके सामान बरबाद कर दिये और कागजात फाड फेंके। जगह-जगह सड़कें काट दीं।

नाथूप्रसाद यादवकी शहादतसे बख्तियारपुरमे गजबकी ताकत आ गयी थी।

थानेके दारोगा गोली चलाकर इस तरह आतंकित हो गये थे कि उनके लिये हाथ पाव भी हिलाना मुहाल हो रहा था। १५ अगस्तकी रातको धर्मशाले-में नगर निवासी आगेका प्रोग्राम तय करनेके लिये इकट्ठे हुए, कुछ ही देर हुई होगी कि उन्हे एक भीषण अत्याचारका सामना करना पडा। अखौरी नारायण-शेखरसिहा जो वहा मौजूद थे, लिखते हैं, "लगभग आठ वजे मैं मतिराम, एक उरांव विद्यार्थीके साथ वख्तियारपुर पहुँचा। शहरमें आन्दोलनकारियोका वोलवाला था। दो विद्यार्थी कधेपर झडा लिये इधर उधर मुस्तैदीसे घूम रहे थे। मैंने उनसे शहरकी हालत पूछी तो उन्होंने वडी उपेक्षासे कहा कि अभी सिर्फ स्वराजकी वातें कीजिये, हालत-वालतकी नहीं। पर जव मैने नम्रता पूर्वक समझाया कि मैं भी स्वराज चाहनेवाला हूँ, हालत पूछनेका मतलव ही स्वराजको वाते करना है, तो वे नम्रतासे पेश आये। वोले कि पुलिस तो थानेमे वन्द है और हमलोग शहरका काम वडी सुविधासे चला रहे है। मैंने उन्हें अपना परिचय दिया और जव विश्रामकी इच्छा प्रकट की तो उनने एक स्वयंसेवकके साथ कर दिया। वह स्वयसेवक मुझे हलवाईकी दूकानपर ले गया। वहा उन्हीं लोगोंके नियत्रणमे आठ आने सेर गरम गरम पूरी विक रही थी। हमलोगोने तृप्त होकर भोजन किया और फिर उस स्वयसेवकके साथ विश्राम करनेके लिए धर्मशाले आये। धर्मशालेमे नागरिकोकी सभा होनेवाली थी, वे दोनो विद्यार्थी मेरे पास पहुँचे और उस सभामें वोलनेके लिये निमन्त्रित किया। चूकि मै वहुत थका हुआ था इसलिये मैंने कहा कि थोडा विश्राम करनेके वाद ही मै सभामें सम्मिलित होऊँगा। इतना कह मैं लेट गया और मुझे झपकी आ गयी। अकस्मात् वड़े जोरसे हल्ला हुआ, मेरी नींद उचट गयी। मैंने वदूककी आवाज सुनी और देखा कि वहुतसे हिन्दुस्तानी सिपाही गोरोंके साथ साथ अन्दर घुस रहे है और चिल्ला रहे है—मारो सालो को! मैने देखा लोग लाठी और कुन्दोसे अन्धाधुन्ध पीटे जा रहे हैं। आर्तनाद और भगदडकी आवाज कान फाड रही है। मैंने देखा मेरा उराव साथो भी भाग गया है। मै उसका नाम पुकारता जरा उसके पीछे दौडा पिछवाड़े पहुँच देखा कि चारो ओर चहार दीवारीसे घिरा एक छोटा सा आगन है। ज्यादा लोग चहार दीवारी फादकर भाग चुके है और कुछ लोग भागनेकी कोशिशमें हैं। मै वडी दुविधामें पडा। चोरकी तरह वहा खड़ा रहना वुरा मालूम हुआ और लौट कर जानेमें सिवा लाठियो और वदूकके कुन्दोके शिकार वननेके आलावा और कोई चारा न था। मैं भी

चहार दीवारी तड़प गया और उसपार डेढ़ पोरसा नीचे दल-दल खेतमे जा गिरा। वहांसे संभल कर उठा तो एक छोटी सी गली होकर धर्मशालेके पासकी सड़कपर निकल आया। सड़कपर विलकुल सन्नाटा था केवल एक लम्बे-चौड़े खद्दरधारी सज्जन खूनसे लथपथ कराहते तथा डगमगाते हुए आगे बढ़ रहे थे। मैने उन्हे जाकर सहारा दिया इतनेमे दो सिपाही वहा आ पहुचे। उन्होने आते ही आरजू करना शुरू किया। मैं उक्त सज्जनको छोड़ कर जल्दी कहीं भाग छिपूं, क्योकि गोरे बिगड़े हुये थे और हर मिनट गोली चलानेकी आशका थी। मैने उत्तर दिया कि जब तक घायलके शुश्रूषाका प्रवंध नहीं हो जाता मै वहासे भाग नही सकता। सिर्फ इसपर सिपाहियोको दया आई। एक सिपाही घायलको डिस्पेसरी ले गया और दूसरेने मुझे एक हलवाईकी दूकानमें ठेल दिया।

इस काण्डमें मोगलसिह मार डाले गये। उनके शरीरको कुन्दो और लाठियोकी मारसे टामियो और सिपाहियोने भुरता बना दिया था। त्रिवेणी शर्मा भी बुरी तरह घायल हुये थे पर खूब अच्छी तरह दवा दारु करानेके बाद चगे हो गये। बख्तियारपुरने इस अत्याचारको बहादुरीके साथ बरदाश्त किया और जोरोसे अपने संगठनमें लग गया। जनताके जोश खरोशको देखकर अनवारुल हक थाना छोड़ भागे। पर जनताकी एक उत्तेजित भीड़ने उन्हे बख्तियारपुर रेलवे स्टेशनपर पकड लिया। वे शहर खींच लाये गये। स्टेशनपर भीड़को देखते ही उनने कांग्रेसकी जय जयकार शुरू कर दीं थी। उसका झडा उठा लिया था और गांधी टोपी और खादी पहन ली थी नत्र कही अपनेको जनताके क्रोधसे बचा सके। जनता धर्मशाला काण्डकी जडमे उनको ही समझती थी। इसलिये उनपर अत्यन्त कुपित थी। दारोगा साहबके भागनेमे रेल मददगार न बने इसलिये बख्तियारपुर स्टेशनको लोगोने जला दिया और काफी दूर तक रेलवे लाइनको छिन्न भिन्न कर दिया।

हरनौत स्टेशनको जनताने जला दिया और जो गल्ला वहा मिला उसको लूट लिया। चेरो स्टेशनको सामान सहित जला दिया।

फतुहा थानेने भी स्टेशनका गोदाम लूटा और रेलकी पटरियां उखाड फेकी। ता १४ की घटना है। फतुहासे एक गाड़ी पटने जाना चाहती थी जिसपर दो कनाडियन अफसर सवार थे। एक कनाडियनने रिवाल्वरमे ककरकी गोली भरकर एक पटरी उखाड़ने वालेको जो लाइनपर खडा था, मारा और जो हिन्दुस्तानी

उसके पास गये उनको शेखीसे घूरता रहा। जनता उमड उठी। बडी भीड इकट्ठी हो गयी और ऊंची आवाजमे 'अंगरेजो भारत छोड दो' पुकारने लगी। परिस्थिति बिगड़ी देख गार्डने गाडी आगे बढ़ायी पर आगे तो लाइन थी ही नहीं। इसलिये जनताके आदेशानुसार उसे गाड़ीको पीछे लौटा लेना पडा। ज्योंही गाडी स्टेशन पर पहुँची लोग कनाडियनोंपर टूट पड़े और उन्हें मार डाला। फिर उनने उनकी लाशोंका प्रदर्शन किया और अन्तमें पुनपुनकी धाराके मुहानेपर उन्हें छोड दिया। फिर यूनियनबोर्ड, खुसरोपुर, दनिआवा और सिगरिआवा स्टेशन जलाये गये।

मनेरने यूनियन बोर्डके कागजात और फरनीचर जला दिये। मनेरके लड़कोंकी टोली लेकर ता० १४ अगस्तको कुछ लोग डाकबंगलेपर गये और मजिस्ट्रेट हुदासाहबको डाकबंगलेसे निकाल बाहर किया। फिर बन्दूक ले ली और उसे रामनगरके श्री ब्रजकिशोरके यहा भेज दिया। डाकबंगलेसे क्तार कतारमें सज गीत गाते हुए सभी वापस हुए और स्कूलमे अपना ताला लगा दिया। नहर रोड भी इनने जाम कर दिया। तारके खंभे उखाड फेके।

पालीगजने आजाद जनताकी ताकतका एक नमूना पेश किया। १४ अगस्तकी शामको आठ दस हजार लोग इकट्ठे हुए और जलूस बांध कर चले सरकारी ताकतसे टक्कर लेने। आगे आगे श्री कन्हाईसिहजी थे। लोगोंने नहर औफिसमें अपना ताला लगाया और डाकघरमे भी। वहासे अस्पताल और स्कूलपर झडा फहराते हुए सभी थाना आये। थानेमे पुलिस चोकस थी। पर जनबलके आगे क्या कर सकती थी? लोगोंने थानापर झडा फहराया और ताला लगा दिया। बादको दारोगा साहब पहुँचे और कन्हाई बाबूको आगे देख गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया। पर जनता बिगड़ी जिससे कन्हाई बाबू उस वक्त पकड़े न जा सके। जनता कन्हाई बाबूको लेकर चली गयी। फिर जब कन्हाई बाबू थानाके पास होकर बाजारसे लौट रहे थे तब दारोगाने एकाएक इन्हें पकड़ लिया और रात भर थानेमें रखा। दूसरे दिन यानी १५ अगस्तकी सुबहमे जमादार और दो कन्सटेबिल श्री कन्हाईसिहजीको दानापुर जेल लिये जा रहे थे। जब वे उन्हें लेकर उलार पहुचे तब भरतपुरा हाईस्कूलके छात्रोंने जनताकी सहायतासे कन्हाई बाबूको मुक्त कर लिया और पुलिस सहित जमादारको अपनी हिरासतमे ले लिया। तीनो २४ घटेके लिये स्वराजी जेलमें रहे। छात्र इनके साथ बड़ी अच्छी तरह पेश आए क्योंकि उनके अगुआने कहा था कि इनके साथ अहिंसाकी नीति बरती जायगी।

थानेका दारोगा घबड़ाया। उसे मालूम हुआ कि 'कांग्रेसका झडा थानेपरसे हटा दिये जानेसे ही कांग्रेस वाले बिगड़ उठे हैं। तुरत उसने झडा कांधे लिया और वन्देमातरम्‌का जयघोष करते हुए लोगोंको जुटाया और विधिवत झडा फहराया। दूसरे दिन थाना कांग्रेस कमिटीके सभापतिने जमादार और कन्सटेबिलको छुडवा दिया क्योंकि उन्हे दारोगा साहबने खुद आकर खबर दी कि हमने थानापर कांग्रेसका झडा फहरा दिया है अब प्रार्थना है हमारे आदमियोको छोड दे। यहा भी एक चौकीदार और दो सरपंचोंने इस्तीफा दिया।

पटना मुफस्सिल थानेके फतहपुरमे उत्साह काफी था। श्री चन्द्रशेखरसिंह सुपरवाइजर रूरल डेवलपमेन्ट औफिसको जलाकर अपने स्टाफके सभी लोगोंसे इस्तीफा दिलाकर फतहपुर पहुंचे थे। रामबहाल सिंह बिहार पुलिस और रामाश्रय सिंह, बगाल पुलिसने अपनी नौकरीको लात मार कर जनताका साथ देनेका निश्चय किया था। इन सबोंने मिलकर फतहपुर पटना रोडके एक बड़े पुलको तोडना चाहा पर बड़ी मिहनतके बाद उसका कुछ हिस्सा तोड़ सके। फिर सबके सब लौट गये। श्री जगतनारायण लाल वहां क्रान्तिका सन्देश लेकर पहुँचे और स्वयसेवकोंका जो दल तैयार किया गया था उसका नया नामकरण किया शहीदो जत्था। इस जत्थेसे तोड़ फोड़का काम भी उतना ही चला जितना सगठनका।

बाढ़ने तार काटे, रेलकी पटरियां हटायीं और बाढ़ रेलवे स्टेशनके कागजात और फर्नीचरको फूंक दिया। उसकी मशीनरीको बरबाद कर दिया। अथमल गोला स्टेशनको जला दिया। मोरमें तो स्टेशन भी जले और कर्मचारियोंके डेरे भी। ऐसी स्थिति देख पडार स्टेशनपर परिवारके साथ रहनेवाले कर्मचारी बड़े घबड़ाये। गाववालोंने उन्हें सपरिवार अपने यहां बुला लिया और आरामसे रखा।

पुनपुनकी जनता पुनपुन नदीपर जो रेलवेका पुल है उसे तोड़नेमें असमर्थ हो वापस लौट रही थी कि कुछ अमरीकन फौजियोंसे आमना सामना हुआ।

पुनपुन

अमरीकनोंने संगीनके बलसे भीड़ हटानेकी कोशिश की किन्तु उनकी तादाद नगण्य और भीड़ बेशुमार और जोशसे भरी हुई। भला उनके हटाये क्या हटती। निराश हो अमरीकन पुनपुन स्टेशनकी ओर वापस हुये जहाँ उनकी पेट्रोलींग ट्रेन खड़ी थी। जनता भी तरह-तरहका नारा बुलन्द करती हुई साथ लग गयी। अमरीकन जब तब जनताको गोलीसे उड़ा देनेकी धमकी देते और जब तब सगीनसे फाड़ देनेका डर दिखलाते। पर बेपरवाह जनता उनका पीछा नहीं छोडती

और कभी कभी तो कुछ लोग उनकी पीठसे भिड़ जाते। जब पुनपुन स्टेशन नजदीक आया तब अमरीकनोंका जनतासे मुठभेड़ होगयी। रसीलचकके श्रीलाल प्रसाद यादवको सगीनके कई घाव लगे और साथियोंके देखते-देखते खूनसे लथ पथ उनका शरीर धराशायी हुआ। जनता उबल उठी। अमरीकनोंपर ईंट, पत्थर बरसाने लगी। अमरीकन बेतहाशा भागे और पट्रोलींग ट्रेनमें बन्द होकर अपनी जान बचायी। खीजी हुई जनता उधरसे मुड़ी तो रेलवे लाइनकी ओर दौड़ गई और उसे उखाड़ने लगी। दो दिनोंतक तोड़-फोड़ वेगसे चलता रहा।

हिलसा थानेमें तोड़-फोड़ने जोर पकड़ा १४ अगस्तको। लोग तार काटने और रेल लाइन उखाड़नेमें लग पड़े थे। आज वे जुलूस बाँधकर निकले और रजिस्टरी औफिसपर टूट पड़े। उसके ताले तोड़ चीजें निकाल फेंकी और उन्हें बरबाद कर दिया। उनके आबकारीकी दूकानोंको भी बरबाद कर दिया। कराय-परसुरायके डाकघर और रेलवे स्टेशनकी चीजें भी नष्ट कर दी।

हिलसा

सदर थानेमें फतहपुर मठिया मिडिल स्कूलके शिक्षक तथा छात्रोंने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंका साथ देकर तोड़ फोड़के कामोंको आगे बढ़ाया। नहर औफिसके सामानको बरबाद कर दिया और उसमें आग लगा दी। वहांसे वे डाकघर गये और उसकी चीजोंको भी जला दिया। फिर उनका धावा शराबकी दूकानपर हुआ जो बरबाद कर दी गयी, वही दल वहांसे बरूही गया जहांके नहर औफिसके बगलेपर उसने धावा किया। कुछ जनता और ओवरसियर हाथ पकड़ने आये पर कामयाब न हो सके। बंगलेके कागजात जला डाले गये और सामान भी बरबाद कर दिया गया।

शाहाबाद सदर

बनवारी स्कूलके लड़कोंका एक दल खूटहा पहुचा और डाकघरके कागज पत्रोंको जला दिया, फिर वह गांजा दारूकी दूकानोंको बरबाद करता हुआ चेनरीकी ओर बढ़ा। वहांके डाक बंगलाके सामानको उसने नष्ट कर दिया। फिर वह दल ओवरसियर और नहर तहसीलदारके औफिस पहुँचा—औफिसके सारे कागजात जला डाले और नहर औफिसके तार वगैरहको काट दिया। लसाढ़ी और वहांके आस पास रहनेवालोंका एक दल आगे अगियाव आया वहांके डाकघरके कागज पत्रोंको उसने जला दिया। खजाना लूट लिया खजानेमें जो नोट थे वे जला दिये गये। वहांसे वह नहर औफिस आया। वहांके कागज-पत्रोंको भी उसने जला दिया। फिर गमनागमनको रोक देनेके खयालसे लसाढ़ी, बगौटी, बेरथ, खड़ाऊँ

पेउर, हरपुर आदि दस पंद्रह स्थानोपर नहर रोडको काट डाला। उसके किनारेके वहुतसे पेड़ काट दिये गये और नहर रोडपर बिछा दिये गये। लाइनपरके तारको उजाड़ फेका गया। थानेकी सभी आबकारी महालकी दूकाने वन्द हो गयीं और कोई डाकघर अछूता न रहा। पीरो थानामे कालिजके लड़कोका एक जत्था आया। स्थानीय कार्य-कर्त्ताओकी हिम्मत वहुत वढ़ गयी। सबोने मिलकर स्टेशनपर चढ़ाईकी जिसके सामानको तोड़-फोड़ दिया और स्टेशनमे आग लगा दी। डाकघरकी चीजे नष्ट करके डाकघरको जला दिया। नहरके तहसीलदारके आफिसको जला डाला। गढ़हनीसे हसन बाजार तककी आरा, ससाराम लाइट रेलवेकी लाइन कई जगह इन सबोने उखाड़ फेकी। जगह-जगह तार काट डाले। थानाके अन्दरके अधिक तर डाकघरको कागजको जला दिये गये, कई पुल भी तोड़ दिये गये, नहर सड़क आदि रास्ते काट दिये गये और किनारेके वृक्ष सड़कपर काट गिराकर सड़कको जाम कर दिया गया जिसपर आती जाती डाकको कई बार लूटा गया।

जगदीशपुर थाना

जगदीशपुर थानेमें स्कूलके लड़के और थानेके काग्रेस कार्यकर्त्ता एक साथ तोड़ फोड़के कामोमे लग गये। उनने सब रजिस्टरी ऑफिसके सामने पुलिस सब-इन्सपेक्टरसे उसकी पिस्तौल छीन ली।

हरदियांकी एक महिला श्री फूलकुमारीके नेतृत्वमे आस-पासके लोगोका दल तोड़-फोड़ करने निकला। उसने बिहियाकी पुलिन चौकीको बरबाद कर दिया, वहां जो वन्दूक मिली उसे ले लिया। विहिया स्टेशन और डाकघरके कागजात जला डाले। फिर उसने 'कारीसाथ' से बिहिया तकको लाइनकी पटरियोको कई जगह उखाड़ दिया और तार काट दिया और कई जगहके डाकघरके कागज-पत्र जलाये गये। सब जगह श्रीमती फूलकुमारी अपनी कार्य पटुता और संगठन-शक्तिका परिचय देती रहीं।

वादको गावोमे काम करती हुई वे गोरो द्वारा पकड़ी गईं, सजा पाकर जेल गईं और जेलसे आकर एस० डी० ओ० को चूड़ी पिहनाने गयीं क्योंकि वह सर-कारी नौकरी छोड़ देशका साथ नही दे रहा था—फलस्वरूप फिर जेल गईं, और वहांसे लौटते ही बीमार पड़ी और शहीद हो गईं।

साहपुर

साहपुरके कार्यकर्त्ताओने भी डाकघर, रजिस्टरी ऑफिसके कागज-पत्रोको जलाया। विहियासे रघुनाथपुर तककी रेलवे लाइनको कई जगह छिन्न-भिन्न कर दिया। तार भी काट दिये।

बड़हराथाना

बडहरा थानेके आरासे कोइलबर तकके तार काट फेंके गये। रेलवे लाइन भी जगह ब-जगह उखाड़ दी गयी। डाकघरके कागज पत्र जला दिये गये। १४ अगस्तकी घटना है, चार बजे शामको कोइलबर स्टेशनके पच्छिम छोटी पुलके निकट कुछ लोग लाइन उखाड रहे थे, उसी समय पट्रौलींग ट्रेन आती दीख पड़ी। लोग भाग गये पर कपिलदेवराम पैरमें कांटा लग जानेकी वजहसे भाग नहीं सके। पैरका काटा निकालनेके लिए झुके ही थे कि उन्हें पट्रौलींग ट्रेन परसे एक गोरेने अपनी राइफलका निशाना बनाया। गोली पेटमें लगी। उनकी चाल धीमी पडी, बस गोरोंने दौडकर उनको पकड़ लिया और गोलीके छोटे घावको सगीन घुसेडकर इतना बडा बना दिया कि उनकी आत बाहर निकल आयी। वे अस्पताल लाये गये पर डॉक्टरके पहुँचनेके पहले ही शहीद हो गये।

संदेश

सदेशके कार्यकर्त्ताओंने डाकघर जलाये। कलाली जलायी और सड़कोंपर जगह व जगह गड्ढे खोद उन्हें दुर्गम बना दिया।

बक्सर

बक्सर सबडिविजनमे रेलवेपर तोड़ फोड़ वालोकी खास नजर रही। उनने ब्रह्मपुर थानेके रघुनाथपुर स्टेशनको बहुत नुकसान पहुँचाया। दो-तीन रोज तक उस स्टेशनपर हमला होता रहा। उसके टिकट जलाये गये, किवाड़ें तथा खिड़कियाँ निकाल ली गयीं और सामान बरबाद कर दिये गये। मालगुदामकी बहुत सी चीजे लूट ली गयी। कॉग्रेसके कार्यकर्त्ताओंने लूटको रोका, व्यापारियोकी बहुत सी चीजें वापस दिला दीं। बाजारमें उनके प्रयत्नोंसे ही शान्ति रही। हाँ पन्द्रह दिनो तक लाइन उखाड़ने और तार काटनेका काम होता रहा।

बक्सर थानेके बरूना और चौसा आदि स्टेशनोंके कुछ सामान और कागजात जला दिये गये। मजिस्ट्रेट साहब खड़े थे और बक्सर स्टेशनका मालगुदाम लूट लिया गया। बक्सर डाकघरके कुछ रुपये भी लूटे गये। थानेके अन्दरके और डाकघरोंके कागजात जला दिये। इसी तरह आबकारी महालकी दूकाने भी बरबाद कर दी गयीं जिनमें इटाढी, नाट, चौसा, और बक्सरकी दूकानें उल्लेखनीय है। अन्दौर गॉवके डाक बगला और सेक्सनल बगलेके कागजात, किवाड़केशीशे और कुर्सियाॅ आदि तोड़ फोड़ दी गई। थानेके नहर विभागके तहसीली बगलेके कागजात भिन्न भिन्न जगहोंमें भीड़ द्वारा जलाये गये।

नावानगर थानेमें केसठकी शराबकी दूकान, तहसीलदारका बगला, खरवलियाॅका ओवरसियरी बगला, केसठके डाकघरका सामान जला दिया गया।

रामपुर नहर विभागका बंगला और सिकरौल नहर विभागके कागजात जलाये गये। बासदेवा तथा आथरकी पुले तोड़ी गयीं। राजपुर थानेमे मनोहरपुर नहर विभागके कागजात जलाये गये और फर्नीचर तोड़ डाले गये। डुमराँव स्टेशनके कागजात और टिकटघरको जला दिया गया। उसी रोज नवपुलियाकी रेलवे लाइन उखाड़ दी गयी। १४ अगस्तके लगभग डुमरी, सहियार, सेमरी, तथा भोजपुरकी आबकारीकी दूकानोंके सामान नष्ट हुये। डुमरी और मिश्राजीपुरके कागजात जलाये गये। डुमराँव डाकघरके कागजात जलाये गये और कुछ रुपये भी लूटे गये। कुरानसरैयाँकी शराबकी टकी गिराकर पचास हजारकी बरबादी की गयी। वहाँकी गाजे और ताड़ीकी दूकानोको भी नष्ट कर दिया गया। चौगाँई और मुरार पोस्ट ऑफिसोंके कागजात जलाये गये। सिमरीके चौकीदारोंकी वर्दी-पेटी जलायी गयी। १६ अगस्तको कावके पुलका एक हिस्सा तोड़ा जा रहा था। उस वक्त एक हवाई जहाज सरके ऊपर मड़राने लगा। उसने झपट्टा मार भीडको तितर-बितर कर दिया। कितने स्कूलके लड़के जमीनमें गिर पड़े।

नावानगर

१६ अगस्तको बक्सर सेन्ट्रल जेल तोडनेकी कोशिश हुई। पहले हजारो आदमियोकी भीड़ने फाटकपर राष्ट्रीय झंडा फहराया। फिर सभी फाटकपर प्रहार करने लगे। जो वार्डर रोकने आये एक तरफ ठेल दिये गये। फिर लाठी-चार्ज हुआ। मजिष्ट्रेट साहब मौकेपर मौजूद थे। लाठीसे सैकड़ोको चोट लगी और सबसे अधिक घायल हुये अहिरौलीके स्वामी मनोज्ञानन्द। वे जेलमे दाखिल कर लिये गये जहाँ सात रोज तक बेहोश रहे। पड़रीके नर्मदेश्वरसिह भी काफी घायल हुये। दस व्यक्ति जेल तोड़नेके अपराधमें गिरफ्तार हुए।

सासाराम

१४ अगस्तको एक बड़ी भीड़ सासाराम स्टेशनपर इकट्ठी हुई, उसने स्टेशन जला दिया। फिर वह झंडे फहराती हुई कचहरी पहुँची और क्राँतिकारी नारोंके बीच उसने कचहरीपर झंडा फहरा दिया। कचहरीके शीशे वगैरह तोड़ डाले। बादको वह लौट पड़ी ग्रैंड ट्रैंक रोडसे जिसपर मशीनगन लगाकर गोरे डट रहे थे। जब भीड़ एस० डी० ओ० के बंगलेके सामने आयी तब उसने अपने नारे बुलन्द की और वहां जम गई। एस० डी० ओ० के आदमियोने तितर-बितर करना चाहा पर भीड़ हटी नहीं। एस० डी० ओ० की ओर ढेले फेकने लगी। बस गोरे गोली चलाने लगे। कौपके रहनेवाले जैरामसिह यादवने एक गोरेपर लट्ठ चलाई; गोरा घायल हो गिर गाया। फिर वह दूसरेपर आक्रमण करना ही

चाहता था कि उसे गोली लगी और वह तत्काल शहीद होगया। वंचरी ग्राम निवासी जगदीश प्रसाद हाई स्कूलके एक छात्र थे वे अपने बोडिंग हाउसके वरामदेपर खड़े खड़े सब कुछ देख रहे थे। मार्टीन साहबकी पिस्तौलकी गोलीके वे शिकार हो गये। आप अस्पतालमें २० सितम्बरको स्वर्ग सिधारे। तत्काल शहीद होनेवालेमें और हैं महगू पासी, आलम गंज और जगन्नाथ राय पनेरी, सासाराम।

१५ अगस्तको थाना कांग्रेस कमिटीके मंत्रीके नेतृत्वमें आन्दोलन कारियोंको एक जत्था सवडिविजनल नहर औफिस पहुँचा। एस० डी० ओ० गायब थे। हेड किरानीने आन्दोलन कारियोको औफिसकी कुंजी दे दी। औफिसके कागजात निकाल लिये गये जिनमें आग लगा दी गयी। कागजके ढेरके जलनेसे जो लपटें निकली उनसे मकानमे आग लग गई। सारा मकान जलकर खाक होगया। वहाँसे भीड़ डाकघर पहुंची जहाँके पोस्ट मास्टरने जो कुछ कागजात थे सुपुर्द कर दिया, जो जला डाला गया। डाकघरपर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। औफिसमे ताला लगा दिया गया। सडकको वरवाद कर देनेकी भी कोशिश हुई। नहरवाली सडक काट दी गयी और विक्रमसे नासरीगज आनेवाली सड़कपर भी जगह-जगह वड़े-वड़े गढ़े खोद दिये गये। आबकारी महालकी दूकानोको भी वरवाद कर दिया गया। कछवामें ऐसी एक दूकानको वद कर दी गयी और डाकघरपर कब्जा किया गया।

नासरीगंज

डीहरी रेलवे स्टेशनकी वहुतसी चीजोमें आन्दोलन कारियोंने आग लगा दी। फरनीचरको तोड़-फोड़ दिया, तारको काट दिया, मालगुदामको लूट लिया। पुलिस और रेलवे कर्मचारियोंने लूटमें खूब हाथ वटाया। डाकघरपर भी लोगोंका धावा हुआ। कागजात जला दिये गये। टेलीफोनका कनक्शन काट दिया गया। डाकघरके खजानेके कुछ रुपये भी लूटे गये। नहर औफिसका मकान जला दिया गया। थानेके अन्दर साठ सत्तर जगहोपर तार और टेलीफोनका सम्बन्ध छिन्न भिन्न कर दिया गया। वॉक और करवदियाके पुल नष्ट कर दिये गये। पलेजाके पासकी रेलवे लाइन लग भग एक हजार आदमियो द्वारा उखाड़ दी गयी। वहाँ वावू कैलास सिहने भीड़पर गोली भी चलाई। अकोढ़ी, आयर कोठा और गोले, शरावकी दूकाने वद कर दी गयीं।

डीहरीथाना

नोखाके कार्यकर्त्ताओंने वावू रामजन्म राय एक हरिजन शिक्षकके नेतृत्वमें आरा सासाराम डि० वोर्डके मोकर तथा जखनीके पुलको तोड़ फोड़ कर गिरा डाला।

नोखा फिर जनताने रेलवे लाइनके तार तथा खभोंको खात्मा किया और रेलवेपर कब्जा जमाया। खाराडीह और सासाराम स्टेशनोंको वरबाद किया। उसी दिन विन्ध्येश्वरी लालजीके छात्रोका दूसरा दल किसनापुर नहर बगला और तहसील ऑफिसके कागजोंको जला आया। मकानपर काग्रेसका झंडा भी फहराने लगा। सासाराम थानेके मड़नपुर नहरके सैफन पुलको वरवाद कर दिया गया।

दिनारा दिनारामे जमरोढ़ नहर ऑफिसके कागजात जलाये गये और नहरके डाक वंगलाका कुछ सामान तोड़-फोड डाला गया।

१४ अगस्तको कुदरा थानाके कार्यकर्त्ता जुलूसके साथ डाकघर आये जिसके सामानको उनने तोड़-फोड़ दिया और फिर डाकघरको जला दिया। कुदरा स्टेशन

कुदरा को भी ऐसी ही दुर्गति की। कुदरा स्टेशनपर १७ गाठे कपड़ेकी थीं और घीके भी कुछ टीन थे। सब लूट लिये गये। फिर वे रेलवे लाइन उखाडनेमें जुट गये—वहाँ उनकी तादाद और बढ़ गयी। जब वे रेलवे लाइन उखाड रहे थे तब फौजी सिपाहियोकी एक पाइलट ट्रेन वहा पहुँची। उस परसे सिपाहियोने भीड़पर गोली छोड़ी, जिसके फलस्वरूप शकरो गॉवके एक अहीर जिनका नाम रामजन्म राय था तत्काल शहीद हो गए।

जहानावादमें कई जगह टेलीफोनके तार काटे गये। १६ अगस्तको पुन्पौली स्टेशनपर लोग रेलवे लाइन उखाड़ने और पानी कलको बरबाद करनेमें लगे हुए थे कि फौजी सिपाही आ पहुँचे और भीड़को भागते न देख उनने गोलियाँ चलाई। जिसके फलस्वरूप चार तत्काल शहीद हो गए—वीरकलाके बांका नोनियां, नसेज़के रघुवीर मुसहर और औरैयॉके दो जवान जिनमें एकका नाम था केशो कांदू।

१६ तारीखको दुर्गावती थानाके कार्यकर्त्ताओने डाकघरको जला दिया और शराबखानेको भी। वहाँसे स्टेशन एक मील दूर है, चार हजार जनता वहाँ जा

दुर्गावती थाना पहुँची और सुबहसे शाम तक स्टेशनके मकानात जलाती रही। स्टेशनसे ही उसे दो सौ टीन मिट्टीका तेल मिल गया और पचास टीन अलकतरा, तीन टीन मोम, इन चीजोंसे मकानातको सराबोर करके जनताने आग धधकायी। ऐसी भयंकर लपट निकली कि स्टेशन हातेके मकान सहित सभी चीजे नष्ट हो गयीं। कार्यकर्त्ता मुस्तैद रहे, ताकि कोई धेलेकी चीज भी घर न ले जाये। इसलिए लूट हुई ही नहीं। फिर लोग रेलवे लाइनको उखाड़नेमे लगे, उसी बीच मोगल सरायसे गोरे आये, भीड़ भागी, गोरोंने खदेड़ा। दुर्गावती नाला आड़े आया, लोग तो नाला

पार कर दरौली गांवमें जा छिपे, पर गोरे पार करते समय वेतरह फॅस गये। कमांडर तो डूब गया और बाकी ११ गोरोको दारोगाने वचा लिया।

गोली काण्डने गयाकी विद्रोह-भावनाको खूब उत्तेजित किया। दूकाने वन्द और तमाम हड़ताल। कॉटन और जूट मिल्सने जो हड़ताल की सो एक महीनासे ऊपर

गया रही। धर-पकड़ने भी जोर पकड़ा। तव कार्यकर्त्ताओंने शहर छोड़ देहात जानेका निश्चय किया ताकि गया जिलेका गाव-गांव व्रिटिश हुकूमतके खिलाफ उठ खडा हो। गया शहर फौजियोका अखाड़ा वन रहा था। तोड़ फोडके लिये वहा गुञ्जायश नहीं थी। तौभी शहरमें जहा-तहा टेलिग्राफ और टेलिफोनके सवन्ध छिन्न-भिन्न किये गये।

एक दिन श्री कुमार वीरेन्द्र वहादुर सिंहके यहां प्रमुख कर्मियोकी एक वैठक हुई जिसमें श्री विघ्नेश्वर मिश्र तथा श्री मिथिलेश्वरप्रसाद सिंहको जहानावाद सव-डिविजन, श्री तारकेश्वर प्रसाद तथा श्री व्रजकिशोर प्रसाद सिंहको नवादा सव-डिविजन, श्री मथुरानाथ तिवारीको औरगावाद सव-डिविजन और श्री शत्रुघ्न-शरण सिंह, श्री लालजी सहाय और डा० केशव प्रसाद सिन्हाको सदर सव-डिविजनका भार दिया गया। श्री 'खलिश' जी तथा अन्य लोगोको भी गया रहकर और कभी अन्य स्थानोंमे भी जाकर आन्दोलनको प्रगति देनेका काम सौंपा गया। पर इसी वीच शहरमे जो ८१ गिरफ्तारिया हुई उसके चपेटमें इनमेंसे भी कई कार्यकर्त्ता आ गये। चित्रगुप्त प्रेस और वम्वई प्रिटिङ्ग प्रेस भी जव्त कर लिये गये।

शेरघाटीमे छात्रोने तोड़ फोड़ शुरू किया। टेलिग्राफके तार काटनेमें उनने

सदर सवडिविजन काफी दिलचस्पी दिखलाई।

इमामगज, डुमरिया, गुरुआ और वाराचट्टीमे आवकारी महालकी दूकाने वन्द की गयीं। टेकारी, वेला और वजीरगजमे तार काटे गये। पटना गया लाइनका चाकन्द रेलवे स्टेशन सामान सहित जला दिया गया। कई जगह रेलकी पटरियॉ उखाड़ी गयीं। वेला स्टेशन भी तोड़ फोडका शिकार बना। रफीगंज और वारसली-गज भी अछूते न रहे। फल यह हुआ कि गयासे पटना, गयासे मोगलसराय और गयासे नवादाकी रेलवे लाइन लगभग एक महीना वन्द रही।

सड़कोका भी खूब तोड़ फोड़ हुआ। आगे-आगे सरकार खाई खन्दकोको भरती जाती और पीछेसे जनता उन्हें जरा और चौडी और गहरी खोदती आती। अन्तमें थक कर सरकारने नवादासे रजौली, गयासे नवादा, गयासे शेरघाटी और गयासे

डोभीकी सड़कोपर सात बजे शामसे पॉच बजे भोर तक जन साधारणका चलना फिरना बन्द कर दिया गया।

औरंगाबादमें तोड़ फोड़का संगठन अन्यान्य कार्यकर्त्ताओंके सहयोगसे श्री मथुरानाथ तिवारीने किया। तिवारीजीको पहले यह शका थी कि तोड़ फोडका

औरंगाबाद प्रोग्राम गांधोजी अथवा कार्य समितिसे अनुमोदित है वा नहीं, किन्तु काका कालेलकरका लेख पढ़कर उनकी शकाका समाधान हो गया और वे मुस्तैदीसे तोड़ फोड़में लग गये।

सर्व प्रथम हाई स्कूलके छात्रोने औररगाबाद शहरमे एक जबरदस्त जलूस निकाला और कचहरीकी प्रधान इमारतपर राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराया। जलूसके नायक श्री रामू पासी तुरत गिरफ्तार कर लिये गये। वहॉसे छात्रो और नागरिकोका सम्मिलित जलूस डाकखाना पहुँचा। डाकखानाके सामान वगैरह जलाना शुरू ही किया था कि वहाके एस० डी० ओ० ने ग्रैन्डट्रङ्क रोडसे गुजरतो हुई मिलिटरीको रोकवाया और उसकी सहायतासे भीड़को तितर बितर कर दिया।

दाऊदनगरके डाकखानेपर भी धावा हुआ और शराबकी भट्ठीमे आग लगाई गयी। इस अगलगीमें कई आदमी बुरी तरह जलकर घायल हो गये।

नबीनगर डाकखानेका सामान तोड़ फोड दिया गया और शराब-खाना बरबाद कर दिया गया।

रफीगंज थानेमे रेलकी पटरियॉ कई जगह उखाड़ी गईं। टेलिग्राफके तार भी काटे गये।

घोसी थानामें डाकखानेका फरनीचर तोड़ फोड़ दिया गया और कागजात जला दिये गये। वहॉकी कलालो भो नष्ट कर दी गयी। घोसी हाई स्कूलके हेड

जहानाबाद सबडिविजन मास्टर स्कूल छोड़कर स्वतंत्रता सग्राममे शरीक हो गये और बादको गिरफ्तार कर जेल भेज दिये गये।

साहो बीघा डाकघरका ताला तोड़ कर उसके कागज निकाले गये और फिर जला दिये गये। फरनीचर तोड़ फोड़ दिया गया। वहॉकी कलालो भी नष्ट कर दी गयी। हुलासगंज डाकखानेकी भी ऐसी ही दुर्गति हुई।

जहानाबादमें काफी तार काटे गये। मखदुमपुर थानेके शेरथुआ गॉवके लोगोने टेलिग्राफका तार काटा। टेहटा स्टेशनसे लगायत करगॉव तक रेलकी पटरियॉं उखाड़ दी गयीं तथा तार और खभोपर हाथ साफ किये गये।

नवादा सबडिविजन

नवादा लाइनकी रेलकी पटरियाँ उखाड़ी गयीं; तार काटे गये और १४ अगस्तसे ही रेलवे लाइन बन्द हो गयी।

वारसलीगंज रेलवे स्टेशनपर हमला हुआ और स्टेशनके कुछ सामान तोड़ फोड़ दिये गये।

सारनजिला

श्रीजगलाल चौधरी लिखते हैं, "१४ अगस्तको छपरा कचहरी स्टेशनपर पहुँचा। पर वहां टिकट घरपर पिकेटिंग हो रही थी कि टिकट न बिकने देंगे। बहुत समझाने पर भी पिकेटर लोगोंने राह न दी। मैंने सोचा कि गार्डसे कहकर गाड़ीपर बैठ लूंगा। पर गाड़ी आनेके पहले स्टेशनके सिगनलका लाल और हरा काँच लड़कोंने तोड़ डाला, तारके खंभोंपर चढ़ सभी 'इन्सूलेटर' फोड़ने लगे, पुलिसका जत्था आ पहुचा, पर लड़के डरे नहीं और अपना काम करते ही गये। पुलिसवालोंने भी अधिक जोर न लगायी। ट्रेन भी बहुत लेट थी, मुझे पता लगा कि छपरा स्टेशनपर गाड़ियाँ रुकी हुई है, क्योंकि वहा लोग गाड़ियोंको बढ़ने नहीं देते हैं। मैंने समझा कि अब तो रेलकी यात्रा न हो सकेगी। कुछ देर बाद भीड़ हटी, लड़के भी हटने लगे। पुलिसवाले भी हटे और सिगनल आदि मरम्मत होने लगे।" श्रीजगलाल चौधरीजीके वहासे हट जानेके बाद तोड़-फोड़ खूब जोरसे होने लगा।

छपराकचहरी

रेलकी पटरियाँ उखाड़ी जाने लगी। छपरा और छपरा कचहरी स्टेशनकी रेलवे लाइन उखाड दी गयी। सिगनल नष्ट भ्रष्ट कर दिये गये। 'लोकोसेड घर' छपरा कचहरी और छपरा स्टेशन जला दिया गया। पर छपरा स्टेशनका मकान पक्का था इसलिये बच गया। हा, उसके सामान जल गये। छपरा और सिवानके बीच और आगे माझी तकके स्टेशनोंको लोगोंने जला दिया। माझीका रेलवे डाकबगला भी जल गया। स्कूलों और कालिजको बंद कर अधिकारियोंने आशा की थी कि छात्रगण अपने घर चले जायेंगे। पर अधिकारियोंकी आशापर पानी फिर गया। दो तीन दिनके भीतर ही जिले भरके अधिकांश पोस्ट ऑफिस, सरकारी इमारते और डि० बोर्ड आदि कई मकान जलाये गये। रेलके अभावमे लोगोंको चलने फिरनेके लिए डि० बोर्डकी सड़कोंका आसरा था, सोभी जाता रहा। क्योंकि—सड़कोंको जगहजगह काट डाला गया। किसीको पता न लगा था कि वहा क्या हो रहा है। छपरेके वकीलों और मुख्तारोंने यह तय कर लिया था कि वे कचहरी न जायेंगे जब तक देशकी परिस्थितिमें सुधार न हो जाये। कचहरी उजाड़ हो गयी। चारों ओर भयावना मालूम होने लगा। सरकारी कर्मचारी लोग चुप चाप कचहरी जाते थे

और आप ही मुकदमाकी तारीख दे आते थे। साधन रहते हुए भी अधिकारी गण अशक्त हो रहे थे। मालूम होता था मानों सरकारको लकवा मार गया हो।

१५ अगस्तको श्री महेश्वरसिंहके नेतृत्वमें हजारों आदमी तोड़ फोड़का प्रोग्राम पूरा करनेके लिये निकले। इस जन समूहमें ऐसे लोगोंको कमी न थी जो इस लूट पाटको अच्छा समझ रहे थे। सबसे पहले रजिस्टरी औफिसमें स्वराजी ताला लगाया गया। उसके सामान जलाये गये और वहाकी तिजोरीको बाहर फेंक दिया गया। वहाँसे भीड़ रेलवे क्वार्टरोंकी ओर बढ़ी। जितने अर्ध गोरे थे भयसे भाग गये और मैगजीनमें जाकर छिप रहे। उनके घरको सूना पा चोर उचक्केकी मनोवृत्ति वाले उनमें जा घुसे और उन घरोंसे तिनका तिनका उठा ले गये। बरतन वासन, कपड़े लत्ते, अन्न पानी, पलंग-कुर्सी कुछ भी नहीं छोड़ा। उधर तो इस तरहकी चोरी छिपारी चल रही थी, इधर भीड़ रेलवे 'सेड'के सामान तोड़-फोड़ रही थी, हजारोंकी भोड़ इकट्ठी हो गयी थी। कितने रेलवे मिस्त्री श्री महेश्वरसिंहके सलाहकार ही नहीं बल्कि मददगार बन रहे थे। 'सेड' घरके ताले तोड़कर इंजन मरम्मत करनेका सारा सामान उठा लिया गया और उन्हीं औजारोंसे रेलकी लाइन उखाड़ दी गयी। नयी बनी हुई मोगल चैनल लाइन भी उखाड़ दी गयी और उसीमें इंजिन चला दी गयी, एक नहीं चार चार। एकके बाद दूसरी सिटी देती हुई आगे बढ़ी और धडाम धड़ाम गिरती गयी। वहांसे भीड़ मालगोदाम आयी। पुलिस वहाँ मौजूद और काफी तादादमें। पर वह चुपचाप सब कुछ देखती रही। मालगुदामसे लोग चावल, मकई, चना आदि उठाने लगे। चार डिब्बोंमे आग लगा दी गयी जिसमे सारे कागजात और रजिस्टर वैगरह स्वाहा होने लगे। अब पुलिस घबड़ायी, उनने अपनी बंदूके सभाली। लोग भागने लगे, पुलिसका साहस बढ़ा। वह निशाना लेने लगी कि श्रीमहेश्वर सिंहने भीड़को ललकारा, सबोंको डटे रहनेका आदेश दिया। हाँ, लुटेरापनकी निंदा की। लोग जम गये और पुलिसका साहस टूट गया। फिर लोगोंने पहाड़ी चकके नजदीकके पुल और लाइनको बरबाद कर दिया। दोपहर हो रही थी। लोग भूखे हो रहे थे इसलिए सबके सब घरको विदा हुये। कुछ तो बाजार होकर चलने लगे कुछ नीचे रेलवे लाइन होकर और कुछ प्लैटफार्म होकर। प्लैटफार्मपर चलने वाले लोग जब पानीके टंकीके पास पहुँचे तब पीछेसे एकाएक उनपर गोली छोड़ी जाने लगी। श्री महेश्वरसिंह रुक गये और घूम करके देखने लगे कि किधरसे गोली आ रही है। उनने हाथ उठाकर भागते हुये लोगोंको कहा—

सोनपुर प्लेटफार्म के तीन शहीद

शहीद तजम्मुल हुसेन,
सोनपुर
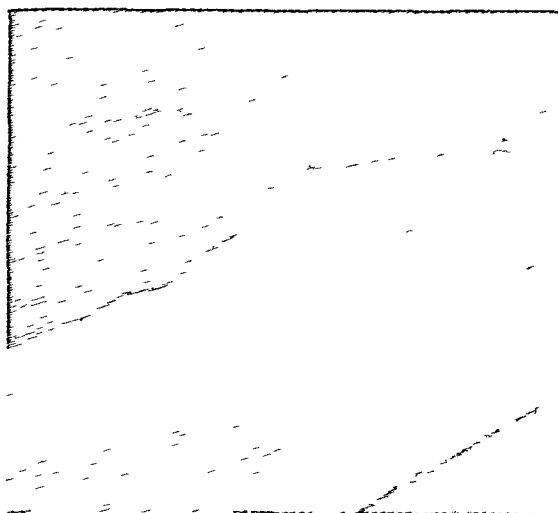
शहीद द्वारिका सिंह,
सोनपुर
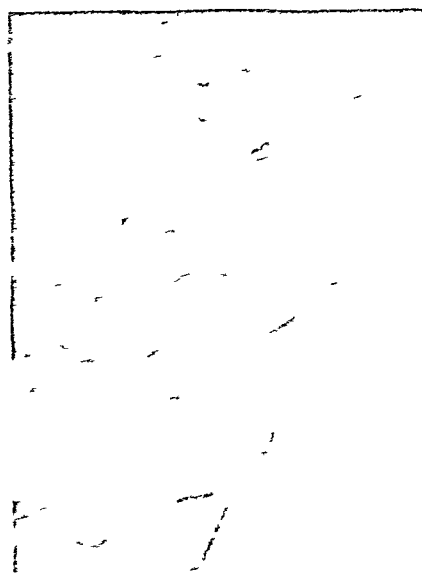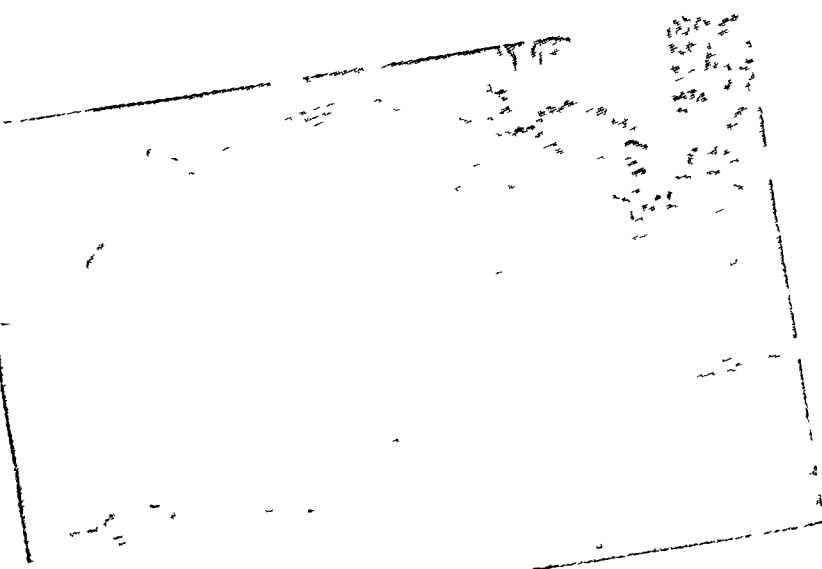
कोई न भागे हरेक आदमी डट जाय। उसी समय उन्हें गोली लगी, वे इन्कलाव जिन्दावादका नारा बुलद करने लगे। फिर एक एक करके दो गोलियाँ और लगीं जिससे वे तत्काल शहीद हो गये। साथ साथ जा रहे थे मौलवी तजम्मुल हुसेन। गोलीकी आवाज सुन प्लैटफार्मसे रेलवे लाइनपर वे आये थे ही कि उनके मर्मस्थानमे गोली धंसी और वे फौरन शहीद हो गये। श्री द्वारिकासिंहको सख्त चोट आयी थी; पर थे वे जिन्दे थे इसलिये लोग उन्हें दवा दारूके लिये नावसे पटना ला रहे थे कि गगाकी गोदमे उनका स्वर्गवास हो गया। लोग उन्हें वापस सोनपुर ले आये जहा तीनों शहीदोंकी अर्थिया साथ साथ निकली। अपूर्व दृश्य था। हिन्दू मुसलमानोके जलूस साथ साथ चल रहे थे और हिन्दू-मुसलमानके जनाजे भी साथ साथ ले जाये जा रहे थे। एक ही जगह तीनोके सस्कार हुये अपने अपने ढग से; पर एक ही भावनासे प्रेरित होकर। इस गोलीकांडने लोगोंको अजीब ढंगसे उत्तेजित कर दिया। कुछ नासमझ लोग ईसाइयोंकी कब्रगाहमें घुस गये। मकबरेको तोड़ने लगे और गड़ी लाशोंको उखाड़ फेंकनेकी कोशिश करने लगे।

लोगोंने पलेजाघाट और बनवारचकमे चीनी वैगरह जो माल मिला सो लूट लिया। जेटिया डुबा दीं। शीतलपुर स्टेशनको जनताने जला दिया। अगल-बगलकी रेलवे लाइन उखाड़ फेंकी। दिघवारामे तार काट फेका गया और रेलवे लाइन छिन्न-भिन्न कर दी गयी।

बनियापुरमे १५ अगस्तको बाबू शीतलसिंह, फुलेना त्रिपाठी, श्री गोपाल त्रिपाठी के नेतृत्वमें एक जलूस डाकखाने पहुँचा, लोगोंने वहाँके तार काट डाले और सारे फरनीचर और कागजात इमारत सहित जला दिये। वहाँ रामपुर कोठी है हथुआ राजकी। उसका प्रबन्ध सरकारके हाथमें है। वहाँ काफी अन्न था जिसे लोगोंने सरकारी माल समझकर लूट लिया। लहलादपुर, दयालपुर और सहाजीवपुरके डाकघर जला दिये।

एकमाके कार्यकर्त्ताओंने रेलकी पटरियां उखाड़ दीं, परिणाम स्वरूप जब पलटनकी गाड़िया वहां पहुँचीं तो आगे बढ न सकीं और रातभर उन्हें एकमा एकमा स्टेशनपर रुकना पडा। उन्हें भोजनकी जरूरत हुई। पुलिसके लाख सर पटकनेपर भी एकमा बाजारसे कोई चीज पलटनोंके लिये नहीं मिल सकी, दूसरे दिन लाइन मरम्मत करती हुई वह गाड़ी आगे बढ़ गयी। दूसरी गाड़ी आयी, उसे भी रुकना पड़ा क्योंकि फिर लाइन तोड दी गयी थी।

उसे भी रात भर एकमा ठहरना पड़ा, जहां बाजारसे उसे कुछ नहीं मिला।

डिष्ट्रिक्ट बोर्डकी सडकें भी तोड़ दी गई। छपरासे और सिवानसे आनेवाली सड़कोंपर जो प्रमुख पुल थे तोड दिये गये। बादको एकमा और चैनमा स्टेशन जला दिये गये।

दाउदनगर स्टेशनसे गोरोंकी एक गाड़ी जा रही थी। एक जगह भीड़ देख उसने गोली चलाई और फागूगीर तथा कामतागीरको मार डाला। फिर तो लोग उबल पड़े। और मांझीके कार्यकर्त्ताओंने तोड़-फोड़को उग्र रूप दे दिया। एक ही दिन वे रेलवे स्टेशन डाकबंगला, डाकखाना आदि स्थानोंमें गये और कमरेमें घुस-घुसकर उनके कागजात उनने निकाले, फरनीचरका ढेर लगाया और सबमें आग लगादी। उनने मकानोंको भी जला दिया, मुस्तैद रहे, ताकि इन संस्थाओंकी चीजें जलनेसे बची न रहें। सरकारी अमले खड़े-खड़े तमाशा देखते रहे, उनमेंसे किसीको चूं करनेकी भी हिम्मत नहीं हुई। वहाकी रेलवे लाइन भी हटा दी गयी थी, तार भी काट दिये गये थे, इसलिये रेलका आना-जाना एकदम बद हो गया था।

मांझी

गरखा थानेके आन्दोलनका नेतृत्व श्रीजगलाल चौधरीके हाथ था। वहॉं सगठित रूपसे तोड़-फोड़का काम हुआ। छपरे और मढ़ौरेसे आनेवाली सड़कें जगह-जगह काट दी गयीं और डाकखाना वंदकर दिया गया। हां, डाकखानेमे जितनी चिट्ठिया थीं और मनिआर्डर थे, सभी पानेवालोंके घर पहुँचा दिये गये।

गारखा

१५ अगस्तको मढ़ौरा स्कूलके छात्रों और आस-पासकी जनताने पोस्टऑफिसके कागजात जला डाले और फरनीचरको तोड़-फोड़ दिया, तार काटकर तार-घरको वरबाद कर दिया। फिर वे मालगोदाम रेलवे स्टेशन आये जहॉंकी वहुतसी चीजोंको जला दिया। मढ़ौरामे सारन इन्जीनियरिंग वर्क्स है जहॉं लड़ाईके वहुतसे सामान वनते थे और लड़ाईके लिये कारीगरोंको शिक्षा भी दी जाती थी, इस कारखानेपर चढ़ाई करके आन्दोलनकारी चाहते थे कि उसको नेस्तनावूद करदे। अधिकारी वर्गको इसका अन्दाज लग गया था, इसलिए उसने कारखानेकी हिफाजतके लिए १५ हथियारवद सिपाही मंगा रखे थे, साथमे थे एक डिप्टी मजिस्ट्रेट। इसलिए आन्दोलन कारियोंने पहले थानापर कब्जा करके कारखानेपर चढ़ाई करनेकी योजना वनाई।

मढ़ौरा

परसा

१५ अगस्तको थानेपर झंडा फहराकर परसाके कार्यकर्त्ताओंने डाकखानापर कब्जा किया। बादको डि० बोर्डकी सडकोंके प्रधान प्रधान पुल तोड डाले गये। टेलिग्राफके तार और खभे बेकार कर दिये गये। १८ अगस्तको पता लगा कि रेवा घाट होकर मुजफ्फरपुरसे मिलिटरी आ रही है। खबर पाते ही झुड-के-झुड लोग भाला, गड़ासा और गुलेल वगैरह लेकर नारे लगाते हुए रेवा घाट पहुँच गये। वहाँ मालूम हुआ कि घाटपर जो सामान उतरा है, उसे एस० पी० ने परसाके दारोगाके वास्ते भेजा है। तुरत सामानकी तालाशी ली गयी, एक बक्साके अन्दरसे राइफलकी एक हजार गोलियां और कितने ही छर्रे निकले, लोग भडक उठे और सभी सामानको गडक नदीमें बहा दिया।

मशरक

मशरक थानेमें राजापट्टीसे लेकर मढ़ौरा तक जगह ब-जगह रेलकी पटरियां उखाड़ फेंकी गयीं और तार काट डाले गये। बादको मशरक थाना और डाकघरमे ताला लगा दिया गया। फिर काफी संख्यामें लोगोंने रेलवे स्टेशनपर धावा किया। कल-पुरजे और कागजातको बरबाद कर दिया, फिर स्टेशनमें आग लगा दी।

सिवान सबडिविजन

१४ अगस्तको ११ बजे दिनमे शहीद छट्टू गीर और शहीद झगडू रविदासकी लाश अस्पतालसे मिली। शहरके सब सडकोंमे लगभग दो हजार लोगोंने सजधज कर उनका जलूस निकाला। श्मशानसे लौटकर डी० ए० वी० कालिज ग्राउन्डमें शोक सभा मनायी गयी। उसी दिन सध्या समय बाहरसे कुछ कार्यकर्त्ता आगये। दूसरे दिन हाई स्कूल होस्टलके पुराने हातेमे सभा हुई। दस बजे एक जलूस निकला जो सिवान स्टेशन आया, वहाँ तार काट डाले और स्टेशनके कमरोंमें ताले लगा दिये और मकानपर झडे फहरा दिये। वहाँसे लोग पोस्ट ऑफिस आये और उसपर झडा फहराकर जब उसका ताला तोड़ने लगे तब एस० डी० ओ० हथियार बद पुलिस लेकर वहाँ आ धमके और तुरत लाठी चार्जका हुक्म दिया। लोगोंको काफी चोट लगी। जिनमे बाबू नन्दकिशोर नारायणजीका नाम उल्लेखनीय है।

बसतपुर

बसतपुरकी जनताने निश्चय किया कि योगापुर कोठीके साहबको हटा दिया जाय। उस निश्चयके अनुसार काफी सख्यामें लोग वहाँ गये। बीच-बीचमे जो गाव मिलता वहाँ सभा करते और कुछ लोगोंको शामिल कर लेते। कोठीके कर्मचारियोंने लोगोंको रोका पर लोग कोठीपर चढ़ गये और वहाँ झंडा

फहरा दिया। फिर उनने साहबसे कहा कि आप भारतसे चले जाइये। पहले तो साहब तने रहे पर जब अपार जनताका रुख देखा तब घबड़ा गये, फिर गांधीकी जयजयकार करते हुए उनने जनतासे कोठी खाली करनेके लिए एक सप्ताहकी मोहलत मांगी। जनता विदा हो गयी पर जाती-जाती कोठीकी काफी चीजे बरबाद करती गयी। बादको कुछ लड़कोने मशरक और सिधौलिया जाकर रेलवे लाइनको उखाडा, तार और टेलीफोनको खराब कर दिया।

१५ अगस्तको रजिस्टरी औफिसमे ताला लगा दिया। बादको गोरोका आगमन रोकनेके ख्यालसे डि० बोर्डकी सड़के काट डालीं।

दरौली

१८ अगस्तको दरौली आश्रमपर लोग इकट्ठे हुये जिनमेसे कुछ लोग एक दल बनाकर मैरवा चले गये और कुछ लोग वहीं रह गये, जिनमे छात्रोंकी काफी तादाद थी। ये सभी रजिस्टरी औफिस आये और वहाँके कागजात इकट्ठे करके जला दिया। मकानमें भी आग लगा दी पर पक्काका मकान था इसलिये नुकसान न हुआ। बादको उनने डाकखानेपर चढ़ाईकी और उसके कागज-पत्रको जला दिया। फिर उनने जहाज घाटके स्टेशनको जला दिया। वहाँसे चलकर उनने डि० बोर्डके ओवरसियरके औफिसको जला दिया।

मैरवा

मैरवाके कार्यकर्त्ताओने रेलवे लाइन हटायीं, तार काटे, फिर मैरवा स्टेशनका सारा सामान तोड़-फोड़ डाला। बादको भाटा पोखर स्टेशन जला दिया गया। सिगनलकी पॅखियां नोच डाली गयीं। झरही नदीमें रेलवेका जो पुल है, सो जला दिया गया। मैरवा स्टेशनका रेलवे गोदाम लूट लिया गया। जब लोग स्टेशन लूट रहे थे उस समय पुलिसने कोई चारा न देख गोली चलायी, जिससे रामदेनी मारे गये। ठेपहॉ ग्रामके सामने सोनामें जो पुल है उसमें आग लगा दी गयी और डि० बोर्डके सड़कोको कई जगह काट दिया गया। जगल पांडेयने कुछ कार्यकर्त्ताओंकी मददसे एक माल गाडीपर कब्जा किया जिसके सहारे भाटा पोखर तथा मैरवाके बीचकी रेलवे लाइन छिन्न-भिन्न कर दी गयी।

सिसवन

श्री जगलाल चौधरी लिखते है:—"सिसवनके निकट लगभग पॉच बजे सध्याको पहुॅचा तो देखा कि कुछ लड़के तारके टुकड़े लिये आ रहे हैं। वे मुझे पहचानते न थे। मैंने उनसे पूछा कि वे कौन है, तार कहाँ पाये और कहॉ ले जायेगे। मालूम हुआ कि वे सिसवन स्कूलके लड़के हैं, उन्होने तार इसलिए काट डाले कि कहीं खबर न जाने पावे। सब तार अपने घर ले

जाकर घरके कामोंमें लायेंगे। मैंने उन्हें समझाया कि समाचार रोकनेके लिए तार काट डालना तो ठीक है। पर उन्हें अपने घर ले जाना और अपने काममें लाना चोरी है। अतः उन्हें उचित था कि सब तार नष्ट कर डालते ताकि वे समाचार भेजनेमें फिर काम न लाये जा सकें। लड़के मेरी बात समझ गये और निकटके नदीमें सारे तार फेंक दिये। इसके बाद उनने मेरा नाम और पता पूछा—नाम जानकर मेरी जयजयकार करते हुए घर चले गये। सिसवन पहुँच कर मैंने देखा कि लोग डाक बंगला दखल किये बैठे हैं। उन्होंने मेरा अच्छा स्वागत किया और कहा कि वे थानोंको दखल करना और जला देना चाहते हैं। मैंने उन्हें समझाया कि दखल तो करना चाहिये, पर उसे दखल करने वे ही जायं जो प्राण दे सकें, क्योंकि सरकार आसानीसे अपना थाना दखल करने नहीं देगी और हमलोगोंको अस्त्र-शस्त्रका प्रयोग करना नहीं है। हमारी लड़ाई तो अहिंसक है। अब रही जलानेकी बात। थानेको जला देना भी मैं अनुचित नहीं समझता, पर यह खतरनाक इसलिए भी हो कि गांव भी जल जा सकते हैं। कमसे कम थानेके कर्मचारियोंकी सम्पत्ति तो जरूर जल जायगी और वे कर्मचारी भी कहा रहेंगे। इससे अच्छा यह होगा कि कर्मचारियोंका वासस्थान छोड बाकी मकान और उसमेंके सामान तोड़-फोड दिये जायं। लोगोंने मेरी बात मान ली। मैं थानेवालोंसे कुछ बातें करना चाहता था पर वे आये नहीं। मैं तो उनसे नौकरी छोडनेकी अपील करता, पर वे डर रहे थे, अत मुझे निराश होना पडा।"

बादको सिसवन थाना बरबाद कर दिया गया और डाकघरपर भी कब्जा कर लिया गया।

रघुनाथपुर

१६ अगस्तको थानेके अन्दरके टेलीग्राफके खंभे और तारको वहाकी जनताने तोड-फोड़ फेंका था। लोग डाकघरको पहले ही बन्द कर चुके थे। हां, पत्र वा मनिऑर्डरकी डेलिवरीका इन्तजाम कर रखा था।

महराजगंज

महराजगजके कार्यकर्त्ताओंने तोड-फोडके कामोंको आगे बढ़ानेके लिए एक अलग ध्वसात्मक कमिटी बना रखी थी। १६ अगस्तकी घटना है। इस कमिटीकी ओरसे एक बडा जुलूस निकला जो थाने आया और उसपर झडा फहरा कर उसे दखलमें लानेकी कोशिश करने लगा। थानावालोंने जन समूहसे दो घटेका समय मागा, कहा कि तब आप लोगोंकी जो आज्ञा होगी हमलोग करेंगे। जुलूस घूमा और निकटके डाकखानापर पहुँचा। लोगोंने डाकखानेपर राष्ट्रीय झडा

\1711(

फहराया और जो कागजात मिले सबको अलग हटाकर जला दिया। डाकखानेके और सामान भी जला दिये गये। वहाके तार भी तोड़ दिये गये। वहांसे लोग रेलवे स्टेशन पहुंचे, जहा उनकी सख्या काफी बढ़ गयी। लोगोने वहाँ झंडा फहराया और फिर स्टेशनके मकानमे आग लगा दी। वहाँके सारे सामान जल गये। स्टेशनपर इंजिन खड़ी थी जिसे लोगोने बुरी तरह बरबाद कर दिया। वहॉसे सभी रजिस्टरी औफिस आये। उसपर भी झंडा फहराया गया और अपना ताला लगा दिया गया। बादको डि० बोर्डका मकान दखलमे लाया गया और उसपर कांग्रेसका झंडा फहरा दिया गया। फिर जुलूस थानेकी ओर मुड़ा।

१६ अगस्तको कुचायकोटके कार्यकर्त्ताओने सासामुसा और जलालपुरके रेलके तारोको काट दिया और कुछ खभोको बरबाद कर दिया। फिर १८ अगस्तको बहुतसे लोग सासामुसा स्टेशनपर इकट्ठे हुए और स्टेशनको जला दिया। बहुत दूर तक रेलवे लाइनको छिन्न-भिन्न कर दिया। टेलीफोन और तारके लाइनोको खराब कर दिया। फिर दाहा नदीपर जो रेलवेका पुल है उसे तोड़नेकी पूरी कोशिश की। मगर नाम लेने भरको ही कामयाबी मिली।

गोपालगंज सबडिविजन

मीरगज थानेमे श्रीरामनगीना रायने अगस्त क्रान्तिकी आग सुलगायी और फिर श्रीप्रभुनाथ तिवारीके साथ मिलकर आदोलनकारियोका संगठन करने गये। हथुआ हाई स्कूलपर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया और विद्यार्थियोने हड़ताल मनाई। स्कूलके अधिकारियोने झंडा हटा दिया और फिर आज्ञा दी कि हथुआ राजके कर्मचारियोके लड़के स्कूल आया ही करे। हथुआ राज छोटा है पर उसपर अग्रेजी हुकूमतको छाप खूब पड़ी है। उसके अमलोकी हरकतसे छात्रोमे जोश फैल गया वे स्कूलमे घुस गये। स्कूलके कीमती फोटोको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और स्कूलमें काफी नुकसान पहुंचाया। फिर उनने डाकखानेके तार काट फेके और खभोको उखाड़कर तोड़ दिया। अब हथुआ दुनियासे अलग होगया और वहॉसे लडके तोड-फोड़के काममें शरीक होनेको सिवान रवाना हुये।

मीरगंज

बरौली छोटा थाना है और सोया रहता है पर अगस्तकी क्रान्तिमें इसने भी करवट ली और कारण बना विद्यार्थियोका प्रचार। इनका एक जलूस दक्षिणसे निकला और बरहीमा पोस्ट औफिसको दखल कर लिया। उसके कागजात नन्हकू दुबे और श्रीजमुना तिवारीके जिम्मे रहे। कुछ दूरपर पी० डब्लू० डी० का डाकबगला था। उसको दखलमे लाकर काग्रेसका दफ्तर बना दिया।

बरौली

कटेया

कटेया थानामें डाकघर वद्कर दिया गया और उसमें कांग्रेसका ताला लगा दिया गया। मकानपर झंडा फहरा दिया गया। लोगोंने करीव चार मील तक तारके खमे उखाड़ दिये और तार काट डाले। लोगोंको आतंकित करनेके लिए पुलिसवालोंने हल्ला करा दी कि छ आदमीके नाम वारट है। इस वातको सुनकर हजारो आदमी इकट्ठे होगये, जिनके सामने उनलोगोंको मालाये पिन्हायी गयीं और उनकी आरती उतारी गयी, जिनके नाम वारट कट जानेका संदेह था। लोगोने वहुत देर तक पुलिसकी प्रतीक्षा की पर जव वह न आयी तव खुद छ आदमियोंको थाना पहुँचा दिया, फिर लोगोंने हथुआ राजकी मालगुजारी और सरकारकी चौकीदारी वद करनेका निश्चय किया।

वैकुंठपुर

१५ अगस्तसे १७ अगस्तके भीतर रेल और तारके लाइन और सड़क वरवाद की गयी, कई पुल भी तोड़ डाले गये, १८ अगस्तको राजापट्टी डाकखानेपर दो जत्थोंने एक साथ धावा किया, औफिसके कुछ कागजात जला डाले गये और औफिसमें ताला लगा दिया गया। जव भीड़ कुछ आगे वढ़ी तव वावू राजेंद्रप्रसादके अमलोने स्वयंसेवकोको लाठियोंसे पीटा। उन्हें डरानेके लिए कोठीसे झूठी फायरिंग भी की गयी।

मुजफ्फरपुर

मुजफ्फरपुर शहरमें तोड फोड़का कोई खास काम नहीं हुआ। जहाँ-तहाँ टेली-फोनके तार काटे गये और जी० वी० वी० कालिजके भी कुछ कागजात वरवाद कर दिये गये। १४ अगस्तको शहरमें गुरखे, वलूचो और गोरोंकी फौज पहुच गयी। फलत अन्दोलनका क्षेत्र शहर छोड़ देहात वन गया।

मुफस्सिल

मुजफ्फरपुर मुफस्सिल थानेमे काटी स्टेशनपर एक वार और तोड़ फोड़ हुआ। १५ अगस्तको जिस रेलवे लाइनको अधिकारियोंने मरम्मत करवा लिया था उसे आस पासके गाववालोंने फिर छिन्न भिन्नकर दिया। उन लोगोने रेलोंको हटाकर इधर उधर फेक दिया और पटरियोंको उखाड़ कर जला दिया। फिर उनने काटी डाकघरको वन्द कर दिया। यद्यपि रत्नपूरा, सेरना, ढेमहां, कुसी और काटीके कितने ही यहाके तोड़ फोड़में शामिल हुए; लेकिन सवसे ज्यादा वहादुरी दिखलायी काटीके चतुर्भुज प्रसादने, जिनने जोशके साथ काम किया और शानके साथ सव जगह कवूल किया।

पारू

पारू थानेमे मुजफ्फरपुरसे रेवा जानेवाली सड़कमे सरैयाका पुल तोड़-फोड़का शिकार वना। तिलविस्ता, पगहिया, रेपुरा और

बसतपुरमे सड़कें काटी गयीं। टेलीग्राफके तार भी काट दिये गये।

सकरा थानामें नेपडी नामका एक गांव है। इस गांवके निवासियोने तोड़-फोडके कामोको खूब आगे बढ़ाया। पूसाके कार्यकर्त्ताओंके साथ मिलकर पूसा कृषि क्षेत्रके सामानादिको नष्ट किया और पूसा स्टेशनके पासकी रेलेवे लाइन उखाडी।

सकरा

श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद सिह उर्फ कुवरजीके नेतृत्वमें सकरा हाई स्कूलके विद्यार्थियो और जनताका एक जलूस निकला, जिसने सबसे पहले रजिस्टरी आफिसपर कब्जा किया, तार काटे, इनसूलेटर फोड़े और रेलवे लाइन उखाड हटायो। दूसरा जलूस जगदीशपुर पद्यनगरीके विद्यार्थियो और जनताका था, जिनने सिलौत स्टेशनपर धावा किया। स्टेशनके सारे सामान बरबाद कर दिये। लाइन उखाडो, तार काटे और रेपुरा गावके पासके एक रेलवे पुलको तोड़ दिया। बखरी, रैती, ईंटहा, डबहा आदि ग्राम वासियोका तोसरा जलूस ढोली कोठोपर चढ़ आया। कोठीके मालिक मि० डैनबीने आत्म समर्पण कर दिया। सोनवरसा स्कूलके विद्यार्थियो और जनताने सोनवरसाके जबरदस्त पुलको बरबाद कर दिया। एक जलूस पिलखी, बेझा, सकरा, सिमरा, पीअर आदि ग्राम वासियो तथा नरसिहपुर खादी भंडारके कार्य कर्त्ताओंका निकला। जिसने पोस्ट आफिसके तार काटे और स्टेशनके पासकी रेलकी पटरियॉं उखाड़ीं। इस जलूसके लोगोके सरपर बहुत देर तक हवाई जहाज मड़राता रहा। पर लोगोका हाथ रुका नहीं; तोड़ता फाड़ता ही रहा।

मीनापुर थानेमें तोड़ फोड़ आकर्षक रहा मुख्यतः विद्यार्थियोंके लिये। १५ अगस्तको उनने रामपुरहरिके डाकघरपर धावा बोल दिया। रुपये लूटे, कागज जलाये और पोस्ट-मास्टरको अपने घर विदा कर दिया। उसी दिन शाम को एक बड़ी भीड डिस्ट्रिक्टबोर्डका पुल तोड़नेके लिये रामपुरहरिके स्कूलके पास इकट्ठी हुई। तोड-फोड होने लगा। इसी समय लॉरीपर अमरीकन सैनिक वहां आ पहुचे। उनने भीड़को हट जानेके लिये कहा। जवाबमे भीड़की ओरसे कुछ रोड़े चले। बस। उधरसे तुरत बन्दूके गरज उठीं। श्री विसुनदेव, पटवा रामपुरहरिके, रमण राय, छपराके, और किशोर शाही रामपुरके शहीद हुए।

मीनापुर

थाने भरमें इस गोलीकाण्डकी खबर पहुच गयी। १६ अगस्तको सभी कांग्रेस अधिकारी घटनास्थलपर पहुचे और मामलेकी पूरी जाच करके उनने एक शोक-सभा बैठाई और शहीदोको श्रद्धाजलि अर्पित की।

कटरा थानाके कार्यकर्त्ताओंने औराई-कटरा रोडको वरैठा और औराईमें काट दिया और सिंहवारा-कटरा रोडका एक पुल बुधवारामें नष्ट कर दिया। मुजफ्फरपुर-दरभंगा सडकको भी लोगोंने दुर्गम बना दिया।

कटरा

साहबगंजके कार्यकर्त्ताओंने साहबगंज-मोतीपुर सड़कका पुल जो राजेपुरके पास हैं तोड दिया। फिर देवलिया रोडको काट दिया। उनने नारायणी नदीके बांधपर पेडोंको काट गिरा दिया।

शाहबगंज

सीतामढ़ीमें कई जगह रेलकी पटरियाँ उखाड़ दी गयीं। तार तो काफी काटे गये। एक रुपौलीमें ही ५०० गज तार काटा गया। १४ अगस्तको जो गाड़ी सीतामढ़ी आयी सो तब तक नहीं गयी जब तक एमरी साहबके शब्दोंमें भारतको फिरसे नहीं जीता गया। स्टेशनपर सीतामढीके लोगोंकी खास नजर रही। पानीकी टंको फोड़ दी गयी। इंजिनको बेकार कर दिया गया। सरकारी डाक बँगलेको भी नुकसान पहुँचाया गया। केवासीके निवासियोंने डिस्ट्रिक्ट-बोर्डकी सड़कको एक जगह इंच इंच जमीनके बराबर कर दिया और उसपर पानी पटा पटाकर वहाँ दलदल बना दिया। पथपाकरके ग्रामीणोंके लिये तार काटना सामुहिक खेल सा हो गया था। एक दिनमें बरियारपुरसे सीतामढ़ी स्टेशन तकके तार उनने काट गिराये। तारके खंभे भी उखाड़ गिराये। इन्सुलेटर फोड़ डाले।

सीतामढ़ी सबडिविजन

१७ अगस्तको लोगोंने यहाँ तोड़-फोडका काम शुरू किया। तार काटे, रेलकी पटरियाँ उखाड़ीं, सडकें काटीं और पुल तोड़े। १७ तारीखको ढेग स्टेशनपर धावा हुआ और कुछ तोड़-फोड भी। थाना काँग्रेस कमिटीके मंत्री श्री रामपरीक्षण सिंहने एक जलूस लेकर रीगा फैक्टरीपर धावा किया। फैक्टरीकी कुछ चीजें भी लोगोंने लूटीं। मोकराहा कोठीपर भी गाँववालोंने चढ़ना चाहा पर काग्रेस कार्यकर्त्ताओंने वैसा करनेसे उन्हें रोक दिया।

मेजरगंज

एक दिन सीतामढ़ीके एस० डी० ओ० गोरी पलटनके साथ बैरगनियाँ जा रहे थे। रास्तेमें मेजरगंज पडता था वहाँ पहुँचते ही १० हजार आदमी लाठी सोंटा लेकर इनका मुकाबला करनेको तैयार हो गये। एस० डी० ओ० ने और स्थानीय कार्यकर्त्ताओंने उन्हें काफी समझाया बुझाया तब लोग उनकी राहसे हटे।

बेलसंड थानेमें यों तो १० तारीखसे ही तार काटना शुरू हो गया था, पर यातायात भंगका काम १६ अगस्तसे जोर पकड़ने लगा। बेलसंड-सीतामढ़ी, बेलसंड-परसौनी, मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी, बेलसंड, सईदपुर आदि

बेलसंड

सड़के कई जगह काट दी गयों और कई जबरदस्त पुल भी बरबाद हुए।

वैरंगनियां

१७ अगस्तसे वैरगनियाँ में रेल तारका उखाड़ना काटना शुरू हो गया। एक हफ्ता तक वैरंगनियाँ होकर रेलगाड़ी गुजर न सकी।

सुरसंड

सुरसंडके कार्यकर्त्ताओने डिस्ट्रिक्ट बोर्डके कुछ पुल तोड़ दिये और उन सड़कोसे सवारीका आना जाना असंभव-सा हो गया। लोग पोस्ट औफिस गये और तार काट आये। आबकारी विभागके कागजात जला दिये गये। भट्ठी खानेके पीपे तोड डाले गये और शराबकी बिक्री बन्द कर दी गयी। काजी हाउस जिसे फाटक भी कहते है तोड़ दिया गया।

शिवहर

१४ अगस्तसे शिवहर थानेमें तोड़ फोड़ शुरू हुआ। सड़के कटीं, पुल टूटे और शिवहरसे परसौनी तक तारका नामो निशान न रहा।

हाजीपुर सवडिविजन

हाजीपुर थानेमें १३ अगस्तको ही बिद्पुरके स्टेशन मास्टरको खबर दी गयी कि लाइन उखाड़ी जा रही है। ट्रेनको लाइन क्लियरकी (Line clear) सूचना न दे। मगर उसने ऐसा नहीं किया। और ट्रेन बिद्पुरके पास ही लाइनसे हट गयी। जमीनमें उसका पहिया धस गया। खैरियत हुई कि कोई हताहत नहीं हुआ। उसके बाद तो ट्रेनका आना जाना बिलकुल रुक गया। और कई जगह लाइन उखाड दी गयी। तार काटना, तारके खभे गिराना तो खेल सा हो गया।

इधर देहातमें घूम घूम डाक्टर गुलजार प्रसाद, प० जयनन्दन झा, श्री विन्ध्य-वासिनी प्रसाद सिंह और इस थानेके प्रमुख कार्यकर्ता श्री चन्द्रिका झा, अक्षयवट राय जनताको जगा रहे थे। फलस्वरूप १४ अगस्तको कई हजारका जत्था विद्पुर रेलवे स्टेशनपर आ धमका। स्टेशन जला दिया गया। लाइन मरम्मत करनेवाले कुछ मिस्त्रीलोग आये जरूर। मगर तूफानमें उनका भी होस ठिकाने न रहा। लाइन तब मरम्मत करनेके बजाय उसे बरबाद करनेवाले सामान देकर ही वे चले गये। एक अधिकारीने ही टेलिफोनकी औटो मशीन स्वयंसेवकोको देदी थी जो बादमें पुलिसके भयसे बरबाद कर दी गयी। विद्पुर पोस्ट आफिसपर भी रेड किया गया। विद्पुर स्टेशन जानेवाली सडक जो ३२ फोट चौडी थी काटकर बन्द कर दी गयी।

हाजीपुर शहरमे छात्रोंमें काफी जोश था। हाई स्कूलके शिक्षक श्री अक्षयकुमार सिंह इस्तीफा देकर उनका नेतृत्व कर रहे थे। १४ अगस्तको छात्रोंका एक जलूस

हाजीपुर शहर स्कूल पहुँचा। इस जलूसमें पं० चन्द्रभूषन तिवारी और अक्षय बाबू भी शामिल थे। अक्षय बाबू चाहते थे कि स्कूलके कागजात बरबाद हों प शान्ति नष्ट न होने पाये। और हुआ भी ऐसा ही! स्कूलके सारे कागजात जला दिये गये और कोई दुर्घटना नहीं हुई। दूसरे दिन कुछ लोग हाजीपुर रेलवे स्टेशनपर टूट पड़े। स्टेशनपर खड़ी एक पैसेञ्जर ट्रेनकी इजिनको लोगोंने तोड़ फोड़ कर बेकार कर दिया। एक फर्स्ट क्लास और एक थर्ड क्लासके डब्बोंको भी तोड़ ताड़ दिया। उनने टिकट आदि सामान लूट लिये और जला दिये। उसके बाद माल गाड़ियोंकी बारी आयी। घटों डब्बोंको तोड़-तोड़ कर लोग हजारोंका सामान लूट-लूट कर घर भरते रहे। एक बार एक हवाई जहाज बहुत नीचेसे मड़राता हुआ आया। लोग भागने लगे मगर बिना कुछ किये जब वह लौट गया तो लोग फिर निर्भय होकर लूट पाटमें जुट पड़े। एस० डी० ओ० को खबर मिली तो वे भी मोटर लेकर आये पर दृश्य देख चुप-चाप लौट पड़े। वहाँका लूट पाट खत्म कर लोग दूसरे जलूसमें शामिल हो गये जो जेल तोड़ने आ रहा था।

जलूसके जेलके पास पहुचते ही जेलके भीतर और बाहर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' 'जेलको तोड़ दो' के नारोंसे आसमान फटने लगा। जेलके भीतरके वार्डरको मुरेठेसे बाध लिया गया। बाहरके वार्डरको फाटकपरसे हटा कर जलूसने उसी जगह एक खभेसे बाँध दिया। फिर लक्खी नारायणजी विद्यार्थी और अन्य जवान फाटकके तालेपर हथोड़ीकी चोट करने लगे। कुछ ही चोट खानेके बाद तालेने मुँह बा दिया। फिर पचासों आदमी जेलमें पिल गये। एक एक करके सारे कैदी निकाल लिये गये। एक औरत भूलसे छूट गयी और एक जरनेली कैदी निकलनेसे इनकार कर बैठा। निकलने वालोंमें प्रमुख थे डा० गुलजार प्रसाद, स्वामी जगन्नाथानन्द, श्री राजेश्वर पटेल, श्री जगन्नाथ प्रसाद साहु, श्री गणेश महतो और केदार सिंह आदि।

वहाँसे चलकर लोग पोस्ट ऑफिसपर जा चढ़े। थोड़ा बहुत तोड़-फोड़ हुआ। फिर गोली चलने लगी। लोग तितर-बितर हो गये। कोई मरा नहीं। हा, बुझावन दुसाधको काफी छर्रे लगे।

१६ अगस्तको हजारोंकी तादादमें दियारेके लोग हसिया और बोरा लिये शहरमें टोलिया बाध-बाधकर आने लगे। अक्षयबाबू स्वयं-सेवकोंके साथ घूम-घामकर आगन्तुकोंको समझा-बुझाकर रवाना करने लगे मगर शहरको छोड़कर

लोग कोनहाराघाटपर लगी मालगाड़ियोंपर हाथ साफ करने लगे। स्वयं-सेवकोंकी रोकनेकी सारी कोशिशे वेकार गयीं। सारा माल जिसमें अनाजकी मात्रा अधिक थी लोग लूट-पाटकर ले गये।

गोरौलके कार्यकर्त्ता डाकघर और रेलवे स्टेशनपर एक साथ चढ़ आये। उनने वहाँकी खिड़कियाँ तोड़ दीं, शीशे फोड़ दिये, तार काट दिये, और कागज, टिकट वगैरह बरबाद कर दिये। बिजली पाण्डेयकी प्रेरणासे भगवानपुरमें तोड़-फोड़ शुरू हुआ। भगवानपुर स्टेशनके दोनो ओरकी रेलकी पटरिया उखाड दी गयीं और रेल हटा दिये गये। मुजफ्फरपुरसे दो डब्बोमें मिस्त्री लोग रेलवे लाइन बनाते आये। उनलोगोने भी भगवानपुरके विद्यार्थियोको चुपकेसे कहा कि हमलोग जब लाइन मरम्मत करके चले जायं तब आपलोग फिर तोड़ दीजियेगा। विद्यार्थियोके आग्रह करनेपर उनने कुछ रिच वगैरह भी दिये और उनका उपयोग भी सिखला दिया। फिर तो तोड़-फोड़के काममे लोगोकी इतनी दिलचस्पी वढ़ी कि कुछ पूछिये नही। सैकड़ोकी संख्यामें लाइन उखाड़ रहे थे और कुदालसे जमीन भी खोद खोदकर गड्ढे बनाते जा रहे थे। हवाई जहाज आया और सरपर मडराने लगा। सबलोग निश्चित काममें लगे रहे। हवाई जहाज चला गया। पर फिर लौटा और फिर मडराकर चला गया। इस तरह वह कई बार आता जाता रहा। एकवार कुछ सन जलाकर भी भीड़मे फेका, पर लोग निर्भीक हाथ पैर चलाते रहे और काम खतम करके ही वहाँसे हटे।

महुआ

सराय स्टेशनकी भी बहुत अशोमे भगवानपुर स्टेशन जैसी दशा हुई।

महनारके विद्यार्थियोके एक जलूसने महनार बाजारसे स्टेशन तक यानी चार मीलके तार तोड़ फेके और महनार रोडकी रेलवे लाइन उखाड दी। श्रीविन्ध्यवासिनी सिंह, श्री चन्द्रदीप वर्मा, श्री जगदौन पटेल और श्रीपरशुराम झाके नेतृत्वमें देशरी डाकघर और स्टेशनपर रेड हुये। तार काट फेका गया और रेलकी पटरियां उखाड फेंकी गयीं। श्रीविन्ध्यवासिनीसिंह, श्रीसूर्यदेवसिंह और श्रीरामप्रसाद ठाकुरने अपने साथियोके सहयोगसे स्टेशन जानेवाली सडकके एक वड़े पुलको तोड दिया।

महनार

अपने शहीदोंके खूनकी गरमी लिये लालगंजने तोड़-फोड़में हाथ दिया। सराय और भगवानपुर रेलवे स्टेशनोपर वहांके लोग आ चढ़े। कागज-पत्रोको जलाया, टिकटको जलाया और वहुसी चीजे वरवाद कीं।

लालगंज

वहाँ-रुपये पैसे जो मिले सो उनने ले लिये। लालगंजके टेलिफोनका तार काट डाला गया फिर मुजफ्फरपुरसे हाजीपुर जानेवाली सडक काट दी गयी और पेड काट उसपर गिरा दिये जिससे वह जाम हो गया। रेलवे लाइन भी एक जगह तोड दी गई।

पातेपुर

पातेपुर थानाने १३ अगस्तसे ही तोड़ फोड़ शुरू किया पर १४ अगस्तको इस काममें अपनी पूरी ताकत लगायी। यहा ढोली और पूसा रोडकी सडक काट दी गयी और बाजिदपुर डाकघरपर भी हमला हुआ। वहांका लेटर बक्स फेक दिया गया। बहुआरा कोठीके खिलाफ प्रदर्शन हुआ और उसे नुकसान पहुँचानेकी कोशिश की गयी।

अगस्त अनन्दोलनमें चम्पारणने जो स्थान प्राप्त किया है, उसका श्रेय अधिकांशमें गोविन्दगंज थानाको मिलना चाहिये।

चम्पारण

वहा तोड़ फोड शुरू किया अरेराज स्कूलके छात्रोने। उनने स्कूलमें ताला लगा दिया और तार काटनेमे लग गये। फिर तो बेशुमार जनता इनमें शामिल हो गयी जिसका संचालन गोविन्दगंजके मंजे हुये कार्यकर्त्ता करने लगे जिनके अगुआ थे श्री रामर्पिदेव। काफी दूर तक तार कटे और तारके खभे उखाड़ दिये गये। डाकखाना वन्द कर दिया गया और इतना प्रचार किया गया कि तहसील कचहरियोंमें सन्नाटा छा गया। फिर सुगौली गोविन्दगंज, बेतिया-मलाही और मोतिहारी-संग्रामपुरकी सडकोको जगह जगह काट दिया गया। कई पुल भी तोड डाले गये और सडकपर कहीं कहीं पेड भी काट कर गिरा दिये गये जिससे रास्ते दुर्गम बन गये।

मधुवन थानेमें डिस्ट्रिक्टबोर्डकी सडक जगह व जगह काट दी गयी। मेहसी रेलवे स्टेशनके अगल बगलके तार काटे गये और तारके खभे गिरा दिये गये। १८ अगस्तको स्टेशनपर लोगोने धावा बोल दिया। बहुतसे सामान तोड़ फोड़ दिये गये और बहुतसे जला दिये गये। २३ अगस्तको लोगोंकी एक बड़ी तादाद रेलवे लाइन उखाड़नेमें लग पडी। लोग दिन दहाड़े रेलवे लाइन उखाड रहे थे और सर पर हवाई जहाज मडरा रहा था। जबतब हवाई जहाज गोता लगाता और लोग झुक जाते पर निर्भीक फिर रेलोका अलग करनेमें जुट जाते।

सुगौली

सुगौलीमे १३ अगस्तको इञ्जिन और रेलवेका सामान नुकसान किया गया। १५ अगस्तसे सुगौली सेमरा स्टेशनके बीच 'चारमहल पुल' परसे लाइन तोडनेका काम आरम्भ हुआ। उसी दिनसे सड़के भी कटने लगीं और तार भी

कटने लगे। और २४ अगस्त तक तोड़ने काटनेकी रफ्तार जारी रही। फलतः सुगौली और सेमराके बीच तीन माइल तककी रेलवे लाइन छिन्न भिन्न हो गई और लाइनका बांध तक ढाह दिया गया और जहां तहां गड्ढे खोद दिये गये। सुगौलीसे सेमरा तकके तार गायब हो गये। तीन पुल बरबाद कर दिये गये। डिस्ट्रिक्ट बोर्डकी सड़कके भी तीन बड़े बड़े पुल तोड़ डाले गये। मोतीहारी, बेतिया, छपरा, अमवा और रक्सौल गोविन्दगंजकी सड़कोपर जगह जगह खाई खोद दी गयी।

सुगौली रमगढ़वा रेलवे लाइन भी कई जगह छिन्न भिन्न हुई और तार नष्ट।

आदापुर आदापुर थानेके कार्यकर्त्ताओने आबकारीकी दूकान बन्द करदी और डाकघर, राजकचहरी और रेलवे स्टेशनपर झंडे फहराये। फिर रजिस्टरी आफिसमें ताला लगा दिया। इसी बीच वहां ढाका और घोड़ासाहनके छात्र आये।

छौड़ादानो वहां डैनवी इस्टेटके मैनेजरके सामानमे उनने आग लगा दी और राजकचहरीके कागजातको भी जला दिया। फिर वे रेलवे स्टेशनको ओर मुड़े जहॉके सामानको उनने तोड़ फोड़ दिया।

उसी दिन कुछ लोगोने आदापुरकी रेलवे लाइन उखाड़ हटाई और तार काट फेंका।

रक्सौलमे १२ अगस्तसे तोड़-फोड़ आरम्भ हुआ। सुगौली-रक्सौलकी सड़कमें

रक्सौल रमगढ़वाके पास जो नौकठवा पुल है उसे तोड़नेकी कोशिश की गयो; कई जगह सड़क भी काट दी गयी। रेलवे लाइन छिन्न-भिन्न कर दी गयी और तार काटे गये।

घोड़ासाहनमें छात्रोने अपने स्कूलको बन्द करवाकर रेलवे स्टेशनपर हमला

घोड़ासाहन किया। उनने स्टेशनपर खडी एक रेल गाडीपर दखल जमायी। गार्ड साहबके हैटको हवामें उछाल उन्हें गाधी-टोपी पहनायी और वन्देमातरम् का नारा लगवाया, फिर उनने स्थानोय मिशनपर चढ़ाई की। मिशनके मकानके शीशे तोड़डाले, फरनीचर तोड़ फेके। एक लड़केने ५००) की एक थैली उठाली पर उसे पादरी साहबको वापस करवा दिया गया, हां उनकी घडी और फाउन्टेनपेन हजम हो गयी।

ढाका थानेमे फूंक-फॉकका जरा जोर रहा। १८ अगस्तको आबकारी महाल

ढाका का दफ्तर फूंक दिया गया और नहर विभागके दफ्तरकी भी वही दशा हुई। दूसरे दिन डाकघर और रजिस्टरी ऑफिसपर आन्दोलनकारियोके धावे हुये और दोनोमें ताले लग गये।

सिकटा

सिकटा स्टेशनके पासकी रेलवे लाइन उखाड़ दी गयी और थोडी दूर तक रेलवेका तार काट दिया गया।

मनाटांड़

मनाटांड थानेमें गोखुला सिकटा स्टेशनके बीच मरयदवा गावके नजदीक रेलकी पटरियाँ उखाड फेंकी गयीं और तार काट दिये गये।

शिकारपुर

गोखुला नरकटियागज स्टेशनके बीच पण्डयी नदीके पुलपर भी लाइन उखाड दी गयी। ठोरी लाइनमें भी तरहरवा बेरियाके नजदीककी रेलवे लाइन उखाड दी गयी। शिकारपुर स्टेशनपर कुण्डियाकोठीके साहबका हैट उतरवाया गया। उसे वाध्य किया गया कि वह गांधी टोपी पहन झंडा हाथमें ले काग्रेमकी जय-जयकार करे।

मझौलिया

वगहा

मझौलिया थानेमें बेतिया-मोतीहारी सडक गयी है उसपर सेखवना पुल है जो तोडा गया। जगह-जगह सडक भी काटी गयी। सुगौली और मझौलिया स्टेशनके बीच परसा गांवके नजदीक रेलवे लाइन उखाड दी गयी और तार काटा गया। राज-पाटका पुल भी तोडा गया। वगहा डिस्ट्रिक्ट वोर्डकी सडकको मझौआगावके आमपास कई जगह तोड दिया गया।

केशरिया

केशरिया और राजपुर तक टेलिग्राफके तार काट-फेके गये। और केशरिया डाकघरका काम रोक दिया गया। वहांका लचका पुल तोड दिया गया और रजिस्टरी ऑफिसमें काग्रेसका ताला लगा दिया गया।

बेतिया

कुमारवागके नजदीक बेतिया-चनपटियाके बीचमें १३ अगस्तसे १७ अगस्त तक रेलकी पटरिया उखाडी जाती रहीं। चौथाई मील तकके तार साफ हो गये। कुमारवागके नजदीककी एक पुलकी पटरिया उखाडकर जला दी गई। सेरणवनाके नजदीक डिस्ट्रिक्ट वोर्डकी सडक काट दी गयी।

दरभंगा जिला

१४ अगस्तसे लहेरियासराय (दरभंगा) में खुले आम रेल तार काटे जाने लगे। सडकें भी काटी जाने लगीं। उनपर पेड काट काट कर गिराये जाने लगे। रेलवे कर्मचारियोंसे रेलकी पटरिया और तार काटनेमें बडी मदद मिली। स्टेशनके दोनो ओरकी रेलवे लाइन काफी दूर तक बरबाद कर दी गयी। जब तब पुल तोड़ते हुये लोगोंपर पुलिस और गोरे टूट पड़ते, गोलिया छोड़ते पर अगल वगलके मकईके खेतोंमें लोग दौड कर छिप जाते और मैदान साफ देख निकल पडते और फिरसे तोड़ने फोड़नेमें लग जाते। सडकें भी कट कट कर दुर्गम हो गयीं थीं और उनपर जनताका कठोर पहरा किसी गाड़ीको अछूता न जाने देता था।

समझिये, दरभंगेको कलक्टरी कैद हो गयी थी। पर उस गाढ़े अवसरपर डाक्टर यदुवीर सिंह सरकारी डाक लेकर आते जाते, गान्धी टोपी पहने हुये, कांग्रेसी झंडा अपनी मोटरपर फहराये हुये। कुलानन्द वैदिक और कर्पूरी ठाकुरके नेतृत्वमें सिघवाड़ा की तरफ भी तोड फोड़के काफी काम हुये। डाकखाना जला दिया गया, यूनियन बोर्ड जला दिया गया। चौकीदारों और दफादरोंकी वरदी पेटी जलाई गयी।

महम्मदपुरकी ओर जो लाधाका पुल है उसको तेल छिड़क कर चतुर्भुज राय आदि कार्यकर्त्ताओंने जला दिया। काठका पुल धाँय धाँय दो दिनों तक जलता रहा। घाटकी नाव डुबा कर इन सबने उधरका रास्ता बन्द कर दिया। रहिका रोडके पुलपर भी लोग टूट पड़े। पुल चरमरा गिरा। बहुतसे लोग नीचे आ रहे, पर सख्त चोट किसीको न आयी। स्वामी पुरुषोत्तमानन्द वगैरहने तारसराय स्टेशनसे पच्छिम रेलवे और जिला बोर्डकी सड़कके पुलोंको बरबाद किया, पर उधर लूटकी प्रवृत्ति जगी देख आगे न बढ़ अपने आश्रम मकरमपुर लौट आये। सचमुच तार-सरायके कुछ लोग स्टेशनपर पड़े हुये चीनीके बोरोंके लूटनेमें लग गये। सागरपुर आश्रमके शिवनारायण मिश्र उन्हें रोकने दौड़े। मालूम हुआ जैसे लोगोंने उनकी सुन ली। पर रातको पूराका पूरा गोदाम लूट लिया गया, जहा दो हजार बोरे चीनीके थे। मिश्रजी लिखते है—"मुझे इस घटनासे बड़ी तकलीफ हुई। मैंने स्वामी पुरुषोत्तमानन्दसे कहा कि यदि लोग लूट पाटमें लग जायेंगे तो मकसदसे दूर चले जायेंगे। इसलिये इसे तो तुरत रोकना चाहिये। इसपर हम दोनोंने साइकिल उठाई और उन लोगोंकी ओर चल पड़े जहाके लोगोंने लूट पाट की थी। वहाके लोगोंसे बातचीत की। उनने महसूस किया कि हमने गलती की है। और बचन दिया कि आगे इस तरहकी घटना अब नहीं होगी। उसी दिन मालूम हुआ कि दस बारह बोरे चीनी सकरीमें लूट लिये गये है और आज सकरी मील लूट लेना चाहते है। मै नरपत नगरसे लाइन पकड़ कर सकरी स्टेशनकी ओर चला। रास्तेमें कुछ लोगोंके हाथमे बोरा और डंडा आदि देखा। वे लोग संभवत. सकरीकी ओर चीनी लूटनेके खयालसे ही जा रहे थे। मैंने उन लोगोंको समझाया और डॉटा भी कि इस तरहकी हरकत नहीं होनी चाहिये। सकरीके लोगोंको समझाया कि आज जब देशके लोग स्वराज्यके लिये अपना खून दे रहे हैं उस समय सकरीके लोग लूटपाटमें लगे हो यह कितना घृणित काम है! लोगोंने इसे महसूस किया।"

ता १५, १६ अगस्तमे कहीं कहीं पुलिसकी पैट्रोलिङ्ग शुरू हो गयी थी। ता १९ को ऐसा ही पुलिसका एक जत्था सकरीमें एक डिपटी मजिष्ट्रेटके मातहत आया। स्वामीजीकी मददसे कुछ युवकोने दो राइफल छीन ली। एक राइफलकी संगीनको श्री हातिम अली निकाल भागे और चर्खासघ खादी भण्डारमें छिपा रक्खा, जहा वह काम करते थे। ता: २० को दो मोटरपर सेलेसवरीकी अध्यक्षतामे कुछ टौमी बन्दूककी खोजमें सकरी खादी भण्डारके सामने आये। सशस्त्र फौजको देखकर भण्डारवाले डर गये और अन्दर घुसकर किवाड़ बन्द कर ली। टौमियोंने अन्दर जानेके लिये किवाडको कई बार धक्का लगाया। उसके नही खुलनेपर उत्तर तरफसे जो आगनमें जानेका रास्ता था उसकी किवाडकी जंजीरको गोलीसे तोडकर वे सब अन्दर घुस गये। हातिमअली और कैलास विहारी मिश्रने पच्छिम वाले घरकी किवाडको भीतरसे दाव रखा था क्योंकि उसमे सिटकिनी नहीं थी। उस किवाड़पर सेलेसवरीने धक्का मारा और झोकमें उन दोनोके ऊपर जा गिरा। हातिम खाके हाथमें संगीन थी जिससे तुरत उनने सेलेसवरीपर वार किया। सेलेसवरीको घाव लगा पर वहुत मामूली। उसने उसी सगीनको छीन कर हातिमखां पर प्रहार किया और उठकर उन दोनोंपर जो अभी भी पड़े हुये थे फायर करनेका आर्डर दिया। कई गोलियां चलीं। हातिमअली तो तत्काल चल वसे पर कैलास बाबू घायल होकर वेहोश थे। होश होनेपर उनने पानी मांगा किन्तु उन्हें पानी नहीं दिया गया। सारी खवर मुझे अपने आश्रममें मिली। मैं साइकिल ले सकरी पहुँचा। पहले जाकर डा० घोषसे मिला जिसने सेलेसवरीकी मरहम पट्टी की थी। उन्होंने सव समाचार वतलाया। उसी समय दरभगाके पुलिस इन्सपेक्टर संयोगसे आ गये। मैंने लाश लेनेका जिक्र किया। उन्होने कहा—लाश दरभगा चलनेपर मिलेगी। वाहर होकर मैंने देखा लाश पेटीमे वन्द करके मोटरपर लादी जा रही है तव वहा लाश लेने की कोशिश छोड दी। ' 'दूसरे दिन हमलोगोने मातम मनाया और प्रभात फेरी की।

केउटी, भरतपुर, छोटाईपट्टी आदि गावकी ओर भी तोड फोडके काफी काम हुये। उधरके अगुआ थे श्री नारायण दासजी और रामबहादुर सिंह। इधरके ही लगभग ५० जवान गौसा रोडको वरवाद कर रहे थे कि पता चला एक डिपटी मजिस्ट्रेट सकरी वन्दूक केस और तारसराए चीनी लूट केसकी तहकीकातमें घूमता हुआ इधर आया है। तुरत कई जवान छुटे और रोड छोडकर भागते हुये

मजिस्ट्रेट साहबको गिरफ्तार कर लिया। रातभर वे स्वराजी हिरासतमें रहे बड़े आराममे। सुबहमे देश सेवाकी प्रतिज्ञा करवा कर उन्हें छोड़ दिया गया।

महम्मदपुर स्टेशनपर भी तोड़ फोड़ वालोकी चढ़ाई हुई। उनने स्टेशनके सामान नष्ट कर दिये कागजोंको फाड़ डाला। तार काट फेका और रेलवे उखाड़ कर हटादी। उनकी चपेटमे रेलवेके दारोगा साहब आगये। वे कैद कर लिये गये और उन्हे मार्च कराकर स्वराजी हाजत ले जाया गया। पर जब उनने सरकारी नौकरीसे इस्तीफा लिख दिया और काग्रेसकी मातहती कबूल की तब छुटकारा मिला।

बहेड़ीके कार्यकर्त्ताओने उमाकान्त चौधरीके नेतृत्वमें वहाँके डाक बगलेपर कब्जा कर लिया। डाक बगला उनका कैम्प हो गया। फिर उनने डाकघरको बन्द कर दिया। मधुरपुर डाकघरके सुकन दुसाध और भागवत गहलोतने नौकरीको लात मार दी। हायाघाटका डाकघर जला दिया गया।

फिर पुल तोड़े जाने लगे; सड़के काटी जाने लगीं। पधारी दसौता और रमौली और आसपासके पुल तोड़ दिये गये। छतौरीमें मालसे भरी हुई डेगी डुबा दी गयी।

खरारी तोड़ फोड़का जबरदस्त सेन्टर रहा। वहा पासमें हथौड़ी कोठी है जिसकी मेम मालकिनकी हिफाजतके लिये एक दर्जन सिपाही रख दिये गये थे। वहांके डाकघरपर जब स्वयसेवक झडा फहराने गये तब सिपाहियोने तीन स्वयंसेवकोंको गिरफ्तार कर लिया। खरारीकी श्री जानकी देवी पहले अकेली वहां गयीं, सिपाहियोमें जोश भरा तब साथियोको बुलाकर बड़ी फुरतीसे डाकघरपर झंडा फहरा दिया और लगे हाथ बारहो सिपाहियोके लाठी मुरेठे स्वयसेवकोसे छिनवाती आयीं। इन स्वयसेवकोमे तीन गिरफ्तार शुदा स्वयसेवक भी थे। लहेरियासरायसे हथौडी जानेवाली सड़कको भी बरबाद कर दिया गया।

बहेड़ावालोंने डाकघरका काम बन्द कर दिया और सकरी तकके तारपर हाथ साफ किया। सडक भी जहा तहा काटे और पुल तोड़े।

बिरौल थानेमे सुपौल और रसियारी तोड़ फोड़के केन्द्र रहे। रसियारी राज-ग्रूपपर पण्डित लक्ष्मन झाने अपने साथियो सहित कब्जा जमाया। तहसीलदार खुद वहाका कुछ कागज पत्र जला कर भागा। ग्रूप जो राज दरभंगाका था, जनताके कब्जेमें रहा जिसके अगुआ श्री कनकलाल झा थे। सुपौल वालोंने रुपये-पैसेके कागजको सुरक्षित छोड़कर बिरौल डाकघरके और सारे कागजात जला डाले। नवटोलके पुलको भी उनने तोड़ दिया।

कमतौल स्टेशनपर छात्रोंका प्रदर्शन हुआ। स्टेशनके अधिकारी शान्त रहे। इस-लिये तोड़-फोड़ विशेष नहीं हुआ। फिर भी कमतौलके अगल-बगलके तार गायब

जाले

होगये। कुछ खभे झुक गये और कुछ जमीनपर लेट गये। रेलकी पटरिया भी उखड़ीं। जब अधिकारियोंके पास खबर पहुची तो उनने लहेरियासरायसे एक डिपटी मजिस्ट्रेटको हथियार बन्द पुलिस देकर भेजा। १४ अगस्तको मजिस्ट्रेट साहब कमतौल आये और रजिस्टरी आफिसमें डट गये जहाँ उनके साथके सिपाही हथियार चमकाने लगे। मगर हथियार देख कमतौलके छात्र हटे नहीं। छात्रोंको तो वह बड़ा खूबसूरत दीखता है। वे सिपाहियोंके पास आये और उनसे कामकी बात करने लगे। श्री अभयचन्द्र विद्यार्थीने तो देशके नाम उनसे ऐसी जोरदार अपील की कि सिपाही श्री रामवदन सिंहकी भारतीयता जाग पड़ी। उनने कहा—मैं अब देशकी सेवा करूंगा। इस हथियारसे क्रान्ति दबाऊँगा नहीं बल्कि क्रान्तिको जगाऊँगा। मगर अहिंसात्मक युद्धमें राइफलका क्या उपयोग होता? अभय-चन्द्रजीने कहा कि हथियारकी बात छोड़िये अभी आप हमारा साथ दीजिये। तुरत रामवदनजी स्वयसेवकोंमें मिल गये। पर अपनी देशभक्तिके कारण वह शीघ्र पकड़ लिये गये और एक सालके लिये जेलके मेहमान बने।

मधुबनी सबडिविजन

मधुबनीको अपना जोर अजमानेका मौका ता १४ को ही मिल गया। आन्दोलनकारियोंने १६ हथियार बन्द पुलिसको ट्रेनसे जयनगर जाते देख लिया। फिर क्या था? उनने ट्रेनसे इञ्जनको अलग करके उसको रेलसे नीचे गिरा दिया। तार काट दिये और पटरिया भी हटा दीं।

वेनीपट्टी थाना वालोंने डाकघरके कागजपत्रोंको जला दिया, तार काट दिये और रजिस्टरी आफिस जला दी। चर्खासघके श्री रामदेव ठाकुर और उनके साथियोंने जलानेमें पूरा हाथ बटाया।

खजौली

१३ अगस्तको खजौली रजिस्टरी औफिस और पोस्ट ओफिसपर झडे फहराये गये जिस मौकेपर सीताराम सिंहको पुलिसने पकड़ लिया। १४ अगस्तको ठाहरका रेलवे पुल तोड दिया गया और कई रेलें भी उखाड दी गयीं। फिर तार काट दिये गये जिसमें पॉच-छ सौ व्यक्ति लग पडे थे। उस रातको नराढमें डि० बोर्डका पुल तोड दिया गया। १५ अगस्तको कलुआहीसे उत्तर एक पक्का पुल तोडा जा रहा था उसी समय मधुबनीके एस० डि० ओ० की मोटर जयनगरसे वापस आरही थी। लोगोंने उस मोटरको बुरी तरह तोड़ दिया और ड्राइवरको साथ लेगये

और खिला पिलाकर विदाकर दिया।

मधवापुरने ब्रह्मपुर, विहारी वगैरहके पुल तोड़े। वासुकीमे सड़क काटी। डाक घर और आवकारी दफ्तरमें ताला लगा दिया। मधेपुर हाई स्कूलके विद्यार्थियो और अन्य नवजवानोने झंझारपुर स्टेशनके तार काटे और वहाकी रेलकी पटरियां हटा दीं। वलभद्रपुर, वेलौंचा, कछुवी और गगापुरके पुलोको तोड़ दिया। दीपबस्तीके पासका रेलवे पुल भी तहस नहस कर दिया। लौकही थानेमे आवकारी दफ्तरका सामान नष्टकर दिया गया। डाकघरकी चीजे लूट ली गयीं।

फुलपरासके नवयुवकोने घोघरडीहा और पिरोजगढ़के बीचका तार काट दिया। ब्रह्मपुरके पश्चिम एक पुलको तहसनहस कर दिया गया। और रजिस्टरी ऑफिसपर तिरगा झंडा फहरा गया।

समस्तीपुर अगरेजी सरकारके अड्डोपर और जूट मिलपर झडे फहराता समस्तीपुर सबडिविजन रहा। ता १४ को उसने उन अड्डोका काम बन्दकर देनेकी कोशिशमे बिताया। ता॰ १५ को वहाँ एक लोमहर्षक घटना होगई जिससे सारा प्रान्त क्रुद्ध हो उठा। बरौनीकी ओरसे गोरोकी स्पेशल ट्रेन आयी जो समस्ती-पुर जंकशनपर रुकी रही। स्टेशनपर लोगोने उनके डब्बेको घेर लिया और 'अगरेजो! भारत छोड़ दो' का नारा लगाना शुरू किया। गोरे शान्त रहे। किन्तु स्टेशनके अंगरेज अधिकारी बिगड़कर गोरोको कुछ समझाते रहे। उनकी गाड़ी जब स्टेशनपर खड़ी थी तब दो तीन गोरे आगे बढ़कर रेलवे गुमतीपर आगये थे और दोनो ओरके फाटकोको बन्दकर रखा था। फाटक होकर जानेवाला रास्ता बड़ा चालू रास्ता है। इसलिये गुमतीके दोनो ओर लोगोकी काफी भीड़ इकट्ठी होगई थी। भीड़के कुछ लोग फाटकको बन्द रखनेवाले गोरोको देखते और तरह तरह के नारे लगाते। गोरे उन्हे खदेड़ते और जिस तिसपर कोड़े भी फटकारते। कुतूहलका वातावरण था; क्रोधका नहीं। इसी बीच स्टेशनपरसे वह स्पेशल गाडी छुटी और गुमतीपर पहुँची। गोरोने फाटक खोल दिया और अपनी गाडीपर फाद चढे। भीड़ खूब नारे लगाने लगी और गाड़ीके नजदीक आ गई। इतनेमें एक सोडावाटरका वोतल उसके पास गिरा और उसके बीचसे एक सज्जनने उन गोरोकी गाड़ीपर ढेला फेका। समस्तीपुरके एक कम्यूनिष्ट कार्यकर्त्ता जो उस सज्जनकी बगलमें खड़े थे, कहते हैं कि वह गेरुआ पहने था और ढेला फेक फौरन चंपत हो गया। उस ढेलेके वाद कई ढेले फटा फट ट्रेनको लगे। ट्रेन फौरन चली पर

गोरोंके कमाण्डरने तत्काल सीटी बजाई और उस चौराहेकी भीड़पर और उन रास्तोंपर जिनसे साढ़े बारह बजे दिनको मजदूर और विद्यार्थी और बेशुमार अनजान गुजर रहे थे दौड़ती हुई गाडीसे बडी बडी गोलिया दगने लगीं।

गोलिया पेड़ोंकी डाल फाड खाने लगीं। एक पक्की दीवार छेदती गयी और दोयम मुन्सिफके रसोइयाकी जान ले बैठी, दूसरीने उनकी माको घायल कर दिया और तीसरीने उनकी गायका वध किया। एकने घटनास्थलसे काफी दूर जाकर कचहरीमें खड़े हुए एक मामलतीका सफाया कर दिया। और एक एक ग्यारह बरसके लड़के अब्दुल सकूरकी जानले उड़ी और एकने रामलखन सिंह नामके एक छोटे विद्यार्थीका काम तमाम किया। फिर कितने तो मकई और राहरके खेतोंमें हताहत हुये। कमसे कम इक्कीस मरे और सख्त घायल हुये लगभग पचास। लोगोंका कहना है कि ड्राइवर ट्रेनकी रफ्तार तेज न कर देता तो उन गोरोंकी गोलियां और गजब ढातीं।

इस गोलीकाण्डने शहरको गरमा दिया। वकील सघके सभापति श्री शिवेश्वर प्रसादने सघकी ओरसे अधिकारियोंके यहा इस गोलीकाण्डका तीव्र प्रतिवाद लिख भेजा और १५ दिन तक अदालत न जानेकी सूचना दी। शामको शहीदोंका एक शानदार जलूस निकला। साथमें गायकी लाश भी थी। सात बजे मिडिल स्कूलके मैदानमे विराट सभा हुई जिसमे सर्चलाइटके सम्पादक मुरली मनोहर प्रसादका भाषण हुआ। इस गोलीकाण्डने समस्तीपुर इलाकेमें तोड़ फोड़के कार्यक्रमको काफी ताकत पहुँचाई। चारों ओरके लोग शहीद हुये थे, यथा लोकनाथपुरके वासुदेव झा, पुनासके पूना महतो, रानीपुरके नौबतलाल झा, जितवारपुरके बदन राम, दुधपुराके बचन भेड़िहर और शिवनन्दन पाल, दौलतपुरके देवनारायण उर्फ सूर्य्य देव प्रसाद, रानीटोलाके सूबालाल झा, भमरूपुरके घूरन चौधरी, पोखरैराका मीर अब्दुल्ला, किसनपुरके बैजनाथ राउत, मूसापुरके शिवशकर लाल, माहेसरके रामदेव झा, काशीपुरके राम सेवक राउत और रानीटोलाके बुटाई महतो आदि। इसलिये चारो ओरसे लोग सरकारके खिलाफ उठ खडे हुये।

"१५ अगस्तको", डाक्टर मुक्तेश्वर प्रसाद सिह एल० एम० पी० लिखते हैं, "ताजपुर हाई स्कूलके हातेमें सभा हुई, मैं सभापति था। सर्व श्री छितनू सिंह, ताजपुर रामेश्वर सिंह, अब्दुल जलील और भोला प्रसाद मोजूद थे। तय हुआ कि हम जो करेंगे, खुले आम करेंगे। थानाको जब्त करके अपने कब्जेमे रखना, रेलकी पटरिया और पुल तोड़ना, तार काटना वगैरह वगैरह हमारा कार्यक्रम है।

कांग्रेसके जो परचे मिले उसीके आधारपर यह कार्यक्रम बना। बैठक खत्म होते ही भीड़ थानाकी ओर बढ़ी और थानापर झंडा फहराना चाहा। पुलिस जमादारने भाला फेंक कर एक स्वयंसेवकको घायल करदिया। फिर तो जनता क्रोधान्ध हो उठी; किसी तरह थानापर झंडा फहरा कर उसे शान्त रखा गया। तब तक घायल स्वय सेवक होशमे आगये और उनका जलूस ताजपुर बाजारमें घुमाया गया। पुलिसके अत्याचारके विरोधमें जनताने हड़ताल मनायी। कृष्ण मुरारी प्रसाद, नवल किशोर प्रसाद और सुखदेव साह थानेपर ही गिरफ्तार कर लिये गये।

"१६ अगस्तको जनताने अधारपुर पुल तोडा और उसके बाद कोआरी रेलवे पुलको काटा। इस पुलको काटते समय अंगरेजी फौजने गोली चलायी। गोरोंके राइफल सीधी करनेके पहले ही अब्दुल जलील, खुदी राम और भोला प्रसाद साथियो सहित मकईके खेतमे जा छिपे थे जिससे सभी बेदाग बचे।"

तजापुर थानामें किसान, मजदूर और छात्र—सभी कन्धेसे कन्धा भिड़ाकर तोड़-फोड़में लग पड़े थे। सईदपुरके पास पूसा रोडसे दरभगा .जाने वाले रोडको सबोने काट डाला। पूसासे मुजफ्फरपुर जाने वाली सड़क भी काट दी गई। पूसासे बेनीपट्टी जाने वाली सड़क भी लोगोने काटी और किनारे खड़े पेड़ोको काट काट उसे पाट सा दिया। फिर उनने तारके खंभे गिराये और पूसा फार्मके कारीगरोंकी मददसे रेलकी पटरियाँ उखाड़ फेंकी। डाकघरमे कांग्रेसका ताला लगा कर उसपर तिरगा झंडा फहरा दिया। दिघराका डाकघर तोड़ दिया।

फिर लगभग दस हजारकी भीड़ने पूसा फार्मपर हमला किया। पानीके प्रबन्धको नष्ट करके उनने फ्लैक्स गोदाममे आग लगा दी। भीषण अग्नि प्रज्वलित हुई और चार दिनो तक रही। वहाँके डाकघरके कागजात जला दिये और टेक्निकल स्टोर रूमका ताला तोड उसका सामान नष्ट कर दिया गया और लूट भी लिया गया।

फिर जनताने ढोली कोठीपर चढ़ाई की। पर कोठिवाल साहबने राष्ट्रीय वरदी पहन ली और अपनी कोठीपर राष्ट्रीय झंडा फहराया। श्रीयमुना कार्यी, श्रीलक्ष्मीनारायण सिंह तथा श्रीरामप्रकाश शर्मासे अपने भारत-प्रेमी होनेकी पैरवी करायी। तब भीड़को टाल सके। वारिसनगरके कार्यकर्त्ताओंने धनहरका पुल तोड़ा, किसनपुर और हायाघाटके बीचकी रेल लाइनको छिन्न भिन्न कर दिया, जिस काममें २०० स्वयसेवक रात दिन मशगूल रहे। ता० १६ को बागमतीपरके

जटमलपुर पुलको उनने तोड दिया जिससे समस्तीपुरसे दरभंगा जानेवाली सडक खडित होगई। फिर भिरकुलिया और अकवरपुरके पुलको तोडा। तार तो किसनपुरसे हायाघाट तक सफाचट हो गये। मोहिउद्दीन नगरने रेलकी पटरिया हटाईं और तार काटे। एकवार मिलिटरीको जयनगरके वास्ते जाते देख किसान मजदूर रेल उखाड फेंकने दौड़े और उधरसे गाड़ी चलना वन्द कर दिया।

दलसिंगसराय थानेके पच्छिम और पूरव तरफकी रेलवे लाइन उखाड फेंकी गयी। तार तो वहुत दूर तक काट गिराये गये। चकसेखूका पुल नष्ट कर दिया गया। और १५ अगस्तकी शामको रेलवे स्टेशनमें घुमकर आन्दोलनकारियोंने वहुतसे सामान जला दिये और लूट लिये।

सिंगियामें फुलहाराके नजदीकका कोल्हुआ पुल तोड़ा गया। रोसड़ावालोंने स्टेशन, डाकघर और रजिस्टरी आफिसपर झंडा फहरा दिया। लगभग एक हजारकी भीड़ने सिंगियापुलको तोड़ दिया। फिर रेलकी पटरिया हटाई और तार तोड फेंके।

वालेश्वर सिंह लिखते हैं—"१३ अगस्तको स्टेशनसे जलूस निकाला गया। कुछ लडकोंने स्टेशनके कागजात फाड डाले। इसपर मालवावू निकले और तारकी

रोसड़ा

वैटरीको वाहर लाकर खुद पटक दिया। वैटरी चूर-चूर हो गयी। मैं सवोंको शात करके स्टेशनसे वाहर ले चला। सर्व प्रथम रजिस्टरी और फिर पोस्ट औफिसमें ताले भरे गये और उनपर झंडा फहराया गया। रजिस्ट्रार और पोस्ट मास्टर साहवसे 'इन्कलाव जिन्दावाद और वन्देमारम्' वोलवाया गया। हसनपुरमें वखरीके वावू शिवनन्दन नारायण सिंहके नेतृत्वमें खगड़िया तथा वखरीका जत्था आया जिसने डाकघरमें ताला लगा दिया—इसके वाद हसनपुर स्टेशनमें भी ताला लगा दिया गया, रेलकी पटरियाँ उखाडी गईं। जिस काममें सगरपुरा मि० स्कूलके अध्यापक तथा छात्रोंने पूरा सहयोग दिया। १४ तारीखको हसनपुर मिलके कर्मचारियोंकी सहायतासे स्टेशनपर तोड़-फोडका काम शुरू हुआ। स्टेशन अपनी सारी चीजोंके साथ जला दिया गया।

मगलगढ़ डाकखानेपर दो वार झंडा फहराया गया। वलीपुर डाकघरमें ताला लगा दिया गया और उसपर झडा फहरा दिया गया। गोदार घाटकी नाव डुवा दी गयी। यह घाट समस्तीपुर और हथौड़ीके वीच पड़ती है।

सिंगियाके कार्यकर्त्ता तोड़-फोड़के उद्देश्यसे नयानगर स्टेशन पहुचे और वहाँ

रेलकी पटरियाँ उखाड़ने लगे और तार काटने लगे। इस बीच समस्तीपुरके डिपटी मजिस्ट्रेट हसनपुरसे लौटते वह‌ाँ पहुँचे। उनने तोड़नेवालोंको समझाया कि रेल तार तोड़नेसे फायदा नहीं है, नुकसान ही नुकसान है। उनकी बातें सुन लोग जोशमें आगये और खूब तेजीसे तोड़-फोड़में लग गये। माहेके विश्वनाथ सिंहका कहना है—१६ अगस्तको श्रीविन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, विद्यालंकारने जगन्नाथपुर हाटपर लोगोंको तोड फोड और थाना रेडका प्रोग्राम दिया। वहाँसे जब हमलोग लौट रहे थे तो फुलहाराके पूरब एक डि० बोर्डके पुलको तोड़नेमें लग गये। महेन्द्र साहके द्वारा मालूम हुआ कि अभी सिंगिया थानाके लिये दरभंगासे एक सिपाही बन्दूककी गोली ला रहा है। हमलोग सतर्क होकर सिपाहीकी राह देखने लगे। इतनेमें अमानत मियाँ गोलीका बक्सा लेकर साइकिलसे आता हुआ दीख पडा। हमलोगोंने उसे पकड लिया। उससे गोली और साइकिल छीन ली और उसको मोरवाराके बाबू रामबहादुर सिंहके सुपुर्द कर दिया और ताकीद कर दी कि कल शाम तक इसे न छोड़ें, ताकि सिंगिया थाना आसानीसे कब्जेमें आसके।

सिंगिया

मुंगेर टाउनमें पिकेटिंगने जोर पकड़ा। कचहरीको बन्द करनेके लिये किलेके दरवाजेपर दूर-दूरसे धरना देनेके लिए स्वयंसेवक आने लगे और पुलिस मार-पीटके अलावा उनपर तरह-तरहके अत्याचार करने लगी। गंगामें फेंक देना तो उनके लिये दिलचस्प खेल जैसा हो गया था। एकबार उनने सिकंदराके राजेश्वरी सिंह, बरबिगहाके श्याम सिंह और उनके कई साथियोंको पकड़कर नंगाकर दिया। फिर उनके सारे शरीरको रंगीन पोटीनसे पोत डाला। और फिर उनको गंगटा जंगलमें ले जाकर छोड दिया। आधी रात और हिंस्र जन्तुओंसे भरा हुआ पहाड़ी जंगल! घायल और भूखे प्यासे स्वयंसेवकोंको जो भोगना पडा सो कल्पनातीत है।

मुंगेर

बाढ़की वजहसे स्टीमर गोगरी, खगडिया और चौथम आदि इलाकोंमें आसानीसे आ-जा सकती थी और गोरोंको ला-लेजा सकती थी। इसलिए गोगरी थानाके कार्यकर्त्ताओंने गोगरी स्टीमर घाटको नष्टकर देनेका निश्चय किया। १४ अगस्तको आन्दोलनकारियोंका एक जलूस वहाँ पहुँचा और घाट तोड़नेमें लग गया। दो घंटे भी न बीते होंगे कि पूरे फोर्सके साथ एस० डी० ओ० साहब घाटपर पहुंचे और भीडपर गोली चलवाने लगे। एक गोली श्रीरामकृष्ण यादवके मर्मस्थानमें लगी और वे तत्काल शहीद हो गये। अनेक घायल हुये, जिनमें

गोगरी थाना

स्थानीय गोगरी राष्ट्रीय विद्यालयके अध्यापक श्रीमुरलीधरजी प्रमुख हैं, जिनको सख्त घाव लगा था। वहांसे आन्दोलनकारियोंको खदेड़ता हुआ एस० डी० ओ० सदल-बल जमालपुर थाना पहुंचा। श्रीभगवान दास लहेरी, रामचंद्र चौधरी तथा श्रीनवलकिशोर मंडलके घर लुटवा दिये और राष्ट्रीय विद्यालयके सभी सामानको लुटवाकर उसके रसोई घरमें आग लगवा दी।

पसराहा, महेशखूंट और नारायणपुरके प्रायः अधिकांश रेलवे पटरियां उखाड़ फेंकी गयीं पर आसाम फ्रौंट जानेकी सीधी रेलवे लाइन उधर ही से है, इसलिए लाइनकी मरम्मत जल्दसे जल्द हो गयी। जिसकी हिफाजतके लिये हवाई जहाज मड़राने लगे। २३ अगस्तको एक हवाई जहाज लाइनकी सीधमें उड़ता हुआ भीषण घटना-चक्रका शिकार बन गया। श्रीतपस्वी चौधरी अपनी आंखों देखी घटनाका यों वर्णन करते हैं:—मैंने देखा कि एक जहाज सिर्फ सात-आठ हाथकी ऊंचाईपर लाइनकी सीधमें उड़ा जा रहा है, पेड़की डालोंको नोचता तोड़ता हुआ। जब मैं पसराहा स्टेशन पहुँचा तब मालूम हुआ कि स्टेशनसे दस-बारह रस्सीपर हवाई जहाज गिर गया है। उस समय कोसीका पानी खेतोंसे बह रहा था। इसलिये जहाजके चारों ओर पानी लहरें मारने लगा। मैंने देखा १५-२० नावें जहाजकी ओर तेजीसे बढ़ रही हैं। वहां पहुंचकर उनने जो किया उसकी जानकारी मुझको नहीं हो गयी।

जहाजके गिरते ही एक गोरा मर गया। शेष दो डाक्टरकी पुकार करने लगे। नाववालोंने रिवाल्वरकी ओर इशारा किया। गोरोंने रिवाल्वर उन्हें दे दी और अपने पासकी और भी चीजें दीं ताकि नाववाले उनसे डरें नहीं और उनको यथा स्थान पहुँचा आवें। दोनो गोरे नावपर ले लिये गये। उनके नावपर आते ही बड़ा हल्ला हुआ। कुछ लोगोंने दोनोंको नावसे गिरानेकी कोशिश की। दोनोंने नावकी लकड़ी पकड़ ली। तब तो उनपर लाठियां बरसने लगीं। लकड़ी छोड़ दोनों नावसे पानीमें कूद पड़े। पानीमें कूदना था कि चारों ओरसे उनपर वार होने लगा। चोट खाकर वे पानीमें डूब जाते और ज्योंही सांस लेनेके लिये सर निकालते कि लाठी पड़ती। कुछ ही देरके बाद दोनों मरकर पानीमें उपलाने लगे। उनकी सारी चीजें लेकर गाववाले जहा तहा चले गये।

इस काडके बाद लोगोंका सहज अनुमान हुआ कि साथियोंकी खोजमें गोरे दल बाँध बाँध कर आवेंगे और जनताको सतावगे। इसलिये उनने रेलवे लाइनको

अच्छी तरह छिन्न भिन्न करना शुरू कर दिया। एक जगह उन्होने जो लाइन काटी वह गगाकी बाढ़के जोरसे इतनी भयंकर हो गयी कि उधरसे छ महीने तक गाड़ी न जा सकी और अब भी वह कटान भरी नहीं जा सकी है; और पसराहा कटानके नामसे विख्यात है। एक बार २३ अगस्तको इसी लाइनपर पसराहा स्टेशनके पास लोग बॉध सहित रेलवे लाइन काट रहे थे कि मिलटरी और पुलिस पहुँची और अन्धा धुन्ध गोली चलाने लगी। ऊपर हवाई जहाज मड़रा रहा था, वह मशीन गन छोड़ने लगा। परिणाम स्वरूप कहा जता है कि चालीस आदमी गोलीके शिकार बने। जिनमे उल्लेखनीय है तेहायके चंचल मिस्त्री, तेभायके भोला मडल और चमक लाल पासवान, कोलवाराके लुरी मंडल और द्वारिका मंडल, तेलिया वथानके मुकन्द मंडल और शहर वन्नाके भुजंगी मंडल।

बड़हिया

१५ अगस्तकी शामको पटनाके विद्यार्थी बड़हिया पहुँचे और नवजवानोको अगस्त क्रॉतिका संदेश दिया। इतने तरहके लोग वहॉ इक्ट्ठे हो गये कि जब विद्यार्थियोने स्टेशनको जला देनेकी सलाह दी तब एक ओरसे स्टेशनको कुछ लोग जलाने लगे और दूसरी ओरसे कुछ लोग लूटने। स्टेशन स्टाफ सब कुछ जलते लूटते देख आतंकित हो उठे, पर कांग्रेसके कार्यकर्त्ताओने उन्हें ढाढ़स दिया और उनकी हिफाजतका सारा इन्तजाम कर दिया।

लक्खीसराय थाना

१४ अगस्तको लक्खीसरायके कार्यकर्त्ताओने एक बड़ी तादादमे तोड़-फोड़ शुरू किया। पोस्ट औफिस और आबकारी विभागकी दूकानको बरबाद करते हुए वे रजिस्टरी औफिस पहुँचे। जिसे उनने बंद कर दिया। वहॉसे वे स्टेशन आये। स्टेशनपर लड़ाईके समानसे भरी एक मालगाड़ी खड़ी थी जिसमे कार्यकर्त्ताओने आग लगा दी, आग दावानलकी तरह भड़की। गाड़ीके डिव्वे भारी आवाज करते हुए फटने लगे और उसके भीतरके गोले गोलियाँ इधर उधर फूट-फूटकर उडने लगे। उसी समय एक हवाई जहाज आया और ऊपर मड़राने लगा। साधारण जनता घवड़ा उठी। पर स्टेशनके ही कर्मचारी और लगुए भगुए स्टेशन लूटने लगे। उनकी लूट लगातार चौवीस घटे जारी रही। इस लूटमे पुलिसवालोने काग्रेस कार्यकर्त्ताओको भी चालान किया था, पर एक भी कार्यकर्त्ता लूटका अपराधी नहीं माना गया और चार जो इस लूट केसमें फॅसे स्टेशनके ही आदमी थे।

कार्यकर्त्ताओंने मननपुर स्टेशनको भी तोड़-फोड़का शिकार वनाया, उनने

उसके सारे सामान नष्ट कर दिये और कागजातको जला दिया।

सूर्यगढ़ाके कार्यकर्त्ताओंने रेलवे लाइनके छिन्न-भिन्न करनेमें अपनी पूरी ताकत लगायी। कजरा स्टेशन जलाया। किउल और लक्खीसराय स्टेशनके जलानेमें खूब हाथ बँटाया। कजरा और पीरीके बीचकी लाइने कई बार हटायीं और पटरियाँ उखाड़ीं। कजरा और किउलके बीच भी वे लाइनको छिन्न-भिन्न करते रहे। इन सब जगहोंके तारको उनने तोड फेंके।

सूर्यगढ़ा

तारापुरके कार्यकर्त्ताओंने तोड-फोडका काम शुरू किया असरगज पोस्ट ऑफिसको जला करके। फिर उनने सग्रामपुर बढ़ोनियां और तारापुरके डाकघर बंद कर दिये। सुलतानगज और असरगजके बीचकी पक्की सडकका पुल तोड दिया और सडकपर पेड काट काट कर गिरा दिया। तारापुर जमींदार किसान सघर्षका एक केन्द्र रहा है और उधरके जमींदार हैं बनैलीके राजा, जिनके अमले अपनी ज्यादतीके लिए काफी बदनाम रहे हैं। जनताने सोचा यह अमलोंसे बदला लेनेका अच्छा मौका है। इसलिए उनने बनैली राज्यकी कचहरिया जलानी शुरू कर दीं।

तारापुर

सिकंदराके कार्यकर्त्ताओंने डि० बोर्डके सड़कोंके पुल तोड़े और जमींदारीकी कचहरियाँ जलाईं। बहुतसे कचहरियोंको उनने लूट भी लिया।

जमुई सबडिविजन

जमुईमे गिरिडीहसे गिरफ्तार होकर कुछ राजबदी आये, जिनने स्टेशनपर लोगोंको तोड फोडका प्रोग्राम दिया। लोग जमुई स्टेशनमें घुस गये और कल-पुरजोंको बिगाड दिया। वहाँसे वे 'सिगनल केबिन' में गये। और उसे भी बरबाद कर दिया। जगदीश मिस्त्रीने इन सब कामोंमें प्रमुख भाग लिया। फिर लोगोने रेल-तारको छिन्न-भिन्न कर दिया। जमुई कचहरीपर जबरदस्त पिकेटिंग भी हुई। पुलिस पिकेटरोंको बेतरह पिटती और तरह-तरहसे सताती। उपेन्द्र पाल, शिवेंद्र शरण सिंह और विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंहको मार-पीट कर पुलिसने एस० डी० ओ० के सामने हाजिर किया। और एस० डी० ओ० ने उन्हें टामियोंके हवाले कर दिया जो जमुई स्टेशनपर अपना पडाव डाले हुये थे। टामियोने इनको इतना मार मारा कि इनके नाकसे और मुँहसे खून गिरने लगा। होठ और आँखे स्याह पड़ गयीं और पैर क्षत-विक्षत हो गये। अपनी चोटकी पीडासे वे हफ्तो छट पटाते रहे। मलयपुरके रमावल्लभचतुर्वेदी भी उस समय इन्हीं

जमुई

टामियोंके शिकंजेमे यंत्रणा पा रहे थे। एस० डी० ओ० ने ही इनको भी टामियोंके हवाले कर दिया था। इनका अपराध इतना ही था कि वे शान्ति स्थापनाकी चेष्टा कर रहे थे और एस० डी० ओ० को लिख भेजा था कि वे इस उद्देश्यकी सिद्धिके लिए एस० डी० ओ० की मदद करनेको तैयार हैं।

टामियोंने रमावल्लभजीके गलेको खींचनेकी कोशिश की। उनके मुँहपर थूक दिया। उनसे कागजो और चिथड़ोमें लगे मल-मूत्र साफ करवाये।

झाझा थानेमें रेलवे लाइन जगह-जगह उखाड़ी गयी, इसके एक कार्यकर्त्ता कुमार जमुना सिह अपने थानेमे तोड़ फोड़ करते हुए जमुई पहुँचे, जहां वे पकड़

झाझा लिये गये और उन्हें बूटसे कुचला गया और उनका सारा शरीर सिगरेटसे दाग दिया गया।

१२ अगस्तको एक दलने पुलिस थाना, पोस्ट ऑफिस, आबकारी थाना, आबकारी दूकान और लखमनिया स्टेशनपर कब्जा कर लिया। दूसरे दलने

बेगूसराय सबडिविजन आबकारी महालकी दूकानोको बंद करके साहपुर कमाल स्टेशन और मुंगेर घाट स्टेशनपर कब्जाकर लिया। तीसरे दलने परिहारीकी

बलिया थाना आबकारीकी दूकानको बंद करके इमली स्टेशनपर कब्जा किया। इस तरह सम्पूर्ण थानेपर जनताका प्रभुत्व स्थापित हो गया। १३ अगस्तसे रेलवे लाइन उखाड़ना शुरू हुआ और दो दिनोके अन्दर थाने भरमें रेलगाड़ीका चलना असभव हो गया। थाने भरके सभी चौकीदार और दफादारोके बरदी मुरठे जला दिये गये। फिर तो इस थानेमें जलानेकी प्रवृत्ति जगी, आबकारीकी दूकानें और डाकघर लोगोंने जलाया। साहबपुर कमाल स्टेशनको लूटकर लोगोंने जला दिया।

१८ अगस्तको श्रीअखिलेश्वर प्रसाद कार्फी लोगोंको बखरी थाना ले आये जहां उनने तिरगा झंडा फहराया। पर दूसरे दिन थानावालोंने झंडेको उतारकर

बखरी फेक दिया। उसपर युवकोंकी उत्तेजित भीड़ टूट पड़ी। पर बाबू शिवदत्त नारायण सिंहके समझाने बुझानेपर शांत हो गयी। विधि पूर्वक उसने तिरंगा झडा फहराया और फिर तोड़-फोड़के लिये रेलवे लाइनकी ओर निकल गयी। १४ अगस्तको श्रीसरयुग प्रसाद सिहजी बखरी आये और जिस समय आप दुर्गास्थानकी विराट सभामे भाषण दे रहे थे उस समय सलौना स्टेशन जल रहा था और असिस्टेंट स्टेशन मास्टरके ही कुचक्रसे। उस असिस्टेंट स्टेशन मास्टरपर गबनका अभियोग चल रहा था। उसने कुछ युवकोंको बहकाकर स्टेशनको जलवाया

जहां उसके मुकदमेके सम्बन्धके सारे कागजात थे। अभियोगसे बरी होनेका उसे यह अच्छा संयोग मिला। सरयुग बाबूने भरी सभामें उस घटनाका उल्लेख किया और असिस्टेंट स्टेशन मास्टर और उसके साथियोंके हथकडेकी निन्दा की।

बरियारपुर थाना

२१ अगस्तको मेघौलके कार्यकर्त्ताओंके साथ एक जबरदस्त जत्था बरियारपुर थानेमें आ घुसा। दारोगा साहब और उनके सहायक उस जन शक्तिका मुकाबिला नहीं कर सके। थाना कार्यकर्त्ताओंके कब्जेमें आ गया। उनने थानाको बन्द कर दिया और थानेवालोंको सपरिवार हिफाजतसे बेगूसराय भिजवा दिया।

तेघड़ा थाना

तेघडा थानाके कार्यकर्त्ताओंने १२ अगस्तको थाना औफिसपर चढ़ाई की। थानेपर झंडा फहराया और थानेके औफिसरोंसे थानेका चार्ज ले लिया। उनने थानेमें अपने ताले लगा दिये और वहां अपना पहरा बैठा दिया। थानेवालोंको हुक्म किया—थाना छोड देनेका और उन सबोंने थाना खाली कर दिया। डाकघर, रजिस्टरी और कचहरीपर भी झंडे फहराये गये और ताले लगा दिये गये। स्टेशनपर भी झंडा फहराया गया और उसको कांग्रेसके कब्जेमें कर लिया गया। तेघडा थानेकी जनता अनेक टोलियोंमें बंटकर अनेक गलियोंसे आगे बढ़ी और बरौनी जकशन, तेघडा स्टेशन, तिलरथ, रूप नगर, सेमरिया घाट और बरौनी फ्लैग बात-की-बातमें पहुंच गयी। सभी स्टेशनपर काग्रेसके झंडे फहरा दिये गये और स्टेशन स्टाफने काग्रेसकी अधीनता कबूल कर ली।

बरौनी जकशनको कार्यकर्त्ताओंने तोड-फोडका शिकार बनाया। उनकी टोलिया अपार जन-समूहको लेकर यहा इकट्ठी हो गई। और रेलवे लाइन, तार, टेलिफोन, नष्ट करनेमें जुट गयीं। जिन, बिजली घर, पम्प कल और जितने कल पुरजे मिले, बरबाद हो गये। कागजात और ऐसी-ऐसी चीजें जो जल सकतीं थी—जला दी गयीं, सभी जगहोंमें 'काग्रेसका राज्य' अंकित लेबुल चिपका दिया गया। बरौनी जंक्शनके लुकस साहब इंजिनियर और फोरमैनने स्टेशन छोड अपने-अपने डेरेकी राह पकड़ी। मि० लुकसको गरीब कर्मचारियोंने घेर लिया और उनसे अपना वेतन मांगने लगे। लुकस साहबने कहा—'हम वेतन कहासे देंगे। तुम लोग स्टेशनके कर्मचारी हो स्टेशनसे वेतन लो। कर्मचारियोंने पूछा कि स्टेशनसे वेतन कैसे वसूला जाय। लुकस साहब बोले कि स्टेशन तो मालसे भरा है। बस, उनका इशारा और गरीब कर्मचारियोंकी जरूरत, जिन्हें भुक्खड़ोंका सहयोग प्राप्त। तत्काल माल-

गाडियोंके सील तोड़े जाने लगे। सोलह सौ डब्बे वहां थे जो दिन भरमें खाली हो गये। जकशन उजाड दिखने लगा। स्टेशनकी किवाड़ियां तक लोग छुडा कर ढो ले गये। चीनी, चाय, पेट्रोल, कपड़े, तेल तथा अन्य चीजोंसे आस पासके गाँव पट गये। सैकड़ों मनचले 'गैस मास्क', पहने इधर उधर स्वांग करते घूमने लगे। मासके टुकड़ोंसे भरे हुए डब्बे हजारोंकी सख्यामे इधर-उधर लुढ़कते दिखाई देने लगे। जनतामे खूब उछाह था और चारो ओर महात्मा गाधीकी जय जवाहर लालकी जयका शोर हो रहा था।

रूपनगर स्टेशन और सेमरिया घाटकी भी ऐसी दशा हुई। सेमरिया घाटके कर्मचारी डरके मारे स्टीमर बीच गंगामे ले गये और वहीं जैसे तैसे समय काटने लगे। रूपनगरमे मिलिटरीके ठहरनेके लिए जो घर बना था उसको लोगोंने जला दिया। उनके लिए होटलका इन्तजाम था उसको नेस्तनाबूद कर दिया।

बछवाडाके समीपका पुल तोड़ दिया गया। वहांका स्टेशन सामान सहित जला दिया गया। रेलवे लाइनमे सोलह भभड़े वाला पुल था जिसे तोड दिया और मालगाडीके कई डब्बोंको उसमे गिरा दिया। जिसका नतीजा यह हुआ कि लाइन बननेके वाद भी गाड़ीका पास होना काफीदिनतक असभव रहा।

थाने भरके पोस्ट औफिस बन्द कर दिये गये। और उनका काम देखनेके लिये। स्वयंसेवक नियुक्त कर दिये गये।

भागलपुर शहर

शहरका वातावरण १२ अगस्तके वादसे बड़ा अशान्त हो गया। नगरमें लगातार कई दिनोंसे हड़ताल थी, भुक्खड़ोंकी सख्याको वेकारी वढ़ा रही थी। उनके खाने पीनेका कोई इन्तजाम नहीं हो रहा था जिससे उत्तजेना फैल रही थी। परिणाम यह हुआ कि बी० एन० डब्लू० रेलवे स्टेशनपर भुक्खड़ समाज टूट पडा। स्टेशनमे आग लगा दी गयी। फिर लोगोंने माल गोदामपर धावा बोल दिया। सामने मिलिटरी लौरी थी, जिसमें आग लगा दी गयी। फिर निश्चिंत माल गोदाम लूटा जाने लगा। पुलिस खडी-खडी तमाशा देखती रही। वह जव तव दूकानदारोंको देख कहती—अव कहा है तुम्हारी काग्रेसी सरकार! वुलाओ तुम्हारे जान मालकी रक्षा करे। कुछ देरके ही वाद देखा गया कि पुलिस लुटेरोंका साझेदार वन गयी है। वह लूटसे उन्हे रोकती नहीं है हा, जव-तव भीड़को डरा दिया करती है और जव किसी ऐनेको पकडती है जो लूटका माल लिये जाता है तो उससे पूरा हिस्सा ले लेती है। भीड़ और पुलिसका रवैया एक जैसा ही रहा। हा, जव भीड़

पेट्रौलकी टंकीमें आग लगाने चली, तब पुलिसका रुख बदला। सार्जेन्ट आ धमका। फिर गोली चली। दो निरपराध राहगीर मारे गये एक हिन्दू और एक मुसलमान।

शहरमें १४४ की घोषणा कर दी गयी। कर्फ्यू आर्डर भी जारी हो गया। पर लूट बद नहीं हुई। चर्खा-संघके भिखारी रामजी लिखते हैं :—मेरे सामने ठाकुर भागवत सिंहने श्रीशुभकरण चूड़ीवालसे कहा—चलकर अभी लूट बद करना चाहिये। चौदह अगस्तकी उस अंधेरी रातमें किसीने लूट खसोट रोकनेका प्रयास नहीं किया। लूटका माल पुलिसके घर पहुँचने लगा। नौकर शाहीके कमजोर पायेको मजबूत करनेवाले सेठ-साहूकारोंको भी लूटका माल खूब हाथ लगा। लुटेरे पानीके दाममें लूटका माल बेचते और ये सेठ-साहूकार खरीदते। सारा काम खुलकर हो रहा था। सवेरा हुआ। अब बद मालगाडीका माल जो बाहरसे आया था और बाहर जानेको था डब्बा तोडकर लूटा जाने लगा। मुझे इसकी सूचना मिली। ठाकुर भागवतप्रसाद सिंह और श्री हरेकृष्ण प्रसादके साथ स्वय-सेवकोंकी टोली लेकर मै स्टेशन मालगुदाम पहुँचा। तिरगा झडा देखते ही लुटेरे भागने लगे। उन्हें मालूम हुआ कि लूटना कांग्रेसका हुक्म नहीं है। फिर लूट छोड वे सभी भाग गये। तिरगे झडेने लूटेरोंसे ५० हजारका माल बचाया। चोरी और लूटका बहुत माल रेलवे कर्मचारियोंने अपने क्वार्टरमे छिपा रक्खा था, हमलोगोंने उसे बरामद किया। फिर हमारी कोशिश रही कि मालको मालिकोंके सुपुर्द किया जाय। इसमे हमको बहुत सफलता मिली। हमने श्री चंद्रिकासिंह, श्री राधाकृष्ण प्राणसुख, और श्री सूरजनारायण मिश्रको प्रचार करनेके लिये भेजा कि कांग्रेसकी आज्ञा लूट खसोट करनेकी नहीं है। लूटको बंद करो पर पुलिसने तीनोंको गिरफ्तार कर लिया शहरमें भी गिरफ्तारी शुरू हो गयी। इस गिरफ्तारीको देख विद्यार्थी समाजने शहर छोड गांवकी राह ली।

शाहकुंड थाना

शाहकुंड थानेके कार्यकर्त्ता एक हाथमें पलीता और दूसरे हाथमें किरासन तेलका टीन लेकर तोड़-फोड़के लिये निकले। थाना आये, उसे जलाया। वहाँसे कचहरी आये और वहाँ जलाने लायक जो पाया उसे जला दिया। फिर डाकघर पहुँचे, जिसे सामान सहित फूंक दिया। फिर कलाली पहुँचे, जिसे तोड़-फोड़कर बरबाद किया ; बादको जला दिया। इस अग्नि-कांडमे अगुआ थे श्रीप्रभाचंद्र ठाकुर और रमानाथ ठाकुर।

कहलगांव टाउनमें स्थानीय डाक बंगला भस्मीभूत हो गया। पोस्ट औफिसके टेलिफोन और टेलिग्राफके सभी यंत्रोंको तोड़-फोड़ दिया गया और उसके सभी कागजात जला दिये गये। रेलवे स्टेशनके सामानको भी तोड़-फोड़ दिया गया और जो कागजात मिले उन्हें जला दिया गया। म्यूनिसिपैलिटीके कागजोंमें भी आग लगा दी गयी। 'अड़गड़ा' खोल दिया गया जिसके मवेशी भगा दिये गये। नंदलालपुर, नवादा और कहणदासपुरमे शराब और गांजेकी दूकानोके शराब और गांजा बरबाद कर दिये गये। नंदलालपुर और नवादाकी दूकानें तो जला भी दी गयीं। कहलगांव स्टेशनके आस-पास रामपुरके नजदीक, रामजानोपुरके समीप और शैलन्द्रा गुंगटीके निकट रेलवे लाइन उखाड़ी गयीं और तार काट डाले गये।

घोघामे भी पोस्ट औफिस और रेलवे स्टेशनके टेलिग्राफ और टेलिफोनके सभी मशीनोको नष्टकर दिया गया और उनके कागजात जला दिये गये। आबकारी महालकी दूकानोके सामान नष्ट कर दिये गये। डाक बॅगला जला दिया गया और 'अड़गड़ा' खोल दिया गया। स्टेशनके दोनों ओर बहुत दूर तक जगह-जगह रेलवे लाइन उखाड़े गये और तार काटे गये। सनौहलाका डाक बंगला भी जला दिया गया।

सुलतानगंज

सुलतानगंज थानेमें अकबर नगर, जहांगीरा और सुलतानगंजकी रेलकी पटरियां उखाड़ दी गयीं और सभी बड़े-बड़े पुलको बेकार कर दिया गया। पेड़ोंको काट-काटकर सड़कोपर ढेर कर दिया गया। रेलगाड़ीको रोककर लोगोने श्रीसरस्वती देवी भूतपूर्व एम० एल० ए० और राजेश्वरी देवीको पुलिसके हाथोसे छुड़ा लिया। दोनो देवियां कैदीकी हालतमें पटने भेजी जा रहीं थीं। सुलतानगंजके पोस्ट औफिसको भी बरबाद कर दिया गया। फिर लोगोंने रेलवे स्टेशनपर धावा किया। स्टेशनके कल-पुरजोंको बिगाड़ कागजोंको जला दिया। जब लोग भवनाथपुरके पास रेलकी पटरियां उखाड रहे थे तब गोलियाँ चलीं पर न कोई घायल हुआ और न पटरियोंका उखाड़ना रुक सका। जहांगीरामें सडक काटते समय तो लोगोंपर हवाई जहाजका आक्रमण हुआ। स्टीमरपरसे भी गोली चली। पर विद्रोही बाल-बाल बच गये। हॉं, तितर-बितर हो गये। हवाई जहाजके झपटेके झोकेसे एक व्यक्ति पुलके अन्दर गिर पड़ा, पर उसे खास चोट नहीं लगी।

अकबर नगर स्टेशन भी लूटा गया और जलाया गया। स्टेशनपर जो गाड़ी खड़ी थी—उसमें लगे हुए डाकके डब्बेको लूट लिया गया। सुलतानगंज स्टेशनपर भीड़ने एक अंग्रेजको पकड़ लिया, उसे सत्तू खिलाया, उससे अपने नारे बोलवाये और फिर छोड दिया।

१७ अगस्तकी घटना है, सुलतानगंज रेलवे स्टेशनपर एक मालगाडी खडी थी, कार्यकर्त्ताओंको लगा कि उसमें लडाईके अस्त्र-शस्त्र हैं। बस लूट लेनेकी इच्छा हुई। वहाँ सदल-बल बाबू सियाराम सिंह मौजूद थे। बाबू रासबिहारी लाल और श्री ठाकुर प्रसाद उर्फ मंडलजी भी उपस्थित थे। इन सबोंमें विवाद छिडा कि माल-गाडीकी लूट दिनमे हो या रातको। थाना पास ही था, जो इस लूटके प्रोग्रामसे बिलकुल उदासीन मालूम पडता था। कुछ लोग कहते कि दिनकी लूटको थाना नापसन्द भी कर सकता है। पर रातकी लूट उसे अखरेगी नहीं। इसलिये सियाराम बाबू वगैरहकी राय हुई कि मालगाडी रात ही को लूटी जाय। इसपर रासबिहारी लाल स्टेशन छोड़ थाने आ गये और घर जानेकी तैयारी करने लगे। इधर अन्धेरा होते ही लूट शुरू हुई पर ऐन मौकेपर अंग्रेज सार्जेन्ट हथियार बन्द सिपाहियोंको लेकर पहुँचा और गोली दागनी शुरू कर दी। सियाराम बाबू तो दीवार फांद निकल भागे। पर सात आदमी गोलीके शिकार हो गये। राका, थाना गोगरीके परमेश्वर मिश्र, मिरजा गाव, थाना सुलतानगंजके मेधूतांती, नारायणपुरके भोला मंडल, मुसहरीके फागू मांझी और बदन मांझी और जहाँगीराके सितेश्वर साह।

बिहपुर थाना युद्ध समितिके सचालक श्रीराजेन्द्र झा स्वतंत्रने एक बैठक बुलाकर तय किया कि थाना पोस्ट आफिस, रजिस्टरी औफिस डाक बंगला और स्टेशन

बिहपुर वैगरहपर कब्जा किये जायें। दूसरे दिन इलाके भरके बेशुमार लोग जमा हुये जिनके सहयोगसे कुछ चुने हुये आन्दोलनकारी आगे बढ़े और थाना रेलवे स्टेशन आदि सभी सरकारी इमारतों तथा औफिसोंमें आग लगा दी। स्टेशनकी रक्षाके लिए हथियार बन्द सिपाही पहरा दे रहे थे। पर मालूम होता है कि इतनी बडी भीड़ और इतना ज्यादा जोश देख उन्हें काठ मार गया। स्टेशन मास्टर पोस्ट मास्टर सबोंने आगकी फैलती हुई लपट देखकर अपने-अपने घरकी राह ली। कुछ ही देरमे सरकारका सारा सरंजाम जल गया। जो चहल-पहलकी जगह थी श्मशान बन गया। काफी लोग लूट पाटमें लग गये। सरकारी

गोदाम और लडाईका सामान लूटना शुरू कर दिया। गल्ला, कपड़े, तेल, फुलेल आदि लाखोका माल लूटा गया।

नारायणपुर स्टेशनको तोड़-फोड़ कर फूंक डाला गया। पोस्ट औफिसके कागजात जला दिये गये। नारायणपुरसे नौगछिया तक और बिहपुरसे महादेवपुर तकके तार काट फेके गये और बहुत बडी तादादमे रेलकी पटरियां उखाड फेकी गयीं। महादेवपुर घाटसे जो रेल गाड़ी आ रही थी उसको कांग्रेस सरकारकी ओरसे जब्त कर लिया गया। मुसाफिरोको उतर जानेका आदेश दिया गया। गार्ड और ड्राइवरको गिरफ्तार कर लिया गया। बादको पेट्रोल छिड़क कर समूची गाड़ीमे आग लगा दी गयी। गाड़ी धुआं और लपटे फेकती हुई काफी देर तक जलकर राख हो गयी। उसकी लोहेकी बेचे ही ब्रिटिश-साम्राज्यकी किस्मतपर रोनेके लिए बची रहीं।

आन्दोलनकारियोने थाने भरमें आबकारीकी दूकानोको बंदकर दिया और पोस्ट औफिसके कागजात जला दिये।

लत्तीपुर स्टेशनपर भी हमला हुआ। और उसके बहुतसे सामान नष्ट कर दिये गये और वहांकी रेलवे लाइन छिन्न भिन्न कर दी गयी। इन्हीं दिनो यहां एक घटना हुई। एक गोरा सार्जेन्ट लगभग एक दर्जन हथियार बंद सिपाहियोको लेकर रेलवे लाइन पकड़े-पकड़े भागलपुर जा रहा था। लत्तीपुरके लोगोने इसे देखा। बस बदूक छीन लेना चाहा। लगभग चालीसकी तादादमे वे उसका पीछा करने लगे। पहले तो इन्हें पीछे लगा देख सार्जेन्टने बंदूक दिखा इन्हें भगाना चाहा, पर भागनेके बजाय इनलोगोने समझा कि उस टोलीके पास गोली नहीं है। बस, जरूरत है कि ढेले मार-मार इसे परेशान कर दिया जाय और फिर इसकी सारी बदूके छीन ली जायॅ। पहले इनने कुछ ढेले फेके जिसके जवाबमें सिपाहियोने भी बदूकमें पत्थरकी गोलियाॅ भर-भर कर छोड़ना शुरू किया। सतरूप महतोने अपने लडके दशरथ महतोसे कहा कि न सार्जेंटको गोली है और न सिपाहियोको। देखो न हमारे ढेलोके जवाबमें ये भी ढेले ही फेक रहे हैं। यही मौका है बढ़ो बेटा! सार्जेन्टको एक ढेला खींच मारो फिर बंदूके छीन लो। दशरथ महतो आगे बढ़े, सार्जेन्टको पत्थर फेंक मारा। बस, अबकी गोली चली और तबतक चलती रही जबतक लोग गिर न पडे और भाग न गये। गिर पड़नेवालोमें एक थे वही दशरथ महतो—उम्र २१ साल, जो तत्काल शहीद हो गये।

मधेपुरा और सुपौल सवडिविजनोंमें हुकूमतकी वागडोर कांग्रेसके हाथ आगयी और इस सिलसिलेमें जो काम हुए उनमें तोड फोड़का स्थान साधारण सा है। इस लिये उसका वर्णन अगले परिच्छेदकी घटनाओंके साथ हुआ है।

वांका सवडिविजनका इतिहास वहुत कुछ तोड़ फोड़का ही इतिहास है। वहाकी परिस्थितिमें ऐसी विचित्रता है जिसका स्पष्टीकरण अगले परिच्छेदमें किया गया है।

कुरसेलामें हाइ-स्कूलके छात्रोंने कुरसेला रेलवे स्टेशनपर धावा किया, फरनीचर और शीशेके सामानको तोड़-फेका। कागजातमें आग लगा दी और रेलवे लाइनको

पूर्णिया, वरारी थाना

काफी छिन्न-भिन्नकर दिया। उन्होंने पोस्ट ऑफिसपर दखल जमाया और वहॉसे जलूस वॉधकर टीकापट्टी पहुचे।

वहाँ पोस्ट मास्टरके लड़के श्रीअवधकिशोर झाके सुझानेपर टीकापट्टी पोस्ट ऑफिसको तोड़-फोड़का शिकार वनाया। पोस्ट मास्टरने मॉगनेके पहले ही पोस्ट ऑफिस तथा यूनियन वोर्डकी ताली दे दी। फिर सभी कमरेके कागजातको वाहर फेक फेंककर कागजों और रजिस्टरोंका ढेर लगा दिया, जो ताला जल्दी नहीं खुला उसे छेनी हथौड़ासे तोड डाला गया। लेटर वक्स और साइन वोर्ड थकुच डाला गया। फिर कागजोंके ढेरमें आग लगा दी गयी। पोस्ट ऑफिसका कुल स्टाम्प और कार्ड लिफाफा ले लिया गया। चौदह रुपये नकद पाये गये। जो ले लिये। हॉ, कर्मचारियोंकी व्यक्तिगत सम्पत्ति अछूती रही। वादको जत्था रुपौली थानेकी ओर चला गया।

रुपौली थानेकी ओर वढ़ते हुये कुरसेला और टीकापट्टी आश्रमके जत्थोंने राहमें तिनटेंगाके असेसर पचके ऑफिसके कागजात जलाये और रातको

रुपौली

विरौली वाजारमें पडाव डाला। १५ अगस्तको विरौली वाजारकी आवकारीकी दूकानके सामान नष्ट कर दिये। फिर रुपौली थानापर झडा फहराया गया। उसके कागजात जलाये गये और उसके ऑफिसमें ताला लगा दिया गया। १६ अगस्तको रुपौली हाइ स्कूलके विद्यार्थियोंने जनताके सहयोगसे कलालों, यूनियन वोर्ड और डाकघर जला दिये।

वनमनखी रेलवे स्टेशनमें तोड़-फोड सवसे ज्यादा हुआ। वनमनखीमें सेवादल कैम्प था, जहॉ कार्यकर्त्ता ट्रेनिंग पा रहे थे। इस कैम्पमें पूर्णियासे तोड-फोडका

वनमनखी

आदेश लेकर डाक्टर कलानन्द ठाकुर आये। सवने मिलकर तय

किया कि रातको तार काटनेका काम शुरू हो। फिर लगभग पाच-सौ छात्र और चालीस कार्यकर्त्ता जुट गये और रात भरमे बनमनखीके दोनो ओरके तार काफी दूर तक काट फेके। रेलवेके मिस्त्रियोने इनकी वड़ी मदद की। फलस्वरूप, दूसरे दिन पांच मील तककी रेलवे लाइनको, इन सबने छिन्न-भिन्नकर दिया और सरसीका पुल भी जला दिया। शाम होनेको थी और लोग थक गये थे। इसलिये तोड फोडके अगुआ अनूपलाल मेहता और कलानन्द ठाकुरने लोगोको विश्रामका आदेश दिया। और खुद केशवप्रसाद साहा, गणेश झा और दशरथ यादव आदि साथियोको लेकर स्टेशनपर खडी रेल गाडीके सेकड क्लासके डव्बेमें जाकर बैठ गये। वे जानते थे कि उनने अपने कामसे पूर्णियाके अधिकारियोको तिलमिला दिया है। और वे अब-तबमे वहॉ पहुँचने वाले ही है। उनने अपने साथियोको कहा कि पकड़े जानेपर आप धीरज न खोइयेगा। अधूरे कामको पूरा करनेमें लगे रहियेगा। जो सामने आवे, उसे बरदाश्त करना तो हमे है ही। सात बजे शामको जिला मजिस्टर और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट दो दर्जन मिलिटरी लेकर पहुँच गये और इन सबोको गिरफ्तार कर लिया।

इनके कामकी गुरूताका अनुमान इसीसे किया जा सकता है कि इस अपराधके लिये अनूपलाल मेहता और कलानद ठाकुरको फासीकी सजा मिली और केशवप्रसाद साहाको १५ हजार जुर्माना हुआ। हाईकोर्टने सबोको रिहा कर दिया।

१४ अगस्तको आन्दोलनकारियोने कटिहार स्टेशनपर आक्रमण किया और उसे काफी नुकसानी पहुँचायी। वहॉकी रेलवे लाइन छिन्न-भिन्न कर दी। रौतारा और सोनालो स्टेशनके सामानको किरासन तेल देकर जला दिया।

कटिहार

१५ अगस्तको पूर्णिया कचहरीपर धावा करना था। जहॉ-तहॉसे लोग हजारोकी तादादमे वहॉ इकट्ठे हो चुके थे। इसी समय खबर लगी कि श्रीजगन्नाथ कुडु यानी ध्रुवजी पूर्णिया अस्पतालमें शहीद हो गये। बालक ध्रुवकी शहादतकी खबर शहरमें बिजलोकी तरह फैल गयी। सभी इसकी झाकी लेनेको उमर पडे। शहीदका जलूस जिधरसे निकल रहा था उधर श्रीजीवत्स शर्मा 'हिमाशु' अपने जलूसको लेकर बढ़े। जब दोनो जलूस शामिल हो गये, तब लोगोंकी सख्या कमसे-कम तीस हजारकी हो गयी। जिला मजिस्ट्रेट और एस० पी०

पूर्णिया शहर

ने हैट उतारकर शहीदके प्रति अपना सम्मान प्रकट किया और जलूसको वेरोक टोक अपनी राह जाने दिया। सभी लोग अर्थी लेके कोसी नदीके किनारे पहुँचे, जहाँ ध्रुवका दाह सस्कार हुआ। ध्रुवके कर्मवीर पिता किशोरीलाल कुडुका उस अवसरपर एक ओजपूर्ण भाषण हुआ। और गभीर शब्दमें उनने कहा कि आज मेरा लड़का आजादीके लिये शहीद हुआ है, मेरे सौभाग्यकी आज सीमा नहीं है। श्रीजीवत्स शर्मा 'हिमाशु' तथा नरसिंह नारायण सिहने भी शहीदको अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। दाह-सस्कार करके जब लोग लौट रहे थे तब 'हिमाशु' जी गिरफ्तार कर लिये गये। डाक्टर किशोरीलाल कुडु दूसरे दिन रौतारा स्टेशनपर गिरफ्तार कर लिये गये। उन्हें अपने पुत्रका श्राद्ध भी नहीं करने दिया गया।

अररिया सवडिविजनमें बाबू बसन्तसिहने अगस्त आन्दोलनकी आवाजको थाना थाना पहुँचा दिया। उनने छात्रोंको उत्साहित किया और कार्यकर्त्ताओकी हिम्मत बढायी। फारविसगज और अररियाको मैदानमें उतार वे कुआरो थाना आये जहाँकी काग्रेस कमिटीके यह सभापति थे। इनके वहाँ पहुँचनेपर जनता जोशमें आ गयी। कुआरी हाटमें सभा हुई जहाँका दृश्य देखकर पुलिस सहम गयी और उसने एस० डो० ओ० से वसन्त बाबूपर गालिब आनेके लिये मदद मागी, वसन्त बाबू सवडिविजन भरके थानाओपर अधिकार करलेनेका आयोजन कर रहे थे। उस समय एस० डी० ओ० का सन्देश लेकर श्री पुण्यानन्दझा इनके पास आये और कहा कि आप थानापर चढाई करनेका इरादा छोड दे। 'पर आपने नहीं माना। वे कुरसाकांटा, डभरा और पटेगनामें सभा करते हुये वहाके चौकीदारोंसे इस्तीफे दिला रहे थे कि अररियाके पुलिस दलने इन्हें १८ अगस्तको गिरफ्तार कर लिया। इनकी गिरफ्तारीने कार्यकर्त्ताओको भडका दिया। वे इकट्ठे होने लगे। और पुलिसके हाथसे इन्हें छीन लेना चाहा। पर इनने उन्हें समझा बुझाकर शान्त किया क्योंकि गोली चलना अनिवार्य था और गोली उस परिस्थितिमें आन्दोलनकी गति रोक देती।

श्री नगेन्द्रझाने अररियाके पूरबी इलाकेकी कलालियोंके बन्द कर दिया। चौकीदारोंसे इस्तोफे दिलाये। रघुनन्दन भगतने फारबिसगंज और गढ़ बनेलीके

अररिया छात्रोंके सम्मिलित उद्योगसे अररिया कचहरीपर झडा फहराया। उनने बहुत जगहोंके कलालियोंको नष्ट भ्रष्ट कर दिया फिर अररिया स्टेशनके शोशे और फरनोचरको तोड़ने फोड़ने छात्रोंका दल फारबिसगज पहुँचा।

फारविसगंज क्रान्तिका अवाहन कर रहा था सुबह शाम जलूस निकाल कर। बावू छेदीलाल दासकी प्रेरणासे १४ अगस्तको एक बहुत बड़ा जलूस निकला जिसका नेतृत्व कर रहे थे बावू रामदेनी तिवारी। इस जलूसने छात्रों और बाजारकी

फारविसगंज जनतामें आग लगा दी। उनकी बड़ी तादाद ट्रेनसे ढोलबज्जा आयी जहां उन्हें गांववालोका पूरा सहयोग मिला। वहां उनने तार काटे, काफी दूर तक रेलवे लाइन उखाड़ दी और स्टेशनमें आग लगादी। वे आपसके चौकी-दारोसे भी मिले जिनसे इस्तीफे दिलवाये।

फिर भागलपुरसे सूर्यानन्द साह आये। स्कूलको बन्द कराया, यूनियन बोर्ड आफिसको जलाया। डाकघर और अड़गड़ाको भी नुकसान पहु चाया।

घूरना थानामें कार्यकर्त्ताओने जिसके मुखिया थे श्री शिवराजसिंह, चौकीदारोसे इस्तीफा दिलवाने और उनकी वरदी पेटी जलानेमें बड़ी दिलचस्पी ली। मदुरा

घूरना साहबगंज और मस्कनके चौकीदारोकी वरदी लेकर धरहा बाजार में जलायी गयी। नाथपुरके चौकीदारोसे इस्तीफे दिलाये गये। धनहा डाकघर और कलालीको वद कर दिया गया। अड़गड़ा तोड़कर पशुओको बाहर कर दिया गया।

१८ अगस्तको सरसी मिडूल स्कूलमें श्रीवैद्यनाथ चौधरीजीकी अध्यक्षतामे कार्यकर्त्ताओकी एक बैठक हुई जिनमे जिले भरके कामोपर समालोचनात्मक

सरसी-बैठक दृष्टिसे विचार किया गया। सभी कार्यकर्त्ताओने अपने-अपने इलाकेकी अवस्थाका वर्णन किया। अन्तमे निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुए.—

(१) २३ अगस्तको सब जगह खुलेआम नोटिस देकर तोड़ फोड़ किया जाय।

(२) २५ अगस्तको जिले भरके सभी थानोपर धावा वोला जाय और राष्ट्रीय झन्डा फहराकर थानेकी चीजे सुरक्षित स्थानमे रख दी जाये। सुरक्षित स्थानमें रखकर भी इस बातका खयाल जरूर रखा जाय कि चीजे खराव नहीं होने पावे।

(३) २७ अगस्तको पूर्णिया कलक्टरीपर राष्ट्रीय झंडा फहराया जाय। कचहरी अपने कब्जेमे लाया जाये।

धावेकी खबर थानेदार एवं जिला मैजिस्ट्रेटको अहिंसाके सिद्धान्तके अनुसार दे दी जाये।

यह भी तय पाया कि पूर्णियामें जत्थाका नेतृत्व सर्व प्रथम श्रीलक्ष्मीनारायण

सिंह सुधाशु करें। यदि वे पहले ही गिरफ्तारकर लिये गये तो श्रीवैद्यनाथ चौधरी जत्थाका नेतृत्व करें, और यदि इनकी गिरफ्तारी भी हो गयी तो नेतृत्वका भार श्रीवासुदेव प्रसाद सिंहपर रहे।

सरसी-प्रस्तावने पूर्णिया जिलामे तोड़-फोडकी आधी दोबारा उठाई।

२३ अगस्तको जिले भरमे रेलवे स्टेशन, रेलवे लाइन, डाकघर और कलाली वगैरहपर हमले हुए। कहीं कहीं तो २३ अगस्तसे २५ अगस्त तक होते रहे। कुरसेला, रौतारा, मनसाही और सोनाली स्टेशनोमे आग लगा दी गयी जिससे इन स्टेशनोंको विशेष हानि पहुँची। सोनापुर, फौआ, सालमारी वनमनखी, रानीपतरा, मनिहारी, लाभ और कुरैठा स्टेशनके कागज-पत्र मिट्टीका तेल डाल भीड़ने जला दिये।

कुरसेलासे कटिहार, कटिहारसे वारसोई, कटिहारसे मनिहारी और वडहरासे मुरलीगज जानेवाली रेलवे लाईन काफी तौरसे तोड़े और उखाड फेंके गये।

इस तोड़ फोड़के सिलसिलेमे दुर्घटनायें भी हुईं वरारी और आजमनगर थानेमे।

पोठिया, समेली, डुमरिया, कुरसेला, महरापुर, नवावगंज वलकी आदि गांवोके लोग वड़ी तादादमें इकट्ठे हुये और रेलवे लाइनकी सीधमें रवाना हुये।

वरारी

कुरसेला स्टेशनपर मिलिटरीका अड्डा था। इस मिलिटरीके विविध उपद्रवोसे पासके वाजारवाले ही नहीं वल्कि आसपासके इन गावोके लोग भी तंग आ गये थे। मौका आया और वे उसके खिलाफ उठ खडे हुये। जव वे देवीपुर कोठीके पास पहुचे तो देखा कुछ मिलिटरीके जवान मशीनगनके साथ लाइनपर गश्ती लगा रहे हैं। वे तो उनसे भिड़ने ही आये थे, उनकी ओर वढे। वारवार चेतावनी मिली पर पीछे नहीं हटे, फिर तो इनपर मशीनगन गोलिया उगलने लगीं। कितने घायल हुये और चारकी जान तो उसी दम चली गयी।

फौआ स्टेशनपर भीड़ तोड फोड़ खत्म कर रही थी कि वहाँ मिलिटरी पेट्रोलिग ट्रेन आकर रुक गयी। भीड़ भागने लगी पर मिलिटरीने गोली चलाई ही और काफी। अरिहना मानिकपुरके झवरू केवट दो गोलिया खाकर वेहोश गिर पड़े। लोग उन्हें उठा मानिकपुर रवाना हुये। पर राहमें ही झवरूका प्राण पखेरू उड़ गया। उनकी अन्त्येष्टि धूमधामसे हुई।

आजम नगर

पूर्णियासे धमदाहा जानेवाली सड़क ज्यादा खरावकर दी गयी। धमदाहा घाटपर जितनी नावें थीं डुवा दी गयीं।

अयोध्यागंज बाजार, सोनाली रौतारा, महादेवपुर, मनिहारी, मनिसाही, होमकुञ्ज, अहमदाबाद, दिल्ली दिवानगंज, मदारीचक, पोढ़िया बरेटा, दुर्गागंज, जोतराम राय, बनौली कोठा, भवानीपुर, राजधाम, मेरीगंज, कुँआरी, कुरसा काँटा डाकघरके कागजात जलाये गये।

कदवा, भवानीपुर, सोभापुर, वैरिया, रानीगंज, विशुनपुर, मनिहारी, किशुनपुर, अहमदाबाद, मनसाली, पोठिया, फुलकाहाट, गोडाबाडी, कौनारा, कोलाशीकी कलालियाँ विशेष रूपसे तोड़-फोड़की शिकार हुयीं।

संथालपरगनामें तोड़-फोड़ शुरू किया देवघरके विद्यार्थियोने जिनके नेता और प्रेरक थे पं० पचानन मिश्र। ता० १४ अगस्तको जो छात्रोका जत्था मधुपुर गया सो

संथाल परगना लौटता हुआ जशीडीहमें अटक गया। बहुतसे लड़के स्टेशनमे घुस गये और सामान नष्ट करने लगे। कितने तार काटने लगे। फलस्वरूप कितने गिरफ्तार भी हुये जिनमें कुछ वहाके लोग भी शामिल थे।

देवघर क्रान्तिकी आगको जिला भरमे फैलाना चाहता था। जिस परचेको प० पंचाननजी पटनेसे लाये थे उसकी कापियां की गयीं और श्री रामचरित्र सिहजी उन्हें ले जिला भरमे वितरण करने निकल गये। पण्डितजी लिखते हैं—इसके पश्चात् तो चारो ओरसे तूफानका इतना जबरदस्त वेग उठा कि किसीको संभालनेका अवसर ही नहीं मिला। दोनो ओरसे अपनी शक्ति आजमाइशकी तय्यारियां हो रहीं थी। आन्दोलनको सचमुच इन्कलाबका रूप बना देनेके लिये शहरके मान्य नेता तथा कार्यकर्त्ता उत्सुक थे। उन घड़ियोमें देवघरके अमीर श्री रामबाबूका रूप दर्शनीय था। वे आज हमारे बीच नहीं हैं। जेलकी यंत्रनाको उनका कोमल स्वास्थ्य सहन न कर सका। अस्थिचर्म शेष रह कर वे जेलकी चहार दीवारीसे निकले और शहीद हो गये। परन्तु उस समय उन्होने उस ज्वालामें प्रर्य्याप्त घी डाला। आन्दोलनके सारे व्ययकी जिम्मेवारी अपने सर ले रखी थी। देहातोमें किसीसे चन्दा मांगना भी उन्होने रुकवा दिया था।

१५ अगस्तको खबर फैली कि जेलमें लोगोको भोजन नहीं मिल रहा है। इसने एक बवेला खड़ा कर दिया। बाजार बन्द हो गया और छोटी छोटी दूकानोके ही सहारे जीने वाली बूढ़ियोसे यह कहते सुना गया—"जेलमें लरिकनके मारे छे हमरीनी जीके कि करभो।" सारा शहर जेलकी ओर उमर चला। जेल सुपरिन्टेन्डेन्टने समझदारी दिखलायी, श्री रामराजजीको भीतर जाकर जेल दिखला दिया और

राजबंदियोंको पूरी सुविधा देनेकी प्रतिज्ञा की। फिर लोग वापस चले आये।

इसी समय श्री पारसनाथजी के णाके प्रभावसे तोड-फोड फूंक फाक दल संगठित हुये। तोड-फोड़ दल रेल और सडकको नष्ट करता और फूंक फांक दल डाकघरो, अवकारीकी दूकानों तथा और और सरकारी अड्डोको जलाता, वरवाद करता। पहला दल देहातके लोगोकी सहायतासे मधुपुरसे सेमुल तलाके बीचकी रेलकी पटरियोके उखाडनेमें लग गया। दूसरे दलने देवघर और आसपासके डाकघर और गाजे शगवकी दूकानोपर धावा वोलना शुरू किया। शहरके सभी डाकघर नष्ट कर दिये गये। विलासी कुण्डा और गुरुकुलके डाकघरोंकी भी यही दशा हुई। डाकघरोंके रुपये पैसे लौटा दिये जाते और उनके बाकी सामान जला दिये जाते, नष्ट कर दिये जाते। देवघरके बडे डाकघरमें भी आग लगायी गयी। इस अपराधमे एक लड़का पकडा गया जिसको जेलके अलावा वेंतकी सजा भी दी गयी। इस फूँक-फॉक दलमे सस्कृत विद्यालय गुरुकुल और गोवर्धन-साहित्य-विद्यालयके विद्यार्थी शामिल थे। देवघर जेलमे रोज हल्ला होनेसे अधिकारियोने कुछ राजवन्दियोको दुमका रवाना किया। वन्दियोंको लेकर लॉरी जब झौंसागढीके पास आयी तव रास्ता जाम देख रुक गयी। उसके रुकते ही केणादल और तमाशबीन एक साथ उसपर टूट पड़े। कैदी छुडा लिये गये और लॉरी नष्ट कर दी गयी। बेचारे सिपाही वन्दूक सहित थाने लौट आये। इस दलने शहरकी शराव गाजेकी दूकाने तोड-फोड दीं और जला दीं।

इसी बीच सरकारने गढ़वाली फौजको मंगा लिया जिसका शहरमे प्रदर्शन होने लगा। पर फौज तुरत चली गयी।

सरथा थानाके कार्यकर्त्ता श्रीशभुनाथ वलियासेने एक वारण्ट लिखकर श्रीनगदीरायको दिया जिसके मुताबिक स्थानीय थानाके जमादारको गिरफ्तार करना था। श्रीनगदीरायने जमादारको गिरफ्तार कर लिया और १२ घटे हाजतमे रक्खा। हाजतसे छूटने ही वह देवघर आया और अधिकारियोंको उसने आप वीती सुनाई।

देवघरमें गोरी फौज आचुकी थी और हाई स्कूलमे डेरा डाले थी। एस० पी० साहव उसका उपयोग करनेके लिये आतुर हो गये थे। मौका मिला वे घर जाते हुये मजिस्ट्रेटके साथ लौट आये और २६ अगस्तको फौजकी एक टुकड़ी ले श्रीरामबाबूकी दूकानपर नगदीरायजीको गिरफ्तार करने पहुचे।

देवघर

बारण्ट तो था नहीं, इसलिये नगदीरायजी थाना जानेसे इनकार करते थे। लोगोंकी भीड़ जमा हो गयी पर कुछ कर नहीं रही थी। मगर जब श्रीनगदीराय घसीटे जाने लगे तब भीड़ने रोड़े उठाये। पं० पंचाननजी लिखते है कि छतोंसे पत्थरके दो-चार ढेले आये और एक कपड़ेका जलता हुआ गेंद भी मिलिटरी लौरीके पास आ गिरा। बस, गोलियां चलने लगीं। सेना पीछे हटती जाती और गोली छोड़ती जाती। पत्थर फेंकते समय श्री अशर्फीलालजीकी छातीमें गोली लगी और वे तत्क्षण चल बसे। गोयनका धर्मशालासे उत्सुकता वश ज्योंही श्री त्रिगुणानन्द खवाड़े बाहर निकले कि एक गोली लगी और एक गोली लगी गलीसे जाते हुये छात्र श्री पूर्णेन्दु बोसको, दोनो अस्पताल भेजे गये। त्रिगुणानन्दजी तो वहां स्वर्ग सिधारे और पूर्णेनन्दुजी एक हाथ कटवाकर चंगे हो गये। दूसरे दिन शहीद अशर्फीकी अर्थी निकली। अर्थीको शानदार जलूसने सारे शहरमें घुमाया। वह जिधर जिधर होकर गुजरी उसपर फूलोंकी बरसा होती रही। अतमें शहीदका स्थानीय शहीद आश्रममें दाह-सस्कार हुआ।

इस अरसेमें देवघर थानेके भीतर कई जगह तोड़-फोड़ और फूंक फांक हुए। शहरमें तो ये दोनों काम अलग अलग दलके हाथमे थे। पर देहातमें क्रान्तिकारियोंका जो दल निकलता उसे परिस्थितिकी सुविधा असुविधा देख सभी कामोमें हाथ डालना पड़ता।

रोहिणीमे भगवान दत्तजीने स्थानीय कार्यकर्त्ताओंके सहयोगसे हाटकी टिकट वसूली वन्द करवा दी। १४ अगस्तसे ही तार काटना और रेल हटाना शुरू हो गया। वहाके ग्रेन बैंकमें जो धान था उसको प्रधान मैनेजरने बेच देनेका निश्चय किया और धान ढोनेके लिये ५० बैलगाड़ियां भेजी। रोहिणीवालोने गाड़ियोको लौटा दिया और बैंकका धान लूट लिया। घोरमारामें बालगोविन्द दासने साथियोंको बटोर हरिहरपुर डाकघरमे ताला लगाया। फिर सहरा हाटकी भट्ठी वन्द करवायी। दुमकाकी राहमे यहाका पुल जबरदस्त समझा जाता है। सबोंने इसको तोड़ देनेका निश्चय किया। देवघरसे घोरमारा आनेकी राहको इनने काट दिया और उसपर पेड़ भी काट गिराये। फिर पुल तोडने आये।

२८ अगस्तको सैकडो आदमी घोरमाराका पुल तोड़ रहे थे। देवघरसे मिलिटरी लौरियां जा रही थीं। घोरमारा पुल जब आधमील रह गया तब लौरिया

घोरमारा रुक गईं क्योंकि रास्ता जाम था। सैनिक पैदल आगे बढ़े और

पुलपर भीड़ देख अन्धा धुन्ध गोलियां छोड़ने लगे। घातक गोली लगी सिर्फ एक स्त्रीको नाम था बिराजी मिरधाईन। और घायल हुआ एक कोल जो चुपचाप घर भाग गया और जड़ी बूटीसे ही चंगा हो गया। फिर आगे बढ़कर गोरोंने एक छत्रधारी मंडलको पकड़ लिया। वह अपने दलके आदमियोंको नाम ले लेकर पुकारने लगा। रीतलाल मंडल बाहर निकल आया। दो गोरोंने उसे पकड़ लिया। रीतलाल तुरत सतर्क हो गया और दोनों गोरोंको दे मारा। तब तीसरेने गोली चलाई जो उसका जंघा छेद कर निकल गयी। छत्रधारीके साथ साथ रीतलाल भी ठुमका गया। रीतलाल चंगा हो गया और आगे चलकर छत्रधारीके साथ साथ उसे रिहाई भी मिल गयी।

अब देवघरमें कई दल संगठित हो गये जो तोड़-फोड़के कामको बढ़ाते रहे।

एक दल था श्री आनन्दी सिंह और श्री नरसिंह रायका जिनको चाननके कार्यकर्त्ताओंका भी सहयोग प्राप्त था। चाननके कार्यकर्त्ताओंके अगुआ थे नवाड़ीके श्री गिरीश्वर प्रसाद।

एक दलके प्रधान थे 'कैप्टेन' परमानन्द। इनको कांग्रेसके जत्थेका सहयोग प्राप्त था।

कांग्रेस जत्थाके अगुआ शुरू शुरूमें थे श्री मंगलानन्द मिश्र। इनका कार्यक्षेत्र था शहरका पच्छिमी हिस्सा—मोहनपुरका इलाका। पर मोहनपुरमें श्रीकृष्णप्रसाद साहु और अनूपलाल झाका भी एक संगठन था जो मंगलानन्द मिश्रके डाकू बन जानेपर तीर पहाड़के आसपास जाग्रति फैलाता रहा।

पहले दलने जिसके अगुआ श्री आनन्दी सिंह और श्री नरसिंहराय वगैरह थे, तोड़ फोड़का इतना काम किया कि दांतों अंगुली काटनी पड़ती है। एक जगह है बिशनपुर और केंदुवन काठीके बीच, जिसको ताँबेकी खानका जंगल कहते हैं। वहांसे ही होकर रेलवे लाइन गयी है। उस जगहपर आध मील तककी दोनों ओरकी लाइनोंको उखाड़ कर कार्यकर्त्ताओंने ताँबेकी खानमें डाल दिया। तारके खम्भे उखाड़ कर जंगलमें फेंक दिया। कितने स्लीपर जलावन बने और कितने लोहेके प्लेट (फिश प्लेट्स) औजार बननेके काम आये जिसका कोई हिसाब नहीं। वहांसे तारका तो नामोनिशान मिट गया। उन लोगोंने मधुरापुरके पासकी रेलवे लाइन भी उखाड़ फेंकी और गुमटीपर जितने औजार मिले सब ले लिये। वहांसे चलकर सब शंकरपुर पहुँचे और वहांके केबिनको तोड़ दिया। झंडे वगैरह जला दिये। एक दिन अंग्रेजी

पुलको तोड़ते समय मिलिटरीकी पहरा गाड़ी आ पहुँची। सभी वहांसे भागे। मिलिटरीने पीछा किया पर कोई हाथ न आया।

इन कार्यकर्त्ताओंको ज़मींदारोंसे भी भिड़ना पडा। कोइरीडीह कचहरीके तहसीलदारने वहां नंगी तलवार लटका रखी थी और पहलवानोंको वहां जुटा रखा था। कहा करता, जब तोड फोडवाले यहां आवेंगे तो हम इस तलवारसे उनका स्वागत करेंगे। एक दिन शामको ये सभी उनके यहां पहुँचे। पहलवानोंको हठात् पकड लिया और तहसीलदार साहबको घेर लिया। फिर उनने कचहरीके सारे कागजात जला दिये। और मकानमें आग लगा दी। उसी बीच कचहरीके, जो सिपाही और पहलवान बाजार गये थे, लौटे और इन लोगोंपर रोड़े फेंकने लगे। जिससे कुछ साथिओंको चोट भी लगी। फिर तो वे सब क्रुद्ध हो उठे और जिन जिनको पकड रखा था उनको कूटने लगे। तहसीलदार साहबपर काफी मार पड़ी। वहांसे कार्यकर्त्ता डाक बंगले आये जिसको बरबाद करके उनने जला दिया। इतनेमें तीन चार सौ आदमी इनकी राह रोकने आ पहुँचे। भिड़न्त हुई। लोग भगे और कार्यकर्त्ताओंने खदेड़ खदेड़कर सबोंको घर घुसा दिया और जब बार-बार ललकारने-पर कोई नहीं निकला तब सब मिलकर पुनहासी चल पड़े। वहांका ग्रेन गोला लूट लिया गया और डाक बंगला जला दिया गया। इसी तरह इस दलने बूढ़ेई पथरौड़ा, चितरा, पालो जोड़ी, और चन्दनाकी कलालियोंको जला दिया। चन्दना कलालीपर चौथी बार हमला हुआ था। इस बार कलालको खूब पीटा गया और उसके सारे सामानको चार दिनों तक जला जला कर राख कर दिया गया। सबसे अन्तमें सहाराकी कलाली जहाँ पन्द्रह सथाल तीर धनुष लेकर पहरा देते थे और कलाल कहता था कि कोई कार्यकर्त्ता पास फटका तो बिंध जायगा। पर कार्यकर्त्ताओंने उसे और उसके संथालियोंको पलक मारते बाध लिया। कलालीको सामान सहित अच्छी तरह जला दिया। उनके द्वारा कटहराका हवाई अड्डा भी जलाया गया।

इन लोगोंने मिलिटरी रोड बनानेमे भी बाधा दी। ओवरसियर और चौकीदारके सामान छीने। एक चौकीदार कार्यकर्त्ताओंको पकड़वानेमे मुस्तैदी दिखलाता, नाम था केलामृधा। उसका कान काट कर उसे देशद्रोहका दण्ड दिया गया।

'केप्टेन' परमानन्दके दलमें यादवचन्द्र मिश्र, सुरेश मिश्र, और गिरजानन्द सिंह शामिल थे। १८ अगस्तको इसका संगठन हुआ और सगवा थानासे इसने

अपने फूंक फांकके कामको शुरू किया। थानाके कागजात जलाये, चानना भट्ठी जलायी, ग्रेनगोला लूटा और उसके कागज-पत्र जला डाले। बादको यह दल सारठ थानेमें घुसा जहांके कार्यकर्त्ताओंका इसने पुनर्संगठन किया।

इसी बीच श्रीगौरीशंकर डालमिया और श्रीराम बाबू पकड़े गये और अर्थाभावके कारण जत्थाके लोग छिटफुट हो गये।

पर फिर "कैप्टेन" परमानन्दने देवघर, सरावा और सारठके कार्यकर्त्ताओंके सहयोगसे एक जत्था संगठित किया। मंगलानन्द मिश्रजीका इस जत्थेके संगठनमें बड़ा हाथ था। पंडा थे, सब जगह पहुँच थी। इसलिये अर्थ-संग्रहका भार इनने लिया था। पीछे अर्थ-संग्रहके बहाने यह डकैती करने लगे। पर शुरू शुरूमें इनने और इनके साथियोंने तोड़ फोड़ और फूंक फांकमें खूब हाथ बटाया था। "कैप्टेन" परमानन्द और श्रीमंगलानन्द मिश्रके सहयोगसे यह जत्था चमका। इनने देवघर सबडिविजन भरके १० कलालियोंको जला दिया। नकटी, लोहरडीह, कपसापड़ जोरी, गोविन्दपुर और घोरमारामें इस जत्थेने अड्डे कायम किये और आसपासमें इसके कार्यकर्त्ता फूंक फाक करते रहे।

मोहनपुरकी कलाली जलाई गयी और वहां लक्ष्मीपुर इस्टेटकी कचहरी थी सो भी जला दी गयी। देवीपुरकी कचहरी भी जलायी गयी।

दुमका

१५ अगस्तको पंडित दशरथ झाने जलूस निकाल स्कूलमें हड़ताल करवायी, फिर सबको लेकर जब्तशुदा कांग्रेस औफिस आये जिसपर सबोंने फिर तिरंगा झंडा फहराया। यहां श्रीआगर शर्मा भी जलूसमें शामिल थे। बादको जलूसने तारके खंभे उखाड़े। पुलिससे थोड़ी बकझक भी हो गयी। शहरमें पूरी हडताल रही और उसी दिन श्रीमोतीलाल केजड़ीवाल, दशरथझा, आगर शर्मा वगैरह गिरफ्तार हो गये। शामको धर्मस्थानमें सभा हुई और श्रीविश्वनाथ उपाध्याय वगैरह भी पकड़ लिये गये। फिर दुमकामें आन्दोलन दब गया। मगर देहातने तुरत अंग्रेजों भारत छोड़ दोके नारेको अपना लिया। श्री मन्मथ नाथ गोस्वामी, अजीत नाथ सरकार, कमलाकान्तजी वगैरह डाक बंगलो और कलालीको नष्ट करते करवाते रहे। जडमुण्डी डाक बंगला जला दिया गया। फिर लाल कुरती वालोंके संगठित करनेमें लागु हेमरम और भूमि पांडेयजीने काफी मेहनत की। पांडेयजीका एक दल तैयार हो गया जो शिमरतलासे बुढई स्टेट तक ध्वंसात्मक कार्यक्रमको पूरा करनेमें लगा रहा।

गोड्डाके कार्यकर्त्ताओंने पोरैयाहाट और यहगांवाकी कलालियां जलाई।
गोड्डा वहांके डाक वंगले भी जले।

मोतिया मिड्ल स्कूलके हेड मास्टर केदारनाथ झाका यहगांवामे एक दल तयार हो गया। कहलगांवके तारणी मंडल और यहगावाके सुधाकर मिश्रका भी इनको सहयोग मिला। फिर गोड्डामे तोड़ फोड़ फूंक फांक चलता रहा। वादको केदार नाथ जीने वघसरा कैम्प खोला और उनका काम वघसरा कैम्पसे होने लगा। फिर श्री महेन्द्र गोपके दलसे सम्पर्क हुआ जिसके फलस्वरूप तोड़ फोड़के शिकार वे भी होने लगे जो आन्दोलनके विरोधी समझे जाते।

मिहिजाममे हड़ताल करवा कर रेलवे स्टेशनपर अपना तिरंगा झंडा फहराते हुये श्री सत्यकाली भट्टाचार्य जामताड़ा पहुँचे। इन्हें नागरिको और विद्यार्थियोंका
जामताड़ा पूरा सहयोग मिला। सबोंका एक बड़ा जलूस बन गया जो घूमता हुआ डाकघर पहुँचा और उसमें आग लगा दी। जलूस स्टेशन भी गया जहांके तार और केबिनको उसने नष्ट कर दिया। फिर पुलिस पहुँची और लाठी चार्ज हुआ। एस० डी० ओ० ने फायर भी किया। लोग तितर बितर हो गये।

श्री जगदीश प्रसाद सिह और पृथ्वीनाथ सिहने बाजार बन्द करवाया और फिर
करमाटांड जलूस लेकर दोनों स्टेशन पहुँचे जिसपर झंडा फहराया गया।

राजमहलके कार्यकर्त्ता श्री महेन्द्रप्रसाद दास और वावू श्रीधर सिहके साथ जलूस लेकर राजमहल रेलवे स्टेशन पहुँचे जिसपर उनने झंडा फहरा दिया।
राजमहल फिर उनने अगस्त क्रान्तिके कई नारे लगाये। स्थानीय जनता इतनी भयभीत हो गई थी कि थोड़ा भी सहयोग न दे सकी जिससे ये लोग सिर्फ नारा लगा कर वापस चले गये।

साहवगंजमे अगस्त आन्दोलनके अगुआ वने प० द्वारिका प्रसाद मिश्र। इनने श्री गणेश प्रसाद अग्रवाल और मातादीन शर्माके सहयोगसे ई० आई० आर० हाइ-स्कूलमे हड़ताल करवाई। शिक्षकोमे राष्ट्रीयताका अभाव था। उनने डरा धमका कर कुछ विद्यार्थियोको हड़तालमे शामिल होनेसे रोक रखा था। पर विद्यार्थी विहारी लालने छुट्टीको घटी वजा दी। सभी विद्यार्थी निकल गये। फिर हाइ स्कूलको वन्द रखनेकी कोशिश हुई। एक दिन श्री भूपनारायण सिंह नामक मजदूरकी सहायतासे सभी आन्दोलनकारी स्कूलमें घुस गये और छात्रोंको वाहर निकालनेकी कोशिश की। पर वे कामयाव नहो हुये। फिर उनने स्कूलपर

झंडा फहरा दिया और उसके सामान नष्ट करना शुरू किया। तुरत पुलिस पहुँची और लाठी चार्ज करके भीड़को तितर बितर कर दिया। उसने बादको प० द्वारिका प्रसाद मिश्र, उनके साथी और कई छात्रोंको गिरफ्तार कर लिया।

परन्तु लोग हतोत्साह नहीं हुये। उनने ज्योंही सुना कि ब्रिटिश फौज आ रही है त्योंही वे तोड़ फोड़के लिये तैयार हो गये। लोग दल बाधकर निकले। पुराने साहबगंजकी जनता भी साथ थी। उन सबोंको विधा मिस्त्रीके यहासे औजार मिल गये जो रेलवे लाइन उखाड़नेमें खूब काम आये। वहा तार भी काटा गया।

१५ अगस्तको एक भीड़ने तहसीलदार आफिसपर हमला किया। वहांके सारे कागजात जला दिये। और कुछ करना चाहती थी कि पुलिस पहुंची और मार मार कर सबोंको भगा दिया। वहांसे तो सब भागे पर फिर जलूसमें सजकर स्टेशनपर इकट्ठे हो गये। उनमेसे कईने रेलवे कर्मचारियोसे हड़ताल करनेके लिये कहा पर फटकारे गये। फटकार खाकर फिर वे खीझ उठे और साथियोंकी सहायतासे टेलिग्राफ ऑफिसमे घुसकर तोड फोड़ करने लगे। वहां भी पुलिस पहुँची, उन्हें पीटने लगी और उनके हाथसे झंडा छीनने लगी। शीतल प्रसादजीके हाथमें भी झंडा था। उनने कस कर उसे पकड रखा था। पुलिस छीनती रह गई पर जब तक बेहोश हो कर शीतल प्रसादजी गिर न गये उनने अपने हाथसे झंडा नहीं छोडा।

१४ और १५ अगस्तको रांची शहरमें विद्यार्थियोका जलूस निकला और २२ गिरफ्तारिया हुईं।

१७ अगस्तका दिन बड़ा सनसनी खेज रहा। आगा खा पैलसेमें श्रीमहादेव देशाईकी मरनेकी खबर पाकर जनता उत्तेजित हो उठी। लोग कहते घूमने कि

रांची

सरकारने उन्हे जहर देकर मार डाला है। सारे शहरने हड़ताल मनाई। हिन्दू-मुसलमान दोनोका लम्बा जलूस निकला जिसे तितर बितर होजानेका हुक्म एस० डी० ओ० ने दिया। पर जलूस अपनी राह चलता गया, अपने नारे बोलता गया। तब एस० डी० ओ० ने पुलिससे कहा—लाठी चलाओ। पुलिसने लाठी चलानेसे इन्कार कर दिया—एकबार नहीं तीन तीन बार। पुलिसका रुख देख जलूस जरा शान्त होगया और एस० डी० ओ० से बोला कि नगर रक्षा समिति तक ही जाना है आगे नहीं। लेकिन एस० डी० ओ० जलूसको एक डेग आगे बढ़ने नहीं देना चाहते थे। उन्हें जिला कॉंग्रेसके एक भूतपूर्व सभापति समझाने

रहे। उन्हें एम० डी० ओ० ने गिरफ्तार कर लिया पर जलूस नहीं रुका। अपने लक्ष्यपर पहुंचा ही।

उस दिन सभी प्रमुख कांग्रेसी पकड़े गये और रांची शहरमें आन्दोलनका अन्त हो गया।

पर मुफस्सिल अगस्त-क्रांतिको जगानेकी चेष्टा करता रहा।

१८ अगस्तको ६ कार्यकर्त्ता मनदार पहुँचे जहाँकी थाना कमिटी औफिसको पुलिसने जब्त कर रक्खा था। उनने पुलिसका ताला तोड़ कर औफिसको फिर अपने कब्जेमें कर लिया और विधि पूर्वक वहां राष्ट्रीय पताका फहरायी और बसेरा किया। दूसरे दिन हथियार बन्द कनसूटबिल आये। आफिसको जब्त किया। एक कमरामे बुनाईका इन्तजाम था जिसे पुलिसने छोड़ रक्खा था। अबकी उसे भी जब्त कर लिया। फिर सबोको गिरफ्तार कर लिया। कुछ स्वयं सेवकोने गिरफ्तार होनेसे इनकार कर दिया जिन्हें उठा उठा कर पुलिस गाड़ीमें डाल दिया गया।

तोड़-फोडके अन्यान्य काम भी हुये। बीसो जगह तार काटे गये। लोहरदा सिल्ली तमकुम आदि स्थान उल्लेखनीय हैं। अरगरा स्टेशन और एक जगह रेलकी पटरियां भी हटायी गयीं।

रांची जिला स्कूलके कालिज विभागके भूगोल क्लासको जलानेकी कोशिशकी गयी। कुछ सामान जलाये गये पर आग शीघ्र बुझा दी गयी।

कोडरमामे आन्दोलनकी विशेप गति रही। १६ अगस्तके तीन वजे शामको कोडरमा स्टेशन और झूमरी तिलैयाके डाकघरमे आग लगा दी गयी। उस दिन

हजारीबाग

पुलिसने तिलेया बस्तीके एक दर्जन नवजवानोको पकड़ कर हाजतमें रातभर बन्द रक्खा और दूसरे दिन सुबहको पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट रसेल साहब आये और एक एक नवजवानको हन्टरसे तबतक पीटते रहे जबतक वह बेहोश होकर गिर न पड़ा। बेहोशीकी हालनमें सभी लौरीपर मुरदे जैसा फेंक दिये गये और लौरी सबोको हजारीबाग सेन्ट्रल जेल पहुँचा आयी।

डोमचाचने शहीद महादेवभाई देशाईकी निधन तिथि मनाई १७ अगस्तको। सुपरिंटेंडेन्ट और एस० डी० ओ० ने जलूसके अवधबिहारी दीक्षितको बुरी तरह पीटा और गिरफ्तार कर लिया। जनता उत्तेजित हो गई और पुलिस दलको घेर लिया। तब पुलिसने दीक्षितजीको तो छोड़ दिया पर लगभग दो दर्जन नवजवान और बचोको कोडरमा थाना पकड़ ले गये। वहा ६ बचोको पीट कर छोड़ दिया और

बाकी सबोंको नगा करके खूब पीटा और बेहोश करके जेल भेज दिया। बाबू गोवर्धनरामपर तो इतनी मार पड़ी कि फिर रोगी हो गये।

डोमचाचको जब अपने कार्यकर्त्ताओंकी दुर्गतिका हाल मालूम हुआ तब वह उबल उठा। उसने दूसरा जलूस निकाला जिसने कलालीमें आग लगा दी। और पुलिसके लाख मना करनेपर भी वह बढ़ता ही गया। पुलिसने गोली चलाई जिसके फलस्वरूप श्री नुनमन धोबी तत्काल शहीद हो गये, श्री चिन्तामणि मोदी जेलके फाटकपर और श्री उदितनारायण महतो एक अरसेके बाद।

सिंहभूमि

१९ अगस्तको ताता कारखानेके ७०० मजदूर काम छोड़ बाहर निकल आये और दूसरे दिनसे उनने हड़तालकी घोषणा की। उन्हें जमशेदपुरकी पुलिसकी पूरी हमदर्दी मिली। कारखानेके फाटकोंपर कसकर धरना दिया जाने लगा और उसका काम रुकसा गया। मजदूरोंने इतनी शान्ति दिखलायी कि विदेशी सैनिकोंको जिन्हें अंग्रेजी सरकारने वहा भेज रक्खा था अचभा हुआ।

मानभूमि

मानभूमिमे २८ अगस्तसे क्रान्तिकी विध्वंसक लीला शुरू हुई। लोग जलूस बाध कर गये और खरी द्वाराके चौकीदारी तहसीलको जला दिया फिर मानबाजार थानाकी बड़ी कलालीको जला दिया। ३० अगस्तको तो दहन दिवस कहा जा सकता है। इस दिन बडा बाजार थानाका डाकघर जलाया गया;

मानबाजारथाना

चौकीदारी आफिसके कागजात जलाये गये फिर सिन्दरीकी कलाली और सोलजर घर (Observatory Camp) फूंक दिये गये। बड़ाबाजार की कलाली बरबाद कर दी गयी और नंगसाई नदीके पुलका एक हिस्सा तोड़ दिया गया। बडाबाजार थानाके सारे कागजात आगमें झोंक दिये गये।

वन्दवानथाना

वन्दवान थाना अपने सारे कागजात और सरंजामके साथ आगका शिकार बना। चौकीदारी आफिसके कागजात भी जले। धवनीका चौकसी कैम्प और धधकाकी भट्टी भी जलादी गयीं।

पटमदा और अन्यान्य थाने

पटमदा, हूरा और पचामें चौकसी कैम्प जले, कलाली जली और सडकोंको भी नुकसान पहुँचा। पारा, बलरामपुर और अरशामें तार काटे गये। अन्दाज है कि इस विध्वंसक काममें लगभग तीन हजार लोगोंने भाग लिया।

उस जमानेमें पलामू जिला फौजियोंका अखाड़ा बना रहा। गांव गांवमें फौजी

पड़ाव और रोज रोजकी चांदमारीके कारण जिलेका वातावरण कुछ ऐसा क्षुब्ध था

पलामू

कि जनताके लिये क्रान्तिके मैदानमे आगे बढ़ना बड़ा कठिन था। तोभी पलामू कुछ किये वगैरह न रह सका। इसके प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री गौरी शंकर ओझा कबसे गिरफ्तार थे और प्रमुख नेता श्री यदुवंश सहाय ठीक ९ अगस्तकी सुबहमें गिरफ्तार हुए। इसने रोज रोज जो जलूस निकाले उसमे काफी गिरफ्तारियाँ हुई और उसपर एक दिन तो थानेपर खूब लाठियां चली फिर भी पलामूने पीछे पैर नहीं दिया।

डालटेनगजमें एक बड़ी भीडने जेनरल पोस्ट ऑफिसपर चढ़ाई की। इस भीड़मे सींकी और मेराल ग्रामकी देवियां प्रमुख भाग ले रही थीं। पोस्ट ऑफिसके पहरेदार तो भीडको देखते ही हिरन हो गये। फिर लोगोने ऑफिसके कागजात निकालें और उन्हें जला दिया। इसी बीच चार लौरियोंपर मिलिटरी पहुंची और लाठी चार्ज शुरू हुआ। करीब ४० आदमी घायल हुये और ३२ कैद कर लिये गये। इस घटनाकी खबर पाकर सारा जिला जाग उठा। सर्व श्री गणेश प्रसाद वर्मा, भागीरथी नाथ सिंह और हजारी लालजीने देहातोमे तोड़-फोड़के लिये सगठन करना शुरू कर दिया। फिर तो एक हफ्ताके भीतर सोलह भट्ठियां दो डाकघर और आठ सैनिक घर जला दिये गये।

हैदरनगर स्टेशनके निकट रेलवे लाइन छिन्न भिन्न कर दी गयी जिससे रेलगाड़ीका आना बन्द हो गया। डालटेनगंजके उत्तरके हर लेटर बक्स म्यूनिसिपल लैम्पस और पुलिस चौकियोका नामोनिशान मिटा दिया गया। डालटेनगंजसे गया जानेवाली सड़कको तीन तीन जगह काट दिया गया और कंडा ग्रामके निकट एक पुलको बरबाद कर दिया गया।

हुकूमतपर हमले

क्रान्तिके शुरुके उफानमें तोड़फोड होता ही है। अपने विहारमें भी हुआ और खूब हुआ। प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी पटनाके शुरूके सरकूलरोंमें अनेक आदेश होते थे पर तोड़ फोड़ जैसा ठोस और देश कालके अनुकूल दूसरा आदेश नहीं मिलता था। इसलिये जनता स्वभावतः तोड़ फोड़की ओर ही झुकी। पर सरकारका प्रतिघात और पुन जनताका प्रत्याक्रमण अनेक स्थानमें अनेक प्रकारकी घटनाओंकी सृष्टि करते। इन घटनाओंको तिथिवार देखा जाय तो तोड़ फोड़के बाद धावे हुये और धावेके बाद अमुक अमुक—नहीं कहा जा सकता। पर स्पष्ट है कि भिन्नभिन्न आदेशके पीछे भिन्न भिन्न विचारधारा काम करती रही है और एक विचारके बाद ही दूसरे विचार सब आये हैं। इन्हें समझनेके लिये घटनाओंको भिन्न भिन्न परिच्छेदमें रखना आवश्यक है। विचारोंके तारतम्यको हम तभी समझ सकेंगे। और प्रान्तके सरकूलरोंपर नजर डालिये। पहले तोड़ फोड़का सरकूलर आया और बादको धावेका फिर पचायत और प्रचारका।

और क्रान्ति इन तीन सीढ़ियोंसे ही अपने चरम लक्ष्यपर पहुंचती है, यानी पहले दुश्मनोंकी गतिविधिके साधनोंको ध्वस करना फिर उनकी ताकतकी गद्दियोंपर जमजाना और तब अपनी व्यवस्था तथा प्रचार करना।

जितने सरकूलर निकले सभोंमें बीसों आदेश हैं। पर कामके हैं १ ला और ५वां सरकूलर ही। और पांचवेंमें तो सभी सरकूलरोंके आदेशका निचोड दे दिया गया है। देखिये —

सरकूलर नम्बर ५

करो या मरो

हिन्दुस्तानकी आजादीकी लड़ाई छिड़ गई है। आज हम अपनेको आजाद समझते हैं और ब्रिटिश सरकारकी सत्ताको नहीं मानते हैं। इसलिये ब्रिटिश सरकारके किसी कानून और हुक्मको नहीं मानना चाहिये। इसके अलावे नीचे लिखे प्रोग्रामको पूरा करके अपनी लड़ाईको सफल बनाना चाहिये।

आपको क्या करना चाहिये

१ शिक्षक और विद्यार्थी "स्कूल कालिज छोड़ दें।"

२ वकील मुख्तार "कचहरी जाना छोड़ दें।"

३ पुलिस पलटनवाले और सरकारी नौकर "सरकारी नौकरी छोड़ दें।"

४ कारखानोंके मजदूर खासकर रेलवे और जहां सरकारी चीजें तैयार होती हैं वहांके मजदूर काम करना छोड़ दें और हड़ताल कर दें।

५ रेलवे लाइन उखाड़ दिये जायं, बड़े बड़े पुल तोड़ दिये जायं, तार और टेलिफोनके तार काट दिये जायं, और सड़क काट दिये जायं।

६ कचहरी, अदालत, थाना और डाकघरपर कब्जा कर लिया जाय और उनपर तिरंगा झंडा फहराया जाय।

७ चौकीदारी आदि टैक्स देना बन्दकर दिये जायं।

८ पुलिस और पलटनवालोंके हथियार शान्तिपूर्वक ले लिये जायं।

९ नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा जाय।

१० किसान भाई मालगुजारी देना बन्द कर दें लेकिन जो जमींदार लड़ाईमे हमारा साथ दें और सरकारकी "रोल और रेवेन्यू" देना बन्दकर दें उन्हे थोड़ी माल-गुजारी दे देनी चाहिये।

११ पुलिस और पलटनवाले लाठी और गोली नहीं चलायें।

१२ "पुलिस हमारे भाई हैं"; "पलटन हमारे भाई है"; "हिन्दू-मुस्लिम भाई हैं"; "हिन्दुस्तान आजाद है"; "अहिन्सा हमारा अस्त्र है" के नारे लगाये जाय।

१३ अहिंसा पूर्वक वे सभी काम किये जायं जिससे अंगरेजी सरकारकी ताकत घटे और उसके कानूनकी अवहेलना हो।

१४ सदा अहिंसात्मक रहे।

१५ जनताकी सहानभूति अधिक प्राप्त की जाय।

क्या नही करना चाहिये

१ ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जिससे जनताकी सहानुभूति हम खो बैठे।

२ रोशनीवाली बिजली कल और पानी कल नहीं बन्द करना चाहिये।

३ भंगियोकी हड़ताल नही करानी चाहिये ।
४ हिंसाका कोई काम अर्थात् किसी व्यक्तिके शरीरको चोट पहुचानेवाला काम नहीं होना चाहिये ।

नोट:—रेलगाड़ीकी लाइन और तार जहां जहां काटे गये हैं वहां वहां हमारा दुश्मन, अगरेजी सरकार, फिरसे उनको मरम्मत करनेकी कोशिश कर रहा है। इसलिये इन्हे फिर तोड़ कर गायब कर देना चाहिये ताकि फिरसे इनकी मरम्मत नहीं हो सके। जहापर लाइन और तार नहीं काटे गये हैं वहा भी जल्दी काट डालना चाहिये ।

गोरी फौजके पास सिर्फ ३२ फीट खाई पार करनेके सामान है। अगर इससे ज्यादा ४० फीट चौडी खाई खोद डालें तो इनके लिये पार होना असंभव हो जायगा।

आजाद हिन्दुस्तान जिन्दाबाद !

प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी, पटना।

इस सरकूलरने तोड फोडपर खूब जोर दिया है पर जबतक यह गांव गाव पहुचा तबतक तोड फोडकी आंधी धीमी पड गयी थी। ध्वसात्मक प्रवृति जितनी बढ़ चुकी थी तत्कालीन परिस्थितिमे उससे आगे बढ़ नही सकती थी। इसलिये स्वभावत छठे आदेशकी ओर जनताकी क्रियाशीलता झुकी। इस झुकावने आन्दोलनकी दिशामे एक खूबी ला दिया। तोड फोड़के अखाड़े बने शहर और रेलवे स्टेशन। पर धावाका आन्दोलन तो गाव गावमे घुस गया। इस तरह कि धावे हुये गावके केन्द्र थानोपर और धावा करनेवाले आये गाव गावसे। इस कारण वह छठा आदेश ग्राम प्रधान रहा, तोड़ फोडके आदेशकी तरह शहर प्रधान नहीं।

पटना जिला तो ११ अगस्तसे ही हुकूमतपर हमला कर रहा था। दो दिनमें उसने हर थानेकी नीवको हिला सा दिया। जो थाने बचे उनपर भी धावे शुरु हुये।

बख्तियारपुर थानापर १२ अगस्तको चढाई हुई श्री रामबरण सिंह 'सारथी' को लेकर। झडा फहरानेके समय पुलिसने उन्हे गिरफ्तार करके हाजतमें डाल दिया।
पटना लोग बिगड़े और सारथीजीको हाजतसे निकाल लेना चाहा, पर पुलिसकी सख्या काफी थी। लोगोने ढेले फेंकना शुरु किया ताकि पुलिस भाग जाय या इतना कमजोर पड जाय कि सारथीजीको हाजतसे निकालनेमें बाधा नहीं दे सके।

श्री नाथु प्रसाद यादव अगुआई कर रहे थे। दारोगा अनवर खांने उन्हें थानामे दाखिल होनेसे मना किया, उनने नही माना। जिसपर वे गोलीके शिकार बनाये गये। आप कांग्रेसके पुराने कार्यकर्त्ता थे और सार्वजनिक कामोमे सदैव हिस्सा लिया करते थे।

हिल्सा थानापर ता० १५ अगस्तको धावा हुआ। जनता थाना जलाना चाहती थी और पुलिस घुसने नही देती थी, फलत ढेले चले जवाबमे। गोलीसे कुल ५ आदमी मारे गये—भूलनराम (गन्नोपुर) भीमसेन महतो (इन्दौत) सिब्बूराम, सुखारो चौधरी और चरित्र दुसाध (बनबारीपुर)। देश भक्तिकी भावनासे ओत प्रोत इन वीर पुंगवोकी लाशे अन्तिम सस्कार हेतु भी नही दी गयी और थानाके समीप ही जला दी गयी।

ता० १७ अगस्तको लगभग दस हजारकी भीड़ विक्रममे पहुँची। दारोगा सत्यनारायण सिंहको इसकी सूचना पहलेसे ही मिल चुकी थी। उनको ओरसे विद्रोहियोको रोकनेके लिए आस पासके गावोसे बन्दूके पहले ही मगा ली गयी थी। कुछ लोग किरायेके बलपर थानाकी रक्षामे बुला लिये गये थे। भीड़ थानाके समीप पहुँची। भीडको तितर-बितर करनेकी भरपूर कोशिश की गयी। किंतु सारी कोशिशे बेकार साबित हुई। फिर थानाके दारोगा श्री सत्यनारायण सिंहकी आज्ञासे दनादन पुलिस गोलिया चलाने लगी, जिसमे तीन शहीद हुये। विक्रम हाइ स्कूलके छठे क्लासका लडका चौदह सालका रगनाथ और त्रिवेणी शर्मा (काब) और बुटाई महरा (सोरमपुर)।

ता० १४ अगस्तको श्री जगतनारायण लाल नौबतपुर पहुँचे। जनतासे बोले—"निर्दयी सरकारने हमारे पूज्य नेताओको जेलमे बन्द कर दिया है और अब हिन्दुस्तान आजाद हो गया है पर आप लोग एक छोटासा थानापर भी दखल नहीं कर पाये हैं। गांधीजीके द्वारा पूछे जानेपर आप किस मुंहसे क्या जवाब देंगे ?

सुनते ही लोगोमे जोशका तूफान आ गया। वे जुलूस ले थानापर चढ़ गये। पुलिसकी पीठपर महथ संतदास भी बंदूक लेकर और अपने आदमियोके हाथमे भाले और गड़ासे देकर थानाकी रक्षामे तत्पर थे। थानापर झडा फहरानेकी ज्योही कोशिश हुई कि लोगोपर थानावालोने लाठी और भालेसे आक्रमण किया। वे हटे और फिर दोनों ओरसे लगभग २७ मिनट तक ढेलेबाजी हुई। अब लोगोने फिर जोर लगाया। सबके सब थानाके हातामे घुसे कि गोली चलने लगी। फलत दो शहीद हुए—लक्ष्मी पासमान वारीचकके और ....।

पालीगंजमे जबरदस्त सगठन रहनेके कारण थानाको झुकना पडा और १४ अगस्तको थानामे ताला लगा दिया गया। १५ अगस्तको दारोगाजीने स्वय 'इन्कलाब जिन्दाबाद'

का नारा लगाते हुये झंडा फहराया। आजके ही दिन एक जत्था ठलारसे अरवलकी ओर बढा जा रहा था, उस जत्थापर पुलिसकी ओरसे अचानक गोली चलाई गयी, जिसमे रामकृत सिंह (कोहडा-रानीपुर) की बांहमे गोली लगी। वहांसे उन्हे घायलकी अवस्थामें पालीगज अस्पतालमे लाया गया। जहां उनकी मृत्यु हो गयी। इस बहादुरको एक हजार व्यक्तियोंने गाजे वाजेके साथ महबलीपुर सोन नदीमे अन्तिम सस्कार किया।

पुनपुन थानाको जनताने जला दिया और थानापर झंडा फहराये गये। पुलिस बाधक नहीं हुई।

बाढ़मे भी कांग्रेस कर्मियो द्वारा एस० डी० ओ० के कोर्टपर झडा फहराया गया। फलत: जुलूसपर लाठी चार्ज हुआ। कई व्यक्ति घायल हुए। बाढ़ रेलवे स्टेशनके कागजात, फरनीचर मशीनरी इत्यादि सामान जला दिये गये।

फुलवारी थानाके चौराहेपरके तारको काट दिया और थानापर राष्ट्रीय झडा फहराया। फुलवारी कॉटन मिल्सके एव साइकिल फैक्टरीके मजदूर बडी सख्यामे उत्साहसे सराबोर होकर आंदोलनमे शामिल हुए।

इस्लामपुरमे भी १६ अगस्तको झंडा फहरा दिया गया और अस्थामा थानामे भी पो० ओफिस और थानापर झंडा फहराया गया। किसी तरहका उपद्रव नहीं हुआ।

चडी थानापर ता० १६ अगस्तको कांग्रेस कार्यकर्त्ताओ और आस पासके उत्साही जनताके द्वारा धावा हुआ। जब थानामे ताला लगाया जाने लगा तो दो तिहाई भीड डाकखानेको जलानेके लिये चली गयी। जो लोग थानाके समीप रह गये वे सोचने लगे कि कमसे कम थानाके कागजातको जला देना चाहिये। उन सबोंने अपनी इच्छा प्रकटकी तो पुलिसकी त्यौरी बदल गयी। जनता क्रोधके आवेशमे आकर थानाके भीतर घुसनेकी कोशिश करने लगी। जिसपर पुलिसकी ओरसे लाठी चार्ज किया गया। इसके बाद जनताकी ओरसे भी रोड़े चलने लगे। फिर हल्ला हुआ कि जामादार साहबकी स्त्रीको भी ढेला लगा। पुलिस बौखला उठी और गोली चलाने लगी। जिसमें गोरखपुर निवासी श्री विन्ध्येश्वरी शर्मा शहीद हुए। आपकी अवस्था करीब सत्तरह सालकी थी। कांग्रेसके पुराने कार्यकर्त्ता श्री जगन्नाथ सिंह भी बुरी तरहसे घायल हुये। आज भी आपका हाथ बेकार सा हो गया है। जब विन्ध्येश्वरी शर्मा गोली खाकर जमीनपर छटपटने लगे और पानी-पानी चिल्लाने लगे ; एक चौकीदार गड़सा लिये आ पहुँचा और प्यासे एव घायल तड़फड़ाते युवकको गड़ासेका भरपूर हाथ जमाया। परिणाम-स्वरूप शर्माजीके प्राण पखेरू तत्काल उड़ गये।

गया सदरके शेर घाटीपर चढ़ाई करनेके लिये छात्रोंका जलूस आगे बढ़ा। जब वह छात्रावासके पास पहुँचा तब पुलिसने उसे लठियाना शुरू किया। बहुत लडके चोट खाकर इधर उधर भागे और फिर अपने पांच-सात-साथियों को गिरफ्तार देख संगठित होकर आगे बढ़नेकी हिम्मत न कर सके। पर दूसरे दिन बड़ी ताकत लेकर थानेपर हमला करनेका प्रोग्राम बनाया। पर मिलिटरी आगई और वे कुछ कर न सके। लेकिन उनने तार काटे।

गया सदर

इमामगंज थानाके कार्यकर्त्ताओने आनन्द और उत्साहसे इमामगंज थानेपर कब्जा जमानेका प्रोग्राम बनाया। वे जलूस लेकर वहां पहुँचे। दारोगाने उनका स्वागत किया। कार्यकर्त्ताओने थानेपर झंडा फहराया और सर्वसम्मतिसे उसे आजाद थाना घोषित किया। कुछ दिनके बाद थानेवालोने थाना खाली कर दिया।

डुमरियाके कार्यकर्त्ताओने एक सभा की जिसमे सभी वर्गके लोग मौजूद थे। सबोने तय किया कि हमे थानापर कब्जा कर लेना चाहिये। उनकी इस प्रस्तावकी खबर थानेवालोको लग गई और वे १६ अगस्तकी रातको थाना छोड़ भागे। नजदीक ही छकरबन्धा खास महाल है उसके अमलोने भी पुलिसको भागती देख उतने ही जोशसे उसका अनुशरण किया।

जहॉनाबाद सबडिविजनके अरवल थानेपर १५ अगस्तको चढ़ाई हुई। अरवलके कार्यकर्त्ताओंको उस जत्थेसे बड़ी मदद मिली जो उलारसे निकला था और गांव गांवमें क्रांतिके नारे लगाता हुआ अरवल पहुँचा था। अरवलके दारोगा रामाधार सिंह, कान्सटेबिल, चौकीदार और दफादारको लेकर थानेकी रक्षाकर रहे थे। इन्हें मंजूर नहीं था कि थानेके हातेमे अगस्त क्रांतिके नामसे किसी ढंगकी कोई कार्रवाई हो। बढ़ती हुई भीड़को तितर बितर हो जानेको कहा गया किंतु भीड़ झंडा फहराकर और थानेको अपने कब्जेमें करके ही वापस जाना चाहती थी। चौकीदार और दफादारकी लाठियाँ लोगोको पीछे धकेलने लगीं। लोगोने उनका सामना किया, जिसपर रामाधार बाबू गोली चलाने लगे और अपने मातहतोको भीड़पर आक्रमण करनेके लिए कहा। बहुतोंको चोट लगी, बहुत घायल हुये और उलार जत्थाके रामकृत सिंहके मर्म स्थानमें गोली लगी। वे पालीगंजके अस्पतालमें लाये गये जहां दूसरे दिन शहीद हो गये। उनकी शहादत पालीगंजके कार्यकर्त्ताओंमें जान लायी। सैकड़ो इकट्ठे हुये और बाजे गाजेके साथ सोन नदीके तटपर शहीदकी अर्थी लेगये और दाह संस्कार किया।

जहॉनाबाद

कुर्थाथाना

कुर्थाथानाके कार्यकर्त्ताओंने श्रीश्यामविहारी लालके नेतृत्वमें पुलिस थानेपर हमला किया। बाबू श्यामविहारी लाल कुर्था थानाके मंत्री थे। जब कार्यकर्त्ताओंका जुलूस थानेके पास पहुचा तब लोगोकी एक भीड़ आकर शामिल हो गई और क्रान्तिकारी नारे लगाती हुई थानेमें घुसने लगी। थाने वालोंने उन्हें रोका। वे भाले, गडासे लिये लोगोका सामना करनेके लिये तैयार थे। श्यामविहारी वाबूने उनसे कहा कि हम मार पीट करने नहीं आये हैं। हमारा उद्देश्य है थानेपर काग्रेसका झडा फहरा करके अगरेजोंको कह देना कि वे हिन्दुस्तानसे चले जाय, हमलोग आजसे आजाद हैं, पुलिस हमारे भाई हैं; हम सब मिल करके अपना काम आप सम्भाल लेगे। उनकी बातोंका थानावालोंपर कोई असर नहीं हुआ। जमादार गुलाम हैदर खॉने घुडक कर उन्हें थानासे निकल जानेको कहा। लोग तैशमें आगये और थानेमें घुसने लगे, थानेवाले उन्हें धकेलने लगे, फिर लाठीयां चलाई और रोडे खाये। इसी बीच श्यामविहारी लालपर गड़ासेका कई घातक वार जमादार गुलाम हैदर खॉने किया। श्यामविहारीजी वेहोश गिर गये। फिर वे अस्पताल पहुँचाये गये जहा शहीद बन गये।

घोसी थानापर केदारनाथ वर्माके नेतृत्वमें छात्रोंका एक जलूस निकला। जलूस थाना आया जहां दारोगाने उसकी राह रोक ली। कहा, थानेमें हम सरकारके खिलाफ कुछ करने नहीं देंगे। छात्रोंने दारोगाकी बात नहीं मानी। वे धड़धडाते हुए थानेमें घुसे, मकानपर फाद गये और झडा फहरा दिया। फिर उनने थानेके कागजात इकट्ठे किये जिनमें आग लगा दी। फिर थानेका फरनीचर उनने निकाल फेंका और तोड़-फोड़ दिया।

मखदुमपुर

मखदुमपुर थानापर प्रयाग नारायण सिंह, ब्रह्मदेव नारायण सिंह और रामकिशोर प्रसादने बहुतसे सगी-साथियोंको लेकर हमला किया। थानेपर झंडा फहराया, उसके कागजात जलाये और सामानादिको इतस्तत कर दिया।

औरंगाबाद सबडिविजन

नवीनगरमें दल बॉधकर जब जनता थानेपर झडा फहराने गई तो वहॉके दारोगा रघुनाथ सिंहने उसपर फायर किया, जवाबमें जनता उनपर टूट पडी, दारोगा साहबका फायर ठढा पड गया। लोगोंने उन्हें पकड़ लिया और घू से-लातसे खूब मरम्मत की। सयोगसे वहाके मेडिकल ऑफिसर डा० रामेश्वर तिवारी उधर आ निकले। उनने लोगोंको शांत किया। घायलोंकी

मरहम-पट्टी की और दारोगा साहबका भी इलाज किया। पर दूसरे दिन जब
नवीनगर थाना गोरी पलटन आयी तो दारोगाजीने उसके अफसरसे कहा कि
डाक्टर साहबके इशारेसे ही उनपर हमला हुआ था। डाक्टर साहबने काफी
सफाई दी तो भी उनकी बन्दूक जब्त कर ली गई। थानाको बरबाद करनेपर जनता
तुल गयी, उसने दूसरी बार थानेपर हमला किया और उसे बरबाद कर दिया।
थाना नवीनगरसे उठ गया और वहाँका डाकखाना भी बन्द हो गया।

कुटुम्बा थानेपर जब जनताका धावा हुआ तब पुलिस एक ओर हट गयी।
जनताने थानेपर झंडा फहराया, उसे अपने कब्जेकर लिया। पुलिसवाले वहाँसे
कुटुम्बा चले गये। वहाँका डाकखाना भी जन आक्रमणके सामने
टिक न सका।

गोहके थानेपर भी जनताने हमला किया। थाना और डाकखाना दोनो गोहसे
गोह हटा लिये गये।

आवेराके कार्यकर्त्ताओने पहले डाकखानेको दखल किया, वहासे वे थाना गये
आवेरा जिसपर उनने झडा फहराया और उसपर अपना दखल भी जमाया।

रफीगंज थानेमे छात्रोका अच्छा संगठन था। उनका जलूस थाने आया और
रफीगंज पुलिसकी आखके सामने थानेपर तिरगा झडा फहरा दिया।
वहांसे वे रेलवे लाइनकी ओर बढ़े, रेलकी पटरिया उखाडनी शुरू कर दीं,
टेलिग्राफके तार भी उनने तोड़ फेंके।

साहार थानाके कार्यकर्त्ताओने जब थानापर हमला करनेका निश्चय किया तब
वहाँके विद्यार्थी बड़े उत्साहित हुए। सबोने मिलकर थानेपर हमला किया, थाने
वाले मौजूद थे पर डरसे चुपचाप एक ओर खड़े थे। कार्यकर्त्ताओने थानेके कागज
शाहाबाद सदर सबडिविजन पत्रोको समेटा और उनमे आग लगा दी। फिर
थानेपर उनने अपना झडा फहराया और एलान किया कि आजसे थाना काग्रेसका
होगया। और यहासे सारे थानेकी व्यवस्था कार्यकर्त्ताओ द्वारा होगी। यद्यपि
कार्यकर्त्ताओने थानेवालोको भगाया नहीं तथापि वे इतनी आजादीसे अपने आजाद
थानेमे आते-जाते रहे और क्रातिकारी प्रदर्शन करते रहे कि थानेवालोके लिए वहा
सास लेना मुश्किल हो गया ओर वे थाना छोड़कर जो चले गये सो दो महीने तक
झाकने नहीं आये।

- पीरोके कार्यकर्त्ताओने कालिजके विद्यार्थियोकी सहायतासे थानापर हमला किया और थानेके कागज-पत्रोको जला दिया। उसके फरनीचरको बरबाद कर दिया।

पीरो थानेमें डाकघरके १७६० रुपए रखे थे। उस रकमको ले लिया। फिर उनने थानापर अपना झडा फहराया। थानेवालोको सामने आनेका साहस नहीं हुआ।

- जगदीशपुर थानाको कब्जामें लानेका विचार पहले पहल उठा हाइ-स्कूलके लडकोंके मनमे। कार्यकर्त्ताओने उनका साथ दिया। फिर एक बडे जलूसके

जगदीशपुर थाना रूपमें थानेपर पहुँचे। थाना वालोने कहा कि हमलोग किसी बागीको थानामें घुसने नहीं देंगे, न झडा फहराने देगे और न कोई काम करने देगे। पर कार्यकर्त्ता आगे बढते ही गये, उनने कहा कि गोली ही हमारी चाल धीमी कर सके तो कर सके। कार्यकर्त्ताओने थानेमे घुस वहाके कागज-पत्रोको जला दिया और थानापर अपना झडा फहराया दिया।

साहपुरने भी सरकारी थानेपर हमला किया। थानेके कागजात जला दिये और

साहपुर उसपर तिरगा झडा फहरा दिया।

बडहरा थानेके कागजातको कार्यकर्त्ताओने जला दिया। फरनीचर बरबाद कर

बडहरा थाना दिये और थानेपर कब्जा कर लिया। थानावाले भाग गये, थानेपर काग्रेसका झडा फहराता रहा।

सदेश थानापर चढाई करनेके लिए कार्यकर्त्ताओने काफी तैयारी की और एक बडा जलूस लेकर थाना पहुँचे। थानेवाले इन्हे रोकनेके लिये सचेष्ट थे। इसलिए

संदेश जब भीड थानेमें घुसी तो चौकीदारो और कन्सटेबिलोंने उसे रोका। फिर तो हाथा-पाई शुरू हो गयी। भीड रुकी नहीं नारे बुलन्द करती हुई थानेमें घस आई। उसने किरासन तेल कागज-पत्र, फरनीचर और मकानके ऊपर नीचे छिडक दिया। फिर सभी जगह आग लगा दी धू-धू करके थाना सामान सहित जल गया थानेवाले न आगको फैलनेमे रोक सके और न भीडको बढनेसे।

- १६ अगस्तकी शामको डुमराव नगर और दिहातोंकी जनता डुमराव थानेपर उमड पडी। "पुलिस हमारा भाई है", "इन्कलाब जिन्दाबाद के" नारोके साथ जब

डुमरांव वह थानेके पास पहुँची, तब थानेदार देवनाथ सिह अपने अन्य पुलिस साथियोको लेकर थानेकी मोर्चाबन्दी करने लगे, उनने लोगोको सावधान कर दिया कि वे आगे बढे गे तो गोलीके शिकार होंगे। पर लोग तो थानेको काग्रेसके

कब्जेमें लानेके लिये थाने आये थे और सब खतरोको सोच समझ कर फिर पुलिसके कडे रुखके बावजूद भी नवजवान आगे बढ़े थे। बस, रिवाल्वरसे गोलियां दनादन निकलने लगीं। चार व्यक्ति—श्री कपिल मुनि कमकर, श्री गोपाल कमकर, श्री रामदास बढई और श्री रामदास सोनार घटनास्थलपर ही शहीद होगये। ११ व्यक्ति बुरी तरह घायल हुए। बहुतोको तो कई कई छर्रे लगे। भीड़ भाग खड़ी हुई। १७ अगस्तको शहीदोकी लाश लेकर एक बड़ा जुलूस निकला। बक्सरके सभी नगर निवासी अर्थीके साथ लग गये। रामरेखा घाटपर 'अमर शहीद जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए शहीदोंका अंतिम संस्कार' किया गया। उसी रोज चार बजे शामको डुमराव थानेपर जनताकी अपार भीड़ इकट्ठी होगई। थानेदार और कनस्टबिल थाना छोड भागे और पासके एक दूसरे मकानमें जा छिपे। क्षुब्ध जनताने थानेकी इमारत और कागजात मय सामान जला दिये। १८ अगस्तको डुमरांव स्टेशनका मालगोदाम लूट लिया गया।

नावानगर — नावानगर थानेपर छात्रोंका जुलूस गया और उसपर झंडा फहरा आया। थानेपर कब्जा करनेकी कोशिश की गई। पर कामयाबी नहीं मिली, गावके ही नहीं बल्कि थानाके भी राजपूतोकी एक अच्छी संख्या लाठी, भाले, गडासे लेकर थानेपर पहरा देने लगी। पुलिसका रुख अच्छा था, इसलिए गाँव वालोको पहरा देनेमे मन लगता और कार्यकर्त्ताओंको आपसमें ही लड़ मरनेकी हिम्मत न होती।

राजपुर — राजपुर थानेपर पॉच हजार आदमियोकी भीड़ २० अगस्तको चढ आई। थानेके इमारतपर उसने झंडा फहराया, वहा सभा हुई। जिस सभामें सब-इन्सपेक्टर और जमादारने झडाभिवादन किया। सब-इन्सपेक्टरने सरकारी नौकरीसे अपना इस्तीफा लिख कर थाना कांग्रेस कमिटीके सभापतिके हाथमें दे दिया और कबूल किया कि मैं आजसे कॉग्रेस सेवक बन गया और कॉग्रेसके प्रोग्रामके मुताबिक हो काम करूगा।

बक्सर — बक्सर थानेपर हमला हुआ १७ अगस्तको। थानेपर झडा फहरा दिया गया और उसके कागजात ज . . थानेमें अपना ताला भी लगा दिया। सात दिनो तक थाना कॉग्रेसवालोके अधिकारमें रहा।

नासरीगज थानापर १५ अगस्तको चढाई हुई। चौकीदार, दफादार और थानेके अधिकारी थानेमें मौजूद थे। भाले, बर्छे, और दो नाल बदूक लेकर सभी

सासाराम चारो तरफसे थानेकी हिफाजत कर रहे थे। लेकिन जनताकी बेशुमार, पर शान्त भीड़के आगे उन्हें झुकना पडा। थानेदार और जमादार भीडके अगुआ श्रीरामाशीष सिंहसे मिले और सारी बातें जान-बूझ कर उनने आत्म-समर्पण किया, लेकिन कुछ कागजातके देनेसे इनकार किया। आन्दोलनकारियोंने थानेपर झंडा फहराया जिसका अभिवादन गाँधी टोपी पहन कर दारोगाने किया। वह अपना टोप फेंक चुका था। और गाँधीजी, तथा आजाद भारतकी जयजयकार मना रहा था। भीडने थानेके कुछ कागजात जलाये और थाना ऑफिसमें कॉंग्रेसका ताला बन्द कर विदा हुये।

चेनारीथाना चेनारीके कार्यकर्त्ताओंने बडे साजबाजसे एक जलूस निकाला, जिसको लेकर वे थाने आये। वहाँ उनने विधि पूर्वक कॉंग्रेसका झडा फहराया और उनके साथ-साथ थानेवालोंने भी झडेका अभिवादन किया। फिर इनने कांग्रेसकी ओरसे थानापर दखल जमाया। थानावाले कुदरा चले गये। एक हफ्ता वह थाना कॉंग्रेसके कब्जेमें रहा। थानापर कब्जा करके कार्यकर्त्ता गावोंमे घूमने लगे। पचायतकी स्थापना करना और डाकुओंसे रक्षा करनेके लिए सेवा दलका सगठन करना उनका काम रहा।

नोखाथाना नोखा थानाको कब्जेमें लानेके लिए उसपर बार-बार हमले हुए। पहली बार आन्दोलनकारी कुछ कागजोंको जला पाये। दूसरी बार उनको कितने हथियार बन्दोंसे मुकाबिला हुआ कि डट न सके, तितर-बितर होगये। तीसरी बारके हमलेमें छात्रोंने खूब हाथ बटाया। इनका दल गया और थानेके कागजात जलाकर उसपर अपना झडा फहरा दिया।

डीहरीथाना डीहरी थानाको लोगोंने चारों तरफसे घेर लिया। पर थानेवाले भी कमजोर न थे। बन्दूक और पिस्तौल और तरह-तरहके हरबे हथियार लेकर वे सामने आये। आन्दोलनकारियोंने उन्हें अगस्त क्रान्तिका सन्देश दिया और उनसे देशका साथ देनेकी अपील की। दारोगा साहब मान गये, उनने झडा फहराया और आन्दोलनकारियोंको थानेपर झडा फहराने दिया। फिर गाधीजीकी जयकारके बीच लोग थानेसे विदा हुए।

दिनाराथाना दिनारा थानाके कार्यकर्त्ताओंने जनताकी एक सभा बुलाई और उनसे पूछ कर तय किया कि थानेपर हम लोगोंको कब्जा कर लेना चाहिये। जुलूस बाँध कर वे थानेपर गये। वहां झडा फहरा दिया और थानेको कब्जेमें कर लिया।

१६ अगस्तको भभुआके कार्यकर्त्ताओंने थानापर हमला किया। उनने दारोगाको समझाया कि वह देशके नामपर थानाको कांग्रेसके लिए छोड देवे और उनको
भभुआ उसपर झंडा फहरा कर कांग्रेसका कब्जा घोषित करने देवे। पर दारोगा साहब टससे मस नहीं हुए और गोलीके सहारे उनने कार्यकर्त्ताओंको थानासे दूर ही रखना चाहा। पर जनता रुकनेवाली नहीं थी, वह थानामें 'इन्कलाब जिन्दाबादका नारा बुलन्द करती हुई बढ़ी। तुरत उनपर गोलियाँ दगने लगीं। कितने घायल हुए और एक तो तत्काल शहीद हो गया, नाम अन्तुराम।

१४ अगस्तको कुदरा थानापर चढ़ाई हुई लोग वहाँ गये और थानाके मकानपर कांग्रेसका झडा फहरा दिया।

१६ अगस्तको दस बजे दिनका वक्त था जब चार हजार जनता दुर्गावती थानेमें उमड़ आई और थानापर अपना झंडा फहरा दिया।

१८ अगस्तको जैतपुर, रघुनाथपुर, रुपौली आदि स्कूलोंके छात्रोंका एक दल
मुजफ्फरपुर पारूथाना पहुँचा और वहाँ कांग्रेसका झडा फहराया गया। लगे हाथ उस दलने रजिस्टरी आफिस, आबकारी आफिस और डाकखानेपर भी झडे फहराये। लड़कोंने डाकखानेके कुछ कागजात भी फाड़ डाले।

२२ अगस्तको कांग्रेसके कार्यकर्त्ता एक बडा जलूस लेकर थाना आये। स्वयंसेवकोंको थाना घेरकर बैठ जानेका आदेश दे श्रीधरशर्माजी थानेदारकी ओर बढे। परिस्थिति
पारूथाना समझ थानेदारने थानेका चार्ज उन्हें दे दिया। फिर उनने स्वयसेवकोंको बुलाया और विधिपूर्वक थानेमें झडा फहरानेका आदेश दिया। दारोगाको माला पहनाई गई और दारोगाने भी शर्माजी और अनान्य प्रमुखोंको मालाएँ पहनायीं। इधर "झडा ऊँचा रहे हमारा" से थानेका वातावरण गूंज रहा था, उधर दारोगाजीका भेजा हुआ जमादार सुरेश झा मिलिटरीसे भरी हुई दो लारियोंको हड़हड़ाता हुआ थाने लेआ रहा था। मिलिटरीकी लॉरियाँ ठीक उस समय पहुँची जिस समय कांग्रेसके कार्यकर्त्ता थानेसे हँसी खुशी विदा होरहे थे। मिलिटरीको देख लोग डरे, पर नेताओंने उन्हें ढाढ़स बन्धाया। सब जहाँके तहाँ खडे होगये। कलक्टर एस० पी० को लेकर थानेके बरामदेमें आगये और भीड़को देख बोले—यह गैरकानूनी मजमा है, इसलिए सब भाग जाओ। एक तरफसे उन्होंने जनताको भाग जानेका हुक्म दिया और दूसरी तरफसे मिलिटरीको गोली छोड़नेकी इजाजत दी। श्रीधर शर्माजी सबके आगे थे। गोरोंको सुनानेके लिए वे चिल्ला उठे—We are not

going to do harm to you all, if you are determined to shoot us, shoot me first I am guilty not all" यानी हमलोग आपको मारने पीटनेवाले नहीं हैं। तो भी अगर आपने हमें गोलीसे भून देनेका निश्चय कर लिया है तो पहले मुझको गोली मारिये। मैं अपराधी हूँ सभी नहीं। उनकी आवाजको गोलियोंकी आवाजने दबा दिया। लोग घायल हो गिरने लगे पर गोलियोंके बीचसे शीना खोले श्रीधर शर्मा आगे बढने लगे। एस० पी० ने देखा, बोला पकड लो यह लीडर है। शर्माजी पकड लिए गये। पर जमीनपर लेट गये। फिर टाग कर लॉरीपर लाद दिये गये।

घायलोंकी सेवामें स्वयसेवक जुट गये। दो तीन गिरफ्तार भी हुए, किन्तु घायलोको उठा उठा कर अस्पताल ले जाना उनने बन्द नहीं किया। लोग जमे रहे। मालूम हुआ वे और जोशमें आरहे हैं। फिर कलक्टरने थानेदार और रजिष्ट्रारको साथ लिया और फौज सहित चलते बने। इनके जाते ही क्षुब्ध जनता थानेपर टूट पड़ी और थानेकी चीजोंको बरबाद कर दिया।

घायलोंमें श्री अनुराग सिह, श्री जोधा सिह, श्री शिवगुलाम भगत तथा श्री सत्यनारायण चौबेकी हालत खराब थी। परन्तु और लोग बच गये, केवल श्री अनुराग सिह और श्री जोधा सिंह दूसरे ही दिन सदर अस्पतालमें शहीद हो गये।

इस गोली काण्डने पारू थानाके कार्यकर्त्ताओंको बैठने न दिया। वे सभी सन्तप्त परिवारमें ढाढस बंधानेके लिए गये। फिर उनने जैतपुर, पोखरेरा और मधौल डाकखानेपर झडा फहराया और उनको बन्द कर दिया। ये सब एक महीना बन्द रहे।

१८ अगस्तको जब्तशुदा कॉंग्रेस ऑफिसके हातेमे ही सकराकी जनता बैठी और सकरा थानेपर कब्जा कर लेनेका निश्चय हुआ। लोग थानेपर गये। थानेदार सकरा सहानुभूति रखता था, इसलिये वहाँ शान्ति पूर्वक झडा फहराया गया। लोग बड़े खुश हुए और खुशीमे जोर-शोरसे तरह-तरहके नारे लगाने लगे। थानेकी बगलमें ही एक दिन पहलेसे ही मिलिटरीका एक जत्था डेरा डाले था। शोर सुनकर वह थानेमें घुसा और भीड़को तितर-बितर करनेके ख्यालसे उसने लोगोंको बचाकर एक झोपड़ीकी ओर फायर किया। पर झोपड़ीमें पहलेसे ही बैठे थे एक पुराने कांग्रेस कार्यकर्त्ता, बाबू अमीर सिंह। गोली उन्हें लगी और वे फौरन शहीद हो गये।

१९ अगस्तको चार-पांच हजारकी भीड़ मीनापुर थानेपर कब्जा करनेके लिये

आयी। नेतृत्व कर रहे थे श्री भिखारी सिंह च हान, श्री बिजुली सिंह और श्री
मीनापुर   जगन्नाथप्रसाद सिंह। भीडको देख दारोगाने डपट कर कहा;
भाग जाओ। किन्तु भागनेके बजाय भीड थानेके अहातेमें घुस पड़ी। थानेवालोंने
लोगोंको पीछे धकेलना शुरू किया। फिर लोगोंकी ओरसे रोड़े चले। जिसका
जवाब थानेवाले गोलीसे देने लगे। पर लोग भगे नहीं अडकर दारोगाका सामना
करने लगे। और जब गोली चुक गई तब लोग दारोगापर टूट पड़े। दारोगाकी
बन्दूक और पिस्तौल छिन गई और उसपर मार पडने लगी। सिपाही, जमादार
सब नौ दो ग्यारह हो गये। कुछ लोग थानेका सामान तोडने फोडने लगे, कुछ
कागजात इकट्ठे कर फाडने लगे। फिर सभी चीजोंकी ढेर लगाकर उसमें आग
लगा दी गयी। लोगोंका ध्यान इस धधकती हुई आगकी ओर गया।

इसी बीच घायल दारोगा मकईके खेतमें सरक गया; पर तुरत लोग उसे खोजने
लगे। उसकी गोलीसे बिन्देश्वरी और बागुर सहनी मार डाले गये थे और कितने
अभी तक छटपटा रहे थे। इसलिये थानेके गर्म वातावरणका जर्रा-जर्रा प्रतिहिंसाका
नारा लगा रहा था। लोग मकईके खेतसे दारोगाको घसीट ले आये और उसकी
कमरसे लगी पेटीके सहारे ही उसे बॉसमे टांगकर थानेके हातेमे धधकते हुये भीषण
अग्नि-कुण्डमें डालने चले। दारोगाकी गिड़गिड़ाहट और उसका आर्तनाद क्रुद्ध
जनताको और उभार रहा था। आगसे निकल भागनेकी उसकी सारी कोशिश बेकार
गई। लोगोंने लम्बे बांसके सहारे ठेलठालकर उसे आगमें ही तड़पा तड़पाकर भून
दिया।

फिर थानेकी लूट शुरू हुई। वहां कोई सिपाही मौजूद न था। हां ! एक कोनेमें
जमादारकी पत्नी दीख पड़ी। उसकी देहके सारे जेवर उतरवा लिये गये; पर
हां उसे हिफाजतके साथ एक सम्बन्धीके घर पहुंचा दिया गया।

१५ अगस्तको लगभग ४० हजार व्यक्तियोंका एक विशाल समुद्र थानेपर
उमड पडा। पुलिसने जनताको थानामें घुसनेसे मना किया और दारोगाने जोरदार
कटरा   शब्दोंमें कहा कि जान रहते थानेमें सरकारके खिलाफ कोई काम
न होने दूंगा। पर जब बेशुमार लोग थानेमे घुस गये और झंडा फहराने लगे तब
दारोगा साहब चुपचाप कुर्सीपर बैठ गये। लोगोंने झण्डा फहराकर थानेमें ताला
लगा दिया और दारोगासे कहा कि आप अपनी वरदी बदल दीजिये और अपनी
बन्दूक हमारे हवाले कीजिये। दारोगा साहब तैशमें आ गये। कुर्सी छोड़ी और

टेवुलपर फांद रिवालवर चलाने लगे। जनता कुछ दूर हटी फिर डट गयी और रोड़े चलाने लगी। डट जानेका कारण एक वृद्धा वनी जिसकी उम्र थी करीव ७५ साल। वह झंडा लेकर जलूसके आगे आगे आयी थी। और इस वक्त भी आगे खड़ी थी। जो हटनेके लिये कहता जवाव देती कि मेरा एकलौता इस जलूसमे है। मैं यहासे हट नहीं सकती। लोगोको उसे समझानेका समय नहीं था। क्योंकि दारोगा और उसके साथी गोलियोकी वर्षा कर रहे थे। धीरे धीरे गोलियोकी वर्षा वन्द हो गयी। तव लोग भूखे वाघकी तरह थानेवालोपर टूट पड़े और जिसे पाया वेरहमीसे पीटने लगे। दारोगा जव मरा सा होकर जमीनपर गिर पडा तव एक स्वयसेवकने उसे खींचकर एक ओर रख दिया और साथियोसे उसकी हिफाजत करनेको कहा। घायल जमादारको भी उसने छिपाकर वचा लिया। छः सात वुरी तरह घायल हुए पर एक कन्सटेवुल मारा गया। जनता फिर थानेपर टूटी। फरनीचर कागजात जला दिया और उसकी धधकती आगमें नोटोका जो वण्डल मिला उसे फेक दिया। चार वन्दूके मिलीं जिन्हे ले लिया और वाकी सामान मकान सहित फूंक डाला।

थानेको जलाकर कटराकी जनताने छोड़ा नहीं। उसके स्वयसेवक ४४ दिनो तक थानेके हातेमे परेड करते रहे और झडा नेमटेमसे फहराते और उतारते रहे।

१५ अगस्तको साहवगज थानामे काग्रेसका झडा गाड दिया गया। पर दूसरे दिन अफवाह उड़ी कि थानेदारने झडेको उखाड ही नहीं फका है वल्कि पैरसे मसल डाला

साहवगंज है। जनता क्रोधान्ध हो उठी और वडी तादादमे थानेपर पहुँची। ठीक उसी समय श्री जगधारी प्रसाद और ठाकुर यदुनन्दन सिंह वहा दौड़े आये और भीडको समझा वुझाकर शान्त किया। वे सवोको लेकर थाने गये जहाँ जमादारने उन्हें झंडा लाकर दिया और कहा कि हवाके झोकेसे झडा गिर गया था जिसे मैंने वडी हिफाजतसे रख रखा था। लोग उसकी वात मान गये। उनने अपना झडा फिर फहरा दिया और थानामें ताला लगा दिया जिसकी कुजी ठाकुर यदुनन्दन सिहको सुपुर्द कर दी गयी।

सीतामढ़ीमें स्वर्गीय ठाकुर नवाव सिंहने सरकारी इमारतोंपर धावा करनेको प्रोत्साहन दिया। विद्यार्थी और कार्यकर्त्ता काफी तादादमें झडे लेकर निकले और

सीतामढ़ी सवडिविजन तमाम सरकारी इमारतोपर उन्हें फहराया। अफसरोंने कहीं खुलकर उनका विरोध नहीं किया।

मेजरगंज थानेमें १५ अगस्तको पं० गणेश चौधरीके नेतृत्वमें शान्ति पूर्वक
मेजरगंज झंडा फहराया गया। पर कार्यकर्त्ताओंका मन न भरा। उनने
१६ अगस्तको थानेपर दोबारा चढ़ाई की। वहां झंडा फहराया और कागज पत्रोंको
समेट जला दिया।

१४ अगस्तको प० श्रीनारायण ठाकुरकी प्रेरणासे लोगोंने सरकारी इमारतोंपर
झंडे फहराए। श्रीनारायण ठाकुरजी, श्री सकलदेव कुअँर गौतम तथा श्रीराभरोस
पुपरी शर्माके साथ गिरफ्तार कर लिये गये। पर उनकी गिरफ्तारीसे
जनता घबड़ायी नहीं। वह जब जब सुनती कि झंडे उतार दिये गये तब तब सरकारी
मकानोंपर फिर झंडे फहरा आती। अन्तमें उसने सभी मुहकमोंपर बाजाप्ता अपना
कब्जा जमा लेना चाहा। पर ऐसी नौबत न आयी। थानेदार थाना छोड़कर खुद
भाग गये। और लोगोंने देखा कि थाना वीरान पड़ा है, जमादारके क्वार्टरमे राखका
ढेर है। मालूम हुआ कि थानेदार साहबने थाना छोड़ते समय कुछ वरदी और
मुरेठा जलाया था जिसकी राखका वह ढेर है। जनताने वहां अपना झंडा फहराया
और ताला लगा दिया। रजिस्टरी, डाकघर, आदि महकमोंपर भी इसी ढंगसे कब्जा
किया। जो सामान मिले उनकी रक्षाका भार कुछ लोगोंपर सौंप दिया। थानाके
कांग्रेसके कब्जेमे आजानेसे देहातपर खूब असर पड़ा। बीट नं० ४ के चौकीदारी
प्रेसीडेण्ट बाबू रामबुझावन ठाकुर और चौकीदार नेवातीने सर्व प्रथम इस्तीफा
दिया। बादमें अधिकसे अधिक प्रेसिडेण्ट दफादार और चौकीदारोंने इस्तीफे दिये।
यही नहीं कितनोंने अपनी वरदी उतार फेंकी और कांग्रेसके काममे लग पड़े।

बेलसंडकी तैयारी देख थानेदार साहबकी हिम्मत छूट गयी। वे २७ अगस्तको
सीतामढ़ी जानेकी तैयारी करने लगे, पर उनके खोजे कोई सवारी मिलती नहीं थी।
बेलसंड अन्तमें कार्य कर्त्ताओंसे मदद मांगी। कार्य कर्त्ताओंने बैलगाड़ीका
प्रबंध कर थानेदारको माल असबाव सहित सीतामढी रवाना कर दिया। राह भर तो
थानेदार साहब भलेमानस बने रहे, पर सीतामढ़ी पहुँचते ही अपना उग्ररूप धारण
किया। गाड़ीवानोंको फजीहत किया और थानेमें रिपोर्ट लिखायी कि बेलसण्डवाले
मुझे नावपर चढाकर नदीमें डुबा देना चाहते थे।

बैरगनियांमें थाना, रजिस्टरी आदि सरकारी संस्थाओंपर स्वराजी सरकारका
बैरगनियां कब्जा होगया। कुछ कागज पत्र जलाये गये। और कोई अशान्ति
नहीं हुई।

प्रवासकालके स्वर्गवासी

स्वः नवाव सिंह,
सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर)
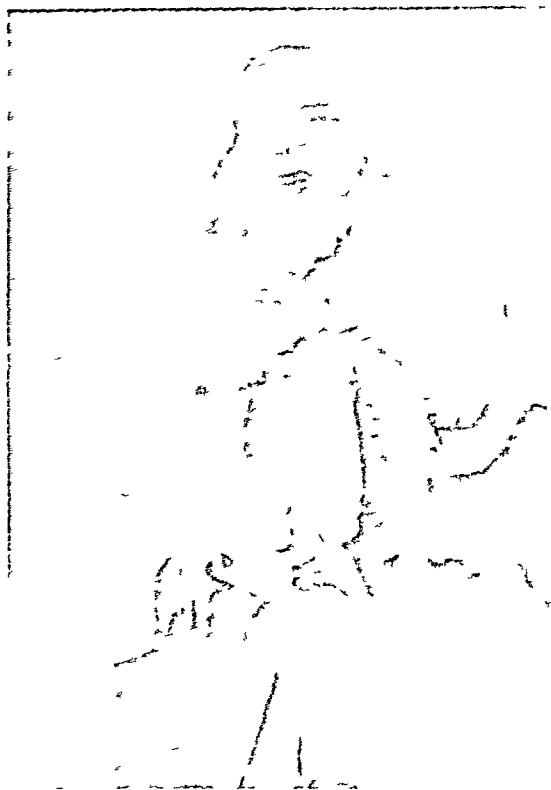
स्वर्गीय गणेश सिंह,
लालगंज (मुजफ़्फ़रपुर)
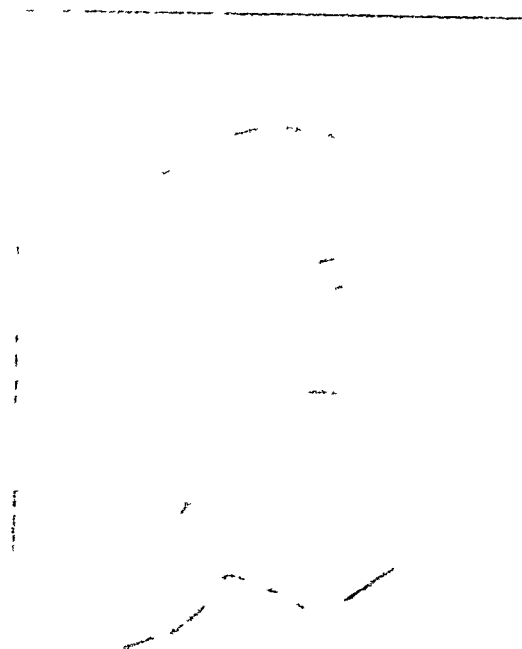
जिन्हें गोलीका निशाना वनाया गया !

शहीद अमीर सिंह,
सकरा (मुजफ्फरपुर)

श्रीकुशेश्वर शाह,
समस्तीपुर (दरभंगा)

१६ अगस्तको भुतही रजिस्टरीके मकानपर तिरंगा झंडा फहराया गया और आफिसमें ताला लगा दिया गया। साथ साथ कई जगह सड़कें काटी गयीं और

सोनवरसा

पुल तोड़े गये। १६ अगस्तको थानेपर धावा हुआ और उसे कब्जेमे लाया गया। भुतही पोस्ट आफिसमें कागजात जलाये गये।

बेला थानामें विद्यार्थियोंने आन्दोलनमे भाग नहीं लिया। पर इससे आन्दोलनकी उग्रतामे कमी नहीं आयी। वहाँ तो ठेठ जनता उठी और कांग्रेस

बेला

कार्यकर्त्ताओंके लाख मना करनेपर भी वह थानेपर चढ आयी और उसके सामान जलाकर खाक कर दिया। वह डाकघर और आबकारी आफिस आयी जहाँके सारे सामान आगमें झोंक डाले गये। फिर रजिस्टरी आफिसमें ताला लगा दिया गया।

शिवहर थाना आन्दोलनमें जो आगे रहा सो स्वर्गीय ठाकुर नवावसिंहके कारण। उनने कार्यकर्त्ताओंको संगठित किया और नवावसिंह हाइ स्कूलके छात्रोंको

शिवहर

प्रेरणा दी। फलस्वरूप थानेपर एक सगठित जनसमूह चढ आया और बिना किसी रोक-टोकके उसपर अपना कब्जा जमा लिया और रजिस्टरी तथा पोस्ट आफिसपर झडे फहराये। फिर यहाँके कार्यकर्त्ता सीतामढ़ी कोर्टपर भी धावा करने गये। अगुआ थे वही ठाकुर नवावसिंह, जो गजबकी फुर्ती दिखा रहे थे। इस थानेमे कई गाँव ऐसे थे जिन्होंने कांग्रेसी थानेसे अपना नाता अन्त तक निबाहा। मोहनपुरमे सरकारने प० गृहनाथ झाके अपना विश्वासपात्र समझकर हेडमैन बना दिया था। मगर वही क्या मोहनपुरका चौकीदार भी सरकारका न रहा। राष्ट्रके प्रति उनकी वफादारीका भेद जब सरकारको मालूम हुआ तब उसने सबोको जेल ठूँस दिया। बराहीवालोंने तो घोर दमनके बावजूद अन्त तक लडने वाले राष्ट्रके सिपाहियोंकी मदद की। इस थानेके बहुतसे चौकीदारोंने एकबार जो नौकरीको लात मारी सो अबतक वे थानेमें झाकने नहीं गये है। पौनाके रामचरित्र राउत, बराहीके भोला हजरा, माधवपुरके मुशो चौकीदार, अम्बाके तिलधारी राउत आदि चौकीदारोंके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

१३ अगस्तको महुआ थानेपर लोगोंका जलूस आया। थानेदार थे श्री सूर्यनारायण सिंह। जनताको देख वे डर गये और भलेमानस बने रहनेमें ही सुविधा

महुआ

देखी। आपने कांग्रेसी सरकारकी मातहती कबूल कर ली। अपनी वरदी उतार फेंकी, झडा लिया और जलूसमें शामिल हो बन्देमातरम्‌का नारा बुलंद

करते हुए निकले। थानेसे जनता खुशी खुशी रजिस्टरी आफिस आयी, जिसपर झंडा फहराया। कुछ कागज भी वहां जला दिये गये।

जनदाहा और सिघाराके डाकघर और स्कूलको राष्ट्रीय झण्डेके नीचे लाया गया।

प० मदन झाकी प्रेरणासे १४ अगस्तको जनताका एक जलूस महनार थाना आया। दारोगाजीने अत्म-समर्पण कर दिया। थानेपर राष्ट्रीय झडा फहराकर दारोगाजीने लोगोंके सामने भारत माताकी वन्दना की। मगर नवजवान इतने ही से सतुष्ट नहीं हुए। वे आजाद सरकार कायम करना चाहते थे मगर थानेके कुछ लोग जैसे श्री ब्रजनन्दन सिंह और लक्ष्मी सिंह, झंडा फहरा कर ही समझते थे कि काम पूरा होगया। पर इनलोगोंकी एक न चली और नवजवानोंने थानापर कब्जा जमा लेनेकी तैयारी शुरू कर दी। १८ अगस्तको प० मदन झाके नेतृत्वमें एक बहुत बड़ा जलूस फिर थाने आया जबकि थानेका सारा चार्ज दारोगासे ले लिया गया। श्री झाजीके सामने श्री गगा प्रसाद गुप्त, श्री रामचन्द्र प्रसाद सिंह और हमीद साहबने भिन्नभिन्न पदोंकी जवाबदेहिया लेलीं। खजानेसे उन्हें सिर्फ ४॥) रु० मिला। थानेके दोनो दारोगा सपरिवार रहते थे। कार्यकर्त्ताओंने बड़ा खयाल रखा कि उन्हें किसी तरहकी तकलीफ न हो। इनलोगोंने स्वेच्छासे महुआ जानेका विचार किया। पर जब लगातार कोशिश करनेपर भी इन्हें सवारियां न मिल सकीं तब इनने झाजीकी मदद चाही। झाजीने सवारियोंका इन्तजाम कर दिया और स्वयंसेवकोंको ताकीद कर दी ताकि ये लोग सकुशल महुआ पहुच जायं।

महनार

महनार थानापर तो ता० १८ से ही कांग्रेसका दखल हो गया। वहां उसके ताले लगते, उसकी बैठके होती और वहांकी तमाम चीजे उसकी हिफाजतमे रहतीं रजिस्टरी और डाकघरपर भी उसका कब्जा हो गया।

राघोपुर

राघोपुर थानापर लोगोंने झडा फहरा दिया। और फिर वे शान्ति पूर्वक चले आये। पर दो दिनोंके बाद जब उन्हें मालूम हुआ कि थानेदारने झडा उतार फेंका है तब वे बडे उत्तेजित हुये फिर उनने बड़ी तैयारी करके थानेपर हमला किया और थानेके सारे सामान जलाकर खाक कर दिये। १७ अगस्तको मक्खू सिंह सिपाही डाक ला रहा था। उससे लोगोंने थैला छीन लिया और कहा अब जनताका राज होगया, सरकारी डाक क्या आती जाती ही रहेगी?

लालगंज

१५ अगस्तको देहातसे लोग जलूस बांधकर आये और थानापर झंडा फहरा दिया। वहासे ये सब डाकघर पहुंचे जिसपर भी उनने झंडा फहराया। फिर वे रजीस्टरी आफिसकी ओर बढ़े और वहा भी झंडा फहरा कर शान्तिपूर्वक वापस चले गये।

पातेपुर

१४ अगस्तको पातेपुर थानापर शान्ति पूर्वक झंडा फहरा दिया गया। यद्यपि जनता और पुलिसमें कशमकश नहीं थी तथापि दो रोजके बाद पुलिस थाना खाली करके चली गयी।

चम्पारण

घोड़ासाहन

घोड़ासाहनमें छात्रों तथा कार्यकर्त्ताओंका जलूस १४ अगस्तको थानेपर पहुंचा और वहा शान्तिपूर्वक अपना तिरंगा झंडा फहरा आया। पर जब बाहरसे थाना जलानेकी खबर पहुंचने लगी तब वहाके कार्यकर्त्ताओंको भी अपनी कृति अपूर्ण जचने लगी। फिर उनने थानाको बिलकुल कांग्रेसके कब्जेमें लानेके लिये प्रचार करना शुरू किया। फलत २४ अगस्तको बेशुमार लोग थानेपर चढ दौड़े। थानेके सामानादिको इतस्तत कर दिया और उसके सारे कागजात जला डाले। लोगोंका रुख देख पुलिसकी थानेमें रहनेकी हिम्मत टूट गई और वह दूसरे दिन वहांसे अपना बोरिया बधना समेट मोतिहारीको चल पड़ी।

आदापुरथाना

ब्रजनन्दन शर्माजीने लगभग पाच सौ लोगोंको लेकर आदापुर थानेपर हमला किया। पर वहाकी पुलिस शान्त रही। फिर यह भी शान्त रहे और क्रान्तिके नारे लगाते हुये वहा झंडा फहरा आये।

ढाका

१८ अगस्तको ढाका थानेके कार्यकर्त्ताओंने ढाका थाना आफिसमे अपना ताला लगा दिया। उनका विश्वास था कि इससे थानेका काम बिलकुल रुक जायगा और थानेवाले कांग्रेसी सरकारको कायम होगया हुआ समझ कर ही राह लेंगे। पर अपनी आशाके विपरीत उनने पुलिसको कुछ न कुछ काम करते ही देखा। परिणाम स्वरूप वे २० अगस्तको थानेपर फिर चढ गये और उसके सभी कागजात बन्द करके उसपर अपनी सील मोहर लगादी।

गोविन्दगंज

२४ अगस्तको एक विराट जन समूह गोविन्दगज थानाको दखल करने निकला। कार्यकर्त्ताओंका अनुमान है कि लोग बीस हजारके लगभग होंगे जो गोविन्दगज बाधसे लेकर अरेराज तक फैले दीख पडते थे। ढोल और बिगुल बजाते हुये सबोंने थानाको चारो ओरसे घेर लिया। वे निश्चिन्त न थे। जानते थे कि गोरी फौज इस मौकेपर भी वहा पहुंच सकती है जैसे कि पहले वह एकबार

आ चुकी है। और जान बूझकर वे खतरेका सामना करने आये थे क्योंकि थानेको दखल करना कांग्रेसका प्रोग्राम था जिसे पूरा करना ही चाहिये था।

कुछ किसान पिचकारी, तेल और आग लगानेके अन्य सामान लेकर पहुचे थे। वे चाहते थे कि थाना फूॅक देना और सच पूछिये तो थानेके एक ओरमे आग लगाई भी गई पर श्री रामर्षिदेवकी आज्ञासे वह तुरत शान्त कर दी गई। थाने-वालोकी कोई खास चीज नष्ट नहीं की गई। हां थानेकी दो बन्दूके जब्त करली गयीं और उसके कागजात जला दिये गये। फिर उसको पूरा पूरा अपने दखलमें कर लिया गया।

थाना दखलकर लेनेके बाद रामर्षिदलने डाकघरपर धावा किया। उसमें ताला लगा दिया गया और उसके स्टाम्प वगैरह जो जब्त किये गये उसकी बाजाब्ता रसीद रामर्षिदेवने पोस्ट मास्टरको दी। फिर आबकारी महालकी आफिस और राज आफिसपर दखल जमाकर उन्हें बन्दकर दिया गया। बादको यह दल देहातोमें घुसा और कलालियोको बरबाद करता और डाकघरोको बन्द करता कांग्रेसी सरकारकी सत्ताका प्रचार करने लगा।

१६ अगस्तको थाना कांग्रेस कमिटीके सभापति और मंत्रीको सुगौलीमें पुलिस इन्सपेक्टरने गिरफ्तार कर लिया। खबर सुनकर गाववाले थानेपर चढ़ आये और पुलिसके चगुलसे दोनोको छुड़ा लेना चाहा। किन्तु दोनोने सम-झाया कि सच्ची रिहाई तो तभी मिल सकेगी जब सब लोग संगठित होकर अगस्त-क्रान्तिको सफल बना दे। यहा थानाकी पुलिसके हाथसे छुडा लेना किस कामका? भीड़ समझ गई और थानापर झंडा फहराकर वापस चली गई।

सुगौली

२५ अगस्तको सुखम मिश्रने सुगौली थानेका घेरा डाला। उद्देश्य था सुगौली थानाको मोतिहारीके सम्पर्कमें न आने देना ताकि वहासे थानेको कोई मदद न पहुच सके। घेरा इतना जबरदस्त रहा कि २४ घंटे तक कोई सुगौलीसे मोतिहारी न जा सका। सडकोपर पहरा था। रेलवे-फाटक मजबूत तालोसे बन्द थे। इधर मुसलमान दारोगाने अपनी हिफाजतके लिये काफी मुसलमान लडकोको जुटा रक्खा था। पर २६ अगस्तको थानेके सामने अठारह बीस हजारकी भीड़ देख दारोगा और उसके लडके गाय जैसे बन गये और भीड़के प्रोग्राममे अड़चन डालनेकी हिम्मत नहीं हुई।

इस भीड़ने थानेके ऊपर राष्ट्रीय झंडा फहराया और उसके सभी कमरोंको

गोरोंके अग्निकाण्ड

नमु
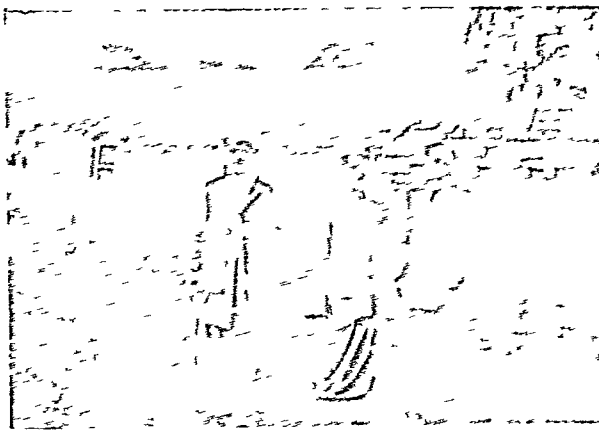
लालगंज गांधी आश्रम
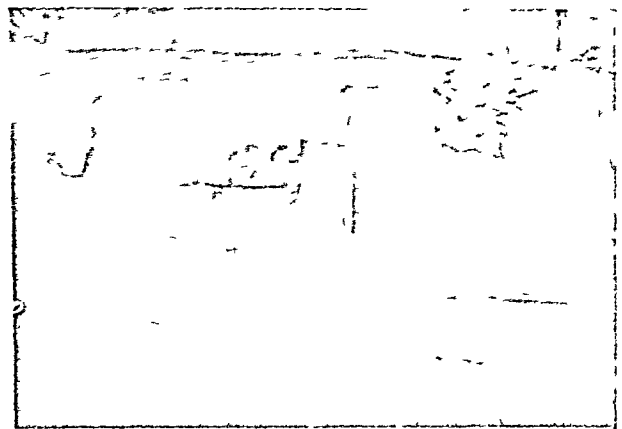
घटारो गांधी आश्रम

नवयुवक पुस्तकालय,
तेपरी (मुजफ्फरपुर)
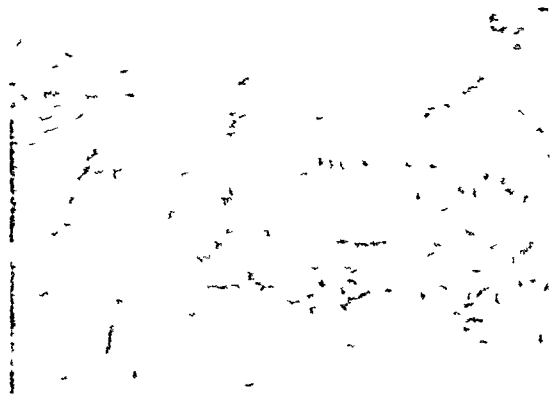
गोरोंने जिन्हें पस्तकर दिया !

श्रीमौजे लाल ठाकुर
तेपरी (मुजफ्फरपुर) के
पक्के मकानका भग्नावशेष !
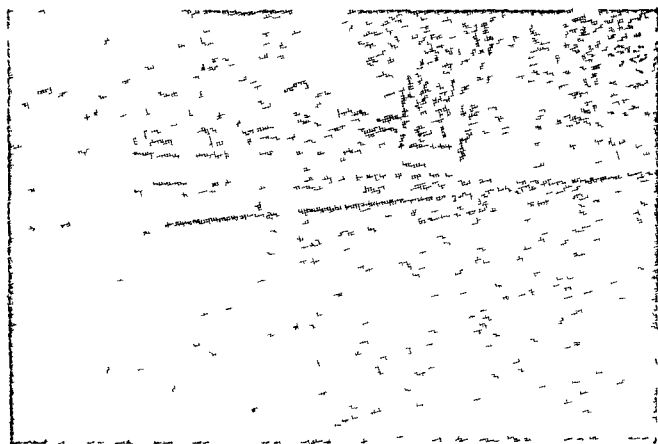
खादी भण्डार सीतामढ़ी
(मुजफ्फरपुर) को
सरजमी कर दिया गया !
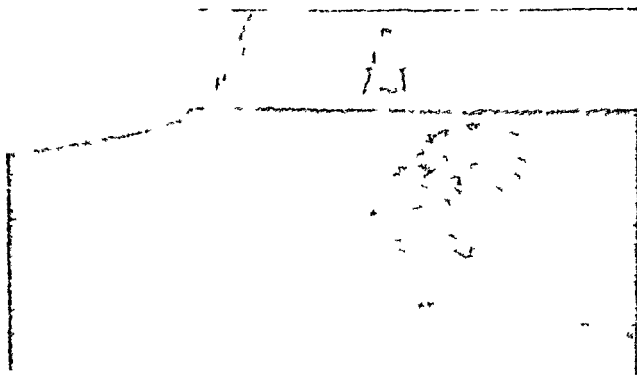
श्रीअम्बिका दास कनौजिया
(विदूपुर, मुजफ्फरपुर) का
मकान जला दिया गया।

तालेसे वन्द कर दिया। फिर वह डाकघर आयी जहां उसने झंडा फहराया। डाक-घरका चार्ज वहाके पोस्ट मास्टरसे श्री सुखम मिश्रने लिया जिन्हें डाकघरमे सिर्फ पौने ग्यारह आने पैसे मिले। डाकखाना वन्द कर दिया गया। वहासे लोग रेलवे स्टेशन पहुँचे। रेलवे पुलिस स्टेशनपर उनने झडा फहराया और जब रेलवे पुलिस स्टेशनमें ताला देनेकी वारी आई तव दारोगाने उनका सामना किया। उत्तेजित भीड तोड़ फोड़की ओर झुक पड़ी। रेलवे थाना और स्टेशनके कागजात और फरनीचरको तोड फोड कर जला दिया और रेलवे पुलिसकी एक वन्दूक जब्त करली। दूसरे दिन स्वयसेवकोंने अपना कैम्प सुगौलीसे उठा लिया और फुल-वरिया हिन्दी प्रचारक पुस्तकालयमें आकर वे रहने लगे।

उसी दिन गोरे आये और सुगौली स्वयसेवक कैम्पको लूटते हुये रक्सौल चले गये। तुरत स्वयसेवकोंका एक दल सुगौली घाट पहुँचा। वहाकी कुल नावोंको जोढ़ी गावा घाट ले जाकर उसने डुवा दिया।

वेतियामे सरकारने १४४ दफा जारी कर रक्खी थी। उस दफाको तोड कर वेतिया कचहरीपर झडा फहरानेका प्रोग्राम वेतिया सवडिविजन भरके कार्यकर्त्ताओंने वेतिया वनाया। २४ अगस्तको राजस्कूलके सामने छात्रो, कार्यकर्त्ताओं और जनसाधारणकी एक वड़ी भीड इकट्ठी हुई। जलूस निकला जिसे सारे वाजार घूमकर कचहरीपर झडा फहराना था, फिर विक्टोरिया मेमोरियलके सामने वाले मैदानमें सभा करके तितर-वितर हो जाना था।

इधर यह जलूस वाजारमें घूम रहा था उधर गांववालोका दूसरा जलूस वाजारकी ओर आता दिखाई पड़ा। जब वह मीना वाजारके पास पहुँचा तो घुडसवारोंने उसे रोका। वह रुक तो गया पर अपनी आगे वढनेकी कोशिशसे वाज नहीं आया। इसी समय मिलिटरीने सीटी वजाई जिसे सुनते ही घुड़ सवारोने जलूसका रास्ता छोड दिया। जलूस लालवाजारकी ओर वढा और ज्योंही चौराहेके पास पहुँचा कि मिलिटरीने उसे अपनी गोलियोका निशाना वनाना शुरू किया जिसके फलस्वरूप कई घायल हुये।

राजस्कूलसे निकला हुआ जलूस घूमता घामता उस समय विपिन हाईस्कूलके पास पहुँचा था। गोली चलनेकी खवर पाकर वह उत्तेजित हो गया। जोश हुआ वहा दौड़ जाय और मिलिटरीसे भिड जाय। पर नायकने मना किया। उसने कहा हमें हरगिज उधर न जाना चाहिये। हम सब उस ओर मैदानमें चलें और वहीं

सभा करके अपने अपने घर जायं। किन्तु क्रोधातुर कहीं शान्तिकी सलाह सुनता है ? काफी लोग मिलिटरीको ओर दौड़ पडे, उसे घेर लिया और चारो ओरसे उसपर ढेले बरसाने लगे। ढेलेके जवाबमें गोलिया आईं और खूब आईं। नौ शहीद हुए; बेतियागजके श्री भागवत उपाध्याय, मिश्र बलिया, जिला सारनके श्री रामेश्वर मिश्र ; महेसड़ा, थाना मझौलियाके श्री तुलसी राउत और सरयू राउत, बेतियाके श्री भिखारी कोयरी, श्री जगन्नाथपुरी, श्री गणेश राउत और मझौलियाके श्री फौजदार अहीर। घायल हुये अनेको जिनमे इक्कीसकी चोट सख्त थी।

इस जलूसमे सबडिविजन भरसे लोग आये थे और इस गोली काण्डका सबोंको अनुभव हुआ। सभी अवसन्न से होगये।

सिकटा थानापर जनता एक जलूस लेकर आई और वहां अपना तिरंगा झडा फहराना चाहा। पुलिस बाधक नहीं हुई और विधिपूर्वक झंडा फहराया गया।

शिकारपुर थानापर जनताने धावा किया। उसकी तादाद और ताकतको देख पुलिस सहम उठी और जनताको झंडा फहराने दिया।

मझौलिया थानेकी पुलिस भी जनताकी राह न रोक सकी। जनता थाने गई और झंडा फहरा आयी।

केसरिया थानेका जलूस तोड़ फोड़ करता हुआ पुलिस स्टेशन पहुँचा। उसने ऐलान किया कि थानेको दखल किया जायगा और आजसे इसपर कांग्रेसका झंडा उड़ा करेगा। पुलिस हाथ बाधे एक ओर खड़ी रही। थानेपर झंडा फहराया गया और सारे कमरोमे काग्रेसके ताले लगा दिये गये।

१४ अगस्तको श्री महेश्वर सिहके नेतृत्वमे हिन्दू-मुसलमानोका एक सम्मिलित जलूस थानेपर पहुँचा। थानेवालोने उसका विरोध नहीं किया। वहां पुलिसकी एक

सारन

उच्च अधिकारोभी मौजूद थे। सबोंको सरकारी नौकरी छोड़ देनेकी अपील की गई जिसको थानावालोने मान लिया। श्री महेश्वर सिहने उन सबोंसे कहा कि आपलोग घर चले जाइये, जरूरत पड़नेपर स्वराज्य सरकार आपको बुला

सोनपुर

भेजेगी। फिर इनने थानेपर झडा फहराकर थानेको अपने कब्जामे कर लिया। वहासे जलूस स्टेशन हातेमें आया। डी० टी० एस० ऑफिसपर झडा फहराया, रेलवे स्टेशनपर झडा फहराया और इसके बाद तो सभी मुख्य मुख्य इमारतोपर झडे-ही-झडे फहराते दीखने लगे।

दिघवारा १४ अगस्तको विद्यार्थी श्री नारायण सिंहके नेतृत्वमें एक जलूस थानेपर कब्जा करनेके लिए वहा पहुँचा। थानेमें उस मौकेपर मिलिटरीके पचीस सिपाही थे। डिपटी मजिस्ट्रेट भी मौजूद थे और पुलिसका सारा काफिला भी था। उस समय दिघवारामे कुछ ऐसी हवा वह रही थी और जनतामें ऐसा जोश काम कर रहा था कि जलूसके सामने कोई सरकारके नामपर मुकावला करने न आया। जलूसने थानेपर झंडा फहराया और इन्सपेक्टर साहव और डिपटी मजिस्ट्रेटने झंडा उठा कर तमाम लोगोका साथ दिया। दूसरे दिन कार्यकर्त्ताओने पुलिसको थाना छोड देनेको कहा। पुलिसने थाना छोड़ दिया। पर तीसरे दिन यानी १६ अगस्तको वावू रमानन्द सिंहने नावका इन्तजाम किया और इन्सपेक्टर साहवको सपरिवार दिघवारेसे भी विदा कर दिया। थानेमें तवसे स्वराजी ताला लगा दिया गया। फिर कार्यकर्त्ता दिघवारा स्टेशन पहुँचे, स्टेशनपर झंडा फहराया और स्टेशनको अपने कब्जेमें कर लिया। उनने स्टेशन-स्टाफसे स्टेशनका चार्ज ले लिया। स्टेशनमे जो रुपये मिले उनको स्टाफको दे दिया। उनने स्टाफसे कहा कि आजाद सरकारकी ओरसे हम आपको फुरसत दे रहे हैं और साथ-साथ तलव भी दे रहे हैं। आजाद सरकारको जव आपकी सेवाकी जरूरत होगी तव आपको वुला भेजेगे। अभी हमे गाड़ी चलाना नहीं है, आन्दोलन चलाना है। फिर उनने रेलवे कर्मचारियोंसे पाये हुये रुपयेकी रसीद लेली। स्टेशनपर खादी-भंडारके कपड़े मिले जिन्हें उन सवोंने खद्दर-भंडार पहुँचा दिया। वहासे सभी पोस्ट आफिस आये और पोस्ट आफिसका चार्ज लिया। फिर उन सवोंने प्रेम पूर्वक पोस्ट आफिसके स्टाफको और रेलवे स्टाफको अपने अपने घर विदा कर दिया।

वनियापुर १५ अगस्तको कार्यकर्त्ताओका जलूस वनियापुर थाना दखल करने निकला थानाके सभी कागजात और फरनीचरको लोगोने जला दिया। हा, अमलोंके रहनेके क्वार्टरको वेलाग छोड़ दिया।

एकमा १४ अगस्तको एकमा थानापर झंडा फहराया गया। वादको थाना कान्ग्रेसके कब्जेमे कर लिया गया और वहाँके कागजात फरनीचर वैगरह जला दिया गये।

मांझी माझी थाना अपने यहाँके लोगोके मारे जानेके कारण जरा गर्म हो रहा था। वहाके कार्यकर्त्ता अन्य सरकारी इमारतोंको जलाते हुये जव थाना आये तव उसे भी सामान सहित जला दिया। थानाका दारोगा और सव सरकारी

कर्मचारी उस दिन आन्दोलन कारियोके 'अग्रेजो भारत छोड़ दो' के नारोके बीच विदा हो गये। थानेके बहुतसे चौकीदारोने अपनी वरदी जला दी और नौकरोसे इस्तीफा दे दिया।

गरखा थानेकी विचारधारा और कार्य-पद्धति बिहारके अत्यधिक कार्यकर्त्ताओकी विचार-धारा और कार्य पद्धतिका परिचय देती है, इसलिये गरखा थानाकी कारवाईका सविस्तर उल्लेख आवश्यक है। गरखाके नेता

गरखा श्री जगलाल चौधरी, जो आंदोलनके पहले बिहार-सरकारके मत्री थे और आज भी है, लिखते है, "१८ अगस्तको मै गरखा पहुँचा। फिर मैने कुमार पशुपति द्वारा संगठित स्वय सेवक दलको देखा; वे लाठी और भालेसे सुसज्जित थे, मुझे पसंद न पड़ा। मैने कुमारको समझाया। उनने कहा कि टैंक, बम्बर, मशीनगन आदिके सामने लाठी और भालोका प्रयोग अहिसा ही है, महात्माजीने वर्त्तमान विश्व-युद्धमे पोलैडको अहिसक ही कहा है। मै कुमारको समझा न सका। श्री फिरंगीसिह, श्री रामप्रसाद सिह भी वहा थे, वे कुमारके समान उग्र न थे पर उनका विरोध करना भी वे उचित न समझते थे। मैने सबको इस बातपर राजी किया कि वे इन अस्त्रोसे अपनी रक्षा ही करे किसीपर आक्रमण न करे। यहॉपर मै अहिसाके सिद्धांतका नही बल्कि हथियारोकी अनुपयोगिता और अव्यावहारिकताका प्रतिपादन कर उनके ऊपर विजय पायी। साथ ही मैने एलान कर दिया कि इस फौजमे भर्त्ती होनेको इच्छा मेरी थी पर लाठी और भालोके कारण मै अब भर्त्ती न होऊँगा। हा, मै फड़कसे यथा साध्य सलाह दिया करूँगा। ताकि इन अस्त्रोका आक्रमण कारी प्रयोग न होने पावे। पर पीछे मुझे सूझ पड़ा कि मेरी यह सेवा भी उसमे रहकर ही हो सकेगी, बिलगसे नहीं।

उसी दिन यानी १८ अगस्तको दिघवारेसे मेरे दो मित्र श्री हीरालाल सर्राफ और श्री द्वारिका नाथ तिवारी आये। उसदिन गरखामे बाजार लगनेका दिन था। कुमारने उक्त नेताओके व्याख्यान कराये, जिसमे उनने लोगोके कर्त्तव्य बतलाये। इन कई दिनोमें गोरे, और काले फौजियो तथा गोरी और काली पुलिसने कैसे-कैसे जुल्म किये हैं, सबो लोगोको सुनाये गये। दिघवारे और सोनपुरमें, सिवान और महाराजगंजमे और पटनेके सेक्रेटेरियटमें जो खून हुये थे उनका वर्णन सुनाया गया और महात्माजीने इन जुल्मोंको रोकनेका क्या उपाय बतलाया था, सो भी कहा गया। मेरी ओर अफवाह उड़ी थी कि मढ़ौरेमें कई गोरोंको गांववालोंने मार डाला है;

और यह भी अफवाह उडी थी कि गोरे स्त्रियोका अपमान करते हैं। इससे लोगोको गोरोके प्रति अति घृणा और अपने पाशविक बलमे अधिक विश्वास हो रहा था। उनने मुझसे कुछ सुनना चाहा। मैंने अहिंसाका प्रतिपादन किया। लोगोने तरह-तरहके प्रश्न पूछने आरंभ किये, सबसे जटिल प्रश्न था—यदि किसीकी बहू-बेटी बेइज्जत की जाये तो चुपचाप कैसे सह लेगे? माना, कि हमारे अस्त्र उनके अस्त्रके सामने काम न कर सकेगे, फिर भी चुपचाप कुत्तेकी मौत मरनेके बजाय क्यो न लाठी और, भालोमे ही मुकाबला करते-करते मरा जाय? मैंने बतलानेकी कोशिश की कि अहिंसक कायरतासे हिंसा ही बेहतर है। लोगोने कहा—सिरपर आफत आ पडी है, गोरोके जुल्मोंका मुकाबला अहिंसासे करना हमारी शक्तिके बाहरकी बात है। आप तो हमें हिंसाका उत्तमसे उत्तम उपाय बतलावे।

मैं इस प्रश्नके लिए तैयार न था। मुझे याद पडा कि पूज्य महात्माजीसे भी किसीने ऐसा ही प्रश्न कभी किया था, तो उनने उत्तरमे कहा—तो आप किसी दूसरेके यहा जायें, मै तो हिंसाका विशेषज्ञ नहीं। जो यह कला जानता हो उसीसे राय ले। पूज्य महात्माजी अहिंसाकी मूर्ति है और उनने सचमुच ही कभी हिंसाका प्रयोग किया नहीं। उनके मुखसे वह उत्तर ठीक था। पर मैंने तो २६ वर्षकी उम्र तक अहिंसाकी शिक्षा न पाई थी। लगातार २८ वर्षों तक पूज्य महात्माजीकी शिक्षाका अध्ययन और मनन करनेमे तथा यथासाध्य उनकी शिक्षा पालन करनेकी कोशिशमे कुछ रोशनी पा सका हू। मैं यह नहीं कह सकता था कि मैं यह हिंसाका उपाय जानता ही नहीं। मैं केवल इतना ही कह सकता था कि मै हिंसाको व्यर्थ और हानिकर समझकर त्याग चुका हू, उससे काम नहीं लेता। यद्यपि अहिंसामें निपुण नहीं, तो भी कुछ तो जानता ही हूँ। अत: मैंने हिंसाका निषेध करते हुए भी कुछ साधनोका वर्णन कर दिया, और यह भी बतला दिया कि ये साधन ऐसे नगण्य है कि आधुनिक वैज्ञानिक अस्त्र शस्त्रोका सामना तो नहीं ही कर सकते उलटे विरोधीको अवसर देते हैं कि वे अपने अस्त्र शस्त्रोका प्रयोग अधिकसे अधिक कर सकें। जो साधन मैंने बतलाये उनमेसे अनेक तो ऐसे थे जो मैंने बचपनमें पिताजीसे सुने थे और कुछ ऐसे थे जिनका वर्णन कहीं कहीं पुस्तकों और अखबारोमे भी देखा था। यथा घरमे गुडकी चाशनी चुल्हेपर बनती ही रहे, वही झाड़ूसे शत्रुओपर छिडका जाय।

(२) मिर्चा पीसकर पानीमे घोलकर रखे और पिचकारीसे शत्रुओंकी आंखोपर दें।

(३) बांसके लम्बे टुकड़ेके छोरपर नोक बना लें जो बर्छेका काम करेगा। आदि-आदि।

ये उपाय शत्रुओंको मारनेके लिये कदापि समर्थ नहीं हो सकते। उन्हें केवल कुछ देरके लिए अपने अस्त्र प्रयोग करनेसे रोका जा सकता है और यदि हमलोग काफी संख्यामे रहें तो इसी बीच उनके अस्त्र छीन ले सकते हैं और अपने प्राण बचा सकते है। फिर भी मैंने ताकीद की कि इन पुराने और छोटे मोटे साधनोंसे लाभ कम होगा और दुश्मन तो हमारे ऊपर बहुत दूरसे आक्रमण करेंगे। जैसे कि उन्होंने कितने घर जलाये है। वे घरोपर पेट्रोल छिड़ककर बन्दूक दाग देते हैं और आग लग जाती है, ऐसे शत्रुओपर भला इन साधनोका क्या असर होगा ? श्री हीरालाल सर्राफका घर भी इसी प्रकार जलाया गया था।

यह सभा समाप्त हुई और लोग घर गये। श्री सर्राफजी रातभर ठहरकर सुबह ही छपरे गये और श्री तिवारी निकट गांवमें जहां उनका ससुराल था रात भर ठहर कर अपने घर चले गये।

१६ अगस्तको मढ़ौरा थानापर चढ़ाई करनेके लिये इतने लोग इकट्ठे हुए कि दर्शक सहित आध मीलका जलूस बन गया। अगली कतारमे अमनौर स्टेटके श्रीमती बहुरिया रामस्वरूपा देवीजी, मेहता परिवारकी महिलाऐं शुक्लजीकी पुतोहू और अन्यान्य स्त्रियां थीं, संख्या थी लगभग दो दर्जन। उनके पीछे थे सुदिष्ट नारायण सिंह और सूरज सिंह, सभापति तथा मंत्री थाना कांग्रेस कमिटी और शीतल सिंह, रामकुमार तिवारी, शुकदेवनारायण मेहता, गोरखनाथजी वैद्य और बोधनप्रसाद श्रीवास्तव वगैरह। एक मीलकी दूरी तय करके यह जलूस रजिस्टरी ऑफिस पहुँचा। उसपर झंडा फहराया गया और थाना ऑफिसमे ताला लगा दिया गया। मुलाजिमोंको हुक्म हुआ कि आप इस्तीफा दाखिल करें। थानेपर भी झंडा फहराया गया और थाना ऑफिसमे ताला लगा दिया गया। थानेमे डिपटी मजिस्ट्रेट दोनो दारोगा, दोनो जमादार, मुंशी और दो-तीन सिपाही मौजूद थे। १५ फौजी सैनिक भी थे। मेहथा शुकदेव नारायण लिखते है :—थानापर कब्जा कर लेनेके बाद आर्म्ड पुलिसकी बन्दूकोंको ले लेनेकी बारी आयी। बदूकों या अन्य युद्धके सामानोको लेकर किसी सुरक्षित स्थानमे रख देनेकी बात पहले ही हमलोगोंको सोलह आदेशवाले परचेसे मालूम हो गया था।

मढ़ौरा

अतएव मैंने डिपटी मजिस्ट्रेटसे कहा कि पुलिसवाले बदूकोंको हमारे सुपुर्द करदें नहीं तो हो सकता है कि बात बढ़ जाये। अभी तक आम्र्ड पुलिसवाले दिखाई नही पड़ रहे थे। वे थानाके एक बैरकमे भरी हुई बन्दूकोंके साथ एक कतारमें तैयार खडे थे। जब सध्या हो चली तब बड़े जोरोसे बदूके छीन लोका नारा बुलंद होने लगा। दो-चार सौ लोग थानेके भीतर भी आगये। डिपटी साहबपर बदूक दिला देनेके लिए दबाव पडने लगा। पर वे जरा भी राजी नहीं होते थे। आखें लाल-पीली करके सबको घूर रहे थे। मैंने उनसे कहा कि मैं स्वय सैनिकोंसे बाते करूगा, यह कह कर मै बिना किसी इन्तजारीके सैनिकोंके बैरकमे घुस गया।

फाटकपर डिपटी साहब क्रुद्ध खडे थे और मै अकेला चौदह सैनिकोंके बीच खडा खडा उनसे बातें कर रहा था, 'आप मेरे भाई हैं, मेरी ही तरह ही गुलाम हैं। इस आजादीकी लडाइमे आपको भी जोग देना चाहिये। बंदूकके साथ ही साथ ही हमलोगोंके गिरोहमे आ मिलना चाहिये।' मेरी बातोंका इतना ही निचोड था। सिपाहियोंमें एक जो औरसे कुछ अधिक पढ़ा लिखा जान पडता था मुझे विश्वास दिलाने लगा कि सैनिक हथियार तो न देंगेपर छपरा जाकर सरकारको इस्तीफा दे देंगे। हथियार दे देनेसे उनपर इल्जाम आयेगा जिससे न मेरा काम सधेगा न उनका। सैनिकोंकी बात-चीत और भाव-भगीसे उनकी सचाईपर मेरा विश्वास होगया और मैंने उनके हथियार न ले उनको छपरा जाने देनेकी बात मानली। फिर मै हरेक सैनिकसे गले मिलने लगा, सभी चावसे मिले। फिर वे 'महात्मा गांधीजीकी जय' का नारा लगाने लगे, फिर उनके अगुआने जनतासे दो बातें करनेका इरादा जाहिर किया। वे लोगोंके सामने आये और बोले—हमलोग आपके साथ हैं, हथियार देकर अगर हमलोग इस्तीफा देने जायेंगे तो फौजी कानूनके अनुसार हमें गोली मार दिया जायगा। इससे बेहतर है कि आप भाइयोंके हाथ मृत्यु हो। आप हथियार लेलें और हमें गोली मार दें। वरना हमलोगोंको आजकी रात वापस जाकर इस्तिफा दाखिल करने देवे।'

डिपटी साहब सब कुछ देख रहे थे। उनके पैरके नीचेकी धरती धॅसी जा रही थी और इधर जनता क्रान्तिके नारोंके बीच घर लौटी जा रही थी।"

१५ अगस्तको करीब दस हजारकी सख्यामे लोग थानेपर इकट्ठे हुए और निर्विघ्न थानेपर झडा फहराया। १९ अगस्तको कार्यकर्त्ताओंने थानेको जला देनेका

परसा निश्चय किया पर देखा कि थानेको जला देनेसे परसा बस्तीको बड़ी आच पहुँचेगी। क्योंकि थाना बस्तीके ही भीतर है। तब उनने अपना निश्चय बदल

दिया और जलानेके बदले थानाको डाह दिया। जितने कागज मिले वहां उनको जला दिया यद्यपि सरकारी नौकरोंके निवास स्थान सुरक्षित थे, तथापि सभी सरकारी नौकर वहांसे चले गये। थाना खाली होगया। फिर तो गांवोंके चौकीदार आ-आकर कांगेस औफिसमे अपनी वरदियां जमा करने लगे। कुमार पशुपतिके जत्थाके कार्यकर्त्ता थानेको जलानेके लिये उतावले हो रहे थे, मै उन्हे बराबर रोकता रहा, पूरे चौबीस घंटे बीत गये तब उन्तीस अगस्तको आठ बजे सबेरे उन्होने कहाकि आज थानेको जलाकर राख कर ही देना होगा। मैने उन्हे फिर समझाया कि मै थानेको बचा देना चाहता नही, पर इतना जरूर चाहता हूँ कि थानेके साथ यह गांव भी न जल जाय और थानेके कर्मचारियोंके बाल बच्चे शरण हीन न हो जाये। यदि थाना जलाया जाय तो कर्मचारियो के वासस्थान बचा दिये जाये। यह कैसे होगा? कार्य-कर्त्ताओंने कहा—उन कर्मचारियो और उनके आश्रितोको अपने गांवमे रहनेके लिए जगह देंगे पर थानाको जला देंगे। मैंने कहा कि वे सरकारी आदमी आपपर विश्वास न करेगे। और आप भी उनपर कैसे विश्वास करेगे। इस प्रकार बहुत तर्क वितर्कके बाद मैंने उन्हे इतनेपर राजी किया कि थाना जलानेके बदले वह ढाह कर गिरा दिया जाय। थानेदारोंके रहनेका घर ज्योका त्यो छोड़ दिया जाय।

कार्यकर्ताओंको इस प्रकार राजी कर मै थानेमे गया, दारोगाजीको सडकपर बुल-वाया। वे कृपा कर सड़कपर आये। हमलोगोंमे बाते हुयी—

मै—दारोगाजी, आपके थानेमें कुल कितने आदमी हैं?

दारोगा—मै स्वयं, जमादार, मुंशी और छः सिपाही, सिरते पहरमे आठ चौकी दार भी आवेंगे।

मै—आप छपरे खबर भेजकर काफी आदमी और अस्त्र शस्त्र मंगा ले।

दारोगा—सो सब मैं न करूंगा। मुझे आपसे लडना नहीं है।

मैं—तब तो आप अपनी ड्यूटीमे गफलत करते है। कमसे कम अपने अफसरोंको खबर दे दीजिये। वे जैसा उचित समझेंगे करेंगे।

दारोगा—मैं वह भी न करूंगा।

मै—अच्छा, तो आप अपनी ड्यूटीमे गफलत करनेके बजाय इस्तीफा देकर देशकी सेवा करें तो बहुत अच्छा हो।

दारोगा - गरीब आदमीको इतनी हिम्मत कहां?

मै—अच्छा, आप अपने बंदूक पिस्तौल हमे देदें। हम उन्हे तोड़ ताड़ डाले।

दारोगा—मेरे थानेमे ये सब चीज नही है ।

मै—दारोगाजी, इस ससार व्यापी युद्धका परिणाम अनिश्चित है। मै आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप न अंग्रेजके और न अमेरिकाके नौकर रहे और न जापान द्वारा धूलमे मिलाये जाये । आप केवल इस्तीफा देकर मेरे जत्थामे आ जाये तो स्वतंत्रा मिलेगी ।

दारोगा—जब समय आवेगा तो देखा जायगा । अभी तो हिम्मत नही है ।

मै—अच्छा, दारोगाजी आपके जीमे जो आवे सो आप करें । मेरा दोष न दीजियेगा । मै आज सांझको आपका थाना ढाह कर गिरा दूंगा । पूरे आठ घटे आपको मिल रहे है । मुनासिब कारवाई करले नही तो you may be sacked

दारोगा—आपकी जो मिहरबानी, मै तो कुछ नहीं करूंगा ।

मैं वापस आया। अपने सहयोगियोको सारी बाते बतला दी सबोने कहा—आज तो खूनकी नदी बहेगी । दारोगा भारी दुष्ट है । वह बहुत भारी तैयारी कर चुका है । अब तक हमारे कार्यकर्त्ता छपरेकी सडकको एक ही जगह काट सके थे जो मैने छपरेसे आते समय देखी थी । विचार हो रहा था कि वह राह कई जगहोपर काटी जाय पर असमंजस यह था कि इससे टमटम और बैलगाडीको राह भी तो बन्द हो जाती है । जनताको कष्ट होनेसे उनका सहयोग नही मिलेगा । दूसरी बात यह थी कि गोरोकी राह रोकना भी जनताके हितके लिये जरूरी था । वे यदि गांवमे आ गये तो गांवको खतमकर ही डालेंगे। अत: विचार हुआ कि आज रातसे सभी सड़कोको कई जगह काटेंगे और बड़े बड़े वृक्ष भी काट कर सडकपर रखकर राह रोक देंगे । उस समय किसीके माथेमे यह बात न आई कि हवाई जहाजसे भी शत्रु आ सकता है और आसमानसे भी अपने अस्त्रोका प्रयोग कर सकता है । हमलोगोने समझ रखा था कि ये चीजें तो बडे-बड़े युद्धोके लिए हैं, यह यह तो अब मालूम हो रहा है कि हमलोगोने जो लडाई लडी सो मामूली वा छोटी लडाई न थी और उसमे बडे-बडे युद्धोकी सामग्रिया काममे लायी गयी थीं ।

लगभग तीन बजा । हमारे कार्यकर्त्ता थानापर धावा बोलनेको तैयार हुए । उनमेसे मैने मरनेवालोको छाट लिया और जो नाबालिग थे उन्हे छाट दिया । फिर जो बचे, सभी लाठी भाले लेकर सामने आये । उन्हे मैने अपने शस्त्रोको छोड देनेके लिए कहा । वे बोले घर तोडेंगे कैसे ? इन्हींसे खोद कर तोडेगे ।आप बार-बार लाठी छोडनेको क्यों कहते है ? जो मारेगा उसीको हम मारेंगे । यदि न मार सकेंगे तो भी अफसोस न रहेगा । हमें अस्त्र ले चलने दीजिये । मैने कहा—अच्छा, तो जाओ मै साथ नही

देता। पर जब सब आगे बढ़े, मुझसे न रहा गया। मैं भी साथ हुआ। उम्मीद बनी रही कि शायद ठीक अवसरपर वे मेरी ही आज्ञासे चलें, मैं उन्हें गोलीका शिकार बननेके लिए क्योंकर छोड़ सकता हूँ। आगे तक मुझे ही चलना पड़ेगा।

जब हम सब थानेमें पहुँचे तो देखा कि सचमुच दारोगाने कोई तैयारी नहीं की है। छपरेसे कोई आया न था और जो वहां पहलेसे मौजूद थे सो सब सादे लिबासमें निहत्थे पड़े थे मैंने पहुँचते ही उनसे कहा कि आपलोग अपनी सारी चीजें सरकारी चीजोंसे अलग करलें। हम सरकारी चीजोंको नष्ट कर चले जायेंगे। आप यदि उन्हें भी बचाना चाहें तो अपने अस्त्रोंका प्रयोग करें। दारोगाने कहा कि हमलोग अस्त्र न छुयेंगे। हमारे पास अस्त्र है ही नहीं। फिर थानावालोंने अपनी-अपनी चीजें अपने-अपने घरोंमें रख ली। थानेमें डाकघरकी तिजोरी रखी थी। डाकबाबूको बुलाकर वह उन्हें सौंप दी गयी फिर कार्यकर्त्ताओंको थाना ढा देनेका आदेश मिला।

कुछ कार्यकर्त्ता थानेके भीतरसे कुर्सियाँ टेबुल आदि निकाल लाये और उन्हें तोड़ने-फोड़ने लगे। कुछ कागज नोचने लगे। बहुतसे छप्परपर चढ़ गये और खपड़े फोड़ने लगे। कोरो-बत्ती, आदिके बन्धन तोड़ बांस आदि नोच-नोच फेंकने लगे, छप्पर तहस-नहसकर दीवारोंके ईंटोंके बीच लाठी और भाले घुसा-घुसाकर ईंटें ढीलीकर गिराने लगे। सूर्यास्त होते-होते थानेका औफिस और चौकीदारोंका 'बीट-शेड' धाराशायी हो गया। कागज और लकड़ीके सामानोंको कार्यकर्त्ताओंने तोड़-फोड़ दिया। लोहेके सामान मेरे हाथ पड़े जिन्हें मैंने घन और निहाई मंगाकर टुकड़े-टुकड़े करा डाले। फिर इन्हें नदीमें फेंकवा दिया गया। कागजोंको एक गढेमें रखाकर जला डालनेकी अनुमति मैंने दे दी। और अपने सामने उन्हें राख बनवाकर हमने आग बुझवायी। फिर हम सब अपने-अपने घर वापस आये।

इसके बाद हमारा काम गांवका रखवाली करना रह गया। क्योंकि सबके मनमें यही बात आने लगी कि अब तो गोरे आवेंगे और तरह-तरहके जुर्म करेंगे। वहां पांच ओर सड़कें जाती हैं। विचार हुआ कि सभी तरफ काटकर और वृक्ष गिराकर रोक डाली जाये। छपरेकी राहपर विशेष सतर्कता रही। २० और २१ अगस्त तक यही होता रहा। लोगोंके मनमें काफी डर होगया। कुछ बनिये लोगोंने अपने घरकी स्त्रियोंको अपने अन्य सम्बन्धियोंके यहां भेज दिया और मुझे भी ऐसा ही करनेकी सलाह दी। मैंने अपनी स्त्रीसे और भाभीसे पूछा तो वे कहीं दूसरी जगह जानेको तैयार न हुईं। फिर भी मैंने

अगस्त-क्रान्तिके दो सेनानी

श्रीजगलाल चौधरी
(वर्त्तमान आबकारी मंत्री)
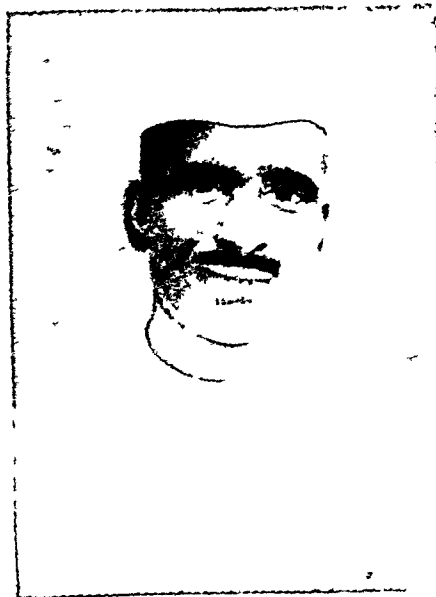
श्रीजगत नारायण लाल

अगस्त-क्रान्तिके दो प्रचारक

श्रीदीप नारायण सिंह,
तत्कालीन मंत्री (वि प्रा का. कमिटी)

श्रीवैद्यनाथ चौधरी,
(पूर्णिया)

गावके भीतर अपने एक मित्रसे बातें करली कि यदि आवश्यकता पडे तो वे अपने घरमे मेरे परिवारकी स्त्रियोंको शरण देंगे। मेरा घर सडकपर ही है, इसलिए ऐसा तय किया। पर वे स्त्रियां कहीं भी न गयीं और अन्त तक मेरे ही घरपर रहीं।

२० अगस्तकी सुबहमे दारोगाजी छपरे जानेवाले थे। छपरा मेरे गावसे पच्छिम दक्षिण पड़ता है। उनका घर डोरीगंज था। जो मेरे गाँवसे सीधे दक्षिण पड़ता है। वे छपरेके लिए टमटम चाहते थे पर कोई टमटमवाला उन्हे ले जानेको तैयार न था। उन्होंने मुझसे शिकायत की कि स्वयंसेवकोंने टमटमवालोंको मना कर दिया है। स्वयसेवक कहते थे कि उन्हे अगर छपरे जानेकी सुविधा दी जायगी तो वे वहांसे मिलिटरी लाकर हमारे ऊपर जुर्म करेंगे। वे घर जाना चाहे तो दक्षिणकी राह जाय। दारोगाजीका कहना था कि जाना तो घर ही है पर दक्षिणका रास्ता पानीसे डूबा है। अत पच्छिमकी राहसे घूमकर जाना ठीक होगा। मैंने स्वय-सेवकोंको समझाया कि दारोगाजीको कैद करनेका विचार हो तो दक्षिण या पच्छिम कहीं न जाने देना होगा। पर यदि कैद करनेका विचार न हो और घर उन्हे जाने देना चाहे तो वे चाहे जिस रास्तेसे जाये। यदि वे कैद न किये जाये तो उन्हे छपरा जाकर अपने अफसरोंके यहाँ रिपोर्ट करनेका भी अधिकार होगा। यदि मिलिटरीसे डरना है तब तो इस युद्धको छेडना ही भूल थी, और यदि वे दक्षिण होकर भी घर जाये तो फिर वहाँसे उनका छपरा जाना कैसे रोक सकेंगे? स्वय सेवक इस तर्कका उत्तर न दे सके और दारोगाजीको छपरा जानेकी सुविधा मिल गयी। जाते समय उन्होंने अपनी गठरीकी तालाशी देनी चाही जिसमे हमलोग समझ जाये कि उनके पास रिवालवर आदि नहीं है। पर हमने तलाशी लेनेकी आवश्यकता न समझी और फिर भी उनसे कहा कि यदि कोई अस्त्र उनके पास हो तो दिखलावे। मै उन्हे तोड़ दूँ या वे स्वय ही तोड़ दे; पर जान पडा कि उनके पास कुछ था ही नही।"

२१ अगस्तको बसतपुरमे कार्यकर्त्ताओंकी सभा हुई। जहासे एक जुलूस निकल कर थाने आया. थानेपर लोगोने अधिकार जमा लिया और कागज-पत्तर. फरनी-
सिवान सबडिविजन चर और वह सब वस्तु जो वहा मिला सबोंको जला दिया। मकानपर झडा फहराया। बादको कुछ लोगोने दारोगाजीसे बदूक मागी पर उनने कहा कि मेरे पास बन्दूक नहीं है। फिर दारोगाजी खद्दर धारी बनकर जुलूसके
दसतपुर साथ घूमने लगे और नारा लगाने लगे। वहासे चलकर जुलूस डाकखाने आया। डाकखानेपर भी कब्जा किया गया। उस समय डाकखानेमें

कांग्रेसका ताला लगा दिया गया पर पोस्ट-मास्टरने ताला खोल दिया। लोग खीज उठे। पोस्ट औफिसके सारे सामानको इकट्ठा किया और उसमें आग लगा दी। मकानको एकबार फिर बदकर दिया—और उसपर काग्रेसका झडा फहरा दिया। वहासे जुलूस डाकबगला पहुँचा जिसको सारे सामानके साथ जला दिया। अन्तमें लोग रजिस्टरी औफिस पहुंचे जिसको अपने कब्जेमें कर लिया उसके दरवाजेपर काग्रेसका ताला लगा दिया और मकानपर काग्रेसका झडा फहरा दिया।

१७ अगस्तको दरौली थानेपर जनताका हमला हुआ। थानाके मकानमे ताला लगाकर दारोगा तथा अन्य कर्मचारी गण बाहर आकर खड़े थे। उनसे थानाकी

दरौली

चाभी मागी गई जिसे देनेसे उनने इनकारकर दिया। बादको उन लोगोसे कहा गया कि वे सरकारी नौकरीसे इस्तीफा देकर कांग्रेसके साथ हो जाये, परन्तु इसे उनने मजूर नही किया। इसपर लोगोने तुरत थानेके तालेको तोड़ दिया और जो कागजात मिले उन्हे जला दिया। थानावालोने कहा कि अब हम यहासे चले जायेगे।

पीछे पता लगाके पुलिसके अधिकारी गण थानेमे अभी तक डटे हुए है, और जो कुछ कागजात उन्होने छिपा रखा था उसको लाकर औफिसका काम पूर्ववत् चला रहे है। इस समाचारसे कार्यकर्त्ताओमें काफी सनसनी फैल गई, फिर थाने पर दूसरा हमला हुआ। लोग रंज थे ही, बस उस दिन थानेके पक्का मकान मय सारा सामान और फरनीचर वगैरह जला दिया। थानेका नामोनिशान मिटा दिया। पुलिसके अधिकारी गण अधीर होकर शरण मागने लगे। उन्हें डर था कि कही उनका क्वार्टर न जला दिया जाय। पर उनके क्वार्टर ज्योके त्यो खड़े रहे। फिर पुलिस दल वहा टिक न सका।

थानेपर अपने अधिकारको अक्षुण्ण रखनेके लिए लोगोने एक विध्वसक दलका सगठन किया। जिसके जिम्मे गमनागमनके साधनको नष्ट करनेका काम रहा। उस दलने त्रिकालपुर, जहानघाट, शिवपुर आदि डाकघरोको जला दिया। फिर डि० बोर्डके सोमन चकवाले पुलको तोड़ दिया बादको आन्दरका पुल भी तोडा गया और वहाका डाकघर भी जला दिया गया।

गुठनी थानेपर १६ अगस्तको श्री राजवशी सिह द्वारा राष्ट्रीय झडा फहराया गया। चार दिनोके बाद थानेपर काफी भीड़ इकट्ठी हुई। पुलिस अपना सारा

गुठनी

सामान वहीं छोड़कर कहीं भाग छिपी थी, जनताने थानेको

बन्दकर दिया। किसीने प्रस्ताव किया कि थानेके अपवित्र कागज-पत्रोंको जला देना चाहिये। परन्तु धर्मदेव लालने इसका विरोध किया, कहा कि जब थाना हमारा हो गया और हमारा रहेगा तो जलाया क्यों जाय, फिर जलानेका सरकुलर भी तो नहीं आया है, इसलिए किसी चीजको वहाँ जलाया नहीं गया। मैरवामें लोगोंने शांतिपूर्वक झंडा फहरा दिया।

१६ अगस्तको हजारोंकी भीड़ रघुनाथपुर थानेपर दखल जमाने आई, दारोगाजीने तुरत कुंजी सौंप दी। थानेका चार्ज दे दिया और चार दिनकी मुहलत मांगी ताकि परिवारको घर ले जानेकी समुचित व्यवस्था कर सकें। प० महाराज पांडेयने थानेपर झंडा फहरा दिया और मास्टर रामचंद्र सिंहने डाकखानेपर झंडा फहराया और पोस्टमास्टरसे उसका चार्ज ले लिया। बादको कांग्रेस मैदानमें जनताकी सभा बुलाई गयी, जिसमें घोषणा की गई कि अंग्रेजी शासन आजसे खत्म हो गया और कांग्रेसका शासन शुरू हो गया। लोग सभी दल और सम्प्रदायकके हितको अपना हित समझते हुए कांग्रेसके शासनको खूब मजबूत बनावें। गांव गांवमें पंचायत कायम करें। याद रखें कांग्रेसके शासनमें पक्षपातका स्थान नहीं है।

रघुनाथपुर

थानेमें जो जलूस पहुँचा उसका उद्देश्य था थानेको कांग्रेसके कब्जेमें लाना। एकबार पहले थानेपर झण्डा फहरा दिया गया और उसमें ताला भी लगा दिया गया था। पर पुलिसने झंडा और ताला दोनों हटा दिये थे जिसका लोगोंमें क्षोभ था इसलिए जलूसमें आगे-आगे थे महाराजगंजके मंजे हुए कार्यकर्त्ता श्री फुलेना प्रसाद श्रीवास्तव और उनकी बगलमें चल रहीं थीं श्री ताराराानी श्रीवास्तव। फिर भीड़को संभालते हुए साथ लगे आ रहे थे बाबू देवशरणसिंह। जब सभी थानेके मजिस्ट्रेटके समीप पहुँचे तब उन्हें भीड़का मुकाबला करनेके लिये मुस्तैद पाया। तुरत समझ गये कि मजिस्ट्रेट साहबने दो घंटेकी मोहलत क्यों मांगी थी? इस मोहलतके भीतर जब कि भीड़ तोड़-फोड़के काममें मशगूल थी थानेवाले हरबे-हथियार जुटा रहे थे और जब भीड़को विद्रोहका मजा चखाने पर तुल गये थे। मजिस्ट्रेटने भीड़को अन्दर आनेसे मना किया। हुक्म दिया—तितर-बितर हो जाओ नहीं तो मार डाले जाओगे। फुलेना बाबूने कहा कि हमें थानापर फिर झण्डा फहराना ही है, उसको कब्जेमें लाना ही है, पीछे हटना असंभव है। बारह सैनिक मौजूद थे, उनने राइफल संभाली और मजिस्ट्रेटने

महाराजगंज

फुलेना बाबूको सोचनेका मौका दिया। फुलेना बाबूने आगे बढ़कर उस मौकेका फायदा उठाया। मजिस्ट्रेटने हुक्म दिया और चौकीदार, दफादार और कन्सटेबिल भीडकी जनतापर लाठियाँ बरसाने लगे। पर भीड़ थानेमें घसती गई। फिर गोली चली। उस गोलीकी बरसामें सीना ताने अडिग फुलेनाबाबू खड़े रहे। रह रह कर क्रातिका जयघोष उनके मुहसे सुन साथी समझ लेते, उनका अमर अगुआ अभी खड़ा है। पर एक एक करके उन्हें नौ गोलिया लगी फिर वे वहा धराशायी हुए। गोलिया कितनो को लगी और भीड़ भागने लगी। उस समयके दृश्यका वर्णन करती हुई ताररानी लिखती हैं—जब भीड़ भागने लगी मै हाथकी चूड़ियां भागनेवालेकी ओर फेंकने लगी और उन्हें खडे होनेको प्रोत्साहित करने लगी। फिर बहुतसे सिपाहियोने मुझे घेर लिया और लाठियोकी हल्की चोट करने लगे। मैं बोल उठी—मार डालो, भाई ही तो हो। पर मैं भागूंगी नही। सिपाही हट गये और मै घेरेसे बाहर निकली। देखा रणप्रागणमें अकेला मेरे देवता खड़े है और उनपर धाय धांय गोली चल रही है। उनके बदनसे खून झर रहा है, मैं छलॉग मार पास पहुँची। उनने तृप्त दृष्टिसे मुझे देखा। उसी समय एक गोली उनके सरको छेदती हुई निकल गयी और उनका विशाल-वृक्ष सा शरीर निर्जीव होकर पृथ्वीके उस अंचलमे सोगया जिसका दावेदार होनेका उन्हें गर्व था। मेरी आँख मुंद गई और जब खुली मैंने अपने देवताका सर गोदमें उठाकर रख लिया। मेरी माताजी आई और पैताने बैठ गई, उनका रोना मैने रोक दिया। सामने अपार जनता खडी थी, उत्तेजित मारने मरनेको तैयार। उसे मेरे इशारे भरकी प्रतीक्षा थी, मैने कॉपती हुई आवाजमें कहा 'कोई हिसा न करो—जिसे आना हो, इन्हीके रास्तेसे आवे; आत्म बलिदान व्यर्थ नहीं जाता। भीड़ बढी कि उसकी ओर भी गोली चलने लगी। बाबू देवशरण सिहको गोली लगी, जो मेरे देवताको शायद उठाने आ रहे थे। मेरे सामने कुछ दूरपर देवशरण सिहजी घायल हो गिर पडे।

मैं विमूढ-सी बैठी थी कि चिरंजीव मुन्नी सिह अपने साथी विद्यार्थीको लेकर पास आये और चिल्लाये—उठाओ मा, देखती नहीं हो सिपाही लाश छीनने आरहे हैं। तुरत उन दो किशोरो और माकी सहायतासे देवताको उठाकर चल पड़ी। हमारे साथ पूज्य देवशरण सिंह भी आये जो जीवित थे। घर पहुँचनेपर देवताका कपड़ा बदला गया। जो लाठियोंकी मारसे चिथरी-सा हो रहा था। हाथमें भाला

महाराजगंज थाना रेडके दो शहीद
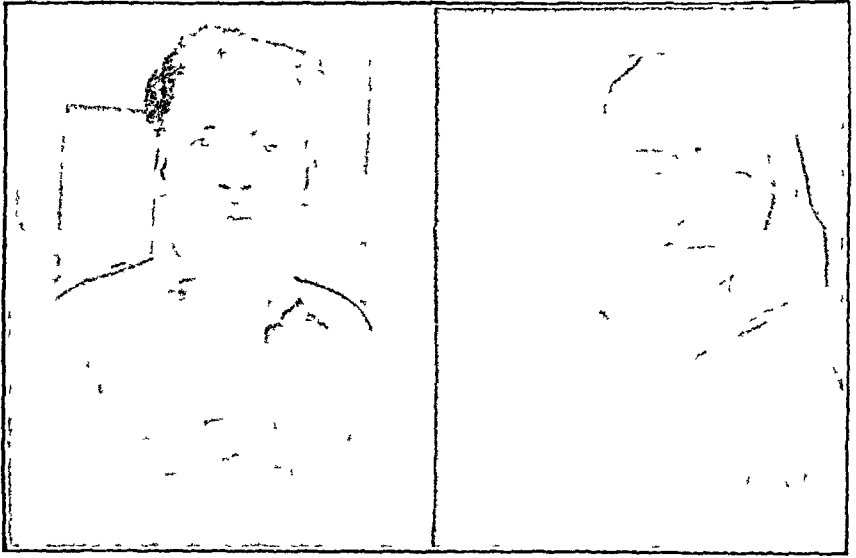
शहीद फुलेनाप्रसाद वर्मा और उनकी पत्नी तारारानी,
महाराजगंज (सारन)

शहीद देवशरण सिंह,
महाराजगंज (सारन)

क्रान्तिके दो सत्याग्रही शहीद

शहीद राधाप्रसाद सिंह,
मेघौल (मुंगेर)

शहीद सदानन्द झा,
भ्रमरपुर (भागलपुर)

लगा था और कलरसे ऊपर आठ गोलियाँ लगी थी, एक गोली सरमें लगीथी और आर-पार होगई थी, गोलो और प्राण साथ-साथ निकले थे। गिर जानेपर किसीने वार नहीं किया था। रातभर अपार जनताके बीच उनका शव घरपर रहा पता नहीं कैसे जिलेके बहुत हिस्सोंमें देवताके आत्म-बलिदानकी खबर पहुँच गई और १७ अगस्तके प्रात से ही इतनी भीड़ लगने लगी कि शव उठाना मुश्किल होगया। नव वधुयें भी आई थीं। और देवताका दर्शन करके आखोका मैल धो रहीं थीं। आठ बजे जब देवताका शव चित्र लिया जा रहा था, किसान कार्यकर्त्ताओंका एक झुंड पहुँचा प्रतिहिंसाकी भूख जगाता हुआ। हमारे यहाके चौकीदारोंने कुहराम मचाना शुरू कर दिया। मैंने कार्यकर्त्ताओंको मना किया, कहा—छोड़दो भाई इन बेचारोको, इनकी जमात तो सरकारके साथ ही खत्म होगई। ये तो चीलर हैं, चीलरोको मारनेसे लाभ? मेरे हृदयमे प्रलयकी अग्नि जल रही थी, पर अहिंसाके देवताको सामने देखती हुई हिंसाकी बात कैसे सोच सकती थी।'

लक्ष्मीनारायण लिखते हैं—शहीद फुलेना प्रसादका मृत शव एकमा होते सरयु तट, डोमाढ गढ पहुँचाया गया। महाराजगजसे लेकर श्मशान घाट तक लोगोका ताँता लग रहा था। जहाँ जहाँ शहीदकी अर्थी ठहरी, वहाँ-वहाँ बडी-बड़ी सभाएँ हुई, लोग दर्शनके लिए बेचैन दौड़-दौड़ कर आते थे। उस समय वीरागना तारा-देवीका साहस देखने लायक था। वीर पत्नी अपने प्राण-पतिके शवको ले जाते समय लोगोको शिक्षा दे रही थी कि देशके लिए पत्तेकी तरह प्राण विसर्जन करने ही पर स्वराज प्राप्ति होगी। घबराहट न थी। एकमा और ताजपुरमें बड़ी-बडी सभाएं हो रही थीं। मृत्तात्माकी आरती उतारी गई और स्वय तारा देवी राष्ट्रीय नारा लगा रही थीं।

इस काडसे लोग भयभीत नहीं हुये और उत्साहमें आगये। मजिस्ट्रेट तो सदल बल थानेसे भाग गया और थाना तडके ही बिलकुल जला दिया गया। फिर लोगोंने डि० बोर्डको डाक बगलेको जला दिया। उस चौकीदार और दफादारके घरोको जला दिया, जिसने श्री तारादेवीपर लाठी चलाई थी। और अगर लोगोको समझा बुझा कर तोड फोडके प्रोग्राममें लगा नहीं दिया जाता तो कहना कठिन है कि वे क्या कर छोडते। वे सब दरौंदाके तरफ बढे और रेलवे स्टेशनको सामान सहित जला दिया। रेलवे लाइन उखाड फेके। कुछ व्यक्ति लूट-पाटकी ओर झुके। उन सबोंने रातोरात स्टेशनका माल लूट लिया और जब माल गोदामको लूट रहे थे

तब कार्यकर्त्ताओंको इनकी खबर लगी। वे सब तुरत आये और लूट रोकी। थानेमें अंगरेजी हुकूमतका कोई अड्डा न बचा। कार्यकर्त्ता कांग्रेसकी ओरसे थानेकी व्यवस्था करने लगे।

गोपालगंज

१८ अगस्तको कुचायकोटके छात्र-गण जनताके सहयोगसे थानापर झंडा फहरा आये। थानेवालोंने छेड़-छाड़ नहीं की पर जब सभी लोग चले गये तब उनने झंडा हटा दिया। जब छात्रोंको इसकी खबर लगी, वे थाने दौड़ आये थानावालोंने बचन दिया कि अब झंडा न हटायेंगे। तब छात्रोंने फिर शांति पूर्वक थानेपर झंडा फहराया दिया।

मीरगंज

१४ अगस्तको पांच हजारकी भीड़ थाने चली। भीडमें शामिल थे श्री प्रभुनाथ तिवारी, श्रीकृष्ण प्रसाद सिन्हा, शिवशर्मा तिवारी और श्री नर्मदेश्वर प्रसादआदि। थानेमें पुलिस और मिलिटरी मौजूद थी। लोगोंको मना किया गया था कि कोई ऐसी हरकत न होवे जो हिंसात्मक समझी जाये। लोग सजग थे, और नारे लगाते हुए थानेकी ओर बढ़ रहे थे। थानेवालोंने कहा चले जाओ नहीं तो ठीक न होगा। पर लोग धड़ाधड थानेमें घुस आये और थानेपर झंडा फहरा दिया। पुलिससे कुछ बन न पड़ा।

बरौली

१६ अगस्तको लोग जलूसके साथ थाने गये झंडा फहरा आये कहींसे कोई विरोध न हुआ।

कटेया

यों तो पुलिसकी धमकीके बावजूद १३ अगस्तको ही कार्यकर्त्ताओंने कटेया थानापर झंडा फहरा दिया था पर पुलिसने तुरत झंडेको थानेपरसे हटा दिया। इसलिए फिर १५ अगस्तको थानेपर झंडा फहराया, पुलिसवालोंको सचेत कर दिया कि झंडा कदापि हटाया न जाय। उस दिन रातको कुछ कागज और जरूरी चीजे लेकर भागते हुए पोस्ट मास्टर साहब जनताके द्वारा पकड़े गये, उनसे सारी चीजे लेकर जनताने जलायी। पुलिसवाले डरने लगे कही उनका भी थाना न जला दिया जाय और सचमुच कार्यकर्त्ताओंमें थाना जलानेकी चर्चा चल भी रही थी, पर गोपालगजके महादेव रामजीने उनका हाथ रोक दिया, बादको कालिजके लडके पहुँचे जिनने थाना जला देनेपर जोर दिया। पुलिसवालोंको जब परिस्थितिकी खबर लगी तब मिलटिरी मँगाई गई जिसकी सहायतासे थाना खाली करके पुलिसवाले मोरे चले गये और अपने साथ सभी चीजे लेते गये।

२० अगस्तको विराट जन समूह बैकुण्ठपर थाने आया और ताला लगाकर

लिये उनको अधीर बना दिया। और वे २१ अगस्तको पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टकी गोलीसे बचनेके लिये पालकीमें बन्द होकर एस० डी० ओ० की कचहरीमें हाजिर हुये और जेलके अन्दर आकर शान्तिकी साँस ली। उधरका सारा इलाका सा गया और श्री गौरीशंकर मिश्र तो आन्दोलनसे अलगसे हो गये।

१७ अगस्तको ५००० की भीड़ लेकर त्रिपितनारायण झा, रामनारायण झा आदि कांग्रेस कार्यकर्त्ता थाना आये और वहाँ अपना झंडा फहरा दिया। फिर भी १९

बहेरा

अगस्तको थानेपर बड़ा जबरदस्त हमला हुआ। बहेरीसे एक जोशीला जत्था लेकर श्री जानकीदेवी आई और उनने बहेराके कॉग्रेसी नेताओंका सारा गुड गोबर कर दिया। नेतागण थानावालोंसे मेल करके इस हमलेके प्रोग्रामको एक नाटकका रूप देना चाहते थे। पर जानकीदेवी अड गई कि उन्हें थानाको बरबाद कर देना है। उनके पीछे बेशुमार नवजवान। फिर कौन बालता है? सभी थानापर टूट पड़े। तरवारा, पड़री, आदिके नवजवान भी जुट गये। फिर बहेरा और नवादाके कार्यकर्त्ता भी पीछे न रहे। थानेका हर एक कमरा ताला तोडकर खोल लिया गया जिसके कागजात जला दिये गये। दो बन्दूकें छीन ली गईं जा सुखदेव पहलवानके दाव-पेंचसे दरोगा साहबको वापस मिल गईं। बादको रजिस्टरी और पोस्ट औफिसमें ताला लगा दिया गया। २० अगस्तको दारोगा और उनके साथियोंको सपरिवार बैलगाडियोंपर चढाकर आदरके साथ आशापुर भेज दिया गया। तबसे वहाँ सरकारके सभी अड्डोंपर कांग्रेसी झंडा फहरता रहा।

बिरौलपर चढाई हुई १८ अगस्तको श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह विद्यालङ्कारके नेतृत्वमें। उनके साथ तरवारा, सुपौल, रजवा, बेक बलिया आदि स्थानोंके काफी

बिरौल

लोग थे। थानेपर इनलोगोंने दो दलमें बँटकर पूरब और पश्चिमसे हमला किया। थानेके हिफाजतमें जमादार विन्ध्येश्वरी बाबूसे भिड गये और दोनों गिर गये। विन्ध्येश्वरी बाबूका ललाट थोड़ा खुरच गया और जमादारके ठेहुने और केहुनी छिल गये। इस दृश्यको देख चौकीदार और दफादार तो नौ दो ग्यारह हो गये। कनस्टबिलोंने भी आस-पासके घरोंमें अपने छिपनेकी जगह ढूँढ ली। पर जमादार साहेबने अपनी बेबशीको समझकर विन्ध्येश्वर [illegible] कि मुझको छोड दीजिये, मैं चुपचाप मौलाबख्शके यहाँ चला जाऊँ। [illegible] बाबूने उसे मुक्त कर दिया और उसे राहमें कोई न छेडे इसलिये खुद मौलाबख्शके यहाँ पहुँचा दिया। हमला करनेवालोंकी हरकत देख जमादारके मनमें बैठ गया

था कि ये लोग हिंसा नहीं करेंगे। इसलिये वह इनलोगोको भद्दे-भद्दे शब्दोमे याद कर रहा था। विन्ध्येश्वरी बाबू सब सुन सह रहे थे। उसी समय एक स्वयं-सेवकने 'एक सीकी मौनी' लाकर विन्ध्येश्वरी बाबूको दिया। जिसमे कुछ मूंगे और चादीके गहने थे। स्वयं-सेवकने कहा कि यह मालखानेमे मिला है। विन्ध्येश्वरी बाबूने उसे तुरत जमादारके हवाले किया और बोले कि ऐसी-ऐसी चीजे हमारे मतलबकी नही। हमें तो रुपये-पैसेको छोड़ सरकारी कागजात जलाने हैं और अन्यान्य वस्तुओंको जब्त करना है।

इधर लोगोने चौराहेपर थानेकी सभी चीजोंको इकट्ठा किया और आग लगा दी। कुछ स्वयसेवकोको लेकर विन्ध्येश्वरी बाबू डाकघर आये और डाकबाबूसे चाभी लेकर तिजोरी खोली। तिजोरीमे एक पैसा भी नहीं था। फिर उनने मनीआ-र्डर फार्मको अलग सुरक्षित स्थानमें रख कर डाकघरके सामने उसके और सामान इकट्ठे किये जिसमे आग लगवा दी। वहासे फिर वे थाना पहुँचे। देखा, वहा होली मची हुई है। पिस्तौल और बन्दूककी खोजमें लोगोने जमादारके घरकी पूरी तरह तलाशी ली। खबर लगी कि कुछ गहने गायब हो गये है। तुरत विन्ध्येश्वरी बाबूके आदेशसे गहनोकी खोजमे स्वय सेवक छूटे और रातो रात पता लगाकर उन्हें ले आये। सारे गहने एक दूकानदारके यहा रख दिये गये। जहांसे जमादारको यथा समय मिल गये। साढ़े आठ बजे रातको दारोगा साहब थानेके सामने आ खड़े हुये और विन्ध्येश्वरी बाबूसे थानेके अन्दर आनेकी इजाज़त चाही। वे आये, थानेको देखा और हमला करनवालोका नाम नोट करना चाहा। खुशी-खुशी १७ आदमियोने अपना नाम लिखा दिया। थानेके हमलेमे आदिसे अन्त तक डटनेवाले निकले श्री बाबूनारायण झा, ठकको धोबी, गजेन्द्र मिश्र सुपौल, श्री बबुआनन्द मिश्र, श्री असरफी मिश्र महुआर, श्री ननुठाकुर पडरो, और श्री रामस्वरूप सिह विजुलिया।

जाले थाना

१८ अगस्तको जाले थानाके कार्यकर्त्ताओने थानेपर चढ़ाई की। एक गिरोहको बाजे-गाजे सहित श्री रूपधर झाजी ले आये, दूसरेको श्री अभयचन्द्रजी और तीसरेको श्री दामोदर सिहजी। चढ़ाई करनेवालोकी तादाद ५-६ हजार तक पहुँच गई थी। उनमे हिन्दू थे और मुसलमान भी। दरोगाने मुसल-मानोको फोडनेकी कोशिश की। चाहा कि हिन्दू-मुसलमान दंगा हो जाय। पर उस समय सबोमे इतनी जबरदस्त भावना काम कर रही थी कि क्रान्ति-पथसे उन

लोगोंको दारोगा साहब डिगा न सके। फिर उनने अपनेको जनताके हाथमें सौंप दिया। थानेपर कांग्रेसका कब्जा हुआ। उसके कागजात जला दिये गये। दारोगा और थानाके अन्य कर्मचारियोंसे इस्तीफे लिखवाये गये। १६ अगस्तको कार्य-कर्त्ताओंने ११ बैलगाड़िया लाईं। जिनपर उनने दारोगाजीके सभी सामानको लदवाया और फिर दारोगाजीको सदल-बल दरभगा पहुँचा दिया। थाने भरमें कांग्रेसी-सरकारका एलान सुन पडने लगा।

१५ अगस्तकी शामको विद्यार्थियो और शहरवालोका एक बहुत बड़ा जलूस निकाला श्री गणेशचन्द्र झाने। जब जलूस थानेके पासकी सडक होकर गुजरने

मधुबनी

लगा तब डी० एस० पी० और पुलिस इन्सपेक्टरने सदल-बल उस निहत्थी भीडपर लाठी चार्ज करवाया। लोग लाठी खाते रहे और डटे रहे, नारे लगाते रहे। जब किसी तरह भी भीड तितर-बितर नहीं हुई तब डी० एस० पी० और पुलिस इन्सपेक्टरने श्री गणेशचन्द्र झाको गिरफ्तार कर लिया और उन्हे इतनी बेरहमीसे पीटता हुआ थाना घसीट ले गया कि लोगोने समझा, झाजी मारे गये। फिर तो गणेश झाजीको देखने, उनकी लाशको पुलिससे छीन लेने और पुलिससे उनको मौतका बदला लेनेके विभिन्न विचारोंसे ओत-प्रोत जनताके विभिन्न दल थानेपर टूट पडे। तत्काल डी० एस० पी० और पुलिस इन्सपेक्टरने एक-एक करके सात बार फायर किया। अनेको घायल हुये और दो तो वहीं निश्चेष्ट होकर गिर गये। थानेमे बैठे-बैठे श्री गणेशचन्द्र झाने देखा कि अकलू और गणेशीको पुलिस-वाले पैर घसीटे थानेमें ला रहे हैं। दोनो जब-तब पानी-पानी कराह कराह कर माग रहे है। थोडी देरके बाद दोनोने गणेशचन्द्र झाके सामने दम तोडा।

इस घटनाके बाद ही अपने हाथो पुलिसवाले थानेके मकानपर ईंट-पत्थर बरसाने लगे। उस वक्त लोगोंको बडा ताज्जुब हुआ कि भला ये खुद क्यों ईंट-पत्थरसे थानेकी चीजोंको बरबाद कर रहे हैं। पर पीछे जब थाना लूट केस चला तब लोगोकी आँख खुली।

दूसरे दिन शानके साथ अमर शहीद अकलू और गणेशोके शवका जलूस निकला। शहरने उनके मातममें पूरी हड़ताल मनाई। इस गोलीकाण्डने जनताकी भावनाओंमें उफान पैदा करदी। हाँ! पुलिसके अफसर लोग जरूर आतंकित रहने लगे। डी० एस पी० राजवल्ली ठाकुर और इन्सपेक्टर श्रीकान्त ठाकुर कठोर पहरेमें रहने लगे।

ता० १५ अगस्तको ५०० आदमियोंकी जमात लेकर खिड़हर स्कूलके हेडमास्टर जयदेवलाल दास थाना आये। वहाँ झंडा फहराया और इस्तीफा दे देनेको प्रतिज्ञा

बेनीपट्टी थाना

दारोगासे करवाई। पर जनता तो चाहती थी थानेपर अपना कब्जा। इसलिये थानेपर कब्जा करनेको आवाज चारो ओर उठने लगी। आगे बढ़े फिर जयदेवलाल दास। १७ अगस्तको करीब २ बजे दिनमें चारो ओरसे करीब ४००० हजार लोग जमा हुये और संगठित रूपमें थानेपर गये। जयदेव लाल दासने दारोगासे चाभी मांगी जो उन्हें नहीं मिल सकी। फिर तो उनके आदेशानुसार जनताने थानेका ताला तोड़ दिया और सभी सरकारी कागज और रजिस्टरोंको निकाल कर जला दिया। मालखाना भी तोड़ कर उसके सामान वगैरह जला दिये। दो बन्दूके दो राइफल और एक रिवौलवर बरामद किये। एकको जय-देवलाल दासने अपने हाथों तोड़ दिया और औरोंको भी तोड़ फेकनेका आदेश दिया। किसी भी थाना कर्मचारीकी निजी सम्पत्ति नहीं बरबाद हुई। थानेसे जनता डाकघरकी ओर झुकी। उसका भी ताला तोड़ दिया और सभी कागजात जला दिये। सभी सरकारी कर्मचारियोके खाने पीने और ठहरनेका इन्तजाम कर दिया गया।

२१ अगस्तको दस हजारकी भीड रजिस्टरी औफिस जलाने चली। सिमरी भडारके रामदेव बाबू सदल-बल साथ थे। रजिस्टरी औफिसके कमरोंके ताले तोड़ दिये गये और कागज पत्रमें आग लगा दी गयी। आफिस भी जल गया। बादको कांग्रेसकी ओरसे हर जगह स्वय-सेवकोका पहरा बैठा दिया गया ताकि कोई कर्मचारियोकी सम्पत्तिपर हाथ न फेरे। इन स्वय-सेवकोंसे यह भी कह दिया गया था कि वे किसी सरकारी महकमाको चालू न होने देवे।

१९ अगस्तको खजौली कॉग्रेसने खजौली थानेको अपने मातहत लानेका निश्चय

खजौली

किया। उसी रातको दॅतुआर ग्राम होकर एक कनस्टबिल खजौली थानेके पुलिस इन्सपेक्टरकी बन्दूक लेकर जयनगरसे आ रहा था। लोगोंने उससे बन्दूक छीन ली। दूसरे दिन उनने खजौली रेलवे स्टेशनके कागजात और टिकट वगैरह जला दिये।

भोरमे पुलिस इन्सपेक्टर और दारोगा बन्दूकको खोजमें दॅतुआर आये। इन्स-पेक्टर साहेबने पिस्तौल ले रक्खा था, लोगोंने कहा—पिस्तोल दे दीजिये। किन्तु इन्स-पेक्टर साहब देनेके लिये तैयार होते नहीं दीखते थे। इधर कार्यकर्त्ता भी विना

पिस्तौल लिये टलनेको राजी नहीं होते थे। बहुत बहस मुबाहिसेके बाद दोनो दलोंमें समझौता होगया। दारोगा साहबने गाधी टोपी पहनी, झडा उठाया, सबोको साथ ले थाने आये और वहासे अपनी व्यक्तिगत चीजे निकाल कर थानेकी चाभी उन्हें सुपुर्द कर दी। कार्य-कर्त्ताओने थानेके सब कमरोको बन्द कर दिया और अपना पहरा बैठा दिया।

इस समझौतेसे खजौली खुश नहीं हुआ। उसी दिन दोपहरको सात आठ हजार लोग थानेमे घुस गये। औफिसका ताला तोड़ कर कागजात, फरनीचर और सभी सामानको बाहर निकाल कर उनने फूॅक दिया। दारोगा साहबसे रिवौलवर और पाँच सात कारतूस ले लिये। ता० २१ को कॉग्रेसके कार्यकर्त्ताओने बैलगाड़ी मगाई और स्वयसेवकोके हिफाजतमे दारोगा साहब और सब रजिस्ट्रार साहबको उनके घर भेज दिया।

१४ अगस्तको श्री सूरत झा और अनन्तनारायण झा, छात्रो और कार्यकर्त्ताओ की बडी तादाद लेकर थानेपर कब्जा करनेको आगे बढ़े। जब भीड थानेके पास पहुॅची तब सिपाहियोने सूरत झाको गिरफ्तार कर लिया और भीडको भाग जानेके लिये कहा। पर भीड थानेमें धॅसती ही गई। दारोगाने तब बल प्रयोग किया। जिसके लिये उसने काफी तैयारी करली थी। लोग लाठी और गुलेलकी मार सहने लगे। पर कुछ ही देरके बाद मारकी गहराई असह होने लगी। अनन्तनारायण झाका सर फूट गया। बाह भी लाठीकी मारसे टूटसी गई। फलत इनलोगोकी ओरसे भी रोडे और लाठियाॅ अपना करतब दिखलाने लगी। दो सिपाहियोपर बेतरह मार पडी जिनमें एक अस्पताल भेजा गया। बाकी भाग गये। दारोगा साहब बिलकुल बेबश हो गये। लोग थानेको जितना नुकसान पहुॅचा सके पहुॅचाया। कागजात, फनीचर ही नहीं बल्कि किवारो और खिडकियोको भी जला दिया। यहाॅ तक कि सिपाहियोकी व्यक्तिगत चोजे भी बचने न पाईं। सभी थानेवाले झझारपुर भाग गये। झझारपुरमे रेलवे स्टेशन मधेपुर, फूलपरास और स्थानीय पुलिसका अड्डा बना हुआ था। मधेपुरवालोने अपने दारोगाको वहाॅ जा घेरा। दारोगाके पास बन्दूक थी। मधेपुरके कार्यकर्त्ताओका कहना था इस बन्दूकसे दारोगा हमारी जान लेगा। इसलिये हम बन्दूक छीन लेगे। दारोगा दूसरी बात कहता, पर उसकी सुनता कौन? कार्यकर्त्ता तन गये। उस समय

मधेपुर

सामने आये दरभगा राज कचहरीके सर्किल मैनेजर श्री बुलाकीलाल महथा बीच बचाव करनेके लिये। दोनों पक्षके स्वार्थका ख्याल रखकर यही तय पाया कि बन्दूकके दो टुकड़े कर दिये जायँ। नाल वगैरह दारोगा साहबने लिया ताकि वे अपनी सरकारको बन्दूकका हिसाब दे सके और कुन्देको कांग्रेसवालोंने लिया ताकि नाल गोली छोड़नेके काम न आ सके। मधेपुर कांग्रेसकी ओरसे बाबू श्यामनारायण-झाने कुन्दा लिया।

१८ अगस्तको निर्भयनारायण झा जागेश्वर झा जलूस लेकर झंझारपुर थाना पहुँचे। जलूसको तितर-बितर कर देनेके लिये थानेवाले बिलकुल तैयार थे।

झंझारपुर थानेके प्रायः सभी चौकीदार और दलाल और कसाई टोलेके सभी लड़ाके लाठो, भाले, गड़ासा आदि लेकर पैतरेबाजी कर रहे थे। पर जब जुलूस सामने आया, घोड़ेपर सवार बन्दूक और तलवारसे लैस, तो दारोगा साहब डोल उठे। लोगोंकी सख्या थी लगभग ५००००। उनने तुरत निर्भयनारायण झा और जागेश्वर झा को बुला भेजा। लाख मना करनेपर भी दोनों दारोगाके पास गये। दारोगाने कहा कि आप दोनों ही आइये और जो करना है कर लीजिये। सबको थानेमे लाइयेगा तो डर है भीषण उपद्रव न हो जाय, बेशुमार जनता है बेकाबू हो जायगी। दोनोंने उनकी बात मान ली और लोगोंको समझाकर पक्षमें कर लिया। फिर बाजारसे एक मिस्त्री बुलाया गया जिसकी मददसे थानेका ताला तोड़ दिया गया। कागजात निकाले गये और जला दिये गये। वहाँ काग्रेसका अड्डा कायम किया गया। यद्यपि काग्रेसके कार्यकर्त्ता अहिंसाको पूरा-पूरा बरतते रहे तथापि दलालोंने दारोगाको इतना डरा दिया कि उनने अपने बाल-बच्चोंको तो एक दलालके घर भेज दिया और खुद १६ की रात एक बगीचेमें छिपकर बिताई। बादके दारोगाने थाना छोड़ दिया और झंझारपुर स्टेशनपर अपना डेरा डाला।

१७ अगस्तको तीन हजारके करीबको भीड फूलपरास थानेमें घुस गई। थानेके ऑफिसकी किवाड़ोको उसने तोड डाला और कुछ कागजात जलाये और कुछको

फूलपरास थाना छोट छाट दिया। दारोगा साहबने लोगोंपर अपनी बन्दूक तानी। परिणाम स्वरूप उनके डेरेपर रोड़े गिरने लगे। फिर दारोगाने बन्दूक चलानेका इरादा छोड़ दिया और लोग भी अपने हाथ रोक चुप-चाप चल दिये। १६ को ब्रह्मस्थानमे एक सार्वजनिक सभा हुई। डाकबगलेको कांग्रेसका ऑफिस बना

लिया गया। कार्यकर्त्ताओंने २२ अगस्तको दारोगा साहबके पास अपने कुछ साथियोंके मारफत संदेश भेजा कि भला इसीमे है कि आप थानेको काग्रेसके कब्जेमें आने दे। दारोगा साहबने ऑफिस और मालखानेकी चाभी उन्हे सौंप दी और एक पत्र भी दिया जिसमें लिखा था मै डाक्टर राजेन्द्र प्रसादका सम्बन्धी हूँ, स्वराज चाहता हूँ आप लोगोंका साथ देनेको तैयार हूँ। आजकल आना जाना मुश्किल हो रहा है और मेरी स्त्री इस लायक नहीं है कि चलनेकी कठिनाई बरदाश्त कर सके। इसलिये मुझको तबतक अपने डेरे हो में रहने दिया जाय जब तक बाहर जाने की सुविधा नहीं हो जातो। उनकी दरखास्त मंजूर कर ली गई। पर दारोगा साहब दोरगी चाल चल रहे थे। इधर कार्यकर्त्ताओंसे मीठो-मीठो बाते और उधर खजौली और लहेरियासराय इनके खिलाफ पन्नेके पन्ने रग कर भेजे जा रहे थे।

लौकही थानामे भी भीडने २१ अगस्तको थानेका ताला तोड दिया और ऑफिसकी चीजोंको निकाल-निकालकर जला दिया और बरबाद कर दिया। डाकघरके

लौकही

लोहेके सेफको भी जो जमीनके अन्दर वहा पक्का जोडा हुआ था उखाड़ कर तोड-फोड़ दिया और सारे सामान जला दिये। फिर डाकघर और आबकारी दफ्तरको भी बरबाद कर दिया, उसके सामान जला दिये। दूसरे दिन उनलोगोंने तय किया कि थानेवालोंको अपने इलाकेसे निकाल बाहर करना चाहिये। किन्तु जमादार दूर दराजके रहनेवाले थे, वहा सपरिवार रहते थे। इसलिये उनने प्रार्थना की कि उन्हें थानासे निकाला न जाय। पुलिसको सब तरहसे अधीनता मानते देख कार्यकर्त्ताओंने उन्हें और नहीं छेडा। पर हॉ! उन्हें आदेश दिया कि वे अपने डेरे ही में रहे। खाने पीनेकी चीजोंको भी कॉग्रेसवालोंके मारफत मगावें। इस ढगसे थानावाले अपने ही थानेमें १५ दिनोंके लिये काग्रेसके नजर बन्द रहे।

लौकहा थानेपर हमला हुआ २३ अगस्तको, नायक थे हृदयनारायण झा। इस हमलेका जवाब देनेके लिये पुलिस कमर कसे थी, भाला, गडासा, लाठी,

लौकहाथाना

फरसा और बन्दूकें—सभी हाथमे। ज्योंही कुछ लोगोंने थानेके पासके रास्तेपर कदम रक्खा त्योंही उनपर भालेका वार हुआ। चोट खाते ही वे सभी चम्पत हुये। कुछ हो हल्ला मचा जिसे शान्त करनेको दौड पडे श्री हृदय नारायण झा। उनपर भी भालेका निर्मम प्रहार हुआ। बस नायकजीने तुरत

आदेश दिया हमला बन्द करो। जब नायकपर भी पुलिस भालेका निर्मम प्रहार करे तब भला थानेपर हमला कैसे हो सकता है!

बाबा श्रीकृष्ण दासजी विद्यार्थियो और थानेके प्रमुख व्यक्तियोका जलूस लेकर १५ अगस्तको थानेपर गये और तिरंगा झडा फहरा दिया। फिर दारोगा, जमादार **मधवापुरथाना** और पुलिसको लेकर समूचे शहरमें झडा उडाते हुए और नारा लगाते हुए सब लोग घूमे। बादको पुलिस थाना छोडकर दरभंगा चली गयी और लगभग एक महीना गायब रही। फिर पोस्ट औफिस और आबकारी महालकी औफिसमे ताले लगाये गये। उसमे लगभग एक हजार जनता काग्रेस कार्यकर्त्ताओ के साथ थी। जहाँ-तहाँ सरकारी कर्मचारियोने विरोध किया, लाठी चार्ज भी किया पर जन-शक्तिके सामने उनको माथा टेकना पडा। २१ अगस्तको बिहारीका पुल तोड़ा गया। तोड़ते समय रामनारायण सिह और प्रेम चौधरीने बाधा भी दी, पर जागृत जनता बाधा क्या माने। ब्रह्मपुरीका पुल तोड़ा गया। बासुकी, बसबडियाकी सड़क खराब कर दी गयी। वहाभी जयकर्ण चौधरी, रामनन्दन सिह आदिने स्वयं-सेवकोको तग किया। पर स्वय-सेवक बेपरवाह रहे।

हरलाखी थानापर १९ अगस्तको हजारोकी संख्यामें लोग चढ आये। लोगोने **हरलाखीथाना** थानेका ताला तोड़ा, उसके सामान निकाल बाहर किये और उन्हें बरबाद कर दिये।

लदनिया थानापर अनेक चढ़ाइया हुई। ११ अगस्तको दारोगा साहबकी पिस्तौल छीन ली गई, फिर वापस कर दी गई। १७ अगस्तको लगभग १० हजार **लदनियाथाना** प्रदर्शन कारी थानेमे घुस गये जहा अपना झंडा फहराया और कमरोमें अपने ताले लगा दिये। जब्त शुदा कांग्रेस औफिसको फिर अपने कब्जेमें ले आये। पुलिसने थानेसे ताले हटा दिये। और अपने थानेका काम यथा पूर्व चालू रक्खा।

नथुनी साहु जैसे लड़केकी शहादतने जनताके हृदयको थानावालोके प्रति क्रोध और घृणासे भर दिया। उनका यहा तक बहिष्कार किया गया कि बाजारसे उनको **जयनगरथाना** भोजन सामग्री मिलनी भी बन्द हो गई। चारो ओरसे आवाज आने लगी—थाना खाली करो, थाना काग्रेसका है, इस बीच थानेकी हिफाजतके लिए पुलिस लेकर एक डिपटी मजिस्ट्रेट आये। अपना काम निकालनेका इनने अकबरी तरीका अख्तियार किया। गोकुलचद बरोलिया इनके दूत बने। इनने अगस्त

क्रान्तिको जगानेवालोंसे कहा—आप अपना काम शांतिपूर्वक क्यो न कर लेवें थाना तैयार है (१) आपको थानाका चार्ज दे देनेके लिए (२) थानेके कागजात जला देनेके लिए (३) जो गोली चलाई उसका प्रायश्चित करनेके लिए और (४) कुछ दिनके बाद थाना खाली करके चले जानेके लिए। हिचकते-झिझकते कार्यकर्त्ताओंने आखिरकार इन शर्त्तोंको मान लिया और २१ अगस्तकी दोपहरको वे सभी थाना पहुँचे। डिपटी मजिस्ट्रेटसे लेकर चौकीदार तकने उनका स्वागत किया। थानेके जमादार "थानाका कागज" ले आये और चौकीदारने उसे जला दिया। फिर एक पुरानी बदूक लाई गई और कार्यकर्त्ताओंके हवाले कर दी गई। दारोगाने सबोंसे कहाकि गोली छोडनेका मुझे सख्त अफसोस है। बाद उसने अपने हैटको जलती आगमे डाल दिया। गाँधी टोपी पहनी, झडा उठाया और जनताको सतुष्ट कर लिया। वह खुशी-खुशी थानेसे विदा हो गई। पर शीघ्र कार्यकर्त्ताओंको मालूम हो गया कि गोकुलचन्द बरौलियाकी चालमें आकर वे थानावालोंके हाथ उल्लू बने है। वे बड़े बिगड़े और जहा-तहा जुलूस बाँध गोकुलचन्द बरौलिया मुर्दाबाद का नारा लगाने लगे। अतमे हारकर बरौलियाने भरी सभामे शपथ खायी कि अब से पुलिसका साथ नहीं दूगा। देवधा जयनगरकी फाँड़ी है। वहाँके इन्चार्जको बाबू अयोध्याप्रसाद सिंह आदि स्वय-सेवकोंने गिरफ्तार कर लिया और उनको जुलूसमे चारो ओर घुमाया। जहाँ-तहाँ स्वय-सेवक उन्हें खड़ा कर चिल्लाते—जमादार गिरफ्तार। तब कुछ स्वयंसेवक जोरसे पूछते—कहाँके? जवाब मिलता—देवधाके।

देवधाको दखल करके उनने सभी चौकीदार और दफादारको सूचना दी कि सरकारी नौकरी छोडो और कांग्रेसकी सेवा करो। फलतः फाँड़ी भरके चौकीदारों और दफादारोंने अपना अपना इस्तीफा लिख कर कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंके हवाले कर दिया।

समस्तीपुर सबडिविजन

दलसिंगसरायमें १४ अगस्तको काँग्रेस कमिटीके सेक्रेटरी श्री नागेश्वरप्रसाद, बाबू शिवनन्दन सिंह, और बाबू मथुरा प्रसादसिंह गिरफ्तार करके थाना लाये गये; उनको विदा करनेके लिए जनता उमड पड़ी। विद्यार्थी एक-एक करके थानेके हातेमे आनेकी कोशिश करने लगे, पर बलदेव ठाकुर जो नायब दारोगा थे किसीको आने नहीं देते थे। वे जिसको पकड़ते उसे खूब पीटते और झडा छीन लेते। रामजी साहु और चन्द्रदेव सिंह तो खूब ही पीटे गये।

जब नागेश्वर बाबू वगैरह थाना ऑफिसमें पहुँचाये गये तब पुलिसका ध्यान उनकी ओर खींचा गया। बस मौका पाकर परमेश्वरी महतो जो हाइ इंगलिश स्कूलकी ११ वीं श्रेणीमें पढ़ता था, थानेकी देहलीपर फाद आया और छप्परमें अपने हाथके झंडेका डंडा खोसने लगा। बलदेव ठाकुरने उसे पकड़ लिया। और थप्पर घूसेसे पीटते हुए देहलीके नीचे पटक दिया। पीछे आप भी कूद पड़ा और परमेश्वरी महतोको ठोकरे मारने लगा। फिर उसकी छातीपर चढ बैठा। तत्काल नागेश्वर बाबूने उसकी कमर पकड़ ली और रामाशीष साहु लपक पड़ा और,बलदेव ठाकुरको परमेश्वरी महतोकी छातीसे खींच हटाया। परमेश्वरी साहूको इतनी चोट आई कि वह जेलमे जाकर मर गया। उस दिन जनतापर भी काफी लाठी चली, श्रीनाथ सिंहकी चादीमे सख्त चोट लगी और वह बेहोश होकर गिर पड़ा। भीड़ उत्तेजित हो गई। और सभुआके श्री रामदेवसिंह उसको समझा कर थानेसे हटा न लेते तो खूनकी धारा बह जाती।

थानेसे भीड़ लौटकर तोड़-फोड़में लग गई। चकशेखूकी रेलवे लाइन उखाडी जाने लगी। सैकड़ो गाववाले कुदाल हथौड़ा वगैरह लेकर रेलवेको बरवाद करनेमें लगे हुये थे। वड़े दारोगा बाबू जगतनारायण सिंहको बेटे और दामादको भी श्री लक्ष्मीनारायण वरतनवालेने वहाँ लाइन उखाड़ते देखा। तीन बजे दलसिंगसराय स्टेशनको जलाकर और वहाँके सारे सामानको लूटकर भीड़ थाना पहुँची। वह थानेको जला देना चाहती थी। उसको रोकनेके लिए पहले तो पुलिसकी ओरसे रोड़े फेंके गये, बाबू लक्ष्मीनारायणने अनवर मियां चौकीदारको भी जनतापर रोड़े फेकते हुए देखा। फिर जनताकी ओरसे भी रोड़े चलने लगे। फिर पुलिस खुलकर बंदूक दागने लगी। दो-एक आदमीको गिरते देख भीड़ भाग खड़ी हुई। पुलिस गोली छोड़ती हुई थानेके हाते भर उसका पीछा करती रही। तबतक साम हो गई और थानेका मैदान साफ हो गया। जनताके छः जवान खेत रहे। जैता, समस्तीपुरके चैता पोद्दार, गोसपुर दलसिंगसरायके अनूप महतो और बगाली दुसाध, चकहवाबके सरयुग काजड़ दलसिंगसरामके जागेश्वर लाल और चमथा तेगढ़ाके एक अज्ञातनामा दुसाध। घायल तो कितने हुये। प्रत्यक्ष दर्शी श्री लक्ष्मीनारायण लिखते हैं, "मैंने अपने कोठे-परसे देखा, कन्सटेबिल सब थानेके दरवाजे किवाड़ तोड़ रहे है। कुछ चौकीदार सड़कपर गये और दो घायलोंको उठा लाये और पटक दिया। बादको ही पगंड़ाके

रामदेव सिंह दफादार मेरे पास आये और बोले, दारोगा साहब बुला रहे हैं, मैंने कहा कि मैं नहीं जाऊँगा। उनका गवाह बनना मुझको मंजूर नहीं है, मैं देख रहा हूँ, किवाड़ वगैरह खुद तोड़वा रहे है, जिसका दोष वे जनताके माथे मढ़ेंगे। मैं यहा हूँ, वे मुझको भी शूट कर सकते हैं। पर दफादारने कहा उनकी स्त्री आश्रय चाहती है। तब मैं थानेपर गया। जगत बाबू मेरे कन्धोंपर दोनों हाथ रख फूट-फूट कर रो पडे ; बोले- मैंने अबतक चिडियापर भी गोली नहीं चलाई सो आज आदमी मारनेका अपराधी बना हूँ, मेरी स्त्री घबडा रही है। वह अपनी लडकी लेकर आपके घर जाना चाहती है। मैने कहा कि वे दोनो मेरी मा-बहन हैं, मेरा घर उनका ही घर है, खुशीसे आवे। ठीक इसी वक्त मै दारोगा साहबसे घायलोंकी सेवाका सवाल उठाना चाहता था कि एक कन्सटेबिलने आकर कहा—एक अध्यापिका घायलोकी सेवाको आना चाहती है। यह वही अध्यापिका थी जिसने मुझसे घायलोकी सेवा करनेकी इच्छा प्रकटकी थी। मै जगत बाबूसे मिलने जा रहा रहा था, इसलिये उसे रुकनेकी सलाह दी थी। कहा था कि म दारोगाजीसे मिलने जा रहा हूँ आपके लिये इजाजत ले आऊँगा, तभी जाइयेगा। कान्सटेबिलके मुहसे घायलोंकी सेवाकी बातें और सो भी एक अध्यापिका द्वारा—सुनते ही दारोगाजी फट पडे। गरज उठे, 'वेश्यापुत्री सब वेश्या वृत्ति करा कर अभी आई है सेवा करने। उस समय कहां थी जब हमारे नातीपर ईंटे बरस रही थीं। म इनकी बात सुन चुपचाप घर वापस आया। थोडी देरके बाद उनकी स्त्री और लडकी मेरे घर आ गयीं, मैंने उन्हें घरमे ले लिया।

सिगिया थानापर १७ अगस्तको आक्रमण हुआ, एक बजेमे ही चारो ओरसे झुंडके-झुंड आदमी आने लगे, और कांग्रेस सभाका मैदान खचाखच भर गया। सिगिया थाना दो बजेके करीब लगमाके बाबू राधाप्रसाद सिह विशाल जन-समूह लेकर आये। सबोने झडा उठाकर उनका स्वागत किया और स्वय सेवकोंने सलामिया दीं। लोगोंकी सख्या कमसे कम ११ हजार तक पहुँच चुकी थी। इधर, थानेवाले भी काफी तैयार थे। आसपासके सभी गुडोंको हरबे हथियार सहित उनने बटोर रखा था, थानेभरके सारे चौकीदार और दफादार लाठी और फरसा लिये ऐंठ रहे थे, दारोगा और जमादार भी बदूक लिये चौकन्ने नजर आते थे। उनकी तैयारीमें एक ही कमी रह गई थी। उनका एक आदमी दरभंगेसे

घातक गोलियां ला रहा था। वह विश्वनाथ सिंह आदि सेवकोंके द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया था। इसलिए थानावालोंके पास घातक गोलीका अभाव था।

परिस्थिति देख सभाने निश्चय किया कि पहले श्रीयुत रामेश्वरसिंह साधु और रामनन्दन सिंह आदिका एक डेपुटेशन थाना जाय और दारोगासे कहे कि वे शांति पूर्वक थानेका अधिकार कांग्रेसको सौंप दे। दारोगा झंडा फहरानेके लिये तो राजी हो गया। बाबू राधाप्रसाद सिंह, बाबू रामनन्दन सिंह और हितलाल महतो आदिने थानेमें झंडा फहरा दिया। पर जब ताला बंद करनेका मौका आया तब बड़ा विवाद उठा। थानावाले कतई राजी नहीं थे कि थानेमें कांग्रेसका ताला लगे, पर जनता बिना ताला लगाये हटनेको तैयार नहीं थी, समझौता करानेवाले परेशान थे और बड़ी देर लगा रहे थे। जनता अधीर हो उठी, बाबू राधाप्रसाद सिंहने अपने दलवालोंसे जिनकी तादाद बहुत बड़ी थी कहा कि हमलोग लौट चलें। ये सिंगिया-वाले कुछ करने न देंगे। पुलिसका साथ छोड़ना इन्हें मंजूर नहीं। उनके मुंहसे कुछ अनाप सनाप भी निकला। विद्यार्थी दलमें जोश आ गया। सिंगिया स्कूलके योगेन्द्र झा और बंगरहट्टा स्कूलके महानन्द झा थानेमें प्रवेश करनेके लिये चल पड़े। रामेश्वरसिंह साधुने रोकना चाहा। नकली कुंजी दिखला कर कहा कि आपलोग जाइये, हमें थानेकी कुंजी मिल गई। पर उनकी एक न चली, छात्र समूह और उसके पीछे जनता बढ़ती ही गई। परिस्थिति बेहाथ देख शत्रुघ्न प्रसाद सिंह दारोगासे बोले, अब हमलोग चलते हैं, आपको जो मुनासिब सूझे कीजिये। और इतना कहकर वे संगी साथी सहित थानेसे चले गये। तबतक विद्यार्थी थानेके हातेमें पहुँच गये, एकके बाद एक विद्यार्थी थानेपर चढ़नेकी कोशिश करने लगे। जिनमें दोको गहरी चोट लगी। एक तो देर तक बेहोश रहा, जनता और उत्तेजित हो गई, एक साथ आगे बढ़ी फिर तो उनपर लाठियां फरसेका अटूट वार होने लगा। फिर बन्दूकके छर्रोंकी मार पड़ने लगी। जनता कुछ पीछे हटी और वहाँसे जमकर थानेपर ईंट और रोड़े बरसाने लगी, धीरे-धीरे थानेवाले थक गये, उनके कितने मददगार नौ दो ग्यारह हो गये। दारोगा साहब और जमादार साहबके उठाये बदूकें भी उठती न थी, तब जनता जोशके साथ अपनी सारी ताकत समेट थानेको मटियामेट करने आगे बढ़ी। रामेश्वरप्रसाद साधुने एकबार फिर कोशिश की कि शांतिपूर्वक ही कांग्रेसका सारा विधि विधान पूरा हो जाये, वे थानेपर पहुँचे।

दारोगा साहबको अक्लमदोसे काम लेनेको कहा। दारोगा साहबने अपनी पगड़ी उतार फेंकी अपनेको खादीसे लपेट लिया और कांग्रेसका झंडा लेकर गांधीजीकी जयजयकार करने लगे, पर जनता उन्मत्त हो गई थी और अन्धेरी रात उसके उन्मादको और बढा रही थी। वह थाने आई और अपने घातकोको पीटने लगी, जमादार साहब थाना छोड मकईके खेतमें जा छिपे पर उनको छिपते कुछ लोगोंने देख लिया और उनका मार डाला। दारोगा साहब भी बुरी तरह घायल हुये पर कुछ लोगोने इन्हें बचा लिया। और अन्यान्य थानेके मददगार भी जो वहा डटे रहे, घायल होनेसे वच न सके। जब शाति हुई तब स्वय सेवकोका दल थाने आया; देखा थानेके सामने आग धू धू करके जल रही है, जिसमे थानेके हातेका तिनका-तिनका जला जा रहा है, कुछ लोग लूट पाट कर रहे है और काफी लोग लाठी फरसेकी चोट खाकर कराह रहे हैं। दारोगा साहब वेहोश जैसे हैं। सिर्फ जब तब कराहनेकी आवाज मुंहसे निकल रही है। इन स्वय सेवकोने सभी घायलोको अस्पताल पहुँचाया और बाबू कुलानन्द सिहने अपनी तीमारदारीमे दारोगा साहबको ले लिया जिनके लिये कपडे और दूधका प्रबन्ध करने लगे। उन लोगोंमें से ही कुछने खेतमें पडे हुये जमादार साहबकी लाशको दूर ले जाकर जल समाधि दे दी, बीस दिन तक थानामे कांग्रेसकी व्यवस्था काम करती रही।

रोसड़ा — रोसड़ाके कार्यकर्त्ता श्री वालेश्वर सिह, रमाकात झा और यदुनन्दन सिह एक बड़ा जुलूस लेकर रोसडा थाना आये। थानापर झंडा फहराया। उनने दारोगाको कुर्सीसे उतरनेको कहा। टोप उतरवा कर उससे वन्दे मातरम् कहवाया। रमाकान्तजी थानेमें ताला लगाना चाहते थे पर पुराने कार्यकर्त्ताओंके बीचमें पडनेसे वैसा न हो सका। इसी समय बादल गरजा, कितनोको भ्रम हुआ कि गोली चली। बस जुलूसके आधे लोग भाग निकले। बाकी म्युनिसिपैलिटी आये। जिसके मकानपर झंडा फहराया। वहासे सस्कृत पाठशाला आकर जुलूस खतम हुआ।

मुंगेर जिला — १२ अगस्तको चौथम मिडूल स्कूलके विद्यार्थियोंने हडताल मनायी और जलूस निकाला। जवाहर आश्रमके कार्यकर्त्ताओंने भी उनका साथ दिया। जुलूसने थानेके कागजात जलाये और उसपर झंडा फहरा दिया। जमादारकी बदूक लेली। बदूक कुछ दिन थाना कांग्रेस कमिटीके कब्जेमे रही और बादमें थाना-डिक्टेटर-श्री सूर्यनारायण सिहके द्वारा उनके नियुक्त ध्वसात्मक विभागके कमांडर

श्रीमहेन्द्र चौधरीको सौंप दी गयी। १४ अगस्तको थाना कांग्रेस कमिटीकी ओरसे जलूस निकला; अगुआ थे श्री सूर्यनारायण सिंह और रामदेव आर्य। जलूसने झंडा फहरा कर थानेमें अपना ताला लगा दिया। अपना बोरिया बंधना समेट कर चौथमकी पुलिस भाग गयी। तबसे लगभग एक मास तक चौथम थाना काग्रेसके कब्जेमे रहा। १५ अगस्तसे जत्था बना-बना कांग्रेसके स्वयं-सेवक थाने भरमें हुकूमतके अड्डोंको उखाड़ने लगे। कमलेश्वरी मंडलके नेतृत्वमें एक जत्था रामनगर आया और वहां रामसेवक सिंहके दलसे मिलकर कासानगर और बेलदौरकी कलाली जला दिया। पीर नगरके डाक घरको कब्जेमे किया। रामधारी सिंह, ईश्वरी प्रसाद यादव और महाबीर नाथके नेतृत्वमे कई दल, पिपरा, मानसी आदिके डाकघरोंपर कब्जा करते रहे और थानेभरकी कलालियां नष्ट करते रहे।

चौथम थाना

१५ अगस्तको बड़हिया के कार्यकर्त्ताओने जलूस निकाला। थानेपर कब्जा किया। वहाँ दारोगाने भी झंडा लेकर कांग्रेसकी जयजयकार की। कुछ लोग थानेको जलानेको उत्सुक थे, पर पुराने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओने ऐसा नहीं करने दिया। फिर वे डाकघर आये और उसे कब्जेमे कर झंडा फहराया।

बड़हिया

लक्खीसरायने भी थानेपर कब्जा किया और उसपर अपने झंडे फहराये। थानेवाले बाजार चले आये जहाँ कांग्रेस कार्यकर्त्ताओकी व्यवस्थासे ही आरामसे रहे।

सूर्यगढ़

१३ अगस्तको सूर्यगढ़ थानेभरके कार्यकर्त्ता एकत्र हुए और श्रीरूपकान्त शास्त्रीके नेतृत्वमे थाने पहुँचे। थानेपर अपना झंडा फहराया और उसके कागजोको जला दिया। वहां सभी कार्यकर्त्ताओने मिलकर कांग्रेसी सरकार स्थापनाकी घोषणा की। चौकीदारोकी वरदी जलादी गयी और उन्हे गांधी टोपी दी गयी। चौकीदार कार्यकर्त्ताओके साथ थानेमे आते जाते और कांग्रेसी वरदीमे परेड करते। थानावाले बोरिया बधना समेट कर चले गये। जिस समय वे जा रहे थे, कांग्रेस कार्यकर्त्ता 'अंग्रेजो! भारत छोड़दो' नारे लगा रहे थे। जनताने इसे देखा और समझा कि ब्रिटिश राज उठ गया और अपना राज आगया।

तारापुर

तारापुरके कार्यकर्त्ताओने थाना दखल करनेका प्रोग्राम बनाया और तैयारीमे लगे। इसी बीच १५ अगस्तकी रातको मिलिटरी आयी उसने थानेके सभी साज-सामान समेटे, थानेके सभी कर्मचारियोंको साथ लिया और रातको ही चली गयी। १६ की सुबहमें जनताने थाना खाली देखा जिसमे कांग्रेसी स्वयं-सेवक नारे लगा रहे थे।

सिकन्दराके कार्यकर्त्ताओने थानेको अपने कब्जेमे कर लिया। पुलिस वहासे भाग

जमुईसबडिविजन गया और चार महीनो तक झांकनेका भी साहस नहीं कर सकी।

१५ अगस्तको बेगूसराय थानेपर धावा हुआ और झंडा फहराया गया।

बेगूसरायथाना पुलिसकी मददके लिये श्री चन्द्रमौली देवने एक मोटर दी। पुलिस उससे बाहर जाना चाहती थी, पर सैकड़ो छात्र उस मोटरके चारो ओर जमीनपर लेट गये। मोटर जा नहीं सकी।

श्री महादेव भाईके मरनेकी खबरसे जनता उत्तेजित हो गयी थी। लोगोका ख्याल था कि सरकारने जहर देकर उन्हे मार डाला है। जनताकी उत्तेजना तोड़ फोड़के रूपमे प्रकट हुई। सारे रास्ते काट दिये गये। अनेक थानोपर धावे हुए। कितने ही पोस्ट आफिसोपर ताले लगाए गये और कितनोके कागजात जले।

१७ अगस्तको विद्यार्थियोका एक जत्था बेगूसराय खजानेपर कब्जा करने चला। वे चाहते थे खजानेपर कब्जा कर ताले लगा देना और तबतक बन्द रखना जबतक गाधीजी छोड नहीं दिये जाते। किन्तु एस० डी० ओ० साहब उसकी रक्षाके लिये सदल बल डट गये। एकबार फायर हुआ और साथ ही विद्यार्थियोका नारा लगा—छाती सामने है, गोली चलाओ। ऐन मौके पर श्री सरयुगप्रसाद सिंह वकील, विद्यार्थियो और पुलिसकी गोलीके बीच आ गये और एस० डी० ओ० से कहा—आप खजाना और दफ्तर बद कर देवें और कबूल करें कि फायरिंग गलतीसे हुई है। नहीं तो हम सबोको पछताना होगा। एस० डी० ओ०ने सरयुग बाबूकी कही मान ली और अन्तमे बाले बेगूसरायमे अगरेजो हुकूमतका अन्त आ गया। अब यहांका शासन आपलोग करें और मेरे जान मालकी हिफाजतको जवाबदेही लें। जनता जयघोष करती हुई वहासे टली और काग्रेस मैदानमे इकट्ठी हुई। वहाँ चौकीदारों, दफादारोंको हटाकर जनता राज कायम करनेका निश्चय हुआ।

जिलेमे सबडिविजनके सभी थानोपर १४ अगस्त तक कब्जा हो चुका था। १४ के

भागलपुर बादसे हुकूमतपर हमला करनेकी प्रवृत्ति जगी, मधेपुरा और बाका सबडिविजनको।

मधेपुराने आन्दोलनमें शानदार हिस्सा लिया है। वीरेन्द्र प्रसाद सिंह, भूपेन्द्र नारायण मंडल, और देवता प्रसाद सिंहके साथ एक जलूस १३ अगस्तको कचहरीपर पहुँ-

मधेपुरा चा। वीरेन्द्र प्रसाद सिंहने उस पर झंडा फहराया और उसके बरामदेसे

भूपेन्द्र नारायण मंडलने एस० डी० ओ० तथा अन्यान्य अफसरोंके सामने सत्रको कांग्रेसका प्रोग्राम पढ़कर सुनाया। जलूस फिर थाना और रजिस्टरोकी ओर बढ़ा और उनपर झडा फहराया।

१४ अगस्तको पुलिसने कांग्रेस आफिसको जब्त कर उसपर अपना पहरा बैठा दिया। लेकिन १५ को महताब लाल यादव, कमलेश्वरी मडल, देवदत्त महतो, प्रेमनारायण मिश्र और हाईस्कूलके छात्रोंने जनताकी सहायतासे जब्तशुदा कांग्रेस आफिस पर हमला किया। पहरेदार नौ दो ग्यारह हुए। बादमें एक बड़ी सभा हुई जिसमें ऐलान किया गया कि राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना हो गई। अब इस सरकारकी ओरसे ब्रिटिश सरकारकी ताकतके सभी अड्डोंपर ताले लगा दिये जायेंगे।

इसी तारीखसे हाइ-स्कूल बद होगया। और छात्र राष्ट्रीय सरकारकी सेवामें लगे।

१७ अगस्तको लगभग पचीस हजार जनताको उपस्थितिमें तय हुआ कि सरकारी दफ्तरों और खजानेपर कांग्रेसका ताला लगा दिया जाय। इस प्रोग्रामको अमलमें लाने के लिए पाच-पांच लोगोंके पाच जत्थे बनाये गये। जिन्हें आवश्यकतानुसार बारी-बारीसे आगे बढ़ना था। कार्यक्रमके अनुसार श्रीमहताबलाल यादवकी अध्यक्षतामें पहला जत्था कचहरीकी ओर बढ़ा। सड़कपर बेशुमार लोगोंकी भीड़ थी। एस० डी० ओ० और दूसरे-दूसरे अमले अपने अपने दफ्तरको बद कर लट्ठधर और हथियार बद पुलिसकी जमातके बीचसे उस जत्थेकी गति-विधिको देखने लगे। जत्था जब कचहरी पहुँचा, तब उसके अध्यक्ष महताबलाल यादवने एस० डी० ओ० साहबसे देशकी पुकार सुननेकी जोरदार अपील की, बादको उनने एस० डी० ओ०के कचहरीपर मुन्सिफी पर, रजिस्टरी ऑफिसपर और थाना एवं खजानापर कांग्रेसके ताले लगा दिये। डाकखाना और शराब गोदाम बंद कर दिया। ३० अगस्त तक सभी सरकारी दफ्तर बद रहे। खजानेपर स्वय सेवकोंका पहरा पड़ता रहा झडा फहराते हुए, नारा लगाते हुए।

किशुन गंजका थाना कांग्रेस कमिटी के नियन्त्रणमें पूर्ववत् कायम था। परतु १६ अगस्तको एक घटना घटी। आलमनगरसे प्रदर्शन कारियोंका एक जत्था थाना कम्पाउन्ड होकर कांग्रेस सदर कैम्पमें आरहा था। दारोगा साहबने अपने सहयोगियोंको लेकर उस जत्थेपर लाठी चार्ज किया। काफी लोग पीटे गये। और श्रीयुक्त लक्ष्मण-झाजीको काफी चोट लगी। लोग उत्तेजित हो उठे। १७ अगस्तको १२ बजे तक पचीसों हजार जनता इकट्ठी हो गयी, लाठी, गड़ासे, तीर, भालेसे लैस। सभी मारने-मरनेको तैयार। जब जनता थानाके अधिकारियोंके क्वार्टरकी ओर बढ़ी तब सामने आ खड़े

हुए श्रीकुलानन्द सिंह। उनने सबोंको हर तरहसे समझाया कि हिंसासे बाज आओ। हमें स्वराज लेना है, जमादार-दारोगासे बदला लेना नहीं। इनने यहां तक कहा कि आप लोग मेरी लाशको रौंद कर ही आगे बढ़ सकते हैं और थानेदारोंका रोआं छू सकते हैं। तब भीड़ कुछ शान्त हुई। दारोगा साहब भी उन सबोंके आगे आये और माफी मांगी। भीड़ वापस लौट गयी। इस लौटती भीड़मेंसे कुछ लोग बिहारीगंज रेलवे स्टेशन जा पहुँचे और स्टेशनका माल लूटने लगे। तार काटने और पटरी उखाड़नेका काम भी चलने लगा। बल्हा पुलको जला दिया गया। रेलगाड़ीका आना-जाना बंद हो गया।

२० अगस्तकी बैठकमें यह निश्चय हुआ कि सरकारी थाना अधिकारियोंको इलाकेके बाहर कर दिया जाये। श्रीयुत शिवनन्दनप्रसाद मंडल आदिने अधिकारियोंको हटानेका भार कुलानन्दजीको सौंपा।

२४ अगस्तकी सुबहमें थानाके कर्मचारीगण सपरिवार ३० बैल गाड़ियोंपर लद कर चल दिये। सभी प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंने उन लोगोंको प्रेम पूर्वक विदा किया। कुलानन्द बाबू इनके रक्षार्थ अरार घाट तक गये और इन सबोंको नावपर चढ़ाकर लौट आये। अब थानेपर पूर्ण अधिकार होगया।

यों तो बनगांव थानेपर १३ अगस्तको ही कांग्रेसका झंडा गाड़ दिया गया था। पर अच्छी तरह वह कब्जेमें आया १५ अगस्तसे, जिस दिन १४ अगस्तकी

बनगांव घटनाओंके फलस्वरूप थाना खाली करके पुलिसवाले चले गये। ता० १४ को एस० डी० ओ० और पुलिस इन्सपेक्टर सदल-बल बनगांव आये। और थानेपरके फहराते हुए कांग्रेसी झंडेको उतार दिया। थानेकी हिफाजतके लिए हथियारबंद पुलिसको तैनात कर दिया। इस खबरको सुनकर कार्यकर्त्ताओंको बड़ा क्षोभ हुआ। दस-पन्द्रह विद्यार्थी कार्यकर्ता वहां गये और विधि पूर्वक थानेपर झंडा फहरानेके लिये अपने झंडोंकी मांग की। एस० डी० ओ० साहबने लड़कोंको डांट बताई। परन्तु, लड़के अडिग और निर्भय होकर अपनी मांग पेश करते रहे। उनने कहा कि हमको तो अपने झंडे फहराने ही हैं और आप झंडे न भी देंगे तो हम नये झंडे फहरा देंगे। एस० डी० ओ० साहबने उन्हें चेताया कि ऐसा करोगे तो गोलीसे भून दिये जाओगे। लड़के लौटे ,और अपने नायक प० छेदी झाको खबर दी जो उस समय पास एक क्लबमें बैठे हुए थे। छेदी झा फौरन एस० डी० ओ० के पास पहुंचे और बोले, हमारे झंडे हमें दे दीजिये, एस० डी० ओ०

उनपर भी बिगडा और बंदूक दिखायी, श्री छेदी झाजीने कहा कि आप हिंसा कीजिये या जो कीजिये, पर हम तो बिना झडा लिये न चैन लेंगे न आपको लेने देंगे। तब एस० डी० ओ० ने उनसे शिकायतकी कि आपलोगोने हमारे जमादारको मारा-पीटा और थानाका सामान लूटा है, किस मुंहसे आप गाधोजीकी अहिंसाकी बात चीत करते हैं। उसने छेदी झाको गिरफ्तार करना चाहा, पर जनताका रुख देख हिम्मत नहीं हुई। हिंसा-अहिंसाके संबधमे कुछ कह सुनकर थानेके अपने कमरेमें चला गया। इन्सपेक्टरसे कहा-मेरी तबियत खराब है आप सब कुछ देखते रहिये।

छेदी झाने इन्सपेक्टरसे झंडा मांगा, पर उसने बिना एस०डी०ओ० की आज्ञाके देनेसे इनकार किया। उसी समय सहरसाके एक कार्यकर्ताने आकर खबर दी कि वहांसे काफी स्वंय सेवक आरहे हैं। छेदी झाने कार्यकर्ताको तुरत वापस जाकर हजारोकी संख्यामे स्वंयसेवक लानेको कहा। उन्होने कहा कि कुछ सरकारी अमलोको कैदी बनाना है।

कार्यकर्ताके लौटते ही इन्सपेक्टरने झण्डे लाकर दे दिये। स्वयंसेवकोकी संख्या और मुस्तैदी देखकर कुल सरकारी अमले सहरसा चले गये और थानेपर जनताका कब्जा हो गया।

त्रिवेणीगंज थानेपर लगभग १० हजारका जलूस पहुँचा और झडा फहरा, ताला लगा आया। पुलिसने झण्डा उतार लिया। इससे लोग तैशमें आगये और थाना त्रिवेणीगंज जला देने तथा बदूक छीन लेनेका निश्चय किया।

प्रायः १५, २० हजार लोग एकत्र हुए। उसमे मधेपुराके प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री रामबहादुर सिंह पहुँचे। सभामें अगस्त क्रान्तिका प्रोग्राम दिया और पूर्ण संगठन बनाय रखनेके लिये कहा। सभामे दारोगा आदि पुलिसके अमलोंसे कहा गया कि वे इस्तोफा दे दें। उन्होने सोचकर कहाकि वे थानेपर झडा फहराने देने और कमरोमें ताले देनेके पक्षमे हैं। पिछली वार झंडा उतार लिया था उसके लिये खेद प्रकट किया। इस्तीफा देनेको राजी नहीं हुए।

लोगोने शान्ति पूर्वक थाना और पोस्ट-औफिसको बन्द कर दिया। फिर उत्साहके साथ ग्राम पंचायत, ग्राम रक्षा दल कायम करने और मरनेवाले सत्याग्रहियोकी भरती करने गांवोंमें निकल गये।

सुपौल सबडिविजन अगस्त क्रांतिको अहिंसा पूर्वक आगे बढ़ानेमें हमारे प्रांतमें

सबसे आगे रहा है। इसकी अहिंसामें कर्मठता और निर्भयता रही है, जो

सुपौल गांधीजीकी अहिंसाका एक विशेष गुण है। इस थानेने हुकूमतपर अपना हमला शुरू किया १७ अगस्तसे। हजारोंकी संख्यामें जनताकी भीड़ उस दिन 'इन्कलाब जिन्दाबाद', अंग्रेजो भारत छोड़ दो, नारे लगाती हुई सुपौल पहुचने लगी। देखते देखते पचीसों हजार भीड इकट्ठी होगई, सम्पूर्ण बाजार तिरंगे झंडेसे भरा दिखने लगा। भीड़ सर्व प्रथम सुपौल कांग्रेस औफिस पहुंची, कांग्रेसके स्थानीय कार्यकर्ता नेतृत्व कर रहे थे। औफिस पहुंच कर लोगोंने पुलिसके लगाये तालेको हथौडेसे तोड़ डाला और जयघोष करते हुए घरमें प्रवेश किया और विधि पूर्वक चौकपर झंडा फहरा दिया, वहासे लोग सरकारी महकमोंकी ओर बढे। थानेके मकानपर झंडा फहराया और ताला लगा दिया। अंग्रेजोंके अमले चुपचाप अपनी अपनी जगहसे सारी कार्रवाई देख रहे थे। बहुत डरेसे मालूम होते थे। किंतु, वह विशाल जन समूह अनुशासित सिपाहियोंकी टोलीकी तरह काम कर रहा था। बादमें उसने दारोगा साहबको साथ कर लिया जो महात्मा गांधीकी जय जयकार करते हुए चलते दिखाई पडे।

थानाकी जब्तीके बाद भीड़ पो० औ० पहुँची, पोस्ट मास्टरने भी 'सारी' चीजे बेरोक टोक सुपुर्द कर दी, वहां ताला लगा दिया गया और झंडा फहरा दिया गया। लोगोंकी राय हुई कि यहाके सब रुपये लेलिये जायें और सुरक्षित स्थानमें जमाकर दिये जायें, पर इस ढगका कोई आदेश न रहनेकी वजहसे इस विचारको छोड़ देना पड़ा।

यद्यपि कोसी नदीकी बाढके कारण टेलिग्रामके कनेक्शन कटे हुए थे, फिर भी कटे हुए एकाध तार इधर-उधर लटक रहे थे, कुछ युवकोंने उसे भी काटकर अपना हौसला पूरा करना चाहा। इसपर दारोगाजी बिगड़ उठे और तारकी ओर बढ़नेवाले को गोली मारनेकी धमकी दी। फिर क्या था। लोग आगे कूद पड़े और देखते-देखते वह बेचारा नि सार तार काट डाला गया। दारोगाजी आग बबूला हो गये। लोग भी तन गये, कुछ धक्कम धक्का भी हुआ। उनको धक्का लगा, झट दारोगा साहबने अपनी रिवालवर निकाल ली, फिर तो लोग उनपर टूट पडे, इसी बीच आनन-फाननमें श्रीयुत शत्रुघ्न प्रसाद, गंगाप्रसाद सिंह और लोहटन चौधरी सीना खोलकर दारोगाके सामने खडे हो गये और रिवालवर चलानेको ललकारा। दारोगा साहब निस्तेज हो गये और मामला जहाँका तहाँ ही रह गया। लोगोंको भी समझा

बुझाकर शांत कर दिया गया।

भीड़ आगे बढ़ी, वह कलालीको लूटनेका प्रयत्न करने लगी पर कार्यकर्त्ताओंको शीघ्र वहाँ पहुँच जानेसे कलालीको कुछ नुकसान नही पहुँचा। हाँ उसपर ताला लगा दिया गया और झंडा फहरा दिया गया।

इसी बीच जनताका एक दल अमरीकन मिशनमें पहुँचा, उस वक्त सिर्फ एक मेम बाहर थी, वह बेचारी भयके मारे थर थर काप रही थी क्योंकि लोग कुछ उपद्रव मचाना चाहते थे। जहाँ तहाँ हातेमें लगे हुए फल-फूलोको तोड़ने लग गये थे। रास्तेमें उनलोगोको एक खबर अचानक मिली थी कि गाँधीजीके सेक्रेटरी महादेव भाई देसाईको अंग्रेजी सरकारने अपने जेलमें मार डाला है। इससे वे सब क्रोधांध हो रहे थे। मेम हाथ जोड़े खड़ी थी और भीड़ उसपर दांत पीस रही थी। इतने ही मे फिर वहाँ कार्यकर्त्ता पहुँचे और लोगो समझा बुझाकर वापस कर दिया। हाँ मेमके मकानपर झडा फहरा दिया गया। फल फूल मेमको वापिस कर दिये।

फिर कोओपरिटेव बैंक, आबकारी औफिस, रजिस्टरी औफिसमे भी ताले लगा दिये गये।

इन्हीं दो चार दिनोंके अन्दर थानेके भीतरके अन्य सरकारी मुहकमोमें भी ताले लगाये गये तथा झंडे फहराये गये। इन इन जगहोमें आम जनताने ही सारे काम किये। कांग्रेस कार्यकर्त्ता तो पहुँच भी नहीं पाये क्योंकि सबके सब सुपौलमे ही फँसे रहे। महेशपुर पुलिस फाँड़ी और सुखपुर, पिपरा बाजार, परसरमा, चन्दौल इत्यादि जगहोकी कलालीमें ताले लगाये गयें। कहीं शांति भंग न हुई; सरकारी चीजे नुकसानकी गयीं। सिर्फ सुखपुर कलालीमें जनताने थोड़ा-तोड़ फोड़ किया किन्तु कार्यकर्त्ताओंके पहुँच जानेपर उनने तोड़-फोड़से अपना हाथ खींच लिया।

लगभग महीने दिनो तक तमाम सरकारी काम-काज बद रहे और हर महकमोपर स्वयंसेवकोका पहरा पडता रहा। पर जैसा ऊपर लिखा जा चुका है सिर्फ ताले लगाकर महकमोके दफ्तरोको छोड़ दिया गया था। उनकी चीजे और बदूक वैगरह नहीं हटाई गई थीं। स्कूलके कुछ विद्यार्थी तथा कांग्रेस कार्यसे सहानुभूति रखनेवाले कुछ लोग बन्दूकें जब्तकर लेनेके लिए कार्यकर्त्ताओपर बडा दबाव डालने लगे। दबाव इतना जबरदस्त रहा कि सभी कार्यकर्त्ता सहमत हुए और बदूक

जब्त करनेके लिए थानेपर गये। पहले तो पुलिस इन्सपेक्टर बिगडे, बादको परिस्थिति समझ गिडगिडा कर उनने कार्यकर्त्ताओंसे कहा कि आप स्वयसेवकोंमे ही यदि बदूक उठवाकर ले जायेगे तो हमे अपने बचावके लिए कोई जवाब नहीं मिल सकेगा। इसलिये आपलोग एक दो दिनाके भीतर दो चार सौ जनताके साथ आवें और बदूके उठाकर ले जायं। तब पूछे जानेपर मै कह दूंगा कि बडी भीडको लडनेके लिए आमादा देख मुझमे कुछ करते-धरते न बना। वह जबरदस्ती बदूके ले गयी। बात तय हो गई। दिन मुकर्रर कर लिया गया। लेकिन पोछे कार्यकर्ताओंके ही विचार बदल गये। सोचा यह गया कि सभव है कि हथियार व्यक्तिगत हाथोमें पड जाय और उनका दुरुपयोग हो। और इस ढगकी खबर आस-पासके जिलेसे आ भी रही थी और फिर थानेमे काग्रेसका ताला लगे रहनेके कारण बदूके काग्रेसके अधिकारमे थीं तब उन्हें अलग हटा लेनेसे ही क्या खास फायदा होता। यदि यह सोचा जाय कि दो चार बदूके हटा देनेसे ही हम सरकारी ताकतको बहुत घटा देगे तो यह भी भूल ही होगी। क्योंकि सगठित तौरपर हर जगह ऐसा काम नहीं हो सका। फिर एकाध जगह हथियार लेकर सरकारको पगु बना देनेका विचार रखना ख्याली पुलाव पकाना है। इस सोच विचारने बदूक जब्त करनेके प्रोग्रामको अमलमें नहीं लाने दिया।

कोसीकी बाढकी वजहसे सुपौलकी सबडिविजनल कचहरी उठकर सहरसा चली गयी थी जो मधेपुरा सबडिविजनके बनगाव थानेमे है। इसलिए इसको कब्जेमें किया उधरके कार्यकर्ताओंने। बाबू रामबहादुर सिंह अपनी अगस्तक्रातिकी डायरीमें लिखते है कि मुझको चित्र नारायण शर्माने बताया कि यहाका सुपौल एस० डी० ओ०, आज १६ अगस्तको अपनी कचहरी बन्द कर देनेका चार दिन हुए वादा किया था। हम उसके पास चले और आज उसकी कचहरी बन्द करवायें। मने कहा उनका वादा आपके साथ है, आप जाय और कचहरी बद करवाये पर शर्मा जीने हठ करके मुझको साथ ले लिया। मै जनता था कि हम दोनोंकी मनोवृत्ति एक जैसी नहीं है। न आन्दोलन चलानेका तरीका एक जैसा है। पर यह मौका मतभेद पर जोर देनेका नहीं है। ऐसा समझ उनका साथ दिया। आगे चलकर प० छेदीझा भी शर्माजीके आग्रहसे हमलोगोंके साथ होगये। जब हम एस० डी० ओ० के यहा पहुंचे तो, मालूम हुआ कि उनका लडका बहुत दिनोंसे बीमार था, जिसकी वजहसे वह परीशान थे, वह अब अच्छा हो

गया है। कचहरी बंद करनेके लिए एस० डी० ओ० राजी होगये, मगर खजाना बंद करना उनने पसंद नहीं किया। वे दलील देते कि १ली तारीखको सबोंको मुशहरा देना है। मेरा कहना था कि अगर खजाना न बंद नहीं रहनेका कारण यही हो तो मै सबोंको छः महीनेका मुशहरा देनेको तैयार हूँ। किंतु, मेरी न सुन वे अपनी कहते गये। उनकी न मानने लायक दलीलको मैं माननेके लिए तैयार नहीं था। पर बीचमें पं० छेदी झा बोल बैठे कि खैर १ सितम्बर तकके लिए खजाना बंद रखना छोड दिया जाये। मैंने तब वहा आपसमे झगड़ना उचित नहीं समझा और चुप होगया। खजानाको छोड़ कर कोर्टके सब कोठरियोमें हमारे ताले लगे। कोर्ट बंदकी खुशीमें शामको एक सार्वजनिक मिटिंग हुई जिसमें मुझे भी कुछ बोलना पड़ा। मैंने लोगोको अगाह किया कि हमे इस तालेबन्दीसे निश्चित होकर बैठ नहीं जाना है, यह तालेबन्दी बन्दूक लाने चल पड़ी है, हम लोगोको अपनी मोर्चाबन्दी इस प्रकार करनी चाहिये कि इस कचहरीकी आवश्यकता ही नहीं रह जाय। यह खुले ही नहीं और खुले भी तो निकम्मी होकर।

१९ अगस्त १९४२ को गणपतगंज सबरजिस्टरी औफिसमें ताले लगाये गये, फिर जनता बड़े समारोहसे प्रतापगंज थानेमे आई जिसमें ताले लगाकर अपना झडा **प्रतापगंजथाना** फहरा दिया। २० अगस्तको प्रतापगंज पो० औ० और सुरपतगज पो० औ० पर ताले लगे और झडे फहराते दीखे। थानेकी सभी कलाली बंद कर दी गई। जितने अड्गड़े थे, बंद हो गये।

१९ अगस्तकी रातको दो जगहोंमें डकैती हो गई जिसकी खबर २० अगस्तको लोग थाना देने आये। दारोगाने उन लोगोको कांग्रेस थाना शिविर भेज दिया। कहा—थाना खुलवाओ तब केस लेंगे। वे लोग कांग्रेस थाना शिविर आये। उनका ब्यान लिख लिया गया। पर न तो ये लोग डाकुओको पहिचानते थे और न किसीपर शक करते थे। लेकिन शिविरके जिम्मेवारोंको दारोगाके पास चलनेके लिए जोर देते थे, आखिर श्री खूबलाल महतो थाना गये, दारोगाने उनको कहा—थाना खोल दीजिये, खूबलाल महतोने थाना खोलना जरूरी नहीं समझा और वापस चले आये। रातके दारोगाने थानाका ताला तोड दिया और राष्ट्रीय झडाको उखाड़ फेका। सुबहमें यह खबर शिविर पहुँची। शिविरने इस खबरको गाव-गावमें भेज दिया, निश्चय हुआ २४ अगस्तको थाना फिर बन्द करनेका। उधर दारोगाने बंदूकोंके लिए थाने भरमें अपने आदमी दौड़ाने शुरू किये; कहींसे कोई

मदद नहीं मिली। सिर्फ सुरजापुरके मियाँ साहब अपनी बंदूक खुद चलानेको थानेमें हाजिर हो गये। पर दारोगा साहबका कलेजा काप रहा था। लोगोंका उत्साह और जमाव देख वे अपने दो एक सलाहकारोंकी बात काट शिविरमें दौड आये और बोले 'बाह गहेकी लाज।' उनकी दशा देख कार्यकर्त्ताओंने उनकी बात मानली और उन्हें काग्रेसका ताला और झडा अपनी-अपनी जगह लगा देनेको कहा।

२४ अगस्तको लोगोंकी बड़ी भीड थानेपर पहुँची और वहाँ अपना ताला और झडा बरकरार देख शात होगयी। उनके जलूसने सभाका रूप ले लिया। सभामें वही बाबू रामबहादुर सिंहका भाषण हुआ। खूबलाल महतो, यमुनाप्रसाद मडल आदिने भी जनताको शात और सगठित रहनेका आदेश दिया। दारोगा और जमादारपर ताला तोड़ने और राष्ट्रीय झडेका अपमान करनेका चार्ज था इस लिए भरी सभामें उन्हें अपनी सफाई देनेको कहा गया। दारोगा बहुत ही सीधे तरीकेसे अपनी सफाईमें सारा कसूर निगल गया और राष्ट्रीय झंडेके सम्बन्धमें बोला कि जिस तरह आपलोगोंके हृदयमें झडेके लिए इज्जत है। उसी तरह मेरे हृदयमें भी है। फिर उसने और जमादारने झडे उठाये और सभी लोगोंसे माफी मागी। जनता सतुष्ट हो गयी और शातिपूर्वक अपने-अपने घर चली गयी।

डगमारा थानापर २३ अगस्तको जनता जुलूसके रूपमें पहुँची। शातिपूर्वक थानापर झडा फहरा दिया। थानेपर ताला लगा दिया गया और काग्रेसकी मुहर **डगमाराथाना** देदी गयी। पो० ओ० को भी इसी ढगसे मोहर बन्द कर दिया गया। सभी जगहके अमले काम काज बन्द अपने-अपने डेरेमें रहने लगे। थानेमें कांग्रेसका राज्य हो गया। और चिन्ताहरण राय तथा सौदागर सिंह थानेमें घूम-घूम पंचायतकी स्थापना करने लगे।

१३ अगस्तको फौजदारी, दीवानी, रजिस्टरी, पोस्ट ऑफिसपर झडा फहराया गया। उक्त कार्यमें श्री सर्वेश्वर सिंह और श्री लक्ष्मीकात प्रसादकी गिरफ्तारी बाँका हुई और १४ तारीखको ही छ छ महीनेकी सजा दोनोंको देदी गई। सुबहमें थाना कॉंग्रेस ऑफिस जब्त कर लिया गया था अतः तारीख १४ को उसका ताला तोड़कर उसपर कब्जा कर लिया गया। सरकारी ऑफिसरोंके दफ्तरपर धरना शुरू किया गया। काग्रेस ऑफिसपर पुलिसका पहरा बिठला दिया गया था। उसपर कब्जा करनेके लिये प्रतिदिन जत्था भेजा जाने लगा। पुलिसवाले उन्हें गिरफ्तार करके दिन भर रखते और शामको छोड़ देते। कलालोपर धावे

होते रहे। कलालीवालेने थोड़ी शराब नीचे डाल दी। वहाँ उपद्रवकी आशंका देख श्री रमणीमोहन सिंह और श्री तेजनारायण चौधरीने लोगोंको लौटा दिया। थानेके अन्दर १३ कलाली नष्ट किये गये। १२ अगस्तको पंजवारा, महुआ डौलिया तोनफुड़ियाके तारका सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया। खडहराके निकट भंड़ारीचक, बांका-जमदाहा सडक, बौंसी—समस्तीपुर रोड बाका—बेलहर, बांका अमरपुरका सडकोंके प्रायः सभी पुल तोड दिये गये और सडकोंपर प्रायः सभी पेड काटे डाले गये। नेमुआ पुलको बार-बार तोडा गया।

१४ अगस्तको अमरपुर थानाके कार्यकर्त्ताओंने एक बड़ा जलूस लेकर अमरपुर थानापर धावा किया। थाना चारो तरफसे घेर लिया गया। कुछ बहादुर और

अमरपुर

तेज सैनिक थानेके मकानके ऊपर चढ़ गये और उसपर अपना तिरंगा झंडा फहरा दिया और थानेके कमरोंमे ताले लगा दिये। अब थानेपर पूरा-पूरा कांग्रेसका कब्जा हो गया। दारोगा साहब मौखिक विरोध करनेके सिवाय और कुछ नहीं कर सके। पीछे थाना कांग्रेस कमिटीके मंत्रीकी अपीलपर राष्ट्रीय-सरकारकी मातहती कबूल की। उनने साफ-साफ कहा कि अबसे हम राष्ट्रीय-सरकारके ऑफिसरोंके हुकूमके मुताबिक अपना काम किया करेंगे। पर दूसरे दिन ही खबर पहुँची कि दारोगा साहबने कांग्रेसकी मातहतीसे इनकार कर दिया है, इसपर राष्ट्रीय-सरकारकी ओरसे थानेपर दूसरी बार चढ़ बैठनेकी तैयारी होने लगी। कार्यकर्त्ता थाने भरमे दौरा करने लगे और सैकड़े ९२ चौकीदारोंकी वरदियाँ जला दी।

१८ अगस्तको पाँच हजार कॉंग्रेसी सैनिक थानेपर इकट्ठे हुए। श्री राजवल्लभ सिंह, गिरिवर नारायण सिंह, श्री सन्तोषी शर्मा और चुनचुन कुमार आदि सैनिकोंको नियन्त्रणमे रख रहे थे। ठीक दो बजे दिनमें सभी थानेमें घुस पडे। दारोगा साहब शरणापन्न हुए। थानेके दोनो दारोगाको गाँधी टोपी पहना दी गयी। फिर उनसे नारे लगवाये गये और राष्ट्रीय-सरकारको धोखा देनेके कसूरमे माफी मंगवायी गयी। उनने फिर राष्ट्रीय-सरकारकी मातहती कबूल की। पर अबकी सैनिकोंका जरा कडा रुख था। उनने महफीजखानाको जला दिया। थानेके मकानके एक भागको भी फूँक दिया।

थानेपर कब्जा करके सैकडोंकी भीड पो० ऑफिसकी ओर बढ़ी। पो० ऑ० को जला कर खाक कर दिया। शराबखाना भी बिलकुल बरबाद कर दिया गया।

ता० १६-८-४२ को दारोगा साहबने अपने और सामानके साथ अमरपुर थाना छोड दिया। वे बाँका चले गये। इस तरह अमरपुर थानामे अंग्रेजी हुकूमतका खात्मा हो गया और शासनकी बागडोर राष्ट्रीय सरकारके अफसरोके हाथमें आ गयी।

ता० १३ अगस्तको अमरपुर थानाके विद्यार्थियोने स्थानीय विद्यार्थियोंसे मिल कर थानामें ताला लगा दिया। १५ अगस्तको खरौंधामे थाना कॉग्रेसके कार्यकर्त्ता बेलहर मिले और प्रस्ताव किया कि ९ अगस्तको नेताओकी जो गिरफ्तारी हुई उसके विरोधमे हडताल प्रदर्शनादिका संगठन हो। फलस्वरूप १६ अगस्तको ऐसी हडताल हुई जिसमें घसियारेसे लेकर गृहस्थ तक शामिल थे। खेसर, साहबगंज, झिकुलियामें सभा हुई और २० तारीखको एक बडी भीड बेलहर थानेपर पहुॅची, थानेमे कॉग्रेसका झंडा गाड़ा गया मकानको खुला देख उसमें कॉग्रेसका ताला लगाया गया। विद्यार्थियोने कहना शुरू किया कि मकानमें हमने अपना ताला लगा रखा था फिर यह खुला कैसे? उनमें रोष फैला और उनने ठाकुर नरसिंह नारायण सिंह और जगदम्बाप्रसाद सिंहके मना करनेपर भी थानेके कागजात जलाये और फर्नीचर भी। उनने थानेदारसे इस्तीफा भी लिखवाया। उनका रुख देखकर थानेदार डर गये, और नरसिंह बाबूसे अपनी हिफाजतके लिए मदद मागी। नरसिंह बाबूने उन्हें दो अगरक्षक दिये। बालेश्वरप्रसाद सिंह और जगदम्बाप्रसाद सिंह। सुबहमे अगरक्षकोंने थानेदारसे कहा कि आप हिफाजतसे अपने घरको ओर पहुंचा दिये जा सकते हैं। थानेदार बोले कि मैं यहॉसे जाना ही चाहता हूॅ पर जानेकी समुचित व्यवस्था हो, और व्यवस्थाका मतलब पूछनेपर उनने कुछ नहीं कहा। कार्यकर्त्ता समझ गये कि वे जाना नहीं चाहते, न जानेका बहाना कर रहे है। २० तारीखको साहबगजमें ग्रान्ट साहबकी कोठीके कागजात जलाये गये। घडी, फाउन्टेन पेन आदि सब सामान लूट लिये गये। इस खबरसे कांग्रेसके कार्यकर्त्ता चौंक उठे। वे लूट और अगलगीको नापसद करते थे। उनके यहा इसके पहले एक और कचहरी जली थी, राज बनैलीकी। १८ अगस्तको जमुईके बाबू गिरधर नारायण सिंह आये थे और किसानोंको बनैली राज्यके अमलोंके जुल्मके बारेमें समझाया बुझाया। किसान उभड़ उठे और बनहत्तीकी कचहरीको जला दिया।

२१ अगस्तको काशोडीहमे आत्म निरीक्षण और आत्म शिक्षणके लिए सभी

कार्यकर्त्ता मिले। उनने निश्चय किया कि प्रत्येक सर्किलमें शिविर खोला जाये। दूसरे दिन बथौनियाँमें मिटींग हुई जिसमे जिलाके प्रधान मंत्री शशिप्रसाद सिह श्री नरसिंह मेहता वकीलको लेकर आये। उन दोनोंने वेलहर थानाको तोड-फोडका प्रोग्राम बतलाया। तबसे ही यहाके कार्यकर्त्ताओंके विचारमें परिवर्त्तन आया। उसी दिन वेलहर थानामे मिलिटरी आई। उसने फहराते हुए कांग्रेसी झंडेको पिस्तौल मारकर गिरा दिया और फिर बूटसे कुचल कर जला दिया। इससे थाने भरमे बड़ा क्षोभ फैला और २५ अगस्तको एक बडी भीड़ थानेपर इकट्ठी हो गई। लोगोंने देखा कि भीष्म सिह दरोगईसे दो बार इस्तीफा देकर भी दारोगाके लिवासमें डटा हुआ है और अपने साथ आध दर्जन देशो मिलिटरी रख रखी है। उसकी धोखेबाजी कार्यकर्त्ताओंको खली, उनने उससे जवाब तलब किया। भीष्म सिहने कहा कि हमतो दारोगा हैं; आपलोगोको जो करना है कीजिये। कुल भीड़ वापस लौट आई।

२८ अगस्तको भितियामें दो सौ कार्यकर्त्ताओं और अनेक विद्यार्थियोंकी मिटींग हुई। निश्चय किया गया कि हर थानेके सरकारी अड्डोको नष्ट कर दिया जाये। यातायातके साधन ध्वंसकर दिये जाये। तुरत यानी १८ की रातको ही भितियाका पुल तोड़ा गया और २९ अगस्तको वेलहरथानेपर हमला हुआ। अपने भाई अमृत सिंहके समझानेपर भीष्म सिह थाना छोड़ भागे। उनने अपनी सम्पत्ति थानेसे हटा ली थी। कार्यकर्त्ताओंने थानेके मैदानमे अपना झंडा फहराया और थानेके सारे मकान चीजोंके सहित जला दिये गये। कोई रोक-थाम करनेवाला न था। मिलिटरी पहले ही चली गयी थी। थानेसे भीड़ वेलहर डाकबंगला गयी और उसे जला दिया। फिर संग्रामपुरका डाकबंगला जलाया। बादको बनैली कचहरीके कागजात जलाने आगे वढ़ी कि लठैतोंसे मुकाबला हुआ। लठैतोंमें जमींदारके सिपाही ही नहीं थे, वल्कि संग्रामपुरके चोर वदमाश भी थे जिनकी रोजी कांग्रेसी व्यवस्थासे मारी जा रही थी। कार्यकर्त्ता पीटे गये। दोको सख्त चोट आयी। तब संग्रामपुर वाले भी डरे। और कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंसे कहा कि आप जांच करवाइये। जो फैसला कीजियेगा हम मान लेंगे। कार्यकर्त्ताओंने जांच कमिटी वैठायी। जिसने सग्रामपुर वालोंसे पॉच सौ रुपए दड लेनेको सिफारिश की। उनने दड देना कबूल किया। फिर तो कांग्रेसी सरकारकी तूती सव जगह वोलने लगी। उसके द्वारा गांव-गांवकी व्यवस्थापर ध्यान दिया जाने लगा। हिंसात्मक कामने भी खूब जोर पकड़ा। थाने

भरकी सडकें और पुलको हानि पहुँचायी गई। पाँचो सर्किल पंचके कागजात जला दिये गये। तीनों डाकघर फूक दिये गये। थानेभरकी कलाली नष्ट कर दी गई। प्राय सभी जमादारो और चौकीदारोके वरदी मुरेठा जला दिये गये। सभी स्कूल वंदकर दिये गये।

सरसीकी वैठकके पहले थानेपर जो हमला हुआ उसमें भी तेजी और तैयारीकी कमी न थी। उसका इतिहास भी अपूर्व शहादत और कष्ट सहिष्णुताका उल्लेख करता है। हा। पुर्णिया शहरमे सरसीकी वैठकके निर्णयके अनुसार जो धावा हुआ सो ही पहला और अन्तिम धावा था। वहा सिर्फ श्री जगमोहन मडलकी प्रेरणासे जलूस निकलता रहा। १६ अगस्तको तो विद्यार्थियोका एक वड़ा जलूस निकला। देहातसे भी जलूस समय-समयपर निकलता और शहरके जलूसमें शामिल हो जाता। एकदिन जिला मजिस्ट्रेटने उन लोगोको हाथके तिरंगे झंडे रखकर चल देनेको कहा। भला यह माननेकी वात थी? लोग अड गये और जैसे आये थे वैसे ही जलूसमे सजे धजे चले गये।

पूर्णिया जिला

मनिहारी थानेपर हमला हुआ १६ अगस्तको। लोगोकी एक वडी तादाद थानेमे घुस गई। उसपर झडा फहरा दिया और उसके सारे कागजात जला दिये। वहाँसे लोग गये और कलालीको जला दिया। फिर स्टेशनकी ओर दौड पडे और उसे भी फूंक डाला। मालगाडीके कई डव्वे गगामें लुढका दिये। वगाल आसाम रेलवेके फ्लेटपर माल लदे थे, उनको लूटमे वचानेके लिये रखवारे फ्लेटको दूर गगामे लेगये। पर लोग काठके स्लीपरोको पानीमें डाल उनके सहारे फ्लेट तक तैर गये और उन्हें लूट लिया। फिर मदारीचक डाकघरको जलाया। मालसाही रेलवे स्टेशन और कलालीमें भी आग लगा दी। २० अगस्तको हिमकुंज डाकघर जलाया फिर अमदावाद कलाली और वैरियाके अड्डगडेको जला दिया। २२ अगस्तको रोशनाहाटकी कलाली और महादेवपुर डाकघरमे आग लगायी। फिर जलानेको जब कुछ न वचा तव वे गाँव-गाँव ग्राम-पचायत और ग्राम-रक्षा दलके सगठनमें घूमने लगे।

मनिहारी

१६ अगस्तको रुपौली थानापर काग्रेसका झडा फहराया जा चुका था, पर १८ अगस्तके निश्चयके अनुसार २५ अगस्तको थानापर चढाई करनेका फिर प्रचार शुरू किया आनन्दीप्रसाद सिंहने। फकरिया, झलारी, रहापुर, भौखना, अकबरपुर भवानीपुर तथा राजधाममे सार्वजनिक सभा करके श्री मोहिनलाल,

रुपौलीथाना

पं० नेवालाल मेहता और धनुषधारी चौधरीने रुपौली थानापर चढाई करनेके लिए जनतासे जोरदार अपील की। कांग्रेसके १६ प्रोग्रामके अन्तर्गत हथियार छीनना भी एक कार्यक्रम था—यह कार्यकर्त्ता तथा जनताकी दृष्टिमें विशेष महत्व रखता था, इसलिए आनन्दी बाबू तथा अन्य कार्य-कर्त्ताओने अबकी बन्दूक तथा हथियार छीननेपर काफी जोर दिया। थानाके दक्षिणी हिस्सेके कुछ अशोको छोड़कर प्राय और सभी हिस्सोमे इतनी जागृति फैल गई थी कि गावके मुखियाओने अपने अपने गांवके सभी आदमियोको बुलाकर प्रतिज्ञा करवाली कि हर घरसे कमसे कम एक आदमी तो जरूर ही २५ अगस्तके थाना रेडमें जायगा। फलस्वरूप उस दिन लगभग १० हजार आदमी रुपौली थानापर जमा हुये, थानाके प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री मोहितलाल पंडित उस दिन थानावर नहीं आकर थानेके अन्दर आस-पास ही चदा वसूलनेका बहाना लेकर घूमते रहे। जनताके लिए विश्वसनीय कार्यकर्त्ताओंका सर्वथा अभाव हो रहा था। इसी समय तीन बजे दिनको श्री नरसिहनारायण सिह तथा श्री नरसिहप्रसाद पूर्णियासे हाजिर हुये। इन लोगोके आगमनसे जनताकी आँखोमे विश्वास झलकने लगा और हृदयमें साहसका संचार हो उठा।

इसके पहले ही थानेके प्रमुख सर्वश्री आनन्दीप्रसाद सिह, लक्ष्मी प्रसाद मंडल, चक्रधर प्रसाद, हेमनप्रसाद सिह, मेवालाल महतो, नागर मल, देवनारायण मंडल, छोटेलाल सिह, श्रीकान्त झा, दामोदरप्रसाद सिह तथा गेन्दालाल यादव पहुच गये थे। ये लोग थानावालोसे मिलकर कांग्रेसका प्रोग्राम कार्यान्वित करना चाहते थे। पर दारोगा साहब किसी प्रकार भी रास्तेपर नहीं आते थे। सभी चाहते थे कि शातिपूर्वक आज भी सभी काम सम्पन्न हो जाये। पर ऐसा होता नहीं देख सभीके मनमें क्षोभ उत्पन्न हो गया था। नरसिहबाबूने पहुंचते ही रोबसे बातें करनी शुरू कर दी और थानाके बड़े दारोगा, छोटे दारोगा, हवलदार और मुन्शीको कालीस्थानमें बैठनेको कहा। फिर हुक्म दिया कि आपलोग जल्दीसे इस्तीफा लिख करके दे दीजिये तथा जो सब रेकर्ड और सामान आदि है, उनको राष्ट्रीय सरकारको सुपुर्द कीजिये। वंदूक तो हवाले कर ही देना पड़ेगा, थानापर राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया जायगा और हमेशाके लिए यह थाना आजाद थाना घोषित कर दिया जायगा। आपलोगोंको घर चला जाना होगा। और जिस दिन आप लोगोकी बुलाहट होगी, उस दिन चले आयेंगे। आप लोगोंको आजाद

भारतमें विशेष सम्मानके साथ नौकरी दी जायगी।

दारोगा साहबने जवाब दिया—हमलोगोंसे अभी चाहे जो कुछ भी करा लीजिये पर हथियार देना उतना आसान नहीं जितना कि आपलोग समझते हैं। बात चल ही रही थी कि इस बीच कुछ गुंडोंने जिनको कि उस साल ११० दफामें बांधकर चालान कर दिया गया था और जो अपनी बदमाशीका रेकार्ड जलानेको आतुर हो रहे थे, थाना घरमें आग लगा दी। आग लगी देखकर नरसिंह बाबू आदिने दस-पन्द्रह विद्यार्थीको खाली स्थानमें दारोगा तथा उसके साथियोंके पैर पकडे रहनेके लिए कहकर थानेको दौडे। आग बुझवाई और बदूककी तलाशमें निकले। बडा दारोगाका क्वार्टर बाहरसे बिलकुल बद था। सभीको पहले ही पता चल गया था कि बदूक उसी घरमें रखा गया है। ज्योंही दीवारपर चढ़कर भीतर प्रवेश करनेका प्रयत्न किया गया कि लोगोंने देखा वहाँ दो-तीन कांस्टेबुल बदूकमें टोटा आदि भरकर तैयार हैं, जो सिर्फ हुक्म पानेकी प्रतीक्षामें है। लोग डरकर दीवारसे उतर आये। फिर थाना घरमें आग लगा दी गई। जिन लडकोंने दारोगा आदिको गिरफ्तार कर रखा था, समझा कि शायद सब काम समाप्त हो गया है। इसलिए दारोगा आदिने जब अपने पैर छुडानेकी कोशिश की तो विद्यार्थियोंने अपने हाथ ढीले कर दिये। ये सभी अपने थानेमें दौड़ आये और सिपाहियोंको कहा कि गोली चलाओ। इतना कहना था कि बदूक भर कर तैयार सिपाहियोंने दन-दन करके भीड़पर गोली चलानी शुरू कर दी। पहली गोलीका शिकार हुआ बगाली सहनी और दूसरीका पाचू धोबी। छर्रेसे तो प्राय बहुत ही आदमी घायल हुये। इधर थानेमें धाय धाय आग जल रही थी, उधर उसी तरह निहत्थी जनताकी छातीपर नहीं पीठपर गोलियाँ चलाई जा रही थीं। लोग बेतरह घायल हो रहे थे। तीसरी मशीन गोली जब श्री चन्देश्वरी सिंहको लगी, तब जनता भागना छोड गोलियोंके बीच अकडकर खडी हो गई और ईंट, पत्थर, लाठी, बास जहा जो मिला लेकर पुलिसपर आक्रमण करने लगी। दो एकको छोड काग्रेसके कार्यकर्त्ता तो प्राय भाग चुके थे, अब पुलिसवालोंके पैर उखडने लगे। फिर जनताने उनपर हमला किया। महेश्वर बाबू छोटे दारोगा जिन्होंने गोली चलानेका हुक्म दिया था, पकड लिये गये। उन्हें इतना पीटा गया कि उनका सारा शरीर खूनसे लथपथ हो गया था। उनको बचानेमें कई कार्यकर्त्ताओंको लाठी लगी। एक तो बेहोश होकर वहीं गिर गया।

फिर किसीको हिम्मत नहीं हुई कि दारोगाजीको बचानेके लिये आगे बढे। बेहोश दारोगाको लोगोने उठा लिया और जलते हुए थानेकी आगमे फेक दिया। कुछ लोग कुर्बान खांपर टूट पड़े और उन्हें भी लाठीसे चूर-चूर करके थानाकी दहकती भट्ठीमे झोक दिया। कांस्टेबिल भगवान-दास और गोरख सिहने भी लाख हाथ-पैर पटके, पर वे भी क्रुद्ध जनताके जाल फांससे अपनेको छुड़ा न सके और एक-एक करके उसी आगसे डाल दिये गये।

अब जनता, बड़े दारोगा और बाकी कांस्टेबिलको पकड़ने चली। वे सब एक कमरेमें बंद होकर खिड़कीसे गोली चला रहे थे। लोगोने सोचा कि खिड़की बंद कर दे और धुआँ देकर उनका दम घोट दे। या तो बेदम होकर वे निकल पड़ेगे और हमारे हाथों मारे जायेंगे, या भीतर ही ढेर हो जाये तो और अच्छा। श्री सुक्खू भगत खिड़की बंद करनेके लिए आगे बढ़े और ज्योही खिड़कीको बंद किया कि पतले चदरेके टीनको पार करती हुई गोली आई और उनकी छातीमे धंस गई। वे वहीं चित्त हो गये। इससे जनता घबड़ाई नहीं। वह मिर्चकी गुन्डी और किरासन तेलका लुका बांध-बांध कर पुलिस क्वार्टरमें पहुँचाती रही। पर दारोगा साहब और उनके साथी न निकले। हाँ, उनकी गोलियाँ खिड़की होकर निकलती रहीं। अंतमें जनता थक गई और लौट गई। फिर घोड़ेपर सवार बाबू मोहितलाल पडित रुपौली पहुँचे और आस-पासके कार्यकर्त्ताओंको जुटाया। सभी विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिये। इसपर सभी सम्मत हुये कि पुलिस-लाशको तत्काल जल समाधि मिलनी चाहिये और सबोके सहयोगसे लाशको जल समाधि मिल गई। उधर सन्नाटा पाकर अपने कमरेसे दारोगा साहब अपने साथियो समेत निकले और पूर्णियाकी ओर भाग गये।

आजमनगर थानापर तिरगा झंडा उड़ाता हुआ एक विशाल जन-समूह चढ़ आया। भीडकी संख्या, संगठन और शक्ति देख दारोगा साहब सहम गये। स्वय-

आजमनगर थाना सेवकोंने उनके गलेमे माला पिन्हाई सरपर गाँधी टोपी और उनका टोप लेकर नोच-चोथ डाला। चाहनेपर दारोगाजीने खुद सरकारी कागजात दे दिये जो जला डाले गये। जनताका रुख देख जमादार आपेसे बाहर हो गया। उसने सिपाहियोको गोली चलानेको कहा, पर उसकी किसीने न सुनी। थानेपर कांग्रेसका कब्जा हो गया. ता० २७ को सुबहमे पुलिस वहांसे चली गयी।

२५ अगस्तको पांच हजारकी जनताका जुलूस निकला। उसने चौराहेपर

दारोगा साहबको गिरफ्तार कर लिया। उनका लिबास उतरवा उन्हें खादीकी **कटवा थाना** पोशाक पहना अपने साथ ले चली। उसने सामान सहित दुर्गागंज डाकघर जलाया, कलाली और अडगड़ा, फिर डाक बंगला और थाना आगकी भेंट हुए। दारोगा बेचारा टुकुर टुकुर देखता रहा। कभी कभी उसे नारे भी लगाने पड़ते। दूसरे दिन खबर पूर्णिया पहुँची। मिलिटरी आकर दारोगाको कटिहार ले गयी। पूरे एक महीना सात दिन अंगरेजी सरकारका थाना वीरान रहा।

धरहरा (बनमनखी) थानेके संगठनका भार श्री प्रताप साहित्यालंकार, जगमोहन मंडल, सरयुग नारायण, कुंवर निरंजनप्रसाद गुप्ता तथा पूर्ण मिस्त्री आदिने **धरहरा थाना** अपने ऊपर लिया। श्री प्रतापजी स्थानीय छात्रोंके साथ थाने भरके तमाम गांवोंमें घूमने लगे और एक जत्था लेकर चौपड़ा बाजार पहुंचे। हेमराज चौपड़ा पचास चौकीदारोंको भोजन दिया करते थे। ताकि चौपडा बाजारको चोर लूटेरोंसे सुरक्षित रखा जाये। प्रतापजीने चौकीदारोंको बुलाया, वरदी पेटी दे देनेकी अपील की। चौकीदारोंने अपनी-अपनी वर्दी और पेटियाँ दे दीं जो वहींपर जला डाली गयीं। वहाँकी कलाली भी जला डाली गयी। बनमनखी और खूंटका पुल भी नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया।

२५ अगस्तको लगभग हजारोंकी भीड बनमनखी बाजारमें इकट्ठी हो गयी। चार सौके करीब तो उसमें संथाल ही शामिल थे जो अंग्रेजो भारत छोडो और करेंगे या चाम देंगे के नारे लगा रहे थे। बाजारसे सभी थाने पहुँचे और वहाँ अपना झंडा फहरा दिया।

थानेपर झंडा फहरा लेनेके बाद जलूस कलालीपर टूट पडा। कलाली लूट ली गयी और उसकी टंकीमें जो शराब था उसे संथालोंने गट गट पी लिया। वहांसे सभी स्टेशन पहुंचे। स्टेशनके सारे सामान जला दिये गये। सन्दूक और शीशेको चूर-चूर कर दिया गया। पुलिसवाले स्टेशन पहुँचे और तोड-फोड करनेवालोंको धमकाना शुरू किया। जुलूसके लोग जोशमें आ गये और पुलिसपर लाठी चलाना शुरू किया। दारोगा साहब तो जान लेकर भागे, पर मिलिटरी जो मौजूद थी गोली चलाने लगी। पहली गोली लगी जोगेन्द्रनारायण सिंहको जो दारोगा साहबके बहनोई थे और दारोगा साहबको बचा रहे थे। फिर सनिचर ततमा और धमलाल भगतको गोली लगी जो बाजारसे सौदा खरीदकर घर जा रहे थे। दोनों

वहीं धरतीपर हमेशाके लिए सो गये। भीड़ भाग गयी, हताहतोंकी सेवामें निरजन प्रसाद गुप्त और जगमोहनजी लगे रहे। पर निरजन प्रसाद गुप्त २६ तारीखको बाजारमें पकड़ लिये गये। इनपर पुलिसकी इतनी मार पड़ी कि काफी अरसे तक चलने फिरनेके लायक नहीं रहे।

धमदाहा थानापर एक बार १३ अगस्तको स्थानीय कार्यकर्त्ता और विद्यार्थियोने झंडा फहरा दिया था। और इसके बाद जगह जगह सभा करके थाने भरमे

धमदाहा अगस्त क्रांतिके आदेशका प्रचार कर रहे थे, इतनेमें उन्हें सूचना मिली कि सरसी प्रस्तावके अनुसार उन्हें २८ ता० को थानेपर अहिंसात्मक ढगसे कब्जा कर लेना है। तदनुसार सथाल नेता श्री धतूरानन्द चौधरी, ठाकुर राजेश्वर प्रसाद सिंह, दुल्ला मांझी, भोला कुँवर तथा कुछ विद्यार्थियोने थानेमे स्वयसेवक इकट्ठे करने शुरू किये। २५ ता० को १२ बजे धमदाहा थानापर कब्जा करनेके लिये चारो ओरसे जनता आने लगी। कितनी टोलियाँ बाजा बजाती, गीत गाती, उछलती कूदती आईं। ढाई तीन घटेके भीतर लगभग २५ हजार लोग इकट्ठे हो गये। और सबोको एक मैदानमे ही रोक रखा गया। केवल प्रमुख कार्यकर्त्ता थाने गये और उनने दारोगाको जुलूसका उद्देश्य बतलाया। थानेपर राष्ट्रीय झडा फहराया गया। थानेके एक मकानमे ताला लगा दिया गया और बहुत वादविवादके बाद यह तय पाया कि सभी बदूकोको मालखानामे रखकर बन्द कर दिया जाय। वहा तीन बदूके रख भी दी गयी थीं।

दारोगा साथी सहित अपनी वर्दीमें था, सबोके पास बदूके थीं। देहातसे उसने काफी बदूके मगवायी थी। लोगोने साथ साथ गोलियाँ भी भेजी थीं। चालीस गोलियाँ तो केवल एक वीरनारायण चन्द्रने दी थी। धीरे धीरे वादविवादमे बहुत समय लेता हुआ दारोगा स्वयसेवकोंको अपना कार्यक्रम पूरा करने दे रहा था। कार्यक्रम पूरा भी न हो पाया था कि पूर्णियासे दो दर्जन सशस्त्र पुलिस लेकर पुलिस इन्सपेक्टर आ पहुँचा। आते ही उसने लोगोको कुन्दोसे पिटवाना शुरू कर दिया। बहुतसे लोग थानेके निकट पहुँच गये थे। थानेके बरामदेपर खड़े-खड़े हथियार बदोने सीटीकी आवाज सुनते ही गोली बरसानी शुरू कर दी। लोग भागने लगे तो भी गोली चलती रही और तब तक चलती रही, जब तक भीड़से मैदान साफ नहीं हो गया। कितने हथियार बन्दोंने तो लोगोंको खदेड खदड़ कर अपना निशाना बनाया। फलत. १५ व्यक्ति तो थानेके हातेमें ही शहीद हो गये कुछ

आस पासमें गिरे कुछ घर आकर मरे। डेढसौके करीब तो घायल हुये जिनकी चिकित्सामें डा० कुमुदरंजन बनर्जीने बडी मुस्तैदी दिखलायी। लोग कहते हैं कि मृतकोंका संख्या ४५ है, जिनमें १५ के नाम उपलब्ध हो सके हैं। बमदाहाके हैं चार—शेख इसहाक, लक्खी भगत, बालो मारकंडे और रामेश्वर पासवान, पुरदाहाके हैं तीन श्री जयमंगल सिंह, हेमनारायण गोप और बालेश्वर हजरा। खगहाके हैं दो—श्री रामनिवास पांडेय और श्री परमेश्वर दास और हैं चदवाके श्री योगेन्द्र सिंह, चंदरहीके मोती मंडल; चम्पावतीके श्री भागवत धानुक, बजडाहाके बाबू लाल मंडल; बरैनाके महेन्द्रनारायण गोप और बरहकोनाके कुसुमलाल आचार्य।

घायलोंमें श्री कमलाकांत ठाकुर, बालेश्वर हजाम, अलाउद्दीन दर्जी, दाहु महतो और झिंगुर महतोके तो अंगभंग हो गये थे। वे चंगे तो हो गये पर हीनांग होकर।

२५ अगस्तको चार बजेके लगभग सुन्दरलालजीके नेतृत्वमें थानापर चढाई हुई, लोग पाँच छः सौके करीब होंगे। पच्छिमके रास्तेसे आकर दारोगाजी भीडके वापसी थाना सामने खडे हो गये और बोले—इस छोटेसे थानेपर चढाई करनेसे क्या लाभ? भीडने उनकी बातोंका ख्याल नहीं किया और थानेमें घुसनेकी कोशिश करने लगी, तब दारोगाजीने गोली दागनेका हुकम दिया। हुकुम सुन जनता नारा लगाने लगी "पुलिस हमारा भाई है" सिपाही कुछ देर कर्त्तव्यविमूढ़से रहे और फिर उनने बंदूकें रख दीं। अब दारोगाजी क्या करते? उनने हाथमें तिरंगा झंडा लिया, भीड़के साथ साथ थानेके चारों तरफ घूमे। जनताने थानेके मकानपर एक दूसरा बडा झंडा फहरा दिया। बाद दारोगाजी खुद कुछ कागजात ले आये जिसे भीडने जला दिया। वहांसे वह भीड डाकघर आई और वहां डाकघरका ताला तोड सभी सामान निकालकर जला दिया, लेटरबौक्सको भी उसी आगमें फेंक दिया। वहाँसे भीड कलाली पहुंची, जिसे उसने बरबाद कर दिया। फिर दार्जलिंग रोड पकड कर भोरा पुलकी तरफ आई और वहाँ दार्जलिंग रोड खोद कर उसमें नदीकी एक धारा बहा दी। बादको तितर-बितर हो गई।

श्री रविलाल विश्वासके नेतृत्वमें लगभग दो सो जवानोंने कनहरिया शराबकी दूकानपर हमला किया। ड्रम और बोतलोंको तोड-फोड कर फेंक दिया और फिर कनहरियाकाभावा मकानपर कांग्रेसका झंडा फहरा दिया। वहांसे वह दल अमगाछा-पर आया। घेरेको तोडकर जानवरोंको निकाल भगाया। फिर वापस हो गया। पर

वापस जाते हुए बुकरू और मटकून मडल पिछड़ गये। जिन्हें कई अड़गडे-वालोंने पकड़ लिया और लाठी और खूंटोसे बेरहम होकर मारा। बुकरूके सिर और मुंहसे खून जारी हो गया और मटकून बेहोश होकर गिर पड़ा। हल्ला सुन वह दल फिर पीछे लौटा, और अपने दोनों साथियोंकी दुर्दशापर क्रोधान्ध हो गया। उसने अड़गड़ेके घरमें आग लगा दी। घायलोंको गाडीपर लाद कर ले आया। बुकरू मर गया जिसकी अन्त्येष्टी क्रिया बड़ी धूमधामसे मनाई गयी।

रानीगंजथाना

रानीगंज थानाके प्रधान कार्यकर्त्ता सत्यनारायण भगतने एलान किया कि २० अगस्तको हमे थानेपर कब्जा करना है। फिर गॉव-गॉवमें अंग्रेजी हुकूमतके खिलाफ प्रचार होने लगा और उसपर हमले भी होने लगे। १६ अगस्तको चुन्नीदासने छतियौनमें एक डाकियाको पकड़ लिया। उसकी डाकको बरबाद करके उसे वापस लौट जानेको बाध्य किया। महथवा हाटमें भी एक दूसरे डाकियेसे डाक छीनकर जला दी गयी। फिर लोगोंने यूनियन बोर्डपर छापा मारा और जो मिला जला दिया।

अररियासबडिविजन

२० अगस्तको रानीगजमें सत्यनारायण भगत सदल-बल पहुंचे। आते ही उनके दलने पोस्ट ऑफिस और यूनियन बोर्डके कागजात नष्ट कर दिये। फिर कलालोंके शराब-गांजेको बरबाद करते हुए अपने आश्रम पहुँचे। थानेवाले सतर्क थे। खबर मिलते ही कि श्री सत्यनारायण भगत साथी सहित अपने आश्रममे आये है, दारोगा साहब वहा गये और भगतजी और उनके और साथियोको जो खाने-पीनेका इन्तजाम कर रहे थे गिरफ्तार करके हाजतमे बद कर दिया। उनको इन लोगोको खिलाने-पिलानेको कोई परवाह न थी। पर थानेका हमला रुका नहीं। तीन बजेसे लोग इकट्ठे होने लगे और चार बजे छः हजारकी भीड़ थाने पहुँची। नायक गणेशलाल वर्मा और जीवनलाल चौधरीने दारोगासे कहा कि हमलोग थानेपर झडा फहरायेंगे, उसपर अपना कब्जा करेंगे। हथियार बद पुलिसकी परवाह न कर जीवन चौधरी थानेके मकानपर फाद गये और वहा उनने अपना झडा फहरा दिया। वर्माजी थानाके सभी कमरोमे ताला लगाने लगे। पर पुलिसको ऐसा मजूर न था। उसने इनको कमरे बन्द करनेसे रोका पर भीड़ थानेमें घसती गयी, वह थानेको सब तरहसे अपने कब्जेमे करनेपर उतारू हो रही थी। पुलिसने आसमानी फायर किया, पर भीड़ न हटी। वर्माजी भीड़को समझा बुझा ही रहे थे कि उनपर एक पुलिसने गोली दागी, वे घायल होकर लुढ़क गये। फिर तो अधाधुध गोली चलने लगी। दर्जनो घायल हुये

पर सख्त घाव लगा काली दासको जो अन्डर ट्रायल अवस्थामें ही जानसे हाथ धो बठे। तुनुकलाल यादवजी सख्त घायल हुए पर बच गये। पर गुलाबचद यादवको अपना एक पैर खोना पडा और सीतारामको अपने दहिने हाथकी अगुली। गोली काडके बाद दारोगाने गणेशलाल वर्मा और जीवनलाल चौधरीको घायलोंको शुश्रूषाके लिए बुलाया और जब वे आये तो गिरफ्तार कर लिया। इस गोलीकाडसे रानीगजके कार्यकर्त्ता घबराये नहीं। रामचरित्र सिह, भोला प्रसाद, कलानन्द सिंह, रामकृष्ण विश्वास, और जीहुमडल इलाके भरमे घूमने और यूनियन बोर्ड और कलालीको ध्वस करने लगे। फलत सितम्बर चढते चढते थानेभरमे न एक बोर्ड बचा और न एक कलाली।

२२ अगस्तको लालगज हाटपर एक वृहत्त सभा हुई, काग्रेसका सन्देश सुनाया गया। जनतामें सरकारको उलट देनेकी एक विचित्र उमग काम करने लगी।

कुंआरी थाना २३ अगस्तको कुर्साकाटामें डाक छीनली गयी। कलालीको जब्तकर ताला लगा दिया गया। उनके शराबको बहा दिया गया। नौ सर्किलके चौकीदार, तहसीलदार और पच सबोंने राजी खुशी अपना-अपना इस्तीफा दाखिल कर दिया। डाकघरको जब्त कर लिया गया। कुआरीकी कलाली शराब बहा करके जब्त करली गयी और डाकघरके कुछ कागजात जला दिये गये। तीन बजे दिनको एक बडी भीडने थानापर चढाई की और विधिपूर्वक झडा फहराकर थानेको अपने कब्जेमे कर लिए

सिकटी थाना सिकटी थानेपर १६ अगस्तको ही रघुनदन भगत और सुखदेव ठाकुरकी देख-रेखमे चढाई हुई और झडा फहराया गया।

किशनगंज सबडिविजन किशनगज सबडिविजनमे आन्दोलनकी प्रगति बडी धीमी रही। हाँ, किशन-गज कचहरीपर एक हजार प्रदर्शनकारियोंको लेकर शराफत अली मस्ताना गये और झडा फहरा आये। इनने जब्त शुदा काग्रेस ऑफिसपर भी धावा किया और सरकारी ताला तोड उसपर अपना दखल जमा लिया। पर तुरत ही गिरफ्तार कर लिये गये।

जहान अली मस्ताना अपने पाच साथियों सहित बस्ती-बस्ती जुलूस निकालते रहे। इनने टेढा गाछ थानापर १३ अगस्तको चढाई की, उसपर अपना

टेढ़ागाछ थाना झडा फहराया और जब्त शुदा काग्रेसके तालेको तोड़ कर उसपर कब्जा किया। बादमें साथी सहित गिरफ्तार कर लिये गये।

१७ अगस्तको चोपड़ा और ठाकुरगजमें भी जुलूस निकले और थानोंके सामने प्रदर्शन हुये। ठाकुरगंजकी पुलिसने लाठी चार्ज करके कितनोंको घायल कर दिया। दोनों थानेमें तार काटे गये और रेलवे लाइन उखाडी गयीं।

कलक्टरको सूचना दे दी गयी कि २७ अगस्तको कांग्रेसकी ओरसे जिला हुकूमतपर हमला होगा। सरसी-प्रस्तावके अनुसार सर्वप्रथम श्री लक्ष्मीनारायण पूर्णिया शहर सिंह 'सुधांशु' को उस हमलेका नेतृत्व करना था, उनकी अगर गिरफ्तारी हो गई तब श्रीवैद्यनाथ चौधरी को। श्री लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु' पूर्णियाके लिये समयसे पहले रवाना हुये। रेलगाड़ीकी सफर थी। एक सरकारी जाने पहचाने अफसरसे मुलाकात हो गई। साथ ही उतरे; डाक बंगले आये। पुलिसको खबर लग गई जो उन्हें गिरफ्तार कर ले गई। पर गिरफ्तारी इतनी पहले हुई कि श्री वैद्यनाथ चौधरीके लिये पर्याप्त समय रहा पूर्णिया आने और हमलेका नेतृत्व करनेका।

२७ अगस्तको खूब सवेरे श्री वैद्यनाथ चौधरी पूर्णिया पहुँचे। शहरमें प्रवेश करते हुये जब वे मधुबनी चौराहेपर आये तब श्री शुकदेव कुंवरसे मिले। कुंवरजी उन्हें अपने अड्डेपर ले गये और चुपके चुपके धीरे धीरे कार्यकर्त्ताओंको उनसे मिलाना शुरू कर दिया। तय हुआ कि तीन बजे जलूस निकाला जाय और उस वक्त जो जहां हो वहींसे चौराहेके लिये रवाना हो जाय। परिस्थिति ऐसी थी कि एक जगहसे जलूस बांधकर निकालना असंभव था।

जिला मजिष्ट्रेटने पहलेसे ही काफी तैयारी कर रखी थी। चारो तरफ कड़ा पहरा था और मिलिटरीकी लॉरियां दौड़ रही थीं। पुलिस अजनबीसे जिरह करती; सन्देह हुआ कि पीटने लगती और गिरफ्तार कर लेती। तो भी दोपहरको झुण्डके झुण्ड लोग शहरमें प्रवेश करने लगे। बैलगाड़ी, घोड़े और साइकिलोंका तांता सा लग गया। पुलिसने लाठी चार्ज किया, कितनोंको बेतरह घायल कर दिया और जहां लाठी बेकार साबित हुई वहां बन्दूकसे काम लिया। महिनाथपुरके पार्वती महता लाठीकी मारसे अधमरा हो गिर गये और ढढ़ाके श्री कुताई साह तो गोली खाकर शहीद हो गये। फिर भी ३ बजे मधुबनीसे श्री वैद्यनाथ चौधरीका जलूस निकला ही। उन्हें चौराहेकी ओर आते हुये कितने जलूस दीख पडे। वे १५ मिनिट ही चले होंगे कि भगवान बाबू मजिष्ट्रेटने उन्हें खींच लारीमें रख लिया और उनके साथियोंपर लट्ठ बरसाने लगे। तुरत मिलिटरी लारी भी एक ओरसे आकर

सामने खडी हो गई। मिलिटरीको देख पुलिसकी लाठी और चोट करने लगी। श्री वैद्यनाथ चौधरीने भगवान बाबूसे कहा कि क्यों स्वयंसेवकोंको इतना पिटवा रहे हैं? वे बोले—जहां लाठीकी मार रुकी, गोलीकी मार शुरू हो जाती है। सामने मिलिटरी लारीको देखते हैं नहीं।

जलूसके प्राय सभी पीटे गये पर श्री हरदेव प्रसादको खूब चोट आयी। वे जब जब लाठी खाते, नारा लगाते—पुलिस हमारे भाई हैं, और इस नारासे उत्तेजित हो पुलिस उन्हें और पीटती। अन्तमें हरदेव बाबू बेहोश हो गिर गये और पुलिसने उन्हें उस लारीमें पटक दिया जिसमें वैद्यनाथ बाबू बैठे थे। शाम तक भीड तितर बितर हो गई।

१७ अगस्तको बाबू बालेश्वर प्रसाद सिंहने सारठके कार्यकर्त्ताओंको लेकर थाना और डाकघरपर चढाईकी। उन दोनों जगह कांग्रेसके झंडे फहराये

संथाल परगना

और ताले लगा दिये गये। फिर पालोजोरीपासकी भट्ठिया बंद कर दीं, गन्डसारा डाकघरमे भी ताला लगाया और झंडा फहराया। बादको थानावालोंने कांग्रेसका ताला तोड दिया और झंडेको नोच फेंका। इसकी खबर पाकर कार्यकर्त्ताओंका विद्रोही मन भडक उठा और उनने चारों ओर खबर भेजी कि थानाको मटियामेट करना है। २४ अगस्त हाटका दिन था। विभिन्न दिशाओंसे विभिन्न विचारके लोग दल बाधकर आ रहे थे। कोई दल नारा लगाता, झंडा फहराता आता और कोई टोकरी और बोरे लिये आता। दोपहर तक लगभग दस हजारकी भीड इकट्ठी हो गई। इधर सारठ थानाके अधिकारियोंने भी काफी तैयारी कर ली थी। आसपासके घरवालोंसे सरकारके नामपर बदूकें मगाली गईं थीं। थानेभरके चौकीदारोंको जमा कर रक्खा गया था जिनमें किसीका हाथ खाली न था। दोनों दारोगा और जमादार बदूक लिये मुस्तैद थे और चौकीदार भाला फरसा लिये थानेको घेरकर खडे थे। उन्हें जैसे ही मालूम हुआ कि खास-खास कार्यकर्त्ता हाटमें जुट गये हैं वे आगे बढे और सुरेश प्रसाद झा, बिगुराय, दशरथराय, हेमराजराय और गोपेश्वर मंडलको गिरफ्तारकर लिया। उनकी सतर्कता और तैयारी देख जनता किंकर्त्तव्य विमूढ-सी होगयी। चार बज गये थे, और आगे बढनेकी कोई हिम्मत नहीं कर रहा था। इसी समय सर्वेजोरके कामदेव सिंहने उन्हें उत्साहित किया और वे सब बडे जोरसे थानेपर टूट पडे। दारोगा साहबने उनपर गोली चलानी चाही पर सर्वेजोरके सूर्यनारायण

सिहने बड़ी फुर्तीसे उनकी बंदूकके कुन्देमे इस ढंगसे अपना हाथ मार दिया कि निशाना चुक गया। फिर दारोगा और उसके साथियोपर भूखे बाघकी तरह लोग टूट पड़े। सबोकी बदूके छीनी गईं। जमादार भाग गया। पर दूसरा दारोगा बदूकके नालसे ही आहत होकर गिर गया। उसपर और भी मार पड़ी जिससे वह वेहोश हो गया। बड़े दारोगा भागनेकी कोशिशमे पकड़ लिये गये। उनपर भी लाठी-मुक्का, घूंसा और लातकी वर्षा होने लगी। वेचारे वेहोश हो गये। दोनोको कुछ कार्यकर्त्ताओने सुरक्षित स्थानमें पहुँचाया और डाक्टर लाकर आवश्यक मरहम पट्टी करवायी। थानेके और सरकारी लोग भाग खडे हुए। फिर थानेकी लूट शुरू हुई। कार्यकर्त्ताओने अपने गिरफ्तार शुदा साथियोको साथ ले लिया, फिर सात बंदूको और अन्यान्य हथियार सहित थानेसे निकल आये और थानेमें आग लगा दी। बादको उनने अन्नगोलाके कागजात जलाये। अन्नको उनके दलवालोने लूट लिया। फिर उनने पोस्ट औफिसमे आग लगा दी और शराबकी भट्ठीको तोड़-फोड़ दिया। शाम हो चुकी थी। प्रोगाम खत्म हो चुका था। धीरे-धीरे लोग अपने-अपने घर लौट गये। थाना और पोस्ट औफिस रात भर जलते रहे।

'कप्तान' परमानन्द सिहकी अध्यक्षतामें एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें पास हुआ कि सरावा थानेपर कांग्रेसका कब्जा होना चाहिये। अध्यापक और विद्यार्थियोको सरावां लेकर जनता आगे बढ़ी और स्कूलके नजदीक झडा भिवादन किया। वहांसे वह बाजार आयी। बाजारमे चारो ओरसे क्रांतिकारी नारे लगाते हुये दलके दल आ रहे थे। सब वहीं मिले फिर तो जनताकी तादाद बहुत बडी हो गयी। एक जुलूस निकला जो थानापर पहुँच नारा लगाने लगा—'अग्रेजो भारत छोड़ दो' 'पुलिस हमारा भाई है'। पुलिस उनको ओर देखती रही और लोग धडाधड थानेमें घुस आये। उनने मुहाफिजखानाके तालेको तोड दिया और कागजात उठा-उठाकर बाहर लाने लगे। 'कप्तान' का हुक्म हुआ--उन्हें जला दो। कागजात जला गये दिये। दारोगा साहबने रोकनेकी कोशिश की तो उन्हें दो-चार घूंसे खाने पड़े। बादको थाना औफिसपर राष्ट्रीय झडा फहराया गया और कांग्रेसी सरकारकी ओरसे बाबू बैजनाथ सिहको थानाका दारोगा बना दिया गया। पुलिसकी वर्दी पेटी छीन कर जला दी गई और उनको सरकारी नौकरी छोडकर आजाद सरकारके आन्दोलनमें शरीक होनेके लिये कहा गया। कितनोने अग्रेजोकी नौकरोसे इस्तीफा दे दिया—आजाद सरकारकी सेवा कबूल की और फिलहाल छुट्टी

लेकर घर चले गये। जुलूसने आगे चलकर पोस्ट-ऑफिसका भी तालाको तोड दिया। उसके कागजात जला दिये और उसपर आजाद सरकारका कांग्रेसी झंडा गाड दिया। बाजारकी शराबकी दूकान बिलकुल बरबाद कर दी गई।

राजमहलके कार्यकर्त्ताओंने एस० डी० ओ० और पुलिसको सूचना भेजी कि १७ अगस्तको हमलोग कोर्ट और अन्यान्य सरकारी इमारतोंपर झंडा फहरायेंगे राजमहल फिर वे संगठन कार्यमें लग गये। राजमहल थाना कांग्रेसके सभापति श्री शारदाप्रसाद रायसे उन्हें सहयोगका वचन तो मिला पर सभापति साहब वचन देकर लापता हो गये और वचन पालन करानेका मौका किसीको न दिया।

सत्रह तारीख आई। छात्रों और जनताकी भीड कोर्टकी ओर बढ़ी। मंत्री जगदीशप्रसाद सिंह अपने सहकारी गणेश प्रसादजी, हरेश्वरजी, महेन्द्रजी, रत्तू मराडी, गंगा सिंह पहाडिया, नन्दकिशोर शाह और शेख फदीमुल्लाको लेकर स्कूल आये और छात्रोंसे मिलकर स्कूलपर झंडा फहराया। वहांसे कोर्टपर झंडा फहरानेके लिये रवाना हुये। सरकार सतर्क थी। पर उससे भी सतर्क थे स्थानीय हिन्दूसभाके मंत्री श्री सदानन्द राय वकीलजी। हरबे हथियारसे लैस वे सरकारकी हिफाजतके लिये बड़े मुस्तैद दीख पडते थे।

भीड़ आई और उसने कोर्टपर झंडा फहरा दिया। उसे शान्त देख एस० डी० ओ० उसकी कार्रवाईमें बाधक नहीं हुये। बादमें थाना, डाकघर, रजिस्टरी आफिसकी इमारतोंपर झंडे फहराये गये।

दूसरे दिन जगदीश प्रसादजी हरेश्वर प्रसाद, गणेश प्रसाद और नन्दकिशोर-जीको लेकर कोर्टमें ताला लगा देनेके लिये वहां पहुँचे। पुलिस सावधान थी। उसने इन सबोंको गिरफ्तार कर लिया।

पर राजमहल कोर्टको बन्द करनेकी इच्छा दबी नहीं। राजमहलके एक प्रधान कार्यकर्त्ता पं० रामकृष्ण आचार्यने फिर एक बार २० अक्तूबरको कोर्ट-बन्दीका प्रोग्राम बनाया और कार्यकर्त्ताओंको एकत्र करने लगे।

जब अगस्त आन्दोलन शुरू हुआ तब आप अपने घर बलियामें (संयुक्त प्रान्त) बेतरह बीमार पडे थे। जब चंगे हुये तब वकीलोंकी सलाह मानकर इनके पिताजीने कहा—बेटा, नेपाल जाओ। पिताजीकी आज्ञा पाकर बेटा १५ सितंबरको घरसे निकले और पैदल, नावसे और रेलसे दस दिनमें सफर तय करके पहुँचे राजमहल

अपने कार्यक्षेत्रमें। वहां सहकारियोसे मिलने-जुलने राजमहल दामिनमे घुसे। बांझीमे सभा की, बालदहमे लोगोसे मिले और फिर देवपहाड होते हुये बारहेत बाजार पहुचे। साथमे थे श्री जयराम मुरमू और महेन्द्र प्रसाद। बाजारमे बड़ी भीड लग गयी जिसे अपना प्रोग्राम बतला ही रहे थे फिर पुलिस और परगनैत पहुचे और तीनोको गिरफ्तार कर लिया।

जामतारा

जामताराके कार्यकर्त्ता थाना और कचहरीपर झडा फहरानेके लिये उत्सुक थे और श्री सत्यकाली भट्टाचार्यके नेतृत्वकी प्रतीक्षा कर रहे थे। सत्यकाली बाबू एक दल लेकर आये और यहाके कार्यकर्त्ताओ और जनतासे मिलकर जलूस निकाला। उस जलूसने पहले थानापर झंडा फहराया जिसके कुछ कागजात जला दिये गये। वहांसे जलूस कचहरी पहुचा और उसपर भी शानके साथ झंडा फहरा दिया।

दामनेकोह

संथाल परगनेमे बड़ा जबरदस्त आन्दोलन हुआ दामनेकोहमे। इस आन्दोलनके नायक थे श्री प्रफुल्लचन्द्र पट्टनायक जो सत्याग्रहके एक साधक रहे हैं। उनने आप बीती लिख दी है। संवेदनाये तथा अनुभूतियां अन्यान्य कर्मठ सत्याग्रही कार्यकर्त्ताओकी संवेदना तथा अनुभूति जैसी ही रही है। इसलिये उनकी आप बीतीका अधिकाश उद्धृत किया जाता है।

दामनेकोहको एक शब्दमे दामिन कहा जाता है। यह सताल परगनेके जगलोका हन हिस्सा है जिसमे अधिकसे अधिक सताल और पहाड़ियोका निवास है और सरकारने जिसे ताडके वृक्षोसे घेरकर ए अलग स्थान-सा बना दिया है।

दामिन चार है—दुमका, गोड्डा, राजमहल और पकौड़ सबडिविजनोंमें फैले हुये। हर दामिनको अनेक बगलोमे बाट दिया गया जिनमे तीन तीन मीलका अन्तर है। हर बंगलामे एक वा दो परगनैत रहते है जिन्हे एक दारोगाका अधिकार रहता है पर जो एक राजाके अधिकारोका प्रयोग करते है। बगला दामिनका थाना है, कचहरी है और ठहरनेका घर भी है और उसका पहाड़ियोपर दानवसा आतक रहता है। पहले दामिन कायकर्त्ताओके लिये अगम्य था मगर अब वैसी परिस्थिति नहीं है। अब भी शासन सीधे सरकारके हाथ है। क्षेत्रफल है १३,२३८ वर्ग मील।

इस दामिनमे श्री पट्टनायक दलने हुकूमतपर कब्जा करनेके लिये प्रवेश किया। उसने बगलोपर कब्जा किया और प्रजाको उनकी मातहतीसे मुक्त करके कांग्रेस

सरकारका पोषक बनाया। इसलिये उसकी कार्रवाइयां तोड़-फोड़ और फूंक-फाक जैसी दीख पड़नेपर भी अलग-सी लगती हैं। श्री प्रफुल्लचन्द्र पट्टनायक लिखते है—"पहले पोडेया और पीछे अमड़ापाड़ाको केन्द्र बनाकर संताल पहाड़िया सेवासघने संताल और पहाड़ियोंके बीच पिछले डेढ़ वर्षोंसे कुछ रचनात्मक काम किया था। इन लोगोंके पेटकी समस्याओंको हम समझ चुके थे। इसलिये रास्ते भर हम यही सोचते जा रहे थे कि उन लोगोके बीच कौन-कौनसे आन्दोलन शुरू करने चाहिये और कैसे? जंगल-सत्याग्रहका भविष्य अच्छा था। इस सत्याग्रहमे सरकारी जंगलको काटकर उसमे खेती शुरू कर देनी थी जिसे कुरवा कहते हैं। हम लगानबन्दीकी बात भी सोच रहे थे और सोच रहे थे सरकारी आफिसोंपर कब्जा कर लेनेकी बात भी।

"जगल सत्याग्रह छेड़ देना आसान था। केवल एक हुक्मनामेको व्यापक रूप देकर प्रचार भर कर देना था। पर बातोंके लिये व्यापक सगठनकी जरूरत थी। अत. आमड़ापाड़ा पहुंचते ही मैंने सताल और पहाड़ियोंमें काम करनेवाले मुख्य-मुख्य सरदारोंको बुलवाया। पिछले दो तीन महीनोमे कुरवा (पहाडी खेती) की गड़बडीके सबन्धमे हमारे संघके पास सैकड़ों दरखास्ते पहुँच रही थीं और हमलोग उन सभी गड़बड़ीकी जांच भी कर रहे थे। इस गड़बडीको जंगल विभागके सरकारी सिपाही और ऑफिसर फैला रहे थे और यह पहाड़ियो और साथ-साथ हमलोगोंके लिये भी असह्य हो रही थी। मैं और श्री सत्यकाली भट्टाचार्य दोनोंने एक दो स्थानोंपर जाकर ऐसी गड़बड़ोंका निपटारा कर दिया था और सताल-पहाड़ियोंके हकोंकी रक्षा की थी। इसलिये इनका विश्वास हमलोगोंपर काफी जम गया था। इनके बीच कुरवाकी समस्याको उठाकर ही आन्दोलन शुरू करना मैंने अच्छा समझा।

"इसके अलावा मैं सतालों और पहाड़िया कार्यकर्त्ताओंको देशकी राजनीतिक हल-चलोंकी जानकारी कराता रहा। उन्हे 'हरिजन-सेवक' और 'सर्वोदय' पढ़ पढ़ कर सुनाता रहा और इस आखिरी लड़ाईमें कुछ अपनी आहुति भी चढ़ानेको प्रोत्साहित करता रहा। अन्तमें हमने एक स्थान निश्चित किया जहां अधिकसे अधिक जनताको इकट्ठा करनेके लिये उन कार्यकर्त्ताओंको चारो ओर भेज दिया। आन्दोलन चलानेके लिये हमारे पास रुपये नहीं थे और आन्दोलन चलाना जरूरी हो गया था—इस बातको मैंने उन लोगोंके आगे रक्खा था। उनका हमें जो उत्तर

मिला उससे हमको बड़ी तसल्ली हुई और बड़ा भरोसा हुआ। उनने तो हमारे निराश मनको आशासे भर दिया। वे बोले—"हमे तो बाबू, अपने अधिकारके लिये लड़ना है और हम जब तक लड़ेंगे घासपात खाकर लड़ेंगे, हमारे खानेकी फिकर तुम मत करो। हमे फिकर है कि तुम्हें हम जंगलोमे क्या खिला सकेंगे।" मेरे लिये तो इतना ही काफी था। मैंने उनसे कहा कि उस सभामें एक हुक्मनामा सुनाया जायगा जिसमें संतालो और पहाड़ियोको काफी हक दिया हुआ है।

"इस तथा कथित हुक्मनामेको मैंने और श्री के० गोपालनने मिलकर बनाया था। इसमे सारे सरकारी जगलोको काटकर खेती शुरू कर देने, लगान माफ कर देने, छोटे छोटे जंगली टिकस न देने, सभी सरकारी मकानो आफिसोपर काग्रेसी सरकारकी ओरसे कब्जा कर लेनेकी बात लिखी हुई थी। हुक्मनामेके आखिरी हिस्सेमें यह बात भी जाहिर की गयी थी कि चौकीदारसे लेकर परगनैत (जंगली दारोगा) तक और फॉरेस्टरसे लेकर रेंजर तकको—यानी सबोंको—काग्रेसी सरकारने खारिज कर दिया है; अब इनकी बात कोई न माने। अगर ये लोग अपनी बात मनवानेके लिये जोर जुल्म करे तो शान्त रहे पर कोई बात माने नहीं।

"१६ अगस्तको सुबह चार बजे ही उठकर हमने आमडापाड़ासे विदाई ली। ११ लाख संताल और पहाड़ियोके लिये १३,३३८ वर्गमीलके भीतर आन्दोलन चलानेकी मंसा ले हम सिर्फ छ साथी कुछ कागज पेनसिल और सिर्फ तेरह रुपये लेकर चले सिर्फ ईश्वर ही पर अपने आपको छोड़कर। हमारे भीतर सिर्फ साहस और विश्वास ही काम कर रहा था। निश्चित स्थानपर हम संध्याको पहुँचे। रास्तेमे सिवाय दो चार आंवलेके और कुछ खानेको नहीं मिला। पहाडी नदियोकी तेज धाराको पार करनेमें बड़ी कठिनाईका सामना करना पड़ता था। हमने देखा कि जब कि सारे हिन्दुस्तानमे काफी उलट फेर हो चुका है सारा जंगल सोया हुआ है। हमलोगोके प्रचारसे भी उसमें तेजी नहीं आ रही है; कुछ उत्सुकता भर जग जाती है। हमारे पहुँचे दो तीन घंटे ही हुये होगे कि दुमकासे श्री कृष्ण प्रसादजी एक साथी सहित आ पहुंचे।

"श्री कृष्ण प्रसादजीने बाहरकी सारी खबर दी, कितने परचे दिये और श्री मोतीलाल केजरीवालके भेजे सौ रुपये भी आगे रक्खे। मैंने श्री केजरीवालसे सौ रुपये मांगे थे मगर उनने कहा नहीं कि मै रुपये दे सकूँगा। इस मौकेपर अकस्मात् जो रुपये मिले उसे मैंने भगवानका ही भेजा हुआ पाया। फिर मैंने परचें देखे,

१६ प्रोग्रामवाला परचा भी देखा और विचार मग्न हो गया।

"१६ प्रोग्रामोंमें एक था अस्त्र-शस्त्रोको छीनकर सुरक्षित स्थानोंमे रख देना। क्या ऐसा प्रोग्राम गाधीजी दे सकते है ? हम दो ही मतलबसे अस्त्र-शस्त्र ले लेंगे। हम उनसे कभी काम ले या हमारे दुश्मन हमें उन शस्त्रास्त्रोंसे मार न सकें इसलिये हम उनसे शस्त्रास्त्रोको छीन ले। मैंने समझा, पहली बात तो नहीं पर दूसरी बातके लिए गाधीजीने ऐसा हुक्म दिया हो, क्योकि किसीको भी अधिकार है कि वह आक्रमण करनेवालेका वार शान्तिमय उपायसे रोके। उस प्रोग्रामके आखिरमें यह भी बात थी कि सारे काम 'अहिसात्मक उपाय और तरीकोसे हों।' इससे विश्वास जम-सा गया कि हो सकता है गान्धीजीने ही ऐसा प्रोग्राम दिया हो। इस बार अहिसाका स्थूल-रूप उन्होने इसलिये रखा हो कि वह सर्वजन सुलभ हो सके।

"साथीसे सब समझ-बूझकर मैंने अपने प्रोग्राममें थोड़ा परिवर्तन कर लिया। सोचा कि सरकारी आफिसो वा इमारतोके ऊपर दखल कर लेनेका कोई भी अर्थ नहीं होगा। हमलोगोके चले जानेके बाद उसपर फिरसे सरकारी कर्मचारियोंका दखल हो जायगा। इसलिए उन्हें क्यो न नष्ट कर दिया जाय। सोलह प्रोग्रामकी स्थूल अहिसाकी बातपर सोचते हुए मैं इस निश्चयपर पहुँच गया कि सरकारी इमारतोको गिरा देना बशर्ते उन इमारतोंमें कोई न होवे और न किसीकी व्यक्तिगत सम्पत्ति रहे—शायद हिसा नहीं होगी।

"२१ अगस्तकी सुबहमे स्त्रियोकी सभा हुई, सभी स्त्रियाँ नूतन वस्त्र धारणकर पहुँची थीं और अपनी अपनी औक़ातके अनुसार एक पैसासे एक आना तक आन्दोलन चलानेके लिये चन्दा लाई थीं। मैंने उनसे अन्दोलन चलानेके लिये प्रत्येक घरसे एक-एक मर्द मांगा और उन्होंने इसे मजूर किया। सभामें यह भी तय हुआ कि जबतक आन्दोलन चलता रहे वे तुलसी-वृतपर आन्दोलनकी सफलताके लिये प्रार्थना भी करेगी। सध्याको मर्दोंकी सभा हुई और साँझतक क़रीब डेढ़सौ चुने हुए सत्याग्रही हमारे तय किये हुए कानूनको मानते हुए आन्दोलनमें भाग लेनेको तैयार हुए। उन्हे हमारी ओरसे कहा गया कि अपने अपने घरोसे वे २३ अगस्तको विदा होकर पहाडपुरमें इकट्ठे हो और आते समय अपने साथ एक-एक लाठी, एक-एक रस्सी और कुल्हाड़ी, गैती, फावड़े और सावलमेंसे कोई एक चीज लेते आवे।

"हम सिर्फ १३ व्यक्ति डमरू पहुँचे। हटियामें सभा की। सारी हटिया साथ थी। शराबकी भट्ठीके मालिकने पश्चिम मुंह होकर कसम खाई कि शराब नहीं गोड्डा बेचूंगा और सबोंके सामने ताजा शराबके दो ड्रम बहा दिया। जबजब टीनमें बहा देनेके लिये शराब ढाली जाती शान्त जनता गान्धीजीकी जय बोलकर अपना उल्लास प्रकट करती। शराब चुआनेके सारे सामान मालिकने अपने नौकरोंसे फोड़वा दिया। हाँ! जब हमलोग मकान जलानेके लिये तैयार हुए तब उसने विनती की कि ऐसा नहीं किया जाय ताकि वह वहां रहकर दूसरा धन्धा शुरू कर सके। उसकी बात मानली गई। फिर उसी ग्रामका फॉरेस्ट आफिस कब्जेमें लाया गया और उसमें रहनेवाले सिपाहियोंकी व्यक्तिगत सम्पत्ति हटवाकर उसमें आग लगा दी गई। पहाड़िये इसको जलाते हुये बहुत प्रसन्न हो रहे थे क्योंकि यही आफिस अनेकों जायज और नजायज जंगली टैक्सो और जुरमानोंके रूपमें इनकी गाढ़ी कमाईका आधा हिस्सा बरबादकर देता था।

"२३ .अगस्त हमारे लिये महत्वका दिन था। इस दिन हमने अपना संगठन किया और पहली और बड़ी चढ़ाईके लिये तैयार हुए। हमने ग्यारह-ग्यारहकी एक-एक टोली बनाई और पांच विभागमे बॅट गये। पहला विभाग भोजनका प्रबन्ध करता था; दूसरा विभाग जासूसी करता था यानी संबाद लाता लेजाता और दुश्मनोंकी टोह लेता, तीसरा सड़कोंको बड़े-बडे पेड़ गिराकर जाम करता, चौथा बंगलो और पुलोंको तोड़ता और पांचवा विभाग दुश्मनोंको गिरफ्तार कर लेता था। पांचवे विभागमे फुर्तीले जवान थे जो दर्शकोंके वेशमे दुश्मनोंके आसपास खड़े रहते थे और हमारा इशारा पाते ही उन्हें तुरत रस्सियोंसे बांध लेते थे। उनकी कमरमे बाधनेकी रस्सी छिपी रहती थी।

"करीब दो बजे हमारे जासूसोंने खबर दी कि चांदना बंगलेकी रक्षाके लिये सैकड़ोंकी सख्यामें चौकीदार और परगनेत इक्टूठे है और हमारा सामना करनेके लिये उसके पास भाले, बरछे, तलवार और बन्दूक भी हैं। पहाड़ियोंको स्थितिकी भयकरता मालूम हुई। फिर भी वे हमारे साथ चले ही। हमारे हाथमें लाठियां थीं और स्थिति जटिल हो जानेपर हम लाठिया साधारण तौरपर चलानेके लिये तैयार भी थे। हमारे कतारवद लोगोंको दूरसे ही देखकर हटियाके लोग आतंकित हो उठे और भागने लगे। पर हमारे मना करनेपर वे लौटे। नजदीक पहुँचते ही चौकीदारोंमें कुछ आतंक आगया और हमारे पांचवे विभागने, जिसके लोग

हमारे पहले ही वहां पहुँचकर उनके बीच खडे थे और हमारी सीटीकी प्रतीक्षा कर रहे थे—परगनैतकी बन्दूक उठनेके पहले ही उसको उनसे छीन ली और उन्हें गिरफ्तारकर लिया। चौकीदार और बाकी परगनैत भाग गये। आज सुबह ही हमारे जासूसोंमेंसे दो युवक इनके द्वारा गिरफ्तारकर लिये गये थे, उन्हें काफी मार लगी थी, हमारे वहाँ पहुँचनेपर वे मुक्तकर लिये गये। यहाँ एक बगला, एक फॉरेस्ट आफिस जला दिया और शराबकी भट्ठीकी शराब वगैरहको बरबाद करके भट्ठीवालेकी प्रार्थनापर मकानको छोड दिया। यहाँ हमे एक बन्दूक और बीस गोलियाँ भी हाथ लगीं। गिरफ्तारशुदा परगनैतको समझा-बुझाकर हमने छोड दिया।

"२४ अगस्तको हमने गोड्डाकी सडकको पेड गिराकर जामकर दिया, दो काठके पुलोंको उखाड फेंका, फिर बोकडा बॉध बंगलाको जला दिया। वहाँसे हमलोग सुसनी आये। फॉरेस्ट आफिसको जलाया और सुसनी भट्ठीको बरबादकर दिया। यहासे आमडापाडाके आफिसोपर धावा करनेके लिये रात-हो रात जासूसोको चिट्ठीके साथ भेज दिया।

"२५ अगस्तको हम दो दलोंमे बॅट गये। एक दल गया डूमरचीट बंगलाको और दूसरा आलूबेड़ाको, आलूबेडामें सरकारी कर्मचारियोंने विरोध करनेके बदले सहायता दी। फॉरेस्ट आफिस शातिपूर्वक हमें सौप दी गई। हमने आफिस और बगलेको जला दिया, भट्ठीको तोड फोड दिया। आलूबेडाके एक सज्जनने हमें सहायता देनी चाही। हमने सहायता लेनेसे इनकार किया। इससे उनको बडा दु:ख हुआ। उन्हें दुःखी देख हमने अपनी राय बदली और उनसे कहा—आप सप्रेम जो दे सकें हमें दे दें। उनने हमारी भारी जमातके हर आदमीके लिये आध सेर चावल, आधसेर दाल और कुछ तरकारी दी। वहासे हम डूमरचोट गये जहाँ हमारा दूसरा दल पहुँच चुका था। वहाँ जाकर देखा—बगला फॉरेस्ट आफिस और भट्ठी सभी जल रहे हैं। स्थान सुनसान था। साथियोंने कहा कि सभी डरके मारे घरमें छिपे हैं। हमने सबोंसे बातेकी फिर तो सभी निकले और खुशीसे मिले। उनने बतलाया कि पुलिस-इन्सपेक्टर मि० जेम्सने कहा कि तुम सबोंको लूटनेके लिये सताल और पहाडिया लोग आवेंगे, तुमलोग भाले और बरछोसे उनका मुकाबला करना। पर ऐसे मौकेपर पुलिस भाग खडी हुई, इसलिये जनता भी घर छिप रही।

लिये एक साथी मिले जो इसके लिये बारूदका प्रयोग करते। हमलोगोंने बारूद वगैरहका संग्रह करनेके लिये एक साथीको रुपये देकर भेजा।

"दुमकासे हम देवघर आये। वहां हमारे कामकी तारीफ हुई। हमें १५०) रु० मिले और कहा गया कि दुमकाका काम खत्म करके मै राजमहल दामिनमे काम शुरू कर दूँ। रात श्री शिवरामझाजीके यहां कटी जहां गिरफ्तार होनेसे मैं बाल बाल बचा। पुलिस वहां आई, झाजीको गिरफ्तार करके ले गई और मुझे नौकर समझ छोड़ गई।

"दूसरे दिन मैं गुरुकुल वैद्यनाथ धामके विद्यार्थियोंसे मिला। उनमे चार काम करनेके लिये तैयार हुये। उनको लेकर देवघरसे रवाना होनेवाला ही था कि मै १०३° ज्वरसे पीड़ित हो गया। श्री उपाध्याय मिश्र विद्यार्थियोंको लेकर चले पर रास्तेमे ही विद्यार्थियोके साथ गिरफ्तार हो गये। मै लाचार था और मेरे साथ मेरे दो साथी भी लाचार हो गये। उन्हें भी ज्वरकी सख्त पीड़ा होने लगी। दो महीने तक हम सब रोगी रहे। इस बीच हमने बारी-बारीसे दो दल भेजा जिन्हें उन एक हजार लोगोको प्रोग्राम देना था जिन्हें हमने दुमकाकी चढ़ाईके लिये खास स्थानपर इकट्ठा होनेको कहा था। दोनो दल निराश होकर लौट आये। जब हमें मालूम हुआ कि खास जगहपर हमसे प्रोग्राम लेनेके लिये संताली और पहाड़िया लोग इकट्ठे हुये और वहां किसीको न देख वापस चले गये तब हमे बड़ा दुख हुआ।

"२३ अक्तूबरको हम साहबगजको रवाना हुए। मि० के० गोपालन अभी भी काफी बीमार थे इसलिये उन्हें छोड़कर ही जाना पड़ा। साहबगंजमें किसीसे परिचय नहीं था। इसलिये वहां हम कुछ नहीं कर सके। साहबगज हमने छोड़ दिया और राजमहल पहुँच श्री भगवान चन्द्रदासके घर ठहरे। उन्होने हमे साफ कह दिया कि कल सुबह ही हमारे घरसे आपलोग चले जायं। नहीं तो पुलिसके पूछनेपर मुझे साफ-साफ आपलोगोका नाम बता ही देना होगा। हम दूसरे दिन श्रीचरण मुर्मूसे मिले; उन्होने भी कुछ मदद नहीं की। आखिर हम ठिकेदारोके वेशमें पहाड़ टपकर राजमहल दामिनके भीतर पहुँचे; श्री ठट्टू मुर्मूसे मिले और उन्हे तीन दिनोंके भीतर कार्यकर्त्ताओंको बुलानेके लिये कहा। ५ नवम्बरको खूटा पहाड़पर सभा हुई और वहींसे करीब ७०-८० व्यक्तियोंका हमारा एक दल गम्भरियाकी भट्ठीको जलानेके लिये रवाना हुआ। भट्ठीमें

लिये एक साथी मिले जो इसके लिये बारूदका प्रयोग करते। हमलोगोने बारूद वगैरहका संग्रह करनेके लिये एक साथीको रुपये देकर भेजा।

"दुमकासे हम देवघर आये। वहां हमारे कामकी तारीफ हुई। हमें (१५०) रु० मिले और कहा गया कि दुमकाका काम खत्म करके मै राजमहल दामिनमें काम शुरू कर दूँ। रात श्री शिवरामझाजीके यहां कटी जहां गिरफ्तार होनेसे मै बाल बाल बचा। पुलिस वहां आई, झाजीको गिरफ्तार करके ले गई और मुझे नौकर समझ छोड़ गई।

"दूसरे दिन मैं गुरुकुल वैद्यनाथ धामके विद्यार्थियोसे मिला। उनमे चार काम करनेके लिये तैयार हुये। उनको लेकर देवघरसे रवाना होनेवाला ही था कि मै १०३° ज्वरसे पीड़ित हो गया। श्री उपाध्याय मिश्र विद्यार्थियोको लेकर चले पर रास्तेमे ही विद्यार्थियोके साथ गिरफ्तार हो गये। मै लाचार था और मेरे साथ मेरे दो साथी भी लाचार हो गये। उन्हें भी ज्वरकी सख्त पीड़ा होने लगी। दो महीने तक हम सब रोगी रहे। इस बीच हमने बारी-बारीसे दो दल भेजा जिन्हें उन एक हजार लोगोको प्रोग्राम देना था जिन्हे हमने दुमकाकी चढ़ाईके लिये खास स्थानपर इकट्ठा होनेको कहा था। दोनो दल निराश होकर लौट आये। जब हमे मालूम हुआ कि खास जगहपर हमसे प्रोग्राम लेनेके लिये संताली और पहाड़िया लोग इकट्ठे हुये और वहां किसीको न देख वापस चले गये तब हमे बड़ा दुख हुआ।

"२३ अक्तूबरको हम साहबगंजको रवाना हुए। मि० के० गोपालन अभी भी क़ाफी बीमार थे इसलिये उन्हें छोड़कर ही जाना पड़ा। साहबगंजमें किसीसे परिचय नहीं था। इसलिये वहा हम कुछ नहीं कर सके। साहबगंज हमने छोड़ दिया और राजमहल पहुँच श्री भगवान चन्द्रदासके घर ठहरे। उन्होने हमे साफ कह दिया कि कल सुबह ही हमारे घरसे आपलोग चले जाय। नहीं तो पुलिसके पूछनेपर मुझे साफ साफ आपलोगोका नाम बता ही देना होगा। हम दूसरे दिन श्रीचरण मुर्मूसे मिले; उन्होने भी कुछ मदद नहीं की। आखिर हम ठिकेदारोके वेशमे पहाड़ टपकर राजमहल दामिनके भीतर पहुँचे, श्री ठट्टू मुर्मूसे मिले और उन्हें तीन दिनोके भीतर कार्यकर्त्ताओको बुलानेके लिये कहा। ५ नवम्बरको खूटा पहाड़पर सभा हुई और वहींसे करीब ७०-८० व्यक्तियोका हमारा एक दल गम्भरियाकी भट्ठीको जलानेके लिये रवाना हुआ। भट्ठीमें

रखी हुई व्यक्तिगत सम्पत्तिको निकलवाकर भट्ठो जला दी गयी।

"जब हमारा आन्दोलन गोड्डा, दुमका और पकौड़के दामिनोंमें चल रहा था उसी समय हरएक सबडिविजनके एस० डी० ओ० सतर्क हो गये थे। उनने हरेक बगलोंमें घूम-घूमकर वहाके परगनैतोंको यह हुक्म दिया था कि हरेक बगलोंमें वहाके क्रिश्चियन सतालों और मुसलमानोंको लेकर एक-एक रक्षक-दल बनावें। वे दिन-रात बंगलेकी रक्षाके लिये पहरा भी दे। फिर बगलोंपर सैकडोंकी सख्यामें लोग सुलाये जाने लगे। जो इस काममें मदद नहीं करता था वह काफी सताया जाता था। रक्षादलको परगनैतकी ओरसे यह हुक्म भी था कि वे हमलोगोंको मार भी दे तो कोई हरज नहीं। पर हम निडर अपनी राह बढ रहे थे।

"६ नवम्बरको हम रकसी पहुँचे। रास्तेमें हमने लोगाईकी भट्ठो जलाई। हमारे पहुँचते ही हमारे पाँचव विभागने बगलेके रक्षकको पकड़कर बाध लिया; पर वह जोर लगाकर भाग निकला और सीधे परगनैतके घर पहुँचा। गाव भरमें ढोलकी आवाज गूंजने लगी। आवाजपर श्री रत्तू मराडी जो हमारे संताली दलका एक मुख्य सरदार था काफी घबड़ाया। वह हमें जोर-जोरसे कहने लगा—बाबू, भाग चलो, यह जुलाहोकी बस्ती है हमें मार डालेंगे। बगला जल चुका था। वह काम खतम समझकर और आफतको आता देखकर भाग खड़ा हुआ। हमारा भरोसा पाकर बाकी सब लोग तीर तानकर खड़े हो गये। गाववाले डरसे एकबार हटे पर परगनैतने अपने दलको ललकारा। उसने धमकी दी कि अगर वे भागेंगे तो जिस तरह बंगला जल रहा है उनके घर भी जला दिये जायेंगे। फिर तीर धनुष लिये हुए परगनैतकी ललकारपर गाववाले बढ़े जिससे हमारे दलका साहस टूट गया और पहाडिया लोग भाग खडे हुए। उनको भागते देख गाववाले हमारी ओर दौड़े, फिर तो हम सबके सब भागे। भागते हुए बड़ी आत्म-ग्लानि हो रही थी। मैंने देखा मेरे पीछे बहुतसे साथी पकड़ लिये गये थे और बेतरह पीटे जा रहे थे। तीन मीलपर मैं, मेरे साथी श्रीकृष्ण प्रसाद एक घरमें छिपे हुये पकड़े गये। मरणान्तक मार लगी। जब हमको मालूम हुआ कि वे हमें मार ही डालेंगे तब हमने उन्हें सूचना दी कि हमें पुलिसके हाथों लगा देनेसे उन्हें एक हजार रुपये मिलेंगे तब उनने हमें मारना बन्दकर दिया।

जब हम दोनों बगले लाये गये तो हमने देखा हमारे ही जैसे और नौ व्यक्ति जमीनपर पड़े हैं। श्रीदुर्गा टुडू तो १० मिनटके भीतर खतम हो गये और तीन साथी

जानेसे इनकार किया, बोले—आप थाना खालीकर दीजिये, नहीं तो हमें गिरफ्तार कीजिये, अगर गिरफ्तार नहीं किया तब हम तो घर हरगिज न जायेंगे, अपने दूसरे दूसरे काम करेंगे। दारोगा चतुर था। भगतोंको कौन कौन दूसरे काम करने है, जानना चाहा। भगतोंने कहा—हमें तार काटना है, रेलकी पटरिया हटानी है, सडक जाम करना है। पूछनेपर उन्होंने बता दिया कि प्रतुल बाबूने ऐसा प्रोग्राम दिया है और जब प्रतुल बाबूने दिया है तब काग्रेसका ही प्रोग्राम होगा।

आदर्श गोसेवा सघके व्यवस्थापक अखौरी नारायणशेखर सिन्हाने गुमला सबडिविजनमे अच्छा काम किया। थाना, डाकघर, जब्त शुदा काग्रेस आफिसपर अधिकार करनेकी कोशिश की गई। जगह ब जगह तार काटे गये।

२२ अगस्तको खूंटी सबडिविजनमे घूमते घामते श्रीप्रतुलचन्द्र मित्र गिरफ्तार कर लिये गये और उनकी राह बनानेवाला चरखा भगत पुलिसके चगुलसे बच निकला। गुमला सबडिविजनमें विध्वसक प्रोग्रामका प्रचार करता हुआ वह एक महीनेके बाद पकड़ा गया।

१६ अगस्तको कई थानोंपर धावे हुये। सतगावा थानेपर धावा करते हुये

हजारीबाग

जलूसमे से श्री ब्रजनन्दन प्रसाद गिरफ्तार कर लिये गये। उन्हें साल भरकी सजा मिली।

चतरामें श्री रामानुग्रह प्रसादजी, नागेश्वर प्र० सिह और अब्दुल हई साहब, श्री नन्दकिशोर भगत और शालिग्राम सिह वगैरहने जलूस लेकर सरकारी कचहरीपर धावा किया। उनको लेकर और पचीस प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हो गये।

हटरगजमे पडित जगदेव दुबे, श्री गयाप्रसाद सिह और मुलुकधारी सिहने जलूस लेकर थानेपर धावा किया। थानापर ताला लगा दिया गया। पर पीछे ओर पुलिस आई और सबोको गिरफ्तार कर लिया। जोरीसे भी लोग धावेमे शामिल होने आये पर पकड लिये गये।

श्री रामानन्द तिवारीने जमशेदपुरके इलाकेमें अगस्त क्रान्तिकी जड़ जमाई। ३ सितम्बरको पुलिसके हरेक बैरेकसे राष्ट्रीय झंडा फहराने लगा। साकचीका बडा

सिंहभूम जमशेदपुर

पुलिस स्टेशन क्रान्तिकारी कनस्टबिलोंके कब्जेमें आ गया। इस केन्द्रसे वे बिस्टोपुर, गोलमुरी, जुगसलाई थानों और पांच नाकोंकी व्यवस्था करने लगे। श्री रामानन्द तिवारीने किसी अगरेज अफसरको इन थानोमें घुसने नहीं

श्रीबबुआ पहाड़िया, श्रीमैसा सिंह पहाडिया और श्रीदुखन बनवार दम तोड रहे थे। हम दोनोके पैरोपर और पीठपर जैसी चोट थी उसके बारेमे क्या लिखा जाय। ८ नवम्बरकी सुबहको हम राजमहल जेलमे डाल दिये गये। अपने बचे हुये २५०) रु० बड़ी सावधानीसे हमने एक परिचित कांग्रेसीको सौप दिये।

एक जानकारने लिखा है कि ८ नवम्बरको राजमहल जेलमें १० घायल पहुँचाये गये—प्रफुल्लचन्द्र पट्टनायक, श्रीकृष्ण सिंह, बाबू सिंह पहाड़िया, मैसा सिंह पहाड़िया और दुखन बनवार, ठट्टू मुर्मू, रघू मुर्मू, चरन टुडू, सग्राम मुर्मू और नयन हासदा। बड़ी तत्परतासे इनकी दवा होने लगी। सुइयां पड़ने लगीं। पर बैरक दुर्गंधसे भरा रहने लगा। बाबू सिंह पहाड़ियाके नीचेका जबड़ा छिद गया था। उस जबड़ेके सभी दांत लाठीसे तोड़ दिये गये थे जो लटक रहे थे। मैसा सिंह पहाड़ियका पैर इस तरह कटा था कि मालूम होता था नाममात्रको ही लगा है। श्रीपट्टनायकके ऊपर इतनी मार पड़ी थी कि सारे शरीरमे जमे हुये खूनके काले-काले धब्बे दीख पड़ते थे। वे दूसरेके कन्धेका बल लेकर चलते, प्रसन्न रहते और पूछनें पर कहते भाई! चोट तो बेतरह लगती थी पर आह कैसे करता; वह तो अपनी लड़ाई थी। ऐसे बलिदानके साथ राजमहल ही नहीं बल्कि समूचे दामने कोहकी हुकूमतपर जो हमला शुरू हुआ था उसकी समाप्ति हुई।

राची जिलामें राजनीतिक चेतना भगतोमें है और भगत चाहे वह संताली, मुण्ड, वा उड़ाव वगैरह क्यो न हो, गान्धीजीके सत्याग्रह अस्त्रके कायल है।

रांची

श्रीप्रतुलचन्द्र मित्रने उनके आगे तोड़ फोड़ और धावेका प्रोग्राम रक्खा जिसे भगतोने मान तो लिया पर अपने ढंगसे ही काम करना शुरू किया। उनका जत्था मदार, राची सदर, कुरूवेरो आदि थानेपर धावा करने लगा। वहां पहुँचकर जत्थेके भगत कार्यकर्त्ता नम्रतापूर्वक पुलिससे बोले कि आप थाना खाली कर दीजिये, इसपर काग्रेसका कब्जा हो गया। पुलिसपर उनकी नम्रताका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। उसने उन्हें ही थानासे निकल जानेको कहा और जिनने निकलनेसे इनकार किया उन्हे हिरासतमे ले लिया।

२३ अगस्तको एक मजेदार घटना हुई। आठ-नौ टाना भगत कोतवाली और सदर थानाको कब्जामे लाने पहुँचे। 'महात्मा गान्धीजीकी जय; अगरेजो, भारत छोड़ दो' आदि नारे लगाये और थानेके हातेमें झडा फहराया। दारोगाने उन्हें गिरफ्तार न करके कहा—आपका काम पूरा होगया आपलोग अब घर जाइये। भगतोने घर

जानेसे इनकार किया, बोले—आप थाना खालीकर दीजिये, नहीं तो हमें गिरफ्तार कीजिये, अगर गिरफ्तार नहीं किया तब हम तो घर हरगिज न जायेंगे, अपने दूसरे दूसरे काम करेंगे। दारोगा चतुर था। भगतोंको कौन कौन दूसरे काम करने है, जानना चाहा। भगतोंने कहा—हमें तार काटना है, रेलकी पटरिया हटानी है, सडक जाम करना है। पूछनेपर उन्होंने बता दिया कि प्रतुल बाबूने ऐसा प्रोग्राम दिया है और जब प्रतुल बाबूने दिया है तब कांग्रेसका ही प्रोग्राम होगा।

आदर्श गोसेवा सघके व्यवस्थापक अखोरी नारायणशेखर जिन्होंने गुमला सबडिविजनमे अच्छा काम किया। थाना, डाकघर, जब्त शुदा कांग्रेस आफिसपर अधिकार करनेकी कोशिश की गई। जगह ब जगह तार काटे गये।

२२ अगस्तको खूंटी सबडिविजनमे घूमने घामते श्रीप्रतुलचन्द्र मित्र गिरफ्तार कर लिये गये और उनकी राह बनानेवाला चरखा भगत पुलिसके चगुलसे बच निकला। गुमला सबडिविजनमें विध्वसक प्रोग्रामका प्रचार करता हुआ वह एक महीनेके बाद पकड़ा गया।

१६ अगस्तको कई थानोंपर धावे हुये। सतगावा थानेपर धावा करते हुये

हजारीबाग जलूसमे से श्री ब्रजनन्दन प्रसाद गिरफ्तार कर लिये गये। उन्हे साल भरकी सजा मिली।

चतरामें श्री रामानुग्रह प्रसादजी, नागेश्वर प्र० सिह और अब्दुल हई साहब, श्री नन्दकिशोर भगत और शालिग्राम सिह वगैरहने जलूस लेकर सरकारी कचहरीपर धावा किया। उनको लेकर और पचीस प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हो गये।

हटरगजमे पडित जगदेव दुबे, श्री गयाप्रसाद सिंह और मुलुकधारी सिहने जलूस लेकर थानेपर धावा किया। थानापर ताला लगा दिया गया। पर पीछे ओर पुलिस आई और सबोंको गिरफ्तार कर लिया। जोरीसे भी लोग धावेमे शामिल होने आये पर पकड लिये गये।

श्री रामानन्द तिवारीने जमशेदपुरके इलाकेमें अगस्त क्रान्तिकी जड़ जमाई। ३ सितबरको पुलिसके हरेक बैरेकसे राष्ट्रीय झंडा फहराने लगा। साकचीका बडा

सिंहभूम जमशेदपुर पुलिस स्टेशन क्रान्तिकारी कनस्टबिलोंके कब्जेमें आ गया। इस केन्द्रसे वे विस्टोपुर, गोलमुरी, जुगसलाई थानों और पाच नाकोंकी व्यवस्था करने लगे। श्री रामानन्द तिवारीने किसी अगरेज अफसरको इन थानोंमें घुसने नहीं

दिया। और थानोका व्यवस्था, डायरी वगैरह भरना खुद मोख्तार होकर शुरू कर दिया। तिवारीजी सुपरिटेन्डेटके पास गये, उसे अपनी जगह खाली कर देनेको कहा। उसने दो दिनका समय मांगा।

पुलिस गान्धी टोपी पहने कौमी झंडा उठाये रोज परेड करती और खुला विद्रोह जनताकी भावनामे उफान पैदा कर देता।

५ सितबरको इन्सपेक्टर जेनरल औफ पुलिस हवाई जहाजसे जमशेदपुर पहुँचा और तिवारीजीको सरकिट हाउसमें बुलाया। तिवारीजीके वहा जानेसे इनकार करनेपर वह खुद बैरेकमें आया और तिवारीजीको समझाने लगा। उसने कहा कि काग्रेसके फेरमें मत पड़ो, पड़ोगे तब बरबाद हो जावोगे। राज भक्तिकी सपथ याद करो और पहलेकी तरह काम करने लगो। हम तुमको सुबेदार बना देंगे और तुम्हारे जो १५ साथी है उनमे एक एकको हवलदार।

श्री रामानन्द तिवारीने कहा कि हम अब काग्रेसके हो गये हैं। हम अंगरेजी राजका खातमा चाहते हैं। हम सुबेदारी हवलदारी नहीं चाहते। हम अपने नताओंको छोड़ाना चाहते हैं। जिन्हें अ गरेजी सरकारने गिरफ्तार करके कहीं छिपा रक्खा है।

ऐसा सुनकर आई० जी० वहांसे चला गया और तिवारीजी अपनी जमातके सगठनमें लग पड़े।

पूर्व निश्चयके अनुसार श्री सत्यकिंकर महतोने जो पुराने और अनुभवी काग्रेस कार्यकर्त्ता रहे हैं, ५०० का जलूस लेकर मान बाजार थानापर धावा किया।

मानभूम राहमे जलूस भट्ठियोको जलाता, सड़कोको काटता, डाकघर और चौकीघरको भस्मसात करता आया था। थावा वाले सशस्त्र थे। जलूसके पास पहुँचते ही उनने उसे आगे बढ़नेसे मना किया। पर जलूस बेपरवाह बढ़ता गया। खाली फैरकी चेतावनी भी उसे डरा न सकी। तब पुलिस गोली दागने लगी। फल स्वरूप चूनाराम महतो छातीमे गोली लेकर तत्काल शहीद हुये और गोविन्द महतो अस्पताल जाकर एक दो दिनके बाद। घायलोंकी संख्या तो लगभग ५० थी, पुलिसने घायलोंकी ओर ताका भी नहीं। हा! मरनासन्न गोविन्द महतो जब 'पानी-पानी' चिल्ला रहे थे और उनको पानी पिलानेके लिये उनके कई साथी आगे बढ़े तब पुलिसने साथियोंकी ओर राइफल तानकर उन्हें भाग जानेको कहा और एकको जो नहीं भागा गिरफ्तार कर लिया। पीछे गहरी रकम घूसके रूपमें देकर

उस पानी पिलानेकी कोशिश करनेवालेने पुलिससे अपना पिण्ड छुड़ाया।

जितानके भजहरि महतोके दलने बन्दवान थानापर धावा किया और पुलिसके देखते न देखते उसपर कब्जा करके उसके कागजात और सामानादि जला दिये।

पटमदा थानाको कब्जा करनेके लिये जो दल निकला उसे राहमें तोड़ने और जलानेके लिये अनेक सड़क पुल और चौकसीघर मिले। दल ज्यों ज्यों आगे बढ़ता गया त्यों त्यों उसमें बहुत लोग शामिल होते गये। अन्तमें दल कुमीर पहुँचा दस बारह हजार लोगोंको लेकर।

वहाँ लोगोंको खबर मिली कि एक हवागाड़ी जा रही है जिसे पकड़ने लोग दौड़े। हवागाड़ीपर मजिष्टर थे। उनके मना करनेपर भी कुछ लोगोंने पत्थर फेंके और तीर भी चलाये। फलस्वरूप गोली चली जिससे कितने घायल हुये और लक्ष्मण महतोको अपनी एक टांगसे हाथ धोना पड़ा।

पलामू जिलेके लेसलीगंज थानेपर एक बड़े जन समूहने हमला किया। थानेदारसे उसके अगुओंने कहा कि कांग्रेस सरकारकी ओरसे हम इसे दखल करेंगे। आप

पलामू

हमारे भाई हैं, अंगरेजी सरकारकी गुलामी छोड़ हमसे मिल जाइये और अंगरेजी हुकूमतको मिटा देनेमें हमारे मददगार बनिये। मगर दारोगा साहबने तो वैसा पाठ पढ़ा ही नहीं था। उनने लोगोंको थानासे निकल जानेको कहा और वर्दी उतारनेसे भी इनकार किया। नतीजा हुआ कि लोगोंने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और थानेपर अपना दखल जमा बैठे। बादको कई लोग आये और कार्यकर्त्ताओंको समझा बुझाकर थानेदारको मुक्त कर दिया। पर थाना मुक्त न हुआ। अरसे तक वहां तिरंगा झंडा फहराता रहा।

जन व्यवस्था और जनता राज

विहारकी जनताने देखा—रेल, तार, सड़क छिन्न-भिन्न . १, डाक और रजिस्टरी बन्द है; जहां तहां थाने उजाड़ है और कितने थानोमें तिरगा झंडा फहराते हुए कांग्रेसके स्वयसेवक क्रान्तिके नारे बुलन्द कर रहे है और किसी कोनेमें भी अगरेजी सरकारका नाम लेवा पानी देवा सर उठाता नजर नहीं आरहा है। बस, उसने मान लिया, अंगरेजी राज उठ गया; जनता राज कायम हो गया। पर कार्यकर्त्ता वस्तु स्थितिसे अपरिचित न थे। वे मानते थे कि अपने क्षेत्रसे हमने अंगरेजी अमलदारी उठा दी है पर जानते थे कि प्रान्त अभी अंगरेजी राजमे ही है और जव तक जेलका फाटक खोलकर हम अपने नेताओंको अपने बीच व्यवस्थापकके रूपमें नहीं ले आते हम निश्चिन्त नहीं हो सकते। इसलिये वे चौकन्ने रहे और जहा जहासे सरकारी अड्डोको उखाड़ सके वहा वहां शक्ति सगठनमे लग गये। जिन्हे छोटा क्षेत्र मिला यानी कुछ गांवोका, उनने पचायतकी स्थापना करके वहां शान्ति तथा सतर्कताको पनपाना शुरू किया; जिनके क्षेत्रमें एक वा अनेक थाने आगये उनने वहां पंचायतका जाल-सा विछा दिया, पचायतोको एक दूसरेसे सवद्ध किया और उनके द्वारा जनताके जानमालकी हिफाजतका इन्तजाम किया; उनकी स्थापित इस जन-व्यवस्थाको सफलता भी मिली, और जो सवडिविजन भरमें अंगरेजी अमलाशाहीका अन्त कर सके उनने तो वहा जनता राज कायम कर दिया। उनकी अपनी शासन-व्यवस्था थी और अपने कायदे-कानून।

जन व्यवस्थामें क्या करना चाहिये, जनता राजका क्या दृष्टिकोण होना चाहिये—ऐसे-ऐसे सवाल कार्यकर्त्ताओंके मनमें उठते थे। पर उनका दिमाग विलकुल कोरा भी न था। गान्धीजीके विचार प्रायः सभी कार्यकर्त्ताओंके दिमागमें चक्कर काट रहे थे। कांग्रेसके सर्कूलरोसे भी उनको वड़ी मदद मिली। सर्कूलर नं० ८ ने उन्हें वतलाया कि—

" × × × लोगोको इस ढंगसे चलना चाहिये जिससे मालूम पड़े कि सरकारी राज्य उठ गया और हमें खुद देशका सारा प्रवन्ध करना है। इसलिये

एक ओर तो ऐसा कोई काम न करे या किसी काममे मदद न दें जिससे सरकारी हुकूमत चलती रहे या सरकारको मदद मिले और दूसरी ओर वे ऐसे सब काम करे जिनसे लोगोंके आपसमें प्रेम बढ़े, उनके जानमालकी रक्षा हो, उनके खाने पीनेकी कठिनाई दूर हो और वे निर्भय होकर और एक साथ मिलकर सरकारी अत्याचारोंका मुकाविला करें। × × × "

"(ग) × × × यदि लोग डरे तो उनका खैर नहीं है क्योंकि उन जुल्मोंके शिकार सिर्फ वे ही लोग नही होते है जो कुछ करते हैं वल्कि ज्यादातर वे ही हैं जो कुछ नहीं करते। पटनेमें तो वडे-वड़े सरकारी नौकर, डाक्टर, शिक्षक वगैरह भी पीटे गये। इसलिये अगर लोग यह सोचे कि वे चुप रहेंगे या कुछ न करेंगे तो वे वच जायंगे विलकुल गलत है। जो भागता है वह ज्यादा मार खाता है, जो डटता है वह दुश्मनके दिलमें भी भय पैदा कर देता है और उसके जुल्मको अगर एकदम ठण्ढा नही तो वहुत कुछ कम कर देता है। इसलिये जहा कहीं सरकारी फौज या पुलिस जाय वहाके लोगोंको डट जाना चाहिये। आसपासके गावोंके सव लोग अगर इकट्ठे हो जाये और डटकर बोले कि चाहे जो हो जायगा हम तुम्हारे डरसे नहीं भागेंगे और न अपने घरकी खाना तलाशी और साथ-साथ वहूबेटियोंकी वेइज्जत होने देंगे तो निश्चय जानिये कि कुछ लोग मार तो जरूर खा जायगे पर उन गावोंमे ज्यादा जुल्म नहीं हो सकेगा और वहाके लोग तवाहीसे वच जायगे। अगर गाववाले इस तरह नहीं डटे और आसपासके गाव आपसमें मिलकर मुकाविला करनेको नही खडे हुये तो निश्चय रखिये कि गोरी पलटन या पुलिसवाले एक एक कर हर घरमें और हर गावमे घुसेंगे और माल असवाव लूटेंगे, लोगोंको मारेंगे, पीटेंगे और पकड़ेंगे और ताज्जुव नहीं कि स्त्रियोंको भी वेइज्जत करेंगे। इसलिये डर छोड़कर हिम्मत करनेमें ही कल्याण है और इसीमें जानमालकी कम हानि है। जो लोग निहत्थोंपर गोली चलाते हैं वे लोग दिलसे डरपोक होते है और डट जानेपर खुद डर जाते हैं।

× × × × ×

"(ङ) सव गांवमें पंचायत कायम हो जिसके जरिये गांवकी रक्षाका प्रवन्ध किया जाय, झगडे निपटाये जाये, मोकदमावाजी रोकी जाय और गरीब और भूखोंके लिये खाने पीनेका इन्तजाम किया जाय।

× × × × ×

(छ) लोग मुंहामुही सब समाचार फैलाते रहें और जो कुछ हिदायत उनको मिले उसका प्रचार करते रहे। अगर जरूरत समझे तो पतिया जारी किया करे जिसमे बहुत जल्द समाचार वा हिदायत सब जगह फैल जाये।"

जन-व्यवस्था अन्तर्गत क्षेत्रोमे या जनता राज्यमें कार्यकर्त्ताओंने उक्त सर्कूलरको अमलमें लानेकी चेष्टा दिखलाई। वे समझ रहे थे कि वे निष्कण्टक नहीं हैं, सरकारी दमनकी नंगी तलवार उनके सर लटक रही है। किन्तु साथ ही महसूस हो रहा था कि उनके हाथ कुछ अधिकार आया है जिसका उपयोग इस ढंगसे करना है कि जनता संतुष्ट दीखे, सबल बने और क्रान्तिकी साधना करे। जहाँ जितने दिन कार्यकर्त्ताओंकी तूती बोलती रही उनने अपने लक्ष्यको अपने सामने रक्खा। एक हफ्ता तो वे समूचे विहारमे मजबूत रहे, फिर शहरोंसे उनका पांव उखड़ा परन्तु देहातमे वह एक पखवारा जमा रहा। हर जिलेमें कितने गांव ऐसे भी थे और कहीं-कहीं तो थाने भी जहा वे एक-डेढ़ महीना डटे रहे। भागलपुर जिलेके तो दो-दो सब-डिविजन, पूरा-पूरा, लगभग एक मासतक कार्यकर्त्ताओंकी सत्ताके आधीन रहे और बांका सबडिविजनका एक हिस्सा ऐसा भी रहा जहां लगभग दो मास तक अगरेजी राजके अमलोको झांकनेकी भी हिम्मत नहीं हुई। इससे यह नहीं मान लेना चाहिये कि जहांका संगठन जितना मजबूत था वहाँ उतने दिन कार्यकर्त्ताओका बोलवाला रहा। मजबूतीमें उतना भेद नहीं था जितना कि भौगोलिक-स्थितिमें। जो स्थान जितना दुर्गम था वहाँ उतना ही अधिक जनताराज टिका। और स्थानको दुर्गम बनाया तोड़-फोड़से कहीं ज्यादा बाढ़ने, जंगल और पहाडने।

जनता कार्यकर्त्ताओंकी पीठपर थी। वह धन-जनसे उनकी मदद करती और 'शठे शाठ्यं समाचरेत'मे उनसे कहीं आगे रहती। वह कार्यकर्त्ताओको अपना सेवक मानती और विश्वास करती थी कि उनने जो व्यवस्था स्थापित की है वह उसकी अपनी व्यवस्था है, उसका अपना राज है। हाँ अगरेजी शासनके पोषक बनकर जिनने अपना रहन-सहन ऊँचाकर दिया था उन्हें जनताराज उत्साहित नहीं करता था, कार्यकर्त्ता उन्हें फूटी आँख नहीं सुहाते थे और अगस्त आंदोलन उन्हें पहाडसे टकराने जैसा लगता था। इस शासन-यन्त्रके बिगड़ते ही उनके ऐसे आरामकी अट्टालिका जमीनमें धँस जायगी—ऐसी आशका उनके मनमें उठा करती और सरकार परस्तीका तूफान पैदा किया करती। ऐसोमें सबसे आगे थे

विहारके कचहरिया-लोग जिनका जमघट शहरोंमें लगा रहता है। उनके पीछे थे बड़े-बड़े सूदखोर जो जमींदार और दूकानदारके रूपमें अपने-अपने इलाकोंमें क्रांति-विरोधी करतूतोंके लिये कुख्यात हो रहे थे। जनतामें ऐसोंकी तादाद कुछ कम न थी जो पूँजी और धर्मके शिकञ्जेमें पिसते रहनेके कारण पौरुष विहीन हो रहे थे और 'चेरी छाडि न हो उब रानी' के रागके सजीव प्रतीक बन बैठे थे। कार्यकर्त्ताओंको इस वर्गसे पूरी हमदर्दी थी और उनने जहाँ-तहाँ और जबतब अपने सिद्धान्तोंको नजर अन्दाज करके भी इस वर्गको संतुष्ट करनेकी चेष्टा दिखलाई ताकि यह वर्ग उभड़े और उनकी पीठपर रहे। पहले दो दलोंसे कार्य-कर्त्ताओंकी सहानुभूति न थी। सच पूछिये तो वे दोनों दल उनकी आँखोंमें खार जैसे खटक रहे थे। पर जबतक उनकी व्यवस्था रही—जनता राज रहा, उनने सब दलों सब वर्गोंकी सुख-सुविधाका जैसा खयाल रक्खा वह दुनियाकी क्रान्तिके इतिहासमें बेजोड़ है।

पटना जिलामें जगह-जगह जन-व्यवस्था चमकी। उसकी कई खूबियां तो ऐसी थीं जिनपर किसी भी प्रजातंत्रको नाज हो सकता है। फतुहा थानाके खुशरूपुरने

पटना श्री द्वारिकाप्रसाद आर्य्यके सचालनमे संरक्षक दलका सगठन किया जिसका काम था शान्ति कायम रखना, रातको पहरा देना, गुण्डोका दमन करना और काग्रेसके हुक्मनामेको सब जगह पहुँचा देना।

शान्ति और तृप्ति सगी बहन है। इसलिये ही श्री द्वारिकाप्रसाद आर्य्यने शाति कायम रखनेके लिये जो पहला काम किया वह था सुलभ और सस्ती दूकानोंको खुलवाना। लोगोको मुनासिब कीमतपर अन्न मिलने लगा जिससे असतोपको पनपनेका मौका नहीं मिला। अब रह गये गरीब जिनके लिये 'व्यापार मंडल'की ओरसे सस्ती दूकान खोलवायी गयी जहाँ रुपयाकी चीज नौ आनेमें मिलने लगी। बस, उपद्रवकी आशंका जाती रही।

फिर भी खुशरूपुरका स्वयसेवक दल चौकन्ना हो रहा और जब पुलिसकी करतूतसे प्रोत्साहित होकर खुशरूपुरपर कुछ डकैतोंका आक्रमण हुआ तो उनने डकैतोंका कसकर मुकाबला किया और उनके एक साथी श्रीमहावीरलालने भाले और गँड़ासेकी चोट भी खाई।

उन दिनों रेल छिन्न-भिन्न हो जानेके कारण पैदल चलनेवालोंकी संख्या बहुत बढ़ गयी थी जिससे धर्मशाला ठसाठस हुआ रहता था। उस भीड़मेंसे ढूंढ ढूंढकर

भूखे प्यासे खोज निकाले जाते और उन्हें मुफ्त खिलाया पिलाया जाता। जब लाइन ठीक हुई तब जहाँ तहाँ पड़ी पसिञ्जर गाडियाँ धीरे धीरे खुशरूपुर पहुँचने लगीं जिसमें कितने ऐसे मुसाफिर होते जो भूखसे विकल दीख पड़ते। श्री महादेव-लालके सुप्रबन्धसे उनलोगोंके लिये दाल-भात, गुड फहरी और चना स्टेशन पर सहजमें उपलब्ध थे। बच्चोंके लिये दूधका भी अच्छा इंतजाम था।

श्रीद्वारिकाप्रसाद आर्य्यको अपनी जन-सेवाका पुरस्कार मिला दो सालका कठोर कारावास। आप जेलसे जर्जर शरीर लेकर निकले जिसे पटना अस्पतालकी चिकित्सा चंगा न कर सकी। आप वहीं चिर विश्राम पाकर शहीद हो गये।

मालसलामी थानेका फतहपुर पटना जिलाके जन-व्यवस्थाके इतिहासमे अपना विशेष स्थान रखता है। जल्ला इलाकेके इस गांवमें 'समानान्तर सरकार'की स्थापना आंदोलनके शुरूमें ही हुई। बुनियाद डाली श्रीरमणबाबूने ६३ व्यक्तियोंकी एक टोली बटोरकर जिसके हरेकने रमणबाबूके साथ सपथ ली कि हम प्राणोंकी बाजी लगाकर अगस्त आन्दोलनको चलायंगे। इन व्यक्तियोंने समूचे जल्लाको अंगरेजी राजका विद्रोही बना दिया। अधिकांश चौकीदारोंने खुद अपना वरदी-मुरेठा जला दिया और कुछ इस टोलीमें शामिल भी होगये। इलाकेके दो कनस्टविल रामबहाल सिंह और रामाश्रय-सिंह जो क्रमश बिहार पुलिस और बंगाल पुलिसमें काम करते थे, नौकरीपर लात मार कांग्रेसके काममें जुट गये। इसलिये वहां ऐसा एका होगया कि अन्त तक सी० आई० डी० और पुलिसवालोंकी दाल न गली।

शीघ्र फतहपुरने प्रान्तीय कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओंके ध्यानको खींच लिया। जिला कांग्रेसका दफ्तर वहां था ही, प्रांतका भी आगया और एक अरसे तक किसी न किसी रूपमें रहा।

२६ अगस्तको जगत बाबू फतहपुर पहुँचे और दूसरे दिन सभा की। लोगोंने दिल खोलकर उन्हें धनजनकी मदद की। जगत बाबूने उसी दिन फतहपुरकी मरनेवाली टोलीका नाम 'शहीद-जत्था' रखा। फिर वे दस दिनके लगभग हाथी और नावके जरिये आचार्य जगदीश और अन्य सहकारियोंको लेकर उस इलाकेका दौरा करते रहे।

इसी बीच एक दिन गोरखा सेनासे भरी दो नाव फतहपुर पहुँची। रमण बाबूने अपने शहीद-जत्थासे कहा—क्या देखते हो? शहीद हो जाओ। तत्काल एक बहुत बड़ा जलूस क्रान्तिके नारे बुलन्द करता हुआ निकला। गोरखोंने तुरत नावें खोलीं,

संगीनें चढ़ायीं और बीच धाराकी दिशा पकडो। फिर तो शहीद-जत्थाकी धाक जम गयी। उसने अपनी टोलियां चारो ओर भेज ग्राम-रक्षा -दलका संगठन किया और पचायतकी स्थापना की। इलाके भरके चोर उचक्के अपना पेशा मानो भूल गये। झगड़े भी बन्द हो गये और पुराने झगड़ोको पचायतने अपना फैसला दे देकर मिटा दिया।

जल्लाका दौरा खतम करके जगत बाबूकी नाव बख्तियारपुरकी ओर बढ़ी जहा वह घेर ली गई। जगत बाबूके साथ अचार्य जगदीश और कुछ और कार्यकर्ता थे। कागजात भी काफी थे। अचार्य जगदीश कागजात ले साथियो सहित चम्पत हो गये। पर जगत बाबू फतहपुरके ही पाच मलाहोंके साथ गिरफ्तार कर लिये गये। उनके साथ साथ आन्दोलन सबन्धी परचेका एक बण्डल भी पुलिसको हाथ लगा जो बारबार पानीमें डूब जानेके लिये फेंका गया पर हर बार उपलाता ही रहा।

इस गिरफ्तारीसे फतहपुरका जोश ठढा नहीं हुआ। उसने आन्दोलनको और उग्र बनानेकी कोशिश की। डिनामाइट वगैरहका सग्रह किया और गावके पुलको उडा भी दिया।

फतहपुरको अर्थाभावने नहीं सताया। हाइ स्कूल, पुस्तकालय और अन्यान्य शान्तिकालकी सस्थाओंको उसने बन्द कर रखा था और उनके धनसे क्रान्तिका पोपण किया था। हा! कमसे कम आठ महीने तक किसी फतहपुरीने चौकीदारी दाखिल नहीं की और इक्के दुक्केने तो मालगुजारी देनेसे भी इनकार किया और अपनी जमीन नीलाम होने दी।

मोकामाके पास मालपुर नामका गाव है जहाके किसानोने दो महीने अपना प्रबध आप किया। उनने मिलकर अपने एक साथीको राजा बनाया और दूसरेको मालपुर मत्रीका ओहदा दिया। गावके दफादार और चौकीदारोने अग्रेजी सरकारसे सबध तोडा और अपने किसान राजाके प्रति भक्तिकी सपथ ली। राजाकी ओरसे पचायत कायम हुई और स्वय-सेवक बहाल किये गये। अब मालपुर अपने किसान राजपर अभिमान करने लगा। चारो तरफ स्वयं-सवकोंका पहरा; फिर न चोरी न कलह। अगर कोई किसान राजके खिलाफ जाता तो स्वयसेवकोंके सरदार जो सेनापति कहलाते थे उसे सीधी राहपर तुरत ले आते। जो मामला सेनापति तय नहीं कर पाता वह पचायतके सामने आता। कितने ऐसे मामले भी होते जो

दरबारमें पेश होते जहां राजा अपने मन्त्री-मंडल सहित बैठते और दरबारका फैसला सर्वमान्य होता। इस किसान राजके राजा जबतक दरबारमें रहते अपने पदकी मर्यादा निभाते और दरबारके बाहर ठेठ किसानके रूपमें नजर आते। दूसरे दूसरे किसानोकी तरहसे खेती गिरस्ती, उन जैसी ही वेशभूषा। फर्क इतना ही था कि आप जरा औरोसे बलवान थे और अखाड़ेमें प्रायः सबको लपटा लेते थे।

इस किसान-राजने मालपुरको इस ढंगसे सगठितकर दिया कि वहांकी कोई खबर थानेको नहीं मिलती। सरकारी अमले विश्वास करने लगे कि मालपुरने काफी हरबे-हथियार इकट्ठे कर लिये हैं और उसे जमकर हमारा सामना करनेकी ताकत आ गई है।

गयाका जहानाबाद सबडिविजन जहां-तहां जनव्यवस्थाके लिये प्रसिद्ध रहा है। यों तो जिलाके छत्तीस थानोंमें चौदह थाने लगभग तीन महीने बेकारसे रहे पर

गया थानेका काम पंचायतने लिया। कुर्था थानेका स्वयसेवक दल अपनी संगठन शक्तिके लिये प्रसिद्ध था। रातको गांव-गांवमे पहरा देना और चोर डकैतोपर कड़ी नजर रखना इनका काम था। पुलिसके हथकंडोंसे हिन्दू-मुसलमानमे अनबन होनेकी आशंका शुरू शुरूमें बनी रहती थी; पर स्वयं-सेवकोंकी सतर्कताने इस आशंकाकी जड़ उखाड़ दी। नोआवा बस्तीमें कुछ हिन्दुओने एक मुसलमानका घर लूट लिया। स्वयंसेवकोने लुटेरे हिन्दुओंको पकड़ा। उनसे लूटके माल बरामद कराये और जो माल न मिल सका उसके लिये नकद रुपये वसूले। इसके अलावा उनने सबोको डकैतीके अपराधके लिये दंड भी दिया। फिर उस लुटे हुए मुसलमानकी सारी क्षति पूरी कर दी गई और उसे आश्वासन मिला कि फिर कभी उसके जानमालपर खतरा न आयेगा।

इसी बीच थानेमें एक अत्यन्त साहसपूर्ण घटना हुई। थानेको उठ गया देख एक पुराना चोर निशंक चोरी करने लगा, उसको डांटा फटकारा गया पर उसके कानोंपर जूंतक न रेंगी। जनताने देखा कि स्वयंसेवक समझाने-बुझाने डांटने-डपटनेके सिवा और कुछ नहीं कर रहे है और उसने अपनी नीतिको काममें लानेका निश्चय किया। एक दिन कुछ लोग दिन-दहाड़े उसके घरमें घुस गये और उसको जानसे मार डाला। इस हत्याकी खबर पाकर स्वयसेवक तो कॉप उठे। वे चोरके घर पहुँचे और उसके घातकोकी लानत मलामत की। कुछ स्वयसेवकोको इसका बडा दुःख हुआ और उनने इस दुर्घटनाका प्रायश्चित भी किया। पर जनसाधारणने

खुशियाँ मनाईं। जहाँ-जहाँ उस चोरके मारे जानेकी खबर पहुँची वहाँ-वहाँकी जनता उत्साहित ही होती देखी गयी, साथ ही चोर डकैतोंमें हड़कप मच गया।

घोषी थानेके लखावर गाँवमे एक चोर पकडा गया जो बैलपर गल्ला लादे भागा जा रहा था। स्वयसेवकोने उसे पकड़ रखा, असली मालिकका पता लगाकर गल्ला उसे वापस किया और चोरको मारपीटकर छोड दिया। हा! उससे जुरमाना भी वसूल किया गया।

सदर सबडिविजनने उस इलाकेमे वागी सरकारका शासन देखा जो इलाका पलामू और हजारीबागकी सीमासे छूता है। डुमरिया और इमामगजसे जब थाने, डाकखाने और शराबखाने सब अंग्रेजी राजके अड्डे उखड़ गये तब जनसाधारण घबड़ाया। उसे अपने जानमालकी हिफाजतकी फिक्र पडी। इसी फिक्रने वागी सरकारको जन्म दिया, जिसके सभापति हुए श्रीजगलाल महतो।

इस वागी सरकारके दो व्यवस्था केन्द्र थे—मैगरा (डुमरिया) और इमामगजमें। मैगरा केन्द्रके उपसभापति, मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष क्रमशः परमेश्वरी सिह, कामेश्वर ठाकुर, अखौरी राधाविहारीलाल थे और इमामगजके श्यामगोविन्द सिह, रामनन्दन मिश्र और शीतल वैद्य।

इस वागी सरकारने पहरेका, पचायतका और हिन्दू-मुसलमानोंमें भाईचारा बनाय रखनेका अच्छा इन्तजाम किया। दो महीनेके अरसेमे यानी जबतक इस वागी सरकारको वहाँकी व्यवस्था करनेका अवसर मिला, एक भी काड ऐसा न हुआ जिससे अगरेजी हुकूमतका न रहना लोगोंको खटका हो। चारों ओर अमन-चैन और उत्साह ही दीख पड़ते। चौकीदारो और दफादारोकी चौकसी पहलेकी तरह ही होती रहती। फर्क इतना ही था कि अब वे अंगरेजी सरकारके वागी और वागी सरकारके भक्त थे।

एकबार रानीगज बाजारमे चोरी हुई। चोर पकड़ा गया। इमामगज, रानीगंज यूनियन बोर्डके सभापति प० रामनन्दन मिश्रने चोरको सड़कपर बैठा दिया। जितने राहगीर चलते उसकी फजीहत करते। अन्तमे उसने पच परमेश्वरके आगे प्रतिज्ञा की भविष्यमें कभी चोरी न करनेकी। तब वह छोड़ दिया गया। मानसिक कष्टके अलावा उसे और कोई तकलीफ नहीं दी गयी। वक्तपर खाना न रोका गया।

दो महीनेके अरसेमे सरकारी पिट्ठुओंके हथकडोके बावजूद डुमरिया-इमामगज इलाकेके हिन्दू मुसलमान खूब मेलसे रहे। दोनों थानोंमे एक-एक शान्ति सभा थी

जिसकी बैठकमें हिन्दू-मुसलमान दोनो शामिल होते और अपनी कठिनाइयोंका हल निकाल लेते।

बागी शाहाबादने अपने जिलेके ३० थानोमें १८ थानोसे अंगरेजी हुकूमतको उखाड़ फेंका। सदरमें संदेश, सहार, बड़हड़ा, शाहपुर और पीरो कांग्रेसी झंडा फहरा

शाहाबाद

रहे थे; सासाराममे नासीरगंज, करगहर, दीनार, चेनारी और रोहतास; भभुआमे अधौरा, चैनपुर, चांद और रामगढ़ और बक्सरमे ब्रह्मपुर, राजपुर और नरवीरपुर। इन सब जगहोमे पंचायते लोगोके झगड़ोको मिटा रही थीं; ग्राम-

जगदीशपुर

रक्षक दल पहरा दे रहे थे और कार्यकर्त्ता क्रान्तिके मोरचेको मजबूत बनानेमे लगे थे। इन सब थानोसे जब पुलिस गई तब अपने साथ चोरी डकैतीको भी लेती गई।

जगदीशपुर थानामे तो १२ अगस्तसे २३ अगस्त तक स्वराज्य था। वहांके कार्यकर्त्ताओमे शुरूसे ही जन-शक्तिकी अकड़ थी। नौ अगस्तको पुलिसने थाना कांग्रेस कमिटीके सामानके साथ-साथ मंत्रीके कुछ सामानको भी जब्तकर लिया था। कार्यकर्त्ताओने मंत्रीका सामान लौटानेके लिये उसपर इतना जोर डाला कि दूसरे दिन उसे वैसा करना पड़ा। फिर कार्यकर्त्ताओने पुलिस इन्स्पेक्टरकी पिस्तौल छीन ली जिसपर पुलिसने इन्द्रकुमार, अली इमाम और बंशीधरको गिरफ्तार कर लिया; किन्तु तीनो लड़के उसके हाथसे बलपूर्वक छीन लिये गये। बादको थाना कांग्रेसके दखलमे आगया और श्री रामदयाल पाण्डेय, थानाके व्यवस्थापक नियुक्त किये गये। थानेमे पुलिस थी, हिन्दुस्तानी फौज थी। दोनो जन-शक्तिके सामने हतप्रभ हो रही थीं। १० अगस्तको अंगरेजोकी तमाम ताक़ते थाना खाली कर चली गयीं।

श्री रामदयाल पाण्डेय जगदीशपुर, दासीपुर आदि गावोमें साथियों सहित घूमे और ग्रामरक्षक दल तथा पंचायतका संगठन किया। थानेमे कोई अशान्ति नहीं हुई।

संदेशने ऐसे स्वराज्यका एक मास तक उपभोग किया और सहार थानेने तो दो मास तक। इस अरसेमे अंगरेजोका एक भी अमला वहां झांकनेकी हिम्मत नहीं दिखला सका।

भभुआके चांद थानाको भी कांग्रेस सरकारकी व्यवस्था देखनेका अवसर मिला। १७ अगस्तको अंगरेजी थाना कार्यकर्त्ताओके कब्जेमे आगया था और उसके

अमले गिरफ्तार हो गये थे। पर फिर कार्यकर्त्ताओंने उन्हें मुक्त करके थानेके बाहर कर दिया था और अन्यान्य सरकारी संस्थाओंपर भी दखल जमा लिया था।

चांद पहाडी इलाका है। दुश्मनोंसे मोरचा लिया जा सकता है, गरिल्ला लडाई लडकर उन्हें परेशान किया जा सकता है। इसलिये वहाके कार्यकर्त्ताओंने कांग्रेस सरकारके नामपर काफी जवानोंको इकट्ठा किया और उन्हें गरिल्ला बनानेकी कोशिश की। उनने थानाको चार हिस्सोंमे बाट दिया और हरेक हिस्सेकी सुव्यवस्थाके लिये वहा वहा एक-एक केन्द्र खोला। उनने न्याय-विभागका संगठन किया जिसके द्वारा गाव-गावमें पंचायतें कायम की गईं। प्रचार विभाग खोला जिसके द्वारा कांग्रेस सरकारके हुक्मनामेका थाना भरमें एलान होता रहा। कांग्रेस सरकारका एक गुप्तचर विभाग भी था जिसके सेवक चारों केन्द्रोंमें रहते और दुश्मनोंकी गतिविधिकी सूचना चांदकी सरकारको पहुँचाते रहते।

सिरहिरामें एक तेलीके घर डाका पडा। गुप्तचरोंने खबर दी कि माल गावमें ही है और अलिवारिस खा तथा अन्यान्य व्यक्तियोंपर जोर डालनेसे बरामद हो सकता है। तुरत श्री कैलाशपति सिंह अपने जवानोंको लेकर सिरहिरा पहुँचे और अलिवारिस खा तथा गावके प्रमुखोंको बुलाकर कहा कि तीन घंटेके भीतर तेलीको माल मुआवजा सहित नहीं मिल जाता है तब हम कांग्रेस सरकारकी ओरसे मुनासिब कार्रवाई करेंगे। गाँववालोंने सात घंटेका समय मागा पर पाच घंटेके बाद ही तेली आया और कैलाशपतिजीसे बोला कि मेरा माल वापस मिला, मुझे और कुछ नहीं लेना है। फिर कैलाशपतिजी अपने जवानोंको लेकर केन्द्र लौट आये।

इस घटनाके अलावा जबतक कांग्रेस राज रहा और कोई चोरी डकैतीकी घटना चांद थानेमें नहीं हुई।

पटना डिविजनसे तिहुत डिविजनकी जन व्यवस्थामें अधिक जान थी। कहा जा सकता है कि वहा कहीं कहीं तो जनता राज कायम हो गया था और राज्यकी तिर्हुत सबडिविजन व्यवस्थाके लिये कायदे कानून बन गये थे।

सारन जिलेमे मांझी, इकमा, दिघवारा, दरौली, रघुनाथपुर, सिसवन, परसा, बैकुण्ठपुर और गरखासे अंगरेजी अमलाशाही उठ गयी थी और उन इलाकोंकी व्यवस्थाका भार कार्यकर्त्ताओंको अपने सर लेना पड़ा था।

सारन सदरमें स्वतंत्र-मंडल स्थापित हुआ था। इस मंडलके संरक्षणमें इकमा सम्पूर्ण थाना, मांझी थानेका आधा और बनियापुरके कुछ गांव थे।

स्वतंत्र मंडल पंचायतोंके द्वारा अपनी व्यवस्था करता था। गांव ग्राम केन्द्रोंमें बँटे थे और प्रत्येक ग्राम-केन्द्रमे पचायत थी जिसे ग्राम पंचायत कहते थे। ग्राम पंचायतके ऊपर थी थाना पंचायत और सबके ऊपर मंडल पंचायत। मंडल पचायतका सभापति मडलाधीश कहलाता था जिसका आदेश समस्त स्वतंत्र-मंडलको मान्य था।

स्वतंत्र मंडलके अधीन पंचायतके अलावा चार विभाग थे :—तोड़ फोड़ विभाग, प्रचार विभाग, ग्राम रक्षा विभाग और सेवक-दल विभाग। प्रत्येक विभागका सर्वोच्च पदाधिकारी अध्यक्ष कहलाता था—जिसके आदेशोका पालन करना सेवक दलका काम था। तोड़ तोड़ दलके लोग देखते रहते कि रेल रास्ते वगैरह मरम्मत तो नहीं हो रहे हैं और उनको मरम्मत पाते तो फिर तोड़ देते ताकि पुलिस और फौज उनके स्वतत्र मंडलकी सीमाके भीतर पैर नहीं दे सके। प्रचार विभागके लोग-क्रान्ति पोषक परचे छाप छाप कर बांटा करते और जगह जगह सभा करके और प्रदर्शन निकाल कर क्रान्तिकी भावनाको जगाय रखनेकी चेष्टा किया करते। डाककी व्यवस्था भी इन्हीं लोगोके हाथ थी। ग्राम रक्षा विभागका काम सबसे ज्यादा जवाबदेहीका था। पहरा देना, चोरी डकैती रोकना और अपराधियोको पकड़ पंचायतके सामने लाना उसका काम था। अगरेजी सरकारके चौकीदार दफादार सब अब स्वतत्र मडलके अधीन थे। और उसका हुक्म बजा लाते थे।

अगरेजी थानाके उखड़ जानेके बाद १७ अगस्तको इकमा बाजारमे भाले लेकर टॉर्चके सहारे डाकू घुस आये। रातका वक्त था। बाजारवाले घबड़ा गये। पर स्वतंत्र मंडलका रक्षा दल खूब चौकन्ना था। वह भाले और बंदूक लेकर दौड़ा। डाकू उसके सामने ठहर न सके और सरपर पैर रख कर भागे।

जान मालकी हिफाजतमें तो सब जगह जनता-राजने भेद भावको जगह नहीं दी है। यहाँ भी उसने जैसे अपने आदमियोंके जान मालकी रक्षा की है वैसे औरोंके जान मालकी भी। इकमा स्टेशनपर मालगाडी असहाय-अवस्थामें खडी थी। कुल ६० डब्बे थे, मालसे भरे हुये। रक्षा दल बराबर मालगाड़ीके पहरेपर रहा। फिर भी एक रातको एक डब्बेमेंसे ५ टीन घीकी चोरी हो गई। रक्षा दलने मालका पता लगाया और चोरका भी। माल डब्बेमें हिफाजतसे रख दिया गया और चोरोंको स्वराजी जेलमे बन्द कर दिया गया। चोर थे भारती पैटमैन और सीताराम

कलवार। मंडल पंचायतने उनका विचार किया और उसके फैसलेके मुताबिक चोरोंको चूनेमे टीक कर सरे बाजार घुमाया गया। चोर दिन भर भूखे भी रखे गये और उन्हें पीटा भी गया।

एक दिन मगहिया डोमोंका गिरोह इकमा बाजारमें ताकता भाकता नजर आया। सभी डोम मडल पंचायतके सामने लाये गये। उन्हें दिन भर हाजतमें रखा गया। फिर इकमाके बाहर पहुँचाकर छोड़ दिया गया।

पर खूब सनसनी तो तब मची जब एक भेदिया (spy) पकड़ा गया। उसकी जेबमें एक चिट्ठी थी एस० डी० ओ० की लिखी हुई, जिसमें पुलिस वगैरहको हिदायत दी गई थी उसकी मदद करनेके लिये। उसकी साइकिल जब्त कर ली गई। उसके पास तीस रुपये भी थे जो ले लिये गये। उसे दिन भर हाजतमे रखा गया। शामको उसका विचार हुआ और उसे 'फांसी' का हुक्म हुआ। पर अंगरेजो तौर-तरीकेसे फांसी देना सभव न था और न वांछनीय ही। इसलिये तय हुआ कि उसे सरयूमे डुवा दिया जाय। मंडल पंचायतके सेवकोंने उसे तब माझी पंचायतके हवाले किया। माझी पचायतके सेवक उसे सरयू तट ले गये और जब डुबानेकी तैयारी करने लगे तब वह बहुत रोया और बोला—मैं बाबू रजनधारी सिह, सी० आई० ई० का आदमी हूँ; आपलोगोसे दया भिक्षा मांगता हूँ। पूरा पता देनेपर वह माझी पचायतके सामने लाया गया—जिसने मंडल पचायतसे उसकी प्राण-भिक्षा मांग ली और वह भेदिया मुक्त हो गया।

परसा थानामें भी इसी तरहकी स्वराजी व्यवस्था थी। वहाके चौकीदारोंने अपनी वर्दी-पेटी कांग्रेस आफिसमें जमा कर दी थी—और जन व्यवस्थाके सेवक बन गये थे। थाने भरमें एक भी ऐसी सस्था नहीं बची थी जिसपर जनताका अधिकार न होवे। एक दिन पोस्ट मास्टरने डाकघरपरसे स्वराजी झंडा उतार दिया। तुरत उसका बहिष्कार किया गया। और जब उसने डाकघरपर झडा फहराकर कार्यकर्त्ताओसे माफी मांगी तब उसे समाजमे फिर शामिल कर लिया गया। यहा भी थाने भरमे पचायतकी सुव्यवस्था थी और मुकदमेबाजी बिलकुल बन्द हो गई थी।

परसा थानाकी स्वराजी-व्यवस्थाने खाद्य-सामग्रीको भी सुलभ करनेकी कोशिश की थी। गल्लेके दरपर नियत्रण रखा था और चोर बाजारको दबा दिया था।

सिवान सबडिविजनक रघुनाथपुर थानामें भी एक महीना कार्यकर्त्ताओंकी अखण्ड व्यवस्था रही। पंचायत विभाग स्वयं-सेवक विभाग और प्रचार विभाग अपनी अपनी मर्यादाको समझते हुये थाना भरमें काम करते रहे। उनने बाजारपर नियंत्रण रखा और कहीं चोरी डकैती नहीं होने दी। एक भी मुकद्मा ऐसा न हुआ जिसका संतोषप्रद फैसला पंचायतसे न हो गया हो।

गोपालगंजका बैकुण्ठपुर थाना भी अपनी पंचायतकी व्यवस्थाके लिये प्रसिद्ध था। ग्राम पंचायत, यूनियन पंचायत और थाना पंचायतका सिलसिला ऐसा मजबूत हो गया था कि किसीको कचहरी झाकनेकी जरूरत महसूस नहीं हुई। चोरी डकैतीकी एक भी घटना सुननेमें नहीं आई।

बरौली थानेकी पंचायतकी भी अच्छी धाक थी। उसने एक डकैतीके मामलेका भी विचार किया था, और उसने जैसा फैसला दिया उससे डकैत और पीड़ित दोनो संतुष्ट हुए। कटेया थानेकी जनव्यवस्था भी बहुत कुछ इसी ढंगकी थी।

चम्पारण

चम्पारणने दो महीने जनताराज देखा, गोविन्दगज थानेमे। पुलिस स्टेशनको दखल करके ऋषिदल समूचे थानेके गठनमे लग गया। प्रचारका काम श्रीपारसनाथ वर्माको दिया गया और वे प्रचार-विभागके अध्यक्ष बने। डाककी व्यवस्था श्रीनरसिह दुबेके जिम्मे रही और श्रीरामाश्रय दुबे समस्त रक्षक-दलके अधिपति बने। और तोड़-फोड़में आगे रहे महम्मद ताहिर जो भट्ठियोके तोड़ने-फोड़नेमें काफी मुस्तैद रहते। थानेमे १३ यूनियन है जो १३ जिम्मेवार कार्यकर्त्ताओको सौंप दिये गये जिनका काम था प्रत्येक ग्राममे पचायत और रक्षक-दलका संगठन करना। यूनियन अधिपतियोंने बहुत जल्द इस कामको पूरा कर लिया। फिर वे केन्द्रको नियमित रूपसे अपनी रिपोर्ट भेजने लगे।

केन्द्रके संचालक थे वही रामपिदेवजी जिन्हे पुलिसके साथ-साथ जन-साधारण भी गोविन्दगजका बादशाह कहते। ऋषिजी अपनी बादशाहतमे सदल-बल घूमते ही रहते। चौकीदार दफादारकी वरदी-पेटी जलवाकर उनको स्वयसेवक बनाना, लोगोंकी फरियाद सुनना, हाट-बाजारपर नियंत्रण रखना और भट्ठियोको बरबाद करना मुख्य-मुख्य काम थे। क्या मजाल था कि उनकी बादशाहतकी हदमें अगरेजोका अमला पैर रखता! अगर कोई रखता तो तुरत उनके गुप्तचर उनको खबरकर देते। फिर तो उस अमलेको लेनेके देने पड़ते। कनस्टबिल होता तो अपने साज-सामानसे बाज आता और कान पकड़ता कि फिर वह उधर कभी आवे। कचहरीका सम्मन
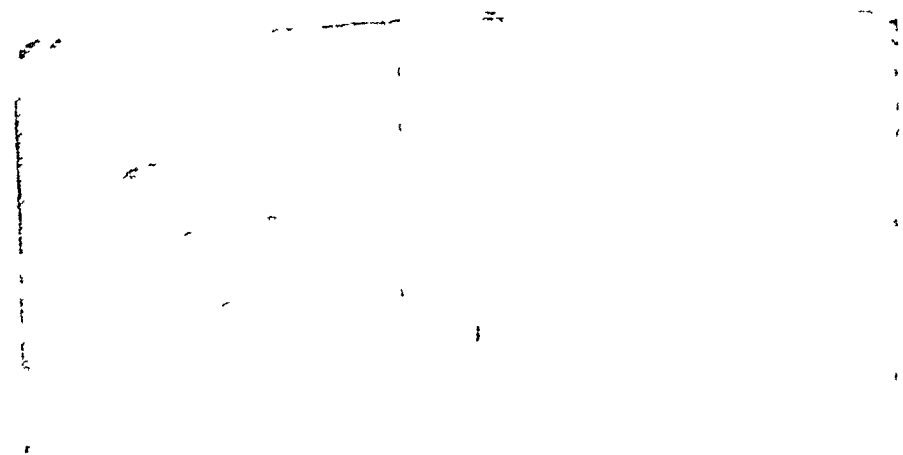
तामील करनेके लिये कही जाता हुआ सिपाही होता तो उसके सारे कागजात जला दिये जाते और उसे वैरंग वापसकर दिया जाता। ऋषिजीकी राजनीतिसे जनता बडी प्रसन्न थी। वह अमन-चनसे रह रही थी। मामले-मुकदमे बन्द हो गये थे। पहले चोरी डकैतीकी भरमार थी। अब उसका नामोनिशान मिट गया था। पर इसका श्रेय गोविन्दगंजके जनता राजको उतना नही है जितना गोविन्दगंजकी जनता-शाही को।

एक घटना है खजुरियाकी। डाकू देवी अहीरने कुछ साथियोको लेकर वहाँ डाका डाला। रक्षक-दलवालोने उसका सामना किया। अपनेको कमजोर पा वह दल सहित दामोदरपुरकी ओर भागा। पर वहाँका रक्षकदल भी चौकन्ना था जिसने सबोको घेर लिया। फिर तो एक तरफ खजुरिया रक्षकदल और दूसरी तरफ दामोदरपुर रक्षकदलकी दो तरफी मार डाकुओपर बजरने लगी। देवी अहीर मारा गया मगर उसके साथी हाथ न आये—सबके सब भाग निकले। जनताराज चोरी डकैतीको बरदाश्त नहीं कर सकता था। वह जानता था कि अगर उसने चोरी डकैतीको मिटा नहीं डाला तो चोरी डकैती उसे तत्काल मिटा डालेगी। इसलिये दामोदरपुर पंचायतने देवी अहीरकी हत्याका अधिकसे अधिक लाभ लेना चाहा। उसकी लाश एक आमके पेड़मे लटका दी गयी ताकि सब आंखे खोल देखें डकैतीका क्या परिणाम होता है। दूसरी घटना हुई गायघाटमें। जगी अहीर नामक बदमाश डकैती करता हुआ वहां पकडा गया और मार डाला गया। इन घटनाओकी खबर सुनकर चोर डकैतोंके प्राण सूख गये और उन्हे अपना पेशा छोड़ना पडा। हां! गृहचोर कुछ दिन और जहां तहां दिलचस्प कहानियोके पात्र बनते रहे। रायकरहियामे मकईके बाल चुरानेके अपराधमें एक आदमीका सर मूड़ा गया, चेहरा चूने और कालिखसे पोता गया और फिर बाजे गाजेके साथ गदहेपर उसकी सवारी निकाली गई। ऐसी घटना एक जगह और हुई, फिर तो गोविन्दगंजके जनताराजमे चोरी डकैती जैसे कांड कहानीके रूपमे रह गये।

अब गोविन्दगंज मोतिहारीमे अड़ी हुई अंगरेजी सरकारको परेशान करने लगा। इसे सर करनेको गोरोकी फौजी गाडिया थानेभरमे दौडने लगीं जिससे पुलिसकी हिम्मत बढ़ी। उसने अरेराजके चार दूकानदारोको जिनसे उनका पुराना वैर था गिरफ्तार कर लिया, उद्देश्य था केवल अपनी मिटी हुई धाकको फिरसे जमाना। गिरफ्तार करनेवाले बडे दारोगा गयाप्रसाद सिहने एलान किया कि कल मैं "बादशाह" को भी गिरफ्तार करूगा। "बादशाह" सग्रामपुरमे थे। रातो-रात दो स्वयसेवक वहां खबर दे आये।

दूसरे दिन खूब तड़के छोटा दारोगा लालबाबू कनस्टबिलो दफादारों और चौकीदारोको लेकर कुछ देश द्रोहियोकी मददसे संग्रामपुर पहुँचे। ऋषिजी अपने जत्थेको लेकर मिडिल स्कूलमे ठहरे थे। लालबाबूने श्रीरामर्षिजीसे कहा कि मैं आपको गिरफ्तार करने आया हूं। आप सगी-साथी सहित तैयार होकर थाने चले। दारोगाके आनेकी खबर आसपासके गांवोमे तुरत ही फैल गई और सकड़ो किसान वहां आ जुटे। रामर्षिदेवने उनकी उत्तेजनाको शान्त किया और फिर पुलिससे कहा मै आप सबोको गिरफ्तार करता हूँ। दारोगाजी तुरत स्कूलकी कोठरीमे बन्द कर दिये गये; उनको गिरफ्तार होते देख चौकीदार वगैरह नौ दो ग्यारह हो गये और कनस्टेबिलोने पनी पगरियां सौंप दी और जनता-राजकी जयजयकार मनाई। कैदीके रूपमे साढ़े तीन घंटे दारोगा साहब बद रहे। उन्हे किसी तरहका शारीरिक कष्ट नही दिया गया। बहुत अनुनय विनय करनेपर पीछे छोड़ दिया गया पर उनकी गिरफ्तारीकी खबर ज्योही मोतिहारी पहुँची त्योही दो लारियोमे गोरे दो बजे संग्रामपुर पहुँचे। उस वक्त ऋषिदल एक मील दूर दूसरी गांवमे ठहरा हुआ था। टामियोने बहुत चक्कर काटे परन्तु ऋषिदलका पता न लगा सके। किसीने उनको पता नही बतलाया। फिर संग्रामपुरमे ठहरे हुए श्रीनागेश्वर दत्त पाठक और तीन स्वयंसेवकोको उनने गिरफ्तार कर लिया। टामियोने सबोके कपड़े छीनकर जला दिये। पर हां सिर्फ पहननेके लिये संग्रामपुरके बनियोंसे धोतियाँ लेकर दीं। वहाँ टामियोने कपड़े छीनकर जला देनेकी अपनी आदतसी बनाली थी।

इस घटनासे जनता हतोत्साह न हुई। ऋषिजीके प्रति उसकी श्रद्धा और बढ़ गई। घूमते हुए उनके दलमे जबतब दो-दो सौ स्वयंसेवक हो जाते और सबोके खाने-पीनेका प्रबंध ग्रामीण जनता बड़ी श्रद्धासे करती थी। गोरे दिनरात ट्रकोपर पटरी कुदाल वगैरह लादे ऋषिदलकी टोहमे दौड़ते-फिरते और गाँवकी चिड़िया भी नही बोलती कि ऋषिजी कहाँ है और उस गाँवमे कब आये थे।

मुजफ्फरपुर जिलेमे कटरा थानाने जिस जनताराजको कायम किया उसमे अगस्त क्रान्तिकी जितनी गर्मी थी उतनी सतर्कता भी। ४४ दिनो तक वहां जनताकी

मुजफ्फरपुर

ओरसे थाने भरकी व्यवस्था कांग्रेसके कार्यकर्त्ता अपने हाथ लिये रहे। जनताराजका हेडक्वार्टर था धनौरा जो कटराके नजदीकका ही एक प्रसिद्ध गाँव है। इसके सरंक्षणमे चार कैम्प थे जहाँ खास-खास ढगके काम होते थे। जजुआरामे जबतब कार्यकर्त्ताओका जमाव हुआ करता थानेके कार्यकर्त्ताओकी बैठकें भी होतीं और नेपाल प्रवासी कार्यकर्त्ताओसे इसी केन्द्रके द्वारा विचार विनमय हुआ करता।

दूसरा कैम्प था जांता जहांसे दो अखवार निकलते—छात्रोंके लिये "बिजली" और जनसाधारणके लिये "डंका"। अखवारके अलावा जांताका प्रकाशन केन्द्र तरह-तरहके परचे निकालता और उनके वितरणका प्रबन्ध करता। पहिला कैम्प जनताराजकी सी० आई० डी० का अड्डा था। अङ्गरेजी सरकारके अमले वहां क्या कर रहे हैं और कटरा थानाकी जनता अपनी इस नई व्यवस्थाको लेकर क्या संकल्प विकल्प कर रही है इसकी पूरी जानकारी रखनेकी कोशिश पहिला कैम्पकी रहती। चौथा कैम्प था महिसवारामें। यह कैम्प सब जगहकी खबर रखता और कार्यकर्त्ताओंको दिया करता। इस कैम्पके जरिये ही कार्यकर्त्ता एक दूसरेसे सम्बन्ध स्थापित करते। हेडक्वार्टर धनौराका बोझ सबसे भारी था। रुपये पैसेका प्रबन्ध करता और जनताराजके लिये सेना तथा शस्त्रास्त्रोंका सग्रह करना इसका ही काम था। यहां बराबर तीससे पचास तक स्वयंसेवक रहते जो लाठी, भाले, गडासे, बन्दूक और पिस्तौलका अभ्यास किया करते। उनका विश्वास था कि इन शस्त्रास्त्रोंको लेकर ही सरकारकी देश भरमें बिखरी हुई ताकतका मुकाबला कर लेंगे। स्वयसेवक गूलरके तख्तेका ढाल रखते। उनका विश्वास था कि अङ्गरेजोंकी गोलीको यह ढाल रोक सकेगा। इनलोगोंको अपनी ताकतपर विश्वास करनेका एक और कारण था। बाढ़ आई हुई थी। कटरा और धनौरा चारो ओर पानीसे घिरकर टापू बन रहे थे और कार्यकर्त्ताओंका खयाल था कि पानी हेलकर आते हुए दुश्मनोंसे वे बीस ही साबित होंगे उन्नीस नहीं।

जनता राजकी हिफाजतका इन्तजाम करके कार्यकर्त्ताओंने थाने भरका फिर एकबार सगठन किया। गांव-गावमें पंचायतकी स्थापना की। जो लोग चोरी डकैतीके लिये बदनाम थे उन्हे पंचायतमें शामिल किया और देखा गया कि उन सबोंने जवाबदेही निभाई। ४४ दिनोंके अरसेमें कहीं भी चोरी डकैती नही हुई। नये झगड़ेकी क्या बात पचायतने पुराने-पुराने झगड़े भी लिये और जो फैसला हुआ उसे दोनों पक्षोंने माना और दोनो एक दूसरेसे मिले। बसुआ, लखनपुर और जांतामें जगह-जमीनके पुराने झगडे चले आ रहे थे। पचायतने उन झगडोंको भी मिटा दिया।

जनता राजका बराबर खयाल रहा कि मुनासिब कीमतपर लोगोंको चीजें मिल जाया करें। जो चीजें रखकर नहीं निकालते उन्हें चीजोंको निकालना पड़ता। सी० आई० डी० ऐसे माल चोरोंपर कडी नजर रखते, मुनाफाखोर भी अपने हाथ पैर समेटे रखनेमें ही अपना कल्याण देखते। चेनीबाद और अमनौरके दूकानदारोंकी शिकायत हुई कि वे जनतासे ज्यादा पैसा लेते हैं। शिकायत सही पायी

गयी। बस, उनकी दूकानपर धरना बैठा दिया गया फिर वे सीधे हो गये।

अंगरेजोका थाना जो बरबाद हो गया था उसे भी जनता राजने ४४ दिनोतक आबाद रखा। काग्रेस कैम्प थानामें ही रहता। स्वयंसेवक सुबह शाम झंडा प्रार्थना करते, कवायद करते और प्रभातफेरी तथा प्रदर्शनके लिये टोलियां निकाला करते।

२७ सितम्बरको सी० आई० डी० से खबर मिली कि अंग्रेजी सरकारकी फौज चारो तरफसे बढ़ती हुयी जनताराजको पामाल करने आ रही है। फौजमें हाथी हैं, घोड़े है, और कितने पैदल है हरबे हथियारसे लदे हुए और आगे पीछे कई टैंक हैं। तुरत कार्यकर्त्ता इकट्ठे हुये, सोचा विचारा और फैसला किया कि जनता राजकी सेनाको थाना खाली ही कर देना चाहिये। बस एक तरफसे थानेके हातेमे फौज आई और दूसरी तरफसे कार्यकर्त्ताओका दल गावोकी ओर चला गया। फौजने कटरा गांवमें अपना प्रदर्शन किया और गांवसे सामुहिक जुर्माना वसूल करके चली गयी। थानेमें पुलिस और कुछ देशी फौजोको बिठा गयी।

जनताराजका दूसरा उदाहरण मिला हाजीपुर सबडिविजनके महनार थानेमे। १८ अगस्तको श्रीमदन झाके नेतृत्वमे श्रीगंगा प्रसाद गुप्त, रामचन्द्र प्रसाद सिंह और मिया हमीदने थानेका चार्ज दारोगासे पूरा-पूरा ले लिया और थानेकी व्यवस्थामे लगे। थाने भरमें एलान कर दिया गया कि अंग्रेजी राज उठ गया है और कांग्रेस

महनार राज कायम हुआ है। कांग्रेस राजकी तरफसे रेल, सडक, हाट, बाजार सभीका नियंत्रण होने लगा। टमटमवाले, रिक्सावाले सबोंने इसका नियंत्रण मान लिया। दारोगा और छोटे दारोगा सपरिवार वहां रह रहे थे। एककी पत्नी गर्भवती भी थी। मदन झाने उनकी सुख सुविधाका प्रबन्ध कर दिया था। तो भी उन लोगोंकी इच्छा हुई कि हम महनार छोड महुआ चले जायं। उनने लाख सर पटका पर उनको महुआ जानेकी सवारी नहीं मिली तब वे श्री मदन झाके शरणापन्न हुए। श्रीमदन झाने तुरत चार टमटम और दो बैलगाड़ियोका इन्तजाम कर दिया। और स्वयसेवकोको ताकीद कर दी कि पुलिसवर्गको महुआ जानेमे कोई असुविधा न हो।

कार्यकर्त्ताओने थानेभरको पचायत कायम करके सगठित किया। पचायतके काम थे लडाई झगड़ेको मिटाना गांवकी हिफाजत करना और बाजार निर्खपर आंख रखना। पंचायतने अपनी जवाबदेही निभानेके लिये भिन्न भिन्न विभाग खोले। इन विभागोकी सुचेष्टाके फलस्वरूप जब

तक जनताराज कायम रहा यानी १८ अगस्तसे ३ सितम्बर तक; कहीं झगड़ा तकरार नहीं हुआ और न लूटपाट हुई। चारो ओर शान्ति रही। हां! शुरू-शुरूमें कुछ लोगोंका खयाल रहा कि अंगरेजी राज उठ गया है अब हमलोग मानमाने ढगमे अपनी जरूरत पूरी कर सकते है। इसलिये जहा-तहा हलकी चोरी हुई, लूट भी हुई। श्रीमदन झा कहते हैं—"जहा-जहा चोरी और लूट हुई वहा-वहा जाकर हमलोगोंने तहकीकात की और माल बरामद करवाकर मालवालेको दिया। करनौतीमें सरमस्तपुर हाट है। वहा एक बनियेका ४००) रु० का माल लूटा गया। ज्योंही थाना काग्रेस कमिटीके सभापति श्रीविश्वनाथ प्रसाद सिहको इसका पता लगा वे वहा गये और बनियेको, उनकी मुस्तैदीसे, सारा माल वापस मिल गया। एक बनिया देसरीसे सामान खरीदकर लौट रहा था। देसरीके लोगोंने ही उसके ७०) रु० के माल लूट लिये, मै श्रीविन्ध्यवासिनी प्रसादजीके साथ वहा गया। हमलोग वहा बनियेका १४) रु० का सामान ही बरामद करवा सके जो उसका मिला। शेषके लिये हमने उसे माल हडप जानेवालोंसे ही ५६) रु० नकद दिलवाये। महनार पेठियाके नजदीक एक का १००) रु० का सामान लुट गया। मेरी गिरफ्तारीके बाद उसे १००) रु० मिल गये। काग्रेसकी इन कार्रवाइयोंके कारण लुटेरोंपर काग्रेसकी धाक बैठ गई। चारो ओर फैल गई—"कागरेस लूट न होय देई छई, लूटल माल घुमवा देई छई"। बस, लूटपाट बन्द हो गई और बन्द रही।

"जनताराजको सुरक्षित रखनेके खयालसे २८ अगस्तमे महनार थानेमें तोड़-फोड शुरू हुआ। मैंने इसमे दिलचस्पी नहीं दिखलाई और न ऐसे-ऐसे कामोंकी ओर ध्यान देनेकी फुरसत ही मुझको थी। मैं अपने ऑफिसको केन्द्र मान कई मील निकल जाता और जाते-आते लोगोंको समझाया करता कि अंगरेजी राज उठ गया; अब न उसकी पुलिस है और न फौज; काग्रेसी राज है जिसको न पुलिस है और न फौज; इसके सब कुछ तो आपलोग हैं; आप ही काग्रेसकी पुलिस है आप ही काग्रेसकी फौज हैं। अपनी हिफाजत कीजिये और अड़ोसी-पड़ोसीके जानमालकी जवाबदेही लीजिये। अपने प्रचार कार्यमें मुझको श्रीविन्ध्यवासिनी प्रसाद सिंह और चर्खासघके श्रीचन्द्रदीप नारायण वर्माका सहयोग बराबर मिला करता।

"मेरा कायदा था दिनभर घूमना फिरना और रातको अपने ऑफिसमें जरूर

रहना ताकि जनता जरूरत पड़नेपर मुझसे तुरत और सुविधापूर्वक मिल सके। अपने कायदेके मुताबिक ३ सितम्बरको मै अपने आफिस वापस आ रहा था। मरौवनपुर पहुँचा तब लोगोने कहा, फौज आ गई। चार-पांच रोजसे उसके आनेकी गरम अफवाह थी। मैंने सुन लिया और आगे डेग बढ़ाई। जिस आम सड़कसे चलता था उस सड़कसे ही चलकर सीताराम साहु हलवाईकी दूकानके सामने आया। लोग घबराये हुए थे। मैंने देखा—दूकानमें छोटे और बड़े दारोगा भोजनकर रहे हैं। अपनी रीतिके अनुसार उनसे कुशल मंगल पूछा और अनुकूल उत्तर पाकर आगे बढ़ा ही था कि दारोगाने कहा—ठहरिये। फिर मैं गिरफ्तार कर लिया गया।"

इनकी गिरफ्तारीकी खबर पाकर और कार्यकर्त्ता गाँवोंमें घुस गये और जनता राजका अन्त हुआ।

सीतामढ़ी सबडिविजनके पुपरी थानाने जन व्यवस्थाकी मजबूत बुनियाद डाली थी। १९ अगस्तको खुद ही इधर उधर कागजात जमा कर श्री अर्जुन सिह

पुपरी थाना दारोगा अपना थाना खाली कर गये थे और उनका भार जन-सेवकके रूपमे श्री नन्दकिशोर सिहने लिया था। रचनात्मक कार्यक्रमको सफल बनानेके लिये श्री लाखो चौधरीको कहा गया था और बाजारको व्यवस्थित रखनेकी जवाबदेही श्री रामपरीक्षण ठाकुर और श्री मोहित ठाकुरको सौपी गई थी।

थानेका भार सरपर आते ही कार्यकर्त्ताओके आगे सबसे पहले बाजारकी समस्या आई। गाड़ी बन्द हो जानेके कारण नमक-तेल वगैरहको दूकानदारोने मनमाने तौरपर बेचना शुरू कर दिया था। कुछ दूकानदारोने तो इनका बेचना ही बन्द कर दिया था। लोग बड़ी दिक्कतमे पड़ गये थे। उनकी दिक्कतको दूर करनेके लिये थाना-व्यवस्था-समितिने सभी चीजोका स्टॉक ले लिया, उनकी कीमत ठीक कर दी और उनके उचित वितरणका प्रबन्ध कर दिया। २० अगस्तको बाबा नरसिह दास आये और थाना संचालनके सम्बन्धमें कार्यकर्त्ताओको समझाया बुझाया।

थानेका एक केन्द्र खड़का था जिसके संचालक थे श्री देवेन्द्र झा। आपने खड़का, सामर, नयाटोल आदि ग्रामोमें पंचायत स्थापित की थी और रक्षादलका सगठन किया था। इस बीचके असेसर सूरत साहूने और दफादार महम्मद हनीफने अपने अपने पदको छोड़ जनताको अपनी सेवा अर्पित की थी। इनकी

प्ररणा पाकर कई चौकीदारोंने इस्तोफे दे दिये थे। बाबा नरसिंह दासने केन्द्रका भी निरीक्षण किया था और कार्यकर्त्ताओंको खूब उत्साहित किया था। फलस्वरूप बीट न० २ से १२ तकके ४२ गावोंमें पंचायतकी स्थापना हुई।

पुपरी थानाकी जन-व्यवस्था अपनी ताकत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ा ही रही थी कि २४ अगस्तको हरदीप-हत्याकाण्ड हुआ जिसकी प्रतिक्रियाने पुपरी जन-व्यवस्थाकी कमर तोड़ दी।

दरभंगा

दरभंगा सदरके बिरौल थानाने जन-व्यवस्था देखी रसियारी केन्द्रमे। इस इलाकेसे १० अगस्तसे ४ सितम्बरतक ब्रिटिश राज्य उठा ही रहा।

श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह लिखते हैं—'१९३८ से बिरौल बहेड़ा थानाकी फाड़ी (Outpost) हुआ जहा एक दारोगा सदल बल रहता था। १९४२ के आन्दोलनके बाद अब यह स्वतत्र थाना हो गया है। यह इलाका जिला भरमें पिछड़ा हुआ था; परन्तु १९४२ के आन्दोलनमें यह थाना जिलामें किसीसे पीछे नहीं रहा। यहां कागरेसी और सरकारी ताकतोंमें कई दफा भिड़न्त हुई, केवल हत्या नहीं। जब दूसरे दूसरे थाने आतंकित थे, उस समय भी इस थानेमें कागरेस कर्मी जत्था बॉधकर थानेमें घूमते थे और लोगोंके साहसको बढ़ाते थे। यही कारण है कि जहा सरकारकी ओरसे दरभगा जिलामें कांगरेस कर्मियोंके घर और आश्रयका जलाना अगस्तमें ही खत्म हो गया वहॉ सेलिस्बरीको बिरौल थानेमें घर जलानेके लिये १५ सितम्बरको भी आना पड़ा। इसके पहले बिरौलके दारोगा और जमादार सुपौलसे बाहर निकलनेका साहस नहीं करते थे। रातमे डरके मारे चार चार बार सोनेकी जगह बदलते थे। दारोगा कहा करता था कि यहॉ इन्कलाब जमीन फोड़ कर निकलता है।" इसी थानेमें १६ अगस्तको श्री लक्ष्मण झाकी प्रेरणासे रसियारी राजभूपर जनताने दखल जमाया और वहाँ जन-व्यवस्थाकी केन्द्रीय कमिटी सगठित हुई। प्रत्येक गावमें पचायती बोर्ड बनाया गया और पचीस पचीस स्वयसेवकोंका एक एक जत्था उस गावकी रक्षाके लिये तैनात कर दिया गया। हर-एक गावसे दो दो स्वयसेवक केन्द्रमें भेजे गये। इन पचायती बोर्डों और स्वयसेवकके जत्थोंका हेड ऑफिस भी रसियारी केन्द्रमें ही था। केन्द्रीय कमिटी इन सबोंके ऊपर थी और इस ढगसे व्यवस्था करती थी कि सभी काम सिलसिलेसे होते रहे और सभी संस्थाओंका परस्पर सहयोग रहा।

इस इलाकेमे हिन्दू मुसलमानोसे दंगा करवानेका सरकारकी ओरसे भगीरथ प्रयत्न हुआ, जहा तहां लूटमे पुलिस काफी मुसलमानोको शामिल कर लेती रही पर केन्द्रीय कमिटीके प्रचारने जनताको क्रान्ति-पथसे विचलित होने नहीं दिया। न चोरी डकैती हुई और न आपसी दंगे-फसाद ही। इस इलाकेके गलमा, पाली, रसियारी और तुमौल जाग्रत स्थान थे जो सरकारी भेदियोंके हथकंडोकी पर्वाह न करके पीड़ित क्षेत्रोके कितने कार्यकर्त्ताओंको आश्रय देते रहे।

बिरौलमे दारोगा रहता था पर दबा हुआ। एक बार जमादारकी एक स्वयंसेवकसे बमचख हो गई। स्वयंसेवकने कहा—हम जाते है विन्ध्येश्वरी बाबूके यहाँ। जमादार घबराया और उस स्वयंसेवकको मना देनेके लिये सुपौलके कुछ सज्जनोंकी खुशामद करने लगा।

सिगिया थानेमे भी १८ अगस्तसे १० नवम्बर तक जनताकी व्यवस्थासे ही लोगोंके जान मालकी हिफाजत होती रही और उत्साहका वातावरण बना रहा। पिछले ही दिन थानेमे भीषण काण्ड हुआ था। सामान जले थे, लूट हुई थी और हत्या भी। तौभी कार्यकर्त्ता घबड़ाये नहीं थे; दस बजे रातको थानापर दखल किया था। आज उनने एक सार्वजनिक सभा की और सर्वसम्मतिसे थाना सुरक्षा कमिटी कायम हुई। गाव गांवमें पहरेका इन्तजाम किया गया और पंचायत सगठित हुई। ग्राम-पचोको सावधान कर दिया गया कि किसी भी विवादको सुलझानेसे बाज न आवे; विशेष परिस्थितिमें ही किसी मामलेको थाना पचायतमें आने दे; साथ ही थाना पचायतमे चुने चुने लोगोंको रक्खा ताकि थाने भरका विश्वास उसपर जमे। रचनात्मक कार्य समितिकी भी स्थापना हुई जिसमे वे लोग थे जो शुरूसे चर्खेका काम करते थे। चर्खा चलानेका काम और जोर पकड़े और नियमित तथा नियंत्रित रूपसे होवे—यही रचनात्मक कार्य समितिका उद्देश्य था।

पहरेकी जवाबदेही जिन नवयुवकोने ली थी उनकी कार्य तत्परताके कारण जगह जगह नियमित रूपसे प्रभातफेरी होने लगी, लोग क्रान्तिके नारे लगाने लगे; आजादीके गाने गाने लगे। सबसे महत्वकी बात तो यह रही जनता आमतौरसे हर बातोमें साथ देती रही।

थाना सुरक्षा कमिटीने डाकका भी इन्तजाम किया था और खास खास-आदमियोको खबर पहुँचानेका काम सौप रक्खा था।

२० अगस्तको सुरक्षा-कमिटीको खबर मिली कि गोरे सिगिया आ रहे है। तुरत

कोल्हुआघाट और पधारीके पुलको तोडनेकी राय हुई। कोल्हुआका पुल तोड़ डाला गया और पधारीका पुल पहलेसे ही टूटा पाया गया। फिर कुछ लोग नकाब डाल कर अस्पतालमें घुस गये और कम्पाउण्डरसे रजिस्टर छीनकर जला दिया। उस रजिस्टरमें उनलोगोंके नाम दर्ज थे जिनको छर्रे लगे थे अस्पतालमें चिकित्सा करानी पडी थी। कम्पाउण्डर डर गया और भाग गया। दारोगा और कनस्टबिल भी जो श्रीकुलानन्द सिंहकी तीमारदारीसे अब चल फिर सकते थे अस्पताल छोड़ श्रीनथुनी सिंह दूकानदारके यहा चले गये। बहांसे दूसरे दिन रातको श्रीसूर्यकान्त झा उर्फ बेनी बाबू कुछ साथियोंके साथ आये और दोनोंको अपने यहा ले गये। श्रीकुलानन्द सिंहको इसका दु:ख रहा। उनने घायल दारोगाको घातक मारसे बचाया था; दूध पिलाया था, कपडे दे उसका तन ढका था और काफी खिदमत की थी। दारोगा उनसे बात तक न करेंगे और चल देंगे उनको ऐसी आशा न थी।

२३ अगस्तको १ बजे दिनमें एटकिन्स साहबके नेतृत्वमें गोरे सिंगिया आये, गावमें हलचल मच गई। श्रीरामेश्वर सिंह और श्रीशत्रुघ्न सिंह जैसे प्रमुख व्यक्ति गॉव छोड भाग चुके थे, इसलिये गोरोंके सामने डटनेका खयाल भी किसीको नहीं हुआ। गोरोंने सडकके अगल बगलके सत्रह सज्जनोंके घर जलाये। प० राधाकान्त झा वैद्य, मोसम्मात सोहाग वती, राघे साहु, जीवछ झा, भूल्ल कानू और साधु रामेश्वर सिंहके नाम उल्लेखनीय हैं। गोरोंने एक हत्या भी की। जब श्रीकुलानन्द सिंहका घर घेरा गया तब उनके लडके रामगुणी सिंहकी एक टामीसे भिडन्त हो गई। उसे झटक पटककर रामगुणी सिंह भागे तो देखा सामने दूसरा टामी राइफल ताने है। उसकी राइफलमें झटका दे वह फिर भागे। तुरत टामीने गोली चलाई पर वह बाल-बाल बच गये। टॉमी दौडते हुये श्रीकुलानन्दके घरमें घुस गये और कुलानन्दजीको गोली दाग दी। वह तत्काल शहीद हो गये। इस हत्याके बाद टॉमी वहाँ नहीं ठहरे। श्री रामेश्वर प्रसाद साधुके घरमें आग लगा फौरन रफूचक्कर हो गये। फिर ११ सितम्बर तक सरकारका कोई इस थानेमें झाँकने न आया। सब जगह शान्ति रही, व्यवस्था कायम रही और आपसी लडाई-झगडा २७ अगस्तसे ११ सितम्बर तक इस थानेमें हुआ ही नहीं।

मुंगेर जिलामें सूर्यगढ़ा, चोथम और तारापुर थानेकी जनताको अपनी व्यवस्था आप करनेका सुअवसर मिला।

१३ अगस्तको ही सरकारी संस्थाओंपर कब्जा करके कार्यकर्त्ताओंने तिलक

मैदानमें एक विराट सभा बोलाई जिसमें घोषणा की गई कि आजसे सूर्यगढ़ा

सूर्यगढ़ा

थानामें पंचायती राज्य कायम कर दिया गया और जनतासे अपील की गई कि आप अपने गाँवमें जल्दसे जल्द पंचायती व्यवस्था स्थापित करनेमें कार्यकर्त्ताओंको पूरा-पूरा सहयोग दें। थाना पंचायतका तुरत संगठन कर लिया गया।

थाना पंचायतने गॉव-गॉवमे पहरेका इन्तजाम करवाया। थानेपर कब्जा हो चुका था पर दारोगाजी तीन दिनों तक थानेमें ही रहे। तबतकके लिये उनके जानमालकी हिफाजतकी जवाबदेही थाना पंचायतने ली और निभाई। थानेके चौकीदारोने अपनी वर्दियॉ थानामें जमाकर दीं जो जला दी गई। अब वे गान्धी-टोपी पहनने लगे और थानामे गान्धी-टोपी पहनकर ही परेड करने आने लगे। उनके सहयोगसे परेडका काम अच्छी तरह होने लगा। सौदागरो और मुसाफिरोंकी नावोंपर भी पहरा पड़ने लगा।

पॉच आदमियोंका थाना न्यायालय कायम किया गया, जो रोज इजलास करता। जो मुकदमा ग्राम पंचायत नहीं तय कर पाता सो यहाँ आता। और कई मुकदमे आये जिनमे अपराधियोने अपना कसूर मान लिया। एक भी घटना ऐसी नहीं हुई जब कि इसका फैसला सर्व मान्य नहीं हुआ।

थाना पंचायतने जेल भी बनाया था जिसमे अपराधी दंड भोगनेके लिये रख दिये जाते। जेलपर हमेशा पहरा रहता। कई अपराधियोंको जेल दिया भी गया जिनमें अधिकांशने जुर्माना देकर मुक्ति पा ली और सुधरनेका पक्का वादा किया। थाना पंचायतने अन्नकी समस्याको सुलझानेकी काफी चेष्टा की। बनियो वा गृहस्थोंको अन्न चुरा रखनेसे रोका। बाजारको नियंत्रणमे रखा और अन्न रखनेवालोको आदेश दिया कि वे भुक्खड़ोंको अन्न बॉटें। डरसे वा प्रेमसे, जैसे भी हो, पर अमीरोने, जितना कहा गया, उतना अन्न भुक्खड़ोंको दिया। यह बड़ा कारण हुआ जो १३ अगस्तसे २६ अगस्त तक सूर्यगढ़ामे सुख शान्ति तथा संतोषकी झलक पायी गयी और जनताने पंचायती राज्यकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

१५ अगस्तसे जब सरकारने थाना खालीकर दिया २८ अगस्ततक थानामे कॉग्रेसका ही बोल बाला रहा। कार्यकर्त्ताओंने वहाँ जनता राज कायम

तारापुर

किया जिसकी विकट समस्याओंको सुलझानेकी उनने सच्ची

कोशिश की। जबतक उनने जनता राज चलाया उन्हें सिद्धान्त और व्यवहार के सघर्षका जैसा सामना करना पडा—जैसे जसे सनसनीखेज घटनाओंका सूत्रधार बनाना पड़ा, उससे अगस्त क्रान्तिके इतिहासमें तारापुरका स्थान अमिट हो गया है।

पुलिसके भागते ही कार्यकर्त्ताओंने तारापुरमें एक व्यवस्था समितिका निर्माण किया जिसको कई काम करने पडते। चौकीदारोंने सरकारी काम छोडकर जनता राजको अपनी सेवा दी थी। समिति उन्हें हिदायत देती जिसके मुताबिक वे गॉव गॉवकी रिपोर्ट लाकर कॉग्रेस आफिसको दिया करते। कार्यकर्त्ताओंने गॉव गॉव घूमकर जनताकी रक्षाके लिये सेवादल सगठित किया था। फिर भी समितिको केन्द्रमे स्वयसेवक रखने पड़ते ताकि जरूरत पडनेपर केन्द्रसे एक स्वयसेवक दल जाय और किसी गॉवमे शान्ति स्थापित कर आवे। गॉव गॉव पचायतें थीं पर समितिने एक विशेष पचायत भी स्थापित कर रखी थी—जो सबकी शिरमौर थी और जिसका फ़ैसला सर्वमान्य होता था। व्यवस्था समितिने जेलका भी इन्तजाम कर रक्खा था। विद्यार्थी तो क्रान्तिकारी बन गये थे। इसलिये असरगज हाइ स्कूल क्रान्तिकारियोंका अड्डा बन गया था। वहीं जेल था और केन्द्रीय स्वयसेवक शिविर भी।

तारापुर जनताराजको धनका अभाव न था। एक असरगज बाजारने जब चंदा देना शुरू किया तो इतनी रकम आ गई कि जरूरतसे ज्यादा समझी गई और काफी चंदा देनेवालोंसे कहा गया कि अभी कुछ मत दीजिये; जैसे जैसे जरूरत होगी दिया कीजियेगा।

तारापुरकी जनता जमींदारीकी ज्यादतियों और चोर डकैतके उपद्रवोंसे परेशान थी। स्वभावत. कार्यकर्त्ताओंको इनकी परेशानी दूर करनेका उपाय करना पड़ा। पर जनता जिस हद तक जिस उग्रतासे जाना चाहती थी उस हदतक उस उग्रतासे जाना इनके लिये असंभव था। फिर भी वे जनताको सतुष्ट रख सके और जनता इन्हें सदैव सहयोग देती रही।

अगरेजी राजके उठते ही राज बनैलीके उत्पडनके विरुद्ध जनता खड्गहस्त हुई। कुछ कार्यकर्त्ताओंको साथ देना पडा। देगॉव कचहरी जला दी गई जिसके कागज पत्र नष्ट कर दिये गये। बादको और भी कचहरियाँ जलीं। तहसीलदार और पटवारीने विरोध नहीं किया बल्कि उनका रुख हमदर्द जैसा ही रहा। एक तो वह

जमाना ही ऐसा था कि जमींदार हाथ पैर समेट बैठे थे और उसपर ऐसे-ऐसे कामोंको करके कार्यकर्त्ताओंने उनकी सत्ताको नगण्य बना दिया। फिर कार्यकर्त्ताओंने थाने भरकी कालाली भी बन्द कर दी और सग्रामपुरका डाक-बगला जला दिया।

कई गाँवके लोग धनियोंको लूटना चाहते थे। स्वयंसेवक दलने वहाँ जाकर परिस्थिति संभाली। जनता राजके व्यवस्थापकोंने ऐलान कर दिया था कि आवश्यकता हुई तो चोरी डकैतीको रोकनेमे बलका भी प्रयोग किया जायगा। फलस्वरूप हर जगह शान्ति स्थापनामें कार्यकर्त्ताओंको सफलता मिली। पर एक जगह एक भीषण काण्ड हो ही गया।

माधोडीहमे कई बदमाश रहते थे मन मारे। पर सग्रामपुरसे एक घटना घटी। वेलहर थानेके कुछ कार्यकर्त्ता वहाँ कचहरी जलाने गये और बदमाशोंसे खूब पीटे गये। सबोंको प्राण लेकर और घाव भी भागना पड़ा। माधोडीहके बदमाशोंको हिम्मत हुई। उनको विश्वास हुआ कि मुठभेड़ होनेपर वे भी तारापुरके कार्यकर्त्ताओंकी दुर्गति कर देंगे। फिर वे सबके सब अपने पेशेमे लग गये। वहाँका सेवादल उन्हें सर न कर सका और तारापुर खबर भेजी। इधर बदमाशोंने एक बनियाको लूट लिया और फिर एक गृहस्थको नोटिस दी कि तुम्हें अमुक दिन लूटा जायगा। बस, सदल-बल थाना व्यवस्थापक माधोडीह पहुँचे। वहाँ उनने पचायत बुलायी और एक बदमाशको पकड़ा जिसे इतना पीटा कि बेचारेको अपने सभी साथियोंका नाम उगलना पड़ा। उसकी मददसे कार्यकर्त्ताओंने और १९ बदमाशोंको गिरफ्तार किया जिनमेंसे हरेकको इतना पीटा कि सबोंको कहना पड़ा, बनियेकी चीजें कहाँ-कहा है? फिर तो सारा माल बरामद हो गया। सभी बदमाश विशेष पचायतमे हाजिर किये गये। जनता भी बड़ी तादादमे आई हुई थी। पूरी जानकारी हो जानेके बाद सजा तजबीज होने लगी। अङ्गरेजी राज तो था नहीं, इसलिये उसके कायदे कानूनकी क्या चर्चा हो सकती थी? भारतवर्षमें चोर डकैतोंके हाथ काट लिये जाते थे, कामान्धोंकी आँखे फोड़ दी जाती थीं और इन बदमाशोंके खिलाफ सब तरहके जुर्म साबित हो चुके थे। इसलिये एक व्यवस्थापककी ओरसे प्रस्ताव हुआ कि अधिकसे अधिक एक आँख फोड़ दी जाय और एक हाथ काट दिया जाय। पर माधोडीहकी जनताने कहा कि जब तक दोनो आँखे न फोड़ी जायगी और दोनो हाथ न काट दिये जायेगे तब तक हमलोगोंका न धन सुरक्षित रहेगा और न इज्जत बचेगी। व्यवस्थापकों और जनतामें मतभेद हो गया। फिर

स्वयंसेवकोंसे पूछा गया। उनने अपनी राय व्यवस्थापकोंके पक्षमें दी। कहा कि जान बरबाद कर देनेके पक्षमें हमलोग नहीं हैं। हम इतना ही चाहते हैं कि बदमाशोंको डकैतीके नाक़ाबिल बना दिया जाय। फलस्वरूप विशेष पचायतका फैसला हुआ कि उन्नीस बदमाशोंमें जो सरदार है उसकी दोनों आँखें फोड दी जाय और जो कमार है उसका दाहिना पजा काट लिया जाय। चार बदमाशोंमेंसे हरेककी एक आँख फोड दी जाय और दाहिना पजा काट दिया जाय, पाँच गरम लोहेसे दाग दिये जाय और आठको सिर्फ बेंत मारे जाये। पर बदमाशोंको सजा सुनाई नहीं गई। स्वयंसेवकोंको आदेश मिला कि सबोंको नदी किनारे ले चलो।

साढ़े पाँच बजेके करीब सभी व्यवस्थापक, स्वयंसेवक और बदमाश नदी किनारे पहुँचे। बदमाश तो चलने-फिरनेसे लाचार हो रहे थे। कितनोंको तो शब्दश. ढो ले चलना पड़ा था। वहा विशेष पचायतके मुखिया हरेकको सजा सुनाते गये और दड दिलाते गये। एक बधे हुए बदमाशको पटककर छातीपर चढ़ बैठा, दूसरेने उसका सर पकड़ा और तीसरेने एक बड़े भालेसे उसकी आँख फोडी। उसी तीसरेने सबकी आँखे फोड़ीं पर पजा काट फेंकनेका काम दूसरेने किया और दागनेका काम किसी तीसरेने। सबके सब बदमाश अचेत वहीं गिर पडे। सजा देखनेके लिये लगभग तीन सौ लोग आये थे। पर सजाका दृश्य सब देख न सके। कितने भागे और कई बेहोशसे हो गये। दो-एक व्यवस्थापक भी वहाँ मौजूद न रह सके। आँखे फोडनेमें जितना जोश दिखलाया गया उतना हुनर नहीं। पीछे चलकर प्राय सबकी आँखे अच्छी हो गईं। सिर्फ एककी आँख ही नहीं जान भी चली गई।

इस घटनाकी खबर जगलकी आगकी तरह चारो ओर फैल गई। चोर डकैत सन्न रह गये, और मुंगेरमें ही नहीं, भागलपुर और सथाल परगनामें भी लबे अरसे तक जरनैली चोर डकैतोंके कलेजेमें इतनी कूवत न आई कि जनताको लूटे। तारापुरकी जनता तो अमन-चैनसे रहने लगी जिससे कार्यकर्त्ताओंको सघटित होनेका खूब मौका मिला। फलस्वरूप फौजियोंका आतक भी उनका सघटन तोड़ न सका।

भागलपुर

भागलपुरका बाँका सबडिविजन जिन सब बातोंके लिये अगस्त-क्रान्तिके इतिहासमें अपना निराला स्थान रखता है उनमें एक यहाँके जनता राजकी रीतिनीति भी है।

१६ अगस्तको अमरपुर थानेके शासनकी बागडोर 'राष्ट्रीय सरकार'के अफसरोंके हाथमें आ गई और १४ सितम्बर तक रही। अफसरोंने थानेको तीन हिस्सोंमे बाँट दिया और हरेक हिस्सेमें एक एक कैम्प खोला जिसपर अपने-अपने हिस्सेकी सुव्यवस्थाकी जवाबदेही रही। एक कैम्प था भतसिलामें, दूसरा अमरपुरमें और तीसरा सभूगंजमे। अमरपुर कैम्प प्रधान था और संयोजकका काम करता था। हरेक कैम्पमे कमसे कम दो दर्जन 'सैनिक' रहा करते जो राष्ट्रीय सरकारके आदेशके अनुसार चलते।

राष्ट्रीय सरकारके दो विभाग थे—ध्वंसात्मक तथा रचनात्मक।

ध्वंसात्मक विभागके काम थे सरकारी इमारतो, डाकघरो और कलालियोंको बरबाद कर देना और राजबनैलीकी कचहरियोको फूंक डालना। राजबनैलीपर लोग क्रुद्ध थे और उसके रिसीवरने जोर-जुल्म करके और फिर कचहरियोंको फौजका अड्डा बना करके प्रजाकी क्रोधाग्निमें घीकी आहुति डाल दी थी। रचनात्मक विभागके काम थे ग्राम सगठन करना, हर गांवमे पंचायत कायम करना और हर गांवमे पहरा-दल संगठित करना।

२९ अगस्तको दस बजे रातको अमरपुर थानेपर टॉमियोकी चढ़ाई हुई। साथमें बांकाके दारोगा नसीर मिया और हरिहर सिह वगैरह थे। मकदुमा पहुँचकर वे सभी मिडूल स्कूलपर चढ़ दौड़े किसीको न पाकर उनने रसोइयाको पकड़ा और खूब पीटा। श्री रमचू दरवेको पुल ठीक कर देनेके लिये कहा और इनकार करनेपर उसने बन्दूकके कुन्दोसे रमचू दरवेको इतना मारा कि वे बर्दाश्त न कर सके और चल बसे। फिर उनकी लॉरी कॉग्रेस आफिसके सामने आयी और श्री हरिहर सिह दारोगाने कहा—यह काग्रेस आफिस है; इसे जला दो। पर उतनी रातको लॉरीसे उतर कर वहॉ तक जानेका साहस कोई दिखला न सका।

दूसरे दिन वह टॉमी-दल चपरी पहुँचा। श्री सौखी चौधरीके घरको लूट कर जला दिया—और श्री महावार चौधरीके घरको जलाकर खाक कर दिया। फिर उस दलका धावा महातापर हुआ जहॉ उसने दारोगा महतो, छोटे महतो, बीसो महतो, नित्या महतो और छबोला महतोके घर जला दिये। फिर चोरवेकी बारी आई। श्री रामेश्वर वैद्यका घर जलाया गया और उनकी स्त्रीके हाथसे टॉमियोने जेवर छीन लिया।

फिर सबके सब बांका लौट गये। पुलिसको वहॉ ठहरनेकी हिम्मत नहीं हुई।

टॉमियोंकी आग लगी और लूट राष्ट्रीय सरकारसे अंगरेजी सरकारके कायदे कानून नहीं मनवा सकी। ९ सितम्बरको राष्ट्रीय सरकार बड़ी भीड लेकर गई। थानेको पूराका पूरा जला दिया और फिर उसकी दीवारें ढाहकर धूलमें मिला दी। इतना ही नहीं, राष्ट्रीय सरकारका ध्वसात्मक विभाग जग उठा, कुण्डा, नोनिपरी मकटुमाके पुलको उसने तोड़ दिया और कई जगहोंपर सड़कें भी काट दीं।

संभूगज कैम्पने सभूगज और नूरगंजके डाक बंगले जलाये। उस हिस्सेके सभी डाकघरोंकी डाक लूट ली और राजवनैलीकी कचहरियां जला डालीं। भतसिला कैम्पने राज सर्कलकी कचहरी, गुलनी, प्रतापपुर, केशवपुर और जिधौड़ा आदिकी कचहरियां फूंक डालीं और डाकघरोंको लूट लिया।

१४ सितम्बरको मिलिटरी लेकर दारोगा आया और अमरपुर थानेमें रहने लगा। पर एक मास तक हाथ-पैर हिलानेकी हिम्मत वह न कर सका।

बेलहर थानेका ताज कार्यकर्त्ताओंने पहना अगस्तके अन्तमें। और जो ताज पहनता है उसे शान्ति कहां? बेलहरके कार्यकर्त्ताओंको भी लड़ते झगड़ते पीटते

बेलहर पिटाते अपनी व्यवस्थामें थानाको रखना पड़ा। पर जब तक उनकी व्यवस्था चली खूब ठीकसे चली। पीड़क दबे पीड़ित उठे। अंगरेजी सरकार तो उठ गई थी पर बनैली राज छातीपर बैठा ही था। इसलिये कार्यकर्त्ताओंको पहले उससे ही निबटना पड़ा।

संग्रामपुर डाक-बंगलाको जलाकर कार्यकर्त्ता बनैली राजकी कचहरी जलाने चले और 'पूंजीवाद नाश हो, जमींदारी नाश हो' के नारे बुलन्द करने लगे। पर ज्योंही वे कचहरीके पास पहुँचे त्योंही कुछ लोग उनपर टूट पड़े और लठियाकर सबोंको भगाया। श्री बालेश्वर प्रसाद सिंह और डा० नरेन्द्रनारायण झा पर तो सख्त मार पड़ी और उनको उठना बैठना मुश्किल हो गया। कार्यकर्त्ताओंने संग्रामपुरको सर करदेनेका निश्चय किया। संग्रामपुर वाले डर गये, आये और कहा कि आपलोग जांच कीजिये और जो अपराधी साबित हो उसे दंड दीजिये। जांच कमिटी बैठी, उसने संग्रामपुरको ५००) रु० बतौर दण्ड देनेको कहा जिसे उसने मंजूर कर लिया।

थानाकी व्यवस्थाके लिये सभी कार्यकर्त्ता खरौंदामें इकट्ठे हुए और ध्वंसात्मक तथा रचनात्मक विभागोंको सगठित किया। दोनों विभागोंके कार्यकर्त्ता गांव-गावमें पिल गये और अपने अपने विभागका नाम बढ़ाने लगे। बेलहरकी कोई सड़क

अछूती न रही और जैसी सड़क वैसा पुल। पांचो सर्कल पंचके कागजात जला दिये गये; तीनों डाकघर बरबाद कर दिये गये। कलाली तो सारीकी सारी नष्ट कर दी गई। स्कूल सारे बन्द कर दिये गये।

रचनात्मक विभागने गांव-गांवमें रक्षा दलका संगठन किया और पंचायतें स्थापित की। धौरी, बेलडीहा, बनगामा, धमराही, खेसर, झिकुलिया, डुब्बा, मधुबन, कुमौल, बड़हरा और राजपुरने इस दिशामें ठोस काम दिखलाया। चोरी बिलकुल बन्द हो गई। हां! डकैती शुरू शुरूमें जबतब हुई। पर ग्रामरक्षादलने डकैतोंकी दाल कभी गलने नहीं दी। जमुनीमें, पसियामें और बारामे डकैतोको रक्षादलने मार भगाया। पसियाके एक डकैतको तो जानसे हाथ धोना पड़ा।

इस बीच दो बार गोरे आये और पुलिसको थानेमे बिठाना चाहा पर साहस न हुआ। पहली बार गोरे आये १५ सितम्बरको और बेलडीहा, धौरी और खेसर गावोंमें खुल खेले। साथमे थे श्रीअचिन्तप्रसाद घोप पुलिस इन्सपेक्टर और दफादार अवधविहारी पाठक। भितियाका पुल टूटा था; इसलिये वहांसे सबोंको पैदल आना पड़ा। उनने धमराहीसें श्रीगिरिवरनारायण सिहके घरपर धावा किया। पर गिरिवरजी मिले नहीं, उस गांवमें सात गिरफ्तारियां हुईं। इन्हीं सैनिकोकी एक टुकड़ी वेलडीहा पहुँची जिसने ठाकुर नरसिहप्रसाद सिहके घरको लूटा और उनके लड़केको पकड़ लिया। श्री सत्यनारायण सिह और अयोध्या सिंह भी लूटे गये। धौरीमें १५ आदमियोको पकड़कर संग्रामपुर डाकबंगला ले गये और वहां एकको छोड़ बाकीको एक सांससे भागनेको कहा और उनको पीटना शुरू किया। लोग लाठी खाते गिरते पड़ते भागे। जो गोरे तरैया आये उनने एकको गिरफ्तार किया और एक भागी जाती हुई स्त्रीका कपड़ा खींच लिया।

दूसरी वार गोरे आये १ली अक्तूबरको। धौरीमें श्री रघुनाथ मिस्त्री और महेश्वर प्रसाद सिहके घरको लूटा और बेलडीहा गांवको रातमें ही घेर लिया। अहले सुबह अनजान श्री परमेश्वर सिह पाखानाके लिये घरसे वाहर हुये और ललकार सुन घबड़ाकर भागे; फिर गोली लगी जिससे उनके दोनो पैर खराब हो गये। कई गिरफ्तारियां हुई जिनमे एक थी श्री नरेन्द्रनारायण सिहजीकी जो नारे लगाते गये और जनतासे सरकारको दंड टैक्स न देनेको अपील करते गये जिसके लिये वेतरह मार खाते गये। इन गोरोने खेसरका कांग्रेस कैम्प भी जला दिया।

१० अक्तूबरको श्री राजेन्द्रराय दारोगा दो दर्जन मिलिटरी लेकर वेलहर थाना

आये पर वहां एक मकान भी रहनेके लिये उन्हें न मिला। इसलिये वे साहवगंजमें जमे। पर महीना बीतते न बीतते भीष्म सिंह आगये, बेलहर थानेमें जमगये और थानेकी व्यवस्था हथियाने लगे।

बेलहरके कार्यकर्त्ता अब हाकिम न रहे, उन्हें अपने केन्द्र बदलने पड़े और पुलिससे भी बचनेके लिये सावधान रहना पड़ा। किन्तु उनका संगठन टूटा नहीं। उनकी पंचायत, उनका ग्राम रक्षा दल काम करते रहे। सर्किल नम्बर ३ का संगठन तो ऐसा पक्का रहा जिसपर किसी भी क्रान्तिकारी देशको नाज हो सकता है। न उसके चौकीदारोंने फिर सरकारी नौकरी ली न असेसरने और न उस सर्किलका कोई इन पदोंके लिये उम्मेदवार ही खड़ा हुआ। उन दागी कोइरियोंके गांवसे सरकार न चौकीदारी वसूल सकी, न सामुहिक जुरमाना ले सकी और न वहां कोई गवाह पा सकी। हां ! उन गावोंको वह खूब सता सकी और लुटवा सकी।

मधेपुरा सबडिविजन पूराका पूरा जनताराजका केन्द्र रहा। मुरलीगंज, बनगांव और मधेपुरा जनताराजके जाग्रत क्षेत्र रहे।

मुरलीगंजमें दारोगा रहे पर थानेपर जबतक जनताराज रहा यानी १६ अगस्तसे १३ सितम्बर तक, कांग्रेसका ही झंडा फहराता रहा। थाना आफिसमें कांग्रेसका ही ताला लगा रहा और थानाका हाता भर कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंका ही अड्डा बना रहा। दारोगा थे पर दरोगई नहीं थी। कांग्रेसका बोलबाला था। कार्यकर्त्ताओंकी चलती थी।

किशुनगंजमें भी १६ अगस्तसे थानेका प्रबन्ध कांग्रेसके हाथमें आ गया था। हाइ स्कूलके हेडमास्टरने अपने छात्रोंके सहयोगसे प्रचार विभागके कामको संभाल रक्खा था। और लोग घूम-घूमकर पंचायत और रक्षा-दल संगठितकर रहे थे। थानेमें पंचायत कमिटी खास-खास मामलेको देखती और जिसे जेलकी सजा देती उसे उसी कोठरीमें बन्द रखती। वह बदमाशोंको जेलमें भूखा भी रखती।

यहां भी कई दिन तक दारोगा साहब रुके रहे और सब तरहसे उनको आराम ही दिया गया। पर जनताका उत्साह कभी-कभी ऐसे-ऐसे नारोंमें प्रकट होने लगता कि दारोगा साहब टर जाते। आखिर २४ अगस्तको वह तीन गाडीपर सपरिवार तथा सामान सहित लदकर थाना छोड़ चले। सभी प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंने उन्हें प्रेमपूर्वक विदा किया। तबसे और कोई घटना नहीं हुई। थानेमें अमन-चैन रहा। हां ! मिलिटरीके आनेसे कुछ दिन पहले पार्थ ब्रह्मचारीका दल आया और

लोगोंसे उनकी बन्दूकें छीनकर ले गया। वनगांव थानाने पचीस दिनों अपना राज आप चलाया। १४ अगस्तको ही एस० डी० ओ० और पुलिस इन्सपेक्टरके रातोरात थाना छोड़ भागनेसे थानाका खोखलापन जाहिर हो चुका था; फिर भी १६ अगस्तको जनताने थाना जलाकर अंगरेजी राजका नामोनिशान मिटा दिया। थानाके बाद जनताकी आँखमें गड़ रही थी वनगांव कोठी जिसकी मालकिन थी एक मेम जो बरयाहीमें रहती थी। जनताने उसको कोठी छोड़ इंगलिस्तानका रास्ता नापनेको कहा। वह डर गयी और जवाबदेह कार्यकर्त्ताओंसे मेल-जोल बढ़ाने लगी। उसने एक-सौ स्वयंसेवकोंका खर्च देना भी मंजूर किया जो सैफाबाद कैम्पमे रहते और थाने भरको शान्त रखते। पर पछगछियाके श्रीरामबहादुर सिंहके विरोधके फलस्वरूप कार्यकर्त्ताओंने मेमसे रुपये-पैसेकी मदद न ली। हां! आगे चलकर उसने अपने मनसे ६०) रु० बतौर चन्दा दिया।

वनगांवमें एक युद्ध समितिका निर्माण हुआ। इस समितिके संचालनमें ध्वंसात्मक विभाग ही नहीं था बल्कि रचनात्मक विभाग भी था। पहले विभागके प्रमुख कार्यकर्त्ता थे सर्वश्री चित्रनारायण शर्मा, रमेश झा, बलभद्र मिश्र और गौरीशंकर आदि और दूसरे विभागके थे सर्वश्री जटाशंकर, जगेश्वर मोची, मगनीराम झा प्रभृति। श्रीछेदी झापर धन-संग्रहका भार था और उनने बाबू मनोहरलाल तथा उनके मित्रोंकी सहायतासे पर्य्याप्त धन प्राप्तकर लिया था।

ध्वंसात्मक विभागने वनगांवको सुरक्षित रखनेके खयालसे रेलवे लाइन और खास-खास सड़कोंपर अपने आदमी तैनातकर रखे थे और लोगोंसे बन्दूकें भी ले ली थीं। बन्दूक जब्त करना उस विभागका खास प्रोग्राम था। इसी प्रोग्रामके अनुसार श्रीचित्रनारायण शर्मा सहर्षा अमरीकन मिशनके व्यवस्थापक डिक साहबके यहां गये और वहांसे दो राइफल ले आये।

रचनात्मक विभागने थाने भरमे पंचायतकी व्यवस्था स्थापित कर दी थी। ग्राम रक्षादल कायमकर दिया था और कांग्रेस बुलेटिन तथा युद्ध समितिकी हिदायतोंको पहुँचनेका इन्तजामकर लिया था।

सहर्षा और मधेपुराके कब्जेमें आ जानेसे सबडिविजनकी परिस्थिति ऐसी हो गई थी कि किसीके जान मालकी हिफाजतकी जवाबदेही कांग्रेस ही ले सकती थी। मिस्टर डिकने पहले एस० डी० ओ० से अपनी रक्षा चाही पर निराश होकर कांग्रेसकी शरणमें आये और बरियाहीकी मेम साहिबाको भी आना पड़ा। उनने

अपनी मोटर और डाइनामो और रेडियो श्री चित्रनारायण शर्माके हवाले कर दी। २१ अगस्तको छेदी झा आदि प्रमुख कार्यकर्त्ताओंने सर्व सम्मतिसे उनको लिखा भी कि आप अपनी चीजें मंगालें पर मेम साहिबाने चीजोंको कांग्रेसके पास ही रहने दिया। उनने जो विश्वास किया उसका प्रतिफल उन्हें मिला। दूसरे ही दिन जनताके द्वारा लूटी जानेसे कार्यकर्त्ताओंने उन्हे बचाया जिसके लिये उनने श्री चित्रनारायण शर्माको धन्यवाद दिया है। अपने मई १९४६ के पत्रमें वह लिखती हैं कि अपनी जानको खतरेमें डालकर भी श्री चित्रनारायण शर्माने उनको बचाया और उनने सरकारको ऐसा कहा भी। एकबार उनसे एक सज्जन रुपये मागने गये। आपने कांग्रेसकी निन्दा की और अपनेको कम्यूनिष्ट बतलाया। मेम साहिबाने छेदी झा दलको इसकी सूचना भेजी। दलने उन सज्जनको गिरफ्तारकर रक्खा परन्तु उसके बहुत कहने सुननेपर २४ घंटेके बाद रिहाकर दिया।

२६ अगस्तको भागलपुरसे देशी-विदेशी फौजकी एक टुकडी सहर्पा आई। वह मधेपुरा खजाना लाने जा रही थी। युद्ध समितिके ध्वंसात्मक विभागको खबर लगी और उसने उन सैनिकोंसे राइफल छीन लेनेकी तैयारी शुरू की। श्री छेदी झाने उस टुकड़ीसे राइफल छीन लेनेका विरोध किया। श्री चित्रनारायण शर्मा तथा औरोंने कहा कि प्रोग्राम है केवल प्रदर्शन करनेका। पर स्टेशन पहुँचते-पहुँचते लगभग पन्द्रह हजार लोग इकट्ठे हो गये और काबूमें न रहे। सिपाहियोंने बार-बार भीड़को लौट जानेका इशारा किया पर भीड आगे बढ़ती गई और उसकी ओरसे गोलियाँ भी चलीं। फिर तो सैनिक भी गोलियां दागने लगे, पहले आसमानी फेर, फिर घातक मार। फलस्वरूप पाच मारे गये— बनगांवके सर्व श्री पुलकित कामत और हरिकात झा, गढ़ियाके क्लेसर मडल, चैनपुरके भोला ठाकुर और नदियारके केदारनाथ तिवारी।

इस गोली काण्डसे बनगाव घबड़ा गया और वहाँके लोग इधर उधर भागने लगे। श्री रामबहादुर सिह और छेदी झा वगैरह ढाटस बँधानेके लिये चारो ओर घूमने लगे। ६ सितम्बरको सभी हताहतोंके परिवारसे मिलने गये और उन्हे सान्त्वना दी। उसी दिन श्री रामबहादुर सिह बनगावके डिक्टेटर बनाये गये और छेदी झा प्रकाशन विभागके प्रधान बने। इन दोनोंको सबोंका सहयोग मिला और थाना फिर उत्साहमें आ गया।

सबोंने प्रोग्राम बनाया कि सत्याग्रहियोंका जलूस निकले जो थाना भर घूम-घूमकर सबोंको आनेवाली परिस्थितिका सामना करनेके लिये तैयार करे। फिर ८ सितम्बरको लगभग ८० सत्याग्रहियोंका जलूस निकला जिसमे सर्वश्री रामबहादुर सिंह, छेदी झा, चित्रनारायण शर्मा और कुशेश्वर झा वगैरह थे। बरियाही, रहुआ और कहरा होते हुये यह जलूस सहर्षा पहुँचा जहाँ दारोगा केशव प्रसाद सिह, इन लोगोंको गिरफ्तार करने आये। वारण्ट तो इन लोगोंपर था ही। इन लोगोंने दारोगाको कहा कि आप हमें गिरफ्तार करनेकी चेष्टा मत कीजिये। पर सहर्षा सुपौल सबडिविजनका हेड क्वार्टर हो रहा था; एस० डी० ओ० वगैरह सब वहाँ मौजूद थे। इसलिये दारोगा अपनेको वहाँ बलवान मान रहे थे। उनने कनस्टबिलोंको लेकर श्री रामबहादुर सिह; छेदी झा वगैरहको घेरा। तुरत जलूसके नायक श्री कुशेश्वर झाने अपने जवानोंको हुक्म दिया—इन सबोंको गिरफ्तार कर लो! बस, दारोगा साहब और कनस्टबिल पकड़ लिये गये। बादको रामबहादुर सिहजीने उन सबोंको छुड़वा दिया।

इस घटनाके बाद ही १२ सितम्बरको गोरे आये। सैफाबाद कैम्प जलाया गया और दमन शुरू हुआ।

अपने छोटे और उथल-पुथलसे भरे जीवनमें वनगाँवके जनता राजने थानाकी व्यवस्था संभाली। ग्राम तथा रक्षा-दल संगठनके काम सुन्दर ढंगसे किये। गांवोमें बाजाप्ता पहरा पड़ता रहा। पंचायते किसी भी तरहके बम बखेड़ेको बहुत सुन्दर ढंगसे निबटा देती रहीं। चौकोदारी टिकट देना बिलकुल रोक दिया गया। पुलिस, अदालत और फौजदारीका अभाव कभी लोगोको नहीं खटका। राज दरभंगा और बनैलीको छोड़ कर प्रायः सभी स्थानीय जमींदारोने उस साल नालिस नहीं करनेकी ठान ली। लोग सजग और संतुष्ट थे। हाँ! धनीवर्ग सशंकित दीखता था। अपनी स्वार्थ परता और वर्ग-संघर्षके प्रचारके कारण।

अब मधेपुराकी बात जो इन सभी थानाओंका हेड क्वार्टर था। १९ अगस्तको कार्यकर्त्ताओंने देखा, मधेपुराकी सभी सरकारी संस्थायें कांग्रेसी हुकूमतकी मातहती कबूल कर रही है और वे अपनी हुकूमतको मजबूत करनेका तौर तरीका अखतियार करने लगे। उनने मधेपुराके दफ्तरको संभालनेके लिये श्रीकार्तिक प्रसाद सिह, श्री कुदरतुल्ला तथा श्रीदेवदत्त महतोको चुना और उनकी सहायताके लिये ५० स्वयंसेवक और स्कूलके छात्रोंको रखकर सबके सब देहातको

चल पड़े। उनने सब जगह ग्रामरक्षा दलों और ग्राम पंचायतोंको कायम किया। रक्षादलके जवान गावोंमें पहरा देने लगे और अजनबीपर आख रखने लगे। चारो ओर शान्ति रही। शुरूके दिनो थानेभरमें केवल तीन डकैतियां हुई। डाकू पकड़े गये, उनसे माल बरामद किया गया और उन्हें समझा बुझा कर छोड दिया गया।

पंचायतोने जैसी निष्पक्षता तथा जागरुकता दिखलाई उसके फलस्वरूप कोई मामला गावकी सीमा न लांघ सका।

ता० २० को श्रीरामबहादुर सिंह मधेपुरा पहुंचे थे। वह लिखते हैं—मधेपुरामे अदालत और फौजदारी दोनो कोर्ट, थाना, पोस्टऑफिस रजिस्टरी ऑफिस और स्कूल वगैरह सभी पूर्णरूपसे बद थे। सभी सरकारी नौकर पगु होकर बैठे थे। सवारी आदिका प्रबन्धकर देनेसे अपने अपने घर जानेकी भी मनोवृत्ति दिखला रहे थे और बहुत डरे हुये भी थे। ऊपरसे एकदम सम्बन्ध विच्छेद हो गया था और गवर्नमेन्ट भी इन अफसरोके निसबत कुछ कर नहीं रही थी। इसलिये सबका दिल मान रहा था कि अगरेजी हुकूमत अब शायद उठ जाय। मगर आशा नहीं गई थी। एस० डी० ओ० और मुन्सिफसे मेरी बातें हुई। वे अपनी कमजोरीको छिपानेके लिये बहुत सतर्क दीख पड़े और अबतक जो घटना घटी थी उसका सम्बन्ध हिसा, जोर जबदस्तीसे जोड़नेके लिये सारी दलील दे रहे थे। रामजी सिंह, मुन्सिफ तो सत्याग्रहकी भी बुराई कर रहे थे। राजेश्वरी प्रसाद सिह एस०डी०ओ० बनगावकी घटनासे भीतर भीतर जल रहे थे क्योंकि वहां उन्हें गिरफ्तार कर लेनेकी धमकी दी गयी थी और बीमार हो जानेपर भी डाक्टरी सहायता नहीं मिली थी। मैंने उनको कहा—क्रान्तिका जैसा स्वभाव होता है उसपर गौर कीजिये। एकाध गलतीपर ध्यान नहीं दीजिये; याद रखिये अगर महात्मा गांधीकी अहिसा काम नहीं करती होती तो आन्दोलनका वह रूप नहीं होता जो आप अभी देख रहे हैं यानी एक बागी और एक एस० डी० ओ० शान्तिपूर्वक यहां इस तरह बातें कर रहे है। लोगोंके पवित्र उद्देश्यपर आपको ध्यान देना चाहिये और यह समझ लेना चाहिये कि अगरेजी सरकार फिर आई तब आप हिन्दुस्तानी कर्मचारियोंके बुलानेसे ही आयगी जिसके लिये १९४२ का इतिहास पढ़ कर आपकी सन्तानें आपको कोसेंगी। मेरी बातें सुन एस० डी० ओ० का रुख कुछ बदला।

मधेपुराके कार्यकर्त्ताओंके लिये जेल तोड़ देना वा खजाना लूट लेना कठिन न

था। पर उनने जेल रखना जरूरी समझा और खजाना लूटना अपने हितके प्रतिकूल माना। इसलिये उनने उन दोनोकी व्यवस्थामे फेरफार नही किया। हां! उन दोनो जगह अपना नियत्रण रक्खा। २३ अगस्तको एस० डी० ओ० ने कांग्रेसी हुकूमतको संवाद भेजा कि जेल खर्चके लिये, खजानाके सिपाहियोकी तनखाहके लिये रुपयोकी जरूरत है; खजाना खोलवाया जाये। कांग्रेसके कार्यकर्त्ता गये और खजाना खोलवाकर चार हजार रुपये निकलवाया; फिर ताला बन्द हुआ और काँग्रेसका पहरा पड़ने लगा।

मधेपुरा शहरका इन्तजाम भी कांग्रेसके हाथमे था। उसके ही स्वयंसेवक वहां पहरा देते और सबकी सुख-सुविधाका खयाल रखते।

३० अगस्तको सहर्षा गोली काण्डकी खबर यहाँ पहुँची और लोग मधेपुराकी सुरक्षाकी चिन्ता करने लगे। मिलिटरीसे उस तरह भिड़ना कार्य साधक नहीं हो सकता, ऐसा माना गया। उसी दिन शामको मिलिटरी आई और खजाना और पादरी डिक साहबको लेकर चली गई।

मिलिटरीके आ जानेसे अंगरेजोंके अमले'जरा सुगबुगाये। उनने कचहरियां खोल दीं और पूर्ववत् काम करनेकी चेष्टा करने लगे। पर श्रीभूपेन्द्र नारायण मंडल, कमलेश्वरी प्रसाद यादव और यदुनंदन झा आदि कार्यकर्त्ताओने निश्चय किया कि नौ सितम्बरको फिर सस्थाओपर कांग्रेसकी सील-मोहर लगा देनी है। गॉवोमें भी तैयारी होने लगी मधेपुरामें स्वयंसेवकोको भेजनेकी जो अमलोसे मोरचा ले सकें और मधेपुरामे रसद-न भेजनेकी ताकि अमले वहॉ भूखके मारे डट न सके।

९ अगस्तको शान्तिपूर्वक कई जत्थे कचहरी गये। सरकारी सिपाही लोकल बोर्डके छतपर बन्दूक लेकर खड़े थे। इधर जनताकी बड़ी भीड़ सड़कपर खड़ी नारे लगा रही थी। मजिस्टर साहबसे जत्थेकी बातचीत हुई और कोर्टपर काग्रेसकी सील-मोहर लग गई पर केवल दो दिनोके लिये। ११ अगस्तको मधेपुरामे मिलिटरी आई, शहरको काबूमें करके गॉवमे घुसनेकी तैयारी करने लगी।

सुपौल सबडिविजन भरमे २५ दिनोसे डेढ़ महीना तक जनता राज रहा। इसकी रीति नीति कुछ ऐसी रही कि इसका इतिहास प्रान्तमें अपना अलग स्थान रखता है। यहांके कार्यकर्त्ताओने विजयकी घड़ियोमे जिस सत्याग्रहसे काम लिया, विपत्ति-कालमे उसका ही परिचय दिया। इनका दृष्टिकोण एक रहा और गति-विधि भी समान रही।

यहां थाना, अदालत, फौजदारी सर्वोपर जनताका कब्जा था। बाढ़को वजहसे सबडिविजनल हेड-क्वार्टर सहर्षा चला गया था जो बनगांव थानामें है। वह वहांकी जनताके द्वारा बन्द किया गया।

भीमनगर थानामें २५ अगस्तसे ३० सितम्बर तक जनता राज रहा। भीमनगर पिछड़ा हुआ थाना है; जंगल-झाड़से परिपूर्ण, चोरी डकैतीके लिये प्रसिद्ध। यह उस थानेके रक्षा-दलके लिये अभिमानका कारण है जो महीना भर वहाँ चोरी डकैती नहीं हुई।

त्रिवेणीगंजमें १८ अगस्तसे ४ सितम्बर तक जनता राज रहा। जनता राजने जो पहला काम किया वह था एक क्रिश्चियन कोठीवालको उसका लूटा हुआ माल वापस कराना। लोग उस दिन थाना आ रहे थे। रास्तेमें वह कोठी पड़ती थी जिसमें कुछ घुस गये और एक घड़ी मय सामान उठा ले गये। साहबने कार्यकर्त्ताओंको सूचना दी। सर्वश्री सखीचन्द मंडल, कुञ्जीलाल यादव और चन्द्रकिशोर पाठकने माल बरामद किया और साहबको पहुँचा दिया।

डगमारा थानामें २६ अगस्तसे २५ सितम्बर तक जनता राज रहा। इस थानेमें डाकुओंके दो उपद्रव हुये और दोनोंको शान्त करनेमें डगमाराके कार्यकर्त्ताओंने अपनी मर्यादाका पालन किया।

एक उपद्रव तो हुआ शुरू शुरूमें ही जो कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंकी निष्पक्षता तथा तत्परताकी वजहसे गृह-कलहमें परिणत होते होते बचा। निर्मलीमें बहुत पहलेसे देशवाली और मारवाड़ी समाजके बीच लागडाट चली आ रही थी। एक दिन एक मारवाड़ीके यहा डाका पड़ा, फिर चोरी हुई। मारवाड़ियोंकी ओरसे एक चोरकी खाना-तलाशी हुई और उसके परिवारपर काफी जोर जुल्म हुआ। देशवाली बिगड़े और उनमें जो दुसाई थे बड़ी तादादमें इकट्ठे हो गये और दो दिनों तक मारवाड़ी समाजका मालमता लूटते रहे। अन्तमें गोलिया चलीं भाले चले एक आदमी मरा और लूट बन्द हुई। कार्यकर्त्ताओंका बहुत समय लूटको रोकने और परिस्थितिको सम्भालनेमें ही लग गया और आन्दोलनकी गति रुद्ध सी रही।

दूसरी बार नेपालके महाजनोंका पचीस हजारका कपड़ा निर्मलीसे हनुमान नगर, नावसे जा रहा था। कमलपुरवालोंने सारा माल लूट लिया। महाजनोंने कुनौली कांग्रेसको खबर दी। श्री राजेन्द्र मिश्र और खूबलाल महतो स्वयं-सेवकोंको लेकर कमलपुर गये, सब माल बरामद कराया और महाजनोंको भेजवा दिया।

और कोई घटना नहीं हुई। जनता राज सबोंको सन्तोष दे रहा था। लोगोंको खटका था जो एक यही कि यह राज कहीं अल्पस्थायी न हो!

प्रतापगंजमें जनता राज २४ अगस्तसे २५ सितम्बर तक रहा। इसकी पॉलिसी भी सबडिविजनकी पॉलिसी जैसी ही रही। कुछ लोग करजाइनके स्ट्रौंग साहबको परेशान करना चाहते थे। उनका कहना था कि बरियाहीकी मेम और सहर्षाके पादरीकी बन्दूक और रेडियो वगैरह जब्त किये गये हैं। वैसा यहाँ भी होना चाहिये। पर कार्यकर्त्ताओंने उन लोगोंकी बात काट दी। साथ ही उनने स्ट्रौंग साहबको परिस्थिति भी समझाई जिसपर साहबने एक बन्दूक और रेडियो उनके पास जमा कर दिया जिसकी रसीद साहबको लिख दी गई।

९ सितम्बरको हरिराहामें भोला मियांके घर डकैती हुई। डाकुओंने घरवालोंको बड़ी बेरहमीसे मारा और आगसे जलाया और हजारोंका माल लेकर चम्पत हो गये। भोला मियां पहले थानेदारके यहाँ गये। पर थानेका तो ढाँचा भर रह गया था। सो थानेदारने उनको कांग्रेस शिविरमें भेज दिया जो थानेकी व्यवस्था करता था। शिविरने भोलामियांको अस्पताल रखवा दिया और तहकीकात शुरू कर दी। दो डाकुओंने अपना अपराध कबूल किया और अपना लूटका हिस्सा शिविरमें जमा कर दिया पर औरोंने पांच दिनकी मोहलत ली। बादमें जब अंगरेजी अमलदारी वनगांवमें फिर आई और सुपौल कोर्ट सहर्षामें बैठने लगा तब इन डकैतोंने उलटा शिविरके कार्यकर्त्ताओंपर नालिश ठोक दी। २७ सितम्बरको प्रतापगंज थाना खुला और इन डाकुओंके सम्बन्धके कागजात कोर्टमें दाखिल हुये। कांग्रेसके पंचोंने डाकुओंके द्वारा जमा किया हुआ माल अमलोंको सौंप दिया और डाकुओंके खिलाफ बयान दिये। सात डाकुओंको सात सात सालकी सजा मिली और उस केससे सभी कार्यकर्त्ता बरी हुये।

इनके अलावा प्रतापगंजमें जनता राजके जमानेमें और कोई घटना नहीं हुई। सभी शान्त, सजग और अहिंसात्मक बने रहे। इन सब थानोंमें जो विचारधारा काम कर रही थी उसका स्रोत सुपौल था।

सभी सरकारी संस्थाओंसे अपनी ताकत मनवाकर सुपौल कांग्रेसने थानेका इन्तजाम १८ अगस्तसे अपने हाथमें लिया। स्वराज्य भवनमें विराट सभा हुई जहाँ कार्यकर्त्ताओंने एलान किया कि कुछ ही दिनोंके बाद दमनचक्रका प्रारम्भ होगा और वही हमारे असली मोर्चेका समय होगा। उस समय मरनेवालोंकी जरूरत होगी जिनको आजसे ही उस समयकी परिस्थितिका सामना करनेकी ट्रेनिङ्ग दी जायगी। ऐसी

लोगोंने अपने नाम दर्ज कराये और ५० स्वयंसेवक तो तुरत शिविरमें भर्ती होकर ट्रेनिङ्ग लेने लगे। सबोंको प्रतिज्ञा लेनी पडी कि हम देशके लिये जीवन देंगे और मरते दम तक अहिंसक बने रहेंगे।

स्वय-सेवकोंके काम थे जब्त किये हुये सरकारी महकमोंपर पहरा देना और आश्रित अमलोंकी रक्षा करना, फिर थाने भरमें अमन-चैन कायम रखना। प्रधान शिविरके अलावा देहातोंमें भी जगह जगह कप थे जहां स्वयंसेवक रहते। सबोंके नायक थे श्री अच्युतानन्द झा।

पुलिसवालोंको भय था कि अपनी अमलदारीमें कांग्रेसवाले हमारी दुर्गति कर डालेंगे पर अन्त तक कांग्रेस राजने उन्हे आरामसे रक्खा। इधर उधरसे खबर आती रहती कि अमुक जगह पुलिसवाले मार डाले गये, अमुक जगहसे खदेड़ दिये गये वा गिरफ्तार रक्खे गये और यहाँकी जनता जोशमें आ जाती। पर कार्यकर्त्ताओंके चौकन्नापन और अहिंसा व्रतके कारण पुलिसवालोंके सभी संकट टलते रहे।

पुलिसवाले इस उपकारका बदला जैसा चुकायेंगे इसको लेकर सुपौलके कार्य-कर्त्ताओंको भ्रम न था। वे महसूस करते कि पुलिसका जैसा व्यवहार हो रहा है वह कपट भरा है, वह भीतर भीतर छूरेपर शान दे रही है जिसे वह हमारे गलेपर चलायगी अगर अगस्त आन्दोलन असफल होगया। और आन्दोलनकी सफलताके लिये अहिंसा व्रत अनिवार्य है, इसलिये पुलिसकी धूर्तता उसका कदाचार कार्यकर्त्ताओंको और अहिंसक बननेके लिये प्रेरित करता।

सिर्फ ताला लगाकर सरकारी महकमोंको छोड दिया गया था। उनकी चीजें बन्दूक वगैरह भी ज्योंकी त्यों भीतर पडी थीं। विद्यार्थी और कितने दूसरे दूसरे लोग भी जोर देने लगे कि बन्दूकें जब्त हो जानी चाहिये। कार्यकर्त्ताओंको सहमत होना पड़ा और थाना जाना पडा। जब्तीकी बात सुनकर पहले तो पुलिस इन्सपेक्टर साहब बिगड़े पर क्या कर सकते थे? तुरत ठढे पड़ गये और गिडगिड़ाकर बोले—'इस तरह बन्दूकें न लीजिये एक दो दिनोंके भीतर दो चार सौकी भीड लेकर आइये और उन्हे उठा लेजाइये। उस हालतमें में मौका आया तब कोई जवाब दे सकूंगा।' बात तय हो गई। दिन मुकर्रर होगया। पर पीछे कार्यकर्त्ताओंका विचार बदल गया। कहीं ये हथियार व्यक्तियोंके हाथोंमें पड जाय और उनका दुरुपयोग होने लगे तब? फिर बन्दूकोंकी कोठरीमें भी तो हमारा ताला है। उनपर हमारा कब्जा तो है ही। फिर दूसरी जगह हटाने से लाभ? अगर वक्तपर इनसे काम लेनेके इरादेसे हम इन्हे हटावें तो हमारी भूल है।

हम इन बन्दूकोंसे अंगरेजी ताकतका सामना नहीं कर सकते। इस तर्कधाराने जब्तीके प्रोग्रामको अमलमें आने न दिया।

कांग्रेसी इन्तजामके शुरू शुरूमें चोरी लूट रोकनेके लिये कार्यकर्त्ताओंको जाग-रूक रहना पड़ा। सदाकी सतायी हुई जनता इस वक्त अपने परवानेदार लुटेरोंसे (Licensed robbers) बदला लेनेके लिये 'तलफला' रही थी। रोज खबर आती कि अमुक बनिया लूटा जायगा वा अमुक किसान लूटा जायगा। पर खबर पाते ही कार्यकर्त्ता दौड़ जाते और लूट न हो पाती। सरकारी महकमा बन्द करनेके लिये जो विशाल जन-समूह सुपौल आया वह लालच भरी निगाहोंसे दूकानदारों और बनियोंकी सम्पत्ति देखता; चाहता कि कहींसे नेक इशारा मिल जाय और हम क्षण भरमें सारा माल उड़ा लें। पर कार्यकर्त्ताओंके समझाने बुझानेका फल हुआ कि किसीकी पैसेकी भी चीज नहीं गई।

हां! एक बार गनपतगंजमें एक मारवाड़ीकी अन्न लदी नाव लूट ली गई। खबर पाकर श्री यदूदास और रामधनी साहु साथी सहित घटनास्थलपर पहुँचे और समझा बुझाकर छटांक छटांकका अन्न ऊपर करवाया और मालिकके पास पहुँचा दिया।। जिन लुटेरोंने अन्न गाड़ रक्खा था उनने जमीन खोद अन्न बाहर किया और जिनने खा लिया था उनने पाई-पाई कीमत चुका दी। देखने-वाले दंग रह गये। दूसरी घटना है खरैलाकी। लोगोंने एक किसानके घरसे कुछ अनाज और रुपये जबरदस्ती उठा लिये। खबर पाकर कार्यकर्त्ता पहुँचे और किसानको सारी चीजें दिलवा दीं।

इन घटनाओंसे बाजारपर कांग्रेसकी धाक जम गयी। बनिये मुनासिब कीमतपर माल बेचने लगे और गाहकोंकी सुविधा-असुविधाका खूब खयाल रखने लगे। फल-स्वरूप थानेकी जनता शान्ति और सुखसे रहने लगी और पंचायत, पहरा और संगठनके काममें खूब सहयोग देने लगी।

सितम्बरका पहला हफ्ता बीता कि सुपौलमें गोरोंके आनेकी खबर उड़ने लगी। उनके अमानुषिक अत्याचारकी कहानिया लोग सुनने लगे पुलिसने नमक मिर्च लगाकर उन कहानियोंको और भयावह बना दिया और खूब प्रचार करना शुरू कर दिया। उसका रुख बदल गया।

कल तक जो पुलिस इन्सपेक्टर कार्यकर्त्ताओंकी मर्जीपर जी रहा था उसीने क्लबमें कुछ प्रमुख व्यक्तियों, सरकारी अमलों और कुछ कार्यकर्त्ताओंको बुलाया

और कहा कि सरकारके खिलाफ जो प्रचार हो रहा है बन्द नहीं हुआ तो हमें कार्रवाई करनी पडेगी। कार्यकर्त्ता स्तब्ध रह गये। पर उनने डटकर कहा कि हम जो कर रहे हैं, करते रहेंगे; आप जो कर सके, करें। इन्सपेक्टर आग-बबूला हो गया और सभा भग हो गई। कुछ दिन पहले यही इन्सपेक्टर कहा करता कि आजादीकी राहमें तीन रोडे हैं—एमरी, लिनलिथगो और जिन्ना। ये रोडे अवश्य दूर होंगे और देश स्वतंत्र होगा। फिर जो चापलूश कांग्रेसीकी शिकायत करता उसे यह फटकारता भी था। इसका रग बदलना बतलाने लगा कि विपत्ति शीघ्र आनेवाली है।

अब धीरे-धीरे स्वयं-सेवक खिसकने लगे। शिविर खाली सा हो गया। श्री लहटन चौधरी लिखते हैं—"जब मालूम हुआ कि मिलिटरी एक दो दिनोंमें ही आनेवाली है तब हम सब अपना रास्ता ठीक करने बैठे। हम तय कर चुके थे कि मिलिटरीका अहिंसात्मक तरीकेसे मुकाबला करेंगे और फरार नहीं होंगे फिर भी हम बैठे और विचार करने लगे। पडोसी सबडिविजनके लोग फरार हो रहे थे और शिवनन्दन मंडलजी भी फरार हो चुके थे, जिससे बुद्धि-भेद पैदा हो रहा था। अधिकांश साथी और हमदर्द लोग कहते—फरार हो जाइये पर हम चार साथी अपने पूर्व निर्णयपर डटे रहे। फिर हमने निश्चय किया कि हम सारी ताकत थानेपर लगावें। उसे दखलमे रखे और जब मिलिटरी पहुँचे तब भी उसे नहीं छोडें और मिलिटरीका सामना सत्याग्रह द्वारा करें। सर्वप्रथम श्री शिवनारायण मिश्र (लाल बाबाजी) थाना जाकर मिलिटरीका सामना करें, फिर चार-चार या पांच-पांचका जत्था सत्याग्रह करनेके लिये थाना पहुंचा करे। श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिंह तथा श्री गगा प्रसाद स्वयं तबतक न पकडाये जब तक स्वय सेवकोंको जुटा-जुटा कर सत्याग्रहको नियमित रूपसे चलाते रह सकें। फिर हम निश्चिन्त मिलिटरीके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगे जो जब न आई तब आई-सी हो रही थी।

आग और अत्याचार

जहां तहां जनता राजमें अपने चरम विकासको पहुँचकर अगस्त-क्रान्ति निस्तेज होने लगी। अवसर और उद्देश्यने जनताको खूब जगा दिया था जिसके साथ-साथ क्रान्ति ऊंची उठी थी। उस ऊंचाईपर टिकी रहनेके लिये क्रान्तिको जनताका संघटित बल चाहिये था जिसका पूर्णतया अभाव था। इसलिये जो कल होते ही उसे अगरेजी सरकारका संघटित बल लेकर गोरे आये और आज हो कर दिखलाया। गोरोंने क्रान्तिकारियोंके गांवके गांव जला दिये और जो सामने पड़ा उसको भून डाला। जनता राज उनके संघटित अत्याचारका सामना न कर सका, चार दिनकी चांदनी साबित हुआ। फिर जो अन्धेरी रात आई उसमें पुलिस और हाकिमोने क्रूरता डाकेजनी और बलात्कारके जैसे जैसे काण्ड किये उनको लंबे अरसेकी गुलामीसे अधः पतित मानव ही कर सकते हैं; सह सकते हैं।

सभी गोरे अंगरेज नहीं थे। कनाडियन और अमरीकन भी काफी थे। मालूम होता था कि ब्रिटिश साम्राज्यकी जजीरको तोड़नेकी कोशिश करनेवाले निहत्थे हिन्दुस्तानियोको सजा देनेके लिये समूची आंग्ल जाति उठ खड़ी हुई है। और सभी गोरे फौजी भी न थे और न पुलिसके थे। कोई जज था कोई व्यवसायी और कोई जमींदार। सभी अपने पेशेकी मर्यादा भूलकर निहत्थे हिन्दुस्तानियोंका शिकार खेलने दौड़ पड़े थे। और हिन्दुस्तानियोंका अपराध था गोरोकी बरोबरी करना और इसमें सफल होनेके लिये गोरोके ही अजमाये तोड़ फोड़ जैसे दो एक अस्त्रका प्रयोग करना।

ये गोरे जज, खास करके व्यवसायी और जमींदार सहायक सेनाके (Auxiliary Force) सदस्य थे। हिन्दुस्तानमे जितने गोरे रहते हैं सबोको सैनिक शिक्षा लेनी पड़ती है और सहायक-सेनामे भर्ती हो जाना पड़ता है, इस सेनामें भर्ती होकर गोरे अपना दूसरा दूसरा पेशा करते रहते हैं। हां! जब आपद्काल आता है तब जहां वे रहते हैं वहा और उसके आस पास अपने देशके दुश्मनोंसे लड़नेके लिये हथियार उठाते हैं। जहां जहां बगावत हुई वहां वहां तुरत उसे कुचल कर फैलने और संगठित होनेसे रोक देनेमे सहायक सेना बड़े कामकी साबित होगी;

ऐसा सोचकर ही साम्राज्य लिप्सु दूरदर्शी अंगरेज जातिने १६२० में इसका संगठन किया था। १९४२ में इसने खूब काम किया। सकटापन्न चीन और रूसकी सच्ची मदद आजाद हिन्दुस्तान ही कर सकेगा—इसलिये आजादीकी अहिंसक लड़ाई छेड़ कर हिन्दुस्तानियोंने गोरोंके देशको आपदमे डाल दिया था। फलस्वरूप सभी गोरे अपने अपने राजमे अपने देशकी रक्षाके लिये एक हाथमें पलीता और दूसरे हाथमे पिस्तौल लिये अगस्त क्रान्तिकारियोके देह गेहको ढूढते फिरते थे। और अगस्त क्रान्तिकारी थे निहत्थे और उनके गाव थे वेगढ़के। फिर ढूढ़नेमे उत्साह क्या न होता।

गोरे व्यवसायी और जमींदार हिन्दुस्तानियोके बीच रहते हैं, इसलिये स्वभावत किसीसे दोस्ती और किसीसे वैर रखते हैं। एक ढेलासे दो चिड़ियोको मार गिरानेका अपूर्व अवसर उन्हें मिला। राष्ट्रका वदला लिया और अपना भी। इसलिये जहा जहां वे गये निर्दयता सीमा पार कर गयी।

पर सहायक सेना तो सहायता ही देती है। कामका भार तो रहता है मुख्य सेना पर। वह आई और इसे वल मिला। और यह मुख्य सेना सव जगह एक साथ न पहुँच सकी। जहां जहां छावनी है वहां वहा हिन्दुस्तानी फौजकी संख्या अधिक थी। पर क्रान्तिकी चढ़ती लहरमें हिन्दुस्तानी फौज वा पुलिस ही को लीजिये, हिन्दुस्तानियोके खिलाफ जायगी ऐसी उमीद न सरकारको थी और न जनताको; और उन दोनो वर्गोंकी गतिविधिसे मालूम भी ऐसा ही होता था। गोरी फौजने आकरके सव जगहका रंग बदल दिया। जो गोरे जहाँ-तहाँ पड़े थे उन्हें मैदानमें उतरनेका उसने वल दिया और हिन्दुस्तानी फौजमे भी राजभक्ति जगाई। पुलिसको तो राजभक्तिका नशा पिलाकर उसने सनका दिया।

१४ अगस्तको रांचीसे वड़ी तादादमें हरवे-हथियारसे लैस गोरे आये और यहासे चारो ओर जाने लगे। रेलसे यथासमय यथास्थान पहुँचना असभव था। इसलिये उन्हें जल-पथसे जाना पडा। आई० जी० एन० कम्पनी जिसे कारकम्पनी भी कहते हैं, वड़ी चुस्तीसे उनकी सेवा करने लगी। इनके तीन वड़े-वड़े जहाज भामो, आरडॅमॉरनॉक और आरलॅमॉन्ट गोरोंके साथ साथ टैंक, मशीनगन और ट्रक वगैरहको ढोनेमें रात-दिन व्यस्त रहने लगे। गंगा और सरयू होकर शस्त्रास्त्र सुसज्जित गोरोको इनने ही मुजफ्फरपुर, छपरा, भागलपुर, मुगेर, वलिया और गोरखपुर जिलोंमें पहुँचाया। दो दिनोसे पटना निवासी

तोड-फोडमे लगे थे—पसीनेसे लथपथ और इसके पीछे पागल। पर सुरक्षित आई० जी० एन० कम्पनीके जहाज इनकी समझदारीपर भोपू बजाते और गोरोको लाद-लाद चल देते। इसके छोटे-छोटे जहाज चन्डा, चेतल्ला और पॅल्लास नदीमे घूमते रहते और जहाँ कहीं हिन्दुस्तानियोकी नाव देखते उस पर गोली बरसाते। कितनी नावोको इनने जलाया, कितने नाविको और उनपर सवार लोगोको मौतके घाट उतारा—कहना कठिन है। मौजे पतलपुरका शिवकुमार बिन्द लिखता है कि पटनासे स्कूलियाको चढ़ाकर मै छपरा ले गया और लौटते समय मैंने बबुरामें नाव लगाई। तुरत कारकम्पनोका जहाज पहुँचा। लोग जहाज देख भागने लगे। मैने भी अपनी नाव हटायो। फिर तो जहाज परसे गोरे गोली चलाने लगे। हमलोग नाव खेना छोड़ भीतर घुस गये। पर भीतरसे ही देखा—जहाजपरसे फटफटवा उतरकर तेजीसे मेरी नावकी ओर आ रहा है। हमलोग एक दीआरमें उतरे और भागे। गोरोने हमारा पीछा किया पर आगे दलदल देख लौट गये। फिर जहाज भी मेरी नावके पास आया जिसपरसे गोरोने पेट्रोल और किरासन तेल छिड़क कर मेरी नावमें आग लगा दी। जहाज ठहरा रहा जबतक मेरी नाव जलती रही। जहाज फिर बबुआरा घाट लौटा जहासे गोरे गावमे घुसे, कुछ घरोको जलाया और कुछ गोलियां भी चलाई।

इसी तरह काशी विश्वविद्यालयके कुछ बिहारी विद्यार्थी नावसे घर लौटे आरहे थे। महनारके श्रीभोलानाथ 'विमल' कहते है कि हमने नावपर तिरगा झडा फहरा रखा था। कारकम्पनीके एक जहाजने उसे देखा और उसपर गोली बरसने लगी। हमलोग तो भीतर पेंदेसे जा चिपके। गोलिया नावको छेदती हुई हमारे सर परसे उड़ रही थीं। नाव तो छलनी हो गई पर हम सभी बच गये! हां! कुछके चमड़े जहा-तहां छिल गये।

पर सभी भोलानाथ 'विमल' जैसे भाग्यवान न थे। उनकी नावोपर तो गोलियां चलीं, वे मारे गये और उनकी नावे डुबा दी गईं। आई० जी० एन० कम्पनीके एक नजदीक-से-नजदीकको कितनी ऐसी घटनाओकी जानकारी है।

पटनाको काबूमे करके गोरे जिलाके भीतर घुसे। शहरमें उनको रक्तपात करनेका मौका न मिला। हॉ! रातको कालिज एरियाके सामने गंगा किनारे लगती हुई नावपर इनने गोली चलाई और दो मछुओके प्राण ले लिये।

कुछ गोरे अपनी खास गाड़ीपर बिहटासे वापस आ रहे थे। सदीसोपुरके

पास लाइनपरसे हटते कुछ लोगोंको देख उनने गोली चलाई जिससे सदीसोपुरके श्रीगंगाप्रसाद तुरत और श्रीगोपालजी अस्पताल जाकर दो महीने बाद और शेखपुराके श्रीअर्जुन प्रसाद शहीद हुये।

फुलवारी थानेके बैरिया गावका रामधनी गोप गुलजारबागसे दही बेचकर आरहा था। गोरोंने उसे अगमकूपके पास पकड़ लिया और जाम हुए-हुए रास्तेको साफ करनेके लिये कहा। गोपने इनकार किया जिसपर एक गोरेने जबरदस्ती उससे रास्ता साफ करवाना चाहा। गोप उसे पटककर जल्लेकी ओर भागा। बाढ़का पानी उधर फैल रहा था। उसमें डूब देता तैरता हुआ वह आगे बढ़ रहा था। गोरोंने लगातार उसपर गोलियां चलाईं और एक उसके सरसे पार कर ही गई। रामधनी गोप इस तरह शहीद हुआ।

विक्रम थानेमें पहुँचे वे १६ अगस्तको। दारोगा साहब दल सहित साथ थे। पहले नगहर गाव मिला। वहां गोरोंने लोगोंको खूब पीटा। फिर अपने हाथों अपने घरका खपरा बरबाद करनेके लिये कहा। जिनने खपरे फोडनेमें सुस्ती दिखलाई उनपर कुन्देका वज्र-प्रहारका हुआ। फिर श्रीकुलदीप भगतके बगलेको गिरा दिया। उसमे सत्याग्रह शिविर भी था। भगतजीके मकानको लूट लिया। विक्रम बाजार भी लूटा गया। गोरे पीटनेमें रहते और दारोगा दल लूटनेमें रहता। यहां भगवानसाहु, हरिहरसाहु, खेमाजीतसाहु और जानकीशरण मिश्रके मकान लूटे गये। खादीकी दूकान भी लूटी गई।

दूसरे दिन फौज पुलिस लेकर गोड़खड़ी पहुँची अंबिकादत्त त्रिपाठीका मकान तोडा। कावा और राजीपुरके भी कई घर उनने लूटे और जलाये।

पालीगजमें गोरे पहुँचे दारोगा श्रीमहेन्द्र सिहके साथ। राजासाहु, अनजाने रामवृक्ष सोनार, राम स्वरूपलाल, बाबूलाल साहु, लोटनी साहु तथा गिरजा साहु थाने पकड मंगाये गये और बेतरह पीटे गये। चार दूकानें लूटी गयीं। गडहनी और लोटनी साहु, शिवशकर साहु, शिवनाथ साहु रामसेवक सिंह पालीगंजके घर लूटे गये।

२८ अगस्तको गोरोंने मनेर गावको रातके ३ बजे जा घेरा। भोरको निकलते हुए महम्मद इस्माइल खां गोरोंकी गोलीके शिकार बने। लोगोंको काफी मारा पीटा और आठ व्यक्तियोंको गिरफ्तार किया। फिर मनेरमें ५ घरोंको लूटा। नारायणसाहु और सीताराम गुप्ताकी काफी सम्पत्ति

गई। ११ मोचियोंके घर पेट्रोल छिड़ककर जला दिये गये।

सितम्बरमें फिर विक्रममे गोरे घुसे। श्रीजगनारायण सिह सभापति, थाना कांग्रेसका मकान तोड़ा गया। भंसाराके श्रीअनन्त मिश्रजीका घर भी जो दानापुर सब जेलसे फरार होगये थे, तोड़ा गया और उसके सामान जला दिये गये। श्रीकन्हाई सिह और श्रीईश्वरी सिहके घर भी लूटे और बरबाद किये गये। उनके माल मवेशी जब्त करके कुर्क कर दिये गये। कन्हाई बाबूके ६५ बीघे खेतकी उपज कुर्ककर दी गई। रामचरित्र सिह, यशोदानन्दन उपाध्याय और जगबली उपाध्यायके घर लूटे और बरबाद किये गये।

बादमे गोरे पहुँचे ठीक जब १६ अगस्तको कांग्रेस-मैदानमें सभा हो रही थी। कलक्टर और एस० डी० ओ० साथ थे। सभा भंग होते न देख उनने गोली चलाई जिससे श्रीनारायण साहु वहीं मारे गये और बालकृष्ण सिह, सिदिकपुर; राघोगोप (मसूदचक) रामचन्द्र साह (वाजिदपुर) और प्रगास दुसाध (सिकन्दरा) घायल होकर अस्पताल पहुँचाये गये। एस० डी० ओ० के साथ गोरे शहरपर भी टूटे। लोगोंको खूब पीटा, अथमल गोलामें श्रीसत्यनारायण सिहको मार मारकर वेहोश कर दिया और शहरीमे राणा शिवलाखपति सिहके घरका सारा सामान लूट लिया।

२७ अगस्तको पुलिसने पंडारकमें एककी जान लेली। अपनी लॉरीको स्कूलके पास छोड़कर पुलिसवाले गांवमें घुस गये और लॉरीकी हिफाजतके लिये एक सिपाही रख गये। उस सिपाहीने बीड़ी सुलगानेके लिये अक्षयसिह बढ़ईको जो तम्बाकू पी रहा था अपनी दूकानके बाहर आनेके लिये कहा। पर ७ बजे शामसे ७ बजे सुबह तक कर्फ्यू ऑर्डर था। इसलिये अक्षयसिह अपनी दूकानके बाहर नहीं निकला। सिपाहीने उसे गोली मार दी और वह घायल होगया। लोग जमा होगये और कुछ लोगोंको गिरफ्तार करके जब दारोगा साहब लौटे तब उनसे सबोंने अक्षयसिहको अस्पताल पहुँचानेके लिये कहा। दारोगा साहबने उनकी प्रार्थना नहीं मानी। आखिर लोगोंने खटोलीपर अक्षयसिहको अस्पताल पहुँचाया। पुलिसने कहा कि लोग लॉरीको जला देना चाहते थे। इसलिये गोली चली थी और उसने वहां दूसरे दिन ५ आदमियोको गिरफ्तार भी किया।

६ सितम्बरको श्रीब्रह्मदेव सिहकी खोजमें जो मोकामा स्टेशन तिजोरी केसके अभियुक्त थे, गोरे पुलिसके साथ रैलो आये और घेर लिया। उनने पुरुषोंको इकट्ठा

करके एक मैदानमें बिठाया और चारो ओर मशीनगन लगाकर चेता दिया कि जो उठेगा सो मार डाला जायगा। फिर वे सब गांवमें घुसे; श्रीगजाधर सिंह, नाथो सिंह और उमासिंह लूटे गये; स्त्रियोंपर भी अत्याचार हुआ।

मोकामाघाटमें तभी गोरे पहुँचे जब स्टेशनकी लूट हो रही थी। उनने भीड़ पर दनादन गोलियाँ छोड़ीं। रामस्वरूप कहार और कारी मलाहके अलावा तेईस और मरे जिनका पता न लगा। फिर तीन आदमी प्रह्लादपुरमें मार डाले गये। जानवर तो कितने ही भून दिये गये। मोकामा जंकशनपर भी गोरोंने अन्धाधुन्ध गोली चलाई पर वहाँ किसीको मार न सके। फिर पश्चिमकी ओर बढ़े और रेलवे लाइनपर बच्चा लिये जाती हुई एक मुसहरनीको उनने गोली मारी। मा बच्चे दोनोंकी जान तुरत चली गई। पर सब गोरे डिस्ट्रिक्टबोर्डकी सडकपर मोकामाघाटके पास पहुँचे तो जनताकी बड़ी भीड़ उनकी ओर दौड़ी जिसे देख वे सब फिर स्टेशन भाग आये।

१८ अगस्तको एस० डी० ओ० के साथ गोरे मोकामा पहुँचे। मोकामा बाजारमें छडी और लोटा लिये हुए श्रीब्रह्मदेव सिंह मिले। एस० डी० ओ० ने छड़ी मागी। उनने नहीं दिया। एस० डी० ओ० ने उनपर हण्टर चलाया और उनने एस० डी० ओ० पर लोटा। इसपर एक सिपाहीने उन्हें तीन गोलियां चलाकर बेतरह जखमीकर दिया। टॉमियोंने टाग-टूगकर उन्हें मोकामा अस्पताल पहुँचा दिया। पर घाव सख्त था। इसलिये वे पटना अस्पताल लाये गये जहाँ एक अरसा इलाज करवानेके बाद वे चंगे हुए।

बादको पुलिसके साथ-साथ गोरे गाँवमें घूम-घूमकर लोगोंपर अत्याचार करने लगे। औटाके श्री रामसिंहपर उनने भीषण अमानुषिक अत्याचार किया। रामसिंह गोरोंसे मिल गये थे और अपने देशवासियोंके घरकी तलाशी करवाकर लूटका माल बरामद करवाया करते थे। लोगोंने उनका भी भण्डाफोड कर दिया, गोरोंको बतलाया कि इनने भी काफी माल लूटा है। फिर तो गोरोंने इन्हें बेतरह कई दिन पीटा और अन्तमें गुदामार्गमें नोकीली लकड़ी घुसेड मार डाला।

मुकामामें श्रीकामो सिंह पकडे गये जिन्हें पैरके बल सर नीचा करके लटकाया गया। फिर उनपर बेतरह मार पड़ी।

मूसन धानुकने जो फौजमें भर्ती हो गया था अपने फरीक जुलुमसिंह तथा उनके तीन लड़कोंको काफी परेशानीमें डाला। ये लोग गिरफ्तार हुये और

स्टेशनपर रक्खे गये। श्री पं० केशवप्रसाद शर्मा भी वहां पकड़ लाये गये। सबोंको दो-दो छटाँक उड़द उबालकर खानेको दिया गया। मूसन धानुकने कितने औरोंको भी पकड़वाया जिससे खीझकर लोगोंने उसका घर जला दिया।

१६ अगस्तको अमरीकन सेना विहार शरीफ आई और लोगोंके आने-जानेपर रोक लगा दी गई। नालन्दा कॉलिजके मैदानमें ऐसी रोकके विरोधमें सभा हुई जिसमें श्री महेशलाल आर्य्य और श्री ओमप्रकाश आर्य्यका व्याख्यान हुआ। सैनिकोंके आक्रमणसे श्री रुद्रविहारी शरण दारोगाने लोगोंको बचा लिया और सिर्फ ओमप्रकाशको गिरफ्तारकर लिया। दूसरे दिन बिहार खादी भंडारके मैनेजर श्री जितेन्द्रकुमारकी पत्नीने जलूस निकाला। वे गिरफ्तार न हुईं पर साथके सभी पुरुष पकड़ लिये गये।

हिल्सामें फोर्स पहुँची १७ अगस्तको। उसके सहारे पुलिसने लोगोंको लूटना खसोटना शुरू कर दिया। २० अगस्तको पुलिस कराये परसुराय पहुँची और उसने गाँवको इस तरह लूटा कि किसीके घरमें खाने पीनेके लिये बर्तन न रहा। उसी दिन हिल्सा निवासी रघुसाहु और उसके दोनो लड़कोंको बड़ी बेरहमीसे पीटा गया। महाबीर लोहारको यह अभियोग लगाकर कि उसने तोड़-फोड़के लिये औजार दिये खूब पीटा गया, जब वह अशक्त होकर गिर पड़ा तब उसके मुंहमें पेशाब कर दिया गया और फिर उसे जेल भेज दिया गया।

मईग्राम, योगीपुर, चिकसौरा और हिल्सा बाजारमें काफी लूट-पाट हुई।

एकंगर सरायमें १ सितम्बरसे गिरफ्तारीकी धूम मची। कितने अभियुक्तोंके परिवारको घरसे निकालकर उनमे ताले लगा दिये गये। थानाकी हिफाजतके लिये पुलिसने इलाकेके लुटेरोंको इकट्ठाकर लिया था जो वहाँके दूकानदारोंको लूटा करते। गाँवोंमें भी इन लुटेरोंने जनताको बरबाद करना शुरूकर दिया। सैंयां भये कोतवाल उन्हें अब डर काहेका था।

चडी थानाकी जनतापर डाकुओं और पुलिस दोनोकी शनि दृष्टि पड़ी थी। १७ अगस्तको तो विष्णुपुर और गौरी आदि स्थानोंके बदमाश माधोपुर बाजार लूटने आये। जनताने सामना किया। तीन डकैत मारे गये, तब बाकी जान बचा भागे। वे सब केवल एक दूकान लूट सके। पर नूरसरायवाले सामना करते हुए भी कुछ न कुछ लुट गये। मौसमपुरवालेका भी यही हाल हुआ।

१८ अगस्तको पुलिस नगरनौसा आई और कांग्रेसवालोंके घर लुटवा दिये।

वह विष्णुपुर ग्राम गई और माधोपुर बाजार लूटनेवालोंके घर भी लुटवा दि । दो दिनके बाद श्री जगन्नाथ पाठक सहायक मंत्री थाना कांग्रेसको पुलिस थाना पकड़ ले आई और खूब पीटा ।

पटना जिलामें सबसे अधिक अत्याचार हुआ फतुहाकी जनतापर । परसा गांवको गोरोंने लूट लिया । एनिओको पुलिसने लूटा । उस्फा नामक गावके प्रसिद्ध कांग्रेसी भागवत शरण त्रिपाठीका घर तोड दिया गया । पर यहांके महन्थ शंकर गीरको जैसी यत्रणा दी गई वह रोंगटे खडी कर देने वाली है । महथ शकर गीरजी जिनका पहला नाम बिहारी तिवारी है लिखते हैं—"१३ अगस्तको फतुहा कनाडियन हत्याकाण्ड हुआ । मैं सपरिवार २२ अगस्तको अपने मठ पोखरैराके लिये रवाना हुआ । रास्तेकी गडबडीके कारण मैं २४ अगस्तको मठ पहुँचा ।

"११ सितम्बरको रात अढ़ाई बजे मेरा मठ घेर लिया गया । × × × पहले मेरे छोटे भाई रामचन्द्रको गिरफ्तार किया गया जो औरोंके साथ मठके बाहर सो रहा था । जब प्रात काल हुआ तब फाटक टूटने लगा । आवाज सुन कर मैं उठ बैठा और आकर फाटक खोलना ही चाहता था कि फाटक तोड दिया गया । मालूम होते ही कि मेरा ही नाम बिहारी महंथ है मुझे मेरी ही धोती खोलकर बॉध दिया गया और उसके बाद वहॉ लाकर पटक दिया गया । जहॉ मेरे छोटे भाई बंधे पडे थे । मेरे छोटे भाईको फिर भीतर लाया गया और उसपर निर्मम प्रहार होने लगा । प्रहार तो मैं नहीं देख सकता था किन्तु उसका आर्त्तनाद सुनकर मैं विह्वल हो रहा था । × × मैं भी भीतर लाया गया । भीतरका दृश्य देखकर मैं सहम गया । भाईका अग प्रत्यग लहूलुहान था और मेरे घरकी स्त्रिया चुपचाप यह दानवी-लीला देख रही थीं । मुझे भी उसी स्थानपर पेटके बल सुला दिया गया । चार अगरेज मेरे पैरपर चढ़े थे और चार गर्दन और हाथ पकडे थे । राइफलके सगीनसे मेरी पीठसे जांघ तक उधेड़ दिया गया । उसी वस्त्रहीन दशामें दोनो भाई मोटरपर लादे गये । इधर हम दोनों भाइयोंको टार्चर किया जा रहा था उधर मेरा घर लूटा जा रहा था । स्त्रियोंके शरीरपरके गहने उतरवा लिये गये । कपडे बाहर निकाल जला दिये गये । मैं जब मोटरपर लादनेके लिये बाहर लाया गया तो देखा कि जितने भी छप्परपोश मकान है सभी धू धू करके जल रहे हैं । × × × समस्तीपुरमें जब पहुंचा तब दोनों भाइयोंको नगे ही हाथमें रस्सा बॉधकर प्लॉटफार्मपर घसीटते हुए रेलवे थाना लाया गया । अब हम पाच व्यक्ति थे । सुबहसे

दस बजे रात तक हमलोगोंको तब तक टार्चर किया जाता जब तक हमलोग बेहोश नहीं हो जाते। जब पहला बेहोश हो जाता तब दूसरा लाया जाता।

"दूसरे दिन सबेरे फिर पीटना प्रारम्भ हुआ। जख्मोंपर छिड़कनेके लिये जब एक सज्जन सिपाहीने थोड़ा सा नमक दिया तब वह बेचारा फटकारा गया। मेरे जख्मोंपर नमक छिड़का गया, चाय उड़ेल दी गई और सारे शरीरको सिगरेटसे दागा गया। पीनेको एक बूंद पानी भी न दिया गया।

"१२ सितम्बरको केवल मैं अपने छोटे भाईके साथ पटना लाया गया। साथमे मैगवार्री मौरिंगुस्टन और चार दूसरे-दूसरे अंगरेज थे। राहमें सबोने हमे इतना पीटा कि हम बेहोश हो गये। जब होशमें आया तब देखा दो मिलिटरी डाक्टर मेरे जख्मोंपर पट्टी बाँध रहे है।× × × ×करीब छः महीनेके बाद जख्म आराम हो गया।"

ये मंहथ शंकर गीरऔर पं० रामचन्द्र तिवारी, श्री जे० एन० बोसके हवाले किये गये जो पटना रेलवे पुलिस इन्स्सपेक्टर थे। उनने देखा कि इन दोनोकी देह ही नहीं गुप्तांग भी क्षत विक्षत हो रहे हैं और दोनों मरणासन्न है। उनने इनके दवा दारूका इन्तजाम किया। अधिकारियोने जे० एन० बोस महाशयके आचरणकी निन्दा की और दारोगा बनाकर उन्हें हजारीबाग भेजवा दिया।

शाहाबाद

आरामे छावनी है। कुछ गोरे थे ही और १४ अगस्तको तो मालूम हुआ जैसे वे सब जगह छागये। उस दिन ही अहीरपुरवामें उनने मकूना सिह और उसकी बुढ़ियाको अपनी राइफलका शिकार बनाया था। तबसे शाहाबादमे गोरोकी राइफल गरम बनी रही। दूसरे दिन अपनी गाडीसे उनने देखा कटॅयाके पास रेलवे लाइनपर जो जमा थे उनकी गाड़ीके आनेपर भाग रहे हैं। फौरन उनने राइफल दागी, एकको घायल किया और श्रीसहदेव गिरको मार गिराया। फिर उनकी गाड़ी बिहिया आई। हाटका दिन था। ज्योही उनकी गाड़ी फाटकसे गुजरने लगी कि लोगोने उनपर ईंट पत्थर बरसाना शुरू किया। उनने भी अपने ढंगसे जवाब दिया। फलस्वरूप बिहियाके शिवपूजनजी और केवटियाके रामदेवजी और चार अन्य लोग मारे गये।

गोरोका एक दल शाहपुर बेंलौटी पहुॅचा, कई लोगोके घर जलाये जिनमे त्रिपाठी परिवारके घर भी थे। वहां आग बुझानेकी चेष्टा करते हुये एक आदमीको उनने गोलीसे मार डाला।

१६ अगस्तको गोरोंका एक दल डुमरांव आया। वहां उसने कई घर

जलाये और कई घर ढहवा दिया और निरखू साहुको मार गिराया।

इसी दिन रेलवे लाइनसे गुजरते हुये राजेन्द्र नामक विद्यार्थीको जानसे हाथ धोना पड़ा। नोखा थानेमे गोरे और बलूची १६ अगस्तको ए० एस० पी० के साथ आये। नहर औफिसमे जो कांग्रेसका ताला लगा था उसे तोड़ा, झंडेको गिराकर पैरों तले रौंद डाला। फिर ये अबदुल्ला भठियाराके घर घुसे और उसकी बहनको जिसकी गोदमे एक सालका बच्चा था पीटना शुरू किया। छटपटाहटमे बच्चा हाथसे गिरा और ऐसी चोट आई कि सभाले न सभला; मर गया।

फिर बाजारकी आम लूट हुई। मार पीट भी काफी हुई। श्रीयमुना प्रसादकी छातीपर ए० एस० पी० चढ़ बैठा और ऐसा दबाया कि उनकी पसली टूट गई जब कि हंटरके मारसे उनका सर पहलेसे जख्मी हो गया था और दो दांत टूट गये थे।

नवानगरमें गोरे १६ अगस्तको पहुँचे। एक राहीको चू कि वह भागा उनने अपनी गोलीका शिकार बनाया। बॅसछेवाके पास सड़क कटी थी जिसे मरम्मत करनेका हुक्म एक साधुको दिया। इनकार करनेपर उसे बुरी तरह पीटा और दो एक जगह उसका सर फोड़ दिया। फिर खुद सड़क ठीक करके ये आथर आये जहांसे उन्हें पैदल गांव आना पड़ा। आथरवालोने रास्ता इतना खराब कर दिया था कि लौरी किसी तरह आगे नहीं बढ़ सकती थी। गांवमे घुसते ही गोरोने देखा आथरवाले जमकर सामना करनेको तैयार हे। फिर तो उनकी ओरसे दनादन गोलिया चलने लगीं। फलस्वरूप रामेश्वर पाण्डेय, शिवपूजनराम, दुलार लोहार और चगन अहीर तत्काल शहीद हो गये।

ब्रह्मपुर थानाके निमेज नामक गांवमे गोरोंकी एक बड़ी जमात पहुँची और दो तीन बजे रातको ही गांव घेर लिया। साथमे मजिस्टर इलियट भी थे। गावके चारो ओर मशीनगन, लूईगन, फिट कर दिये गये। आतंकित जनता नदी तैरकर भागने लगी। उनपर गोरोने गोलियां बरसाई पर कोई मरा नहीं। गोली चलाते वक्त ब्रह्मस्थानके चौतरापरसे एक गोरा फिसलकर नदीकी तेज धारामे गिरा और विलीन होगया।

गोरे श्रीबच्चन तिवारीको पकड़ना चाहते थे। वे हाथीपर चढ़कर कहीं चले गये। उनके मकानको गोरोंने डिनामाइटसे उड़ा दिया।

उसी दिन सपही गांवमें बलिया स्टीमरसे गोरोका एक दल पहुँचा। बच्चा पाण्डेय और लल्लन सिंहके घर जलाये गये। चीजें लूट ली गई। छ रोज बाद बड़ी नैनीजोरमें दीघाके स्टीमरपर गोरोका गिरोह पहुँचा। नगीना मिस्त्रीके घरको लूट लिया। उनका पचीस तीस हजारका माल लुट गया। गोरोंने कई व्यक्तियोको पीटा भी।

१६ अगस्तको डुमरांवमे थानाके कोरानसरैयामे गोरोने अन्धाधुन्ध गोलियां चलाईं। सुखारी लोहार गोलोसे मारे गये। भिखारी कमकरकी बांह गोली लगनेसे बेकार हो गई और एक बुढ़ियाका मुंह टेढ़ा होगया। २० अगस्तको चारबजे सबेरे नावडेरा पो० पुरानाभोजपुरमे एकाएक पुलिस इन्सपेक्टर देवनाथ सिह, इलियट साहब और ४० गोरोने धावा किया। उनने साधु अहीरको अपनी गोलीका शिकार बनाया। रामदौर अहीर गोली खाकर दो दिनोके बाद मरे। सात गोलोसे घायल हुये। और ३५ गांववाले कुन्दोकी मारसे। वहां तो मार खाते खाते जब लोग बेहोश होजाते तब दियासलाई जलाकर उनके शरीरको दागा जाता जांचनेके लिये कि वे जिन्दा है कि मर गये।

डुमरांव हाइस्कूलके हेडमास्टरपर भी कुंदोकी मार पड़ी। ढेकाइचमेभी गोरोंका धावा हुआ; वहां १६ आदमी पकड़े गये।

सड़क कटी देख गोरोका एक दल संझौली आया; सड़क मरम्मत करवानेके लिये लोगोको बुलाया और उनके नही आनेपर गोलियां छोडी और दो के प्राण ले लिये। फिर कवईके टूटे पुलसे जब गोरे गुजरने लगे तो एकको जो पुलके पास खड़ा था भागते देखा और फौरन उसे अपनी गोलीका शिकार बनाया

२३ अगस्तको जोगनीमें गोरे पहुँचे। श्रीजयराम द्विवेदीको पकड़ना था। उनका घर घेरा गया और एक आंगनमें रहनेकी वजहसे श्रीशुकदेव द्विवेदी भी घर सहित घिर गये। आप छप्परपर फांद गये और भागनेकी चेष्टामें गोलीके शिकार होगये।

अभियुक्तोकी तलाशमें ही गोरे जमोरा आये जहां तीन आदमियोंको मार डाला और धनडीहामे एकको। फिर चांदीमे हरिनन्दनजीके लड़के और नरवीरपुरमे मिट्ठू महतो उनकी गोलियोके शिकार हुये।

१५ सितम्बरको १४ लॉरियोपर गोरे आये और लसांड़ीको चार बजे भोरमें ही घेर लिया। गोवके चारो ओर मशीनगन फिट करके वे बेतरह झूठा फायर करने लगे। दूर दूरके लोग भाग पड़े और लसांड़ीके लिये चिन्तित हो उठे। इधर दिन उठा और गोरे लसांड़ी गांवमें घुसे। एक बूढ़ा मिला जिससे स्वराजियोका घर बतलानेके लिये कहा गया। बूढ़ा अनजान बन गया। गोरोने क्रोधमें आकर उसे कुएँमें धकेल दिया; पर पीछे निकाल बाहर कर छोड़ दिया। फिर वे घर घर घुसने लगे। कुछ लोग घबड़ाये और कुछ लोग बौखलाये। तुरत एक भीड़ इकट्ठी होगई जिसपर गोरोने गोलियां चलाईं और श्रीगिरिवर सिह और एक स्त्रीकी हत्या कर डाली। इसी समय गोरोंमें एक सनसनी फैल गई। दारोगाने कहा—बेहिसाब लोग आपसे लड़ने आरहे हैं।

डंकेकी आवाजसे हवा काप रही थी जिसमें ललकारें गूंज रही थीं और अनगिनत लोग लाठी, भाला, गँड़ासा और तलवार भाजते उछलते कूदते गोरोंसे अपने भाई बन्धुओंकी हत्याका बदला लेने दौड़े आ रहे थे। पच्छिममें ढकणी, डुमरिया, बेरथ और रतनाढके लोग थे और पूरबमें चासी बनौलीके। सबके सब किसान—अपने देशकी मिट्टीके लिये कट मरनेवाले! मशीनगन गरजा—एक बार नहीं, अनेक बार, पर लोगोंका दौड़ना धीमा न पड़ा। समझानेवाले जिनमें कई कांग्रेसके कार्यकर्त्ता भी थे, हार मान पीछे रह गये। फिर तो सभी तरहकी जितनी बन्दूकें थीं उनपर फट पड़ीं। गोलियां उन्हें फाड़ खाने लगीं। सबके सब भागे। कुछको खदेड़ते हुये गोरे ढकणी पहुँचे और जैसे ही टोलेमें घुसे कि महादेव सिंहने भाला मार एक गोरेको घायल कर दिया और तुरत फिर भाला संभाला और दूसरा गोरा घायल हुआ। तत्काल कई गोरे महादेव सिंहपर टूट पड़े। गोलीने उसका प्राण ले लिया और सगीनने पेट फाड़ दिया। चासीवाले जरा डटे, इसलिये मारे भी गये और गिरफ्तार हुये। लसाड़ीके दोको छोड़कर इस मानव-मशीन युद्धमें १० मानव खेत रहे—चासीके चार और ढकणीके छ.। शीतल लोहार, रामधारी पाण्डेय, रामदेव और केश्वर चासीके शहीद थे और जगन्नाथ सिंह, सभापति सिंह, महादेव सिंह, शीतल सिंह, वासुदेव सिंह और केश्वर सिंह ढकणीके।

बलीगांवमें गोरे पहुँचे १९ सितम्बरको। छट्ठन सिंहको बन्दूकके कुन्दोंसे इस तरह पीटा गया कि बेचारे दुनियांसे चल बसे।

२८ सितम्बरको आरामें एक सनसनी खेज घटना हुई।

गोरे और बलूचियोंके आतंकसे शहर थर्रा रहा था। न कौमी नारा, न राष्ट्रीय झंडा, न कांग्रेसी कार्यकर्त्ता—शहर सुनसान। यकायक कचहरीमें आये हुये लोग चौंक उठे। देखा—चार स्वयसेवक परचे बांट रहे हैं और नारा लगा रहे हैं—"रोल (Revenue) मत दो"; "रोल देना पाप है"। आगे आगे एक अधेड़ हैं श्री कैलाश पति सिंह और पीछे पीछे तीन स्वय-सेवक। सबोंके गलेमें फूलकी माला, सरपर गान्धी टोपी, हाथमें राष्ट्रीय झंडा। कुछ ही देर हुई होगी कि एक हंटरवाले सफेदपोशने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और एस० डी० ओ० की कोठीपर ले आया। वह उनके मुंहमें हंटर घुसेड़-घुसेड़कर उनको चुप करना चाहता था पर वे सब कभी चुप न हुए रास्ते भरमें नारा लगाते आये। एस० डी० ओ० ने उन्हें एक कतारमें खड़ा किया, पूछा किसने परचे

दिये? कहाँसे झंडे आये? किसने यहाँ भेजा? सबोंका एक ही जवाब था—महात्मा गान्धीके हुक्मसे जनताने भेजा। ए० एस० पी० भड़का। ठोकर और घूसोंसे मारने लगा। फिर उसने रिवाल्वरका निशाना करके पूछा—बतलाओ! परचे किसने दिये नहीं तो मार दूँगा गोली। पर स्वयंसेवकोंके मुंहसे सचाई नहीं निकली। साहब दाँत पीसने लगा। फिर बलूची आये; सबोंको घसीट ले गये।

सिनहाघाट, बड़हरा थानाके जीवित शहीद गुलाबचन्दलालका बयान है, "...चार आदमी मिलकर दोनो हाथ और पैरको अपनी-अपनी शक्ति भर अपनी अपनी ओर खींचते थे। दो आदमी बगलसे होकर डंटासे पीठपर मारते थे। एकबार मेरे मुंहसे जोरोंकी आवाज निकली। उन्होने आवाजको बन्द करनेके लिये मुंहमें कपड़ा कोंच दिया। उस समय मुझे ईसा-मसीहका दृष्य नजर आने लगा। मैं उनकी तकलीफोंसे अपनी तकलीफकी तुलना करने लगा। ...मैं अपने जीवनकी सारी आशाओंको त्यागकर उसीमे लीन हो गया; बलूची बारबार पूछते कि परचे किसने दिये पर जो ईसा-मसीहमे लीन सो उत्तर क्या दे?" गुलाबचन्दको बलूची उठा-उठाकर पटकते। जब वह अधमरा-सा हो गया, उसपर उनने एक बाल्टी गरम पानी उड़ेल दिया। ......जेलके अस्पतालमें गुलाबचन्द डेढ़ महीना खाटसे चिपका रहा। और कैलाशपतिकी कुछ न पूछिये! एक 'प्रत्यक्षदर्शी कहता है कि कैलाशपतिजीके हाथपर कई डंडे लगे तब तो हाथसे राष्ट्रीय झंडा छूटा पर मुंह कभी बन्द नहीं हुआ। उनपर मानो लाठियों और ठोकरों और घूसोंकी वर्षा हो रही थी। देखकर दिल दहलता था। अन्तमे वे गिर गये और छटपटा-छटपटाकर शान्त होगये। शव परीक्षक सिविल सर्जनने लिखा है कि कैलाशपतिके दोनों हाथ चूतड़ बेतरह सूजे हुए थे। रगोंके फट जानेसे मांसमे खून जम गया था जिससे समूचा चूतड़ नीला-काला दीख रहा था। उसपर लाठी या बेंतके लगभग एक दर्जन निशान थे। उनका बायाँ पंजरा और छातीका ऊपरी हिस्सा दोनो कुचल गये थे और खून जम जानेसे बदरंग हो रहे थे। वहाँकी तीसरी पसली भी टूट गई थी। दाहिना भाग भी कुचलकर बदरंग हो रहा था और वहाँकी ६ वीं तथा दसवीं पसलियां टूट गई थीं। निचला होठ पूराका पूरा थकुच गया था। बांयी तलहत्थीका ऊपरी हिस्सा भी कुचला हुआ था जहाँकी दो हड्डियाँ टूट गई थीं। फिर समूची पीठ लाठीके निशानसे भरी हुई थी।

लड़ाईमें भर्ती होकर जिस अंगरेजी सरकारके लिये कैलाशपतिजीने १६१४

से १९१९ तक अपना खून बहाया, उसी अंगरेजी सरकारने १९४२ के २८ सितम्बरको ५२ सालकी उम्रमें उनका खून कर दिया बड़ी बेरहमीसे, पागल कुत्तेकी तरह नोच-नोचकर। उस लडाईमें वे अंगरेजोंकी आजादीके लिये लड़ रहे थे और इस लड़ाईमें वे अपनी आजादीके लिये लड़ रहे थे जिसके लिये आजाद-पसन्द अंगरेजोंने उन्हें वैसा दण्ड दिया। घोड़ादेई निवासी कैलाशके बलिदानने शाहाबादवालोंको बलवान बना दिया। उनकी निधन-तिथि पुण्य तिथि मानी गई। जिले भरमें जहाँ तहाँ जलूस निकलने लगे।

गयामें जहानाबाद सबडिविजन भीषण अत्याचारका शिकार बना। अरवलकी श्रीमती देवलगन देवीका बयान है कि २२ अगस्तको श्री रामाधार सिंह दारोगाने गया मेरे पति श्री केश्वर पासमानको थाना पकड़वा मगाया और पीटना शुरू किया। जब वह पीटते पीटते थक गया तो चौकीदारोंको पीटनेके लिये कहा। इन चौकीदारोंमें एक था फलेरका रसूल मियां और दूसरा था कौनो-कुटीका जिबोधन। अन्तमें मेरा पति गिर कर बेहोश हो गया और थानेमें ही मर गया। उसकी लाश भी मुझको नहीं दी गई। चौकीदारोंके मार्फत चुपचाप जला दी गई।

श्रीमती लक्ष्मी देवी कहती हैं कि मेरे पति कन्हाई साहुको सिपाही लोग पकडकर थाना ले गये जहाँ दारोगा श्री रामाधार सिंहने उन्हें खूब पीटा और पिटवाया। बादको वे जेल भेज दिये गये। फिर दारोगा साहब कई सिपाहियोंको लेकर आये और जबरन मेरे घरमें घुस गये और माल असबाब लूट लिया। इस लूटमें ५२ भर सोना, दस सेर चादीके जेवर तथा बीस पचीस बर्त्तन शामिल हैं।

श्री मुदानी गोपके घरकी किवाड जला दी गई जिससे घरमें भी आग लग गई। और भी १७ आदमियोंके घर लूट लिये गये। श्री रामदेनी सिंह और श्री रामरत्ता सिंहके घर ढाह दिये गये। गया सदरके उन इलाकोंमें जहाँ बागी सरकार कायम हो गई थी उधरके हिन्दू जमींदारोंकी मददसे पुलिसने घोर दमन किया। पठानोंकी भी बडी बड़ी जमींदारिया है पर उनमेंसे एकने भी पुलिसके ऐसे ऐसे कामोंसे दिलचस्पी नहीं दिखलाई। अखौरी प्रयाग नारायणने मैंगराके एक उत्साही कांग्रेस-कार्यकर्त्ता श्री परमेश्वर सिंहको पकडवा कर पुलिसके हवाले किया। इधर बाबू रामभजन सिंहकी प्रेरणासे बभंडीमें एक कांग्रेस-कार्यकर्त्ताका

घर लूटा गया। बिंजुआके सरयू महतो भी पकड़कर पुलिसके पास भेजे गये। इसी तरह स्थानीय जमींदारोंकी मददसे धीरे धीरे उस इलाकेमे पुनः अंग्रेजी सलतनत कायम हुयी।

ग्रैंडट्रंकरोडके चलते औरंगाबाद सबडिविजन अंग्रेज और अमेरीकन फौजकी धमा चौकड़ीका अखाड़ा बन गया। एस० डी० ओ० मि० आइफ इन फौजियोंकी मददसे जनताको दबाते फिरे। आपने डा० रामेश्वर तिवारीकी बंदूक जब्त कर ली और सामुहिक जुर्मानेका शिकार उन्हें भी बनाया। उनका कसूर इतना ही था कि नवीनगर थानापर हमला करनेके मौकेपर स्वयं-सेवक घायल हुये थे उनकी उनने मरहम पट्टी की थी। साथ ही घायल दारोगाकी मरहम पट्टी करना भी न भूले थे। नवीनगर इलाकेके टंड़वा गाँवमे गोरोंने एक धनी बनियाँके घरमें आग लगाई और उसे लूट लिया। फिर गफूर मियाँके घरको जो एक काँग्रेस कार्यकर्त्ता थे जला दिया। वहाँसे आइफ साहब गोरी पलटनके साथ-साथ कुटुम्बा पहुँचे। वहाँ श्री ब्रह्मदेव सिहका घर जलाया, लूटा और बरबाद कर दिया।

औरंगाबाद सबडिविजन

जन्माष्टमीके दिन आइफ साहब गोरों और पुलिसवालोंको लेकर देव आये। वहाँसे पैदल ही कीचड़ और पानीमे छपाके खेलते हुए एरकी आ पहुँचे और उसे घेर लिया। गाँवके लोग जूझनेके लिये तैयार हो गये परन्तु श्री मथुरानाथ तिवारीने गांववालोको समझा बुझाकर शांत किया और खुद आगे बढ़कर गिरफ्तार हो गये। उन्हें लेकर आइफ साहब औरंगाबाद वापस हो गये। और वहाँसे मथुरा बाबूको डेढ़ सालके लिये जेलमे डाल दिया।

सोनपुर

१६ अगस्त सोनपुरवालोके लिये आतंकका दिन था। रेलवे कर्मचारी और खासकरके अंगरेज डर रहे थे कि कहीं कलके खूनका बदला जनता हमारा खून करके न लेवे। श्रीजगदीश शर्मा और श्रीभागवतनारायण सिंह घूम घूमकर उनके डरको दूर करनेकी कोशिशकर रहे थे। एकाएक हाजीपुरसे काफी गोरे आये और आते ही झूठो फायरिङ्ग शुरू कर दी। स्टेशनसे लोग भागे, लूट बन्द हो गई। सर्जेन्ट क्वाटरमे जो अंगरेज जा छिपे थे अब साहस करके निकले। उनकी मेम बच्चोंको लेकर कमान्डरके पास गई और आँसू पोछती हुई अपना दुःखड़ा रोने लगी। कमाण्डर गोरोको लेकर गोला बाजार आया, कुछको बन्दूकके कुन्दोसे मारा और बल्लम सिंहके गोलामें आग लगा दी। पीछे लोगोने आग बुझा दी।

इधर १७ अगस्तसे सोनपुरमें भगदड मच गई और यहाके नामी रईम यमुना प्रसाद और देवकी नन्दन सिंह गोरोंके खाने पीनेके लिये रसद जुटाने लगे उधर बनवारचकमें चीनोकी लूट जारी थी। श्रीरामनाथ सिंह, जयमंगल सिंह और लक्ष्मी मिस्त्री कार्यकर्त्ताओंका सहयोग पाकर बची खुची रेलवे लाइन उखाड़ रहे थे। नयागांवमें भी जीवन था। वहाके लोग मिरचाइका घोल और रोड़ेसे गोरोंको मार भगानेका मन्सूबा बॉध रहे थे। १८ अगस्तको गोरे बनवारचक पहुंचे, खाली आवाज करके लुटेरोंको भगा दिया और नजदीककी बस्तियोंमें घुस कर लोगोंको कुन्दोंसे मारा। फिर सोनपुर लौटते हुये कसमर मौजामें जाकर कुछ झोपडिया जलाई और वहांसे दुधैला बाजार आये। हाटका दिन था। लोग इकट्ठे थे। आवाज भी हो रही थी। गोरोंने समझा, सभा हो रही है। गोली चलाई और दोपू महतोकी जान लेली।

१९ अगस्तको गोरे ट्रेनसे नयागाव और परमानन्दपुर पहुंचे। वहा एकको गोली मार घायल कर दिया। नयागावमें भी एक घरको जला दिया। लोगोंने रोड़े फेंके और गोरोंने गोलिया चलाईं। कई घायल हुये।

२० अगस्तसे तलाशिया शुरू हुईं। लोग लूटकी चीजोंको जहाँ तहाँ छिपाने लगे। रुपये बोरा चीनी बिकने लगी। तौभी कितनोंको गाहक नहीं मिला। फिर चीनी नदी तालाब और कुएँमें डाल दी गई। सैकड़ों कुओंका पानी शर्बत जैसा होगया। बादको उसमें कीड़े पर गये। पानीके अभावसे लोग अकुलाने लगे और उस पानीको पीकर कितने जानवर मर गये। पर यह तो आगेकी बात है। उस दिन तो सारी आफत आदमियोंपर ही आई। बाबू भगेलू सिंह, रईस, मुलाकात करनेके बहाने बुलाये गये; बेरहमीसे पीटे गये और जेल भेज दिये गये। फिर अनेक लोग गिरफ्तार कर लिये गये और सोनपुर शान्त-सा होगया।

१७ अगस्तको बड़ी बडी मोटर गाड़ियोंको लेकर गोरा पलटन छपरेमें उतरी फारकम्पनीके स्टीमरसे। पलटनमें सभी थे अगरेज, कनाडियन और अमरीकन। अब सरकारी कर्मचारियोंकी जानमें जान आई। जिला मजिस्ट्रेटने कर्फ्यू ऑर्डर जारी किया और एलानकर दिया कि जो लाईन नष्ट करता पाया जायगा गोलीका निशाना बनेगा। फिर राजेन्द्र कालिजके छात्रोंकी गिरफ्तारी शुरू हुई। कचहरीमें आनेके लिये वकील मुख्तारोंपर भी दबाव डाला जाने लगा और आखरी हफ्तेमें बार एसोसियेशन और मुख्तार एसोसियेशनकी बैठक बुलाई गई और कचहरीमें

जानेका निश्चय किया गया। फिर गोरे चारों ओर घूमने लगे और जनताको सताने लगे।

जहां जहां पुल टूटे थे वा सड़कें काट दी गई थीं वहां वहांके लोगोंसे जबरदस्ती उनकी मरम्मत कराई गई जिसके लिये उनके घरके सामान ले लिये गये। यहांतक कि घरके चौकठ किवाड़ भी छुड़ा लिये गये। कांग्रेसी गैरकांग्रेसी वा अवर्ण सवर्ण किसीका कुछ खयाल नहीं किया गया।

शहरको मुट्ठीमें करके गोरोंने देहातोंमें भी अड्डे कायम किये जहां उनके खाने पीने और आराम करनेके सामान जमींदार लोग जुटाने लगे।

छपरा रेवाघाट सड़कपर बाबू विश्वनाथ मिश्र और बा० भागवत प्रसाद वकील, जारहे थे। गोरोंने उन्हें सड़कपरसे उतारा और सड़क मरम्मत करवायी, सिवान जाते समय गोरे दाउदपुर रुके जहां पुल बरबाद किया गया था। वहां लोगोंसे उनने पुल मरम्मत करवाना चाहा पर कोई बात माननेको तैयार नहीं दीखा। पासमे एक छोटीसी भीड़ थी जिससे कुछ लोग पुलमें हाथ लगानेको बढ़ तो नहीं रहे थे हँस रहे थे। गोरोने तैसमे आकर उनपर गोली चलाई; फलस्वरूप एक बच्चा मरा, बारह वर्षका, श्रीकामता गिर और एक युवक मरे २२ वर्षके, श्रीफागू गिर।

१६ अगस्तको २१ अमरीकन फ़ौज दिघवारा पहुंची। टेनब्रुक साहब अगुआ थे। गोरोने सीताराम सिंह, हरिनन्दन प्रसाद और सहवीर साहको अपनी गोलियोका शिकार बनाया और श्रीयदुनन्दन सिंह और श्रीमहेश प्रसादको घायल किया। उसी दिन श्रीहीरालाल सर्राफ और श्रीनवल प्रसादके गोलेमें आग लगा दी गयी। शीतलपुरके श्रीगुरुसहाय साहका घर फूंक दिया गया। दूसरे दिन ४० अमरीकन फोर्स लेकर टेनब्रुक दिघवारा पहुंचा और बाबू रामविनोद सिंहके मकानको फूंक दिया। बैठकके सामनेके हिस्सेको गैंतासे तोड़ दिया और उनकी तिजोरी उठाकर लेगये। दो दिनके बाद २५० गोरोंको लेकर कार कम्पनीके जहाजसे टेनब्रुक साहब उतरे और खूब तड़के ही मलखाचक गांवको घेर लिया। गोरोने चारो तरफ छोटी छोटी ८ तोपें भिड़ा दीं। फिर सदल बल श्रीरामानन्द सिंहके घरपर धावा किया। पर श्रीरामानन्द सिंह सपरिवार मकईके खेतसे निकल भागे। गोरे उन्हे न पा सके पर उनके घरको लूट लिया और उसमें आग लगा दी।

गोरोकी आग और गोली मलखाचकको दबा न सकी। श्रीनारायण सिंहजी युवकोंकी टोली ले गोरोसे मोरचा लेनेकी तैयारीमें इधर उधर घूमते रहे। उनने

जिला भरके फरारोंसे सम्बन्ध स्थापित किया और समानान्तर सरकार कायम करनेकी कोशिशमें लगे रहे। ५ अक्तूबरको परसाके फरारोंसे मिलकर वे लौट रहे थे कि सोनपुर पुलके पास माही नदी पार करते हुये गोरोंने उन्हें देख लिया। उनपर गोली चलायी गयी परन्तु वे बाल बाल बच गये। १४ अक्तूबरको दिघवारेकी पुलिसने श्रीहरिचरण भगतको रामानन्द सिंहके घरमें पकड़ा और भगतजीको छिपा रखनेके अपराधमें श्रीरामानन्दजीको भी गिरफ्तार कर लिया। दोनोंको लेकर पुलिस मलखाचकसे दो फर्लांग ही गयी होगी कि श्रीनारायण सिंह अपना युवक दल लेकर आये और हरिचरण भगतको छुडानेके प्रयत्नमें लगे। पुलिसने उन्हें बार बार सावधान किया पर उनने सीना खोल कहा कि गोली खाना है या हरिचरणको छुड़ा लेना है। उनके साथियोंने पुलिसपर ढेले भी फेंके। तुरत पुलिसने उनका जवाब गोलीसे दिया और मलखाचक गावके निकट ही रेलवे हातेमें युवक श्रीनारायण सिंह शहीद होगये। दिघवारा थानाकी, यह अन्तिम आहुति थी।

सरकारी संस्थाओंपर दखल जमाकर मढ़ौराके कार्यकर्त्ताओंने मढ़ौराके कारखानोंको कब्जेमें लाना चाहा। कारखाने मामूली कारखाने जैसे न थे। सारन इञ्जिनियरिंग वर्क्स तो लड़ाईकी चीजें बना ही रहा था साथ ही कारीगरोंको युद्धोपयोगी शिक्षा भी दे रहा था। चीनीका कारखाना जो बेग सदरलैन्डका था, नौकरशाहीका एक अड्डा बन रहा था। शराब और मिठाई तैयार करनेके भी बड़े-बड़े कारखाने थे। फिर अच्छा-सा शस्त्रागार भी था। जनता जो इन्हें अपनी आजादीकी राहके रोड़े समझती थी उसका पर्य्याप्त कारण था।

मढ़ौरा

कारखानेके साहबोंको मालूम हो गया कि जनता कारखानोंपर हमला करना चाहती है। तुरत उनने गोरी फौज लानेके लिये अपनी लारी दौड़ाई और साथ ही कार्यकर्त्ताओंसे समझौतेकी बातचीत शुरू करवा दी। पर उनकी चाल छिपी न रही। बाबू वासुदेवनारायणने अपने साथियोंको सतर्क कर दिया, सभी इकट्ठे हुये और तय किया कि गोरोंको मढौरा घुसने न दिया जाय और अगर घुस गये तो सामना किया जाय—महथाजोके बागमें, अमनौरमें या रसूलपुरमें। फिर सब सड़क काटनेमें लग गये ताकि गोरे आ न सकें।

१७ अगस्तकी रात थी। पानी बरस रहा था और कार्यकर्त्ता सड़क काटनेमें व्यस्त थे। अढाई बजे रातको श्री बोधन प्रसाद श्रीवास्तव दौड़े हुए आये और

कहा कि गोरे मढ़ौरे पहुँच गये। गोरे पहुँचते ही जुल्म ढाने लगे। जिसको पाया बन्दूकके कुन्देसे पीटा। नगर रक्षकदलके स्वयसेवकोंपर भी मार पड़ी। आठ नौ आदमी बेतरह घायल हो गये। बाजारमे कुहराम मच गया। भोर हुआ और दिन चढ़ते-चढ़ते चारो ओर खबर फैल गई कि फौज आ गई।

इस दिन महथाजीके बागमें सभा होनेको था। फौजके आजानेसे महथाजी नहीं चाहते थे कि वहां सभा हो और ग्यारह बजे तक लोगोंको आते न देख खुश हो रहे थे। उनने समझा कि गोरोके आनेसे लोग आतंकित हो गये हैं, फिर सुबहमें पानी भी खूब पड़ा है; इसलिये सभा नहीं हो सकेगी। पर कुछ ही देरके बाद उनने देखा कि चारो दिशाओसे बाजे बजाती हुई टोलियां-पर-टोलियां नारे लगाती हुई बागमें इकट्ठी हो रहीं हैं—गरखा, बनियापुर और मसरख जैसे दूसरे थानोंकी भी। इधर सारन इञ्जिनियरिंगके किरानी बाबू सुखदेवसिंह और मिस्टर फ्रान्सिसने गोरोंको जो सबके सब कनाडियन थे, समझाया कि बागमें चलकर फायरिङ्ग करना अच्छा है; भीड़ बड़ी है पर उसमें नेता नहीं है आवाज सुनेगी और डरकर भाग जायगी। श्री महम्मद-अली दारोगा और श्री कैलाशपति नारायण डिपटी मजिस्ट्रेटके जो फिर अपने सिपाहियोकी टोली सहित वापस आगये थे, मना करनेपर भी कनाडियन महथाजीके बागको रवाना हो गये और वहाँ पहुंच गोली चलाने लगे। उनकी गोलीसे बीसो आदमी घायल हुये। श्री रामजीवन सिंह तो घर पहुँचते-पहुँचते शहीद हो गये। श्रीचन्द्रदीप बिन्दको अपनी एक टाँग खोनी पड़ी। सर्वश्री रामविलास राय, भागवत तिवारी, संतलाल सिंह और चूड़ामणि सिह भी सख्त घायल हुये।

एक प्रत्यक्षदर्शी एम० ए० बी० एल० लिखते हैं—मैं फौरन बाहर आया। देखा, भगदड़ मची हुई है। कुछ लोग तो महथाजीके जनानखानेमें घुसने लगे। महथा शुकदेव नारायणने उन्हें निकाल बाहर किया और दरवाजेकी ओर जंजीर बन्दकर दी। लोग जहाँ-तहाँ छिप रहे थे। बहुरियाजी बागमें खड़ी थीं। फिर मैंने देखा कि कुछ कनाडियन महथाजीके मन्दिर और कुएंपर आ गये हैं। ××× पाँच छः मिनिट ही हुए होंगे कि लोग फिर जुटने लगे। हजारों कण्ठोसे मारो! मारो! की आवाज निकलने लगी। कनाडियनोंपर ईंटोंकी बरसा होने लगी। वे हरवे-हथियारसे पूरे थे; टॉमीगन भी रखते थे तौभी सब के सब

भागे। भारी शरीर और भारी साजबाज, फिर कीचड़ भरे धानके खेतसे या पोरसा भर लम्बे मकईके खेतसे भागना कठिन हो रहा था। और पीछे भाले, गँडासे, भुजाली और लाठीसे रोड़े तक लेकरके अनगिनत दौड़नेवाले जो बड़ी फुरती दिखला रहे थे। मैंने देखा पाँच-सात मिनिटोंमें एक भीषण काण्ड समाप्त हो गया है।

"कहा जाता है पहले वारमें ही चार कनाडियन और एक यूरोपियन जो कारखानेके किसी अफसरका छोटा भाई था, खतम हो गये। एक-डेढ़ घण्टेके बाद सुना कि एक और कनाडियन जो अपनी मोटरकी निगरानी कर रहा था मारा गया। जिस तिसने उन सबोंके सामान ले लिये।

कुछ देरके बाद समझदार लोग जुटे। कुछ लोगोंने प्रस्ताव किया कि लाशोंको मिट्टीके तेलसे जला देना ठीक है। पर इसे खतरनाक समझा गया, और सभी लाशोंको बैलगाड़ीपर लादकर रातोंरात सावन भादोंकी उमड़ती हुई नदीकी गोदमें छिपा दिया गया।"

उस काण्डके फल-स्वरूप बाकी कनाडियन मढ़ौरा छोड़ छपरा भागे और गांव-वालोंने तो जिधर डौल लगा उधर ही का रास्ता नापा। मढ़ौरावाले बेतहाशा भाग रहे थे परन्तु अड़ोस पड़ोसके गाँव गोरोंका सामना करनेकी तैयारी कर रहे थे। इसी बीच खूब पानी बरसा जिसने रक्तके छींटोंको धो पोछ कर बहा दिया। चौथे दिन ६५ गोरे, २० सिपाही और काफी पुलिस बड़ी तैयारी करके मढ़ौरा आये और लोगोंपर जोर जुल्म होने लगा। मढ़ौरा स्कूल सामान सहित जला दिया गया। बाबू चान्दी सिंहका मकान जला दिया गया और श्री हरनारायण महथाके घरोंको लूट खसोटकर तोड़ फोड़ डाला गया।

फिर सारी पुलिस और फौज अमनौर चली। सड़क-पुल तोड़ दिये गये थे। इसलिये आनेमें सबोंको कठिनाई हुई। अमनौर पहुचते ही उनने अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलाईं। लोग पहलेसे सतर्क थे। इसलिये श्री जयमंगल महतोकी ही जान गई। जानवर तो कितने मरे। गोरोंने फिर हरिहर मिश्रजीका घर लूटा और एक सज्जनको गोलीसे घायल करते हुये अमनौर दरबार पहुँचे। बहुरियाजीका अमनौर दरबार बहुत पुराना दरबार है और अच्छी हैसियत रखता है। उसके मकानोंकी खूब लूट-पाट हुई और काफी समान फूँक डाले गये। फिर वहाँका आश्रम जला दिया गया। वहाँसे फौज मढ़ौरा आ गई।

यह मढ़ौरा ही उन गोरोंका अड्डा बना। वहांसे ही वे पुलिसके साथ गरखा, मसरख, बैकुण्ठपुर, बनियापुर और परसा थानोंमें आग और अत्याचारका क्रूर प्रदर्शन करने जाते।

रातको ही हरनाथ सिंहजीका घर, जो कांग्रेसके विरोधमे ही रहे, लूटा गया और उनको खूब पीटा गया। फिर सिल्हौरीके श्री मातबर सिंह और मढ़ौराके श्री परमा सिंह मढ़ौरा थाना पकड़ मंगाये गये और खूब पीटे गये। मागनेपर इन्हें पानी तक नहीं दिया गया। अमनौरके देवी साह तेली और गोसी-अमनौरके भोला तिवारी, प० वासुदेव तिवारी और बांके सिंहके घरोंको लूट लिया गया और उन सबोंको गर्दनसे एक ही रस्सेमें बांध ठोकर और कुन्दोंसे पीटते हुये जेल पहुँचाया गया। वहां इनके नाक-कान साफ किये गये जिनमे खून जमा था। बांके सिंहके तो दात भी टूट गये थे। इस इलाकेके दफादार यमुना तिवारीजी बड़े उत्साहसे इन लोगोंका पीटते और गोरोंके सुरमें सुर मिलाकर कहते—"गांधीको बुलाओ"। सलीमपुरके बाबू सूर्य सिंह, असांवके प० रामबहादुर मिश्रके सामान लूटे गये।

इन सब चढ़ाईमें मि० बी० पी० मित्र, पुलिस इन्स्पेक्टरका साथ था और मि० टेन ब्रुकका हाथ।

मढ़ौरा थानेमें एक और सनसनी खेज घटना हुई।

श्री जगदीश शर्मा, सभापति, थाना कांग्रेस कमिटी, सोनपुर लिखते हैं कि १३ अगस्तको ही सोनपुर स्टेशनपर एक जाट-राजपूतोंके मिलिटरी जत्थेके कमाण्डरसे मेरी बातचीत हुई। हमारी क्रान्तिसे उनको खुशी हो रही थी और वह चाहते थे कि जो हमें कल करना है उसे हम आज ही कर दिखलावें। दूसरे दिन उनका जत्था मुजफ्फरपुर चला गया। × × × × फिर जब अपने थानासे भागकर मैं मढ़ौरामें रह रहा था एक दिन खबर मिली कि मुजफ्फरपुरसे ६ जाट-राजपूत सैनिक भागकर सोदपुर होते हुय यहां आये है और गण्डक नदीके किनारेके बाध होकर जा रहे है। मैंने उनका पीछा किया पर आगे जाकर मालूम हुआ कि वे लोग गोलीसे मार दिये गये।

मढ़ौरा थाना कांग्रेस कमिटीकी रिपोर्ट है कि ५ गढ़वाली सैनिक सोनपुरकी ओरसे गण्डक नदीके बाँधके रास्ते परशुरामपुर पहुँचे। वहाँ वासुदेव बाबूका घर खाली था पर दरवाजेपर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था। उन सबोंने झंडेको सलामी

दी और थके मांदे वहाँ बैठ गये।××× फिर वहाँसे उठकर वे सब बाबू देवशृङ्गार सिंहके यहाँ पहुँचे जिनने इन लोगोंको खिलाया पिलाया। इसी बीच हलका सातके चोकीदारों और दफादारने कुछ फासलेसे इनकी निगरानी शुरू कर दी।××××× बाबू सरयू सिंहको खबर मिली और वे थाना साइकिल ले उड़े। वहासे व्रजभूषण प्रसाद दारोगा गोरोंको लेकर दौड़े आये और कुँवारी पहुँचे। वहाँ बाँधकी बगलमें ब्राह्मणोंके मकान हैं और सामने झाड़ियाँ हैं जिनमें सबके सब छिप गये। फिर ज्योंही गढवाली सैनिक वहाँसे गुजरने लगे उनपर गोलियोंकी बौछार शुरू हुई। सैनिक घबड़ा गये और बांधके उत्तरकी ओरकी खाईको पार करके लड़ना शायद मुनासिब समझा इस उद्देश्यसे उधर दौड़े। लेकिन उसमें काफी पानी था। वे डूबने लगे। ऐसी हालतमें तीन मारे गये और दोने जख्मसे अवश होकर आत्म-समर्पण किया। व्रजभूषण बाबूने तीनो लाशोंको गडकमे फेंकवा दिया। उनके हथियार उस दिन नहीं मिले। पर वहां पहरा बैठा दिया गया और तीसरे दिन महाजाल डालकर सारे हथियार निकाल लिये गये।

गरखा थानाके कार्यकर्त्ताओने गोरोंसे निबट लेनेके लिये अच्छी तैयारी कर ली थी। और जगहोंकी तरह मकईके खेतका यहा भी बड़ा भरोसा था। राइफलके निशानोसे ओझल करके मकईने अनगिनत जानें बचाई थीं।

गरखा

पर गरखामें इसे दूसरा काम करना था। इसे हरबे हथियार, रोडे और गुड़-मिरचाईके काढे और बुकनीको लेकर आये हुये लोगोंको छिपा रखना था ताकि ऐन मौकेपर जब छपरासे आते हुए गोरे गरखामे प्रवेशकर रहे हों ये निकल बाहर होवे, गोरोंपर टूट पड़ें और उन्हें मढौराकी राह दिखलायें।

इधर श्रीजगलाल चौधरी दूसरे उधेरबुनमे थे। आप लिखते हैं, "२२ अगस्तको तीन बजेके करीब छपरेमें मेरे दो मित्र आये और बोले—देखो मैं तुम्हें बारबार कहता हूँ कि गोरोंको तुम्हें गोली दागनेकी आज्ञा मिल चुकी है। वे तुम्हारी खोजमें हैं।

मैं—तो मैं छिपा कहा हूँ? यदि वे चाहें तो मुझे गोली मार सकते हैं।

मित्र—नहीं नहीं, तुम्हारी खोजमें वे गावमें आवेंगे तो गावके उजाड़ डालेंगे पर यदि तुम खुद उनके यहा पहुंच जाओ तो तुम्हारी ही जान जायगी, गाव बच जायगा।

मैं—आप लोग मुझे फुरसत दें; मैं अपने टंगसे मरूंगा आपके ढंगसे नहीं।

पर मित्र लोग अपनी बातपर अटल रहे। 'सभी कार्यकर्त्ता बराबर छपरेकी राह छेके रहते थे कि गोरोंको इधरसे न जाने देंगे। × × × मैं दूसरी सड़कपर मित्रोंसे तर्क कर रहा था। मैं जानता था कि लोग यद्यपि उस दिन लाठी आदिका उपयोग कर युद्ध करनेकी बात कह रहे थे तौभी वक्तपर अधिक जबर्दस्त अस्त्रोंके सामने वे न टिकेंगे, उन्हें भागना पड़ेगा; फिर यदि मैं ऐसे अवसरपर हाजिर नहीं रहता तो अधिक हानिकी संभावना थी; लोग थोड़ा बल प्रयोग करेंगे और गोरे निर्दयताके साथ उन्हें कत्ल करेंगे; पर यदि कुछ भी शरीर-बलका प्रयोग न किया जाय तो गोरे केवल कुछ ही लोगोंको कत्ल कर शांत हो जायंगे; मैं उनके साथ रहकर उन्हें बल प्रयोग करनेसे रोक, अधिक हानिके बदले थोड़ी हानि उठा गांवकी रक्षा कर सकता था, फिर भी मेरे मित्रोंने मुझे आत्म-समर्पणके लिये राजी कर लिया × × × मैं छपरा चल पड़ा।

पर भाग्यमे दूसरा ही बदा था। जिसपर मैं था उसी राहसे गोरों की लॉरियां आ धमकीं। मैं गांवमें पहुँच नहीं सकता था। वे गांव पार कर थानेमे चले गये और तुरत वापस आकर गोलियां चलाने लगे।"

लोगोका पूरा जमाव तो छपरासे आनेवाले रास्तेपर था। पर गोरे आये मढ़ौरा वाली राहसे। इसलिये राहमे कोई घटना न हुई। पर गरखाके नवयुवकोंने भी गोरोसे भिड़नेकी तैयारी की थी। रोड़ोसे भरे हुये झोले टांगे फिरते थे। इनमें एक थे श्री इन्द्रदेव चौधरी श्री जगलाल चौधरीके सुपुत्र। धारा-सभा भवनकी चढ़ाईमे आपके सर जो पटनेकी पुलिसकी लाठीका घाव लगा था सो सूखा भी न था, सरमें पट्टी बंधी हुई थी। मांने आपसे झोला छीन लिया और घरमें छिपा रखा। पर आप वहांसे उसे ले उड़े और चौराहेके पासकी एक दूकानके छतपर चढ़ गये जहां पहलेसे और लड़के मौजूद थे। जैसे ही गोरोकी लौरी पास आई उस छतपरसे गोरोंपर रोड़े बरसने लगे। गोरोने गोली चलाई। छतवाले मकानको घेर लिया और दरवाजा तोड़ सीढ़ीसे छतपर चढ़ना ही चाहते थे कि देखा सरमें पट्टी बाधे एक लड़का सीढ़ीसे उतरा आ रहा है। उस लड़केको उन्हें गिरफ्तार तो करना था नहीं इसलिये उनने चट उसे गोली दाग दी। गोलीकी पहली बौछारमें कितने घायल हुये थे और सख्त घाव लगा था श्री चन्द्रदीपको। श्री इन्द्रदेव बेलाग बच गये थे पर अबकी तो वह मानो साक्षात यमके मुहमे ही दौड़आये थे।

श्री जगलाल चौधरी लिखते हैं—"××× एक सज्जनसे पता लगा कि गोलियाँ

दो विद्यार्थी शहीद

शहीद इन्द्रदेव चौधरी,
(श्रीजगलाल चौधरीके सुपुत्र)

शहीद श्रीनारायण सिंह,
दिघवाडा (सारन)
(श्रीवासुदेव नारायण सिंहके सुपुत्र)

लालगंज थाना रेडके दो शहीद

शहीद श्रीसिद्धेश्वर। महरा,
लालगंज (मुजफ्फरपुर)

शहीद विभिक्षण महरा,
लालगंज (मुजफ्फपुर)

खूब चलीं पर मरा केवल मेरा एक लड़का और गोरे उसे लेकर चले गये। मैं और भी घवड़ाया। ××× मैं क्या करूँ? क्या घर लौटकर बच्चे के लिये रोऊँ? यदि प्राण नहीं दे सका तो रोनेसे क्या लाभ? ×× मैं छपरेकी ओर लौट चला। धोती और गंजी ही मेरा कुल वस्त्र था। पैरमे जूते न थे। सात मीलकी ककरीली राह चलकर थक गया और एक मठमें सो गया। ता० २३ के सुबह उठकर शहरमें घुमा। सीधे ससुराल गया। ×× तुरत रसोई बनी और मैं स्नान भोजन कर चल पड़ा। लोगोंने पूछा कि मैं कहा जा रहा हूँ; मैंने कहा, मैं दूर जा रहा हूँ। ×× तेजीसे चलकर तुरत डिस्ट्रिक्ट बोर्डके स्पेशल ऑफिसर श्री बेनी माधव प्रसादके वास स्थानपर पहुँचा और उनसे मिलनेकी इच्छा प्रकट की। पता लगा कि वे पूजापर हैं। मैंने कागज पेनसिल मांगा और लिखा.—S D O I learn I wanted by soldiers who have orders to shoot me wherever I am found I am hear at your doors and request you to send me to them, as I no longer wish to live. अर्थात् मुझको मालूम हुआ कि गोरे मेरी तलाशमें हैं उनको हुक्म है कि जहां वे मुझको पावे गोली मार दें। मै आपके दरवाजे आया हूँ। अर्ज करता हूँ मुझे उनके पास भेज दें अब जीनेकी मेरी इच्छा नहीं रही। पुरजा मैं दे भी न सका था कि एक पालकी गाडी सामने सडकपर आ लगी और एक पुलिस सब इन्सपेक्टर उतर कर खड़े हुए; उनने मुझे बुलाया और गाड़ीमे बैठा लिया, गाड़ी बढ़ी तब उनने कहा—"आप गिरफ्तार हैं।" मेरे हाथका पुरजा उनने ले लिया और उसे ममोड़कर पाकेटमें डाल लिया।

दो तीन मिनटकी चुप्पीके बाद दारोगाजीने कहा—I am very sorry to learn that your son is dead—मुझे जानकर दुख हुआ कि आपका लड़का मारा गया। ×× मैं—आप मुझे लाश देखने देंगे?

दारोगा—चलिये न; मै दिखला दूंगा। ×× मै लाशके पास पहुँचाया गया एक मशहरीमें लपेटा हुआ शव मैंने उघार कर पहचाना—मेरा इन्द्रदेव! नाभिके नीचे गोलीका घाव, नाकमें खून! मैं रो न सका, शवको चूम लिया और मन ही मन कहा—जा, तू स्वर्ग गया मुझे नरकमे छोड़ गया।

दारोगाने कहा—आप चाहे तो लाशको दफनानेका बन्दोवस्त करा सकते हैं।

×× कुछ ही देरमे मेरे ससुरालसे दारोगाजीके सिपाही कई सज्जनको बुला लाये और रथीपर शवको लाद चले। इधर मैं भी जेल पहुंचा दिया गया।"

बनियापुरमें गोरोंका आतंक तो पहले ही फैल गया था पर लूट पाट शुरू हुई, ६ सितम्बरसे। सहाजीतपुर बाजारमें श्रीनथुनी साह, बुधन साह और दुःखीसाहकी दूकाने लूटी गईं। दाढ़ीबाड़ी, बनियापुर बाजारके माधवजी, रामदत्त दुबे और केदार पुरीका घर बरबाद किया गया। श्रीठाकुर ओझा और भृगुनाथ ओझाका घर भी बरबाद कर दिया गया और वे दोनों बाप बेटा पकड़ लिये गये।

बनियापुर

एकमा गोरे आये अगस्तके अन्तमें। उनने कई घर जलाये और गोस्वामी फूलनदेव गिरिजीके घरका सारा सामान फूंक दिया। यहांका संगठन इतना जबरदस्त था कि गोरे डरते थे। इसलिये अत्याचार बढ़ नहीं पाया।

एकमा

परसा थानेमें २६ अगस्तको गोरोकी सात लॉरियां पहुॅची। पहरेदार स्वयं-सेवकोने खतरेकी घण्टी बजायी और कार्यकर्त्ता इधर उधर छिप गये। हाइ स्कूल और छात्रावासके मकानोको गोरोने फूंक दिया, ट्यूब वेल और कुएके ढेकुलको तोड़ फोड दिया; स्वराज्य आश्रमके मकानको तोड़ कर जला दिया और लगे हाथ यूनियन बोर्डका आफिस भी फूंक डाला। इधर उधर गोलियां भी चलाई। कोई मरा नहीं पर सभी आतंकित हो गये। पर परसाका काम बन्द नहीं हुआ। कार्यकर्त्ताओंने डिस्ट्रिक्टबोर्डके डाकबंगलेको शिविर बना लिया और ग्राम संगठन करने लगे। वे रामपुर गांवके रहनेवाले मिस्टर बिलसनके यहां गये और उससे हथियार मांगा। उसने कार्यकर्त्ताओसे हमदर्दी दिखाई और अपना घर दिखा दिया। हथियार नहीं था। १४ सितम्बरको पं० द्वारिकानाथ तिवारी जत्था लेकर छपरा कचहरीकी पिकेटिंग करने गये और गिरफ्तार हो गये। परसा थानेसे और जत्थे भी छपरा गये और कार्य कर्त्ताओकी गिरफ्तारी होती रही। इस थानामें गोरोके अत्याचार भी काफी हुये। गणेश सिंहको गोरोने ऐसा पीटा कि करीब एक महीना तक जेलमें केवल दूध ही पर रक्खे गये। रामदासी सिहको ४८ दिनो तक अस्पतालमें रहना पड़ा और सूर्यदेव सिहके नाकसे खून आता रहा।

परसा

सिवानमें गोरे १६ अगस्तको पहुॅच गये और मनमानी करने लगे। गिरफ्तारी शुरू हुई। पर डा० सरयू प्रसाद फरार हो गये थे। इसलिये उनके घरका सामान जब्त हुआ और उनका दवाखाना लूट लिया गया।

सिवान

गोरोके साथ साथ पुलिस आई दरौलीमें २८ अगस्तको। उनने प० रामायण शुक्ल, तथा श्रीविश्वनाथ शर्मा और मधुसूदन सहके घर जला दिये और सिवान

दरौली — वापस होते हुये वे जंजोरके श्रीवासुदेव नारायणका मकान भी फूंकते गये। फिर सबके सब आसाव गये और रामानन्द साहकी दूकान लूटी। दूसरे दिन फिर वे दरौली पहुँचे और श्रीरामावतारको पकड़ लिया। जो कार्यकर्त्ता फरार थे उनके घरके सामानकी ज़ब्ती कुर्की शुरू हुई। श्रीतपेश्वर तिवारीका घर लूटा गया। श्रीदीनेशचन्द्र, विश्वनाथ प्रसाद और रामवड़ाई सिंहके सामान गये। ३० अगस्तको रामावतारजी आर्य्य और रामवली दुवे पकड़े गये। दोनोंके सरके वाल नोचे गये और आखकी पपनिया उखाड़ ली गईं। रामवली दुवेजी मिडिल स्कूलके हेड मास्टर थे।

श्रीसरयू प्रसाद व्यापारीकी चेष्टासे मिया खलील फिर गुठनी वापस आगये थे पर थानामें कांग्रेसका ताला लगा था और उसपर कांग्रेसका झंडा फहरा रहा था जो

गुठनी — ३ सितम्बरको मिलिटरीके द्वारा हटाये गये। गुठनी आश्रम जब्त कर लिया गया। फिर गिरफ्तारी शुरू हुई। श्रीराजवंशी सिंह थानेका दौरा करते हुए पकड़े गये फिर श्रीरघुनन्दन दास गिरफ्तार हुये। कांग्रेस आफिसकी बहुतसी किताबें और श्रीधर्मदेव लालके सामान वरबाद हुये। मदन कान्दूका घर और विश्वनाथ मुन्नीलाल कुंजविहारीकी दूकानें लूट ली गईं। सोहगराके श्रीकुंजविहारी प्रसादको पुलिस जमादार वृन्दा सिंहने इस बेरहमीसे मारा कि वे बेहोश होगये।

१३ सितम्बरको गुठनी वाजारमे सभा करके एक भीड़ लेकर श्रीधर्मदेव लाल, साधुशरण मिश्र, राधारमण दुवे और रामवड़ाई चौधरी जब्त आश्रमको दखल करने जा रहे थे कि गिरफ्तारकर लिये गये। फिर गुठनी शान्त हो गया।

मैरवामें गोरे आये गोरखपुरसे। खादी भण्डार लूटा गया और जलाया गया। भण्डारमें जो थे सो गिरफ्तार हुए। वादको छपरेसे भी अंगरेज और

मैरवा — अमरीकन फोर्स पहुँचा जिसने मैरवा आश्रम जला दिया। फिर विहार प्रान्तीय सेवा समितिका दफ्तर लूटा गया और वरबाद कर दिया गया। शिवपूजन चौधरी और जगवहादुर सिंहके घर लूटकर जला दिये गये। गोरोंकी इन करतूतोंकी खबर जब गावोंमे पहुची तो कुछ लोग जोशमें आ गये। २३ सितम्बरकी बात है जमापुर, सुखल और जिरादेई आदि गावोंके लगभग पाचसौ व्यक्ति भाटापोखर स्टेशनकी ओर रवाना हुये। ठीक उसी समय एक स्पेशल ट्रेन रेलवे लाइन मरम्मत करती हुई आ रही थी। गावमें आग लगानेवाले गोरे उस समय उस ट्रेनमें ही आराम कर रहे थे। भीड़ देख ट्रेन हटकर गुमटीपर

आई जिसमेंसे भीड़को लाइनपर एक पेड़ रखते देख दो गोरे उतरे। फिर सीटी बजी और चार गोलियां चलीं। लोग चिल्लाने लगे—झूठा फायर है। पर जीरादेईका बोधा बरई चिल्लाया, मुझको गोली लगी और गिरकर मर गया। तब लोगोंको विश्वास हुआ कि फायरिंग सच्ची है और वे इधर-उधर भागे। तबतक सुखलके पं०हरिशंकर तिवारी घायल हो गये। घाव बड़ा था, पर बच गये। विद्यार्थी सत्यनारायण साहु भी घायल हुआ किंतु बच गया। पर ठेपहाके बाबू सेवकरायको जो अपने दरवाजेपर ही खड़े थे, ऐसी संगीन चोट लगी कि इलाज करने पर भी हफ्ता भीतर वे मर गये। धर-पकड़ जारी था। सामुहिक जुर्माना भी ठोक दिया गया था जो दोनों जनताके विविध कष्टोंके कारण बने। फिर भी तोड़-फोड़ जबतक जहां-तहां होती ही रही। सरकारको मालूम हुआ कि जंगबहादुर सिंह और श्री शिवपूजन चौधरी ही सभी बखेड़ोंकी जड़ है। इसलिये उनकी खोज कसकर होने लगी। पुलिसको खबर लगी कि दोनों ठेपहाके श्रीसीताराम भगतके यहॉ रातको ठहरते है। पुलिसने श्रीसीताराम भगतके घरोंको रातमे ही घेरा। उसने पुलिसको डाकू समझा और वारकर बैठा। फलतः पुलिसने गोली चलाकर उसे मार डाला। बहुत बादको शिवपूजन चौधरी गिरफ्तार हुये और उनको १७ सालकी सजा मिली और जगबहादुर सिंह पकड़े जाकर नजरबन्द किये गये।

यहॉ गोरे आये अगस्तके अन्तमे प० उमादत्त शर्मा, श्रीगया प्रसाद, श्रीगोरख सिंह आदिके घरोंको लूटा और जलाया। गोरख बाबूको काफी **महाराजगंज** नुकसानी हुई। बादको रुकुन्दीपुरके चन्द्रदेव बाबूका घर भी जलाया गया। फिर तो लोग डर गये और पुलिसकी चल निकली।

कटेयामें गोरोंने श्रीमहादेव रायके घरको लूटा और जला दिया। उनके जानेके तीन दिन बाद पुलिसने मुक्तासाहकी दूकान लूट ली और श्री राजालाल वगैरहको खूब पीटा।

२८ अगस्तको आकर गोरोंने बसहॉके कालीचरण ठाकुर आदि कई लोहारोंके घर फूॅक डाले। हमीदपुरमें दुर्गा सिंह वगैरहके और कर्त्तारपुरमे कवलेश्वर राय **वैकुण्ठपुर** वगैरहके घर जलाये गये। ११ सितम्बरको मोहर सिंह प० शिववचन त्रिवेदी आदिके घरोंपर उनका धावा हुआ और कुछ न कुछ सामान सब घरोंसे ले लिये गये।

मुजफ्फरपुरमें भी गोरे, गुरखे और बलूची १४ अगस्तको ही पहुँच गये जिससे मध्यवर्गीय पुरुषोंपर काफी आतंक छा गया। फौजियोंको गांधी टोपी, खद्दर और

मुजफ्फरपुर

गाँधीजीकी तस्वीरसे काफी चिढ थी। जिन जिनके पास ये चीजें पाई गईं उन्हें बडी बेरहमीका सामना करना पडा। बाबू राजेन्द्र प्रसाद वकील और दूसरे-दूसरे कई प्रतिष्ठित व्यक्ति सरे बाजार पीटे गये। कई दूकानें भी जिनमें गाँधीजीकी तस्वीरें लटक रही थीं लूटी गईं।

एक महीनाके बाद बडी सावधानीसे पुलिस थानेमें आई और गिरफ्तारियोंका

पारू

ताता बधा। साथ ही साथ लूट और मार पीट भी शुरू हुई। दोकड़ा ग्रामके श्रीगोरखनाथ मिश्र, चकनाके श्रीबदरीनारायण साही, कोल्हुआके श्रीडाक्टर विन्ध्येश्वरी सिंह, कालिका सिंह और जयमगल सिंह, बखराके श्रीजानकी जीवन सिंह तथा रेवाडीके डाक्टर श्रीरामपरिच्छण सिंहके घर लूटे गये।

गिरफ्तारीके समय मोती छपराके श्रीसरयू सिंह, श्रीहरिहर सिंह, श्रीगजाधर सिंह तथा गरीबाके श्रीमधुमंगल शर्माके सामान लूटे और बरबाद किये गये। श्रीरामेश्वर प्रसाद साही भी लूटे गये और उनके मवेशी जब्त कर लिये गये।

श्रीरामपरिच्छण सिंहको इस बुरी तरह मार लगी थी कि वे एक महीनेके अंदर शहीद हो गये। अत्याचारको बलूची सैनिकोंने थानेपर आक्रमण करते समय सीमापर पहुँचा दिया। श्रीदेवनाथ सिंह, सीताराम मिश्र और बिगन साह घूसे डंडे और हंटरसे बेतरह पीटे गये और उन्हें बूटकी ठोकरें मार बार-बार गिरा दिया गया। श्रीजयनारायण वैष्णवकी छातीपर सैनिक चढ़ गये और बूटसे मशलने लगे। बेचारे वैष्णवजीको छातीकी एक हड्डी भी टूट गई तौभी वे छोड़े नहीं गये। उन्हें घोडेसे बाध दिया गया और तीन मील दौड़ाया गया। अन्तमें सबके सब जेलमें डाल दिये गये।

पहले पहल इस थानेमें सड़कपर सैनिकोंका मार्च कराया गया, फिर जहा तहां झूठी फायरकी गई। २२ अगस्तको बखरीमें दो घर जला दिये गये। छिटफुट

सकरा

सडकके किनारे कुछ और घरोंमें भी आग लगा दी गई। अन्तमें २८ अगस्त आया जबकि कप्तान मेकमिलन एक सौ गोरे लेकर समस्तीपुरके डिपटी मजिस्ट्रेटके साथ मि० डेनबीके बगलेपर पहुँचे। वहा तेपड़ो गावका नक्शा कुछ जयचन्दों द्वारा पेश किया जा चुका था जिसमें विद्रोहियोंके घरपर निशान भी लगे थे। दूसरे दिन फौज तेपड़ीके लिये रवाना हुआ।

तेपड़ीवालोंको खबर लग चुकी थी कि हमारा गांव जला दिया जायगा। इसलिये वहांके जवान सैकड़ोकी संख्यामें हरबे हथियारसे लैस गोरोका सामना करनेके लिये तैयार थे। गांवके दोनो छोरपर नगाड़े रख दिये गये थे जो गोरोके पहुँचते ही जोरसे बज उठे। जवान आगे बढ़े पर अनुभवी कार्यकर्त्ताओंने उन्हें समझाया कि दुश्मन कहीं मजबूत हैं उनसे लोहा लेना बेकार है। पीछे हटनेमें ही बुद्धिमानी है। गोरे गांवमें घुसे। वे चुने चुने घरोपर पेट्रोल छिड़क कर आग लगा देते। थोड़ी देरके बाद ही पैंतीस घरोंसे आगकी ज्वाला निकली और सारे गांवको धुआंसे भर दिया। परन्तु गोरे वहांसे नहीं टले जबतक कि रत्ती रत्ती जलकर मकान खाक न हो गया।

गोरोके लौट जानेके बाद लोगोंने समझा कि आफत गई। कुछने अपने घरोको फिरसे आबाद कर लिया पर वे फिर आये और नये नये घरोको जलाकर चले गये। फिर तो उनका रवैया हो गया ठहर ठहर कर आना और नये-नये घरोंको जलाना। पीछे नेशनल वार फ्रॉन्टवालोके बीच बचाव करनेसे गोरोंका आना जाना बन्द हुआ।

इस थानेमे पुलिसका अत्याचार कम ही हुआ। हां, फरारोंको खोजनेके सिलसिलेमें श्री सुन्देसरी ठाकुर, दोरिक ठाकुर, राजेन्द्रठाकुर, बिसेसर ठाकुर और किशोरी महतो मारे-पीटे गये। यहांके तात्कालीन दारोगा श्री दीपनारायण सिहको मारपीटमे रस नहीं मिलता था। पर बादको सूर्यदेव नारायण सिह आये और जोर जुल्म कुछ बढ़ा। अर्जुन सिहने तो आते ही एक तरहकी धांधली मचाई। उनने भलेमानसोकी एक लिस्ट तैयार कर ली और सबोसे धमका-धमकाकर अपना उल्लू सीधा करना शुरू किया। उनके कारनामोंका एक उदाहरण है ढोलीका एक सुनार जिसकी तीन सौ रुपयेकी गायको उन्होने पचास रुपयेमें खुलवा ली। सुनार रोता पीटता मि० डैनबीके यहां पहुँचा जिनकी सिफारिशसे वह गाय उसे वापस मिली।

२१ अगस्तको कलक्टर, मजिस्टर, फौजी अफसर और बलूची सैनिक धमाधम मीनापुर थाना पहुँचे। छीतरपट्टी, गंजसेन्टर और महदेइया नामके गांवोंको

मीनापुर

उन्होने फूँक दिया। महदेइया तो पूरा-का-पूरा जल गया पर बाकी दोनों गांवोका एक-एक घर ही जला। आग लगानेके बाद इन सबोंने लोगोंको लूटना शुरू किया। जिस किसीके घर पहुँचे बिना कुछ स्पष्ट कारण बताये घरमे

घुस गये और उसका तिनका-तिनका इस तरह लूट लिया कि घरवाला दर-दरका भिखारी हो गया। श्री रीझनसिंह, श्री साधुशरणजी, श्री चुनीलाल भगत, श्री बुलाकीलाल साह, श्री जंगबहादुर सिंह, श्री रामसिंहासन सिंह तथा श्रीमथुरा प्रसाद सिंह ऐसी लूट-खसोटके शिकार हुए।

पुलिसने इस थानेको काफी चूसा। अभियुक्तोंकी खोजमें संगीनोंसे लैस होकर पुलिस अफसर जहां पहुंचते रुपयोंकी झरी लग जाती। जिन्दा दारोगा जला दिया गया था इसलिये लोग खूब आतंकित थे। अभियुक्तोंकी सूचीसे निकलनेके लिये सब कुछ करनेको तैयार थे। हाँ, कितने ऐसे भी थे जो पुलिसके सामने तने पर उन्हें जेलकी हवा खानी पड़ी। औरोंको पुलिस परमात्माकी पूजा करनी ही पड़ी। जिन्हें कुछ नहीं था उन्हें बकरे बकरियां ही चढ़ानी पड़ीं। शुरू-शुरूमें मुद्दालहकी लिस्टमें पाच सौ छिहत्तर लोग थे। बादको हुए बाईस और फिर बढ़कर हो गये एकासी। इस उतार-चढ़ावका रहस्य घूसखोरी ही समझ सकती है।

दारोगा हत्याकांडका मुकदमा लंबे अरसे तक चला जिसके दरम्यान पुलिसने अपनी मुट्ठी खूब गरम की। अन्तमें जुब्बा सहनीको फांसी हुई, और दस व्यक्तियोंको आजीवन कारावासका दंड मिला; जिनके नाम सर्वश्री रामधारी सिंह, राजदेव सिंह, सुवंश झा, बिहारी सिंह, रूपन महतो, चुल्हाई कोयरी, दुलार सिंह, गंगा दुसाध, रिझावन राय और चरीतर राय थे।

करीब दो महीने तक कटरा थानेपर वार करनेकी हिम्मत अंगरेजी सरकार नहीं दिखला सकी। अन्तमें सत्ताइस अक्तूबरको एक बड़ी ताकत लेकर सरकार वहाँ पहुंची। कटरा कहते हैं कि उस पहुंचनेवाली सरकारी गिरोहमें मुजफ्फरपुर, दरभंगा और भागलपुरके कलक्टर, तीन एस० पी० कई दारोगा और इन्सपेक्टर और पाँच सौ फौजी सिपाही थे। अस्त्र शस्त्रसे लैस इस सैनिकदलको देख लोग घबड़ा गये पर सभी शांत और संगठित रहे। सरकारी दल थानेमें पुलिसको बैठा लौट गया।

फिर फौज लोगोंपर सब तरहके अत्याचार करने लगी। विद्रोहियोंके अखाड़ेपर धावे होने लगे। लोगोंके घर लूटे और बरबाद किये जाने लगे। घनौर तो सरकारका कोपभाजन शुरूसे था ही। उसपर सैनिकोंका हमला हुआ। श्रीमहावीर सिंह इस तरह पीटे गये कि अरसे तक इन्हें अस्पतालमें पड़े रहना पड़ा। फिर बेदौल आश्रम लूटा गया। पुस्तकालयकी किताबें फाड़ दी गई और अशोक रासायन शालाके लगभग ढाई हजारकी दवायें और अन्य सामान नष्टकर दिये गये।

वहांसे सैनिक गाँवकी ओर चले। रास्तेमें जो मिला उसे संगीनसे घायल किया। एक जगह लोगोंकी भीड़ देख गोलियां भी चलायीं जिसके फलस्वरूप बीगन तिवारी धरखन ठाकुर, महाबीर ठाकुर, रामदत्त राय लोटन तिवारी और राजेश्वर तिवारी घायल हुए।

सैनिकोंकी ऐसी हरकतसे वहाँके नवजवान अत्यन्त उत्तेजित हो उठे और उनपर टूट पड़े। कुछने हैट कुछने कपड़े और कुछने बन्दूकें छीन लीं। एक बुढ़ियाने एक सैनिकपर ऐसी ईंट चलाई कि वह बेहोश होकर गिर पड़ा। दूसरीने ईंटकी चोटसे दूसरे सिपाहीका ठेहुना फोड़ दिया। कुछ लोगोंने बीचमें पड़कर सैनिकोंकी सारी चीजें वापस दिला दीं पर सैनिकोंको सन्तोष नहीं हुआ। वे श्रीराम प्रसाद तिवारीके घर घुसना चाहते थे पर तिवारीजी कहते थे कि हम हवेलीमें हरगिज घुसने न देंगे। हुज्जत होने लगी। एक सैनिकने गोली चला दी। परिमाण स्वरूप राम प्रसादजी वहीं शहीद हो गये और रामनारायण तिवारी दो दिन बाद मुजफ्फरपुर अस्पतालमें चल बसे। इसी सैनिकदलसे तेजौल निवासी श्री अयोध्या सिंहको गोली लगी जिन्हें तत्काल वीर गति मिली।

तीन चार सितम्बरसे ही साहबगंजमें सैनिकोंका दौरा होने लगा। सड़कके किनारेके घर लूटे जाने लगे और घरवालोंकी गिरफ्तारी शुरू हुई। २१ सितम्बरको

साहबगंज

६ लॉरियोंमें गोरे काले सैनिक डिपटी मजिस्टर मि० बनर्जीकी अध्यक्षतामें साहबगंज आये। उनने सनाइन स्कूल और डाक-बँगलेकी तलाशी ली। श्री विलासराय मारवाड़ीसे जेवर और रुपये झटक लिये और सर्वश्री मोहन साह और महेन्द्र साहकी दूकानें लूटीं। फिर उनने श्री शंकरलाल, सोहनलाल आदिको गिरफ्तार किया और बहुतोंको बेरहमीसे पीटा। बादको शंकरलालकी तिजोरी तोड़ी गई और असर्फी साहकी दूकान लूटी गई। बस्तीके श्री रामप्रसाद सिंहका मकान कई बार लूटा गया और श्री चतुरी साह, असर्फी साह तथा महेन्द्र साहको बड़ी मार पड़ी।

लगभग ७० आदमी गिरफ्तार होकर जेल गये जिनमें १६ को ही सजा पाकर रहना पड़ा। ३८ फरार थे जिनमें एक श्री बैद्यनाथ सिंह स्वर्गवासी हो गये और बाकी धीरे-धीरे पकड़ लिये गये।

१६ अगस्तको गोरोंका एक दल सीतामढ़ी पहुँचा। शहर डर गया। लोगोंने चुपकेसे अपने मकानोंपर फहराते हुये राष्ट्रीय झंडाको उतार लिया और दबक

सीतामढ़ी रहे। फौज वापस चली गई। पर फिर २४ अगस्तके बाद उसकी लॉरियां दनादन पहुंचने लगीं। मुजफ्फरपुरके एडिशनल कलक्टर मि० बन गोरोंको लेकर सीतामढ़ी पहुंचे। उनने कांग्रेस कमिटीका दफ्तर और खादी भण्डारके मकान फूंक दिये। बाबा नरसिंह दासकी कुटिया, ठाकुर रामनन्दन सिंह तथा श्री मोहन सिंह आदि व्यक्तियोंके मकान भी उनने जला डाले।

रेवासीमें सड़क काट दी गई थी। गोरोंकी लॉरी आती आती वहां फंस गई। वहांके कार्यकर्त्ता जमुना महथाकी खोज होने लगी। पर वह नहीं पाये गये। अपने घरपर मेथुर मण्डल मिले जो गोरोंको देखते ही मारे डरके चिल्ला उठे। तुरत बन्दूक सीधी गई और मेथुर मण्डलकी आवाज पूरी निकल भी न पाई थी कि हमेशाके लिये बन्द हो गई।

इस तरह आग लगाती गोली बरसाती गोरी फौज आई और चली गई। तब पुलिस भाई आये और आतंकित जनतासे रुपये ऐंठना शुरू किया। श्री धनुधारी मिश्र इस कलामें बड़े पटु निकले और गहरी रकम मारी।

घूस न देनेकी वजहसे बररीके महन्थ श्री रामकृष्णदासका मठ लूट लिया गया। रेडियो, बन्दूक, गहना और बहुतेरे सामान मठसे उठा ले जाये गये। मन्दिरके पुजारीका चमड़ा मारते-मारते उधेड़ दिया गया। महन्थजी बड़ी कोशिश पैरवीके बाद जेल जानेसे बच गये।

मेजरगंजमें सैनिकोंने इतना आतंक फैलाया कि लोग इनके आगमनकी खबर पाते ही मकईके खेतोंमें छिप जाते। इनने अम्नाके पं० मौजे झाको जो रेलवे मेजरगंज लाइनसे गुजर रहे थे, गोली मार दी। कार्यकर्त्ताओंकी गिरफ्तारीके सिलसिलेमें रातको घूमते हुए उनने नरहाके श्री सुखराउतको गोली मार घायल कर दिया। बेचारे छः महीनेके बाद उसी चोटकी पीड़ासे स्वर्ग सिधारे।

रघुनाथपुरके नन्नूमियाके शहादतकी दिलचस्पी कहानी है। नन्नूमिया योगेन्द्र चौधरीकी नौकरी करते थे और मेजरगंजके डेरेपर रहते थे। हथियारबन्द सिपाही वहां आये और डेरेमें घुसने लगे। योगेन्द्र चौधरी फरार थे। नन्नूमियाने राह रोककर कहा मालिक नहीं हैं; उनकी गैरहाजिरीमें आपलोग घरमें घुस नहीं सकते। उनकी बात सुनकर वे सब ऐसे पाजामेके बाहर हुए कि एकने उसी दम गोली छोड़ी और नन्नूमियोंको जख्मी कर दिया और बेचारे बड़ी तकलीफ सहकर दो महीनेके बाद मर गये।

मुबारकपुरके श्री रीझन सिंहको पुलिसने पीटते पीटते अधमरा कर दिया। उसने लूट पाट भी कम न किया। नरहाके बाबू शिवध्यान सिंह और ठाकुर रामपरीक्षन सिंहके घर लूटे। फाजिलमे तो उनने घरोंको लूटकर तोड़-फोड़ भी दिया।

रीगा सूगर फैक्टरीके मि० विन्सेन्ट तो बाजाब्ता सैनिकोंके कमान्डर बन गये थे। गोरी फौज फैक्टरीमें ही ठहरी हुई थी। इस फौजको लेकर विन्सेन्ट साहब रात दिन कार्यकर्त्ताओंके घरोंपर छापा मारते रहे और जनताको तबाह करते रहे।

पुपरी

दारोगा अर्जुन सिंह थाना छोड़ भागे तो जरूर पर धमकाते गये कि वह फौज लेकर तुरत आयंगे और थाने भरको खाकमें मिला देंगे। पुपरी रोज खबर पहुंचती कि अर्जुन सिंह आ रहे हैं और उस उस गांवको फूंक देंगे। उनके साथ मिलिटरी आ रही है जो किसीकी एक इज्जत उठा न रखेगी। इस इलाकेमे मिलिटरीकी बड़ी बदनामी फैल रही थी। एकबार इसकी बेजा हरकतकी शिकायत एस० डी० ओ० हरदीप सिंहसे की गई। लेकिन उनने कहा कि अभी क्या हुआ है? जब नौ महीनेके बाद घर घरसे गोरे गोरे बच्चे, निकलेंगे तब लोगोंको मालूम होगा कि मिलिटरी आई थी। एस० डी० ओ० की इस उक्तिसे लोग क्षुब्ध थे और मिलिटरीका सामना करनेकी तैयारीमे लगे थे।

२३ अगस्तको खबर फैली कि कल अर्जुन सिंह दारोगा मिलिटरी लेकर बाजपट्टी और पुपरी वगैरह लूटने आ रहे हैं। हर तरहसे उनका सामना करनेको लोग तैयार हो गये। जगह जगह सड़कें काटकर और पेड़ गिरा कर बिलकुल जाम कर दी गयीं। फिर लोग वनगांव चौकपर अर्जुन सिंहकी घातमें बैठ गये। लगभग दो बजे मोटर आई और सड़क जाम देख रुक गई। लोग चौकन्ने थे ही आंख मूंदे उनकी ओर दौड़ पड़े। मोटरसे आवाज आती रही कि हटो! भागो! रास्ता साफ करो और लोग उसपर लाठी पीटते रहे। अब मोटरवाले स्थिर न रह सके। उतर कर एकने राइफल संभाली पर लाठीकी कड़ी चोट खाकर हाथने राइफल डाल दी। पलक मारते लोग उसपर टूट पड़े। शोर हुआ 'हरदीप बाबू हैं! एस० डी० ओ० साहब हैं।' पर सुनता है कौन; लाठी और भाले चलने लगे। साथ बैठे थे पुलिस इन्सपेक्टर मूरतझाजी और दो कनस्टबिल श्रीश्यामलाल सिंह और श्रीदरवेशी सिंह। तीनों एस० डी० ओ० हरदीप नारायण सिंहको बचाने दौड़े और उन्हें गिरते देख अपनी जान लेकर भागे। तुरत दोनों सिपाही तो पकड़े गये

और मौतके घाट उतारे गये। हा! मूरतझाजीको मौका मिला और वे सड़ककी बगलके झोपड़ेमें छिप गये। क्रोधान्धोंने झोपडेमें आग लगाकर उन्हें बाहर निकाला और उनके आरज़ू मिन्नतपर कान न दे बड़ी बेरहमीसे उन्हें मार डाला? फिर लाशोंको गायब कर देनेकी योजना बनी और लाशें इकट्ठी की जाने लगीं। एस० डी० ओ० की लाश अपनी जगहपर न थी। लोगोंमें सनसनी फेल गई और लाशकी तलाश होने लगी। तुरत एस० डी० ओ० साहब कुछ ही दूरपर बड़ी कठिनाईसे खिसकते हुये पाये गये। फौरन उन्हें खतम कर डाला गया। फिर सभी लाशोंको पासके सोतेमें छिपाकर लोग तितर बितर होगये। लोगोंको यह जाननेकी भी फुरसत नहीं थी कि एस० डी० ओ० दलका एक ड्राइवर बच गया है जो उस हत्याकाण्डकी खबर देने सीतामढ़ी पहुँच गया है।

इस हत्या काण्डने लोगोंके खूनको सर्द कर दिया। एक सरकारपरस्त एस० डी० ओ० होनेके अलावे हरदीप बाबूकी और कोई खास शिकायत न थी। जोर जुल्म करके आन्दोलनको दबानेकी चेष्टा करनेवालोंमें उनका नाम नहीं लिया जाता था। इसे वह जानते थे। इसलिये बिना किसी तैयारीके बनगांव किसी तहकिकातमें आ रहे थे। श्रीमूरतझाजीके खिलाफ तो और कम शिकायत थी। इस हत्याका कार्यकर्त्ताओंको दुःख हुआ और वे कुछ घबड़ाये फिर तो जनताका आतंक सीमा पार कर गया और वह घर बार छोड़ भागने लगी। पुलिस हमारे भाई हैं—के नारेको पुलिस पहले चुप चाप सुन लेती थी कितनोंपर तो उनका असर भी पडता था। पर अब उस नारेको सुन वह चिढ़ने लगी। उनका मन फेरनेमें बनगांव हत्या काण्डका बड़ा हाथ है। उनकी राष्ट्र भावना ऐसी न थी जो उन्हें समझा देती कि हरदीप बाबू बिलकुल धोखेमें मारे गये और उनकी हत्याकी जबाबदेहीसे बचनेके लिये और हत्यायें हुईं; जनताकी विचार धाराका सम्बन्ध इस काण्डसे न था। पुलिस और अन्यान्य अफसरोंमें जो हमदर्द थे उनने भी मान लिया कि जनता बदल गई। और जनताने भी जान लिया कि वे सभी बदल गये।

२५ अगस्तको ग्यारह बजे अर्जुन सिंह, एस० पी० और कलक्टरके साथ ९ लॉरियोंमें फौजियोंको लेकर बाजपट्टी आ धमके। आपने लाशोंका पता लगाया, फिर पुपरीमें १९ और बाजपट्टीमें २५ आदमियोंको गिरफ्तार किया। लगे हाथ लालचन मदनगोपालकी दूकान लूटी। इनके दो लड़कोंको गिरफ्तार किया और तीसरे लड़के देवकीनन्दनको बेतरह मारा और आंखके पास संगीनसे घायल कर

दिया। दूसरे दिन फिर फौजियोकी दो लारिया पुपरी पहुँची। हाटका दिन था। फौजियोंने लोगोपर अन्धाधुन्ध गोलिया चलाईं। चोरौतके भदई कबारी वहीं ढेर हो गये और वहेड़ाके सहदेव साह और महावीर गोप अस्पताल जाकर मरे।

इस गोली काण्डसे पुपरी बाजार कांप उठा और अनगिनत लोग जान माल और इज्जतकी रक्षाके लिये रातो रात नेपाल भागने लगे। आसपास उजाड़ होगया।

३ सितम्बरको डी० आई० जी० और कलक्टर गोरे लेकर आये और जहां हत्याकाण्ड हुआ था वहां उनने आग लगा दी। ११७ घर धू धू करके जल गये। इन घरोमे ४८ घरोंकी मालियत हजारसे ऊपरकी थी। फिर इनने बाजपट्टी और मधुबनके बाजार लुटवाये कुछ लोगोंने लुटेरोका हाथ पकड़ना चाहा, बस, इन कायदे कानूनके पुतलोंने गोली चलवा दी जिससे जानकी प्रसाद और जयकृष्ण साहकी माताकी तत्काल मृत्यु हो गई।

५ सितम्बरको अर्जुन सिह फौज लेकर आये और नारायण प्रसाद, कमला प्रसाद, गौरीशकर, सीताराम सर्राफ, नन्दलाल शर्मा आदिकी दूकानोसे हजारोका माल लुटवा लिया। अंगरेजी सरकारको अपना सगा समझ चोर डकैतोने सर उठाया और एक तरहसे आराजकता फैल गई। गांव गॉवके स्त्री बच्चे गाँव घरके बाहर पेड़ोके नीचे, मकई वा ऊँखके खेतोमे दिनभर छिपे रहने लगे। ७ सितम्बरको अर्जुन सिहने फिर थानेमें आसन जमाया और पुराने तथा प्रसिद्ध कांग्रेसी श्रीरामविहारी महथा उसके कृपाभिखारी बने। चोरौतके पण्डित केदार पाठक भी उसकी ठकुरसुहाती करने लगे। फिर तो गोरोकी मददसे अर्जुन सिहने थानेभरको पीसना शुरू कर दिया। पुपरीमे १२ आदमियोको गिरफ्तार किया जिनमें एक थे श्रीराजनारायण मिश्र जिनने हेड गुरुअइ छोड़ कर आन्दोलनमें भाग लिया था। फिर तो यह रोज कोई न कोई गांव जाते घर लूटते, लोगोको गिरफ्तार करते और वड़ी बेरहमीसे मारते पीटते।

वाजपट्टी हत्याकान्डमे श्री रामवुझावन ठाकुर अव्वल मुद्दालेहमें से थे। आप फरारीकी हालतमे ही स्वर्ग सिधारे। पर रामफल मंडर पकड़ लिये गये और आपको फांसी हुई। औरोके साथ साथ आप भी नेपाल भाग गये थे परन्तु वहां दस दिन रह कर वापस आगये। लोगोने कहा फिर लौट जाओ, तुम्हारी जानका खतरा है। आपने जवाव दिया—"तू सब एतना वड़ डेराइ छ, फासो अगर परव त हमहो न। चोरी न कैलेछी जे हमरा लाज है।"

जिन्हें फाँसी लटका दिया गया !

शहीद रामफल मण्डल,
बनगाँव (मुजफ्फरपुर)

विदुपुर (मुजफ्फरपुर) के विद्यार्थी
रेलवे लाइन पर मार्च कर रहे हैं

एक राजबन्दीका घर जला दिया गया।
सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर)

उसी राजबन्दी का दमन-
पीड़ित परिवार,
सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर)
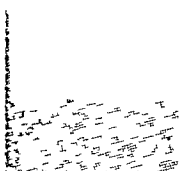
मुजफ्फरपुरके विद्यार्थी,
सरैयागंजमें मार्च करते हुए
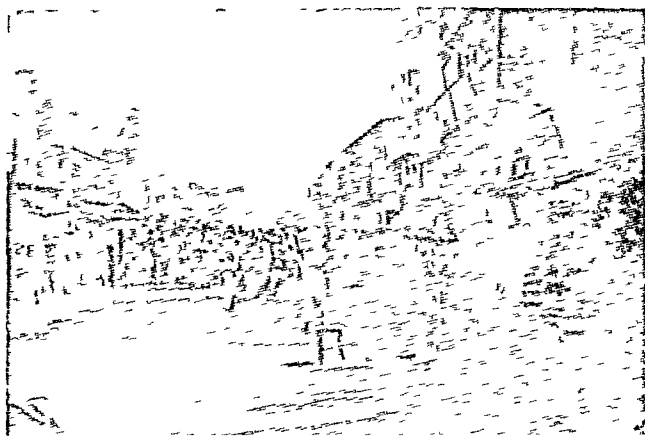
१६ अगस्तको जूनियर दारोगा अभयनन्दनजीके साथ फौजियोंकी एक टुकडी बेलसंड आयी। २१ अगस्तको ग्यारह बजे वे सब सदपुर पहुचे। कार्यकर्त्ता शिविरमें भगदड़ मच गई। श्री हरिहर प्रसाद सिंहने हटने या भागनेसे साफ इनकार कर दिया। दारोगाने उन्हें पकड कर जमीनपर पटक दिया और सीटी बजाई। गोरे दौड़ आये जिनको अभयनन्दनजीने कहा—"यही हरिहर बाबू हैं, थानेके एक मात्र नेता—१५००० की भीड़ लेकर थानेपर रेड करनेवाले।" गोरोंने राइफलके कुन्दोसे हरिहर बाबूको मारना शुरू किया। वे बेहोश होकर गिर गये और तब घसीट कर सड़कपर लाये गये। वहा जब होश हुआ तब फिर उनपर कुदो, गोरखोंकी भुजाली और बूटोंके ठोकरकी मार पडने लगी। वे मृतप्राय होगये और लॉरीपर लाद कर अपने घर अथरी लाये गये। राहमे भी वे खूब पीटे जाते रहे और बेहोश हो जानेपर बाढ़के पानीमें डुबाय जाते रहे। घरपर पहु च कर हरिहर बाबूने गिडगिडा कर कहा—मुझे अब गोली मार दो।" सुनते ही सिपाहियोंने उन्हें पटक दिया और उनकी छातीको इस तरह दबाया कि मुंहसे खून निकल आया। गोरे उनके मुंहपर घूसेबाजी करने लगे, कहते—यह जापानसे मिला हुआ है, पांचवे दस्तेका है।

अभयनन्दनजीने हरिहर बाबूके भतीजा श्री सुधीश नारायणको भी गिरफ्तार कर लिया। उसकी जेबसे गान्धीजीकी तस्वीर निकाली और झडा निकाला जिन्हें बूट तले मसल डाला। फिर सबोंने कुन्दोसे उसे खूब मारा और ब्लेडसे उसके कानके चमड़ेकी उपरली परत छील डाली।

सैदपुरसे बेलसड जाते समय इन सबोंने बहुतोंको मारा पीटा और लूटा। फिर वे सब सीतामढ़ी लौट गये।

उनके अत्याचारसे जनता और उत्तेजित हो गई और २६ अगस्तको थानेपर चढ़ दौड़ी। थानेमें कोई सिपाही न था। हां, सरकारके कागजात वगैरह तो थे ही। जनताने सबोको जला दिया और थानेको खूब तहस नहस करके लौट आई।

३० अगस्तकी सध्याने छपरेकी वीरताको कहानी खूनको स्याहीसे लिखी है। छपरा कार्यकर्त्ताओंका केन्द्र था जहासे आन्दोलनके सचालनकी योजनायें बना करता। उस दिन उन सबोंकी बैठक हो रही थी कि लॉरिया छपरा बाजार पहुँचीं। जनताने रास्ता रोक लिया। कार्यकर्त्ता भी उसकी दिलेरी देख कधेसे कधा भिडा खडे हो गये। सैनिकोंने न आव देखा न ताव, गोली बरसानी शुरु कर दी। हताहत गिरने लगे पर जनता टटी रही। सैनिकोंने लाशें लादीं और चलते बने। जो तत्काल शहीद बने उनकी

संख्या थी दस और नाम सर्वश्री जयमंगल सिंह, शुकदेव सिंह, भूपन सिंह, नौजद सिंह, बंशी ततमा, परसत साह, सुन्दर महरा छट्टू साह, बलदेव सूड़ी और शूकन लोहार। सख्त घायलोमे उल्लेखनीय थे सर्वश्री बिकाऊ कुर्मी, बुधन कहार, बुझावन चमार, मुक्त सिंह, राजेन्द्र धानुक, गुगुल धोबी, पूजन सिंह, गुलजार सिंह, रामाश्रय सिंह, बंगाली महतो, मौजे सूड़ी, चुल्हाई ठाकुर, रामलोचन सिंह, रामदेव सिंह और रामपुकार ततमा।

१ ली सितम्बरको सदलबल थानेदार आये और थानेमे बैठ गये। उस दिनसे लूट-पाट मार-पीटका जमाना शुरू हुआ। रामदेव सिंहजी और श्यामनन्दन सिंहजीके घरके सामान लूटे गये। डुमराके श्री प्रदीप नारायण सिंह, बेलसंडके बनारसी मारवाड़ी, रामप्रसाद सिंह, नन्दा जालान, पचड़ाके श्री मुसाफिर सिंह तथा सरयाके श्री ब्रह्मदेव नारायणको पुलिसने लूटकर कंगाल बना दिया। थानाको सहायक भी मिल गये। परसौनीके राजा साहबने फरार श्री शिवनन्दन महतोको पकड़वाकर खूब पिटवाया और पुलिसके सुपुर्द किया। छपराके श्री यमुना प्रसाद सिंहने बाहरसे आये हुये मस्ताना नामधारी स्वय-सेवकको पुलिससे पकड़वा दिया। उसपर अमानुषिक अत्याचार किया गया। एक सिपाही उसकी छातीपर चढ़कर जोर अजमाने लगा और दूसरा उनके गुदा-मार्गमें छड़ी घुसेड़ने लगा।

बैरगनियां

बैरगनियां थानेमे २२ अगस्तसे दमन शुरू हुआ। श्री रामप्रताप ठाकुर लोहार, मथुनी प्रसाद, श्री युगलकिशोर, श्री देवकीनन्दनके घरपर गोरे और काले सैनिकोने पुलिस सहित धावा किया और मनमाना लूटा। पिपराढ़ीके पं० विश्वनाथ अवस्थी तथा उसी थानेके श्री जंगबहादुर शर्माके घरोंकी तलाशी हुई और लूट-पाट भी। घूसका बाजार भी बहुत गरम रहा जिससे पं० गंगाधर झा और श्री रामचरण सिंह वगैरह जो पुलिसकी नाकके बाल बन रहे थे फायदा उठानेसे न चूके।

मार-पीट भी बेहद हुई। चश्मदीद गवाह ठा० रामप्रसाद विश्वकर्माका कहना है कि कुँवर सिंह कनस्टबिलके साथ सशस्त्र गोरोके दलने सड़कपर जाते हुये एक दयाली साह नामक व्यक्तिको पकड़ लिया। उससे कुछ मुदालहोके नाम पूछे गये जिसका जवाब वह नही दे सका। इसीपर बन्दूकके कुन्दोसे उसे इतना पीटा गया कि हफ्ते भर कराह कराह कर उसका प्राण पंछी उड़ गया।

इस थानेमे लोगोको अहिंसाका खूब खयाल रहा। एक घटना है, रक्सौलसे एक गोरा मालगाड़ीमे बन्द होकर रीगा मिलमे छिपने जा रहा था। रक्सौलमे उसपर काफी

मार पड़ी थी। जब मालगाड़ी बेरगनियां आकर रुकी तो मुंहा-मुंही खबर फैल गई कि एक डब्बेमें गोरा बन्द है। बौखलाई हुई जनता स्टेशनपर जमा हो गई और अपनेपर किये गये जुल्मका सारा बदला उस गोरेसे चुका लेनेके तैयार होती। ऐन मौकेपर श्री बजनाथ लालजी, सभापति थाना कांग्रेस साथी सहित वहां पहुंचे, लोगोंको शान्त किया और बड़े इन्तजामके साथ गोरेको रोगा पहुँचवा दिया।

एक और घटना यहां हुई जिससे हल्की सनसनी फैली। श्री युगलकिशोरजी मोतिहारी जेलसे सीतामढ़ी जाते वक्त पुलिसकी आंखमें धूल झोंक निकल गये और एक अरसेके बाद पकड़े गये।

सुरसंड थानाकी पुलिस दम साधे रही, जनता और कार्यकर्त्ताओंको सब कुछ करने दिया। पर ज्योंही ८ सितम्बरको अमरीकन सैनिक पहुँचे उसने अपना असली रूप

सुरसंड

दिखलाया। सर्वश्री जयनारायण लाठ और बलराम तिवारीकी हजारोंकी सम्पत्ति अर्जुन सिंह दारोगा लूटकर ले गये; और भी कितने लूटे गये। दीवालीके रोज कलक्टर और एस० डी० ओ० खुद हरेक फरारके घर फौज लेकर गये और उनकी आंखों आगे फरारोंके घर लूटे गये। सिर्फ एक श्री रामखेलावन साहके घरसे ७००) रु० के गहने लूट लिये गये।

अगलगी और मार-पीटका अनुभव इस थानेको भी हुआ। श्री रामलखन गुप्तका मकान जलाया गया। श्री बलराम तिवारी और उनके पुत्र श्री पवित्र तिवारीको अर्जुन सिंह पकड़ कर ले गये और थानेमें बड़ा मारा पीटा और अपमानित किया। सुरसंड थानेमें भी अर्जुन सिंहका अत्याचार और जगहोंकी तरह ही अपनी सीमापर पहुँच जाता अगर श्री रा० बा० महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह उनके अत्याचारोंका घोर विरोध नहीं करते।

२५ सितम्बरको थानेदार और मुतहीके रजिस्टरार सशस्त्र सैनिकोंके साथ थाना पहुँचे। महन्थ रघुनन्दन दासका निर्दोष चेला लाठीसे बेतरह पीटा गया। जुनुम

सोनबरसा

सिंहकी दाई भी मार मार कर बेहोश कर दी गई। मुतहीमें श्री भोला महतोका घर लूटा गया।

२० अगस्तको अमरीकन सैनिक लेकर एस० डी० ओ० और पुलिस इन्सपेक्टर थानेमें पहुंचे। उसी दिन उनने माछ पकौनीके श्री रामवृक्ष साहु, श्री सीताराम साहु

बेला

आदि ७ व्यक्तियोंके घरपर धावा किया और २५ हजारका माल लुटवा दिया। २४ अगस्तको जमादारके साथ एक लारी अमरीकन लुटेरा आये और श्री राजदेव सिंह और उनके भाइयोंका सामान लूट लिये। २ सितंबरको कांग्रेस कमिटीका

मकान और कोइरिया पिपराके बा० सोनकी सिंह तथा परमेश्वर सिंहकी बखारियां और मवेशीके घर जला दिये।

ठीक दीवालीकी रातको लूटते पाटते श्री गणेश प्रसाद सिंह देशी-विदेशी सैनिकोंको लेकर सिरसिया पहुंचे और डा० रुद्रदेव नारायणको ठोकर और राइफलके कुन्दोंसे मारने लगे। उनलोगोंने बेदम करके उन्हे एक तरफ गिरा दिया, फिर उनकी तिजोरियां तोड़ीं और सारा धन लूट ले गये। उसी रातको मनपौरा ग्राममें एक गर्भवती स्त्री सामने पड़ी। वह उन्हे गहना देनेमें हिचकिचाई, पर उसपर मार पड़ने लगी और इतनी मार पड़ी कि उसका गर्भपात होगया।

३ सितम्बरको एडिशनल कलक्टर बन साहब ३८ गोरोको लेकर महुरियां पहुँचे। शिवहर थानेके दारोगा महाविद्या प्रसादजी भी साथ थे। कोलाढका पुल दुरुस्त नही कर सकनेकी वजहसे सभी पैदल बरसातके जमे हुये पानीको पार करके ठाकुर नवाब सिंहके मकानपर पहुँच गये और ठाकुर साहबकी खोज की, पर ठाकुर साहब नेपाल चले गये थे मिलते कैसे? क्रोधमे आकर बन साहबने नवाब सिंहजीके मकानात जला डाले और उनका माल असबाब लूट लिया। फिर वह सदल बल शिवहरको रवाना हो गये।

शिवहर

शिवहरमे बन साहब और गोरे सैनिकोका शिवहरके राजाने दिल खोल कर स्वागत किया। पर जब गोरा दल बिदा हुआ तो अपने साथ उनके लड़के राजकुमार महेशनन्दन सिंहको लेता गया, पर बादको छोड़ दिया। मुक्ति पाकर राजकुमार महेशनन्दनने राजकुमार उमेश नन्दनसे सलाहकी और हरबे हथियारसे लैस अपना जत्था निकाला रातको पैट्रोमैक्स जलाकर, तारीख १० सितम्बरको। आगे आगे दो पट्ठे हाथी, फिर बन्दूकची सवार जिनके पीछे भाले बरछेवाले घुड़सवार और तब पैदल लठैत और कितनी बैलगाड़ियां। राजकुमार महेशनन्दन साहबके कमरसे बिगुल लटक रहा था और आप घोड़ेपर सवार सारे जत्थेका नेतृत्व कर रहे थे। जत्था ज्योंही ठा० नवाब सिंहके गोलेके पास पहुंचा, बिगुल बज उठा। सभी गोलेमे घुस मकान बरबाद करने और मकानके सामान लूटने लगे। गोला तो नामका रह गया था। दरअसल अब वह धर्मशाला जैसा था रातभरमे उसका मकान ढाह दिया गया और उस जगह राजकुमारने मजदूरोसे जबरदस्ती अपना मकान बनवाना शुरू कर दिया। वहासे जत्था आगे बढ़ा और बिगुलकी आवाज सुन श्रीशंकर उपाध्यायकी दूकानपर रुका। दिन दहाड़े दूकान लूट ली गई और उसका छप्पर हाथियोने नोच चोथ दिया। फिर हाइ स्कूलका नम्बर

आया जो तोड फोडकर जला दिया गया। स्कूलमे छिपे थे शंकर उपाध्यायके भाई जो स्कूल जलता देख निकल बाहर हुये। राजकुमारने उन्हे गिरफ्तार कर लिया। बादको राजकुमारने ज्वर पीडित तथा शय्याशायी श्रीकीर्त्तिनारायण सिंहको पकडवाया, वह थानेके प्रधान कांग्रेस कार्यकर्त्ता थे। उन्हें बडी बेरहमीसे पीटा गया। उनकी आँखमें सख्त चोट आई और अपना लहू-लुहान देह लेकर वे बेहोश गिर पडे। उनके तीमारदार श्रीकिशोरी सिंह और श्यामलाल सिंहपर भी खूब मार पडी। सबोंको लाकर राजकुमारने अपने मकानकी एक कोठरीमें बन्द कर दिया। आपने पुस्तकालय भी जलाया और लुटवाया, फिर कुछ विश्राम करके आपका जत्था श्रीकमलेश्वरीनन्दन सिंहको लूटने निकला। पर वहा रा० ब० महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह आये हुये थे। आपने राजकुमारको काफी फटकारा और जनताको उनसे भिड जानेके लिये उत्साहित किया। फिर तो जनता आवेशमें आगई। खदेड कर राजकुमार और उनकी सेनाको घर घुसा दिया और उनका रामबाग जला दिया।

इसी दिन यानी १२ सितम्बरको दारोगा महाविद्या प्रसाद साथी सहित गोरोंको लेकर महुअरिया पहुंचे। आतंक जमानेके लिये उनने गोली चलायी और श्री अनिरुद्ध सिंह शहीद हो गये। फिर ठाकुर रामनन्दन सिंहका घर जलाया गया और समूचा महुरिया बाजार लूटा गया। लोग आतंकित हो गये। और बहुतोंने नेपालकी राह ली।

गठियासे पीडित कुमार रत्नेश्वरीनन्दन सिंह २० अगस्तको पकड़ लिये गये थे। मि० बन गोरोंको ले उनके घर जा धमके और भाई-भतीजोंको बन्दूक, रेडियो सहित गिरफ्तार किया। सबोंको पानी हेलवाकर कैदीके रूपमे रीगा टेनन्टके पास पहुँचाया गया। वहासे बनगाव होते हुए जिसे इनकी आँखोंके सामने जला दिया गया गोरे इन्हे लेकर मुजफ्फरपुर पहुंचे। कुमार साहबके लडकेपर वारट था जिसकी तलाशमें सीतामढीके डिपटी मजिस्ट्रेट महथ दर्शनदासके यहाँ पहुंचे और जो सामान हाथ लगा लेकर चलते बने।

गिरफ्तारीके समय मारपीट भी जहाँ तहाँ खूब हुई। मोनहनपुरके कांग्रेस कार्यकर्त्ता बाबू रामबहादुर लालके मुंहमें घोडेका लगाम लगाकर घोडेकी तरह दौडाया गया और ऊपरसे कोडे बरसाये गये।

हाजीपुर शहरमें १७ अगस्तको ही गोरे पहुंचे और पुलिसको कमर सीधी करनेकी ताकत मिली। गोरोंने स्टेशनपर फकीरचन्द साहकी दूकान जला दी।

हाजीपुर टाउन और इधर उधर घूमकर खूबकर आतंक फैला दिया। फिर जोरोंकी गिरफ्तारी शुरू हुई। जो गिरफ्तार होते श्री केदारशर्मा, दारोगाके हवाले किये जाते। श्री केदारशर्मा जिन्हें पाते अन्धाधुन्ध पीटते। उनने हाजीपुर दियाराके सर्वश्री बेनी भगत, हरिजोवन भगत, भोला भगत, जईलाल भगत, रामनन्दन सिंह, आदिको गिरफ्तार किया और एक मील पीटते पिटवाते थाना ले आये। थाना आकर इनने बेनी भगतको जो ग्वालोंके नेता थे, लात जूतासे खूब मारा; फिर लाठी और बेंतके प्रहारसे इन्हें बेहोशसा कर दिया। तब इनके मुंहपर कालिख-चूना पोता गया, गलेमें झाड़ूकी माला पहनाई गई और फिर इनको बाजारमें मार खाते हुए घुमाया गया। बेचारे बेनी भगतजी खूनका दस्त करने लगे और पटना कैम्प जेलमें सदाके लिये सब कष्टोंसे छुटकारा पा गये।

श्री केदारने बूढ़ोंपर भी डंडे बरसाये। ५० सालसे भी अधिक उम्रके श्री सत्यदेव सिंहको इस तरह पीटा कि उनके अगल-बगलके दो दाँत टूट गये। श्री बलदेव तिवारी भी काफी पीटे गये। पं० जयनन्दन झाको भी तमाचा लगा। परन्तु केदार शाहीकी कठोरता पराकाष्ठापर पहुँची जब जगन्नाथानन्दजी उनके पंजेमे पड़े। स्वामीजी जेल तोड़ निकले और रेल तार छिन्न-भिन्न करते हुए बिदूदूपुर पहुँच गये। १८ अगस्तको एक कनस्टबिल उन्हे गिरफ्तार करने आया पर उनने उसको ही गिरफ्तार करके नीमके पेड़से बाँध रक्खा और जब उसने प्रतिज्ञा की कि अबसे सरकारी नौकरी नहीं करूँगा और स्वेच्छासे अपनी वर्दी पेटी वगैरह दे दी तब उनने उसे छोड़ दिया। उसकी वर्दी पेटी वहीं जला दी गई। लगभग दो महीने स्वामी जगन्नाथानन्दजी इधर उधर घूमकर देशरी और पटोरीमे काम करते रहे जहांसे वे जन्दाहा आये और महुआके दारोगा श्री सूर्य सिंह द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। सूर्य सिंहने उनके हाथ पैर और गर्दनको एक साथ बाँध लॉरीमे पटक दिया और पीटता हुआ स्टेशन आया। वहांसे रेलकी सफर थी। उनको साथ लेकर सूर्यसिंह हाजीपुर आया और केदार शर्माके हवाले कर दिया।

केदार शर्मा उन्हें हाजीपुर थाना लेआये। साथमे थे जन्दाहाके राहुलजी और महुआ थानाके श्री जगदीशपुरी। थानाके बरामदेमे इनको खड़ा करके श्री केदार शर्मा दारोगा और श्री रामप्रीति पाण्डेय इन्सपेक्टरने सात आठ सिपाहियोंको लेकर इन्हें पीटना शुरू किया। इनका सारा शरीर फूट गया; तलहत्थी फट गई,

अंगुलियां थकुच गईं और वह बेहोश होगये। पुलिसने तब इन्हें नालेमें गिरा दिया, एक सिपाहीसे संगीन लेकर श्री केदारने बगलसे इनके पेटपर वार किया जिससे लगभग ८ इञ्च लंबा और २ इञ्च गहरा घाव होगया। इनका भीमकाय शरीर ही कुछ ऐसा था जो इतनी यातनायें बर्दाश्त कर सका। नालेकी ठंढ और दुर्गन्धने इन्हें होशमें ला दिया। फिर पुलिस इन्हें पकड़ लाई और रामप्रीति पाण्डेयजीके आदेशानुसार इनका बाजारमें जलूस निकाला गया—कालिख चूना लगाकर, गदहेपर चढ़ाकर। केदार शर्माजी नारा लगवाते—'जेल तोड़नेवालेकी दशा देखिये।'

हाजीपुरमें लूट पाट भी कम न हुई। हेला बाजारके दुसाधके घर भी बुरी तरह लूटे गये। पर जबरदस्त लूट हुई पटेल परिवारकी। डा० गुलजार और श्री राजेश्वर पटेल फरार थे। घरके सभी पुलिसके क्रूरपाशसे बचनेके लिये जहां तहां भटक रहे थे। उस समय पुलिस इनके मकानपर आई और लूट पाट तोड़ फोड़ शुरू किया। फिटन घोड़ा और दूसरे दूसरे सामान पहले जब्त हो चुके थे। अबकी पलंग, कुर्सी, किवाड़ चौखट, दवाय, किताबें, बरतन वासन उठाये गये। कपड़े लत्ते भी न छोड़े गये। श्री केदारनाथ सिंहकी भी काफी लूट हुई।

लूट और घूसखोरी साथ साथ चली। दोनों तरहसे पुलिसने काफी माल उड़ाया। हां श्री केदार शर्मा लूट-घूसके साझीदार न थे; वे कार्यकर्त्ताओंका मांस उड़ाते थे, माल नहीं।

डा० गुलजार प्रसाद और श्री राजेश्वर पटेल आदिने जेलसे निकल कर सारन जिलेमें आश्रय लिया। पर वे दोनों केदारनाथ सिंह और शिवनन्दन दुबेके साथ छपरा शहरमें पकड़ लिये गये और जेलमें डाल दिये गये। छपरा जेलसे सभी २५ सितम्बरको मजिस्टर साहबके इजलासमें हाजिर होनेके लिये हाजीपुर लाये गये। डा० गुलजार प्रसाद लिखते हैं—"मैं तीन व्यक्तियोंके साथ छपरा जेलसे हाजीपुर लाया गया। ऐसा जान पड़ता है कोर्टके साथ स्थानीय पुलिस अधिकारियोंने कोई षड्यंत्र पहले होसे रच रखा था। अतएव मैं कोर्टमें दाखिल करके वहांके जेलमें भेजा न जाकर स्थानीय थानामें लाया गया। वहां रातभर बन्द रहा। सुबहको जूनियर दारोगा बाबू केदारनाथ शर्माने मुझको बुलवाया। पूछा—कहिये, आपके साथ क्या किया जा सकता है? मैंने कहा जो कुछ आप कर सकते हैं खुशीसे कीजिये। इसपर उनने बेंत मंगवाया और मुझे थानेके भीतर लेगये। बोले,

स्वराज देखनेके लिये मै आपको जिन्दा न छोड़ूंगा। मैंने उत्तर दिया—खुशी है मुझको कि मेरे मरनेके बाद ही सही पर स्वाराज्य तो होगा, इसे आपने कबूल-कर लिया। इसपर भूखे शेरकी तरह आप मुझपर टूट पड़े और मुझे बेतसे काफी मारा, फिर आपने हुक्म दिया कि मेरा शृङ्गार किया जाय और मेरे लिये खास सवारी मंगायी जाय। मेरा मुंह कालिख चूनेसे रंगा गया; गलेमे जूतोका हार पहनाया गया और दो गदहोमे से एकपर चढ़ाया गया। दूसरा गदहा भी साथ रखा गया शायद इसलिये कि एकके थकनेपर दूसरा काममे लाया जाय। इस तरह पुलिसवालोके घेरेमें मेरा स्वांग निकला।

मेरे सड़कपर आते ही शहरकी दूकानोके किवाड़ फटाफट बन्द होने लगे। भीतर घरोसे किसी किसी औरतके रोने और चीखनेकी आवाज आने लगी। कहीं कहीं जो मर्द दीख पड़ते थे उनका चेहरा रोषसे तमतमाया जान पड़ता था। मगर किसीकी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि पुलिसवालोके विरुद्ध कुछ बोल सके। रास्ते रास्ते थप्पड़ बेतसे मेरी पूजा होती रही। साथ साथ अश्लील गालियोकी बौछार हो रही थी, लौटते समय उनका विचार हुआ कि मुझे जूतोसे पीटा जाय। मैंने उन्हें अपना चप्पल निकाल कर दे दिया। मारते मारते उन्होने चप्पलको तोड़ दिया। .... फिर मै जेल भेज दिया गया। हा यह सब मारपीट जो हुई सब पुलिस इन्सपेक्टर बाबू रामप्रीति पाण्डेयजीके सामने।"

हाजीपुर थानेके बिदुपुर बाजारमें २५ अगस्तको देशी विदेशी सैनिकोंकी दो लॉरिया आईं। श्रीकेदार शर्मा, दारोगा हाजीपुर, श्रीरामप्रीति पाण्डेय, पुलिस हाजीपुर थाना इन्सपेक्टर हाजीपुर और एक कनाडियन कप्तान उन सैनिकोके साथ थे।

इन लोगोने शीतलपुरके बाबू लालबंहादुर सिहका मकान सामान सहित जला दिया। उनपर स्वामी जगन्नाथानन्दके छिपा रखनेका अभियोग था। बाजारमें श्रीअम्बिका दास कनौजियाके पक्का मकानमे आग लगा दी गई और घरका सारा सामान उठा उठाकर आगमे फेक दिया गया। अम्बिका दासजी फरार थे। उनके बूढ़े और अन्धे पिताको भी तमाचे लगाते और बन्दूकके कुन्देसे उनकी पीठकी हड्डी हिला देनेसे श्रीकेदार बाज नहीं आये। फिर श्रीद्वारिका प्रसादके मकानमें आग लगाई गई। ठीक इसी समय क्रान्तिकारियोका जयघोष सुन पड़ा। इन सबोंका ध्यान उधर खिचा; इधर लोगोने द्वारिका बाबूके घरकी आग बुझा दी। तुरत एक

अमानुषिक अत्याचारके शिकार

श्रीरामानन्द ब्रह्मचारी,
दलसिंह सराय (दरभंगा)

श्रीराधाप्रसाद सिंह,
सिंधिया (दरभंगा)

अमानुषिक अत्याचारके शिकार

डाक्टर गुलजार प्रसाद,
हाजीपुर (मुजफ्फरपुर)
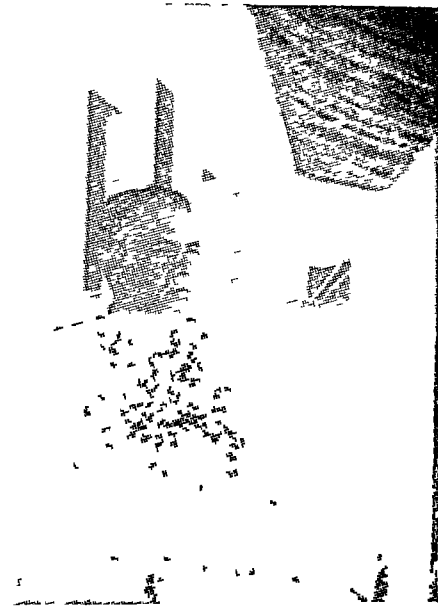
डाकृर मुक्तेश्वर सिंह,
ताजपुर (दरभंगा)
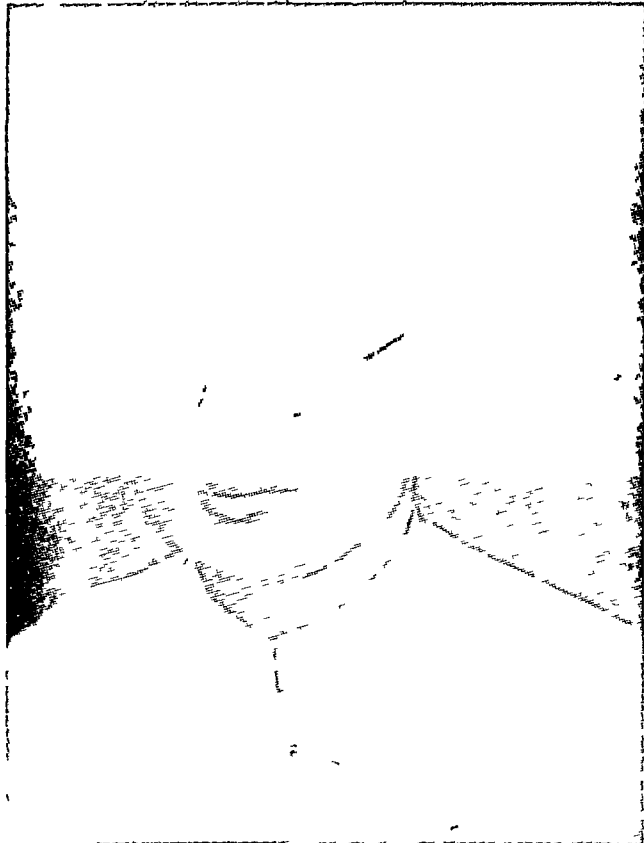
बहुत बड़ा जलूस बिढुपुर चौककी ओर आता दीख पड़ा। जलूसको प्रोग्रामके मुताबिक आज निकलना था, इसलिये वह निकला था। इसे दुर्योग मानिये कि जब वह चौकको आ रहा था वहां पुलिस और फौज पहुँची हुई थीं और "स्वाभाविक" कार्रवाई कर रही थीं। जलूसको देख वे डरीं और दनादन उसपर गोली छोड़ने लगीं। पहले खाली आवाज जरूर हुई पर तुरत गोली सीधी मार करने लगी और बातकी बातमें सात आदमी अपना अमर नाम सदाके लिये छोड़ गये। उनके नाम हैं सर्वश्री राम औतार राय, हरवंश राय, बुधन दुसाध और रोशन राय, ककरहटाके, ढोढाई राय और राम दास, बिढुपुरके और एक हेमराज राय परोहाके थाना राघोपुरके जदुराय बुरी तरह घायल हुये।

उखड़ी हुई रेलवे लाइनको जोड़ती बैठाती गोरोंकी स्पेशल गाड़ी १६ अगस्तको टेनब्रुक साहब भगवानपुर ले आये। गोरोंका एक दल उतरा और श्रीदीपनारायण महुआ सिंहके बिठौली आश्रमपर जा धमका। आश्रम जला दिया और लगे हाथ स्कूल, ग्रामसुधार केन्द्र और खादी भण्डारको सामान सहित फूंक दिया। दूसरे दलको टेनब्रुक साहब बिठौली गांवमें लेगये और १० बजेसे ३ बजे शामतक किरासन तेल छिड़क छिड़ककर लोगोंका घर जलाते रहे। ८० घरोंको धू धू करके आग चाट रही थी और ऊपर हवाई जहाज मंडरा रहा था। और निहत्थोंका बिठौली ग्राम सुनसानसा था क्योंकि एक दिन पहले ही लोगोंने गांव छोड़ दिया था।

थानेके और और हिस्सोंमें भी टेनब्रुक दलने अपनी करामात दिखलाई। बिहारीमें चार घर, गोरोलमें पाँच घर, जन्दाहामें अनेक और कन्हौलीमें एक घरको जला दिया गया। लोना, कन्हौली, बोभा आदि गांवोंमें पुलिसकी सहायतासे गोरोंने अनाज निकाल ढेर कर दिया और उसमें आग लगा दी।

टेनब्रुक दलने कितनोंको मौतके घाट उतारा। बिठौली ग्राममें आग लगाते समय गोरोंने देखा कुछ दूरपर एक खड़ा खड़ा उनको देख रहा है। तुरत वह गोलीका निशाना बनाया गया। नाम था श्रीरासबिहारी सिंह। श्रीरासबिहारीको काम करनेकी लगन थी और सोभी बहुत पुरानी। आपने इस असहयोगके जमानेमें गया कांग्रेस पैदल ही चल कर देखा था।

इस थानेमें अमानुषिक अत्याचार भी काफी हुये। कन्हौलीके पण्डित महावीर झा बैद्यके मुंहमें गोरोंने थूक दिया। उन्हें पकड़ कर वे गय थाना लेगये और थूक फेंक कर चाटनेको कहा। पण्डितजीने ऐसा करनेसे इनकार किया। जिससे उनपर

हण्टर और कोड़े खूब बरसे। बिफ़रौलीके श्रीशिवनन्दन चौधरीको खूब पीटा गया और उनके खूनसे चपचपाये शरीरपर लाल चींटियोका छत्ता डाल दिया गया। लाल चींटियां उनके शरीरको चिमट खाने लगीं जिससे वे छटपटाने लगे। गोरे और काले दोनों उनका छटपटाना देखते और मुस्कुराते। श्रीभागवत शर्माके दोनों पैर उठाकर एक साथ कुर्सीके सिरेसे बॉध दिये गये और तलवोंपर हण्टरसे इतना मारा गया कि वे मुर्छितसे हो गये। बादको वे जेल भेज दिये गये जहां कई दिनों तक वे चल फिर नहीं सके। यहांके स्वामी जगन्नाथानन्दपर जो बीता सो हाजीपुर प्रकरणमें लिखा जा चुका है।

महुआ थानेमें लूट पाट और घूसखोरीकी भी धूम रही। सेहानका खादी भण्डार लूटा गया। महुआके श्रीरामेश्वर चौधरी प्रेसिडेन्ट थाना कांग्रेस कमिटीका, बीस हजारसे भी अधिकका माल लूटा गया। श्रीसूर्यदेवनारायण सिंहके नेतृत्वमे अमरीकन फौज उनकी दूकानपर गई और उसे लूट लिया। उनके भतीजे श्रीअवधेश्वर चौधरीने गोरोको लूटनेसे रोका जिसपर वे सब अवधेश्वर चौधरीपर टूट पड़े। ठोकर, हण्टर और राइफलके कुन्दोसे उन्हें इतना मारा कि कुछ दिनके बाद ही वे दुनियासे चल बसे। यहांके गणेश लाल चौधरी और बहैसीके चन्दू सहनी और धोधुआके फुदेनी प्रसाद आदि लूटे गये। लोआ, धोधुआ, जन्दाहा और सिघाड़ा आदि गांवोमे और भी लूट हुई। घूसखोरीके शिकार तो थाने भरके लोग हुये। बीट नं० १८, ८, ६, ५, और २ को छोड़ कर १ से २० बीट नम्बर तकके गांवोंको पुलिसके जेब खूब भरने पड़े।

३ सितम्बरको १० गोरोको लेकर दारोगाने महनार थानेमें पैर रखा और श्री मदन झाको गिरफ्तार कर लिया। श्रीयुत मथुरा प्रसाद चौधरी और मियां सर्फुद्दीन कार्यकर्त्ताओके घर बतलाने और उनके परिवारवालोंको तंग करवानेमे पुलिसके दाहिना हाथ साबित हुये। ४ सितम्बरको दारोगाजी फिर गोरोके साथ आये। मदन झाजीके घरका ताला तोड़ यूनियन बोर्डके कागजात मथुरा बाबूके पास भेजवा दिया और लौट गये। उस दिन उनने श्री मदन झाजीको महुआ पहुँचा दिया। ६ अगस्तसे उनने अपनी 'असली कार्रवाई' शुरू की। गान्धी आश्रमकी तालाशी ली, श्री रामचन्द्र सिंहके सभी सामान, कपड़े लत्ते, पलंग बक्से और चौखट किवाड़ जला डाले। उनके चाचा श्री निरसूसिंहको गिरफ्तार कर लिया पर २००) रु० घूस लेकर छोड़ दिया। बादको वे सदल बल

महनार

हमीद मियाके घर पहुँचे और उनके घरको बिलकुल फूंक दिया। श्री रामप्रसाद ठाकुरका घर भी जला दिया गया।

इस थानेमें अगस्त आन्दोलनका इतिहास अधिकांशतः श्री मदन झाकी शूरता और शहादतका इतिहास है। ये लिखते हैं—"शामको महुआ पहुँचा। वहाके दारोगा श्री सूर्यदेव सिंह मुझको देख कांग्रेसवालोंको गलियाने लगे। मैंने टोका मुझपर फट पड़े। मेरा मन दुखी हो गया। मैंने रातको भोजन नहीं किया, दारोगा साहब तब पछताने लगे। सुबहमें मैंने भोजन किया और उसी दिन यानी ५ सितम्बरको हाजीपुर पहुँचाया गया। वहाँ मैं कोर्ट इन्सपेक्टरके आफिसके ओसारेपर खड़ा रहा। मेरे साथ चार अभियुक्त और थे जो वहीं बैठ गये।

तीन बजे होंगे। कहींसे श्री केदार शर्मा, हाजीपुरके दारोगा आये और मुझे गान्धी टोपी और खद्दरकी धोती कुर्ता पहने देख कोसने लगे पर महनारके एक कनस्टबिलने उनसे कुछ कहा और वे चुप हो गये। महनारकी पुलिसने बराबर मेरे साथ अच्छा व्यवहार रक्खा। कुछ देरके बाद इन्सपेक्टर ऑफ पुलिस श्री रामप्रीति पाण्डेय आये और आते ही उनने जो चार अभियुक्त बैठे थे उनमें हरएकको तीन चार बेत मारा और एक एक ठोकर दिया। फिर वे मेरी ओर बढ़े। मेरी पीठपर दस-बारह बेंत खींच लिया। फिर गर्दनपर इस जोरसे मारा कि मैं ओसारेपर बेहोश गिर पड़ा।

चेतना आई तब सोचा कि अब छुट्टी मिल गई। पर रामप्रीति पाण्डेयने एक कनस्टबिलको कहा—इसकी एक टांग उठाओ और पीटो। उसने एक टांग उठाई और तलवेसे कमर तक दस बारह बेंत मारे और इसी तरह दूसरी टांगमें भी। फिर पाण्डेयजीने हाजीपुरके छोटे दारोगा श्री केदार सिंहसे कहा—इसे ऑफिसमें ले जाओ खूब पीटो।

"केदार बाबू आफिसके टेबुलके पच्छिम तरफ मुझको ले गये और पीटने लगे। मैं बेहोश हो गया। होश आनेपर फिर उनने पीटना शुरू किया और फिर मैं बेहोश हो गया। अबकी जब होश आया तब उनने कहा—उठो। मैं उठा। वे बोले—कान पकड़कर बैठो। मैंने ऐसा करनेसे इनकार कर दिया। तब एक कनस्टबिल उनके हुक्मसे मेरी कनपट्टीमें तमाचे लगाने लगा। इसी वक्त रामप्रीति पाण्डेयने बाहर आनेका हुक्म दिया। मैं बाहर लाया गया जब उनने दस-बारह बेंत लगाये और जो चार कैदी मेरे साथ आये थे उनको कहा—इसको मारो।

डराने धमकानेपर उन सबोंने मुझको धीरे धीरे पीटना शुरू किया पर जब डांट पड़ी जोर जोरसे पीटने लगे। एक बोला—अंगरेजी राजमें हम सब चैनसे रहते थे। ऐसे ऐसे फसादियोंने ही हमें आफतमें डाला है।

"फिर रामप्रीति पाण्डेयके हुक्मसे कालिख चूना लाया गया और एक कनस्टबिलको मेरा मुंह पोतनेके लिये कहा गया। मैंने मुंह ढक लिया। पर जबरदस्ती यानी मेरे हाथोंको मेरी पीठ पर कसकर एक तरफ चूनेसे और दूसरी तरफ कालिखसे मेरा मुंह पोता गया। फिर मेरे गले एक लबनी लटका दी गई। तब पाण्डेयजीने कहा—लेजाओ! इसे घुमाओ। केदार बाबू दो कनस्टबिलके साथ मुझको कचहरीकी सड़कसे लेचले और जब मुख़तार खानेके सामने पहुँचे तब जोरसे बोले—देखिये, यह महनारके इन्सपेक्टर साहब हैं। जगलाल चौधरी इनके लिये लबनी छोड़ गये हैं जिसे लटकाकर यह घूम रहे हैं। यह इनकी दावात है और यह बेत इनकी कलम है। वहांसे वह पोस्ट ऑफिसके सामने आये और अपनी बात दुहरायी। जितने वहां थे सुनकर हँस पड़े। वहांसे केदार सिंह मुझको लौटा लाये और एस० डी० ओ० की कचहरीके नजदीक पहुँचे वहाँ नालेसे थूक पीक मिला हुआ पानी बह रहा था। केदार बाबूने एक कनस्टबिलको कहा—इस पानीसे इसका मुंह धो दो। पर उस समय पाण्डेयजी आगये और उनने दूसरे पानीसे मेरा मुंह साफ करवाया। मै फिर उनकी ऑफिसमे लाया गया जहाँ मेरी लबनी हटा दी गई। पाण्डेयजीने कहा इसे भीतर लेजाओ और खूब पीटो। एक कनस्टबिल मुझे लेगया और घूसे लात थप्परोंसे मारने लगा। मै गिर गया और उठनेसे अपनेको असमर्थ पा वहीं बैठ गया। पाण्डेयजी मां बहनको गलियाते हुये बोले—इन्ही लोगोने मूरत झाको मरवा डाला है। जाओ, इसे जेल रख आवो। तब मै ५ सितम्बरकी शामको हाजीपुर जेलमे दाखिल हुआ।'

शहीद मदन झाकी आपबीतीका यह एक अंश है। जेलमे इनका शरीर दवा दारूके बावजूद भी संभल न सका। रामप्रीति पाण्डेय और केदार सिंहकी अमानुषिकता इन्हें धीरे धीरे और तिल तिल करके निगलती गई। बीमारीकी वजहसे अधिकारियोंने इन्हें जेलसे बाहर कर दिया और बाहर हो क्षय रोगकी पीड़ाने इन्हें अमर शहीद बना दिया।

राघोपुर

३१ अगस्तको गोरे और भारतीय सिपाही राघोपुर थाना आये और मकान तोड़ना, लूटना और जलाना शुरू हुआ।

ठाकुर अमीर सिंहका मकान लूटा और जलाया गया। टिकाऊ सिंह, सन्त विलास सिंह, शिव प्रसाद 'आजाद', राम लखन भगत, हरनन्दन राय, राम नन्दन सिंह, जगदीप सिंह, दारोगा सिंह, नन्दन सिंह, राजमंगल सिंह आदिके मकान लूटे गये। तेतर राय और देवनन्दन रायकी सबसे ज्यादा लूट और बरबादी हुई। इनमेंसे कई सज्जनोंके अन्न और मवेशी तक लूट लिये गये।

रुस्तमपुरके बुलाकी साहको भारतीय सिपाहियोंने इतना पीटा कि तीन दिनोंके बाद उनका प्राणान्त ही हो गया।

पातेपुर

इस थानेमें गोरे, जाट, बलूची तीनों आये और थानाभर घूमे। बहुआरा कोठीके मैनेजर मि० डोन्टने गोरोंको लेकर बाबू नथुनीलाल मेहताका घर लूट लिया और घरको पस्त भी कर दिया। यहां बलूचियोंने हाट बाजार जाकर चीजोंकी काफी छीना झपटी की। मालवालोंमे आतंक छागया। जबरदस्ती चीज उठा लेनेमें जाट किसीसे पीछे न थे।

इन सभी सैनिकोंको अपनी कार्रवाई करनेमें मदद मिलती थी पातेपुर महंथ, चौधरी मदन मोहन प्र० सिंह, वशिष्ठनारायण सिंह और रामगुलाम साहसे।

पातेपुर महंथकी खास दुश्मनी थी शिव नारायण महतोसे। उनने फौज बुलाई और शिवनारायण महतोजीको गिरफ्तार करवाकर थानेपर खूब पिटवाया और फिर उनके परिवारको तंग किया। सुन्दर महतोको अपने स्थानपर बुला कर खूब पिटवाया और उसकी मकई उठवा ली। फौजियोंसे पकड़वाकर खूब काम लेना या धूपमें खड़ा रखना तो आम बात थी।

दरभंगा

शहरमें १६ अगस्तसे पुलिसका सिक्का जमने लगा। १८ अगस्तको मेडिकल स्कूलका होस्टल घेर लिया गया और उसकी तलाशी हुई। श्रीजगतनारायणकी पेटीसे बघनखा निकला और वे गिरफ्तार कर लिये गये। मिथिला कॉलिज और जिला-स्कूल आदि संस्थाओंपर भी पुलिसका आक्रमण हुआ और सभी संस्थायें बन्द कर दी गयीं। १६ अगस्तको बाबू कमलेश्वरी चरण सिन्हा और श्रीरामबहादुर प्रसाद गुप्त, श्रीराजेन्द्र प्रसाद आदि गिरफ्तार हुए और शहरका आन्दोलन बहुत ढीला पड़ गया। फिर भी रामेश्वर प्रसाद सिन्हा वकीलकी कर्मठता और दिलचस्पीकी वजहसे शहरवाले कुछ जोश दिखलाते रहे पर पीछे वह भी गिरफ्तार हो गये और शहरका आन्दोलन ठंढा हो गया। फिर सरकारकी ताकत गांवोंको दबानेमें लग गयी।

२१ अगस्तको पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कुछ फौज लेकर बहेरा पहुँचा। उसने कांग्रेस आश्रमको सामान सहित जला दिया। फिर उसने श्रीसत्यदेव झा और रामनारायण झाके घरोको लूट कर जला दिया। श्रीनथुनी पटवाकी दूकान भी इसने लुटवा दी और सूबेलालको गिरफ्तार कर लिया। वहांसे वह सदल बल हावी भौआर गया। वहां श्रीपरमानन्द झाकी कुछ चीजे लूटी गयीं और श्रीरघुनाथ झाका मकान लूटा गया और बखारी जला दी गयी। इसके बाद बहेरामे पुलिसकी मनमानी चलने लगी और बहेरा हाइ स्कूलके मास्टर विष्णुगुलाम झा उसके दाहिने हाथ बन जनताको तरह तरहसे सताने लगे। सितम्बरके पहिले हफ्तेमे पुलिस बिठौली आदि गांवोंमे गयी और श्रीशत्रुघ्न राय आदि कार्य कर्त्ताओके माल मवेशीको जब्त करने लगी।

बहेरा

६ सितम्बरको एक मजिस्ट्रेटके साथ डी० एस० पी० सदलबल ठाठूपुर पहुँचे। वहां उनने रामकरण सिह, रामाश्रय सिह और बच्ची सिहको लूटा। वहां हुलास सिह खड़ा था जिसे उनने एककी बखारीसे धान निकालनेको कहा। उसने इनकार किया। जिसपर डी० एस० पी० उसे पीटने लगे। हुलास सिहने एक दो बार मना किया फिर भी बेतको रुकता न देख उसने डी० एस० पी० को पटक दिया और उसकी छातीपर चढ़ बैठा। तुरत मजिस्ट्रेटके हुक्मसे सिपाही लपके और डी० एस० पी० को छुड़ा दिया। डी० एस० पी० चला गया। पर थोड़ी देरके बाद एक ट्रक पर पुलिसको लेकर ठाठूपुर लौटा। बन्दूककी खाली आवाज करके लोगोंको डरा दिया। बच्ची सिह और बहादुर सिहके मकानको लूट कर जला दिया। इतनेमें लोगोकी भीड़ लग गयी और सभी डी० एस० पी० को खरी खोटी सुनाने लगे। वह आगे बढ़ा तब लोग राह रोक खड़े हो गये इसपर उसने काफी गोलियां चलवायीं। तीन घायल हुये। दो स्त्रियां और एक पुरुष। दूसरे दिन बहेराके दारोगा बहेरी पहुँचे और अनूठ महतो, विन्ध्येश्वरी मिश्र और वासिल शाहकी मदद पाकर उनने लोगोपर खूब अत्याचार किया। दारोगा साहब हाथीपर सवार थे और अपने साथ नवादाके विष्णु गुलाम झाको रख रखा था। वहां उमाकांत ठाकुरका घर लूटा गया और जयनारायण ठाकुरके घरको लूट कर हाथीसे पस्त करवा दिया गया। ठक्कोसाहु और लक्ष्मीकांत ठाकुर और कौशिक मुखियाके घरकी भी ऐसी ही दुर्दशा की गयी। वहांसे यह पुलिस दल बघौनी आया जहां उसने श्रीउमाकांत झा और सीवन गहलौतके घरको लूट कर जला दिया। उगन्त मिश्र

और गंगाधर मिश्रकी भी कुछ लूट हुयी। सहरू गावमें भी इन पुलिसवालोंने गोली चलायी। लोगोंको डराया और काफी लूट पाट मचायी। फेंकन मंडरके घरको लूट कर दारोगाने जला दिया और हरौती मडर, सेवालाल मडर और झगरू मडरके घरोंको लुटवा दिया। नोच खसोट और घुसखोरी तो कितने गांवोंमे चलती रही।

खरारीमें सरकारी ताकतसे लोहा लेनेवाले थे परिवार सहित श्रीरामबरन सिंह और उनके संगी साथी। इनकी वजहसे हथौड़ी कोठीकी मेम साहबाने अपने यहां दारोगा सहित सिपाहियोंका पड़ाव डलवा रखा था। इस तरह हथौड़ी कोठी थाने जैसा काम करती थी। इसने रामबरन सिंह आदिके घरको जला दिया और जिन जिन गावोंमें वे लोग गये उन सबको काफी परेशान किया।

बिरौल थानाके रसियारी गाँवमे पुलिस आयी ४ सितम्बरको और दरभगा राजके ग्रूप ऑफिसपर कब्जाकर लिया और राजके अमलोंको वहाँ बैठा दिया। दूसरे दिन वे पाली आये; काफी साज-बाजके साथ। पालीमें हिन्दू-मुसलमान भाई-भाईकी तरह रहते थे। गॉवमें पुलिसको देख डंकेपर चोट पड़ने लगी और लाठी भालेसे सुसज्जित ग्रामीणोंकी भीड़ लग गयी। इसलिये पुलिसवाले उस गॉवको लुटवा न सके। वे चुपचाप कनकलाल झाके पास आये और बोले मैं आपको गिरफ्तार करता हूँ। पण्डितजीने कहा कि मैं ७ अगस्तसे ही आजाद हूँ। मैं गिरफ्तार नहीं हो सकता। इसपर पुलिसने उन्हें उठाकर हाथीपर चढा लिया और चलते बने।

दूसरे दिन हथियारबन्द सिपाहियोंको लेकर सैलिसबरी साहब सुपौल पहुँचे; वहॉसे पैदल चलकर रजवा आये जहाँ उनने सर्वश्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, सत्यनारायण सिंह और उनके सभी भाइयोंके घर फूँक दिये। उनके एक भाई बुच्चनबाबूके घर दो दिनका बच्चा था। जिसे लेकर बैठी हुई मां आगसे घिर रही थी और सिपाही उसको निकालनेसे बुच्चनबाबूको रोक रहे थे। लेकिन अन्तमें सैलिसबरीने इजाजत दे दी। आगकी लपटोंके बीचसे बुच्चनबाबूने जच्चे-बच्चेको निकाला। इस अग्निकाण्डमे बिरौल थाना भर आतंकित होगया और पुलिस दूर-दूर भी छापा मारने लगी। तरवारामें चरखा संघ और बिहार विद्यापीठके सामान लूट लिये गये और मकानको भी बरबाद करनेकी कोशिश की गयी। तरवाराके पास गनौरा नामका एक टोला है। वहा भी पुलिस गई और

भदई राउतके घरको बुरी तरहसे लूटा। इस लूटमें तरवाराके कई शरीफ समझे जानेवाले पठान और रजील समझे जानेवाले बनिहार शामिल थे। इन लुटेरोंमें से एक दो शरीफको गोनौरावालोंने पीटा भी पर सरकारी ताकतके आगे वे इससे ज्यादा कुछ कर न सके। २४ सितम्बरको पुलिस लुटेरोंका बड़ा दल लेकरके गलमा पहुँची। स्त्रियाँ अपने गहने और पेटियां लेकर जहाँ-तहाँ जा छिपी, जब पुलिसने लूट शुरू करवायी तब सीधा गांवोंमें घुसनेकी हिम्मत न करके लुटेरे खरही और गाछोंमें पैठे और स्त्रियोंसे गहने छीनने लगे। एक युवतीकी हँसली झटकनेके लिये एक लुटेरेने उसके गलेमें हाथ दिया जिसपर वह चिल्ला उठी। खरहीसे युवतीकी चिल्लाहट सुनकर गांववाले उत्तेजित हो गये और श्री रमाकांत झाने लोगोंसे कहा—अब इज्जत जा रही है; इन लुटेरे गुण्डोंको मारो। बस गांववालोंने जिसे नजदीक पाया पीटना शुरू किया। पुलिसने तुरत गोली चलायी, जिससे कितने घायल हुए। पर लोगोंका जोश बढ़ता ही गया उनकी तादाद बढ़ती ही गयी और उनने पुलिस और उनके लुटेरोंको चारो ओरसे घेरना शुरू किया। फिर तो पुलिस भागी, लुटेरे भागे और गांव लुट जानेसे बच गया। २७ सितम्बरको बहेरा और बिरौलकी पुलिस फिर पालो आयी। साथमे काफी लुटेरे थे। इनका सामना करनेके लिए भाले और गुलेल लेकर काफी लोग आगे बढ़े। फिर ज्योंही लूट आरम्भ हुई त्योंही गांववालोंने लूटनेवालोंपर वार किया। फिर तो गोलियाँ चलने लगीं। कितने घायल हुये। जिनमें कुछ भाग गये और कुछ पकड़े गये। गावकी खूब लूट हुई। यह बिरौल थानेका आखरी मोरचा था। इसके बाद लूटका रास्ता साफ हो गया।

जाले थानाके रतनपुरमे पुलिसके साथ फौज आई २६ अगस्तको और राममूर्ति शर्माके घरकी कुछ चीजोंको उठाकर कछुआ चली गयी। वहां उसने रूपधरजीके घरको लूटा और जला दिया। कछुआसे फौज पुलिस सहित फिर रतनपुर आयी। यहाका जमींदार विन्ध्येश्वर ठाकुर और ब्रह्मपुरके श्रीमन्नारायण ठाकुरने इन सबोंका खूब आदर सत्कार किया। गोरोंको पता चल गया कि गाववाले कितने पानीमें हैं। उनने फिर राममूर्ति शर्माका घर जला दिया। इस अगलगीका लोगोंने विरोध किया जिसपर गोरोंने गोली चलायी और कई ग्रामीणोंको घायलकर दिया। गोलीसे गाववाले और उत्तेजित हो गये। चौकपर वे जमा हुये और जैसे ही गोरे वहां पहुँचे श्री

खोभाड़ी ठाकुरने एक गोरेको दे पटका और उसकी छातीपर बैठ गये। गोरा इन्हें उलट फेंकनेकी कोशिश करता और ये गोरेको बिलकुल काबूमें लाना चाहते। श्री प्रदीप शर्मा और बिलट दर्जी खोभाड़ी ठाकुरकी मददको दौड़े। इसी बीच गोलियां चलने लगीं। प्रदीप शर्मा और बिलट दर्जी बुरी तरहसे घायल हो गये। कयलू कुवर और नूजा झाको भी गोली लगी। गोरेको मौका मिला, वह उठ खड़ा हुआ और अपने साथी सहित गांव छोड़ भागा। उधर गांववाले डा० रामचन्द्र प्रसाद और डा० घोषकी सहायता लेकर घायलोंकी सेवा शुश्रूषामें लगे। पर श्री प्रदीप शर्मा और बिलट दर्जी बच न सके। दरभंगा अस्पतालकी राहमें शहीद हो गये।

इस घटनाके बाद जाले थानामें कितने पुलिसके भेदिया बन गये और थानेमें धर पकड़ और लूट-खसोट शुरू हो गयी।

१५ अगस्तके गोलीकांडसे मधुबनी कुछ आतंकित हुआ जरूर पर १६ को शहीदोंको लेकर जो जलूस निकला उससे छात्र खूब उत्साहित हुए। पर शहरवाले

मधुबनी

साथ देनेके लिये तैयार न थे। इसलिये छात्रोंको शहर छोड़ देना पड़ा। १७ अगस्तको मधुबनी जेलके फाटकसे ७६ कैदी भाग निकले। जिनमें एक भी कांग्रेसी नहीं था। इसलिये इस घटनासे लोगोंको राजनीतिक बल न मिला। हां, मधुबनीमें अखिल भारतवर्षीय चर्खा संघकी बिहार शाखाका केन्द्र था। केन्द्रमें प्रान्तके मजे हुए कार्यकर्त्ता थे। उनकी उपस्थिति मधुबनी शहरको प्रान्तमें सबसे आगे रख सकती थी। कार्यकर्त्ताओंकी विचार-धारासे कुछ ऐसा ही टपकता था कि इस गान्धीजीके आखरी आन्दोलनमें मधुबनी कुछ कर दिखायेगा। श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह लिखते हैं—"बिहार चर्खा-संघके मंत्री बाबू लक्ष्मी नारायणने मुझसे कहा कि हमारे कार्यकर्त्ता संघमें रहेंगे और आन्दोलनका भी काम करेंगे। मैंने कहा कि सरकार कभी भी इन अड्डोंको चालू न रहने देगी। लक्ष्मी बाबू बोले कि यदि सरकार चर्खा-संघको जब्त करेगी तो अपनी टांग आप कुल्हाड़ी मारेगी। उस हालतमें ७०० कार्यकर्त्ता सारे प्रान्तमें बिखर जायेंगे और कोने-कोनेमें क्रांतिकी आग फैला देंगे।" पर केन्द्रके ही एक कार्यकर्त्ता लिखते हैं कि इस गोली-कांडके बादसे मधुबनीमें कोई नई बात नहीं हुई। मधुबनीको देखते हुए यही अनुमान होता था कि क्रांति दब गयी। २० अगस्तको लक्ष्मी बाबू आये। उनके आनेके पहले चर्खा-संघकी तलाशी हुई थी। लक्ष्मी बाबूने आकर कहा कि अब

आग नजदीक आ गयी; इसलिये उनका आदेश आगमें कूद पड़नेका हुआ और वे यातायातको भंग कर देनेका समर्थन करने लगे। २२ अगस्तको प्रभातफेरीके लिये एक आदमी भी न मिला। संघमें जो रह गये थे उत्साहहीन हो रहे थे। दोपहरको पता चला कि सिमरीसे एक बड़ा जलूस आ रहा है। साथ ही यह भी खबर लगी कि ६, ७ गोरे भी आ गये है। लक्ष्मी बाबूने मुझे जलूसका स्वागत करनेके लिये भेजा। जब मैं जलूसके नजदीक पहुँचा तब लक्ष्मी बाबूने तुरत-तुरत दो आदमियोके द्वारा सदेश दिया कि गोरे आ गये है; आज गोली जरूर चलेगी। इसलिये जो शातिपूर्वक गोली खा सकते है वे ही आगे बढ़ें। इसपर जलूस राहसे ही लौट गया। हाँ, जलूसमेंसे एक सिमरी खादी विद्यालयके श्री माताधर द्विवेदी मधुबनी पहुँचे और नागेश्वर मिश्र शास्त्रीके साथ लक्ष्मी बाबूका आशीर्वाद लेकर मधुबनी थानाकी ओर बढ़े और पुलिस द्वारा गिरफ्तार हो गये। इसके बाद गोरे पुलिस लेकर आये और लक्ष्मी बाबू, गोपाल बाबू आदिको गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारीके मौकेपर लक्ष्मी बाबूने कहा कि मैं आजाद हूँ गिरफ्तारी नहीं मानता। इसपर वे हवागाड़ीपर चढ़ा लिये गये। सघके बाकी कार्यकर्त्ता संघ छोड़ भागे। फिर मधुबनी शांत हो गया।

इसी समय सकरीके इलाकेमे आग लगाना, और घर लूटना जारी हो गया था। २२ अगस्तको मकरमपुरमे श्री जमुना सिह आदिका घर जला दिया गया। सागरपुर आश्रमके श्री शिवनारायण मिश्र लिखते है—"अगलगीकी खबर पाकर हमलोगोने घटनास्थलपर पहुँच कर लोगोंको ढाढ़स दिया और जले हुए घरोंकी मरम्मत कर देनेके लिये गांववालोसे अपील की। दूसरे दिन सागरपुरके बहुतसे लोग खर बांस लेकर मकरमपर पहुँच गये। वहाँसे कुछ राख उठाकर डिस्ट्रिक्ट-बोर्डकी सड़कके किनारे रखवा दिया गया और वहाँपर अगरेजीमे एक पोस्टर लिखकर गाड़ दिया गया—look at the ashes of the British Empire, यानी ब्रिटिश साम्राज्यकी राखको देखो। इसके बाद गोरोने सरसो-पाही टोलमे श्री हरे मिश्र और उनके चार भाइयोके घर जला दिये। जिस समय श्री हरे मिश्र आदिके घर जल रहे थे उस समय कुछ दूरपर जमा होकर लोग नारे लगा रहे थे। उनपर एक गोरेने गोली चलाई। एक आदमी घायल हो गया। फिर लोग वहाँसे हट गये। तुरत गोरे वहाँ पहुँचे और आसपासके घरोमे आग लगा दी। इसके बाद सर्वश्री शान्तिनाथ झा और चेतनाथ झाके घर जला दिये। श्री चेतनाथ बाबू

घरपर नहीं थे। इसपर धमकी दी गई कि वे कल आकर मजिस्ट्रेटके यहाँ हाजिर हों, नहीं तो उनके सबन्धी राघोपुरके बाबूके यहाँ पुलिस छापा मारेगी। राघोपुरके बाबूसाहबने घबडा कर चेतनाथ बाबूको हाजिर होनेके लिये बाध्य किया। चेतनाथ बाबू दरभगा गये और प० गिरीन्द्र मोहन मिश्रजीके द्वारा मजिस्ट्रेटके यहाँ हाजिर हुये। उनमे मजिस्ट्रेट और सुपरिन्टेन्डेन्टने कहा कि निश्चित तारीखके अन्दर शान्तिनाथ झाको जो तुम्हारे मित्र हैं हाजिर करो। चेतनाथ बाबू इतने भयभीत थे कि कुछ जवाब नहीं दे सके। । इधर साहबोंने समझा कि उनने हमारी बात कबूल कर ली है। इसलिये जब तारीख गुजर गई तो एक दिन चार बजे रातमें ही मिलिटरी पहुंची और उनके घरको चारो तरफसे घेर लिया। उनके नौकर और भगिनाको खूब पीटा और उनके घरमे घुसकर काफी चीजें लूट ली। फिर चेतनाथ झाजी गिरफ्तार हो गये।

बादको सकरीका लोहट मिल गोरोंका अड्डा बन गया और मधुबनीके एस० डी० ओ० मि० शेरखा कमाण्डर बनाये गये। एक दिन वे सदल बल भिठौंके श्री रमेश शुक्लके यहाँ पहुचे। उनके घरके कई सामानको जला दिया और भीतर घुसकर स्त्रियोंके शरीरसे बेशकीमती गहने उतरवा लिये। वहा इनने और दो तीन घरोंको जला दिया। ता० ३० को वे पण्डौल श्री राजकुमार मिश्रके यहा आये। मिश्रजी गिरफ्तार हो चुके थे। उनके यहा उस समय कोई नहीं था। ऐसी हालतमें भी मि० शेरखाने उनका सारा सामान बेदरदीसे लुटवा दिया। उनके घरके चौखट किवाड़ तक खोल लिये गये। फिर खा साहबने सकरी बाजारके एक कलवारके घरको जला दिया। वहासे आप सागरपुर आये, हरिनन्दन बाबूसे बातें कीं और सागरपुर आश्रमको लूटकर फूक डाला। जब आश्रम जल रहा था आश्रम वासी हस रहे थे। चिढकर मि० शेरखाने कहा घर जलता देखनेमें बडा मजा आ रहा है? पासके लोगोंने कहा इनको तालीम ही ऐसी दी गई है। खा साहबका सर नीचा हो गया और वे वहासे चले गये।

पर इस काण्डसे वह इलाका आतङ्कित नहीं हुआ। साठ सत्तर गावोंका सगठन था कार्यकर्त्ता मिलते ही रहते और कुछ न कुछ करते ही रहते थे।

ता० २५ सितम्बरको स्वामी पुरुषोत्तमानन्दजी और दूसरे दिन मेरी गिरफ्तारी हो गई।

मि० सेलिसबरी सदल बल आये २५ अगस्तको। उनने डाक्टर वैद्यनाथझाके

घरको और खादी भंडारको जला दिया। उनके बाद पुलिसको अपना जोर आजमानेका बेनीपट्टी मौका मिला। उसने डाक्टर साहबके घरको जब्त कर लिया और उनके परिवारको इतना तंग किया कि उसे दो तीन महीनोंके लिये गांव छोड देना पड़ा। फिर पुलिसने परसौनीमे बाबू धर्मेश्वर महथाके घर और दूकानको लूटा, बलियामें मोहन मिश्र और बिलट झाको लूटा फिर अड़ेरमे पं० उमानाथ झा, नरहीमें रत्नकांत झा, नरसाममें परमेश्वर महतो और भोजपडौलमें सरदारी यादव और अशर्फीलाल दास लूटे गय।

२५ अगस्तको मि० सैलिसबरी सिमरी खादी विद्यालय पहुंचे। बेनीपट्टी थानेकी बन्दूकोकी खोजमें उनने वहांकी तलाशी ली बक्सोको तोड़ डाला और चीजोंको छिन्न भिन्न करके कहा—जिस तरह तुमलोगोंने हमारी चीजें जलायी हैं उसी तरह हमलोग भी तुम्हारी चीजोंको जलायेगे। तुमलोग भाग जाओ तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे। सिर्फ मकान तथा सामान जलाकर बदला लेगे। रामदेव बाबूने पूछा आप कौन हैं? इसपर मि० सैलिसबरीने उनको एक थप्पड़ मारा। फिर गोरोने घूम घूमकर स्त्रियोंके जेवर घड़ियाँ और फाउन्टेनपेन वगैरहको ले लिये और मकानमें तीन तरफसे पाउडर छीट कर आग लगा दी। जब सब छप्पर जल कर गिर गये तब जो सामान बाहर पड़े थे उन्हें उठा उठा कर आगमे फेंक सबके सब चले गये। उनके चले जानेपर लोग आग बुझाने और सामान संभालनेमें लग गये। उसी समय असेसर नन्दलाल राउतके उभाडनेपर एक तरफके तीन चार सौ गांववाले सामान लूटने आये पर औरोकी मुस्तैदीके आगे उन्हें उलटे पांव वापस जाना पड़ा।

२५ अगस्तको मि० सैलिसबरी एस० पी० के साथ सदलबल झंझारपुर आये और खादी भंडारके एक घरको जलाते हुये श्रीमहादेव मिश्रकी तलाशमे सर्वसीमा झंझारपुर आये। वहां मालूम हुआ कि मिश्रजी स्वयंसेवकोको लेकर 'विदेश्वर स्थान' की ओर गये हैं। सबके सब वहां पहुँचे, जूता पहने ही धड़-धड़ाते हुये शिवजीके मन्दिरमे घुस गये और किसी कांग्रेसीको न देख पुजारियो और यात्रियोको पीटने लगे। पुजारियोने गाली मार सही पर मिश्रजी और उनके दलका पता गोरोको नहीं बतलाया। गोरोंको निराशा हुई और उनने थानाभरको परेशान करनेका निश्चय किया। झंझारपुर स्टेशन झंझारपुर, मधेपुर और फूलपरास तीनों थानाओंका अड्डा बन गया और काफी गोरे और हथियार बन्द जमकर रहने लगे।

१ ली सितम्बरको एस० पी० साहब आये और थानापर दारोगा साहबको बैठा गये। अब दारोगा साहबने अपना रंग बदला। सर्वश्री रमाकान्त ठाकुर मिसरा, और महादेव मिश्र हनौलीके घरको लूट खसोट कर पस्त कर दिया। सर्वश्री सत्यदेव झा कर्णपुर, दिगम्बर झा रूपौली और निर्भयनारायण झा तथा शहीद जागेश्वर झा हैठीवालीके घरोंको लूटा। श्रीरामाधीन झापर घोड़ा दौड़ा दौड़ाकर उन्हें इतना थका मारा कि वे दारोगा साहबके बेंतकी मारसे और अधिक अपनेको बचा न सके। उनके शरीरका सारा चमड़ा फट गया और वे आगे चल कर मर गये। मेहथूमें दारोगा साहबने फेकन झा और धनेश्वरके घरोंको और रैयाममें श्रीरामचन्द्र झाके घरको लूटा और पस्त कर दिया। पीटना और घूस लेना तो दारोगा साहबके लिये सांस लेने जैसा सहज हो गया था। १२ सितम्बरकी ही घटना है जबकि आप हैठीवाली गावमें गये थे। आपने कंटीर झा, रामानुज झा और मांगन तेली आदि साठ ग्रामीणोंको एक रस्सामें बधवाया और उनके परिवारके सामने ही बेंत, लाठी जूता और बन्दूकके कुन्दोंसे पीटा और पिटवाया। पर दारोगा साहबने रैयाममें जो किया सो जनताको बहुत दिनों तक याद रहेगा। उस घटनाका साधारणसे साधारण वर्णन श्रीयोगनारायण झाने दिया है। आप लिखते हैं—"५ सितम्बर '४२ को ६ बजे सुबहमें पानी बरस रहा था। झंझारपुर थानाके दारोगाने अपने सशस्त्र पुलिस और चौकीदारोंको लेकर रैयामके दुसाध टोलेपर हमला किया। महल्लामें प्रवेश करते ही पुलिसने झूठी फायरिङ्ग की। उस समय लोग सोये हुये थे। असमयमें इस तरहके धड़ाकेकी आवाज सुन कर सब एकाएक चौंक पड़े और समूचे महल्लावाले चिल्लाने लगे और अपनेको बचानेके लिये इधर उधर भागने लगे। गाव बाढ़के पानीसे घिरा हुआ था। इसलिये ये लोग भाग भागकर उधर ही आ रहे थे जिधर पुलिस थी। पुलिस और चौकीदार इन लोगोंको खदेड़ खदेड़ कर पकड़ता और पीटने लगता। कितनोंके सर फूटे, कितने बेहोश हो गिर गये। लगभग दो घंटे ऐसा व्यापार चला।

फिर सभी एक जगह इकट्ठा किये गये और उन लोगोंके सामने उन लोगोंका मकान लूट लिया गया। कितने मकान तो तोड़ डाले गये। पानी पीने तकके लिये एक फूटा बर्त्तन भी न रहने दिया गया।

इसके बाद चौकीदारों और पुलिसवालोंने औरतोंको पकड़ना शुरू किया। इस धड़ पकड़में पाशविक और जघन्य अत्याचारकी कितनी घटनायें हुईं। ऐसे

नृशंस अत्याचारको भुगतनेके बाद सभी स्त्रियां और पुरुष एक रस्सीमे बांधे गये। दारोगाके कहनेसे स्त्रियोके शरीरका कपड़ा उतार लिया गया। फिर उनके स्तनों तथा शरीरके दूसरे अगोको जनका और सरबजीत चौकीदारने खजूरकी बेंतसे फोड़ डाला। सब जगह लहू चपचपा आया।

फिर एक एक करके पुरुष रस्सीसे खोले गये। जनक, सरबजीत और हरिजन चौकीदारोने गांवके दफादारके साथ साथ इन लोगोपर लाठोका प्रहार किया।

मार खत्म हो जानेके बाद दारोगाके कहनेके मुताबिक पुरुष और स्त्री सभी एक रस्सीमे बांधे गये और थानेकी ओर रवाने किये गये। कुछ ही दूर जानेके बाद श्री लत्ती झा मिले जिनने कहा कि आदमी पीछे दस रुपयेके हिसाबसे दारोगा साहबको ५००) रु० दो तब वे तुमलोगोको छोड देंगे; यदि तुमलोग कहो तो मैं दारोगाजीको रुपये दे दूँ, घर जानेपर मुझे रुपये दे दोगे। सबोने लत्ती झाकी बात मान ली। सिर्फ सात आदमियोने दारोगाजीको कुछ देनेसे इनकार किया जो चालान किये गये। इनमे ६ व्यक्तियोको चार-चार सालकी सजा मिली।

इमादपट्टीको तो पुलिस और उसके पिट्ठुओ बरबाद कर देनेकी कोशिश की। गांववालोको अन्न कष्ट था और जमीदारकी बखारियोमें अन्न भरा था। जमींदार थे दो दो और दोनो बाहरके। गांववालोने पहले तो अन्नको कर्जके रूपमें मांगा जब न मिला उनने बखारियोपर कब्जा कर लिया। फिर सैलिसबरीकी शह पाकर एक रातको दोनो जमींदारोने इमादपट्टीकी लूट करवायी। एक जमींदार थे सिमरी राजनगरके श्री लक्ष्मी नारायण सिंह। उनने ओलीपुर टोलाके लोगोको पिटवाया ओर एक घरको जलवाया भी। ईमादपट्टीका तो तिनका-तिनका लूट लिया गया।

रातके लुटेरे गये तो दिनके लुटेरे आये जो दो महीने तक गांवको तबाह करते रहे। इसके बाद उनने खास खास लोगोको गिरफ्तार करना शुरू किया।

जब झंझारपुरका खादी भंडार जला तब वहाँके कुछ कार्यकर्त्ता घबड़ाये और डाकबंगला छोड़ भाग गये। पर श्री रेवन्त नारायण ठाकुरने तोन-चार छात्र और कुछ कार्यकर्त्ताओंकी मदद पाकर बाजारमे जलूस निकाला "जिससे", वे लिखते हैं, "भागनेवालोने जो हमारी प्रतिष्ठा खराव की थी सो पलट आई और डाक-बंगलामें हमारा काम जारी हो गया। उस दिन यानी २८ अगस्तको कार्यकर्त्तामें फिर जोश-भर आया और पुलिससे बन्दूक छोननेके लिये उनने लोगोको इकट्ठ

किया और झंझारपुर स्टेशन चल पड़े। इधर एम० पी० सदलबल आया और लक्ष्मीपुर कैथिनिया नामके समूचे गाँवमें उसने आग लगा दी। दूर-दूरके गाँवोंने कैथिनियाका जलना देखा। इससे बन्दूक छीननेके लिये जानेवाले हतोत्साह नहीं हुये। उनमें मधेपुरके लोग थे, दीपके लोग थे। बाजा बज रहा था नारा लग रहा था। कैथिनियाकी आगसे उनमें जोश पैदा हुआ। बाजेके साथ नारे बुलन्द होने लगे। उनकी भीड़ स्टेशनके पास आई। तुरत खाली आवाज हुई और फिर अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलने लगीं। कितने लोग घायल हुये और तीन तो तत्काल शहीद हो गये जिनमे दो हैं श्री पचेलाल झा और पूरन खवास—दोनों दीपके। इस घटनाके बाद एम० पी० दीप आया और ७४ घरोंके समूचे गाँवको जला दिया।"

फिर एम० पी० सदलबल मधेपुर आया। डाकबंगलासे लोग भाग चले। उनपर गोली चली पर कोई नहीं मरा। हाँ एक गिरफ्तार हुआ। एम० पी० ने श्री महादेव मिश्रका डेरा और श्री सीताराम और बनवारीके घर जला दिये। श्री जगदीश नारायण सिंह और श्री ठाकुर प्रसाद सिंहको थानापर बुलाकर खूब पीटा और गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद मधेपुर थानामें फिर पुलिस बैठ गई और लूटपाट आदि अत्याचार होने लगे। श्रीनगेन्द्र झा पकड़े गये, उनका घर पस्तकर दिया गया और उनको काफी देर तक पीटा गया जिसमे वे बीच बीचमें कई बार बेहोश हुये। श्री ग्वंतर महतोका घर लूटा गया। श्री रेवन्त नारायण ठाकुर और महावीरके घर तोड़े गये। फिर तो समूचा थाना आतंकित हो गया।

१८ सितम्बरकी बात है। मधुबनीके एस० डी० ओ० महथ रामचन्द्र नारायण दासकी खोजमें सदल बल अंदलपुर स्टेशन पहुँचे। स्थानपर महथजी नहीं मिले। फिर उनके मकानोंके ताले तोड़ एस० डी० ओ० का दल भीतर घुसा और सारा सामान उसने लूट लिया फिर नौकरों और बच्चोंको खूब पीटा ताकि वे सब महथजीका पता बता दें। निराश होकर झंझारपुरके दारोगाने सिपाहियोंको मन्दिरमें घुसकर महन्थजीको ढूंढनेके लिये कहा। सिपाही मुसलमान थे; इसलिये अन्दर जानेसे इनकार करने लगे। तब उनके हुक्मसे मन्दिरमें गोलियां छोड़ी गई जिनके दीवारपर अबतक निशान बने हैं। अन्तमें जूता पहने ही मुसलमान घुसे और मूर्तिके शरीरसे सारे आभूषण उतार लिये। फिर उनने

चार पाँच आदमियोंको गिरफ्तार किया और चलते बने।

खजौली

२२ अगस्तको खजौलीमें फौजियोंके दो दल आये। एक दलके अगुआ थे मि० सैलिसबरी और दूसरे थे श्रीकान्त ठाकुर।

दारोगा श्रीकान्त ठाकुरके दलके गोरोने कलुआहीके पासके हरिपुर गांवमें लोगोकी भीड़ देखी नारे सुने और गोलिया चलाई। पांच आदमियोको सख्त घाव लगा जिनमें दो मर गये—श्रीनारायण मिश्र और शिव झा जो आठ नौ सालका बच्चा था। मि० सैलिसबरी उसी दिन खजौली पहुँचे। उनने देखा दो स्वयं-सेवक झंडे लेकर स्टेशनकी ओर आ रहे हैं। तुरत गोरोने गोलियां दागीं, दोनो शहीद हुये। एक थे मंगतीके श्रीजयनन्दन सिह और दूसरे नराढ़के श्रीनेबी ठाकुर।

मि० सैलिसबरीने खजौली खादी भंडारकी ओर जाते हुये श्रीजनकधारी चौधरी नराढ़ और श्रीरामेश्वर सिह तारापट्टीको पकड़ा। दारोगाने कहा कि ये लोग पोस्टऑफिसका चार्ज ले रहे थे। मि० सैलिसबरी दारोगाके साथ गोरोको लेकर रामेश्वर बाबूके यहां तारापट्टी पहुँचे। गोरे और दारोगा रामेश्वर बाबूके घरमे घुस गये और उनके सभी बक्सोको तोड़ कर उनने बेसकीमती चीजें और रुपये पैसे लूट लिये। फिर मि० सैलिसबरोने उनके सभी मकानोको सामान सहित जला दिया; पांच बखारियॉ फूंक डालीं और जहां तहॉ रक्खे हुये अन्नके ढेरको भी तेल छिड़क कर जला दिया। इससे भी जब सन्तोष नहीं हुआ तब उनने श्रीरामेश्वर सिह और श्रीजनकधारी चौधरीको 'नाद' के ऊपर सुला दिया और कपड़ा उतार कर बीसो फट्टे मारे। श्रीरामेश्वर बाबूके घरके साथ साथ श्रीमहावीर सिहका घर और श्रीनिरंजन सिहकी बखारिया भी जल गईं।

२३ अगस्तको श्रीकान्त ठाकुर ठाहर गांवमे पहुँचे। वहां उनने श्रीसूर्यनारायण सिहके घरमें आग लगा दी। घर जला और घरसे बथान और बथानके जलनेसे एक बैल जलने लगा। श्रीभगवन्त पासवान बैल खोलने दौड़ा। बस, उसे गोली मारी गई और वह मर गया। उधर बैल भी जल गया। श्री सूर्यनारायण सिहके घरसे सटा मोहित सिहजीका घर था। वह भी जल गया।

उसी रोज श्रीकान्त-दल खजौली पहुँचा और खादी भण्डारको लूट कर जला दिया। फिर २५ अगस्तको वह दल नराढ़ जनकधारी चौधरीजीके यहाँ गया। चौधरीजीके घरका तिनका तिनका लूट लिया गया और उनके मकान और बखारियां जला दी गईं। फिर तो लूट और आगका शोर मच गया। वरहीका खादी-भण्डार

लूटा और जलाया गया। चतराके विलट रामका घर लूटा और जलाया गया और वासी ग्रामके दुसाधोंका पचीस घरका टोला जलाकर बिलकुल खाक कर दिया गया। रन्हौलीके श्री नौबत महतोके यहाँ तो बेहिसाब लूट हुई।

इस थानेकी एक विशेषता यह रही कि मिलिटरीके भोग-विलासका सारा खर्च देना पड़ा एक आदमीको। गोरे दतुआरके श्री रामजी सिंहके यहां आये; उनकी मोटर, रेडियो और दो बन्दूकें जब्त कर ली और उनके भाई श्रीवासुदेव सिंहसे शर्त करायी कि जब तक खजौलीमें मिलिटरी रहेगी उसके लिये दानापानी, अण्डा, चाय, साबुन, तौलिया, वगैरह वगैरह आपको देना पड़ेगा। उनसे ढिंढोरा भी पिटवाया कि हम कांग्रेससे अलग हैं और उनको सरकारी गवाह भी बननेके लिये कहा।

और और काण्डोंके साथ एक काण्ड जो महाशय श्रीकान्त ठाकुरने यहां किया है उसकी वजहसे लोग उन्हें जल्दी भूल न सकेंगे। रन्हौलीके श्री हजारीलाल गुप्त कहते हैं—"× × × २४ अगस्तको दारोगा साहब मेरे घरपर आये और × × × × मेरे घरका सारा सामान बैलगाड़ीपर लाद कर थाने ले गये। × × × × २६ अगस्तको मुझको गिरफ्तार करवाकर खजौली थानेपर ले गये। × × × मेरे हाथसे वेस्ट एन्ड रिस्टवाच खोल लिया, जेबसे २५) रु० ले लिया और कुरता उतरवा कर मेरे सीनेपर तमञ्चा सटा दिया; फिर तरह तरहके सवाल पूछने लगे। × × × पहले उनने रोलसे मारना शुरू किया, फिर ठोकर मारने लगे। उस दिन थाने भरके चौकीदार आये थे। उनसे मेरे सरके सारे बाल उखड़वा डाले गये और कानोंको खिचवाया गया। मेरा सारा कपाल सूज गया और कानकी बुरी हालत हो गई। आज भी कानसे पीप आता है।

"मैं इन कष्टोंसे मूर्छित सा हो गया। कुछ होश होनेपर मैंने इशारेसे पानी मांगा। दारोगाजीने अपना थूक जमीनपर डाल कर मुझे चाटनेको कहा। मेरे इनकार करनेपर उनने चौकीदारोंको जो हुक्म दिया उसके मुताबिक उन लोगोंने मुझे पछाड़कर मेरे ओठोंको उस थूकमें रगड़ दिया। फलस्वरूप मेरे ओंठ फूल गये।

इसके बाद दारोगाजीने मेरे चेहरेपर आधेमें चूना और आधेमें कालिख पोतवाया और चौकीदारोंके जलूसमें मुझसे नारे बाजारमें घुमवाया। चौकीदार नारे लगाते—कांग्रेसके सेक्रेटरीकी दशा देखो।

मैं थाना वापस आया तब दारोगाजीने कहा कि माफी मांगो। इनकार करनेपर

उनने मुझको इतना मारा कि मैं बेहोश गिर पड़ा। फिर उनने पासके एक गन्दे डबरेमें मुझको फेंकवा दिया। × × × रात हो जानेपर मेरे कुछ मित्र आये और मुझको उसी अवस्थामें उठाकर अपने घर ले गये। होश आनेपर मैं जान सका कि मैं एक मित्रके घरपर । १३ दिन तक मेरा इलाज हुआ। फिर जब मैं सिर्फ दूध भर ले सकता था ; दारोगा साहब ७ सितम्बरको मेरे घर आये; बोले—"आप जिन्दे ही हैं ?" मैंने कहा—हॉं। वे बोले—"तब चलिये कुछ दिनके लिये हवा खा आइये × × ×" और मैं गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। बादको मुझे पांच सालकी सजा हुई।"

मि० सैलिसबरी टामियोंको लेकर जयनगर पहुँचे २४ अगस्तको और इधर उधर देख सुनकर मधुबनी चले गये। अपने साथ केवल झंडा उतारकर लेते गये जो शहीद

जयनगर

नथुनी साहकी चितापर फहरा रहा था। दूसरे ही दिन हथियारबन्दोंको लेकर पुलिस दल निकला। उसने ताला तोड़कर बाबू रामयश सिंहकी खादीकी दूकान लूट ली। फिर देवधाके श्री रामेश्वर पंजियार और जयलाल साह लूटे गये। भदौरमें श्रीसूबालाल ठाकुरका घर भी पुलिसवाले लूटने गये पर ठाकुरजी डट गये और गंड़ासेका वार किया जो दारोगाके साईसके कानपर पड़ा। फिर तो वे वहांसे चम्पत हुये। हां! जाते जाते उनके घरमें आग लगाते गये। बाबू रामप्रताप मंडर और राजेन्द्रप्रसाद सिंह जसे जैसेको गिरफ्तार करके पुलिसने जयनगरको आतंकित कर दिया। श्री महाबल कुंवर और बदरी चौधरी जैसे कार्यकर्त्ता पकड़ लिये गये और बाकी फरार होगये।

हरलाखीमें तुरत ही दमन शुरू होगया। मिलिटरीने पं० बुची मिश्र वैद्य और

लदनिया

कपड़ेके व्यापारी रामदासको लूट लिया और दोनोंको खूब पीटा; फिर श्रीतृप्तनारायण झाकी बन्दूक ले ली।

यहां मि० सैलिसबरी आये ३ सितंबरको। थाना कांग्रेस आफिस, बनवारी साहु, सुड़ी और महम्मद यासीनके घर उसने जलाये। बादको सारा खादी भंडार लूटा गया।

मधवापुर

सूबेदारी साहु, वासुदेव साहु सूड़ी, जंगबहादुर ठाकुर और रामयाद ठाकुरके घर लूटे गये। फिर वहां आन्दोलन बन्दसा होगया।

३० अगस्तको एस० पी० सदल बल आये। फिर श्री कपिलेश्वर झा शास्त्री फुलपरास, तेजनारायण मिश्र सिसवार, अवधविहारी तिवारी, फुलकाही और श्री

फुलपरास

देवनारायण गुरमैताके घरोंमें उनने आग लगा दी। उनके आनेसे

पुलिसको काफी बल मिला और उसने लूट-खसोट, धड़-पकड़ शुरू कर दी। एक दिन पुलिस सिसवार गयी और सोते हुये श्रीतेजनारायण मिश्रको गोली मारकर घायल कर दिया और तब उन्हें गिरफ्तार करके ले आयी।

लौकहीमें फुलपरासमे ही पुलिस इन्सपेक्टर वगैरह आये और दमन करने लगे। कितनोंको गिरफ्तार किया और श्रीहीरा सिंह सिख, सूर्यनारायण साह, सीरी चमार और मितिलाल गुरमैताके घर लूटे और श्रीकृष्णदासके दवाखाना और हवेलीको लूटकर जला दिया।

लौकही

यहां खजौलीसे पुलिस इन्सपेक्टर दमन करनेके लिये पहुँचे। श्रीबच्चूलाल साहका घर जला दिया गया और पं० रुद्रनारायण झाका दवाखाना और फौजदार साहुके घर लूटे गये। महावीर साहुका घर नीलाम करा दिया गया और खुटौनाके छेदीलाल चौधरी भी लूटे गये।

लौकहा

गुमती गोली काण्डके बाद ही समस्तीपुरमें दमन शुरू होगया। आस पासके सभी कोठवाल साहब समस्तीपुरमें इकट्ठा होगये थे और सारेके सारे सहायक सेनाके थे। वे सवेरे कुछ टामियोंको लेकर निकलते और लूट, अगलगी मार, पीटसे मन बहलाकर शामको वापस होते। २२ अगस्तसे रेलगाड़ीका आना जाना शुरू हो गया और साथ ही जोर जुल्म अपने हदपर पहुँच गई। गोरे जिसे जहां खद्दर वा गान्धी टोपी पहने देखते उसे बेतरह पीटने लगते। टोपी फाड़ देना, गान्धीजीकी तस्वीर मसल देना आम बात थी। और गोरोंका सगा अपनेको साबित कर रहे थे डिपटी मैजिस्ट्रेट बाबू रामटहल सिंह। किसीके घरमें घुस जाना, इज्जतदारोंको बेतोंसे पीट देना। फौजियोंसे घर लुटवा लेना इनके लिये सहज हो गया था। दो रायबहादुर डा० आर० पी० घोस और श्रीमौजीलाल चौधरीने गोरों, पुलिसवालों और मजिस्ट्रेट साहबको ऐसे ऐसे काम करनेकी राय बड़ी बहादुरीसे दिया करते और अपना उल्लू सीधा किया करते। किंग एडवर्ड स्कूलके श्रीसतीशचन्द्र सरकार भी छात्रोंको पकड़वानेमें तत्परता दिखाते।

समस्तीपुर

दढ़ियामें डोमी राउतका घर जलाया गया और बिहारी राउतके घरको लूट लिया गया। विष्णुपुर, चकनिजाम, डिहुलिया और पटपारामें कितनी ऐसी घटनायें हुईं। फिर मुजौनाके बाबूजी पाठक लूटे गये।

पर जो काण्ड मि० सी० जी० एटकिन्स और मि० आर० ... उनने

२७ अगस्तको किया उसके सामने समस्तीपुरके और अत्याचार नगण्य दीखते हैं। समस्तीपुरके बी० डी० शर्मा लिखते हैं—"२७ अगस्तको सबेरे × × × हम २१ बन्दियोंको समस्तीपुर सब जेलसे चलनेकी आज्ञा हुई। × × × एक एक मोटरपर दो तीन बन्दी और चार पाँच गोरे संगीन ताने रहते थे। ऊड और एटकिन्स साहब कमान्ड कर रहे थे। जब हमसब जटमलपुर घाट पहुँचे तब उतारे गये, देखा, एक चौकी रखी हुई है। उसे गोरोंने अपनी बन्दूकें भरकर घेर ली और निशाना लगाकर खड़े हो गये। फिर पहली मोटरके कैदी उतारे गये, डाक्टर डी० एन० झा, सुखदेव चौधरी, चन्द्रप्रकाश और मैं। हर एकको सुलाकर नंगा कर दिया गया और फिर चौदह पन्द्रह केन लगाये गये। मैं और चन्द्र प्रकाश हँस रहे थे। इसलिये जब हमारी बारी आई तो इस तरह पीटे गये कि साथी घबड़ा उठे। हमारे बीच एक थे श्रीमथुराप्रसाद सिंह, जिनका रुपया धारते थे एटकिंस साहब। मथुरा बाबू रुपया वसूलनेमें कड़ाईसे काम लेते थे। इसलिये उनको पीटनेमें एटकिंस साहबने इतनी कड़ाईसे काम लिया कि कुछ ही बेत खानेपर मथुरा बाबू बेहोश हो गये। सर्वश्री रामागार शर्मा, यदुनन्दन शर्मा, माधवप्रसाद शर्मा, उमाकांतप्रसाद सिंह, चन्द्रदेव सिंह, कमलनाथ ठाकुर, जगदीश पोद्दार, यदुनन्दन सिंह और के० पी० जायसवाल आदि सबके सब पीटे गये। फिर रातमें दस जो ज्यादा घायल हुए थे मोटरसे दरभंगा जेल पहुँचाये गये और बाकी ग्यारह टमटमसे।"

२६ अगस्तको टौमी इस थानेमें आये और दमन होने लगा। वीरसिंहपुरके मुनीन्द्रप्रसाद सिंह, ब्रह्मचारीजीका घर पांच-पांच बार लूटा गया। घर-बार, बारिस नगर जमीन-जायदाद सब जब्तकर लिया गया। इनके ससुरालवाले भी काफी तंग किये गये। गोरांईके बाबू रामसुभग ठाकुर तथा कृष्णदेव ठाकुरके घर कई बार लूटे गये। जटमलपुरके श्रीनन्दू मिश्र तथा श्रीमौजे चौधरीके घर लूटे गये और बरबाद कर दिये गये; जमीन जायदाद जब्त करली गई। जितवरियाके बाबू लक्ष्मीनारायण रायका घर कई बार लूटा गया। गोहीके ठाकुरप्रसाद शर्माजीका भी घर लूटा गया। रहुआके रामसरोवर शर्माको जो कलक्टरीमें काम करते थे कामसे हटाकर काफी परेशान किया गया। सर्वश्री हरिनन्दन ठाकुर, जगदीशप्रसाद ठाकुर और बशिष्ठनारायण सिंहको थाने लाकर टॉमियोंने टेबुलपर सुला दिया और नंगा करके इतना पीटा कि तीनोंको

बोखार आ गया। रहुआ डेवढीकी बखारियोंमें डिपटी मैजिस्ट्रेट रामदहल सिंहजीने टॉमियोंसे आग लगवा दी और भगवानकी मूर्तियोंको फेंकवा दिया। दामोपुरमें श्री रामसुभग ठाकुर और रामविलास ठाकुरके घर लूट लिये गये। मेदुरवाके मास्टर रामशरण ठाकुरका भी घर बार लूट लिया गया।

ताजपुर

२१ अगस्तको गोरे पुलिस लेकर डा० मुक्तेश्वर प्रसाद सिंहके घरपर आये और इन्हें थाना पकड़ ले गये। वहाँ आन्दोलन-कारियोंका भेद लेनेके लिये गोरोंने इन्हें पीटना शुरू किया और सरके बल इनको कई बार जमीनपर पटका। फिर भी जब यह चुप ही रहे तब वे गोली मारनेपर उतारू हुए परन्तु दारोगाने रोका और इनको हाजतमें डाल दिया।

२८ अगस्तको फिर गोरे ताजपुर आये और डाक्टर साहबको नंगा करके ४० बेंत मारा। इनका चमड़ा फटकर आध इञ्च गढ़ा हो गया। बादको वे मगरतोपुर सब जेलमें बन्द कर दिये गये।

२२ अगस्तको चिरौंधराके श्री छितनू सिंह पकड़े गये। उनका घर पूराका पूरा जलाकर खाक कर दिया। परिवार मुंहताज बन गया। फिर उनपर हाजतमें काफी मार पड़ी।

ताजपुर थानाके उत्तर भागमें पुसा है जहाँ भीषण रूपसे तोड़-फोड़ कार्य हुआ था। उधर मि० ई० पी० डेनबी दमन-चक्र चला रहे थे। आप १५ टामियोंके कमाण्डर बन गये थे और बथुआ, मुसकौल आदि जगहोंमें लोगोंके घर जलाते फिरते थे। सर्वश्री यमुना कार्यी, लक्ष्मीनारायण सिंह और डा० रामप्रकाश शर्माका सहयोग डेनबी दलको बराबर मिलता रहता था और दमन-चक्र अबाध चलता रहता था।

ताजपुरके दक्षिण भागमें पटोरी बाजार है जिसके नजदीक तम्बाकूका कारखाना है। इसीके अंगरेज मैनेजरको खद्दरधारी बनाकर लोगोंने जलूसमें घुमाया था। गान्धीटोपी पहने तिरंगा झंडा उठाये जब यह गाधीजीकी जयका नारा लगाता तब जनताकी छाती दुगुनी हो जाती। आज वह लोगोंके भीषण दमनका कारण बन रहा था। यहीं बन्गा पुल है जो तोड़ दिया गया था। जब टॉमीकी लॉरी यहां आई तब रुक गई। लॉरीके रुकने ही जो लोग वहाँ थे हटने लगे और एक तो जोरसे भागे। टॉमियोंने तुरन्त उन्हें गोली मारी जो उनका प्राण ले उड़ी। नाम था श्री निगानन्द भारती।

गोलीकाण्डके तीसरे दिन ही गोरे आये और बाजारमें प्रदर्शन करके बाजितपुर चले गये जहां उनने मऊमें नोखेलाल झाजीकी दूकान और राममिलन साहुजीके दलसिंग सराय घर और गोलाको जला दिया। वे उधर दूसरी बार भी गये और जानकीजीकी दूकान जलाई गई।

फिर पुलिसको बल मिला और दलसिंग सरायको लूटना खसोटना शुरू कर दिया। एक गरीब हलुआई रामप्रसादने मिठाई देनेमें आनाकानी की। तुरत थानेसे श्रीराजेन्द्र सिंह और राधाठाकुर दौड़े, उसकी छातीमें बन्दूक लगा दी और दो-तीन बेंत ऐसा खींचा कि उसका बदन फूट गया।

श्रीलक्ष्मी नारायण लिखते हैं, "एक दिन मैं अपने कुऑपर खड़ा था कि थानेमें कोई चीत्कार करता मालूम हुआ। लहरे परसे उचककर देखा—एक कनस्टबिल बाना भांजता हुआ आता है और एकके नंगे चूतरपर जमा देता है। बानाके लगते ही बड़ी दर्दनाक आवाज उठती है। मैंने उसे पहचान लिया। वह था भजनगामाका रामखेलावन पाठक। उसे इस तरह पचीसो बाना लगे। फिर वह हाजतकी ओर ले जाया गया और जब उसके दरवाजेपर पहुंचा तब अनवर मियां चौकीदारने दोनों हाथोंसे उसके चूतड़को पकड़ लिया और उसके गूदामें थूक दिया। पुलिस मण्डली ठठाकर हँस पड़ी और हँसती रही। पीछे मालूम हुआ कि बानासे मारनेवाले रघुवर खां थे। और यह भी मालूम हुआ कि गूदामें थूक देनेपर खुश होकर दारोगा श्री जगतनारायण सिंहने अनवर मियांको एक रुपया इनाम दिया।"

दलसिंग सरायके बहुत पुराने कार्यकर्त्ता श्रीरामानन्द ब्रह्मचारीपर जो बीता सो उनके शब्दोंमें सुनिये। "×××× २५ अगस्तको थानाके सामनेसे जा रहा था कि छोटे दारोगाने बुलाया, कुर्सी दी और कहा कि बड़े दारोगा आते हैं मिल लीजिये। वे आये और काफी बातचीत हुई। मैंने कहा कि जबतक मैं बाहर रहूँगा कांग्रेसका जो काम होगा करता रहूँगा। दोनों दारोगा पुलिसको कुछ इशारा करके डेरा चले गये। फिर तुरत राजदेव सिंह, राधा ठाकुर और राजेन्द्र सिंहने मुझे कुर्सी परसे ढकेल दिया और लात, घूसे और तमाचे और पीछे डंडेसे मारने लगे। जहां तहां मेरा शरीर फूट गया, नाकसे बेतरह खून निकलने लगा। मैं बेहोश हो गया। ××× होश होनेपर मैंने देखा कि मैं हाजतमें पड़ा हूँ। मेरा चश्मा वगैरह सारा सामान ले लिया गया है और

मेरे पास जो परचे थे उन्हें भी निकाल लिया गया है। परचेमें सुभाष बाबूके सेना सहित आनेकी खबर थी और लिखा था कि आरा आजाद हो गया। दोपहरको एटकिन्स और ऊड साहब गोरे सहित आये और पुलिससे मेरा परिचय लेकर मेरे पास पहुँचे। ××× मुझे हाजतके बाहर घसीट लाया गया और दूसरे कमरेमें ले जाकर एक चौकीपर गिरा दिया गया। एक सिपाहीने दोनों हाथ और गर्दनको पकड़ा और दूसरेने पैर पकड़े। फिर चूतड़का कपड़ा हटा दिया गया। फिर बेंत पड़ने लगे और सवाल पूछे जाने लगे। मेरे चूतड़के दोनों तरफके मांस फट गये और वहाँसे खून बह निकला।×××× मैं फिर बेहोश हो गया। जब होशमें आया तो शाम हो गई थी और तीन चार नये नये कैदी हाजतमें घुसाये जा रहे थे।"

सितम्बरसे पुलिसने गिरफ्तारी और लूटकी धूम मचाई।

१६ अगस्तको एटकिन्स साहब सदल बल आये और रोसड़ाका अग्निकाण्ड शुरू हुआ। श्री केशवदास शर्माके घर और दूकानको लूट कर जला दिया गया। रोसड़ा श्री जागेश्वर पूर्वे और केशो पूर्वेके मकान और गोदामकी भी ठीक यही हालत हुई। श्री रामकिशुन मंडरका मकान भी न बचा। फिर श्री बालेश्वर सिंहका मकान क्यों न जलता जो अधिकारीकी आँखमें खटक रहे थे।

दूसरी बार एटकिंस साहब सदलबल रामटहल सिंह डिपटीके साथ आये। बालेश्वर सिंहजीके चाचाको पीट कर गिरफ्तार किया, रामेश्वर नायकको भी पकड़ा और उसके घरमें घुस कर स्त्रियोंकी देहके गहने छीन लिया। फिर सब केशवदेव शर्माके यहाँ आये। उनके भाईको गिरफ्तार किया और उसकी अँगुलीसे सोनेकी अँगूठी निकाल ली। वहा ठाकुरवाड़ी श्री जिसके महंथको खूब पीटा गया और भगवानके सामनेके चौखटपर बूटकी ठोकरें मारी गईं।

श्रीरामटहल सिंहने जिनको जिनको गिरफ्तार किया उनको पाखाने पेशाबकी सुविधा नहीं दी जिससे एककी धोती खराब हो गई।

फिर थानेकी लूट खसोट शुरू हुई जिससे सर्वश्री जागेश्वर महतो, लक्ष्मी पूर्वे, नारायण नायक वगैरह पुलिसके आगे पीछे रहते आये।

इस थानेमें कुछपर असाधारण मार पड़ी। रामावतार पूर्वे तो चार चार बार बेहोश हो गये और जब उनने प्रार्थना की कि उनको गोली मार दी जाय तब एकने डांट कर कहा—क्या तुम गोलीकी कीमत कुछ नहीं समझते?

यहां एक रोसड़ा पुलपर गोरी-संगीनोंकी भेंट हो गये। नाम था वशिष्ठ नारायण ठाकुर मौ० आरिजपुर—विसंदरपुर जिला मुजफ्फरपुर।

२० अगस्तको एटकिन्स साहब हसनपुर रोड पहुँचे। श्रीसुन्दरलाल, भगवान दास, शंकर लाल और शेर मलके घरको जला दिया और १० फूसके मकानोंको फूंक डाला।

१४ सितम्बरको श्रीरामटहल सिंह, डिपटी आये जिनने श्रीप्रियव्रतनारायण सिंह, कुलदीप सिंह और अंबिका सिंहके घरको मनमाना लूटा। खूब गहरा माल हाथ लगा।

फिर तो सारा थाना आतंकित हो उठा जिसकी प्रतिक्रियाने गुप्त आन्दोलनको जन्म दिया और इधर उसके चलानेवाले हुये श्रीशोभाकान्त झा और भरत शरण सिंह।

११ सितम्बरका सिंगियामें सरकारी थाना लौट आया। वही दारोगा श्रीविन्ध्येश्वरी मिश्र और उनके चार कनस्टबिल, फिर ११ हथियारबन्द सिपाही सिंगिया और उनका हवलदार श्रीनन्दकिशोर झा और एक मुंसिफ मजिस्ट्रेट वाबू जगदीश नारायण। तुरत दारोगा हवलदार और मुंसिफ मजिस्ट्रेटकी साठ-गांठ बैठ गई। डाक्टर देवनारायण सिंह, मास्टर रघुवर सिंह और एक शत्रुघ्नप्रसाद सिंह उनके अनाचारके वाइन बने और सिंगिया त्रितापके उत्पीड़नसे कराहने लगा।

१४ सितम्बरको परमानन्द सिंह, चन्द्रनारायण सिंह, कमलादत्त लाल, रामलगन सिंह और सोनेलाल गिर दोनो भाई सहित, पकड़े गये और बन्दूकके कुन्देसे पीटे गये। गिर परिवारकी सम्पत्ति भी लूट ली गई। दूसरे दिन श्रीवम्बवहादुर सिंह पकड़े गये। उनको खूब पीटा गया, उनकी दाढ़ी उखाड़ उखाड़कर मुंह लहू लुहान कर दिया गया और दाढ़ीके वचे हुये बालोंको दियासलाईसे झुलसा दिया गया। मटरा धानुक यदु खतवे और रामधनी ततमाको मारते मारते वेहोश कर दिया गया। देवकी सिंहको बांधकर पेड़से लटका दिया गया और बड़ी वेरहमीसे पीटा गया और २१ सितम्बरको जब रामखेलावन सिंह पकड़े गये तब वह भी इसी तरह पेड़से लटकाकर पीटे गये। श्रीबचनू सिंह और श्रीरामवल्लभ सिंहपर भी बड़ी मार पड़ी। २५ सितम्बरको बाबू राधा सिंह पकड़े गये। उनपर जैसे जैसे अत्याचार हुये उनको याद करके मानवता थर्रा उठती है।

राधा बाबूको पहले खूब पीटा गया, घूंसे थप्पड़के बाद जूते और हन्टरसे। वे बेहोश गिर पड़े और घसीट कर हाजतमें डाल दिये गये। फिर एक डोमको पकड़ मगाया गया। उसका नाम था केवला। वह कहता है—"हम बाधमें सुअर चरावे वास्ते जाय पर रही कि दो चौकीदार और एक हवलदार गएमे हमरा पकड़ि लेलक। चौकीदार और हवलदारके हम पहलेसे नहि जानैत रहियैक। दारोगा बाबू पुछलखिन जे, डोम है? हम सलाम कैलिऐन्ह। हमरा लगमे बजाक कहलेथ जे, पेसाब करो! हम कहलियन्ह जे, सरकार हम गरीब आदमी छी, हमरामे पेसाब नहि होतैक। तब कहलखिन्ह—सूट करो इसको, मारो सालेको। तब ओसाराके भीतर हाजतमें लये गेलाह। तब एक चोकीदार (केशव चोकीदार) हमर धोती खोलि देलक। तब कहलैथ पेसाब करो, नहीं तो सूट कर देगा। बहुत घींचातीरी कैलेथि; दु चारि गरदनिया मारलैथ वो कहलेथ जे पेसाव करना होगा। हमरा डरके मारे पेसाब नहि होइत रहे। एकबार बाहर करके फेर घुरोलेथ। पीछा एक डोल पानि हमरा देहपर फेंकवैलाह। तब पेसाव जबरदस्ती हमरा हाथमें करवायके चोकीदारसे जबरदस्ती राधा बाबूपर फेंकवा देलखिन्ह। हमरा इन्द्रीपर भी पानि फेंकवैने रहथिन्ह। वहां दारोगाजी, रघुवर मास्टर व हवलदार साहेब रहथिन्ह। वहा और भी बहुत आदमी व हाकिम रहथिन्ह।"

सिंगियाके त्रिगुटका उपद्रव तो थाने भरमें होता रहा पर कुलहारा, लगमा, माढ़े, सिंगिया, बारी, बगरहटा, हिरनी और कुसेश्वर स्थान विशेष रूपसे सताये गये।

चम्पारण जिलेमें १८ अगस्तको गोरे पहुंचे मोतिहारी और १९ को बेतिया। उन जगहोंसे उनकी गाड़िया थाने थाने दौड़ने लगीं।

चम्पारण

आदापुरमें मि० मैरिक साहब कोतवाल पहुंचे नौ गोरोंको लेकर। उनने वहाका आश्रम जला दिया और रक्सौल चले गये। वहांसे दूसरे दिन फिर आदापुर आये जहांसे पचपोखरिया जाकर उनने श्यामलाल राउतको गिरफ्तार किया और ठेलागाडीपर बैठाकर ले चले। गांववालोंको भय हुआ कि कहीं इन्हें छौड़ादानों लेजाकर मि० मेरिक मार न डाले इसलिये इन लोगोंने श्यामलाल राउतको ले भागनेकी कोशिश की। मेरिक साहबने तुरत गोली चलवायी जिसमें भोंदु राउत मारे गये और जनक राउत तथा गुगुली चमार घायल हुये।

वहासे मेरिक-दल छौड़ादानो पहुंचा। जब लोगोंको मालूम हुआ कि गोरे आये हैं उनने उनके विरोधमें जलूस निकाला। जलूसमें एक भी कांग्रेसी न था

सबके सब गांववाले थे। जलूस जब गोरोंके सामने आया तब मि० मैरिकने उसे लौटनेको कहा। पर वह आगे बढ़ा जिसपर मैरिकने फिर गोली चलवायी। दो तत्काल शहीद होगये—द्वारिका कहार और हरिहर हजाम, घायल हुआ एक—जगदीश चमार। गोरा दल तो चला गया पर श्रीराघोजी तिवारीकी मुस्तैदीसे घायलकी सेवा हुई और शहीदोंका अन्त्येष्टि-संस्कार सम्पन्न हुआ।

३ सितम्बरको कैम्पस साहब सदलबल रक्सौल पहुंचे और पं० जगदीश झा ओवरसियरका सामान लूट लिया, उनको पीटा और गिरफ्तार करके ले गये। भोलासाहु, वैद्यनाथ राम सोनार, श्री शिवनन्दन राम और विद्या प्रसादकी सम्पत्ति लूट ली। श्रीजगन्नाथ प्रसाद और श्री सरयू प्रसाद भी लूटे गये।

रक्सौलमें गोरे फिर आये सितंबरके अन्तिम सप्ताहमें। परेउआ टोलाके लोगोंके घरोंमें घुसकर उनने अमानुषिक अत्याचार किया। पाठापाठी और दूसरी दूसरी चीजोको उठा ले जाना तो उनके लिये कोई बात ही नहीं थी। सुगौलीमें डि० आई० जी०; एस० पी० और मैरिक सभी गोरखोको लेकर पहुँचे और श्रीहीरानन्द मिश्र, श्रीकान्त झा और श्रीयमुनाकान्त झा आदि कार्यकर्त्ताओको बेंतसे मारा।

पिपरामें राजबल सिंहजीके साथ गोरोंने बुरा व्यवहार किया। ढाकामें गोरे पहुँचे ३१ अगस्तको। उनके टैन्क (लड़ाकू गाड़ी) के नीचे आदमी दबकर मर गया। उनने आते ही कांग्रेस आश्रम जला दिया। वहाँसे वे पहुँचे फेनहारा जहाँ उनने गोली चलाई और पाँच आदमियोंको घायलकर दिया। कोई मरा नहीं, इलाज करवाकर सभी चंगे हो गये।

लौरियामें बाबूलालको पुलिसने मारा और गोरोने रात भर पेड़से लटका रखा।

चम्पारणमें भी गोरोने अपनी पैशाचिक क्रूरताका परिचय दिया मधुबन थानाके महेसी स्टेशनपर। २३ अगस्तकी रातको ही गोरे महेशी आये और अर्जुन प्रसादके गोदामपर धावा किया। डरके मारे एक मजदूर गोदामसे निकल भागा जो गोलीसे मार दिया गया। श्रीमोहन तिवारीके घरके किवाड़को तोड़ गोरे भीतर घुसे और सारा सामान जला दिया। कुल २५ गिरफ्तारियां हुईं।

२४ अगस्तको सभी गिरफ्तार लोगोंको गोरोने मुजफ्फरपुर ले चलनेके लिये रेलगाड़ीपर बैठाया। किन्तु कुछ ही देरके बाद श्रीसमावतार साहु उतार लिये गये। गोरे उन्हें मालगाड़ीकी आड़में ले गये। उनपर क्या बीती सो उनके संगी

साथी न जान सके। हा! जबतब चीखने चिल्लानेकी आवाज आ आकर उनकी छातीको दहलाती रही। फिर उनके साथियोंने देखा चार आदमी एक लोथको टाग टूंगकर ला रहे हैं—खूनसे लथपथ—वेदनासे विकल। अपने रामावतारजीकी वैसी दुर्गति देख कुछ बन्दी रोने लगे। उन्होंने चुप रहनेका इशारा किया। पर मुजफ्फरपुरमें उनके सभी साथी जेल पहुँचाये गये और उनकी लाश पहुँचायी गई डाक्टरके यहा जिसने चीर फाड़कर रिपोर्ट लिखी कि नाभि-क्षेत्रमें घातक मार पड़नेसे मृत्यु हुई।

गोविन्दगंजका शानदार जनता राज शान्ति-पूर्वक समाप्त हुआ। श्रीरामर्षिदेव चालीस साथियोंके साथ सभामें बैठे थे। खबर मिली कि गोरे आ रहे हैं। भागना गोविन्दगंज 'बादशाह' को कैसे शोभा दे सकता था? २५ साथियोंको लेकर वे गोरोंकी प्रतीक्षा करने लगे और श्रीब्रह्मा तिवारीको चौदह-पन्द्रह साथियोंके साथ वहासे हटा दिया। भीड़पर नजर पड़ते ही गोरोंने बन्दूकें संभालीं पर डिपटी मैजिस्ट्रेट बलभद्र झा चिल्ला उठे—No firing! No firing! गोली मत छोड़ना! गोली मत छोड़ना! बन्दूकें नीचे झुक गईं और इज्जतके साथ ऋषिजी अपने दल सहित बेतिया लाये गये। थानेके हिन्दुस्तानी सिपाही, दारोगा और घुड़सवार ऋषिजीको जिन्दा ही गिरफ्तार देख फूले न समाये। सबोंने उनको बड़ा आराम दिया। गोरोंने भी भलमनसाहत दिखलाई।

ऋषिजीके कामको श्रीब्रह्मा तिवारीने आगे बढ़ानेकी कोशिश की। पचायतोंके सगठनको मजबूत किया और कोठवालों तथा अन्य सरकारके पिट्ठुयोंकी हाटें उनने उजाड़ी और उनकी जगह दूसरी दूसरी हाटें लगाईं। पर तबतक बलूची और पुलिस गोविन्दगज भरमें छा गये थे जिनके द्वारा ब्रह्मा तिवारी दल सहित गिरफ्तार हो गये।

श्रीप्रभुनारायणकी शहादतके जोशपर भी खगड़िया मैदानमें देर तक न टिक सका। कार्यकर्त्ताओंके पैर उखड़ गये और १६ अगलको उनने श्रीउचितनारायण मुंगेर सिंहको डिक्टेटर बनाकर 'गुप्त रूपसे कार्य' करनेका निश्चय किया। फिर काग्रेस कार्यकर्त्ताओंके घरोंको जलाते हुये गोरे वहा पहुंचे और सर्वश्री श्रीकान्त विद्यार्थी, उचितनारायण सिंह, पालेश्वर प्रसाद सिंह, रामदेव प्रसाद सिंह तथा जनार्दन प्रसादके घरोंको उनने फूंक डाला। श्रीकेदारनाथ सिंह 'आजाद' का घर लूट लिया गया। रानी सकरपुरामें अनेक घर जलाये गये और श्रीकमलेश्वरी

प्रसाद सिंह तथा श्रीपरमेश्वरी प्रसादको काफी नुकसान पहुँचा। गंगौर आदि गांवोंमे भी कितने घर जलाये गये। बादको धड़-पकड़ शुरू हुई।

गोगरी थानाके पसराहाको अभी चैन न मिला था। गोरे मोटर बोटसे आसपासके पानीको मानो मथ रहे थे। ३० अगस्तकी बात है, उनने एक नावको जाते देखा, उसे खदेड़ा और उसपर सवार कवेलाके श्रीशुकदेव कुंवरको गोलीसे मार डाला।

मानसी स्टेशनपर गोरोंका अड्डा था। वहांसे ही आकर उनने बारबार महेशखूंट बाजारको लूटा और पासके राजधान बस्तीमें जघन्य क्रीड़ायें कीं। परबत्तामे बलूची रहते थे जिनने डुमरिया, बन्देहरा और कन्हैयाचक आदि बस्तियोमें लोगोके घर घुस जाते और मारपीट किया करते। आतंक फैल गया था जिसको नयागांव, अगुआनी, डुमरिया, खजरैटा, और गोगरीमें प्रचार केन्द्र खोल-कर स्वयंसेवक दूर करनेमे लगे रहे।

इधर गोगरी राष्ट्रीय विद्यालय लूट लिया गया; जमालपुर बाजारमें फिर कन्हैयाचक और डुमरियामे कई व्यक्ति लूटे गये। ११ सितम्बरको महेशखूंट आश्रम जला दिया गया और महेशखूट बाजारमें हुंकार मलके घरको लूटकर जला दिया गया। श्रीरामधन और श्रीनिवासके घर भी लूटे गये।

चौथम थानेमें ही मानसी है जहां गोरोका अड्डा था। इसलिये स्वभावतः पासके खुटिया बाजार और उसके चारो ओरके इलाकेमे गोरोने भीषण आतक फैला रक्खा था। चौथम थानाके कुछ कार्यकर्त्ताओंने प्रदर्शन तथा प्रचार करके उस आतकको दूर करनेका संकल्प किया। फलतः चौथम आश्रमसे सात आदमियोका एक जलूस निकला जो ठाठा होकर चैधा गया और वहांसे खुटिया पहुंचा। आतक इतना था कि पुराने पुराने कांग्रेस कार्यकर्त्ता भी जलूससे मिलनेमें डरते और कन्नी कटाकर निकल जाते। इसलिये जलूसको खाने-पीने और सोनेकी बड़ी तकलीफ रही। फिर भी जलूसवाले जानको हथेलीपर लेकर दो दिन इधर-उधर प्रचार करते रहे, कांग्रेसी झंडे फहराते रहे और कांग्रेसी नारे लगाते रहे। २६ अगस्तको ठाठाके पास रेलवे लाइन पार करके जब वह आश्रम लौटे आरहे थे कि गोरोंकी रेलगाड़ी पहुंची जिसपरसे जलूसपर गोलियां बरसीं। एक गोली श्रीबलदेव पण्डितकी नाभिको छेदती हुई एक भैंसको लगी। भैंस तो तत्काल मर गया गई पर पण्डितजी जो एल० पी० स्कूलके गुरु थे कुछ घंटे बाद मरे।

शहीद बलदेव पण्डितके अधिकांश साथी बंगलिया-रोहियारके थे। वहीं ३० अगस्तको एक बड़ा हवाई जहाज गिरा जिसमें तीन अंगरेज थे। तीनों जहाजके पखोंपर चढ़कर उस जलमग्न स्थानको पार करनेका उपाय सोच रहे थे। अंगरेजोंको देखकर शहीद पण्डितके शोक-सतप्त साथियोंकी प्रतिहिंसा जाग उठी। वे बंगलिया और रोहियारके काफी लोगोंको लेकर नावसे जहाजके पास गये। अंगरेजोंने मानसीका रास्ता पूछा। लोगोंने मानसी पहुँचानेके लिये उन्हें नावपर ले लिया और उनके हथियार भी ठग लिये। फिर वे एकाएक उनपर टूट पड़े और भाले-बरछेसे उनका काम तमाम कर दिया। लाश घघरी नदीमें डुबा दी गई। फिर जहाजकी लूट शुरू हुई। उसपर काफी हथियार थे। मनों गोलियां थीं। सभी चीजें ले ली गईं। हां! एक लोहेका बक्स था जो खोले न खुला। फिर जहाजको खींच खांचकर लोग ले आये और धमाराकी धारमें बहा दिया। पर जहाज डूबा नहीं। हां! अंगरेजोंके खोजे न मिला। उसे हिन्दुस्तानी अफसरोंने ढूंढ निकाला।

इस घटनाके दूसरे ही दिनसे मोटर लचपर गोरे उस जलमग्न क्षेत्रमें आने लगे। २ सितम्बरको उनकी फौज रोहियार पहुँची और गांववालोंपर अन्धाधुन्ध गोली चलने लगी जिससे दसके प्राण पखेरू उड़ गये। वे थे श्री कारेलाल वर्मा, लालजी गोप; नगरू गोप, जागू गोप, हेकरी तेलिन और उसकी गोदकी तीन वर्षकी बच्ची, सात सालका लड़का महादेव, सुरनी देवी और उसकी गोदका बच्चा उम्र तीन साल और छुट्टीके डोमन ठाकुर। जान लेकर ही गोरे शान्त न हुये। उनने लालजी गोप, जानकी साह, सैनी वर्मा, तीलो मण्डल, छट्टू साह, तिलो साह और जगदेव साह आदिके घर जलाये, कितनोंके घर लूटे और स्त्रियोंके साथ अपना मुंह काला किया। गांव खाली हो गया।

रोहियारसे तीन मीलपर बदला घाट रेलवे स्टेशन है। उसके पास ही बलहा बाजार है। वहां अनन्त पाण्डुरंग नाडू और नारायण पाण्डुरंग नाडू दो भाई रहते थे। कपड़ेकी दूकान थी और आसपासमें जमीन जो उनके पिता स्व० श्रीहरि पाण्डुरंग, रेलवे ठीकेदारकी कमाई थी। दोनों भाई सेवा भावनासे ओत प्रोत थे। बलहा बाजारमें अखाड़ा खोल रक्खा था। वे सब नवयुवकोंको व्यायाम सिखलाते थे और ग्रामीणोंकी समाज सेवा। निस्सन्देह अगस्त आन्दोलनसे उनको दिलचस्पी थी, निस्सन्देह बदला घाट और धमारा घाट

स्टेशन रेडमें उनका हाथ था पर इसमें कोई शक नहीं कि रोहियारकी दुर्घटनासे उनका कोई सम्बन्ध न था। उसकी जानकारी उनको पीछे हुई और जानकर वे दुखी हुये। पर कुछ ईर्ष्यालु लोगोंने जिनमें श्रीनाथविहारी सिंह और खिरनियांके अब्बास मियांका भी नाम लिया जाता है उनके खिलाफ गोरोंके कान भर दिये। गोरे ३ सितम्बरको बलहा बाजार आये; दूकानसे नारायण पाण्डुरंगको पकड़ा और घरमें घुसकर अनन्त पाण्डुरंगको जो उस समय रुग्नावस्थामे थे। और दोनोंको अपने अड्डे पर मानसी ले गये।

दो दिनोंके बाद गोरोंने अचानक रोहियारके तिलो महताको पकड़ लिया और उसे खूब पीटने लगे। उसने कबूल किया कि मैंने हवाईजहाज-दुर्घटनाके बारेमें जो कुछ सुना है उसे बता दूंगा तब पीटना बन्द कर गोरे उसे मानसी ले गये। रोहियारके अपर प्राइमरी स्कूलके हेड पण्डित शालिग्राम सिंहजीके सामने बाबू नागेश्वरी प्र० सिंहको १९४३ में ही तिलो महतोने अपना वक्तव्य दिया। वह कहता है—"× × ×× मानसी जब पहुँचे तब मुसाफिरखानामें बैठाये और वहीं हमसे अनन्त बाबू और नारायण बाबूसे मुलाकात हुई। तब हम उनको नहीं पहचान किया क्योंकि बहुत ही बेरहमीसे उनके शरीरपर मार लगी थी जिससे उनका कपड़ा लत्ता खूनसे तर था और बहुत ही जख्मी थे। जब उनने बात चीत किया तब हम पहचान किया। बाद इसके जब हम और वे दोनों आदमी बैठे तब एक साहबने आकर हमारा टिक काट लिया और कहाँ कि हम तुमको विलायत ले जावेंगे, नहीं तो बताओ साहब कहां है ? दूसरा साहब आंखपर छूरा चला दिया। हम अपनेको बचाया। लेकिन छूरेका नोक हमारे नाकमें थोड़ासा लग गया। फिर गोली चलाया, हम बाल बाल बच गये। उस गोलीसे कुत्ता मर गया। तब दूसरा साहब आकर बचाया, कहा कि यह सरकारी गवाह है इसको मत मारो। ××××××× जब उन लोगोंका इरादा होता था हम लोगोंको भी साथ लिये जाते थे और फिर लौटा कर मानसी लाते थे। ×××× एक रोज फिर करीब सात आठ बजेमें गाड़ीमें चढ़ा कर पसराहा स्टेशनसे पूरब काटिनसे (Cutting) पच्छिम गाड़ी लगा दिया गया। खिरिकको खोल कर दोनो भाईको उतार लिया गया। हम उतरते थे लेकिन हमको बैठा दिया गया और खिरिक बंद कर दिया गया। उस वखत दो साहब बन्दूक लेकर उस जगह तैयार था और गाड़ी बढ़ाकर काटिनके तरफ ले गया और इधर चार बार बन्दूकका

आवाज हुआ। आवाज बन्द होनेपर गाड़ी फिर लौटी और लौट कर बारह बजे मानसी पहुँच गई तब विरिक खोल कर खानेके वास्ते पूछने लगे × × × × जो साहब काटिनपर वे दोनो आदमीको उतारे थे उनसे हम पूछा—वह दोनों आदमी कहा हैं तो कहिन कि उनको काटिनपर शूट कर दिया ×××।"

आस पासकी क्या जनता और क्या कार्यकर्त्ता सभी विश्वास करते हैं कि पाण्डुरग बन्धुओंको भीषण यन्त्रणा दी गई। अनगिनत बार सगीनसे उनके शरीर भोंके गये, फिर बारा बारी उनकी आखें फोडी गईं और तब गोली मारनेकी दया दिखलायी गई। १९४५ में लेखक तिलो महतोसे मिला था और सब बातोंकी पूछताछ की थी। उसने लेखकसे कहा कि जबतक वह दोनो भाइयोंके साथ रहा उनकी आखें फूटी न थीं; हा! चोटसे सूजी हुई और बदरग होगई थीं, सारा शरीर और मु ह और कपड़े फट फट गये थे; पहचानना मुश्किल था; हा! आवाज वैसी ही कड़ी थी और उसीसे पहचाने जाते थे, उनने कहा—तिलो! जो तुम जानते हो कह देना, नहीं तो ये गोरे तुम्हें छोड़ेंगे नहीं, मार डालेंगे।

लेखकने पूछा—तुमने भी उनको यही क्यों नहीं कहा? क्या वे दोनो कुछ नहीं जानते थे?

तिलो—वे दोनों सब कुछ जानते थे पर जब गोरे कुछ पूछते भिड़क देते थे। उनकी बात बड़ी कड़ी होती थी।

लेखक रोहियारमें था, उस दुर्घटनाके नायक उपनायकोंसे घिरा हुआ। उनमेंसे एक बोला—वे जबान खोलते तो अन्धेर होजाता। कितनोंकी जान जाती।

सो अनन्त पाण्डुरंग नाट्टू और नारायण पाण्डुरग नाट्टूने अपनी जान दी ताकि औरोंकी जान बचे, अपने शरीरके परचे परचे कटवाये ताकि औरोंके शरीरका रोया भी न टूट सके। पसरहा कटान उनकी समाधि है। आज वह गहरी खाई है पर कल जब हमारी आजादीकी भावना मजबूत होगी वह बहुत ऊचा उठेगा, पाण्डुरगके अपूर्व बलिदानके स्मारकके रूपमें।

इधर ९ सितम्बरको थाना फिर सरकारके अधिकारमें आ गया। कार्यकर्त्ताओंके नाम संगीन जुर्मोंके लिये वारण्ट कटने लगे और उनको पकड़नेके लिये लुफिये छूटे। अधिकाश कार्यकर्त्ताओंको अपने बचावकी फिक्र हुई। इस परिस्थितिसे लाभ उठा कर दो तीन कार्यकर्त्ताओंने चौथम थानामें दूसरी तरहका तहलका मचा दिया।

इधर सूर्यगढ़ाके कार्यकर्त्ता अपनी व्यवस्थाको थाने भरमें मजबूतसे मजबूत बनानेकी चेष्टामें लगे थे उधर गोरे रेलवे लाइनको मरम्मत करके थानेमे घुसनेकी तैयारी कर रहे थे। रेलवे लाइनपर उनकी चौकसी रात दिन होती रहती थी। १८ अगस्तको उनने देखा एक लाइनके पास हाथमे कोई औजार लिये खड़ा है। तुरत गोली दागी और बेचारे शेखो धानुकको मार डाला जो सहूर ग्रामका निवासी था और लाइनके किनारेके अपने खेतमें काम कर रहा था। इसी तरह उनने २१ अगस्तको बेनी सिहकी जान ले ली जो उरैन रहते थे और लोकल बोर्डकी सड़कसे आ रहे थे।

सूर्यगढ़ा

२६ अगस्तको एक खास जहाजसे एस० डी० ओ० साहब फौज और पुलिसको लेकर सूर्यगढ़ा पहुंचे। पहुंचते ही उनने कर्फ्यू आर्डर जारी किया, आश्रम जब्त किया तथा मौजूद कार्यकर्त्ताओंको गिरफ्तार किया। किन्तु लोगोका उत्साह पूर्ववत् बना रहा। श्री रामेश्वर साह, पोखन दास और परमेश्वर मिस्त्री वगैरहने जलूस निकाला, सूर्यगढ़ामे सभा की और नारा लगाते हुये थाना आये जहां पांच गिरफ्तारियां हुईं।

२९ अगस्तको फिर जलूस निकला जो थाना कांग्रेस आफिसके मैदानमें आकर एक सभाके रूपमे बदल गया। उस सभाकी कार्रवाई चल ही रही थी कि फौज लेकर एस० डी० ओ० आये। गोली चली और दो शहीद हुये—श्री डोलन गोप और श्री कारू मिश्र।

इस गोलीकाण्डके बाद पकड़ धकड़ और घूसखोरी शुरू हो गई और थानेकी हवा बदल गई।

खड्गपुरके कार्यकर्त्ताओंमे जान थी और उनने गोरोंके फैलते हुये आतंकको दूर करनेका निश्चय किया। २६ अगस्तके आसपासकी घटना है। श्रीसच्चिदानन्द शास्त्रीने सबोंकी सलाहसे तय किया कि मनी नदीपर जो पुल है उसे तोड़ दिया जाय। क्या विद्यार्थी और क्या जनसाधारण सभी काफी तादादमे पुल तोड़ने गये। अकस्मात उसी समय फौजी पहुंचे; भीड़मेसे सात व्यक्तियोंको उनने पकड़कर गाड़ीपर चढ़ा लिया और जो लोग पुलपर खड़े नारा लगा रहे थे उनपर गोलिया चलाईं जिससे कलर पोद्दार तत्काल शहीद हुये और तीन घायल हुए—नेवाजी मोदी, सबीर मिया और खड्गपुर राष्ट्रीय विद्यालयका एक विद्यार्थी।-इस गोलीकाडके परिणाम-स्वरूप लोग आतंकित हो गये पर

खड्गपुर

कार्यकर्त्ताओंका संगठन नहीं टूटा। वे छिप छिपकर मिलते और जनताको उत्साहित करते रहते।

लक्खीसरायमें गोरे आये १६ अगस्तको। किउल स्टेशन तो उनका अड्डा बन गया था। दूसरे दिन श्रीराजेश्वरीप्रसाद सिंह गिरफ्तार हो गये और बाजारमें लक्खीसराय पुलिसका दबदबा छा गया। जो देहातसे आता पुलिसवाले उसे धर पीटते। १७ अगस्तकी शाममें ही कर्फ्यू आर्डर जारी हो गया था जिसकी खबर गांववालोंको तो तुरत हुई नहीं। इसलिये कितने अनजाने आते जिनमेंसे कई किउल स्टेशनके पास गोलीके शिकार बन जाते। ३१ अगस्तको १४४ धारा तोड़कर लक्खीसरायके कार्यकर्त्ताओंने एक जलूस निकाला जो प्रदर्शन करता हुआ दक्खिनसे उत्तर गया और उधरसे वापस हुआ। जब वह स्टेशनके पास आया तब एकाएक किउलसे रेलपर मिलिटरी पहुंच गई और आसमानी फायर करने लगी। पर भीड़ आगे बढ़ती ही गई क्योंकि वह अपने मुकामपर वापस आ रही थी जहांसे वह तितर बितर हो जाती। पर उसे आगे बढ़ते देख मिलिटरी भीड़पर गोलियां बरसाने लगी। कितने घायल हुये और ६ मरे। दो लाशोंको तो सिपाहियोंने उठा लिया और उमड़ी हुई किउलमें भसा दिया और चारका दाह-संस्कार जनताने किया। वे चार थे बराहिल बनियाके श्रीवैद्यनाथ सिंह, सलौना चकके गुञ्जू सिंह, मसोढ़ाके दारो साहु और सामनटोलके केशव सिंह।

बेगूसरायमें १८ अगस्तसे गोरे आने लगे और उसी दिनसे कर्फ्यू आर्डर जारी किया गया। पर कार्यकर्त्ताओं और छात्रोंने उस आर्डरको नहीं माना। उस दिन भी तोड़ा और दूसरे दिन भी जबकि बेगूसरायमें काफी गोरे आ गये थे। हां! उस दिन श्रीरामप्रताप सिंह और १६ विद्यार्थी पकड़े गये। २० अगस्तको स्वयंसेवक फिर कर्फ्यू आर्डर तोड़ने निकले नौ बजे रातको। शहरमें प्रवेश करते ही बन्दूक और लाठी लेकर सिपाही दौड़े आये और उनपर टूट पड़े। कितने चोट खाकर सड़कपर गिर पड़े। श्रीराजराजेश्वर प्रसाद सिंह, श्रीशिवचन्द्र सिंह और [illegible] घोषको तो बेतरह चोट लगी थी। शामसे ही घरमें रहना था और रातके [illegible] गये थे। फिर भी श्रीब्रजमोहन शर्मा दौड़ पड़े और घायलोंकी दवा दारू [illegible] किया। इसके बाद कार्यकर्त्ता देहात चले गये और गांवोंमें संगठन करने लगे। शुरू सितम्बरमें ही श्रीसरयू प्रसाद सिंह, और पं० सुन्दर झा वगैरह गिरफ्तार होगये और कांग्रेसका काम गुप्त रूपसे होने लगा।

बलियामें १८ अगस्तको जो गोरे आये सो महज थाना खाली करनेके लिये। हां! आते ही उनने फायर करना शुरू किया जिससे एक आदमी घायल होगया। फिर उनने बाजार लूटा, एक मारवाड़ी लादूरामकी दूकान लूटी, कांग्रेस भवनको जला दिया और दारोगाको लेकर बेगूसराय चले गये। फिर ९ सितम्बरतक अंगरेजी सरकारकी ओरसे कोई बलियामें झांकने भी न आया। १० सितम्बरको काफी गोरे आये। उनने श्रीसीताराम अग्रवाल और श्रीप्रतापनारायण सिंह और पत्रवीरके श्रीद्वारिका शर्माकी सम्पत्ति लूटी। फिर पुलिसका दमन प्रारम्भ होगया। बखरी थानेमें एटकिन्स साहब पुलिस और गोरे लेकर आये २३ अगस्तको। उनने सलौनामें झंडी साहुका घर जलाया और बखरीमें सर्वश्री बैजनाथ प्रसाद सिंह त्रिवेणीप्रसाद सिंह, शिवनारायण गुप्त तथा मैंहीलाल साहुके घरोंमें आग लगा दी। उनने बाबू सदाव्रतनारायण सिंहके घरको लूटा भी और बीच बीचमें गोली चलाकर श्रीबालगोबिन्द पोद्दारको घायल कर दिया। दूसरे दिन श्रीशिवव्रत नारायण सिंहका घर जलाया गया और गोली चला कर दो तीन व्यक्तियोंको घायल भी कर दिया गया। फिर पुलिसके लिये रास्ता साफ होगया और उसके हथकण्डे अपनी करामात दिखाने लगे।

तेघड़ा थाना मुङ्गेर जिला भरमें खूब जाग्रत रहा है। यह अन्ततक जाग्रत रहा और दमनका शिकार बनता रहा। यहां बरौनी जंकशनमें मिलिटरी आ गई १८ अगस्तको ही और वहीं इसने अपना डेरा डाला। वहांसे यह इर्द गिर्द जाती और जनताको परेशान करती। दूसरे दिनकी ही बात है। एक बहरा पासी कोयलेके ढेरकी बगलसे गुजर रहा था। उन लोगोंने इसे गोलीसे मार डाला। बेचारेका नाम था मुसहरू पासी, गांव बारो। फिर मिलिटरी तेघड़ा आयी और उसने कांग्रेस भवनको जला दिया और राहमें बौनू कुम्हराको गोलीसे मार डाला। वहांसे वह बछवाडा आई और एक नेपाली राहीको घायल कर दिया जिसे कुछ कांग्रेस कार्यकर्ताओंने उठाकर मनसूरचक अस्पताल पहुँचा दिया।

बछवारेमें इनके आ जानेसे लोग घबड़ा गये। कार्यकर्त्ताओंने इस घबड़ाहटको दूर करना आवश्यक समझा और जलूस लेकर स्टेशनकी ओर बढ़े। कुछ लाइनकी पटरी भी हटानेको चले। सैनिक सतर्क होगये। इसी बीच श्रीउमाकांत चौधरी झंडा लेकर एक टीलेपर खड़ा होगया और लोगोंमें नारे लगा लगाकर जोश भरने लगा। एक गोली सनसनाती हुई आई और उसकी

छातीको पार कर गई। जब कांग्रेसके कार्यकर्त्ता उसके पिता श्रीविन्ध्यवासिनी चौधरीको सान्त्वना देने गये तो चौधरीजी कार्यकर्त्ताओंकी हिम्मत बढ़ाते हुये बोले कि मेरे लड़केने जो किया ठीक ही किया; उसपर मुझको अभिमान है। दोबारा आकर सैनिकोंने तेघड़ा बाजारको काफी लूटा और बादको वे २१ अगस्तको बिहट पहुँचे। गांववालोंकी गति विधि देख उन्हें वहां कुछ करनेकी हिम्मत नहीं हुई और वे चुप चाप उस गांवसे वापस लौट रहे थे कि एकने पुकारा—"ठहरो! ठहरो! डर कर भागे क्यों जा रहे हो?" पर उन्हें ठहरना तो था नहीं। बस! उनने निशाना किया और तिरंगा झंडा लेकर ललकारनेवाले उस युवक उचित सिंहको वीरगति देदी। फिर उसी दिन उनने फुलवरियाके बदरी पोद्दारका सबस्व लूट लिया। अगले दिन कहारामें श्रीअम्बिका शर्माके घरको सामान सहित फूंक दिया गया और पासमें खड़े हुये श्रीप्रद्युम्न मिश्र नामक एक अस्सी सालके बूढ़ेकी हत्या की गई। वहां श्रीमहादेवरायका भी घर जलाया गया।

१ ली सितम्बरको बाबू रामचरित्र सिंह गिरफ्तार हो गये और पुलिसका घोर दमन शुरू हुआ। ऐसी परिस्थितिमें भी आन्दोलन जीता जागता रहा, जनताको आगे बढ़ाता रहा—इस गरजसे कार्यकर्त्ताओंने युद्ध समिति और ध्वंसात्मक समितिका निर्माण किया। युद्ध समिति प्रचार और संगठन करती थी और ध्वंसात्मक समिति तोड़ फोड़का काम करती थी।

परन्तु पुलिसका अत्याचार बढ़ता ही गया। १८ सितम्बरको तो एक दफादारने श्रीसीताराम महाराज सोखतारको पकड़ लिया। वे टामियोंके हवाले कर दिये गये। जो उन्हें बेंतसे पीटते रहे और वे बराबर इन्कलाब जिन्दाबादका नारा लगाते रहे। थाना पहुँचने तक क्रूरता और वीरतामें होड़ लगी रही। कोई किसीको दबा नहीं सका।

इधर पुलिसने बजलपुराके बाबू तारिणीप्रसाद सिंह, रामलखन सिंह और वशिष्ठनारायण सिंहकी सम्पत्ति लूटी। मदौलीके श्रीरामबहादुर सिंह वगैरह लूटे गये और फिर तहस नहस और गिरफ्तारीका दौर शुरू हुआ।

२४ अगस्तको मि० सी० डी० पटरिक्स और मि० आर० एस० कुछ गोरी मिलिटरी लेकर अचानक मैदौल आये। कर्मियोंको उनके आगमनकी सूचना बरियारपुर सदोनो ...। झटपट भी ...ड़ भी ... ... हथियार लेकर उनका सामना करनेके लिये गांवके रहनपर जमा हो गये, किन्तु भाग्यवश

सिंहने समझा बुझाकर लोगोंको वहांसे हटाया और मकईके खेतमें छिप जानेकी राय दी। उनने गांववालोंसे कहा—मैं गोरोंको मनामुनूकर वापस कर दूंगा; आपलोग नहीं घबड़ायें। पर गोरे आये गोली छोड़ते हुए जिससे एक लड़की घायल हो गई। राजबंशी सिंहजीने जब ऐसा माजरा देखा तो गोरोंके सामने जानेकी हिम्मत नहीं हुई और वे सब धड़धड़ाते हुए श्रीराधाप्रसाद सिंहके घरपर आ गये। राधा प्रसादजी बाहर निकले। गोरे उनके घरमें घुसने लगे तो उनने रोका और अपने भाईके कमरेको दिखाकर जिसपर कांग्रेसका झंडा फहरा रहा था, बतलाया कि वही कांग्रेस भवन है। गोरे भीतर घुसे सभी सामान इकट्ठे किये और पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी। उनकी हरकत देख राधा बाबू घबड़ा गये और निकल भागनेकी चेष्टा की पर कुछ दूरपर ही पकड़ लिये गये। गोरोंने उनको पटक दिया और बूटों और कुन्दोंकी मारसे उनके हाथ-पाँवको फोड़ डाला। फिर जहाँ जहाँ गोरे गये उनको साथ घसीटते ले गये। श्रीराजबंशी बाबूका घर जलाया गया। उनके भाई श्रीसूर्यशेखर सिंह परिस्थिति न समझ बोले—"राधा! तुम्हीं दोनों भाई तो कांग्रेसके काम करते आये हो; दौलतपुर कोठी भी गये थे पेट्रोल लूटने; फिर आज मेरा घर क्यों जलवाते हो।" गोरोंने सुना और राधा बाबूपर फिर टूट पड़े। बेचारे अधमरे हो गये। अब सूर्यशेखर बाबूसे पहचनवा पहचनवाकर गोरोंने सर्वश्री कैलाशपति सिंह, राजबंशी सिंह, राम कृष्ण सिंह, गया प्रसाद सिंह, कैलाश सिंह और बिन्दो सिंह आदि इक्कीस सज्जनोंके घर जलाये। गाँवमें भगदड़ मच गई जिसके धक्केमें श्रीशत्रुघ्न सिंहका नवजात शिशु मर गया पर श्रीसूर्यशेखर गोरोंके पंजेसे निकल भागे। श्रीरामजीवन झा नामका विद्यार्थी जब एक घरकी आग बुझाने लगा तब तुरत उसे गोरोंने गोली मारी और वह बेतरह घायल हो गया। गाँवसे बिदा होते समय मि० एटकिन्सने राधाबाबूको छोड़ दिया पर मुश्किलसे ललमलाते हुए वे कुछ ही डेग बढ़े होंगे कि उसने इशारा किया और तुरत एक गोरेने गोली दागी और वे और घायल हो गये।

लोग श्रीराधाप्रसाद सिंह और रामजीवन झाको अस्पताल ले चले परन्तु राधाबाबू तो राहमें ही स्वर्गके राही बने और रामजीवन झाने दम तोड़ा बेगूसराय अस्पताल में।

इस आग और अत्याचारका आतंक अरसे तक कायम रहा।

गोरोंकी पैशाचिकताकी नई-नई खबरें जब तारापुर पहुँचने लगीं तब कार्यकर्त्ताओंने सोचा कि एक जगह अपनी सारी शक्ति समेटकर रहना अच्छा नहीं। इनने थाने भरमें तीन कैम्प खोले—पचभूरमें, तारापुरमें और ढोल पहाड़ीमें। कुछ दिनोंके बाद जब प० सुरेश्वर पाठक जिलेके डिक्टेटर नियुक्त हुये तब ढोल पहाड़ी कैम्प जिला ऑफिस हो गया।

२८ अगस्तको मिलिटरी तारापुर पहुंची और जिसे गाधी टोपी पहने वा खादी धारण किये वा झोला लटकाये देखा उसे खूब मारा। तारापुर कांग्रेस ऑफिसपर कब्जा करके उसकी सारी चीजें उसने जब्त कर लीं। नौगाई आश्रमको नष्ट किया और संग्रामपुरके कार्यकर्त्ताओंको अच्छी तरह पीटपाटकर गिरफ्तार कर लिया। थाने भरमें मिलिटरीकी पेट्रोलिङ्ग जारी हो गई। सेवादल और पंचायतको गैर कानूनी माना गया और इनसे सम्बन्ध रखनेवाले सताये जाने लगे फिर थानेकी जनता आतंकित हो गई। तारापुरसे कैम्प उठकर भगलपुरा चला गया और वहींसे थाने भरकी स्वराजी डाककी व्यवस्था होती रही।

१ ली अक्तूबरको मिलिटरी ३५ लॉरियोंमें भरकर आई। गुलनी, कुसहा, सहोड़ा और संग्रामपुरको घेरकर उसने घर-घरकी तलाशी ली पर कार्यकर्त्ता बालबाल बच गये। अपनी मिलिटरी और पुलिस दोनोंने खूब अत्याचार किया। देगावमें श्री हितलाल राजहंसजी बेतरह पीटे गये; गुलनी कुसहामें एक आदमी गोलीका शिकार बनाया गया और गनेशमें श्रीजयमंगल शास्त्रीके घरका कुछ सामान लूटा गया, बाकी जलाकर लिया गया और इनके घरके सभी काफी पीटे गये और एक नौकर तो गोलीसे घायलकर दिया गया। माघोडीहके यमुना पासमानके घरके गचको फोड़फोड़कर उसकी सारी चीजें लूटी गई। नौगाईमें श्रीचतुर्भुज सिंह भ्रमरके नौकर और मजदूरोंको पीटा और इनकी चीजें भी लूट लीं। फिर संग्रामपुरमें काशीप्रसाद सिंहके और हलवाचकमें श्रीगुरुजी नाथ रायके घरोंको बुरी तरहसे लूटा।

असरगंजमें मिलिटरी पहुंची रातको। स्वयंसेवक विश्वनाथ सिंहने समझा डाकू आये हैं और तुरत उनने एक फौजीपर भालेका वार किया। फलस्वरूप वे गोलीसे मार डाले गये। फिर पर्सोरामजी घर लूटा गया। इतना सब कर धराकर ४८ घंटेके भीतर मिलिटरी वापस चली गई।

इसके बाद घुड़सवारोंका हमला आरम्भ हुआ और धरपकड़ शुरु हो गई।

फिर उधरका दृश्य ही दूसरा हो गया, कार्यकर्त्ता छिप गये और नये ढंगसे अपने बचावका उपाय सोचने लगे।

बड़हिया

बड़हियामें टॉमी आये १६ अगस्तको। उनने आते ही देखा, स्टेशनके फाटकसे एक आदमी निकला जा रहा है। तुरत उनने गोली चलाई और उसको मार डाला। नाम था गुलमी महतो, इङ्गलिशका बासिन्दा। उसकी रन्थीका जलूस निकाला गया जिसपर लाठी चार्ज हुआ। १८ अगस्तको वहाके प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हुये और क्रान्ति धीमी पड़ गई। पर बड़हियाको अपने एक और सपूतकी भेंट चढ़ानी पड़ी। २८ सितम्बरकी घटना है। बड़हिया होकर टॉमियोंकी लारी जा रही थी। इन्दुपुरके श्रीबनारसी सिंह जो भागलपुर कालिजके विद्यार्थी थे पीछे हाथ करके किसी दूकानकी सीढ़ीपर खड़े थे। उस तरह उनका खड़ा रहना शायद गोरोंको अखरा, तुरत उनने गोली चलाई और बनारसी बाबूको घायलकर दिया। बनारसी बाबू अस्पताल भेजे गये जहां दूसरे रोज वे शहीद हो गये।

भागलपुर

भागलपुर शहर १० अगस्ततक शांत हो गया पर नाथनगरमें क्रांतिकी आग धीमी नहीं पड़ी। कर्फ्यू आर्डर जारी था और उसको तोड़नेकी तैयारी भी हो रही थी। एक रातको जबकि मिलिटरी सड़कोंपर गश्त लगा रही थी नवजवानोंकी एक टोली कर्फ्यू आर्डरको तोड़ कर निकली। टोली कुछ ही दूर बढ़ सकी कि मिलिटरीका सामना हुआ। गोली दागी गयी और दो शहीद नाथनगरकी सड़कपर गिर पड़े। एक थे चम्पानगरके चुल्हाई मियां और दूसरे नाथनगर ग्राम नूरपुरके रामेश्वर साहु। इस गोलीकांडके परिणाम स्वरूप नाथनगरमें भी आन्दोलन गुप्तरूपसे चलने लगा।

पीरपैंती

पीरपैंतीमें ११ से १८ अगस्ततक जोर शोरसे कांग्रेसका प्रचार चलता रहा। कहींसे किसीने न विरोध किया न किसी प्रकारकी गड़बड़ी ही हुई। १६ अगस्तको हाटका दिन था। कार्यकर्त्ताओंने सभा करनेका आयोजन किया था। पर इसकी खबर किसीने गोरोंको दे दी। गोरे धड़धड़ाते हुये ऐन वक्तपर पीरपैंती पहुँचे। एक ओर हाटमें लोगोंकी भीड़ लगी हुई थी और दूसरी ओरसे क्रांतिका नारा लगाते हुये स्वयंसेवकोंका जलूस आ रहा था। टॉमियोंने आंखसे सामनेकी भीड़ देखी और कानसे क्रांतिकारी नारे सुने। समझा, सामनेके सभी क्रांतिकारी ही हैं बस उन्हींपर अन्धाधुन्ध गोली बरसाने लगे। कितने मारे गये, कहना

कठिन है। पीरपैंतीके कार्यकर्त्ताओंके कथनानुसार मृतकोंकी संख्या कमसे कम ६३ है, जिसमें २४ के नाम मिले हैं—कालीप्रसादके तीन, चीकू धोबी, महादेव परिहार और कुचाली दास; मथुरापुरके दो नरसिंह गोप और रामदयाल गोप, फिर महावीर साह, हरचन्दपुर, हुसगनी मियां श्यामपुर और जोगियानलावके दो; देला कोइरी और गंगा कोइरी, मिरजानगरके दो सखीचन्द कोइरी और [illegible] कोइरी; फिर लक्षु दुसाध मालटोला, जगत गहरवार निमानपुर, [illegible] लहरजगी, जगदनु पण्डित प्यालापुर, गु[illegible]ती मियां सिपरगारी, मुलगो हरिजन लक्ष्मीपुर, श्रीरामदयाल गोप श्रीमतपुर, बाबूलाल भगत रोशनपुर, [illegible] मिस्त्री गोपालकी चक, रमरतिया ग्वालिन अम्मापाली, मगरू मियाकी स्त्री अम्मापाली, साधु कुम्हारकी स्त्री, इटहरी जुल्म मियाकी स्त्री नौघाटोली। एक संथाल परगनेका भी मरा है जिसका परिचय वहाँवाले प्रगट करते डरते हैं।

सुलतानगंज गोलीकांडके बाद दो-तीन दिन पुलिस चुप रही। फिर उसने अपनी करामात दिखाना शुरू किया। धड़ल्लेसे तलाशियाँ होने लगीं। ठाकुर सुलतानगंज प्रसाद मण्डल और सीताप्रसाद सिंहके परिवारवालोंको गोरोंने बुरी तरह पीटा। सबके सब घायल हो गये। उनके सामान भी जब्त कर लिये गये। सभी प्रधान कार्यकर्ता फरार हो गये और कुछ छिपकर अंग्रेजी सरकारको उखाड़ फेंकनेकी साजिश करने लगे। पुलिस इनको पकड़नेके लिये जबर्दस्त मिहनत करने लगी। श्रीसियाराम सिंहको पकड़नेके लिये ५०० से १००० तक इनाम देनेकी घोषणाकी गयी। ठाकुर मण्डलपर भी २०० रु० इनामकी घोषणा हुई परन्तु जनता न प्रलोभनमें पड़ी और न गोरोंकी लूटसे लाल संगीनोंके आगे माथा टेका। सभी अत्याचार सहते हुये उसने सियाराम बाबू और उनके साथियोंको छिपा रखा और उनके काममें मददगार बनी।

थानेपर कब्जा हो जानेके कई दिन बाद टॉमियोंकी एक टोली कहलगाँव टाउन पहुँची। इसने श्रीआदित्यप्रसाद गुप्त तारिणीप्रसाद चौधरी और दीपू कालगांव साहको खूब पीटा। इसने जहाँ जहाँ तिरंगा झंडा फहराता देखा वहाँ वहाँसे उसको उतार फाड़ा। फिर यह टोली बारर पहुँची और जगदीश सिंहको घायल किया। इस तरहकी ज्यादतियाँ कई गाँवोंमें हुईं।

रेलवे लाइन खराब हो जानेकी वजहसे हिन्दुस्तानी फौजकी एक स्पेशल ट्रेन नौगछियामें अटकी हुई थी। वही पिरपुर पहुँची। सभी सरकारी इमारतोंको जला

बिहपुर टूटा! देख उस फौजकी प्रतिशोधकी भावना जाग उठी। उसने स्वराज्य आश्रमपर धावा किया। आश्रमके कुछ सामान जला दिये गये और कुछ जब्तकर लिये गये। श्रीतुलेश्वरी शर्माने विरोध किया। इसलिये वे पीटे गये और गिरफ्तारकर लिये गये। श्रीचुल्हाई सिंह उर्फ धनराज शर्मा भी गिरफ्तार कर लिये गये। उन्हें खूब मारा पीटा गया। सिगरेटसे उसका तमाम बदन दाग दिया गया। कई दिनके बाद वे जेल भेज दिये गये। हाँ तुलेश्वरी शर्मा तो पकड़ानेके कुछ घंटेके बाद ही छोड़ दिये गये थे।

फौजके आजानेसे पुलिसकी जानमें जान आई। जमादार कहीं छिपा था; दारोगा कहीं छिपे थे। सबके सब फौजके शरणागत हुए और इलाके भरकी जनताको पीस डालनेकी योजना बनाई गई।

पुलिसको साथ ले फौजी गाँवमें घुसे। लोग लूटका माल छिपाने लगे, फेंकने लगे और गंगा मैयाको भेंट चढ़ाने लगे। ऐसे लोगोंको फौजियोंने खूब तंग किया। फिर रेलवे लाइन बैठानेके लिये कुन्दोंको जोरसे धनिकोंको ठीक किया। क्या जमींदार, क्या व्यापारी, क्या देशवाली क्या मारवाड़ी सभी रेलवे लाइनपर मजदूरकी तरह खटने लगे। पीछे मजदूर जुटानेका वचन देकर बहुतोंने छुटकारा पाया।

जब लोग लाइन बैठाते-बैठाते विहपुर आश्रमके सामने आये तो फिर एकबार उस फौजके गोरे अफसरने आश्रमपर हमला करनेका हुक्म दिया। आश्रमके फर्नीचर, कागजात और पुस्तकालय सभी जला दिये गये और मकानको भी नुकसान पहुँचाया गया। कांग्रेस आफिस उठाकर भ्रमरपुर चला गया था। वहाँ भी फौजियोंने धड़पकड़ शुरू कर दी।

इधर गाँववालोंसे जबर्दस्ती रेलवे लाइनपर बैठाया जा रहा था। कार्यकर्त्ता भी चुप न थे। वे हर तरहसे फौजियोंके काममें अड़ंगा लगानेकी कोशिशमें थे। विहपुरके पास है झंडापुर। वहाँ श्री जगदम्बी चौधरी रहते हैं—एक पुराने कांग्रेस कार्यकर्त्ता; आप माला पहने हमेशा हरे राम! हरे राम! रटते रहते हैं। आप कुछ साथियोंके साथ विहपुर आश्रमको देखने जा रहे थे कि फौजियोंका सामना हुआ। साथी तो हट गये पर आप डट गये और हरे राम! हरे राम! की रट लगाते रहे। फौजियोंने आपको पकड़ लिया, साथ ले गये और रेलकी पटरी बिछानेके लिये कहा। आप बोले—हरे राम! हरे राम! जहाँसे पटरी

हटा दी गई वहां कैसे बिछायी जा सकती है? फौजियोंने समझाया, धमकाया पर आप अपनी टेकपर ही रहे, फिर मारपीटकर जेल भेज दिये गये। लहांपुरके अमर शहीद श्रीसत्यदेव रायसे भी जो थाना युद्ध समितिके संचालक थे मजदूरोंको लेकर स्टेशन पहुँचनेके लिये कहा गया। उनने सुनी अनसुनी कर दी। फिर फौजका कर्नल सदलबल उनके दरवाजे पहुंचा, विविध उत्पात करनेपर उतारू हुआ पर सत्यदेव रायजी अपनी आनपर अड़े रहे, फिर गिरफ्तार हुये और जेल भेज दिये गये।

७ सितम्बरको फौजी सदलबल पहुँचे अमरपुर श्रीअर्जुन सिंह बी० एल० को गिरफ्तार करने। श्रीअर्जुन सिंह नहीं मिले। तब सब झंडा-चौक पहुंचे और झंडा गिराने लगे। कार्यकर्त्ता इसे बर्दाश्त नहीं कर सके और काफी लोगोंको लेकर विरोध करने आये। फौजी सतर्क हो गये और उनने भीड़को आगे बढ़नेसे मना किया। पर भीड़ आगे बढ़ी ही और श्रीनवल किशोर मिश्र भोंपूसे बोल बोलकर लोगोंको झंडेकी रक्षा करनेके लिये उत्साहित करने लगे। फिर तुरत गोली चली, एक चमार घायल हुआ, श्री नवलकिशोरको गोली लगी और उनके साथी श्रीसदानन्द मिश्रको भी। लोग इधर उधर भागे और फौज भी तत्काल गाव छोड़कर चली गई। सर्वश्री नवलकिशोर मिश्र और सदानन्द मिश्र अस्पताल पहुँचाये गये जहा नवलजी तीसरे दिन ही शहीद बन गये और सदानन्दजी दो महीने बाद।

बादको फौज और पुलिस फरारोंकी खोजमें तेजघरी पहुंची, कुछ गाववाले भागे, कुछ इधर उधरसे नारा लगाने लगे और बाकी घरोंमें छिप गये। फौज सदलबल तेजघरीमें गश्त करने लगी। उसने देखा, एक आदमी खिड़कीसे घूर रहा है। उसपर उसने गोली चलाई और फिर गावसे रवाना हो गई। देखा गया, जिन्हें गोली लगी, वे हैं गोगरी थानाके बरारी ग्राम निवासी श्री जगरूप चौधरी। बेचारे पहुनाई करने आये थे और मारे गये।

महवामें घोर अमानुषिकता दिखलाई गई। पुलिस और फौजको लेकर एक गोरा अफसर बाबू बसन्तरायके घर पहुंचा। उनके घरकी तलाशी हुई, बक्से, आलमारियां तोड़ डाली गयीं और कितनी चीजें लूट ली गयीं। फिर बसन्तरायजीसे कहा गया कि जिन बन्दूक और पिस्तौलोंको तुमने छिपा रखा है उन्हें दे दो। बसन्तरायजीने कहा—मुझे उनकी कोई खबर नहीं। उसपर उनके हाथ बन्दकर

बांध दिये गये और उन्हें हण्टरसे पीटा जाने लगा। उनकी पीठ फूट गयी और वे बेहोश हो गये। फिर वे गोरेके हुक्मसे होशमें लाये गये जो उन्हें पासके 'भुसखार' में ले गया। वहां उनके गलेमें फांसीकी रस्सी लगा दी गई और राम! राम! बोलनेके लिये कह दिया गया। वे अपने इष्टदेव 'नृसिह हो! नृसिह हो!' की गोहार करने और बोले—"हुजूर, मै बेकसूर फांसीपर चढ़ाया जा रहा हूँ।" वे अपनी बात पूरी भी न कर पाये थे कि गोरा अपने हाथोसे उनके गलेकी रस्सीको धीरे धीरे खींचने लगा; बोला—तू नाहक अपनी जान दे रहा है। बन्दूक बता दे। पर बन्दूक कहांसे लाते? लाचार थे। फिर उनका गला, घुटने लगा शरीर अधरमें झूलने लगा और चेतना जाती रही। तुरत उस गोरेने चौकीदारोंको पुकारा और उनके शरीरको संभालनेके लिये कहा। लौकी हजरा और गेना हजरा—दो चौकीदार हवा पानीका उपचार करने लगे। फिर होश हुआ और वे थाना पहुँचा दिये गये। थानावालोने २००) रु० घूस लेकर वसन्तरायजीको छोड़ दिया। तत्काल उनके रिश्तेदारोने उनका इलाज करवाया और वे चंगे हो गये। पर वे ६० सालके थे, उस धक्केको उनका शरीर सह न सका और वे बादको चल बसे।

अब बिहपुर थानेके गांव गांवमें दमनचक्र चलने लगा। फौजकी चहलकदमी होने लगी और दुअन्निया-चवन्निया भेदियोंकी मण्डली ताकझांक करने लगी। कार्यकर्त्ताओने भी तौर तरीका बदला।

बेलहर थानेमें दारोगाके आ जानेसे कलाली चालू हो गयी। बनैलीराजकी कचहरियां भी रियायापर धौस जमाने लगीं। इसलिये १४ नवम्बरको धौरीमें बेलहर थाना तारापुर और बेलहरके कार्यकर्त्ता बैठे, निश्चय किया कि किसान सभाको फिरसे जिन्दा किया जाय और कचहरियां जलायी जायं। फलस्वरूप कलालियां और कचहरियां जलायी जाने लगीं। अमरपुर और तारापुरमें बड़ी सरगर्मी दिखलायी गयी। साहबगंजका कलाल बड़ा ऐंठा करता। कहता कोई हमारी कलाली जलाये तो जाने! २३ नवम्बरको उसकी कलाली जलायी गई और उसके संगी साथियोंपर काफी मार पड़ी। इस धावेमें श्रीशशिप्रसाद सिह भी शामिल थे जो निमोनियासे वहीं पीड़ित हुये और घर जाकर मरे। ता० २५ को खरौदामें बाबू गिरिवरनारायण सिह गिरफ्तार होकर थाना आये। उनकी गिरफ्तारीकी खबर पाकर जनता उत्तेजित हो गई और उनकी रिहाईकी मांग करती हुई थाने दौड़ी आई। पर इसके पहले ही दारोगा गिरिवर बाबूको लेकर भागलपुर

रवाना हो चुके थे। थानेके जमादार साहब इतनी बड़ी भीड़की गति विधि देखकर घबड़ा उठे और बन्दूक दागने लगे।

उस गोलीकाण्डका परिणाम भीषण हुआ। श्रीरघुना सिंह, श्रीआशाप्रसाद सिंह और श्रीगूदर सिंह मारे गये और वेलदौरके हरिमोहन सिंह और गनगामाके श्रीजगदीशप्रसाद सिंह सख्त घायल हुये। पुलिसने शहीदोंकी लाशोंको जनताको न सौंप चौकीदारोंके पहरेमें बसुआ नदीके किनारे डाल दिया ताकि उनका उचित संस्कार न हो सके और गीध, चील, कौवे उनकी लाशोंको नोच नोचकर खायें।

१८ नवम्बरको ढाई तीन सौ गोरोंका कैम्प साहबगंजमें गड़ गया। फार्बेस कैम्प उठ गया, कार्यकर्त्ता घुमन्ता बन गये और भिन्न भिन्न दल नये ढंगसे परिस्थितिका सामना करनेके लिये तैयार होने लगे।

वेलदौर थानेके जाग्रत गांव धौरीमें भी २८ नवम्बरको आई० जी० साहब मिलिटरी लेकर आये। गांववालोंसे बोले—तीन महीने तुम्हारा राज रहा अब हमारा राज लौटा है। फिर उनने दो ढाई सौ गुमठरोंको लेकर श्रीजगदम्बा प्रसाद सिंह, वालेश्वर प्रसाद सिंह और सरयूप्रसाद सिंहकी फसल कटवाकर लुटवा दी और उनके घरोंके सामान जब्त कर लिये क्योंकि ये सभी कार्यकर्त्ता छिप छिपकर काम कर रहे थे और उनको गिरफ्तार करना पुलिसके लिये टेढ़ी खीर हो रही थी।

११ सितम्बरको मिलिटरी आयी और उसने कचहरीको खुलवाया। उस दिनसे सरकारका काम बेरोक टोक चलने लगा। अनेक कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गये। जो बचे उनने गीधा नामक स्थानमें एक सभा बुलायी जिसमें मुरलीगंज और किशुनगंजके कार्यकर्त्ता भी शामिल हुये। वहां निश्चय हुआ कि सत्याग्रह किया जाय और जत्थे भेजे जायं। सत्याग्रह संचालनका भार श्रीकमलेश्वरी मंडलको सौंपा गया।

मधेपुरा

कुछ कार्यकर्त्ताओंने कहा कि ऐसी परिस्थितिमें सत्याग्रह करना आत्मसमर्पण ही है। उनने अपना अलग दल बनाया और स्वतंत्ररूपसे काम करने लगे।

५ अक्तूबरको छः सत्याग्रहियोंका पहला जत्था निकला श्रीभूपेन्द्रनारायण मंडलके नेतृत्वमें। लोग डरे हुये थे। तौभी वकील, मुख्तार और बोहरे [illegible] अच्छी तादाद इकट्ठी हो गई। भूपेन्द्र बाबूने भाषण [illegible] [illegible] हो गये। फिर ८ अक्तूबरको दूसरा जत्था श्रीरंजन मंडलके साथ कचहरी [illegible] गया और गिरफ्तार हुआ। इस तरह महीना भर सात जत्थे निकले। यों तो सभी

सत्याग्रही गालीमारके शिकार होते रहे पर सर्वश्री बहादुर महतो और लालचन मंडल खूब पीटे गये। अनूपलाल पासमान चौकीदारी छोड़कर सत्याग्रही बना था इसलिये उसपर और बेरहमीसे मार पड़ी।

किशुनगंजमें आते ही मिलिटरीने बाजा साहु नामके एक निरपराध व्यक्तिको गोलीसे मार दिया। लोग आतंकित हो गये। फिर दारोगा पारस नाथ मिलिटरी **किशुनगंज** लेकर गांव गांव जाने लगे और लूट मार करने लगे। नयानगरमें श्रीकुलानन्द सिंह लूटे गये। मरामीमें श्रीसत्यदेव सिंह और परमेश्वर झा लूटे गये। पुरैनी बाजार, बजराहा बाजार और फुलौतकी लूट हुई। फिर चोपसा, कलासन, ढोलबजा और झलारीके बाजार लूटे गये। खाड़ामें नन्दलाल रामका और ग्वालपाड़ामें महम्मद यूनुसके घर लूटे गये। फिर तो मैदानमें तरह तरहके लुटेरे आगये और किशुनगंजका समां बदल गया।

११ सितंबरको मिलिटरी बनगांव आई और थाना चालू हुआ। फिर सैफाबाद कैम्प जला दिया गया। बादको बलहामें गणेश झा, महादेव मंडल और नीरो **बनगांव** मंडलके घर जले, कुशेश्वर खांका घर घनी आबादीके बीचमें था; इसलिये उसके सामान बाहर निकालकर जला डाले गये।

१२ सितंबरको ए० एस० पी० पुलिस और मिलिटरी लेकर पचगछिया श्री रामबहादुर सिंहको गिरफ्तार करने आया। सभी हितैषियोने आग्रह किया कि आप टल जाइये पर श्री रामबहादुर सिंहने मिलिटरीके आगेसे भागना वा छिपना सत्याग्रहकी मर्यादाके विरुद्ध समझा और घरकी स्त्रियोंको निरापद स्थानपर पहुंचाकर आपने अपनेको दरवाजेपर आयी हुई मिलिटरीके हाथमें सौंप दिया। आप लिखते हैं—"टॉर्च देनेपर जैसे ही मेरेपर निगाह पड़ी, बरामदेके निकट आकर मुझसे पूछा—'तुम्हारा नाम ?'

मैं—रामबहादुर सिंह।

वह—तुम अन्दरमें था और भाग गया था।

मैं—लुकना, छिपना या भागना मेरा काम नहीं है।

वह—चलो यहां आओ।

मैं बरामदेसे उतरकर उसके सामने जाकर खड़ा हो गया। ××× उसने एक पाठान मिलिटरी मैनको कहा—लगाओ !

पाठान मेरी बाईं ओर खड़ा होकर पूरी ताकतसे मेरी पीठ और कन्धेपर मारने

लगा और सार्जेन्ट टार्चसे मेरे चेहरेको देखने लगा। पहली लाठीके प्रहारसे ही मेरा शरीर सुन्न होगया। मगर मैं विना हिले डुले खड़ा रहा। चेहरेकी स्वाभाविकता कायम रही। शायद तीसरी लाठीके अवसरपर ए० एस० पी०ने पूछा कि तुम लोग कहता है कि पुलिस हमारा भाई है; यही तुम्हारा भाई है? और उसने पाठानकी ओर इशारा किया—और मैं तुम्हारा दुश्मन हूं?

मैं—Not as a nation but as a rular, अर्थात् आप अंगरेजके नाते मेरे दुश्मन नहीं हैं पर एक हाकिमके नाते हैं।

इसपर उसने पाठानको कहा—रुक जाओ। और दारोगासे कहा—He is not a violent man, he seems like Dr Prasad यानी यह मारकाटवाला आदमी नहीं है, डाक्टर प्रसाद जैसा दिखता है। × × × × ×

मेरे दोनों भाई और मुझको एक ही रस्सामें बांध मिलिटरी पचगछिया ले गई। × × स्टेशनपर तीन ट्रॅली तैयार थीं जिसपर सबके सब सहर्पा पहुंचे जहांसे हमलोग सुपौल कचहरीके हवालातमें लाये गये। जो पाठान साथ आया था उससे जब वह हमें हवालातमें बन्द कर रहा था मैंने उस तकलीफ देह बातका जिक्र किया जिसे मुझको पिटवाते हुये ए० एस० पी० ने पाठानकी ओर इशारा करके कहा था। उसने कहा—यह आप क्या कहते हैं? हम लोग अंगरेजोंके बच्चे हैं और इसके इशारेपर सब कुछ करना हमलोगोंका फर्ज है।

मैंने कहा—भाई बस करो; गलती हुई जो मैंने जिक्र किया; मैं और सुनना नहीं चाहता। मैं हिन्दुस्तानी मिलिटरीकी मनोदशापर गौर करके दुःखी होता रहा।"

रामबहादुरजीकी गिरफ्तारीके बाद भी पचगछिया सत्याग्रहका उदाहरण पेश करता रहा। झंडा चौकपर कितने सत्याग्रही मिलिटरी द्वारा पकड़े गये और सबोंपर बेहद मार पड़ी। मार पड़ते देख कोई भागा नहीं बल्कि जो दूर था नजदीक आगया। सर्वश्री लक्ष्मीलाल दास, भुवनेश्वरलाल दासपर बड़ी मार पड़ी और स्वयं सेवकोंके कैप्टेन श्रीजानेश्वर ठाकुर पकड़ लिये गये।

१५ सितम्बरको मिलिटरी बनगांवमें श्रीछेदी झाके घर पहुंची और उनको न पाकर घरको फूंक दिया। २० सितंम्बरको वह सुलिंबाद गयी और श्रीचित्रनारायण शर्माको न पाकर उनके घरको पस्त कर दिया, वस्त्र और जेवरात लूट लिये और अन्नादिको बरबाद कर दिया। फिर वह गढ़िया गई और श्रीरमेश झाकी बूढ़ी दादीको खाट सहित बाहर रख कर उसने झाजीके मकानमें आग लगा दी। इसी

तरह पड़रीमें श्रीमंगनीराम झाका घर जलाया गया। सोनवर्षा स्टेशन केसके मुद्दालह श्रीरामचरित्र सिंह, श्रीतिलकधारी सिंह वगैरहके घर भी जले।

१३ सितम्बरको एकाएक हल्ला हुआ—"मिलिटरी आगई !" "मिलिटरी आगई !" बाजारमें भगदड़ मच गई। क्या कार्यकर्त्ता, क्या जनता—सबोंको

सुपौल

निश्चय था कि बाजार गोलीसे भून दिया जायगा। इसलिये जिधर जिसकी सींग समाई उधर वह भाग छिपा। पर अपनी निश्चित योजनाके अनुसार सत्याग्रही कार्यकर्त्ताओंने अपनी कार्रवाई शुरू की। श्रीशिवनारायण मिश्रने झंडा लिया और सबसे आखरी भेंट करके थानेकी ओर बढ़े। और लोग आफिसकी चीजें हटाने लगे। इसी बीच मिलिटरी वहां पहुंचती दीख पड़ी। भागना मर्यादाके प्रतिकूल था। इसलिये ऑफिसमें जो दो मौजूद थे थानेकी ओर चल पड़े। आगे जाकर उनकी संख्या चार हो गई।

बाजारमें सन्नाटा था। सिर्फ ये चार नारा लगाते हुये मौतके मुंहमें कूदने जा रहे थे। लोग झांक-झांक कर इन आहुतिके सजीव पुतलोंको देख लिया करते थे; पर कोई न चूं बोलनेकी हिम्मत करता था, न बाहर निकलनेकी। विचित्र दृश्य था ! पर पहुंचते पहुँचते जब चारो सकुशल थाना पहुँच गये तब खुद इन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और जब इनकी नजर मुस्कुराते हुये श्रीशिवनारायण मिश्रपर पड़ी तब तो इनके हर्ष और आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा। मालूम हुआ कि मिलिटरी इसी होकर आई और गई। इधर उसका ध्यान ही नहीं गया। संभवत. उसे मालूम नहीं हुआ कि यही थाना है और यहाँ सत्याग्रह हो रहा है।

इन चारोंके पास झंडे नहीं थे। इसलिये जो समय मिला उसमें झंडे बाजारसे लानेके लिये उनने एक साथीको भेजा। पांच मिनट बीते होंगे कि मिलिटरी आती दीख पड़ी और ये सभी सत्याग्रही सड़कपर घूमने लगे, नारा लगाते "इन्कलाब जिन्दाबाद !" "अंगरेजो ! भारत छोड़ दो।" जब मिलिटरी बिलकुल करीब आ गई तब ये बरामदेपर चढ़ गये और इनमेंसे हरेक एक एक कमरेको रोककर खड़ा हो गया। मिलिटरीमें दो गोरे और दो दर्जन हिन्दुस्तानी थे। दोनों गोरे बरामदेपर चढ़ गये। लालबाबाकी गर्दनपर बन्दूकका एक कुन्दा जमाया और जोरका धक्का दिया। औरोंको भी धक्के दिये। इतनेमें ही इन्सपेक्टर आ गया और सबके सब गिरफ्तार करके हाइ स्कूल पहुँचाये गये जहां मिलिटरी ठहरी हुई थी। रातको ये फिर थाना लाये गये और एक तंग कोठरीमें हां

सब बैठ भी नहीं सकते थे, रात भरके लिये बन्द कर दिये गये।

दूसरे दिन दूसरा जत्था तैयार हुआ पर निकलनेके पहले ही मिलिटरीने कांग्रेस आफिसपर धावा किया और जत्थेको गिरफ्तार कर लिया। सभी सत्याग्रही सर्वश्री शत्रुघ्नप्रसाद सिंह, लहटन चौधरी, शिवनारायण मिश्र, रामचन्द्र मिश्र, गंगाप्रसाद सिंह, अच्युतानन्द, रामेश्वर खां, और शिवनन्दन झा थानेमें खड़े किये गये। श्रीलहटन चौधरी लिखते हैं—××× गोरेने जोरसे पूछा—थानेमें ताले किसने लगाये ? इन्सपेक्टरने मेरा नाम बताया। मुझे बुलाकर पूछा गया और मैंने स्वीकार किया। गोरेने चाभीका गुच्छा मेरी ओर फेंकते हुए कहा—"किस तालेकी कौन चाभी है खोजो और तालेको खोल दो।" मेरे वैसा करनेसे इनकार करनेपर वह आग बबूला हो गया और मुझे भीतर ले चलनेका हुक्म दिया। किवाड़ खोल दिया गया। मेरे सभी साथी मेरी हालत देखनेके लिये सामने पर बाहर खड़े कर दिये गये। एक टेबुलपर पेटके बल मुझे इस तरह लेटा दिया गया जिससे कमरका भाग टेबुलपर पड़ा और नीचेका हिस्सा लटकता रहा। फिर चूतड़परका कपड़ा हटाकर मुझको नंगा कर दिया गया और एक गोरा ठेहुनेके बल मेरी गर्दनपर इस प्रकार जोरसे दबाकर बैठ गया कि मेरे ओठ फट गये। अब मुझपर बेंत पड़ने लगी। यह काम दूसरे गोरेका था। बेंत लगातार चूतड़पर एक ही जगह बरस रही थी। बीचमें मैंने 'इन्क़लाब जिन्दाबाद' और 'महात्मा गाधीकी जय' के नारे लगाये। बेंतकी चोट और भी सख्त हो गई और पड़ती ही रही जबतक चमड़े फट नहीं गये और खूनसे कपड़े तरबतर नहीं हो गये ××××। मेरे बाद मेरे हर साथीको इसी तरह सुला सुलाकर पीटा गया। अन्तर इतना ही रहा कि कुछ कम बेंत लगनेकी वजहसे उनके चमड़े फटे नहीं बल्कि सिमेण्टकी तरह कड़े हो गये और खून जम जानेके कारण उन्हें कहीं ज्यादा तकलीफ होने लगी। मेरे साथियोंमेंसे सिर्फ गंगाको मार नहीं लगी। ××× मारके बाद हमारा इलाज नहीं किया गया। हमारे घावमें पीब भर गया और महीनोंके बाद कैम्प जेल भागलपुरमें जाकर आराम हुआ।

सुपौलसे सत्याग्रहियोंके जत्थे भी निकले। ५ वां जत्था निकला १० फरवरीको। उसमें थे श्रीरामफल यादव और गंगा चौधरी। कलाठोके एक मुसलमान ठेकेदारने इन्हें पकड़ा और दारोगाके सामने हाजिर किया। दारोगाने इन्हें

मुसलमान मिलिटरीके हवालेकर दिया। वह इन्हें पीटते हुए सड़कपर इधरसे उधर और उधरसे इधर ले जाने लगी। उनकी दुर्गति देख हिन्दू मिलिटरी बिगड़ खड़ी हुई और उनके लोगोने कलालको पीटना शुरूकर दिया। तनातनी बढ़ी। पीछे मामला शान्त हुआ और सत्याग्रहियोंका पीटा जाना भी रुक गया। सातवें जत्थेके, जो नवम्बरमें निकला श्रीमहेन्द्र पाठक, साजेन्द्र मिश्र और शैलेश्वर खांको भी बेतरह पीटा गया। फिर श्रीहीरालाल मल और श्रीमधुकर कामतकी गिरफ्तारीके बाद जत्थाका जाना रुक गया। इन दोनोंपर भी परसरमा स्टेशनपर काफी मार पड़ी सुपौल बाजारमें एक तरफ सत्याग्रहियोंपर मार पड़ती थी दूसरी तरफ दूकानदार बेतरह सताये जाते थे। मार पीट और घूसका बाजार गर्म था। गांव भी सुरक्षित न थे। पुलिसकी टोलियां वहां आती थीं और घर जलाकर मार पीट करके और नोच खसोट कर काफी माल लेकर लौटती थीं। संपूर्ण सबडिविजनमें घोर हाहाकार मचा हुआ था।

२६ सितम्बरकी रातको पुलिस मिलिटरी लेकर सिमराही बाजार आ धमकी और अत्याचार शुरू हो गया। दूसरे दिन गनपतगंजमें श्रीयुत खूबलाल महतोको पुलिसने गिरफ्तारकर लिया; सिमराही बाजारके खादी भंडारको लूट लिया और प्रतापगंजमें भी मार पीट तथा गिरफ्तारी शुरू हो गई। १ ली अक्तूबरको एस० डी० ओ० और डी० एस० पी० प्रतापगंज थाने आये और ११ बजे रातको हाजतसे खूबलाल महतोको निकाला और खूब पीटा; कानमे ऐसी चोट आयी कि महतोजी अपने एक कानसे आज भी काम नहीं ले सकते हैं।

प्रतापगंज

पुलिसने गनपतगंजमें बंशीधर अग्रवाल और रामचन्द्र अग्रवालके घरके सामान जला दिये और बेरदहमें मूसनलाल दासका घर जला दिया। गौशपुरके फणीन्द्र मिश्रका घर भी जलाया गया। घरके कुछ न कुछ सामान जलानेकी घटना तो पचासो जगह हुई। लूट पाट भी बहुत जगह हुयी। बसानपट्टीमें पुलिस दो दो बार गयी और गांववालोंकी चीजोंको लूटा जलाया और कुछ लोगोके घरमें घुसकर अनाचार भी किया। डहरियाके लोग भी इसी तरह लूटे गये। उनके घरके सामान जलाये गये और पुलिसने कुछ लोगोके घरमें घुसकर अनाचार किया।

४ अक्तूबरको पुलिस मिलिटरी लेकर त्रिवेणीगंज आयी और थानेका

काग्रेसी ताला तोड दिया। इसी दिन बाजारवालोंसे तीन हजार रुपये ऐंठे गये।

त्रिवेणीगंज फिर पुलिस महलवाल टवरगा पहुंची और जिले गल्लके घरको उसने तोड दिया। कुछ सामान जलाये और उन्हें गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। जदिया बाजारमें भी खूब मारपीट की गयी और भर्द लाल मडलको लूट लिया गया। इसी तरह मिलिटरी और पुलिस लूट पाट करती रही। जनता आतंकित हो गयी और घरसे निकलनेमें भी भय खाने लगी।

२५ सितम्बरसे डगमारामें पुलिसका अत्याचार होने लगा। श्रीनीमागर सिंह, चिन्ताहरण राय, और अनिरुद्ध सिंह आदि २० सज्जन गिरफ्तार किये गये और

डगमाराथाना थाने तक पीटते हुए ले जाये गए। कितनोंपर तो इतनी मार पड़ी थी कि वे जमीनपर गिर पडते थे और कुछ देर तक उठनेकी ताकत नहीं मिलती थी। मागनेपर उन्हें पानी तक नहीं दिया जाता था। हारिका प्रसाद घरपर नहीं पाये गए इसलिये उनका घर जला दिया गया। रूपन मियाका भी घर जला दिया गया और कितनोके घर लूटे गये।

भीमनगर थानेमें २३ सितम्बरसे पुलिस राज शुरू हुआ। श्रीमहावीर नोनियाका घर लूट लिया गया। श्रीदेवीलाल और नीलाम्बराचार्यके घर लूटे गये और उनको

भीमनगर गिरफ्तारकर लिया गया। कार्यकर्त्ताओंके परिवारको इतना तंग किया गया कि सबोंको गांव छोड़ नेपाल तराईकी शरण लेनी पडी। श्रीनीलाम्बर राय जेलमें थे और उनके परिवारके पीछे पुलिस पडी हुयी थी। उनका खेत आबाद करने नहीं दिया जाता था। परिणाम स्वरूप उनकी तीन मासकी लड़की दवा दारूके अभावमे मर गयी।

देवघरमें २८ अगस्तको जो बलूची फोर्स आयी उसके उत्पातसे शहरमें खलबली मच गयी। कुछ बलूची जागो तमोलीकी दूकानपर आये और जबरदस्ती शर्बत पीना चाहा। इनकार करनेपर वे जागो तमोलीको थाने ले गये और हवालातमें बन्द कर दिया। फिर उसकी दूकान तोड फोड दी गयी और वहां जो लड़के खड़ेथे उनको पीटकर भगा दिया गया। मैजेस्टिक मार्टके मैनेजर नरेन्द्र कुमारका सर फोड़ दिया गया। बदरीलाल रामदेवकी दूकानसे घसीटकर मार भगाये गये। जयनारायण पडाको बहुत मारा। फिर लूट शुरू हुई। नन्दी प्रसाद तमोलीकी दूकान लूटी गयी। मिठाईकी दूकान लूटी गयी। पन्ना सिंहके आमके बगीचेके आम लूट लिये गये और उनपर बेतरह मार पडी। परमेश्वर पानवालेको

इतना मारा कि उसका एक पैर टूट गया, तिनकौडी रामका हाथ टूट गया और हरिरामके दोनों ठेहुने फूट गये। दो दिन शहरमें हड़ताल रही। बलूचियोंपर मुकदमा दायर किया गया और हरजानाके तौरपर गाजो तमोलीको १००) मिले। ३१ दिसम्बर तक शहरके सभी नेता गिरफ्तार हो गये और कार्यकर्त्ताओंने गांवकी राह ली।

नकटी गांवको मिलिटरीने रातको ही घेरा। लोगोंको खूब पीटा; उनके घरोंको लूटा और काफी सामान बर्बाद कर दिया। अन्न और खानेकी दूसरी दूसरी सामग्रियोंको इस ढंगसे नष्ट भ्रष्टकर दिया कि उस रोज गांवमें किसीके पास पानी पीने तकके लिये बर्तन नहीं बचा। गावमें कुम्हार था पर उसका भी घर बिल्कुल खाली था। इस गांवपर फौजकी बारबार चढ़ाई हुयी और जब जब पुलिस और फौजी आये काफी लूट पाट हुई। दानो सिंह और शीतल सिंहके मवेशी जब्त हुये जो सराबांके खबाड़में सड़ाकर मार डाले गये।

अमरपुरमें पुलिसने विधुभूषण रायजीके घरपर रातको छापा मारा और जिन जिनको गिरफ्तार किया उन्हें खूब पीटा। वह उनके घरकी कुछ चीजें भी उठा ले गयी।

रामूडीहमें फौज दो बजे रातको आयी। कुछ सिपाहियोंने त्रिलोकी माझीके दरवाजेपर धक्का मारा। उसने समझा डकैत हैं और चिल्ला उठा। गांववाले इकट्ठे हो गये। बस, फौजियोंने डंडे मार मार सबोंको एक कतारमें खड़ा किया। फिर एकके कंधेपर दूसरेको बैठाया और पीछेसे डंडे मार मार उसे खूब दौड़ाया। जब दौड़नेवाला लाचार हो गया तब उसको अपनेपर सवार साथीके कंधेपर बैठाया और उसी तरह डडे मार मार दौड़ाया गया। बारी बारी सबकी ऐसी दुर्गति की गयी। फिर उनके सामान लूटकर फौज चलती बनी।

कुछ दिनोंके बाद करीब ३०० फौजी सिपाहियोंने सबैजोरको घेर लिया और घटवाल हरगौरीप्रसाद सिंहकी सलाहसे ३८ आदमियोंको गिरफ्तार किया। वे सभी

सारठ बिना अन्न-पानीके कड़े धूपमें बिठाये गये और उनपर लाठी, डंडे और जूतोंकी मार पड़ी। श्रीसुरेशप्रसाद झा तो इतने पीटे गये कि उनका कपड़ा खराब हो गया पर उन्हें दो दिनो तक कपड़ा बदलने नहीं दिया गया। शामको सबोंको बिना खिलाये पिलाये ही एक तंग कोठरीमें बंदकर दिया गया। रातमें श्रीनर्मदेश्वरप्रसाद सिंह दारोगा सदलबल पहुँचे। एक-एक करके वन्दियोंको

निकाला और खूब पीटा। श्री इन्द्रनारायण सिंह भी पीटे गये और उनकी उंगलीसे एक सोनेकी अंगूठी छीन ली गयी। गांवमें भी फौजियोंने काफी उत्पात किया। श्रीरामबहादुर सिंहकी दूकान लूटी गयी। चेर्नाडीहमें भी काफी लूटपाट और अन्यान्य अत्याचार हुये। कुकराहा, सिकन्दिया, मजरगीना आदि गांवोंमें पुलिसने कई बार लूट मचाई। ये गांव इतने आतंकित हो गये थे कि पुलिसके आनेकी खबर पाते ही भाग खड़े होते थे। एकबारकी भगदड़में एक गर्भिणीको प्रसव हो गया; बच्चा तुरत ही मर गया।

सिरसामें क्षेमराज रायके घरका सारा सामान जब्तकर लिया गया। उनके कितने सामान नष्ट भी कर दिये गये। इस लूटकी भयंकरताको देख जीवन बांधके देवरामांझीको इतनी घबड़ाहट हुई कि आनेवाले अत्याचारके भयसे उसने फांसी लगा ली।

सरावां

१७ अगस्तको खबर मिली कि सारठ होकर पलटन आ रही है। सबोंकी राय हुई कि सभी कार्यकर्त्ता अनिश्चितकालके लिये नौ-दो ग्यारह हो जाय। दूसरे दिन लगभग ३०० पलटन सरावां पहुँची। स्कूलके पास पहुँचते ही दनादन गोलियां चलायी गईं, जिसमें दो गरीब बेकसूर घायल हो गये। घरोंमें घुस घुसकर पलटनवालोंने लोगोंको खूब पीटा। सेठ साहूकारोंके रुपये भी ऐंठे और उन्हें पीटते हुये थाने ले गये। दारोगाने उपस्थित जनताओंसे सातको पहचाना और कहा ये लोग आन्दोलनमें शामिल थे। ये सात देवघर ले जाये गये। रास्तेमें बलूचियोंने संगीन भोंक-भोंक इन्हें बेहद तकलीफें दीं। पश्चात् पुलिस नोचने खसोटनेमें लग गयी। श्री के० डी० म्हावे थानेमें सब तरहका अत्याचार किया। उनका शह पाकर बलूचियोंने भी अत्याचार करनेमें कुछ बाकी न छोड़ा। खरकनाकी घटना है, बलूची गांवमें घुस गये; मुर्गी और पाठेकी फर्माइश करने लगे और नहीं मिलनेपर कोड़े लिया और जमलू मियांके पुत्रोंको मार डाला। गांववाले भी भिड़ गये और बलूचियोंपर आक्रमण किया और उन्हें मार भगाया। इसका बदला लेने गये उस गांवमें मणिबाबू दारोगा। उनने आठ व्यक्तियोंको गिरफ्तार किया और सबोंको खूब पीटा।

आन्दोलनके बाद गोड्डा, दुमका और पकौड इलाकेके दामिन अंचलमें तथा दामिनके बाहरी अंचलमें खास करके बरमसिया और [illegible] तरफ परगनैतों और दारोगाओंने काफी अत्याचार किया। प्राय सभी मुकद्दमोंके घरोंसे पांचसे लेकर सौ

रुपये तक वसूल किये गये। घूसके रुपये परगनैतोंके पेटमें जाता था। गोड्डा दामिनमें सिदरो जोला छोटो, डांगापाड़ा, बड़ा डांगापाड़ा और पकड़ी खूंटामें लोगोंसे काफी रुपये घूस और लूटमें ऐंठ लिये गये। सिदरी जोलामें श्रीसिहाईमाल पहाड़िया तथा श्रीकार्तिकमाल पहाड़ियाके घर लूट लिये गये और साथ-साथ जला भी दिये गये। डोमन, सोनाई, सुखू, छोटा कार्तिक, छोटो सिहाई, फकई, दुर्गा, शिवा और गंगामाल पहाड़ियोंके घरोंकी लूट हो गई। पहाड़पुरके श्रीलुथरू मुर्मूके घरका सारा अन्न और घर गृहस्थीके सारे सामान आठ बैलगाड़ियोंमें लादकर ले लिया गया और महगामाके श्रीदुलारचद टुडुके पशु ले लिये गये। इसी तरहकी लूटपाट प्रायः सफाहोड़ोंके घरकी हुई। जो आन्दोलनमें शरीक हुए उनकी भी लूट हुई और जो नहीं हुए उनकी भी हुई।

गोड्डामें तो गोरोंने गोलियां चलाकर एक साधुको मार ही नहीं डाला बल्कि जानबूझकर उनने धार्मिक भावनाओंको ठेस पहुँचानेकी कोशिश की। हाइ स्कूलके हातेमें उनने एक बछड़ा मारा। जिसका खून उनने स्कूलके कुएंमें डाल दिया। प्रत्येक तुलसीके पौधेपर आठ आनेके दरसे परगनैत तथा सरदार लोग टिकस वसूल करने लगे।

दुमकाके उत्तरमें एक पहाड़ी जगह है—पलासी। वहाके सतालोंने भी तोड़-फोड़में हिस्सा लिया था। वे एक गिरोह बनाकर रह रहे थे और पुलिसको अंगूठा दिखाते हुये अपना काम कर रहे थे। फौजी उनकी टोहमें लगे और पलासीमें भोजन पकाते हुए तथा विश्राम करते हुये देख लिया। फिर उनपर अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलाई गईं। फलस्वरूप शहीद हुए मुडमा टुडु, कुश पहाड़ी; बयमान टुडु, बिसरियाम; मंगलमुर्मू करमाटांड़ और काकोहंसदा, सुन्द्राफल। घायल तो कितने हुये।

२९ सितम्बरसे यहाँ सरकारी थाना चालू हुआ और लोग सताये जाने लगे। दारोगा साहब १५ रिजर्व फोर्सके साथ हाथीपर सवार होकर पीरगंज गये और

आजिमनगर थाना

बिजली हाड़ीके स्त्री बच्चेको निकाल उसके घरको तोड़वा दिया। मानिकनगरमें तालेश्वर-मंडल और बीजू मडलके घरको लूटा। असालगंजमें श्रीमहावीर मालाकारके कितने सामान जब्त हुए और लूटे गये।

८ सितम्बर १९४२ को २०० मिलिटरीके साथ मैजिस्ट्रेट और एस० पी० वगैरह रुपौली थाना आये जहांसे आपलोग दो टुकड़ोंमें बंट गये। एक टुकड़ा

रूपौली थाना टीकापट्टीकी तरफ भेज दिया गया और बाकी सबको लेकर मजिस्ट्रेट साहब वीर नारायणचदके यहाँ भोज खाते हुए भवानीपुर पहुचे। उस टुकडीने टीकापट्टी आश्रम पहुँच कर आश्रमके सभी सामानको लूट लिया। फिर वे गावमें घुमे और मोहन मडल, बेचन मडल, तिलकचद मंडल, अमिचद मडल और धनिकलाल पोद्दारके घरोको लूट लिया। ५ आदमी गिरफ्तार किये गये जो बुरी तरह पीटे गये। फिर वे लोग गढ़ीघाट पहुँचे श्रीमोहित लाल पडितजीके घरको लूटा और बर्बाद कर दिया।

कलक्टर साहबका दल भवानीपुर पहुँचा। जहां उसने श्री बलदेव राम और सुन्दरमलके घरोको लूटा और बहुत सी चीजोंको जला दिया। श्रीबलदेव रामके परिवारवालो खूब मारा पीटा। द्वारिका प्रसादको ऐसी मार लगी कि उनका पैर ही टूट गया। बोका, इमामन आदि जो बलदेव रामके सिपाही थे उनकी देहमें टॉमियोने सगीन भोक दी। शरीरसे तर तर खून बहने लगा। भवानीपुर मिडल स्कूलके सामान जला दिये गये। उसी रोज मलहानीके श्री बच्ची मडलके घरकी लूट हुई और बबुजन बाबूके घरके सामान लूटे और जलाये गये।

१६ सितम्बरको रायबहादुर रघुवश प्र० सिंहके सिपाहियोंको लेकर मिलिटरी कोसकीपुर और सिमरा आयी। २ बजे रातको ऊधो मंडल और जागो मडल वगैरह पकड़े गये और खूब पीटे गये। यहा काफी लूट पाट हुयी। रूपौलीमें श्रीगोरेलाल सिंह, रामदेव भगत, मथुरा भगत, शांति भगत, छांगुर भगत और नेवालाल मेहताके घरोमें एक तिनका भी नहीं रहने दिया गया। चकहरो, पकड़िया और अकबरपुरमें भी बहुत घर लूटे गये। मिलिटरीकी गतिविधिसे प्रोत्साहन पा करके गुंडे भी लूट पाट करने लगे। मैंहदीके अनूपलाल मडल और रसिकलाल मडलकी फसल काट ली गयी। मतेलीके श्री रामनारायण चौधरीकी फसलकी भी यही हालत हुयी। गुडाशाही इतनी बढी कि लोगोकी दौलत और इज्जत खतरेमे पडी रही। मिलिटरी हमेशा गुंडेशाहीको शह देती रही। श्रीसीताराम सिंह, झलारीके रास्तेमें, पकडे गये। जिन्हें रूपौली थाना लाकर फौजदार दुम्बरने इतनी मार मारी कि उनके मुंहसे खून जारी हो गया। फिर भी उनपर मार पडनी तब बन्द हुइ जब कुछ हिंदू मिलिटरीने दारोगा साहबके जुल्मका घोर विरोध किया। थानाकी जनता आतङ्कित हो गयी और बेतरह लूटी खसोटी जाने लगी।

मऊहारामें रामचरित्र सिंहके घरके सामान नष्ट भ्रष्ट कर दिये गये और

रानीगंज थाना

जगत् हजराको अरड़िया जाते वक्त इतना पीटा कि घर लौट कर उसका प्राण छूट गया। नकछेदी साहको भी बुरी तरह पीटा गया जिससे उसकी आँख खराब हो गयी। रानीगंजमें श्री नरेशचन्द्र दत्त और बोढ़न महतोकी दूकान लूट ली गयी। खौजरीमे गरीबादास और बुट्टी यादव लूटे गये।

कदवाथानामें श्रीदुखमोचन मिश्र बड़े सताये गये। पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ८० मिलिटरी लेकर नूनगढ़ा पहुँचे और मिश्रजीको बैलके खूंटेसे बंधवाया। उनके हुक्मसे एक सिपाहीने मिश्रजीके सरपर ऐसी लाठी जमायी कि सर फट गया और खूनकी धारा बह निकली। सुपरिन्टेडेन्टने उनके मेहमानकी धोती छीन ली जिसकी आधी जलायी गयी और आधी मिश्रजीके घावके बांधनेमें काम आयी किसी तरह खूनका बहना रुक गया। फिर गोपाल झाजीके साथ गिरफ्तारकर थाने पहुँचाये गये।

अररियामें मल्दवारके जयश्रीलाल साहके मकानको एस० डी० ओ० ने हाथीसे तोड़वा दिया।

फारबिसगंजमें अन्यान्यके साथ उत्साही वृद्ध बाबू रामखेलावन सिंह और स्व० रामदेनी तिवारी गिरफ्तार हुए और ढोलबज्जा गांवके काफी लोग पुलिसको गालीमार और घुसखोरीके शिकार बने। वहांवालोंने यूनियनबोर्डके कागजात भी फूंक डाले थे जिससे उनपर अधिकारियोंको ज्यादा खीझ थी।

घुरनामें श्रीशिवराज सिंहपर जैसा अत्याचार किया गया उसे अमानुषिक ही कहा जायगा। उनके घरमें घुसकर पुलिसने उनकी स्त्रीको पीटा और काफी चीजे लूट लीं। दूसरे दिन जब वे पकड़े गये वे बेरहमीसे पीटे गये जबकि उन्हें तेज बोखार चढ़ रहा था। पानीमें भींगते हुये वे थाने आये वहां फिर पीटे गये जिससे हमेशाके लिये उनकी तनदुरुस्ती बिगड़ गई! इसी तरहका अत्याचार उस सबडिविजनके कार्यकर्त्ता श्रीरघुनन्दन भगतपर हुआ है। आपपर इतनी गहरी मार पड़ी कि आप कभी तनकर खड़े न हो सके; जब जेलमें रहे खाटपर पड़े रहे और वहांसे निकल इटकी सैनेटोरियममें क्षय रूपी मौतसे लड़ रहे हैं।

मानभूम जिलेके बन्दवान थानेमें पुलिसने काफी जोर जुल्म किया। जितानके श्रीमजहरी महतोके घरके सभी मर्द पकड़ लिये गये; बच्चे और स्त्रियां ही बच गईं। उनके पिता घरके मालिक थे। फिर भी सारे मवेशी और सामान वगैरह जब्त कर लिये गये। सिंहभूम जिलेके जमशेदपुरमें ५ सितम्बरकी एक बजे रातको फौजका

काफी इन्तजाम करके श्रीरमानन्द तिवारीका बैरेक घेर लिया गया। कैद साहबने पाँच सिपाहियोंको ही गिरफ्तार करना चाहा पर तीस आजाद सिपाही गिरफ्तार होनेके लिये निकल आये। तब बैरेकको बन्द कर दिया गया ताकि कोई और बाहर नहीं आ सके। पर खिड़कियोंको तोड़ कर १३ सिपाही और बाहर आ गये जिससे गिरफ्तार होनेवालोंकी संख्या ३३ तक पहुँच गई। सभी हजारीबाग सेन्ट्रल जेलके लिये रवाना कर दिये गये आगे आगे श्रीरमानन्द तिवारी और पीछेसे उनके ३३ साथी। कुछ दूर चलनेपर जबकि तिवारीजी साथियोंकी दृष्टिके ओझल हो रहे थे, साथियोंको शंका हुई कि गोरे तिवारीजीको दूर ले जाकर गोली न मार दें। फिर तो उनने इतना शोर मचाया कि तिवारीजीको ठहराया गया और जब सब जने साथ हो लिये तब आगे बढ़ाया। रांची और हजारीबागको दमनके अत्याचारका अनुभव नहीं हुआ।

बलात्कार

अगस्त क्रान्तिमें बलात्कारकी असंख्य घटनायें हुई हैं। भिखारिणीसे लेकर राजकुमारी तक बलात्कारकी शिकार बनी हैं। पर प्रायः सभी चुप हैं। नहीं समझती कि चुप्पी बलात्कारको बुलाती रहती है। उनके अपने भी इस संबंधमें जबान तक नहीं हिलाते। वे क्या नहीं जानते कि उनकी नीतिने उनकी बहू-बेटीकी इज्जतको कामुकोंके हाथ सौंप रक्खा है?

सब कहेंगे कि समाज हमें मौन रहनेके लिये बाध्य करता है। सो ठीक है। उसने सतीत्वको स्त्री शरीरका धर्म मान लिया है। शरीर चोट खाये तो उसकी सेवा होगी। सुमार्गपर चलते हुये उसे गोली खाने पड़े तो उसकी पूजा होगी। पर स्त्री शरीरपर किसी कामुकने जबरदस्ती की तो लोग मान लेंगे वह सतीत्व सदाके लिये खो बैठी। सभी उसपर कलंक लगायेंगे। उसके मा बापको गालियाँ देंगे। इसीसे कामुकोंको प्रोत्साहन मिलता है ऐसा कि उन्हें डर भय नहीं रह गया है। वे केवल सुयोगकी ताकमें रहते हैं। बस।

पर यदि समाज समझ ले कि सतीत्व मनका धर्म है और जबरदस्ती उसका अपहरण नहीं हो सकता तब वातावरण ही बदल जाय। कामुक स्त्रीको घूर नहीं सके; उसकी ओर बढ़ नहीं सके। बढ़ा कि झगडा फोड़ हुआ। कभी किसी कामुकने आक्रमणकर भी दिया तो स्त्री आहत समझी गयी, हमारी सेवा और सहानुभूतिकी अधिकारिणी बनी जिस तरह और आहत बनते है, और कामुक पकड़ा गया; दण्ड पाया। बलात्कारका अन्त इसी तरह हो सकता है।

आज जिनने बलात्कारकी घटनाओकी खोज की है उनने समाजकी बड़ी सेवा की है। जिन बहनोंने आप बीती सुनाई है उनने बलात्कारपर घातक प्रहार किया है।

पटना, जमुई और हाजीपुरमें जब टॉमी पहुँचे तो 'लालबीबी'के लिये बेहाल दीखे। पटनामे उनने एक गाड़ी घेर ली। हाजीपुर और जमुईमे उनने हिंदुस्तानी पुलिसके आगे 'लालबीबी'की मांग पेश की। उन्हें हाजीपुरमें ही नहीं बहुत जगह पुलिसके जरिये जैसे तैसे लालबीबी मिली। उनका और पुलिसका सहयोग ही रहा। जहॉ-जहॉ गोरोने बलात्कार किया है वहॉ-वहाँ प्रायः पुलिस रही है। हाँ, जहॉ-जहॉ पुलिसने बलात्कार किया है वहॉ-वहॉ प्रायः गोरे नहीं रहे हैं।

पटना जिला, बाढ़ थानाकी घटना है। टामियोंने रैली गॉवको घेर रक्खा था। मोकामा स्टेशन तिजोरी केसके फरारोकी खोज थी। सभी मरदोंको मैदानमे इकट्ठा किया और तब घर-घर घुसने लगे। नवजवान प्रदीप सिह एक ओर जा रहा था। टॉमियोने उसे पुकारा। पर वह बहरा था। क्या जवाब देता? कैसे रुकता? उसे उनने गोली मार दी। फिर तो सभी आतंकित हो गये और गोरोंको कई स्त्रियोंपर बलात्कार करनेका मौका मिला।

सिलाव थानेकी पुलिसने राजगीरमें कई स्त्रियोंपर बलात्कार किया। इस्लामपुर थानेमें तो हाजतमे पड़े हुए एक लड़केके साथ वहॉके कन्सटबिल और उसके एक अफसरने मुँह काला किया।

बख्तियारपुर थानेकी पुलिसने ता० १४ अगस्तको रवाइच गांवको टामियोसे घिरवाया। अन्धेरा ही था। सुबह होनेमें कुछ देर थी। उसने उसी समय थाना रेडमे अभियुक्तोंको पकडनेके बहाने घर घर घुसना शुरू किया और टॉमियो सहित जो काले कारनामें किये उनको लेकर तरह तरहकी अफवाह फैली रही। पर इतना तो निश्चित रूपसे पता लगा कि उनने दो स्त्रियोपर बलात्कार किया।

शाहाबादके नोखा थानामें गोरे, बलूचियोंको लेकर पुलिस आगी। वहाँ एक स्त्रीपर बलात्कार किया। टिहरी थानामें गोरे और पुलिसने मिलकर कई जगह बलात्कार किये। डुमरांव थानाके ढकाइच गांवमें चार स्त्रियोंपर बलात्कार हुआ।

मुजफ्फरपुरके सकरा थानाकी घटना है। सकरा बाजारमें मिलिटरीका एक जत्था ढोली कोठीकी तरफसे आया। सायंकालका समय था। एक युवती पाखाना जाती हुई पकड़ ली गई और मिलिटरीने उसपर बलात्कार किया।

मीनापुर थानाके गज बाजारमें जो थानाके बिलकुल नजदीक है दिनदहाड़े बलूची और गोरे एक पासी और एक महतोके घरमें घुस गये और घरनीपर बलात्कार किया।

बेला थानाकी पुलिसको तो मालूम होता है बलात्कार करनेकी आदत हो गई थी। उसने बेला मछपकौनीके एक कपडेके दूकानदारकी स्त्रीपर दिनदहाड़े बलात्कार किया। और कईके घरोंमें घुसकर उसने बलात्कार किया।

सिरसिया बाजारमें पुलिसने टॉमियोंके साथ मिलकर बलात्कार किया। मनेकौरमें पुलिसने एक गर्भवती स्त्रीपर बलात्कार किया और उसके जेवर छीन लिये।

बेलसंड थानेमें बसतपुर पुलके पूरब तरफ हरिजनोंकी बस्ती है। उस बस्तीमें गोरे घुस गये और अनेक स्त्रियोंपर बलात्कार किया।

पुपरी थानेमें सतेर गाँव है। वहाँ एक चौदह वर्षकी लड़कीपर बलात्कार किया पुलिस और टॉमियोंने।

दरभंगा जिलाके समस्तीपुर सरकारी अस्पतालमें एक बलात्कारकी पीड़िता आई। वह कहती है—'लज्जावश नाम हम नै बताएब। हमरा घरमें चारिगो गोरा सिपाही घुसि गेल। हमरा साथ बेराबेरी जुलुम कैलक, जेमे हम अचेत हो गेली। तब हमरा लोग सब अस्पतालमें ले गेल।'

सिंगिया थाना बलात्कारका भी अड्डा रहा। निगिया बड़ा गाँव है। दो हजार घर हैं। यह समूचा गाँव वहाँकी पुलिसकी कामाग्निमें झोंक दिया गया। एक जानकार वकील लिखते हैं—पुलिस और मिलिटरीका काम होते ही इतना ही काम था कि आसपासकी औरतोंपर बलात्कार करें। वे सब दिन भर आतंक और रोब फैलानेके लिये गाँवमें चक्कर काटते, धड़पकड़ जारी करते, खानातलाशी लेते और घर फुन लेते। फिर रातको मुजरिम गिरफ्तार करनेके बहाने उन घरोंमें घुस जाते।

फिर बन्दूक और संगीनके बलसे बहुबेटियोंपर बलात्कार करते। इनके ऐसे कारनामोंकी बड़ी तादाद है। पर घरवाले अपनी आबरू बचानेके ख्यालसे इसे कबूल नहीं करते हैं। इसकी चर्चाके जवाबमें लम्बी सास लेते है और आंसू बहाते हैं।

सिंगियाने अपनी दर्दनाक आवाज कलक्टर और कमिश्नर तक पहुँचाई और कमिश्नर साहब २२ जनवरी १९४२ को सिंगिया पधारे भी। पर पुलिसने जनताको इतना डराया धमकाया कि उसे कमिश्नरके सामने आनेकी हिम्मत नहीं हुई। २२ फरवरी '४३ को यानी ठीक एक महीना बाद उसने अपनी फरियाद लाट साहबको सुनाई। कहा—घरमें घुसकर ऐसा जघन्य अपराध किया गया है जिसकी चर्चा, गरीब होनेपर भी हम इतनी मर्य्यादा रखते हैं कि कर नहीं सकते। आप सी० आई० डी० का एक उच्च अफसर तहकीकात करनेके लिये भेजिये। फिर आपको यहाँकी मारपीट, व्यभिचार, उत्पीड़न, बदइन्तजामी और घूसखोरीकी जानकारी हो सकेगी।

पर लाट साहब भी कानमें तेल डालकर लेटे रहे और अंगरेजी ताज पहने बेखटक, निष्कण्टक, पापाचार मानवकी माँ बहनको सिंगियामें दिनदहाड़े भी, रास्ते पैरे भी सताता रहा, रुलाता रहा।

मधुबनी सबडिविजनमें कई जगह बलात्कार हुए। लौकही थानेमें वहांकी पुलिसने तो लगातार कई दिनोंतक कई लड़कियोंको गायब रक्खा है।

झंझारपुर थानेसे सटकर जो सड़क जाती है वह पुलिसके दुराचारकी वजहसे सुनसान हो गई। एक समयकी घटना है, तीन जनानी सवारियां जा रही थीं जिनमेंसे पुलिसने औरतोंको उतार लिया, उनके जेवर छीन लिये और उनपर बलात्कार किया। १३ सितम्बरको भराम गांवमें एक स्त्रीपर बलात्कार किया गया। फुलपरास थानाके सिघवार गांवमें ३० अगस्त '४२ को एक सोनारिनपर रातमें बलात्कार किया गया और उसके सोने चाँदीके जेवर छीने गये।

पर बलात्कारका जो रोंगटे खड़ा कर देनेवाला दृश्य टॉमियोंने मुङ्गेरके चौथम थानामें दिखलाया उसे संसारकी नारी मर्यादा भूल न सकेगी। सितम्बरके पहले हफ्तेकी बात है टॉमी बंगलिया और रोहियार पहुँचे। आग और गोलीकी संहार लीलाका जो काण्ड रचा उससे वहांकी जनताका बल टूट गया। फिर गिरोह बाँधकर वे बंगलिया और रोहियारकी स्त्रियोंपर टूट पड़े कामान्ध होकर।

एक टॉमीने बंगालियाकी एक स्त्रीका हाथ पकड़ा पर स्त्रीने ऐसा झटका दिया कि टॉमी लड़खड़ाकर दूर हो गया। पर तुरत दूसरा आया। देवीने उसके मुंहपर अपने दोनों हाथोंका धक्का दिया और वह पीछे लड़खड़ा गया। फिर तो एक और टॉमी पहुँचा और तीनोंने मिलकर उस देवीको नीचे गिराया और तीनोंने उसके साथ मुह काले किये। वहां बलात्कारकी और भी घटनायें हुईं। रोहियारमें आकर तो टॉमियोंकी कामान्धता बढ़ गई। उनने कितनोंपर बलात्कार किया पर सातमें ही हिम्मत हुई कुछ कहनेकी और तीनमें ही ऐसा नैतिक साहस था जो वे बोल सकीं और अपना नाम दे सकीं। टॉमियोंकी भीषण कमान्धताकी पिशाच लीलाने रोहियारकी स्त्रियोंको दुखलक्ष्मी बना दिया। भयावनी रात थी। उमड़ी हुई नदी गांवको चारो ओरसे घेरकर गरज रही थी— खबरदार! कोई हिले डुले नहीं। उस भयंकर परिस्थितिमें गोरोंकी काम-क्रूरतासे बच निकलनेके लिये घरसे बाहर हुई स्त्रियां, अपने बच्चोंको छातीसे चिमटाती हुई। नावपर चढ़ीं और पार जाने लगीं। पर न धाराका सहयोग, न हवामें मेल, और न दिशाका ज्ञान! नाव भवरमें पड़ उलट गई और नौ डूब गईं। डूबी हुईमें नरसिंह पाठककी दो पुत्रवधू थीं और दो लड़कियां, अधीन गोपके दो बच्चे छोटे छोटे और मा और स्त्री और भौजाई।

चौथम थानेका सिपाही टॉमियोंके साथ सोनवर्षा नामक गांवमें आया। वहाँ उसने टॉमियोंसे मिल कर एक गर्भवतीके साथ बलात्कार किया। परिणाम स्वरूप बेचारीका गर्भपात हो गया।

बलिया थानामे बलात्कारकी अनेक घटनायें हुईं जिनकी जवाबदेही है टॉमियों पर और वहांकी पुलिसपर।

१० सितम्बरको गोरोंका एक दल बलिया बाजार आया और उसने उसी दिन एक लहेरीकी लड़कीपर बलात्कार किया।

जनवरी '४३ की घटना है। बालूघर गोरोंका कैम्प था। कुछ गोरे एक निन्दटोलाके घरमें घुसे और एक निन्द लड़कीको उठाकर अपने कैम्पमें ले गये। २४ घण्टेके बाद वे उस लड़कीको फिर निन्दटोलीके पास छोड़ गये जो उस समय बेहोशीकी हालतमें थी।

संथाल परगनेमें बलात्कारने अपनी महान शक्तिका पर्याप्त परिचय दिया है। २८ अगस्तको रोहिणी देवघरमें एक स्त्रीपर कई पशुचियोंने बलात्कार किया,

जिसके फलस्वरूप वह तीन चार दिनके बाद मर गई।

जैसीडीहके पास गंगरी ग्राम है। वहां एक युवती लकड़ी चुनने जा रही थी। बलूची कामान्ध कुत्तोंकी तरह उसपर टूट पड़े। वह बेहोश हो गई। गंगरीके कुछ लोगोने उस राहसे गुजरते हुये सुना सड़ककी एक ओर पड़ी हुई स्त्री पानी! पानी! बोल रही है। और शामको वह मरी हुई पायी गई। यह भी २८ अगस्तकी ही घटना है।

जमुआ मौजाकी दो राह चलती हुई स्त्रियोको बलूची अपने अड्डे पर पकड़ लाये। उनने कन्दवन आश्रमको ही अड्डा बना रक्खा था। वहाँ सबोने उन दोनोंपर बलात्कार किया।

सरावां थानामें मथुरा गांव है। वहां मार्च १९४३ में बलुचियोने एक युवती पर बलात्कार किया। उसने अपमान और लाजका इतना अनुभव किया कि गाँवमे रह नहीं सकी। सदाके लिये मैके भाग गई।

खास देवघरमे जहाँ एक राजा वायु सेवनके लिये रह रहे थे, ता० १९ अगस्तको गोरोकी चपेटमे आ गए। उनकी बहनपर गोरोने बलात्कार किया। खबरको छिपा रखनेकी स्वाभाविक चेष्टाके अतिरिक्त राजा साहब और क्या कर सकते थे?

भागलपुरके बांका सबडिविजनने तो कामान्धताकी पराकाष्ठा देखी है।

१९४३ के अप्रैलमें अमरपुर थानाके कुन्नथ गांवमे बलूची पहुँचे, एक डकैती केसमें एक दो अभियुक्तोकी खोजमे। उनने चार घरोमें घुसकर बलात्कार किया। इनमें एक घर ब्राह्मणका और दूसरा नाईका है। यहासे बलूची असौता गये। वहाँ भी एक घरमे घुसकर बलात्कार किया।

इसी माहमें बेलडीहामें पुलिसका बर्बर धावा हुआ। पुलिसके साथ बलूची भी पहुँचे। पुलिसने गाँव भरके पुरुषोको एक जगह इकट्ठा करके अपने हिरासतमें रक्खा और लूटपाट करनेके लिये बलूचियोको गांवमें छोड़ दिया। उस गावमें बलात्कारकी दो घटनाएँ हुईं। घटनाओका जो वर्णन मिला है वह बलात्कारकी पाशविकताको स्पष्ट कर देता है। यह साधारण पाशविकता है जिसका बलात्कारियोंने हर जगह परिचय दिया।

एक देवीने कहा है—"बलूची घरमें घुस आये। कपड़ा लत्ता झपट लिया। नाक्से बुलकी और गलेसे हंसली जबरदस्ती हाथ देकर निकाल लिया। कनफूल

भी खोल लिया। फिर सब चले गए। वे चार थे। दो खड़े रहे और दो जेवर छीन रहे थे। मौका पाकर भाग कर मैं पुरवारी घरमें छिपी ही थी कि एक बलूची आया। मैं चिल्लाने लगी कि उसने मुझको पटक दिया और बदमाशी की। मैं रोती चिल्लाती रही।"

दूसरा बयान सुनिये—"हमर बेटी जेकर उमर १७ बरस छले। मोगलवा सबसे तीन ठो बन्दूक लेने ऐले औरो घुसी गेले। हमर बेटीके साथे जबरदस्ती बदमाशी करे लागले। हमर बेटी कान्ने लागले। हम जबे मना करलिये हमरो बन्दूक लेके मारल के। कुछ दिनके बाद बाकाके हाकिम हमर गांव ऐलै। हमें औरो हमर बेटीने कह लिये कि हमरा बेइज्जत करलक और मारलक। लिखी ते लेलक पर कुछ न करलक।"

बेलडीहामें दूसरे ही दिन दण्डकर वसूल करने आये राजकिशोर बाबू, जिनको दोनों सूचनाएँ दी गई, पर नतीजा कुछ न निकला। गांववालोंने कलक्टरके यहां भी खबर भेजी और कलक्टर साहब, एस० डी० ओ० बाका और राय बहादुर सिंहेश्वरप्रसाद सिंह, रिसीवर बनैली राजको लेकर आये। रायबहादुरने गांव-वालोंके सबधमें उन्हें उलटा सीधा समझा दिया और वे दण्डकर न अदा करनेके लिये गांववालोंको ही डाट डपटकर चले गये। रायबहादुर सिंहेश्वर सिंह उधरके गांववालोंको पीड़ा पहुँचानेमें खास दिलचस्पी लेते रहे हैं और अपने जालिमाना हरकतोंके लिये काफी बदनाम हैं।

कामातुरता क्या कर सकती है क्या नहीं, जाननेके लिये भितिया आइये। कटोरिया थानामें भितिया एक छोटा सा बाजार है। यहां १९४३ के मार्चमें बलूचियोंने अपना पडाव डाला। इनने अप्रैलके प्रथम सप्ताहमें ढकना गांवकी एक गर्भवतीपर बलात्कार किया जिसके फलस्वरूप स्त्रीका गर्भस्राव हो गया। फिर उनने पजरपट्टाकी एक लड़कीपर भी बलात्कार किया।

भितियाका एक १७ वर्षका लड़का लकड़ी लेकर जंगलसे आ रहा था। बलूची टहलने जा रहे थे। साढ़े आठ बजे सुबहका वक्त था। बलूचोंने उसकी धोती छीन ली और उसपर बलात्कार किया। दोपहरको लोहार नदीके किनारे २९ वर्षका एक युवा पाखानेको गया। उसपर भी बलूची टूट पड़े और बलात्कार किया! रामानन्द सिंह दारोगाको दोनों घटनाओंकी सूचना दी गई थी पर दोनों बार उसने कहा—खूब होता है; इन लोगोंके साथ ऐसा ही होना चाहिये। मालूम नहीं जब

उसने सुना कि बलूचियोंने भितियाकी बकरीपर भी बलात्कार किया तब उसके मुँहसे क्या निकला।

पूर्णियाने बलात्कारकी कई घटनाये देखीं। रूपौली थानाके मधुरापुर गांवकी १६ वर्षकी एक नवयुवतीको फौजी अकबरपुर कैम्प घसीट ले गये, चार दिनोंतक रखा और उसपर बलात्कार किया। श्रीराजा ठाकुरसे नारीत्वका ऐसा अपमान न सहा गया और उनने हल्ला किया जिसपर वे बड़ी बेरहमीसे पीटे गये। ब्रह्मज्ञानीमे तो बलूची एक मुसहरके घरमे घुस गये और १८ सालकी नवयुवतीपर बलात्कार किया। मुसहरोंने दारोगाको इसकी खबर भी दी पर उसके कानोंपर जूं तक न रेंगी। मतेलीकी २० सालकी युवती रूपौलीके फौजी कैम्पमे दस दिनों तक रोक रखी गई और बलूचियोंके बलात्कारका शिकार बनती रही।

पूर्णियामे मातृत्वकी मर्यादापर आघात करके मानवताको घिनानेवाले फौजी वा पुलिस ही नहीं थे, बल्कि पुलिसके अफसर भी थे। कोढ़ा थानाकी रिपोर्ट है। मंगहा कैम्पमे सिपाई बैठाकी पत्नी पकड़ ली गई और उसपर पुलिसके सब-इन्सपेक्टर और इन्सपेक्टर साहबने बलात्कार किया।

बलात्कारकी जितनी दुर्घटनाये हुई उनमे कमका ही उल्लेख हो सका है। बलात्कारके प्रयत्न तो अनगिनत हुए। और जहा परिस्थितिका बल मिला स्त्रियोका भागना चिल्लाना और सामना करनेके लिये अड़ जाना उन्हें बचानेमें सफल हो सका है।

आत्म-बलका कौन कहे—कामुकता कटारसे भी डरती है और कटारको तो औसत स्त्रियां भी अपना सकती है। यदि आज गहनेको तरह कटारसे भी वे अपनेको सजा रखतीं तो अनेक कामुकोकी काम-शक्ति उन्हें देखते ही हिरन हो जाती।

मुजफ्फरपुरके पुपरी बाजारकी घटना है। ता० २५ अगस्तको गोरी फौजकी मददसे दारोगाजी लालचन्द मदनगोपालके घरमे घुसे और स्त्रियोंकी इज्जत लेनेपर उतारू हुए। तत्काल निरंजन बाबूकी पत्नी कटार चमकाती हुई आड़े आई; बोली—खबरदार! जो घरमें पैर रक्खा! दारोगा वहांसे नौ दो ग्यारह हो गया।

शाहाबाद डुमरॉव थानाके कोरान सरैया गावमें गोरे श्रीरामशंकर तिवारीके घर घुसना चाहते थे। तिवारीजीने हाथमे भाला सभाला और प्रवेश द्वारपर खड़े हो गए। आंगनमे दनदन गोलियां चल रही थीं पर उनका उधर ध्यान नहीं जाता

था। वे अपने घरकी स्त्रियोंको देखने फिर गोरोंकी ओर देख भाला संभालते। स्त्रियोंकी इज्जतके लिये मरने मारनेको तैयार हो रहे थे। गोरोंने उन्हें देखा और ठिठक गये। पर एकने हिम्मत दिखलाई और भीतर घुसनेके लिये बढ़ा ही था—भाला लगा कचसे। गोरोंने अपने घायल साथीको सहारा दिया और तत्काल गाव छोड चले गए। दूसरे दिन वे फिर लौटे और, और ताकतवर बन कर, पर तिवारीजीका घर खाली था जिसके दालानको ही जला कर उनने नष्ट कर लिया।

दमनकी प्रतिक्रिया

अक्तूबर १९४२ के आते-आते आतंक बिहार व्यापी हो गया। फौज, मजिस्टर, पुलिस और खास अदालतें जो उस मौकेपर कायम की गयीं, आतंकको व्यापकताके कारण बनीं। सरकारने बिहारके गाव-गावमें हैडमैन चुने; भेदिये बहाल किये जो कांग्रेसके हमदर्दोंसे भी पकड़ने और परेशान करने लगे। चौकीदार और दफादार तक दारोगा बन बैठे। जनता दब गयी, क्रान्तिके मैदानसे हट गयी। पर कार्यकर्त्ता डटे रहे। हां! उनके डटनेका तौर तरीका बदल गया। पहले उनका काम खुलेआम होता था, अब गुप्तरूपसे होने लगा।

लगभग २५ हजार कार्यकर्त्ता संगी-साथी सहित जेलकी हवा खा रहे थे। हाजतियोंकी तादाद अलग। फिर जो जेलके बाहर रह गये थे उनकी संख्या कम न थी। दमनने उनको दो गरोहोंमें बॉट रखा था। एक गरोह था फरारोंका, दूसरा गुप्त आन्दोलन कारियोंका।

फरारोंमें अधिकांश आतंक पीड़ित थे। दमन-चक्र उन्हें खदेड़ता फिरता था और उनके क्षेत्रोंकी आतंक पीड़ित जनता भी उन्हें आश्रय देनेको तैयार न होती थी। इसलिये जहां उन्हें आश्रय मिला वे भागे। कोई अपने जिला या प्रान्तमें ही जहां तहां छिप रहा, कोई पश्चिमकी राह गया, कोई पूरबकी राह बढ़ा और कितने नेपालके शरणार्थी हुए। उद्देश था 'कानून' से बचना। दमनके एजेन्टोंने

अफवाह उड़ायी थी कि अमुक अमुकके नामसे शूटिङ्ग वारण्ट है। अमुक अमुकको भागना पड़ा क्योंकि गोली खानेसे बचना तो चाहिये ही था। फिर जितने भागे सभी बतलाने लगे कि उनके पीछे भी शूटिङ्ग वारण्ट घूम रही है। इस शूटिङ्ग वारण्टके हौआने सबोंको बड़ा हैरान किया। लेखकको इस सम्बन्धमें एक दिलचस्प कहानी कहनी है। अक्तूबरका ही महीना था। लेखक गुप्त आन्दोलनकारीकी हैसियतसे लहेरियासरायमे डेरा डाले था। आधीरातको किसीने उसका दरवाजा धीरेसे थपथपाया। फौरन दरवाजा खोल दिया गया और जयनगरके प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्रीअयोध्याप्रसाद सिंह दबे पांव आये और बोले कि मुझपर शूटिङ्ग वारण्ट है। लेखकने प्रश्नोंकी झड़ी लगा दी—कब वह वारण्ट कारगर होगा? वह किसी गलीमे ही मरना पसन्द करेंगे वा मैदानमें गोली खायेंगे? मैदानमें ही गोली खाना अच्छा होगा क्योकि सभी देख सकेंगे और उनकी मौतसे सबक लेंगे! अयोध्या बाबू आवाक हो गये। इस आन्दोलनके सिलसिलेमें उनकी और लेखककी पहली मुलाकात थी। पहले भी कभी खास बातचीत नहीं हुई थी; थोड़ी देर चुप रहकर उनने कहा—आप मजाक कर रहे हैं? मैंने यहां बड़े बड़े कांग्रेसी वकीलोंसे राय ली है; पुराने-पुराने कार्यकर्त्ताओंसे बातचीत की है। सबोंने शूटिङ्ग वारण्टकी हकीकत मानी है। मैं बेतरह डरा हुआ हूं। मेरे साथ मजाक न कीजिये।

लेखकने उन्हें समझाया कि वकील वगैरह शान्तिकालके जीव हैं, क्रान्तिकालमें उनके पास जाना भयंकर भूल है; जो गया सो डरा! दूसरे दिन लेखक अयोध्या बाबूसे मिलने गया। वे एक झोपड़ीमें फटी चटाईपर बैठे थे, दिनमें बाहर नहीं निकलते थे; अन्दर ही पेशाब-पाखानातक करते थे। वैसी जगहमे उनकी दशाको देखकर मानना ही पड़ता था कि सचमुच उनपर शूटिङ्ग वारण्ट है। लेखक उनको लेकर झोपड़ेसे निकला, दिनदहाड़े गलीमे, सड़कपर और इधर उधर घूमा फिरा। फिर तो अयोध्या बाबूके पर निकल आये; उनने अपना नाम निर्भय राम रखा और अपने सबडिविजन ही नहीं अपने थानेमें भी घूमघूम के पीड़ितोंका आंसू पोछने लगे और सरकारके अत्याचारकी रिपोर्ट लेने लगे। उनने फरारोंके बीच भी बड़ा काम किया। कई बार नेपाल गये, लेखकको भी ले गये और फरारोंको देश वापस लौटनेके लिये प्रोत्साहित किया और कामयाब भी हुये।

फरारोंमे सबोंको आतंक पीड़ित कहना अनुचित होगा। उनमें कितने ऐसे भी थे जो काम करते करते थक गये थे और विश्रामके ख्यालसे फरार हो गये थे। कितने ऐसे थे जिनको अपनी जानका डर न था और न जिनमें उत्साहकी कमी थी। जनताको आतंकित देखकर उनने टल जाना ही उचित समझा था। सोचा था कि जब घटना-चक्र जनतामे फिर उफान पैदा करेगा तब वे लौटेंगे और प्राणोकी बाजी लगाकर जनताका नेतृत्व करेंगे। श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह लिखते हैं—"सबोंकी धारणा थी कि बरसातके बाद हिन्दुस्तानपर जापानी आक्रमण अवश्य होगा। उस अवसरके लिये बना जाय। ज्योंही जापानी आक्रमण हो कि तोड़फोड़का काम जोरोसे आरम्भ कर दिया जाय। उससे अंग्रेजोंको दो मोर्चोंपर शक्ति लगानी पड़ेगी। ऐसी परिस्थितिमें अंगरेजोंको बाध्य होकर गांधीजीको छोड़ना पड़ेगा और कांग्रेससे सुलह करनी होगी। अंगरेजोंके नहीं झुकनेपर भी हमलोग इन दोनों युयुत्सु राष्ट्रोंके भारत भूमिमें लड़ते रहनेसे अराजकताकी स्थितिमें ऐसा दल संगठित करेंगे जो विजेताका पैर यहाँ जमने न देगा और उसे हमारे नेतासे सन्धि करनी पड़ेगी। करीब करीब सभी कांग्रेसियोंके हृदयमें यही बात थी। उनका नेपाल-प्रवास कायरताके कारण नहीं था। × × × पर लोगोंको टीका टिप्पणी करते पाया है और इन प्रवासियोंको अपने बन्धुओंको विपत्तिकालमें छोड़कर जान बचानेकी कायरतापूर्ण चेष्टाके गुरुतर अपराधके आरोपसे विभूषित होते सुना है।"

विन्ध्येश्वरी बाबूको गलत माननेकी कोई वजह नहीं है। पर फरारोंको लेकर जो गलत-फहमी फैली और उसका जनतापर जो बुरा असर पड़ा उसकी जवाबदेही फरारोंके सर ही है। वे सब भागे बिना किसी योजनाके, बिना अपने सहकारियोंकी सलाह मशविराके और बिना उनको कोई सूचना दिये। फिर जहां वे भागे वहां इस तरह डूबे रहे कि जो थोड़ा बहुत खतरा उठाकर लुके छिपे जनताके बीच कामकर रहे थे उनको लाख कोशिश करनेपर भी पता न लगता था कि कौन फरार कहां है और क्या कर रहा है ? फौज, मजिस्टर, पुलिस और खास अदालतोंको इन फरारोंकी रीति नीतिसे भी आतंक फैलानेमें भारी सहायता मिली।

बिहारके आन्दोलनकारियोंकी नेपालसे बड़ी बड़ी उम्मीदें थीं और ज्यों ज्यों प्रान्तकी हालत बिगड़ती गई त्यों त्यों वहांका आकर्षण बढ़ता गया। कितने मनचले

कहते थे कि वहां बागियोंको फौजी ट्रेनिङ्ग दी जा रही है और नेपाल खुद अंगरेजोंके खिलाफ सर उठानेकी तैयारी कर रहा है; और प्राय: सभी फरारोंका खयाल था, जैसा कि श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंहने सुना "नेपाल सरकार भगेरूको आश्रय देती है और कांग्रेसकर्मीको हर तरहकी सुविधा देती है।" पर वहां जाकर सबोकी आशापर पानी फिर गया।

श्रीरामवरण सिंहका सारा परिवार आन्दोलनमें पड़ा था। इसलिये सभी नेपालमे विश्राम ले रहे थे। उन सबोंको नेपाल सरकारने ही गिरफ्तार किया। श्रीरामवरणजी लिखते हैं—"जलेश्वरके प्रधान श्रीरामशमशेरसे मिला था। उनने कहा था कि इस तरह आप ठहरिये कि ब्रिटिश सी० आई० डी० को आपका पता न मालूम हो सके। उसने पता लगा लिया तब आपको बचाना मुश्किल हो जायगा। हां! मुझको अपना पता देते रहियेगा ताकि मैं आपको कोई नयी परिस्थिति उत्पन्न होनेपर सावधान कर सकूं।" पर जब मैं बिना ब्रिटिश सरकारके आदमियोके शिनाख्तके नेपाल सरकार द्वारा पकड़ लिया गया और श्रीरामशमशेरके सामने लाया गया तब मैने उनके वचनकी याद दिलाई। वे बोले—उस समय आपलोगोंका वारण्ट नहीं आया था; इसलिये आपलोगोको फंसाकर रखना चाहता था; वारण्ट आनेपर गिरफ्तार कर लिया है। उनकी बातचीतसे पता लगा कि शुरूमें जो कुछ सहानुभूति उनने दिखलायी थी वह कांग्रेसकी बढ़ती हुई और ब्रिटिश सरकारकी घटती हुई ताकतको देखकर। १९४२ के अगस्त आन्दोलनमे हिन्दुस्तानमें जैसी परिस्थिति उत्पन्न हुई थी उससे वे घबड़ा गये थे और अपनी हिफाजतके लिये ही काठमांडूसे मिलिटरीके ६१ आदमियोंका एक जत्था मंगा कर जलेश्वरमें रक्खा था। इसे देखकर ही लोगोंने अफवाह फैलायी कि ब्रिटिश सरकारसे मुकाबला करनेकी तैयारी नेपाल सरकार कर रही है। पर बात बिलकुल गलत थी। शुरूमे भी हमलोगोके साथ नेपालके जिन अफसरोंने सहानुभूति दिखलायी आखिरमे उनको बड़ी बुरी सजा भुगतनी पड़ी। कितनोकी नौकरी गई, जुरमाने हुये, जेलकी सजा हुई। नेपाल सरकारकी नीति हमीं लोगोंके साथ नहीं वरन् हमलोगोके साथ सहानुभूति रखनेवालोके साथ भी बड़ी बुरी रही।"

गुप्त आन्दोलनकारी भी 'कानून' की नजरमें तो फरार ही थे पर जनताकी

पहुँचके बाहर नहीं थे। क्षेत्र बदलकर, डेरा बदलकर या नाम बदलकर वे पीड़ित जनताके बीच जाते और कांग्रेसकी खबरें सुनाया करते। वे पीड़ितोंकी धनजनसे मदद भी करते। इन सबोंने अपना संगठन भी बना लिया था। जो थाना तक भी जाग्रत था वहां थाना संगठन भी था पर जिला संगठन तो प्रान्त भरमें था। इन सबके ऊपर प्रान्तीय संगठन था जिसका काम श्रीध्वजाप्रसाद साहु और श्रीनथुनी सिंह संभाल रहे थे।

पर गुप्त आन्दोलनकारियोंमें विचारभेद जोर पकड़ रहा था। उनका एक वर्ग कहता कि अहिंसाको ध्रुवतारा मान आगे बढ़ना चाहिए। जहां जनताकी ओरसे खून हुआ था, जहां जहां उसकी ओरसे लूट हुई थी वहां वहां अधिक आतंक था। इसलिये उस वर्गका कहना था कि कभी कोई ऐसा काम न करना चाहिये, न इस ढंगका प्रचार होना चाहिये जिससे जनताकी हिंसा-वृत्ति जगे या वह लूटकी ओर आकृष्ट हो। सरकारके अत्याचारका सामना भी अहिंसा द्वारा ही करना चाहिये। यदि अहिंसापूर्वक उसका प्रतिकार न किया जा सके तो उसे धीरतापूर्वक सह लेनेके अलावा और कोई उपाय नहीं है। उस वर्गका सशस्त्र क्रान्तिमें विश्वास न था, इसलिये शस्त्रास्त्र संग्रहमें भी दिलचस्पी न थी। हां वह तोड़-फोड़में विश्वास रखता था। इसलिये डिनामाइट जैसी चीजोंकी खोजमें वह रहता और उसके लिये काफी रुपये खर्च करता। पर डिनामाइट जैसी चीजोंका उपयोग वह खुद नहीं करता। उसका उपयोग करता था दूसरा वर्ग। यह दूसरा वर्ग अहिंसामें विश्वास नहीं करता था और दमनके प्रतिक्रिया स्वरूप तो वह चिल्लाने लगा था कि अहिंसासे कुछ नहीं होगा; हमें अब हिंसाको अपनाना चाहिये। उस वर्गके लोग हथियार संग्रहमें लगे रहते थे और मानते थे कि सशस्त्र क्रान्ति करनेका इससे और अच्छा अवसर दुर्लभ है। पर उनकी विचारधारा साफ न थी। इसलिये वे न तो ठोस प्रोग्राम बना पाते थे और न व्यापक संगठन कर पाते थे। फिर व्यापक संगठन और गुप्त जीवन साथ साथ चलता भी तो नहीं है, उनको बस एक ही उमीद थी और सो भी युद्धकी परिस्थितिमें। उनको मालूम था कि जनता दब गई है लेकिन उसके हृदयमें ब्रिटिश सल्तनतके खिलाफ प्रतिहिंसाकी प्रचण्ड आग जल रही है और उनका अनुमान था कि जहां उस सल्तनतकी टांग पूर्वी या पश्चिमी मोर्चेपर ठीकसे लड़खड़ाई वहां जनता फिर एकबार जी जान लड़ाकर उठ खड़ी होगी

और अच्छा नेतृत्व मिला तो सलतनतकी जड़ उखाड़ फेंकेगी। वे कहा करते कि हम वैसे नेतृत्वके विकासमें लगे हैं। पर वे जनताको आकृष्टकर सके अपनी तात्कालिक राजनीतिके कारण। दमनकी उग्रताने जनताको पागल जैसा बना दिया था। वह जैसे हो तैसे अपना त्राण चाहती थी। उस समय जिस कोटिके अहिंसावादी जन-सम्पर्कमें थे वे कोई नई बात नहीं कहते थे और न कोई नया काम करनेकी शक्ति रखते थे। पर इस वर्गके लोग नयी-नयी बातें करते, नया प्रोग्राम देते और जनताके हृदयमें नयी आशाका संचार करनेमें समर्थ होते। 'हथियार जुटने दो!' 'धन मिलने दो!' 'और देखो! हम अत्याचारियोंको कैसे मार भगाते हैं', वे बराबर कह सकते थे क्योंकि पर्याप्त हथियार और धनका जुटा पाना असंभव था। पहले वर्गके लोगोंको ऐसी सुविधा प्राप्त कैसे हो सकती थी? इसलिये आतंकित क्षेत्रोंके अहिंसाकी शक्तिसे अपरिचित वातावरणमें जनता स्वभावतः सशस्त्र क्रान्तिकारियोंकी ओर झुकी और जैसी मदद वह उनको दे सकती थी देने लगी।

यों तो शस्त्रास्त्रकी चर्चा करनेवाले कुछ न कुछ हर जिलेमें थे पर मुङ्गेर और भागलपुरमें इनका संघटन था जो इस तरह जोर पकड़ रहा था कि सरकार घबड़ा रही थी।

मुङ्गेर शहरके पास ही हेमजापुर गांव है जहांके श्रीगोविन्द सिंहने अगस्त '४२ में ही एक दल संगठित किया था। दलका उद्देश्य था अपनी बिरादरीके कुछ "दुश्चरित्र और अत्याचारी लोगोंको" मार डालना। उन लोगोंपर असफल वार भी हुये। फिर उन लोगोंने पुलिसकी मदद चाही। इस तरह पुलिस गोविन्द दलके पीछे पड़ी। अब बिरादरीका झगड़ा गोविन्द दल और सरकारके झगड़ेमें बदल गया। तब क्या था? गोविन्द दलसे पुलिस पीड़ितोंकी सहानुभूति होने लगी। श्रीगोविन्द सिंह अनुभवी डाकू थे बड़े फुर्तीले और बलवान। पुलिससे छीनकर, अमझर कैम्प, जमालपुरको लूट कर और कारीगरोंसे बनवाकर उनने काफी हथियार इकट्ठेकर रखे थे। डाके डाल डालकर धन भी जमा कर लिया था। इसलिये उनका अड्डा राजनीतिक फरारोंके लिये निरापद मालूम होने लगा और कितने फरार उनके शरणागत हुये। एक दो सशस्त्र क्रान्तिकारियोंके गरोहने उससे जब तब रुपये भी लिये। फिर उनके लिये आसान हो गया कि अपनेको क्रान्तिकारी बतलायें।

चौथम थानामें पिपरा गाव है जहाके थे श्रीमहेन्द्र चौधरी। राष्ट्रीय विद्यालय गोगरी और खगडियामें आप लिखे पढ़े, फिर बिहार विद्यापीठ और काशी विद्यापीठ देखा और चर्खासंघमें काम किया। अगस्त-क्रान्तिमें आप कूद पड़े और सितम्बर '४२ मे श्रीछत्रधारी सिंहके द्वारा ध्वंसात्मक विभागके इन्चार्ज बनाये गये। आपने काफी हथियार इकट्ठे किये और महेन्द्र-दलका संगठन किया। शुरू शुरूमें आपको श्रीपार्थ ब्रह्मचारीका सहयोग मिला पर बादको वे आपसे अलग हो गये। फिर भी आपके दलमें काफी लोग थे और बशीर मियां, कारी तांती, बहादुर कमार और कमली तियर तो आपके दाये बाये घूमते थे। चौथम थानेमें राष्ट्रीय सरकार कायम थी और राष्ट्रीय फौज द्वारा सुरक्षित थी जिसकी जवाबदेही आपके सर थी। फौजी बजट मामूली नहीं हुआ करता। इसलिये आपको राष्ट्रीय सरकारके नामपर मागकर, डाका डालकर, यहातक कि रामनगर, तेलिहार और पटुआहा आदि गांवोंके छोटे मोटे किसानोंसे भी जबरदस्ती अन्न वसूलकर काफी धन इकट्ठा करना पडता था। आप अपने दलके साथ हथियार बांधे थाने भरमें सबलोंसे निर्बलोंकी रक्षा करते घूमते थे। एक दम्पत्तिमें लड़ाई हो गई। आपके दलने स्त्रीको अबला जान तबतकके लिये अपनी हिफाजतमें ले लिया जबतक कि पति-पत्नी फिरसे स्नेह पूर्वक साथ रहनेका निश्चय न करें। और उस अबलाकी सभी तरहकी आवश्यकताओंको उस दलके लोग अपने मनसे ही पूरा करते रहे। आपको सभी तरहके कार्यकर्त्ताओंका सहयोग मिला। किसीने उनको सलाह दी, किसीने उनका धन रखा। ऐसे लोगोंमें राष्ट्रीय विद्यालय, जिला कांग्रेस और चर्खासंघके भी पुराने कार्यकर्त्ता शामिल थे। इसलिये आस पासके फरारोंकी जमात श्रीमहेन्द्र चोधरीके इर्द गिर्द इकट्ठी होगई और वे एक बड़े क्रान्तिकारी माने जाने लगे।

मुंगेरमें और भी कई दल संगठित हुये पर पनप न सके। उनसे संबंध रखनेवाले जवान अभी जिन्दे हैं। इसलिये उनकी चर्चा करना ठीक नहीं है। पर दो एक घटनाओंका उल्लेख करना जरूरी है जिससे पता लगे उस समय हथियार इकट्ठा करनेकी धुन कैसी होती थी?

इटहरीके श्रीलक्ष्मी सिंह और कुछ लोगोंने असरफर कैम्प, जमालपुरसे कुछ हथियार उड़ाये। सबोंकी सलाहसे श्रीलक्ष्मीसिंह हथियारके थातीदार बने। कुछ समयके बाद उनसे हथियार मांगे गये। उनने देनेसे इनकार किया। बोले

कि हथियार उड़ाये गये थे विदेशियोंसे लड़नेके लिये; देशवासियोंको उत्पीड़ित करनेके लिये नहीं। १९३० से ही लक्ष्मीसिंहजी कांग्रेसका काम करते थे। उनकी धाक थी। देहदशासे भी काफी दुरुस्त थे। इसलिये पहले कुछ दिन साथी सब चुप रहे। बादको महेशपुरके श्रीकमलेश्वरी सिंहको उनने बीचमें पड़नेके लिये कहा। परन्तु कमलेश्वरी बाबू राजी नहीं हुए। तब एक दिन साथियोंने श्रीलक्ष्मी सिंहसे कहा—चलो! उस दियरामें पार्टी मिटिंग है; बम्बईके नेता आये हैं। लक्ष्मी सिंह दियरा पहुँचे। तुरत उनकी छातीसे पिस्तौल सटा दी गई और हथियार वापस मांगे गये। सिंहजीने बड़ी बेपरवाहीसे अपना पुराना जवाब दुहराया और साथीके हाथसे गोली खाकर शहीद हो गये।

कुछ बम मऊ बाजितपुरके श्रीबलदेवप्रसाद सिंहके हाथ लगे जिनको छिपाकर दो साथियोंके साथ वह कैली सरैया पहुँचे। थक गये थे; इसलिये बम गाड़कर सो गये और साथियोंसे कहा—उखाड़ना मत। साथियोंने सोचा कि उनको सोता छोड़कर हम माल, बम लेकर खुद क्यों न चम्पत हो जायं। खंतीसे उखाड़ने लगे कि बम फूटा और बाराबारी तीनों जानसे हाथ धो बैठे।

मुंगेरसे भागलपुरमें बड़े बड़े दल थे। क्षेत्र बड़ा था और दृष्टिकोण भी। बांका सबडिविजनमें परशुराम-दल था। श्रीपरशुराम सिंह कटोरिया थानामें बसमत्ता गांवके रहनेवाले थे। पहले आन्दोलनसे अलग रहे क्योंकि लड़का बीमार था। पर लड़का मर गया जिससे दुनियासे कुछ विराग हुआ। फिर उनने रेहनके तमस्सुकोंको लोगोंको वापसकर दिया और मजदूरोंको अगाऊ मजदूरीके रूपमें कुछ अन्न बांट दिये। बस उनका नाम आसपासमें फैला और कुछ फरार उनसे मिले जिनके साथ वह रजौन थानेके मकौनी गांव आये जहां सबडिविजन भरके कार्यकर्त्ता इकट्ठे हुये थे। वहां उनको दमनकी उग्रता और फरारोंकी परेशानीका पता लगा। वहांसे लौटकर उनने अपना दल संगठित किया। बसमत्ता जंगल और पहाड़ियोंका इलाका है जहां छिप रहनेके बहुत ठिकाने है। इसलिये परशुराम बाबूके यहां फरार इकट्ठे होने लगे जिनकी सख्या छः सौ तक पहुँच गई थी। उनने फूंकफॉकपर ही शुरू-शुरूमें जोर दिया था। एकबार सितम्बरमें इनके यहाँसे ३० स्वयंसेवक बमनी बगीचाकी कलाली जलानेके लिये संथालपरगनाके मधुवन गॉवमें पहुँचे। शाम हो गई थी। इसलिये सभी लक्ष्मीपुर इस्टेटके 'प्रधान' बरसाती गोपके यहॉ आश्रय लेने गये। उसने

क्रान्तिके दो योद्धा

श्रीश्रीधर शर्मा,
पारू (मुजफ्फरपुर)
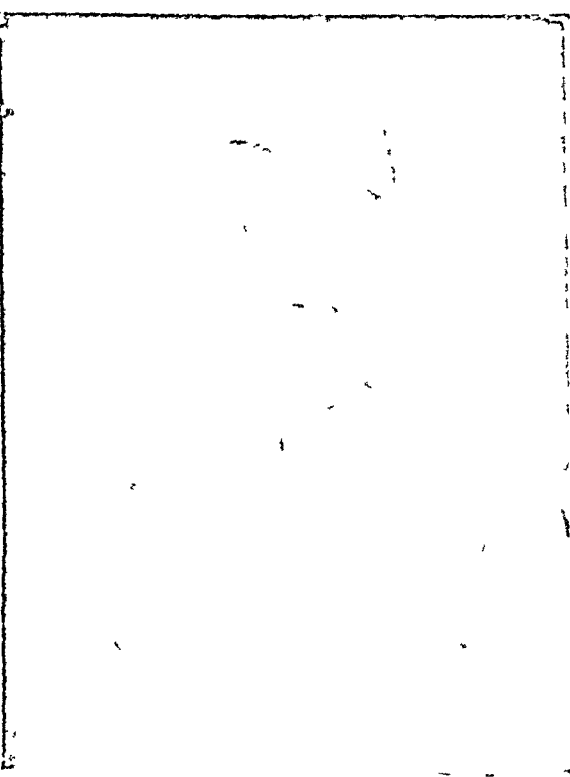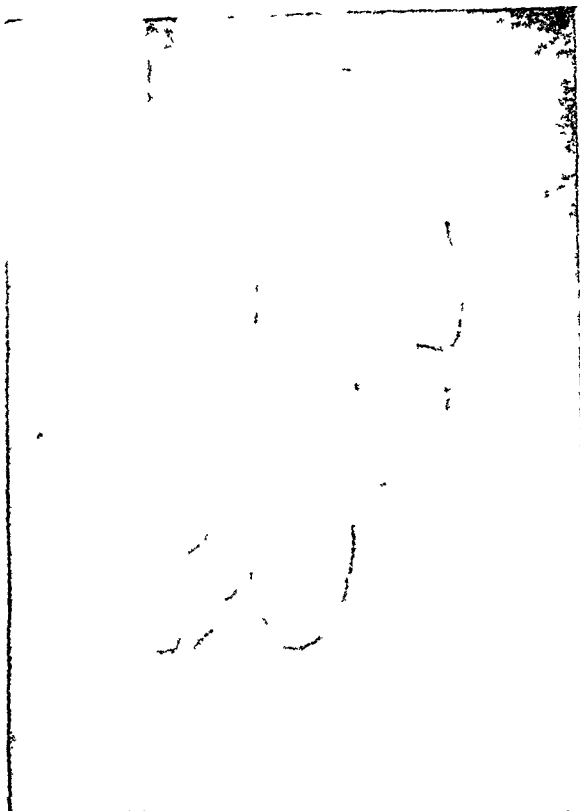
श्रीरामानन्द तिवारी,
शाहाबाद

गुप्त आन्दोलनके दो सेनानी

श्रीसियाराम सिंह,
(भागलपुर)
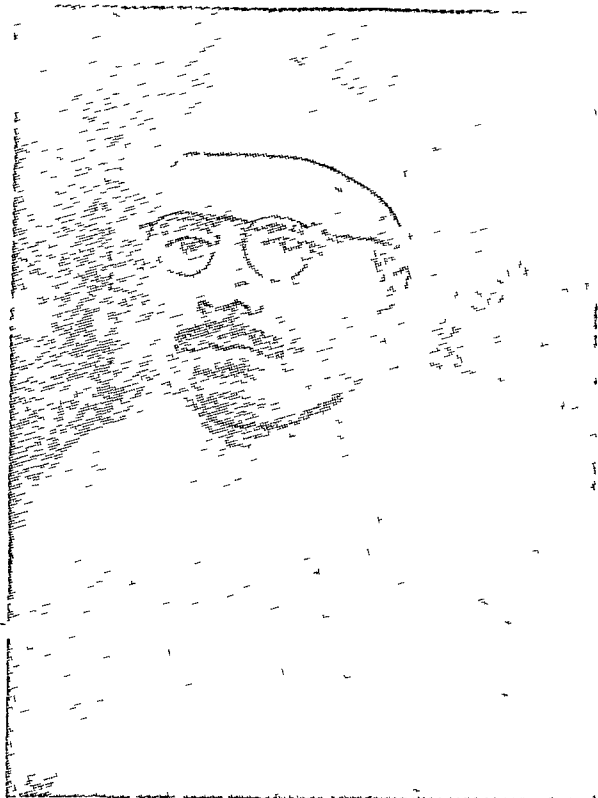
श्रीरामचन्द्र शर्म्मा,
(मुजफ्फरपुर)
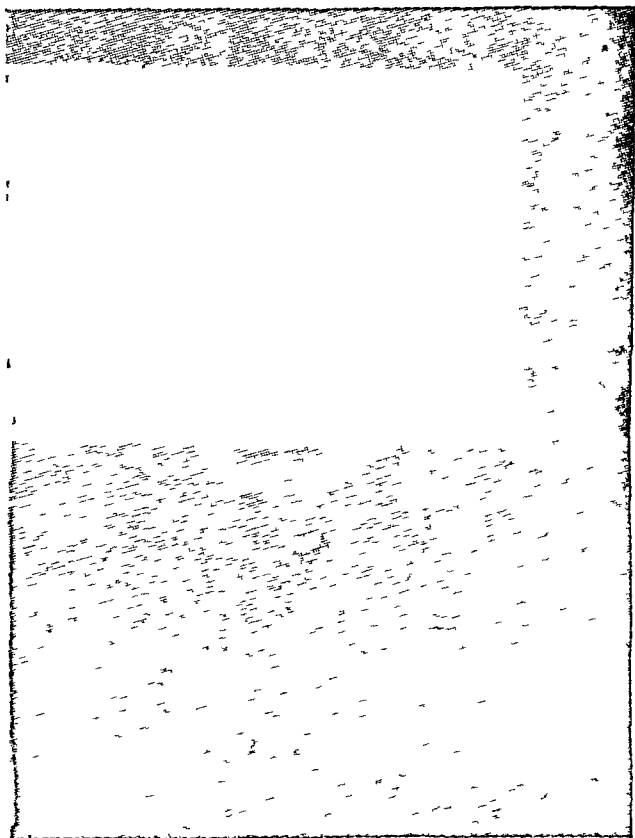
गॉववालोंकी मददसे इन सबोंको तलवार बर्छा और लाठीसे घायल कर दिया। तीन तो बुरी तरह घायल हुये। परशुराम दलको जब उनकी दुर्दशाका ज्ञान हुआ तब उसने बदला लेनेकी ठानी। पर बरसाती गोपने माफी चाही। उसको कहा गया कि तीन महीनेतक घायलोंकी सेवा करो। पर इस्टेटके तहसीलदारने बरसाती गोपको रोक लिया और निडर रहनेके लिए कहा। अन्तमें परशुराम दलने बरसाती गोपके घरका तिनका-तिनका लूटकर उसको जला दिया फिर तहसीलदारका ठिकाना जमदाहा कचहरी लूटी गई और वहाँकी कलाली, फौंड़ी, डाकबंगला सभी जला दिये गये। लक्ष्मीपुर स्टेट दरभंगा-राजकी सम्पत्ति है जिसके मातहत जमदाहा है। इसलिये दरभंगा राजने सरकारकी मदद ली। फौज आई और परशुराम दलकी खोज शुरू हुई। दलवाले अपना बचाव करने लगे और खोजनेवालोंको लूटने लगे उनके घरोंको जलाने लगे और आगे चलकर भेदियोंका खून भी करने लगे। सरकार और जमींदारके अत्याचारोंसे पीडित जनता परशुराम दलका गोहार करने लगी और वे बांदामें जन-शक्तिके प्रतीक बन गये। ठाकुर नरसिंह प्रसाद सिंह, श्री राघवेन्द्रप्रसाद सिंह और श्रीरामजीमोहन सिंह सभी श्रीपरशुराम सिंहके हमदर्द बन गये। इनका दल और बढा और अपने कार्यकर्त्ताओंमें सर्वश्री महेन्द्र गोप, श्रीगोप, जागो साही, लाखो साही और भुवनेश्वर सिंह आदिको गिनने लगा। दलकी जवाबदेही भी बढी। पहले उसका काम था फूंक फांक करना। अब घरके भेदियेसे आन्दोलनकी रक्षा करनेका भार भी उसे उठाना पड़ा। दलवाले निडर थे, मजबूत थे और जोशमें रहते थे। पर विचारधाराके खयालसे बेमेल खिचड़ी थे। फिर भी दुश्मनके लिये वे सब एकसौ पांच होकर बांका सबडिविजनके अत्याचारियोंके आतंकका कारण बन रहे थे।

भागलपुर सदरके विहपुर इलाकेमें सियाराम दल काम कर रहा था। सुलतानगंज गोलीकाण्डके बाद पुलिसको अंगूठा दिखाकर तिलकपुर निवासी श्रीसियाराम सिंह विहपुर आ गये जहां खगड़िया व्यायामशालाके शिक्षक श्रीपार्श्वब्रह्म[illegible]से मिलकर उनने अपना दल संगठित किया। दलके वे प्रधान हुये और श्रीपा[illegible] ब्रह्मचारी प्रधान सेनापति। दोनों पुराने समाज सेवक थे। इसलिये इनके दलमें [illegible]-लिखे और समझदार लोगोंकी अच्छी तादाद जुट गई। व्यापक दृष्टिकोण था, इसलिये दलने अपने क्षेत्रको फैलाना चाहा और श्रीराजेन्द्र झा 'स्वतंत्र' इस उद्देश्यको लेकर भागलपुरके अलावा पूर्णिया और दरभंगाके कार्यकर्त्ताओंसे मिले

भी; उनने प्रान्तके और बाहरके कुछ नेताओंसे भी मुलाकात की और चाहा कि हम सशस्त्र क्रान्तिकारिओंका बड़े पैमानेपर एक अच्छा संगठन करलें। किन्तु कामयाबी मिलनेके पहले ही वह गिरफ्तार हो गये और दलका कर्मक्षेत्र मुख्यतः बिहपुरका इलाका ही रहा।

सियाराम दलके आगे चार काम थे—धन इकट्ठा करना, हथियार इकट्ठा करना, शस्त्रास्त्रकी ट्रेनिङ्ग देना और जनताको संगठित करना ताकि सरकारी अत्याचारका सामना करती हुई वह सियाराम दलका साथ न छोड़े। धनकी चिन्ता सियाराम दलको न थी। बिहपुरका सम्पन्न इलाका जहां खरीक, तेलघीं, ध्रुवगंज, तुलसीपुर और जमुनिया जैसे अमीर गांव। उन गांवोमे सियाराम बाबूका चार चार परिचय—वे डिस्ट्रिक्ट बोर्डके वायस चैयरमैन, जिला कांग्रेसके मंत्री, तेलघींके दामाद और सबसे बड़ी बात—उधरके कार्यकर्त्ताओके लंगोटिया यार। इसलिये मांगा कि धन मिला। और जब जहा न मिला वहां हथियारबन्द जवान पहुँचते और धनकी आवश्यकता जतलाते बस। इसलिये सियाराम दलको कभी धनके लिये डकैती करनेकी जरूरत न पड़ी। हां! हथियारकी जरूरत ऐसी थी जिसके लिये और दलवालोंकी तरह सियाराम दलको भी परेशान होना पड़ता था। फिर भी चुराकर, लूटकर, खरीदकर और बनवाकर उसने काफी हथियार संग्रह कर रखे थे। पर सरकारके मुकाबलेमें उसके पास जो हथियार थे, न के बरबार थे। उनने चाहा कि जितने हथियार इधर उधर बिखड़े पड़े हैं और जिनका दुरुपयोग भी हो रहा है, सबोंको इकट्ठे रखा जाये और एक निश्चित योजनाके अनुसार उनका उपयोग होवे। पर उस जमानेमें जब कि हथियार शक्ति तथा क्रान्तिका प्रतीक माना जाता था और जवानोंको अपनी ओर खींच लाता था; कौन मनचला दूसरेको हथियार देता? उसको तो खुद क्रान्तिकारियोंका नेता बनना था। इसलिये इस दिशामें सियाराम दलको कामयाबी नहीं मिली। भिन्न भिन्न दलोंमें उस समय जो कटुता थी उसका एक बड़ा कारण हथियारकी समस्या भी थी।

शस्त्रास्त्रकी ट्रेनिङ्ग देनेका सबसे अच्छा साधन सियाराम दलको ही उपलब्ध था। श्रीपार्थब्रह्मचारीके पास पहलेसे ही काफी सिखे सिखाये जवान थे और इधर उनने ट्रेनिङ्ग कैम्प खोल रखा था जहां दूसरे जिलेके भी लोग ट्रेनिङ्ग पाने आते थे। फिर उसे 'सरदार' नित्यानन्दका सहयोग मिला जो अच्छे निशाने बाज थे। आपने कनस्टबिलकी हैसियतसे नाम पैदा किया था और इस्तीफा देकर

क्रान्तिकारी बने थे। श्रीविन्ध्येश्वरी सिंह भी पहले टेरटिस्ट ही थे। इसलिये ट्रेनिङ्गकी समस्याको लेकर दल चिन्तित न था।

जन-संगठनपर सियाराम दलने काफी जोर दिया था। उसने इलाके भरमें ग्राम पंचायत और ग्राम-रक्षा दल स्थापित किये, विद्यार्थियोंमें खूब प्रचार किया और उन्हें दलमें शामिल किया। दमनके आतंकको भी उसने दूर करनेकी कोशिश की। दमन पीड़ित परिवारको मदद दी, उनके मोकदमेंको पैरवी करवायी, मुद्दईके गवाहोंको बिगाड़ा और बिगाड़नेमें सभी युक्तियां लड़ाईं। पहले उनको समझाया, फिर धमकाया और काम नहीं चला तो 'भीमनगर' भेज दिया, यानी मार डाला।

बिहपुर इलाकेमें तो सियाराम दलने समानान्तर सरकार कायम कर रखी थी और प्रेमसे, लोभसे वा डरसे लोग उसके हुक्मको सर आँखोंपर चढ़ाते ही थे। भेदिये तो सीधे भीमनगर भेज दिये जाते थे, औरोंको भी मुनासिब सजा मिलती थी। हाथी तक जब्तकर लिया जाता था।

भागलपुरकी सफलता पूर्णिया और देवघरके ही नहीं सारे प्रान्तके कार्य-कर्त्ताओंकी एक टोलीको हिंसाके लिये उभाड़ रही थी। उस समय उन कार्यकर्त्ताओंको जरूरत थी एक ऐसे व्यक्तित्वकी जो एक साथ सशस्त्र क्रान्तिवादी और सशस्त्र क्रान्तिकारी दोनो होवे और अपनी युक्तियोंके जोर और पिस्तौलकी ताकतसे सबोंको एक संगठनके नथमें नाथ रखे। बाहरके प० जयचन्द्र विद्यालंकार आने पर इस दिशामें वे कुछ न कर सके। यहांके श्रीविद्याभूषण शुक्लने भी संगठनकी चेष्टा की और उनकी ओरसे श्रीसत्येन्द्रनारायण सिंहने दो तीन विद्यार्थियोंको लेकर इधर उधर दौड़ धूप भी की पर कुछ रुपये खर्च करके और कुछ हथियार संग्रह करके वे रह गये। इतनेमें एकाएक खबर मिली कि ८ नवम्बरको जगमगाते हजारी बाग जेलकी दीवार फाद अपने पाँच साथियोंको लेकर श्रीजयप्रकाश नारायण बाहर निकल आये। प्रान्त भरमें उत्साहकी लहर दौड़ गयी। आशा हुई कि अब सशस्त्र क्रान्ति-कारियोंको जबरदस्त नेतृत्व मिलेगा।

श्रीजयप्रकाश नारायणमें ऐतिहासिक आकर्षण था और जिस परिस्थितिमें जिस तरह वे निकले वह उस आकर्षणको बढ़ा रहा था। इस आन्दोलनमें हमारा यह भी नारा था कि गिरफ्तारीको न मानो, जेलको जेल न समझो। फलस्वरूप जेलसे, हाजतसे और हिरासतसे निकल भागनेकी प्रायः सब जगह कोशिश हुई और

काफी जगह कामयाबी भी मिली। फिर जयप्रकाश बाबूके लिये निकलनेकी शुरूसे ही कोशिश करना स्वाभाविक था। वे बाहरसे सम्पर्क जोड़ते पर वह कारगर नहीं होता। दिन बीतते गये और एकएककर श्रीयोगेन्द्र शुक्ल, गुलाली सोनार उर्फ गुलाब चन्द्र, सूर्यनारायण और रामनन्दन बाबू उनकी योजनामे शामिल होगये। फिर लोगोसे रायली जाने लगी और बीस पचीस साथियोने जिनमें समतावादी (Gandhi-ites) और समाजवादी (Socialist) दोनो शामिल थे जयप्रकाश बाबूकी योजनासे दिलचस्पी दिखलाने लगे। फिर जेलकी दीवारपर चढ़नेका अभ्यास किया जाने लगा। राजनीतिक कैदियोको वार्डके बाहर रहनेकी सुविधा थी इसलिये दीवार पास ही थी जिसपर श्रीयोगेन्द्र शुक्ल, गुलाली और सूर्यनारायणकी देहकी सीढ़ीके सहारे चढ़ जाना आसान ही लगा। दीवारके पार उतर पड़ना भी कठिन नहीं दीखा। सिर्फ जरूरत थी एक मजबूत रस्सीकी जो इसपार किसी चीजसे बंधी रहती; जिसके लिये रस्सी न थी परन्तु चादरे तो काफी थीं। लेकिन आगे ? आगे तो म्याऊँका ठौर दीखता था। कौन हजारीबागके जंगल और झाड़ियोके, टीले खन्दकोंके पार लेजाता ? राजपथपर तो राजके दुश्मन नहीं चल सकते थे। पर निकलनेका संकल्प क्या कठिनाई माने ? जयप्रकाश बाबूको मालूम हुआ था कि कॉमरेड बसावन सिह अपनी गरिल्ला सेना ले पलामूके जंगलोंमें घूम रहे है। उनसे मिलनेकी उत्सुकता बढ़ रही थी। पं० रामनन्दन मिश्र भी कम बेचैन न थे। उड़ने न पाये थे कि गिरफ्तार वे हुये। इसलिये चाहते थे चाहे जो हो, एक बार और काम करनेका मौका मिले। बंबईसे वे छूटे थे 'मेल'की तरह और रांची तथा पलामूको प्रोग्राम देते हुये पहुँचे थे कटकमे सीधे एक मजिस्टरके यहां। मजिस्टर साहबने हिन्दुस्तानी होनेके नाते उन्हें बैठाया और सरकारी अफसर होनेके नाते पुलिसको उनके आगमनकी सूचना देदी। पुलिस दौड़ी आई; फिर मजिस्टर साहबकी मोटर पण्डितजीको ले उड़ी और उन्हें पुलिसके हवाले कर दिया। वे छके थे और छकानेको आतुर थे।

इसी बीच अफवाह फैली कि एक अगरेज जेलका सुपरिन्टेन्डेन्ट होकर आनेवाला है जो बड़ा कड़ा और चौकस है। फिर तो सभी कहने लगे कि काल करै सो आज कर, आज करै सो अब। फिर भी देरी हुई क्योंकि जमशेदपुरके खतरनाक समझे जानेवाले पुलिस कैदी आ पहुँचे और जेलकी चहारदीवारीके भीतर बाहर पहरा पड़ने लगा। पर दो तीन नवम्बर तक वे सब भिन्न-भिन्न जेलोमे भेज दिये गये- और पहरा हट गया।

जयप्रकाशके साथ
हजारीबाग जेलको
फाँदनेवाले !

श्रीरामनन्दन मिश्र,
दरभंगा

श्रीयोगेन्द्र शुक्ल,
मुजफ्फरपुर
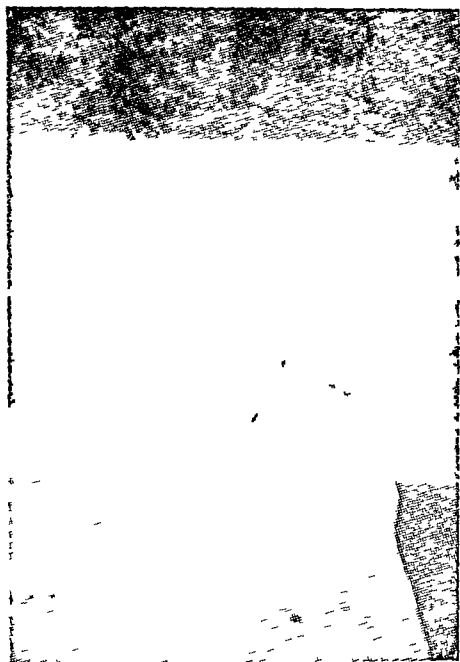
श्रीसूर्य नारायण सिंह,
दरभंगा

विद्यार्थियों का जलूस,
सरैयागज (मुजफ्फरपुर) में

इधर जेलमें पहुँचे एक नये कैदी बा० शालिग्राम सिंह, जिनसे जयप्रकाश दलने जान पहचान करली। शालिग्राम बाबू पहाडी चूहा थे। बस, छ: जने उस पहाडी चूहाके भरोसे हजारीबाग जेलकी चहारदीवारी पार कर गये। बाहर जाकर कपडे लत्ते और रुपये पैसेकी पोटलीके लिये ठहरे ही थे कि चेतावनी मिली—भागो। फिर वे सब कुछ छोड भागे। कुछ ही दूर गये होंगे कि जेलकी दीवारपरसे फेंकी जानेवाली रोशनी जब तक उनपर पड़ने लगी। पर चूहा दल क्या पकडा जाय? झाड झखाड और अंधकारसे गुजरता हुआ वह गयाकी सीमा लांघ गया और स्व० श्रीत्रिवेणीप्रसाद सिंहकी जमींदारीकी एक कचहरीमें ठहरा। त्रिवेणी बाबू रामनन्दन बाबूके श्वसुर थे देशभक्तिका तकाजा और दामादका स्नेह दोनोंने उनमें दूना बल भर दिया और इन मुक्त-बन्दियोंको सारी सुविधा दिलवायी। वहांसे दलने कई राह पकडी और श्रीजयप्रकाश नारायण अपनी टुकड़ी ले काशी पहुँच गये। काशीमें उनसे बाबू श्यामनन्दन सिंह आ मिले और फिर 'बाबा' का चक्रचाल शुरू हो गया।

यथाशीघ्र श्रीजयप्रकाश नारायणका सम्पर्क श्रीअच्युत पटवर्धन और डाक्टर राममनोहर लोहियासे हुआ जिनने श्री सुचेता कृपलानीकी राय लेकर उनको ऑल इन्डिया कांग्रेस कमिटीमें शामिल कर लिया। शामिल होकर जयप्रकाश बाबूने जो सबसे पहला काम किया वह था ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीको एक विधान देना। अब तक श्रीसुचेता, लोहिया और पटवर्धनजी दोस्ताना तरीकेसे ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके काम कर लेते थे, विधि-विधानसे सरोकार न रखते थे। पर जयप्रकाश बाबूने सुझाया कि लड़ाई लंबी हो सकती है, इसलिये हमें सगठित हो जाना चाहिये और देहातका सगठन करना चाहिये। सभी सहमत हुये। श्रीअरुणा आसफअली भी सहमत हुईं जो दिल्ली छोड बम्बई आगईं थी। फलतः दिसम्बर १९४२ के अन्तिम सप्ताहमें दिल्लीमें एक बैठक हुई जिसमें दिल्ली रहकर कोशिश करनेके बावजूद भी चतुर दूत न मिलनेके कारण श्रीसुचेता शामिल नहीं हो सकीं। दिल्ली बैठकने निर्णय किया कि (१) ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके भीतर एक केन्द्रीय सचालक मंडल—Central Directorate रहे जिसके श्रीजयप्रकाश नारायण श्रीअच्युत पटवर्धन, डा० राममनोहर लोहिया, श्री आर० दिवाकर श्री अन्नदा प्रसाद चौधरी श्रीअरुणा आसफअली और श्रीसुचेता कृपलानी सदस्य रहे, इन सबोंको स्थान-स्थान काम बांट दिया जाय जिनको पूरा करनेके लिये वे सब हिन्दुस्तान भरका सगठन करें (२) देश विदेशमें जबरदस्त प्रचार हो और केन्द्रीय सचालक-मंडलका अपना रेडियो रहे और (३) अर्थाभाव दूर

करनेके लिये एक करोड़का स्वराज करज लिया जाय। काममें मुख्यत थे छात्र, मजदूर और किसानोंका संगठन करना, महिलाओंका संगठन करना और गरिल्ला सेना तैयार करना।

दिल्लीके निर्णयका दोरुखी स्वागत हुआ। समतावादी (Gandhi-ites) क्षुब्ध हुये और समाजवादी (Socialists) खुश। जब श्रीसुचेता मिल सकीं तब उनने भी अपने सहकारियोंके सामने अपना क्षोभ प्रकट किया और कहा—अबतक मैंने काम संभाला अब न संभाल सकूंगी। पर जयप्रकाश बाबूने कहा कि मैं आया और आप निकलीं ! आप नहीं चाहतीं कि मै आपलोगोंके साथ काम करूँ ! अगर ऐसा है तो कहिये, मै ही हट जाता हूँ। श्रीसुचेता शान्त हो गई। पर बम्बईसे उनने सहकारियोंको खबर दी कि मै समझ बूझकर इस नतीजेपर पहुँची हूँ कि (१) हमें कांग्रेसके नामका इस्तेमाल बन्दकर देना चाहिये। हम अपनी सूझके मुताबिक काम करते है और अपने नेताओंके मार्ग-दर्शनसे बञ्चित हैं। फिर हम कांग्रेसका नाम क्यों लेवे ? (२) अगर अंगरेजी राजसे समझौता करनेका मौका आया तब कहीं हमारी कार्रवाई हमारे नेताओंको परेशानीमें न डाले- इसका खयाल रखकर हमे प्रोग्राम बनाना है और (३) हमें अपने प्लाटफार्मसे कोई हिंसात्मक काम नहीं करना है। जिन्हें करना है वे इसके लिये कोई दूसरी संस्था संगठित कर लें। श्रीसुचेताके सहकारियोंने उनकी बातें नोटकर लीं, बस।

बिहारका जन आन्दोलन दब चुका था पर बिहारके कार्यकर्त्ता परेशान होते हुये भी अहिंसा और हिंसा दोनो तरहके मोरचोंको सभालनेमे लगे थे। समझौतेका सपना भी न देखते थे। उन्हें जरूरत थी ऐसे सन्देशकी जो उनका हौसला बढ़ाये, उन्हें प्रोग्राम दे, आगेकी राह बताये। इसलिये श्रीजयप्रकाश नारायणका पहला पत्र जब निकला तब सारे बिहारने उसका स्वागत किया।

जयप्रकाश बाबूने बतलाया कि-अगस्त-क्रान्ति आकस्मिक घटना नहीं थी, वह तो हमारी बदलती हुई परिस्थितिका लक्षण थी जो अब भी बदल रही है। उनने कहा कि क्रान्ति घटना नही होती जो घटी और समाप्त होगई। क्रान्ति एक नियम है जो काम करती ही है, एक गति है जो लक्ष्यपर पहुँचती ही है। इसलिये अगस्त-क्रान्तिको सफल होना ही है। जिन सामाजिक शक्तियोंका वह लक्षण है उन शक्तियोंका प्रवाह हमे सफलताकी ओर ले ही जायगा। हां ! हमें अपने दबनेके कारणको ढूढ़ना और दूर करना है। उनने हमें सुझाया कि हम इसलिये दबे कि

न हमारा व्यापक सगठन था और न व्यापक प्रोग्राम। बहुतसे कार्यकर्त्ता जिनमें कितने पुराने और अनुभवी काग्रेसमैन थे अन्ततक विचार द्वन्द्वमे पडे ही रहे कि हमें आन्दोलनमें मिलना है या नहीं और रेलतार तोड कर, थानेमें बैठकर लोग समझ नहीं सके कि हमें क्या करना है? इसलिये हमें सगठित और अनुशासित होना है; हुनर सीखना है; पहलेकी तरह अनाडी जैसा काम नहीं करना है। हमें गावोंमें, कारखानोमे, खानोमे, रेलवेमें आदमियोंके बीच, पुलिस और हिन्दुस्तानी फौजके बीच प्रचार करना है, छात्रोंमे काम करना है। रियासतों और सरकारी इलाकोंमें घुसना है।

हिंसा और अहिंसाके मामलेमें, जयप्रकाशबाबूने कहा कि हमारी नीति काग्रेसके प्रतिकूल नहीं है। राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना हो जानेपर जर्मनों और जापानियोंसे लोहा लेनेको काग्रेस तैयार रहा है। उसने माना है कि उसे आजादी मिल गई तब अपनी आजादीपर हमला करनेवालोसे वह लडेगा। फिर हम अगरेजोंके खिलाफ हथियार क्यों न उठायें? हमने तो अपनेको आजाद घोषित किया है, और हमारी आजादीपर अगरेज हमला कर रहे हैं। उससे हमारा लड़ना कैसे अनुचित कहा जा सकता है?

हमें सब तरहसे तैयार रहना है। हो सकता है हमें दुश्मनपर चढ़ जानेका मौका जल्द मिल जाय, क्योंकि हमारी तैयारी देख जनताकी पस्त हिम्मती दूर हो जायगी। फिर गाधीजीका उपवास या ससारकी परिस्थितिका अनुकूल परिवर्त्तन जनतामें उफान पैदा कर देगा। पर हमें उतावला नहीं बनना है। तैयारीमें जुटे रहना है। पर इसका मतलब यह नहीं कि हमारी लडाई तत्कालके लिये बिलकुल बन्द रहे। हाथापाई, सरहदी कार्रवाई, छोटी मोटी भिड़न्त, निशानेबाजी और गश्ती वगैरह तो होते रहना चाहिये।

जयप्रकाश बाबूकी विचारधारासे बिहारके प्रभावित होनेकी एक और खास वजह थी। सरकार परचों, पुस्तिकाओं और अखबारोंके जरिये, तस्वीर दे देकर प्रचारकर रही थी कि अगस्त आन्दोलन गुण्डापन है, तोड़फोड़ गुण्डों और बदमाशोंका प्रोग्राम है और उसके कर्ता-धर्ता उसकी हामें हां मिला रहे थे। सरकारके प्रचारसे तो आन्दोलन कारियोंका मनोरजन होता था पर उसके कर्ता-धर्ताओंकी ठकुर सोहाती उनके दिलको, हिन्दुस्तानीपनके नाते, ठेस पहुंचाती थी। उनके बीच दरभंगा बड़ा बदनाम था। दरभगा राज परिवारने एक परचा

निकला था जिसके जरिये उसने भारतीय सभ्यता और संस्कृतिकी दुहाई देते हुये आन्दोलनको गुण्डापन कहा था और आन्दोलन कारियोंको बड़ी खरी खोटी सुनाई थी पर उसकी जमींदारीमें ही, उसको बगलमें ही सरकारकी ओरसे जो जबरदस्ती सिन्दूरकी मर्यादा नष्ट की जा रही थी, कौमार्यको पाशविक कामुकताका खेल बनाया जा रहा था, गावके गांव जलाये जा रहे थे और लूटे जा रहे थे, मूर्तियां तोड़ी जा रही थीं और मन्दिर भ्रष्ट किये जा रहे थे, उनके सम्बन्धमें उसने चूं भी नही कहा था। आन्दोलन कारियोंकी हरकतें बुरी ? हो सकती थीं पर उनका उद्देश्य तो बुरा न था, और सरकारकी हरकते तो बुरी थी ही साथ ही उद्देश्य भी बुरा था। फिर किस भारतीय सभ्यता और संस्कृतिके बलपर दरभंगा राज परिवार गुड़ खा रहा था गुलगुलेसे (?) परहेज करता था सो आन्दोलन कारियोंकी समझमें नहीं आया। बड़े दुखकी बात तो यह थी कि उस पर्चेपर समर्थकोंमें 'आचार्य' रामलोचन शरणका भी नाम था जिनको आन्दोलनकारियोंके गुण्डापनने ही बनाया और बढ़ाया है। हां! उस पर्चेपर पं० गिरीन्द्रमोहन मिश्र और बाबू धरणीधरके नाम न देख आन्दोलन कारियोंको सन्तोष हुआ। बाबू धरणीधर आन्दोलनकी मुखालफत करते थे और जोरोंसे करते थे पर उनने उस "एक तरफा" परचापर दस्तखत करना पाप माना हालांकि उनके साथी वकीलोंने वैसी समझ-दारी नहीं दिखलायी थी। ऐसे विषाक्त वातावरणमें जब कॉमरेड जयप्रकाशकी वाणी अगस्त आन्दोलनके जोरदार समर्थनमें गूंजने लगी तब सभी विचारधाराके कार्यकर्त्ताओंको बल मिला और उनका सर ऊँचा हुआ।

ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके केन्द्रीय संचालक मडलने—Central Directorate—२६ जनवरी १९४३ के लिये जो प्रोग्राम दिया उसमें कई विशेषतायें थीं। संचालक मंडलने प्रतिज्ञा करवायी कि हम १९४४ को २६ जनवरी आनेके पहले ही भारतको आजाद कर लेंगे। फिर उसने किसानों, मजदूरों और छात्रोंको और और काम करनेके साथ साथ गरिल्ला दल तैयार करनेके लिये कहा, व्यवसायियोंसे अंगरेज व्यवसायों और अंगरेजी बैंक वगैरहका बहिष्कार करते हुये स्वराज करज-खाते रुपये देनेकी अपील की और फौजवालोंसे आजाद भारत—Republic India की वफादारीकी सपथ लेने और कांग्रेसके हुक्मसे गद्दी-चोर अंगरेजोंके खिलाफ उठ खड़े होनेकी अपील की। इसी ढंगकी अपील पुलिस, सरकारी नौकर-चाकर तथा दूसरोंसे भी की गई।

सरकारकी असाधारण निगरानी और कड़ाईके बावजूद भी बिहारने शानसे २६ जनवरी मनायी। शहरोंमें स्त्रियों, पुरुषों और बालकोंके जलूस निकले, गिरफ्तारियां हुई और जहां तहां गुब्बारे उड़ाये गये। इधर छात्रोंकी बिखरी हुई ताकतें सिमट रही थीं और पटनेमें शहीद अनिरुद्धकुमार सिन्हाके नेतृत्वमें सेन्ट्रल स्टूडेन्ट्स कौंसिल कायम हो चुकी थी। शहीद अनिरुद्ध जैसे मेधावी थे वैसे कर्मठ भी। इसलिये सभी विचारधाराओंके छात्रोंका विश्वास-पात्र बननेमें उन्हें देर न लगी। वे तब कट्टर कांग्रेसी विचारके थे और उग्रभावना रखते हुये भी पिस्तौल-बाजीका विरोध करते थे। इसलिये आन्दोलनके प्रान्तीय संचालक श्रीनथुनी सिंहने २६ जनवरीके आयोजनका सारा भार उन्हें ही सौंप दिया था।

यों तो २६ जनवरीको सभी जगह कुछ न कुछ हुआ ही पर मुंगेर और भागलपुरमें जो हुआ उसका उल्लेख तो करना ही पड़ेगा।

स्वतंत्रता दिवसके उपलक्ष्यमें श्रीमहावीर सिंह और श्रीप्रतापनारायण मिश्रने और स्वयंसेवकोंके सहयोगसे जलूस निकला। तारापुरमें सबोंको मिलिटरीने गिरफ्तार कर लिया और खूब पीटा। फिर सभी मोटरसे मुंगेरके चंडी स्थान लाये गये जहां नाव भयंकर सर्दीकी रातमें उन्हें गंगाकी बीच धारमें ले गयी और डुबा आई। डूबनेवाले सभी तैराक थे। इसलिये किसी तरह उनकी जान बच गई।

सियाराम दलने स्वतंत्रता दिवस मनानेकी काफी तैयारी की थी। सचित्र परचा छपा था जिसमें सिंह जागकर जंजीर तोड़ता हुआ दिखलाया गया था। परचेमें लिखा था—सिंह जग उठा, भारत माताकी जंजीर तोड़ रहा है। ऐसे परचे सप्ताह पहले भागलपुर और मुंगेरमें बांटे गये थे। ता० २३ जनवरीको दुधी भरना पहाड़ीपर श्रीसियाराम सिंह फौजी ठाट-बाटसे बांका सबडिविजनके कार्यकर्त्ताओंसे मिले जिन्हें सियाराम दलके सिपाहियोंने सीटी बजते ही भाड़ीसे निकल फौजी सलामी दी और सीटी बजते ही फिर भाड़ीकी शरण ली। ऐसे मादक दृश्यमें सियाराम बाबूने एलान किया कि हमारा भारतव्यापी संगठन है जिसके श्रीअच्युत पटवर्धन इञ्चार्ज हैं। श्रीपटवर्धनने मुझे भागलपुर डिविजनका इञ्चार्ज नियुक्त किया है। मुझे अब डिविजन भरका संगठन करना है। कार्यकर्त्ताओंने उनको सहयोग देना स्वीकार किया। फिर वहां सबोंने धूमधामसे स्वतंत्रता दिवस मनानेका निश्चय किया और जहां जहां नारा हथियारोंका

खूब प्रदर्शन किया। एक जगह उन्हें बलिदान भी देना पड़ा।

परशुराम दलकी एक टुकड़ी फट्टापाथरपर झंडा फहराने जा रही थी। जलूसमे कटोरिया थानेके नकटी गांवका दरबारी माँझी शामिल था। बड़ा सा झंडा उठाये हुये। गश्त लगाते हुये बलूचियोने झंडे देखे, नारे सुने और गोलियाँ मारी। दरबारी माँझी शहीद हो गया। पर जलूसने अपनी कार्रवाई बन्द नही की। वह फट्टापाँथरकी चोटीपर चढ़ा और शहीदको साक्षी रखकर उसने अपना अनुष्ठान पूरा किया।

इस दिन भागलपुर जिलाके अहिंसावादियोने भी अनुपम भेट चढ़ायी है। पुलिसके आतंकको चुनौती देते हुये चुल्हाई मंडलजी निकले मधेपुरा कचहरीपर झंडा फहराकर स्वतंत्रता दिवस मनाने। झंडा फहराते हुये नारा लगाते हुये ज्योंही आप मधेपुरा कचहरीके हातेमें घुसे कि पुलिसने उन्हें पकड़ लिया और इतना पीटा कि आप बेहोश हो गये। बादको आप भागलपुर सेन्ट्रल जेल भेज दिये गये जहाँके अस्पतालका इलाज आपको बचा न सका और आप वहीं शहीद हो गये।

विहारमें २६ जनवरीका प्रदर्शन देखकर स्पष्ट हो जाता था कि सशस्त्र क्रान्तिकारियोंकी संख्या बढ़ रही है। ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीका सेन्ट्रल डायरेक्टरेट उन्हें प्रोग्राम दे रहा था और उनका श्रीपटवर्धनके जरिये नेतृत्व भी कर रहा था। जहाँ तक उनकी विचारधाराका सवाल था उसे जयप्रकाश बाबूकी वाणी और लेखनी स्पष्टकर रही थी। विहारकी दूसरी विचारधाराके कार्यकर्त्ताओको इससे कोई घबड़ाहट न होती थी। पर सेन्ट्रल डायरेक्टरेटके सदस्य विलगसे हो रहे थे। कांग्रेसके प्लॉट-फार्मसे गरिल्ला दल संगठित करनेका प्रोग्राम देना उन्हें बड़ा अखर रहा था और स्वराज करजकी योजनाको भी वे अव्यावहारिक मानते थे। इस योजनाकी तो जानकार हलकोमे इतनी आलोचना हुई कि उसे छोड़ ही देना पड़ा।

ऐतिहासिक उपवास

१० फरवरीको खबर मिली कि गांधीजी आजसे २१ दिनोंका उपवास कर रहे हैं। वे नींबूका रस मिलाकर पानी पीया करेंगे जिससे पानी हजम हो सके। वे मरना नहीं चाहते। उनका यह यथाशक्ति उपवास है। बिहार स्तम्भित हो गया।

सरकारने अपने वक्तव्यके साथ साथ और चिट्ठियां भी छपवायी थीं जिन्हें पढ़नेसे मालूम हुआ कि गान्धीजीने अगस्त १९४२ में ही जब कि अगस्त-क्रान्ति अपनी पूरी मौजमें थी, निश्चय किया था कि अगर सरकारको अपने कियेका पछतावा नहीं हुआ तब छः महीने खतम होते ही मैं उपवास करूँगा। गान्धीजी कहते थे कि मुझको मिलनेका मौका न देकर लार्ड लिनलिथगोने अन्याय किया; फिर सारे नेताओंको झटपट जेलमें ठूंसकर उनने भयंकर भूल की, इसलिये अगस्त-आन्दोलनकी और उसके फलस्वरूप जो धन जनकी नुकसानी हुई उसकी जवाबदेही लार्ड लिनलिथगो और उनकी सरकारपर है। पर वे दोनों अनुतप्त होते नहीं दीखते। उलटा, हिंसाकी जवाबदेही मुझपर थोपते हैं और कांग्रेसको गलियाते हैं। वे नहीं देखते कि जहाँ असंगठित जनताने अव्यवस्थित रूपसे कुछ हिंसा की वहाँ उनके संगठित दलने हिंसा करनेमें कोई हद-व-हिसाब नहीं रहने दिया। वे कुछ सुप्रसिद्ध कांग्रेसजनोंपर हिंसाका आरोप करते हैं और कहते हैं कि मैं उनकी निन्दा करूं। मैंने हिंसाकी बराबर निन्दा की है और बड़ेसे बड़ेकी भी निन्दा करनेसे कभी रुका नहीं हूं। पर उस घटनाकी मैं कैसे निन्दा करूं जिसकी पूरी वाकफियत मुझको नहीं है। फिर परिस्थिति विशेष जिन घटनाओंका कारण बन रही है उन घटनाओंकी आलोचना करना मेरे लिये कैसे उचित हो सकता है जब कि परिस्थिति-विशेषमें परिवर्त्तन लानेकी सुविधा मुझे नहीं दी जाती? सरकार जिनपर हिंसाका भीषण आरोप कर रही है उनपर खुली अदालतमें वह मुकदमा क्यों नहीं चलाती? मुझपर मुकदमा क्यों नहीं चलाती? कहा है मुकदमा जरूर चलेगा पर जब समय आयगा। और जब समय आया उसके पहले ही कोई खास गवाह मर गया, कोई खास सबूत नष्ट हो गया तब? या उस

समय अदालतने किसीको बेकसूर साबित किया तब जो वह उतने दिन मुफ्तमें सताया गया उसका कौन जवाबदेह होगा? अहिंसा मेरा धर्म है, उसपर मेरा विश्वास ज्योंका त्यों बना है। अहिंसाके रास्ते ही ले चलकर मैंने कांग्रेसके द्वारा देश और दुनियाँकी सेवा करनी चाही जिसके बदले सरकार मेरे देशको परेशान कर रही है। इधर मेरा देश अकाल-ग्रस्त हो रहा है। लाखों लोग मर रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय सरकार रहती तो परिस्थिति सुधारनेके लिये जान लड़ा देती। मै भी आगाखाँ महलकी सुख सुविधामें पड़ अपना कर्त्तव्य नहीं भूल सकता। टुक टुक अपने देशके धन जनका ह्रास नहीं देख सकता। इसलिये सत्याग्रहकी मर्यादा जो कहेगी उसे मुझको करना पड़ेगा। बहुतसे अन्यायका प्रतिकार जेल जाने ही से हो जाता है पर उसकी भी एक हद है। इसलिये आजकी परिस्थितिमें सत्याग्रहका तकाजा है कि मैं २१ दिनका अनशन करूँ। अगर सरकार चाहती है कि मैं अनशन न करूँ तो वह मुझे जेलके बाहर कर दे सकती है। तब मेरे लिये अनशन करनेका कोई कारण नहीं रहेगा क्योकि उन परिस्थितियोको सुधारनेका मौका मिल जायगा जिनने मेरे देशको परेशान कर रखा है। पर सरकार कहती है कि मैं नौ अगस्तके प्रस्तावको वापस लूँ और वचन दूँ कि आगे अपना आचरण ठीक रखूंगा। नौ अगस्तका प्रस्ताव तो कांग्रेसका है। उसको कोई अकेला वापस नहीं ले सकता। हां! उस प्रस्तावकी जवाबदेहीसे अपनेको बरी कर सकता है। पर मैं तो नौ अगस्तके प्रस्तावको निर्दोष मानता हूँ। आखिर प्रस्तावमे है ही क्या? विश्वसंघकी मांग है, प्रजातंत्रकी मांग है, राष्ट्रीय सरकारकी मांग है। सभी मांगोको सरकार जायज मानती आई है। हां! सत्याग्रह द्वारा मांग लेनेका जो निश्चय है उसपर ही आपत्ति की जा सकती है। पर सत्याग्रहको ब्रिटिश सरकारने दक्षिण अफ्रिकाकी भारतीय-समस्याको सुलझानेके अवसरपर निष्क्रिय प्रतिरोधके—Passive Resistance नामसे जायज माना है और ५ मार्च १९३१ मे जो गान्धी-इरविन समझौता हुआ उसपर मुहर लगाकर यहांकी सरकारने भी माना है। फिर अगस्त-प्रस्तावसे चौंकना क्यो? अब रही मेरे आचरणकी बात, सो तो उसमें कोई फर्क नहीं आया। अंगरेजोंका मै पहले जैसा ही हितैषी रहा हूँ और अहिंसा मेरे जीवनका व्रत रहा है। मेरे कोम इन्हीं भावनाओंकी प्ररणासे होते रहे हैं। फिर मै वचन क्या दूं? मै तो अपनी गलती नहीं देखता। हॉ! सरकार अगर मुझको मेरी गलती सुझा दे तो अलबत्ता जो

तिलतिलकर मरनेवाले दो शहीद !

शहीद विन्ध्य वासिनी सिंह,
हाजीपुर

अनिरुद्ध कुमार सिंह एम ए,
पटना

।गा खाँ महलके
दो शहीद !

'बा'

बापू के 'महादेव'

मुनासिब हो सकता है मैं सब करूंगा। मैं न कभी अपनी गलती माननेसे घबड़ाया और न उसके लिये प्रायश्चित्त करनेसे। पर न तो सरकार मुझको मेरी गलती सुझा रही है और न मुझको अपने कार्य-समितिके साथियोंसे मिलने देती है ताकि सलाह मशविरा करके कांग्रेसकी ओरसे कुछ कहा जा सके। फिर अनशनके अलावा चारा ही क्या है ? सरकार अपने पसन्दकी जगह जाकर उपवास करनेकी सुविधा मुझे देना चाहती है जिसे मैं ले नहीं सकता। लार्ड लिनलिथगो कहते हैं कि दुनियाकी अदालतमें अपने कारनामोंकी सफाई देनेके डरसे मैं अनशन करके छुटकारेकी आसान राह निकाल रहा हूँ। मैं सोच भी न सका था कि मुझको इतना कापुरुष मान बैठेंगे ! वे कहते हैं कि अनशन करके मैं राजनीतिक मर्यादाका गला दबोचना चाहता हूँ। पर यह तो मेरे लिये बड़ासे बड़ा जो इजलास है उस तक अपनी अपील पहुँचानेका एक साधन है। सत्याग्रहीके लिये तो दूसरा रास्ता नहीं है। यदि मैं इस अग्नि परीक्षासे उबर नहीं सका तो अपनेको सम्पूर्ण निर्दोष मानता हुआ न्यायके उस सर्वोच्च आसनके सामने जा खड़ा हूँगा। आप हैं एक जबरदस्त सरकारके प्रतिनिधि और मैं हूँ एक मामूली आदमी, अपने देश और देशके द्वारा मानव जातिका सेवक। अगली पीढी आपके और मेरे बीच इन्साफ करेगी।

८ फरवरीको उपवासकी सूचना देकर ता० १० फरवरीसे गान्धीजीने अपना २१ दिनोंका यथाशक्ति उपवास शुरू किया।

सुशीला नय्यर लिखती हैं, "१० फरवरी, १९४३ को सुबह नाश्तेके बाद प्रार्थना करके बापूजीने उपवास शुरू किया। उस रोज वे सुबह शाम घूमे। महादेव भाईकी समाधिपर भी गये × × × × ×।

"दिनमें दो-तीन बार वा गरम पानी और शहद पिया करती थीं। उपवासके दिनोंमें बराबर बापूके पास ही रहनेकी उनकी इच्छा स्वाभाविक थी। वे शहदके पानीका गिलास लेकर बापूकी खाटके पास आ जातीं, कुछ काम रहता, तो गिलासको बापूजीके पास मेजपर रख कर काम कर लेतीं और फिर पानी पीने लगतीं। एक दिन डाक्टर गिल्डरने कहा, "यह अच्छा नहीं लगता। मुमकिन है कि सरकारी आदमियोंके मनमें शक पैदा हो और वे समझें कि बा बापूको पिलानेके लिये ही पानीका यह गिलास लिये घूमा करती हैं।' उन्होंने बासे भी यह चीज कही। बाने दृढ़ताके साथ उत्तर दिया "बापूजीके बारेमें कोई ऐसी शका कर ही नहीं सकता।"

"उपवासके तीसरे दिन बापूजीको मतली आनी शुरू हुई। बाने कहा, "पानीमें थोड़ा मोसंबीका रस लीजिये न?" "बापूने इनकार किया। बोले "मै यों जल्दी-जल्दी रस नहीं लूंगा।" उसके बाद तो उबकाईकी तकलीफ बढ़ गई। बापू पानी बिलकुल पी ही नहीं पाते थे। खून गाढ़ा हो गया। गुर्दोंका काम ढीला पड़ गया।

"उपवासके तेरहवें दिन यानी २२ फरवरीको बापू दस मिनटके प्रयत्नमें आधा औंस पानी भी नही पी सके। थककर बेहाल होगये, और खाटमें पड़ गये। नाड़ी कमजोर पड़ गई। बदन पसीनेसे तर हो गया। बोलना तो दूर इशारा तक करनेकी ताकत न रह गई। २२ फरवरीके दिन बापू जीवन और मरनके बीच भूल रहे थे। बापूजीके उपवासने आगाखां महलके दरवाजे खोल दिये थे। दिन भर मुलाकातियोंका ताँता लगा रहता था।"

इधर सारे देशमे आशा निराशा भरी हलचल मच रही थी। बिहार अपनी विपदा और पैतरा भूल नयी परिस्थिति और नये कार्यक्रमकी आशामें आगाखाँ महल और नयी-दिल्लीके मुंह जोहता रहा। कारण भी थे। देशके कोने-कोनेसे ही नही विदेशसे भी गान्धीजीकी रिहाईकी माँग आने लगी। केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभामें काम-रोकोके प्रस्तावके रूपमें गान्धीजीकी रिहाईकी मांग पेश हुई और दिल्लीमे तो सर्वदल सम्मेलन बैठा जिसने उस माँगको दुहराया। और सरकारकी कार्यकारिणीके तीन सदस्य सर एच० पी० मोदी, सर्वश्री नलिनीरंजन सरकार और एम० एस० अणेने सरकारी नीतिके विरोधमे इस्तीफे भी दाखिल किये। पर बहरे साँपपर झाडफूंकका कोई असर नहीं पड़ा। केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभामे तो सरकारने काम-रोकोके प्रस्तावके जवाबमें कहा—"तब जापानकी चढ़ाई होनेवाली थी; इसलिये कांग्रेसने अगस्त प्रस्ताव पास किया जिससे जापान प्रसन्न रहे। पर अब आन्दोलन कुचल दिया गया है और जापानकी चढ़ाईकी बात भी दब गई है। आज कांग्रेसकी खोई हुई धाक हासिल करनेके लिये उपवासके अलावा गान्धीजीके लिये दूसरा कोन उपाय है?" फिर सरकारने कहा कि हम पश्चिमके जातियोकी मर्यादा विरोधीकी मानवता, विनय अथवा दयाकी भावनाको उभारकर उससे जबरदस्ती अपना काम निकालना तनिक भी पसन्द नहीं करती। यहाँ सरकार भूलती थी। एक पूरबकी जातिने भी हिन्दू महासभाके प्लॉटफार्मसे उसकी हांमें हां मिलाई, लेकिन उसने साथ ही कहा कि जब उपवासकी कमजोरीसे गान्धीजीकी जान खतरेमें पड़ जाय तब सरकार

उन्हें जरूर छोड़ दे। मुस्लिम-लीगका रुख साफ था। वह भी हिन्दू महासभाकी तरह सर्वदल सम्मेलनमें शामिल नहीं हुआ था। उसके सभापति जिन्ना साहब बोले कि गांधीजीका उपवास कांग्रेस आन्दोलनके सिलसिलेमें ही है जिसकी सफलता पाकिस्तानकी जड़ खोखलीकर देगी। उनका भी गान्धीजीके उपवासके खतरनाक तरीकेसे विरोध था। फिर भी उनने सर्वदल सम्मेलनको सन्देश देते हुए मनाया कि सम्मेलन शान्ति और समझदारी लानेमें सफल हो।

इधर गान्धीजीकी हालत खतरनाक हो गई। डाक्टरोंका बुलेटिन निकला कि उनकी जीवनशक्ति इतनी क्षीण हो गई है कि आगे क्या होगा, नहीं कहा जा सकता। मौतकी लकड़ी गान्धीजीके शरीरपर फिरती दीख पड़ने लगी। सर तेजबहादुर सप्रूने देशको चेताया कि महान् संकट आ रहा है; जिस क्षण न आ जाय उस क्षण आ जाय, छातीपर पत्थर रखकर सभी उस महान् विपत्तिको सहें, धीरज न खोवें, दगा न करें। देशकी आर्त्तवाणी फूट निकली, क्या जज, क्या किरानी, क्या मालिक, क्या मजदूर, सभी सर्वोच्च न्यायकर्त्तासे अपने तपस्वी नेताकी प्राण भिक्षा मांगने लगे और बिहारकी सडक सड़कपर रात-दिन फौजियोंका शोर और टैंकों और मशीनगनकी गाड़ियोंकी घरघराहट उस गोहार-वाणीको दबानेकी कोशिश करने लगीं। कितने सशस्त्र क्रान्तिकारी जानपर खेलकर सरकारसे बदला लेनेको आतुर हो उठे पर जब उन्हें सुझाया गया कि उनकी कार्रवाईसे उनके तपस्वीका यथाशक्ति उपवास आमरण उपवासमें परिणत हो जा सकता है तब उनके हाथसे रिवाल्वर छूट गये।

उधर सरकार सुखका सपना देख रही थी। उसकी खुशीका कोई ठिकाना न था। बूढ़ा खुद ही मर रहा है जिसे न बाहर छोडते बनता था, न जेलमें रखते। सांप मरे और लाठी भी न टूटे तब बेहद खुशी क्यों न हो? इस खुशीमें एक ओर सरकारने घी चन्दन इकट्ठा किया और दूसरी ओर गान्धीजीसे बातचीत करनेकी मित्रोंको पूरी छूट दे दी। तरह-तरहके लोग गान्धीजीसे मिलने लगे और साथ ही उनका मनोबल उनके शरीरमें प्राण फूकने लगा।

सर तेज और उनके साथियोंने गान्धीजीसे बातें कीं। वे सब कहने लगे कि गान्धीजीकी इच्छा आन्दोलन चलाते रहनेकी नहीं है। वे महायुद्धकी तैयारीमें बाधक भी नहीं होंगे। यही मौका है कि सरकार उनसे समझौता कर ले। हमारा विश्वास है, छूटकर गान्धीजी राजनीतिक जिच दूर करेंगे और अनेक कठिनाइयोंके

सुलझानेमें मदद देंगे। श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचारी और उनके इष्ट-मित्रोंकी बातचीत गान्धीजीसे हुई। उनकी मंडलीमें सुना गया कि गान्धीजी सरकारके और खिलाफ होगये हैं। ब्रिटिश साम्राज्यमें रहनेकी अपेक्षा मर मिटना कहीं अच्छा समझते हैं। उनका कहना है कि लोग मरना सीखे; वे सब और कुछ नहीं कर सकते है तो बड़े लाटके महलके सामने हाराकीरी (पेट चीरकर आत्महत्या) तो कर सकते हैं; उनके महलकी सीढ़ीपर सर पटक-पटककर गुलामीका अपना चोला तो बदल दे सकते है? भारत छोड़ोका नारा बुलन्द करनेवालोंका दुखी दिल ऐसा सन्देश पाकर हरा हो गया और उनने सारे देशमें इसका खूब प्रचार किया।

ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके केन्द्रीय संचालक मंडलके सदस्य भी बम्बईमे पहुँचे हुये थे और गान्धीजीके मतामतसे जानकार होना चाहते थे। उन सबने श्रीदेवदासको पकड़ा। उनको अपनी सारी बाते समझा दीं और गान्धीजीकी प्रतिक्रिया जाननेको कहा। श्रीमती सुचेता कृपलानी तो खुद मिलनेके लिये आतुर थीं। पुलिस हाथ धोकर पीछे पड़ी थी तब भी उनने अधिकारियोंके यहाँ गान्धीजीसे मिलनेकी दरखास्त भेज दी और उनकी इजाजत लेकर गान्धीजीसे २५ फरवरीको मिल भी आयीं। पूनेकी पुलिसको जैसे ही उनके डेरेका पता लगा वह दौड़ी; डेरा घेर लिया गया पर देखा चिड़िया उड़ गई है।

इन संचालकोंको बहुतकी बातोंकी जानकारी हुई। उनको मालूम हुआ कि (१) गान्धीजी नहीं चाहते हैं कि कांग्रेसके नामसे आन्दोलन चलाया जाय। वे कहते हैं कि लोगोंको मान लेना चाहिये कि कांग्रेस जेलमें है। (२) आन्दोलनके संचालकोको गुमनाम न रहना चाहिये; अपने आदेश वा सलाहकी जवाबदेही लेनी चाहिये और अपनी कार्रवाईके लिये अपनेको ही जिम्मेवार ठहराना चाहिये। (३) सबुताज (Sabotage) बन्द कर देना चाहिये। सबुताजसे नुकसान ही नुकसान है और (४) सबोको प्रकट होकर काम करना चाहिये, सत्याग्रह और गुप्त जीवन साथ साथ नहीं चल सकते। यदि कार्यकर्त्ताओंके बाहर आकर काम करनेसे आन्दोलन बन्द हो जाय तो भी परवाह नहीं करना है। श्रीजयप्रकाश नारायण वा अरुणा आसफअली प्रकट हो वा नहीं इसका निर्णय उनपर ही छोड़ देना चाहिये।

संचालको और उनके हितैपियोंमें खूब बहस मुबाहिसा हुआ। श्रीजयप्रकाश

नारायणने कहा कि मैं मानता हूँ, उस बूढ़ेने कांग्रेसको बनाया है, कांग्रेस उसका है, अगर वह चाहता है कि हम कांग्रेसका नाम नहीं इस्तेमाल करें तब कमसे कम मैं उसकी बात मानूंगा। मेरा आजाद दस्ता अलग है। मैं उसीके प्लेटफार्मसे काम करूंगा। पर और लोगोंके लिये कांग्रेसका नाम छोड़ना कठिन हो गया। उनने कहा कि जनता कांग्रेसके नामसे ही लड़ना जानती है ऐसे सङ्कटकालमें दूसरे नामसे उन्हें मैदानमें लाना हम साधारण कार्यकर्त्ताओंके लिये सभव नहीं है, इसलिये अगर आन्दोलन चलाना है तब कांग्रेसका नाम लेना है। फलतः सबोंने मिलकर तय किया कि हमलोग ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीका नाम न लेकर अबसे इण्डियन नेशनल कांग्रेसके नामसे सब काम करें। उनने फिर तय किया कि अबसे जो एलान या सर्कूलर निकलेगा उसपर निकालनेवालेका नाम रहेगा। लेकिन जो कार्रवाई हो चुकी थी उसकी जवाबदेही कौन ले और किस तरह, यह विवादास्पद ही रहा। श्रीदेवदास गान्धी जैसे हितचिन्तकोंकी सलाहसे तय हुआ कि एक वक्तव्य निकाला जाय जिसमें ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीको जिन जिन कामोंकी जवाबदेही लेनी चाहिये उन सबका जिक्र रहे और उसपर सभी संचालकोंके दस्तखत रहें। वक्तव्य तैयार हुआ पर दस्तखत करनेके मौकेपर कठिनाई आई। श्रीजयप्रकाश नारायण पहले आन्दोलनमें तो बाहर थे नहीं इसलिये उनकी जवाबदेहीका सवाल क्या उठता? फिर श्रीअरुणा आसफअली दिल्लीमें ही रहीं, नवम्बरमें बम्बई आईं इसलिये अक्तूबर तककी घटनाओंकी जवाबदेही उनपर डालना कैसे मुनासिब होता? फिर सरकारकी खूनी आंखोंका भी खयाल करना था। इसलिये सबके दस्तखत लेनेमें कुछ न कुछ दिक्कत पेश आई। श्रीसुचेता कृपलानी कहती हैं कि अकेली वही दस्तखत करनेको तैयार थीं। लेकिन उनका अकेला दस्तखत करना भद्दा जचता था और कोई आगे भी न आता था। इसी विषम परिस्थितिमें स्व० श्रीअल्लाबक्स (भूतपूर्व प्रधान मन्त्री, सिंध) वहां आ पहुंचे और वक्तव्य प्रकाशित करनेका घोर विरोध किया। उनने कहा, "आखिर वक्तव्य निकालनेका उद्देश्य क्या हो सकता है? यही न कि अगस्त आन्दोलनकी कार्रवाईसे गान्धीजीको पाक साफ समझा जाय? सो सरकार न समझेगी और गान्धीजीकी शानमें जो पड़ती आई है पड़ती रहेगी। इसके अलावा आपलोगोंकी बातोंके जोरसे आपलोगोंके कान पकड़ेगी। वक्तव्य निकालनेसे नुकसान ही नुकसान है, फायदा कुछ नहीं। इसलिये इसको फाड़ ही डालना है।"

और सबोंका रुख देखकर श्रीअल्लाबक्सने वक्तव्यको फाड़ दिया। सबुताजके सवालपर खूब गरमागरम बहस हुआ। श्रीमती सुचेता सबुताजसे कतई ताल्लुक नही रखना चाहती थीं और श्रीपटवर्धनजी वगैरह इसको छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे। अन्तमें निश्चय हुआ कि चूंकि सबुताजके सवालपर फुटक जाना ठीक नहीं है इसलिये इस प्रोग्रामको तीन महीनेके लिये स्थगित किया जाय।

उधर दो मार्चको २१ दिनका उपवास समाप्तकर गान्धीजी अग्नि-परीक्षासे सकुशल निकले थे। सारा देश खुशियां मना रहा था। आन्दोलनके संचालक भी फूले न समाते थे। विवादका अन्त करके उनने इण्डियन नेशनल कांग्रेसकी स्थापना की पर गान्धीजी अग्नि-परीक्षासे जो प्रकाश निकला था उसमें उनने देखा कि हम दो विचार धाराओंमें बह रहे है और दो दो दलमें बट रहे हैं।

विहारमें भी दो धाराये फूट निकलीं। उस समयके आन्दोलन सचालक बाबू श्यामसुन्दर प्रसाद लिखते है—सर्वश्री जगजीवनराम (आज अनस्थायी सरकारके श्रमसदस्य) सिद्देश्वर प्रसाद, ज्ञानदा प्रसन्न साहा, चक्रधर शरण और सखीचन्द जायसवाल गिरफ्तार हो गये। मैं अकेला बच गया और अपनी सूझके मुताबिक जिलाओंमें हिदायत भेजता रहा। दो चार दिनोंके बाद आचार्य बदरीनाथ वर्मा, वर्तमान शिक्षा-मंत्री, बिहार सरकार रांचीसे आगये; तब उनसे मार्ग दर्शन प्राप्त होने लगा इसके बाद पटनेमें कोई सगठन सम्बन्धी खास घटना उल्लेखनीय नहीं घटी। २८ सितम्बरको श्रीचन्द्रशेखर प्रसाद सिहके साथ मै गिरफ्तार हो गया। ३० सितम्बर या १ली अक्तूबरको आचार्य बदरीनाथ वर्मा भी गिरफ्तार हो गये। उसके बाद बाबू नथुनी सिह और श्रीध्वजाप्रसाद साहु आ गये और कामका संचालन करते रहे।

१७ दिसम्बरको श्रीचन्द्रशेखर प्रसाद सिहके साथ मै जेलसे छूटकर आ गया और फिर काममे जुट गया। ९ फरवरीको ध्वजा बाबू और ३ मार्चको नथुनी बाबू उसके बाद कीर्ति बाबू गिरफ्तार हो गये। फिर मैं अकेला पड़ गया। इस बीच गान्धीजीका उपवास हो चुका था। बड़े लाटके साथ उनका जो पत्र-व्यवहार हुआ था वह भी पत्रोंमें छप चुका था। इसके बाद इस बातकी चर्चा जहां तहां सुनाई पड़ने लगी कि घटनाये जिस ढंगसे घटी वह अच्छा न हुआ। किन्तु हमलोगोंके मनमें कभी अफसोस या पछतावा न हुआ। हम ऐसा मानते थे कि गवर्नमेन्टके आक्रमणका जवाब जनताने जैसा उचित समझा दिया। अब गान्धीजीके उपवासके

बाद हमलोगोंके लिये यह सोचना आवश्यक हो गया कि आगेका कार्यक्रम क्या हो। इस अरसेमें मैंने विपिन बाबू तथा कुछ अन्य प्रमुख कार्यकर्त्ताओंसे भी सम्पर्क कर लिया था और कार्यक्रम तय करनेमें उनको सम्मति भी उपलब्ध होने लगी।

हमलोगोंने, तय किया कि उस समय जो परिस्थिति थी उसमें केवल दो कामोंमे ही शक्ति लगाई जाय—स्वय सेवक तैयार करके राष्ट्रीय महत्वके अवसरोंपर जलूस वगैरह निकलवाना। इस सिलसिलेमें गिरफ्तारी हो तो उसका स्वागत करना। दूसरा काम गॉवोमें घूमघूमकर जनतामें जबानी और पर्चोंके जरिये प्रचार करना। इन दोनों कामोंसे जनताका मनोबल बने रहनेकी आशा थी। यह भी तय किया कि उस समयकी परिस्थितिमें तोडफोड़का (Dislocation) काम उपयुक्त न होगा; अत. तोड़फोड़ (Dislocation) को ध्यानसे हटा दिया जाय। शुरूमें तो हर जगह तोड़फोड़का (Dislocation) काम हो गया था और परिणाम स्वरूप जनताको दमनका जो सामना करना पड़ा उसे उसने बर्दाश्त कर लिया। किन्तु इक्के दुक्के जगहोंपर अगर कोई घटना अब होती थी तो गवर्नमेन्टके जुल्मका शिकार वहींके लोगोको बनना पडता था। इससे गॉववाले खुद भी चौकन्ना रहते और यह पसन्द न करते कि कोई उनके गांवके नजदीक तोड़फोडका (Dislocation) काम करे। इधर कुछ समाजवादी भाई इस बातपर जोर देते कि जहा तहां जारी रखा जाय, पर हमलोग इससे सहमत न हुये। इसी समय श्रीमती सुचेता कृपलानी पटने आईं। उनसे मेरी बातें हुई। यह २०-२१ मार्चकी बात होगी। उन्होंने कहा कि केन्द्रमें भी Dislocation का सवाल लेकर मतभेद उठ खड़ा हुआ है। अभी इस बातपर समझौता हो गया है कि ३ मास तक इसे बिल्कुल बन्द रखा जाय। उन्होंने अपनी राय कही कि जो परिस्थिति है उसमे ३ मासके बाद भी इसे शुरू करनेका सवाल नहीं उठ सकता; Dislocation को तो कार्यक्रमसे हटा ही देना है। मैंने कहा, मैं भी ऐसा ही सोचता हू और बिहारके हमलोग इसी आधारपर काम भी कर रहे हैं, दूसरे विचारवाले मालूम नहीं, क्या करेंगे। एक बात उन्होंने और कही। वह यह कि काँग्रेस कमिटीको उत्तरदायित्वसे बरी रखनेके लिये हमलोगोंने तय किया है कि परचामें अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीका नाम न रहेगा। अबसे हमलोग जो कुछ करेंगे इण्डियन नेशनल कांग्रेसके नामसे करेंगे। प्रान्तोंमे भी आप ऐसा ही कर लीजिये। उनकी बातोंसे ऐसा भी आभास मिला कि केन्द्रमें अधिकारके लिये दोनो विचारवालोंमें प्रतिद्वन्द्विता शुरू हो गई है। नेताओंकी गिरफ्तारीके

बादसे बहुत दिनों तक सुचेता देवी ही केन्द्रीय कांग्रेस आफिसका संचालन कर रही थीं। अब दूसरे लोगोंकी उसपर कब्जा कर लेनेकी कोशिश होने लगी थी। इधर बिहारमें भी कुछ इसी प्रकारकी प्रवृत्ति दीख पड़ने लगी।

श्रीसुचेतादेवीके जानेके बाद मैंने तीन मासवाली बात कार्यकर्त्ताओंको बतायी। मैंने ऐसा देखा कि समाजवादियोंको इसकी खबर पहलेसे ही थी किन्तु उन्होंने मुझसे कहा नहीं था। वे इस बातपर जोर देने लगे कि ३ मास तक Dislocation करना तो नहीं है लेकिन इस बीचमें उसकी तैयारी तो करनी है। अत प्रान्तसे इसी आशयका सरकूलर जारी होना चाहिये। मैंने इसे कबूल नहीं किया और अपने पूर्व निश्चित ढंगसे ही काम करता रहा। इसके बाद एक चीज और भी सामने आई। आजाद दस्ताका नाम मैंने सुना। मुझे ऐसा लगा कि उसका कार्यक्रम कांग्रेसकी लड़ाईमे अपनानेकी चीज नहीं हो सकती है। मैंने उसमें दिलचस्पी रखनेवालोंसे कहा कि जो लोग उसमें व्यक्तिगत रूपसे शरीक हो चुके हों उन्हें कांग्रेसके संगठनसे कोई भी सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। मेरे इस स्टैण्डको कबूल करनेमें वे लोग आना कानी करने लगे। वाद विवादमें स्वीकार यदि कर भी लेते थे तो व्यवहारमें इस नीतिसे ठीक-ठीक चलनेमें ढिलाई दिखलाते।

मई १९४३ में केन्द्रकी तरह प्रान्तमे भी सात आदमियोंकी डायरेक्टरेट बना। मैं चीफ डायरेक्टर रहा और दूसरे लोग उसके सदस्य रहे। उस मौकेपर भी मैंने आजाद दस्तावाली बात उठायी।

काफी वादविवाद हुआ। लोगोंने अन्यमनस्कता पूर्वक मेरी बातमे हामी भर दी किन्तु जाहिर था कि दिलसे उन्हें मेरी बात जंचती न थी। पीछे पता चला कि डायरेक्टरेटमें एक ऐसे सज्जन भी आ गये थे जो आजाद दस्ताके भी स्तम्भ समझे जाते थे और दूसरे कई लोग भी ऐसे थे जो उनसे सम्बन्ध रखते थे। मैंने यह भी देखा था कि साथ काम करनेवाले कई आदमी मुझसे छिपा कर इधर उधर जाया आया करते। अब एक दूसरेके प्रति अविश्वास शुरू हो गया था। यों तो बहुतसी घटनायें घटीं किन्तु एक विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। जुलाई १९४३ में मैं कलकत्ता गया हुआ था। वहां समाजवादी विचारके एक प्रमुख आदमीसे मुझे मिलनेका मौका मिला। जो आदमी मुझे उनके पास ले गया वह उन्हींके पास ठहरा हुआ था। वहां पहुँचनेपर बातचीतके सिलसिलेमे उन्होने मुझसे पूछा कि वह यहां क्यों ठहरा हुआ है? मैंने जवाब दिया—मैं क्या जानूँ?

आपके साथ ठहरा हुआ है और पूछते हैं मुझसे ? उनका सवाल मुझको अजीबसा लगा। एक बहुत बडा फरार जिसपर इनामकी घोषणा हो, उसके साथ कोई ठहरा हुआ हो, उसके सम्बन्धमें बाहरसे आनेवाले किसी आदमीसे ऐसा सवाल किया जाय, यह मुझे रहस्यमय लगा। उन्होने फिर मुझसे कहा कि यह कलकत्तेमें पढ़ना चाहता है, आप कोई प्रबन्ध करवा सकते हैं ? मैंने कहा—कलकत्तेमें मेरा जितना संबन्ध है उससे ज्यादा आपका है, इसके अलावा मेरा सम्बन्ध ऐसा है भी नहीं कि इस काममें कोई मदद दिलवा सकूं। × × × इसी समय बलदेव बाबू छूटकर आ गये थे। पटना लौटकर मैंने अपना अनुभव और विचार उनको बताये। उनकी राय हुई कि जहांतक बने फूट रोकनेका प्रयत्न किया जाय। इसके १५-२० दिनके बाद अगस्तके तीसरे सप्ताहमें मैं पटना सिटीमें श्रीशिवनन्दन मंडलके साथ गिरफ्तार हो गया।

हां ! एक बात लिखना भूल गया। अप्रिल मासमें मुझे दो आदमियोंने बारी बारीसे आकर कहा कि जयप्रकाश बाबू नेपालमें आपसे मिलना चाहते हैं। मईमें फिर श्रीब्रजकिशोर सिंहने भी कहा जो प्रान्तीय डाइरेक्टरेटके सदस्य भी थे। × × × मैंने कहा परचोंके जरिये उनका विचार जाननेका मौका तो मिला है, इसके अलावा आप लोगोंसे बातें भी हो चुकी हैं। फिर भी अगर कुछ और जानना बाकी रह गया हो तो आप ऐसा कर सकते हैं कि जयप्रकाश बाबूसे पूछ कर मुझे उनकी बातें समझा दीजिये। ब्रजकिशोरजीने कहा कि मैं उनकी बातोंको उतने साफ तौरसे आपके सामने नहीं रख सकूंगा; इसलिये खुद बात करलेना अच्छा होगा। उनके जोर देनेपर मैं उनके साथ हो नेपाल गया पर हमारे जयप्रकाश बाबूके कैम्पमें पहुंचनेके पहले ही वे चार अन्य साथियोंके साथ गिरफ्तार कर लिये गये। जो पुलिस दल उन सबोंको गिरफ्तार करके हनुमाननगर जा रहा था उसने हमलोगोंको भी पकड़ लिया। हमलोग हनुमाननगर पहुँचे तब एक काण्ड हो गया जिसके फलस्वरूप हम सभी मुक्त हो गये। मैं सीधे पटना वापस आ गया।"

इण्डियन नेशनल कांग्रेस और आजाद दस्ता

इण्डियन नेशनल कांग्रेसको अपनाते विहारको देर न लगी। ऑल इण्डियाकी तरह प्रान्तके कार्यकर्त्ताओंमें भी मतभेद जोर पकड़ता जाता था पर जन-सम्पर्कमें आनेवाले अधिकांश कार्यकर्त्ता अपने सामने एक ही दुश्मन सरकारको देखते थे। उनने जिले-जिलेमें अप्रैलमें राष्ट्रीय दिवस मनाया। आतंकित स्थानोंमें भी जिस तरह यह दिवस मनाया गया उससे उनके जोशका अनुमान किया जा सकता है। बाका थानामें ठीक बलुचियोंके संगीनके सामने सत्याग्रहियोंकी टोली अकड़ती हुई आई झंडा फहराते हुये नारे लगाते हुये। टोलीमे श्रीविन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, उनकी पत्नी श्रीमानकी देवी और उनके दो लड़के और एक विश्वेश्वर शर्मा। बलुचियोंने लड़कोंको मार पीटकर छोड़ दिया और तीनको जेल भेजवा दिया। जहाँ फौजी कैम्प नहीं थे वहाँका क्या पूछना ?

सेन्ट्रल स्टूडेन्ट्स कौंसिल और मजबूत हो गया था और इसके विद्यार्थी-प्रचारक इण्डियन नेशनल कांग्रेसका आदेश जिला-जिला पहुँचा रहे थे। इसके प्रधान शहीद अनिरुद्ध कुमार भूतकी तरह काम करते और वृद्धा मां उनकी पीठपर रहतीं। चाचा रिटायर्ड फर्स्ट इण्डियन आई० जी० (सर्व प्रथम हिन्दुस्तानी आई० जी०) और भाई एस० पी०। उनके घरको छोड़कर क्रान्तिकारियोंको मिलनेकी और कहाँ सुविधा हो सकती थी ? माँ सबका स्वागत करतीं। उनके सदेश लड़केके लिये संयोग रखतीं और लड़केका उनके लिये। स्टूडेन्ट्स कौंसिल और अनिरुद्ध बाबू जवानोंमें प्रिय होते जाते।

पर इण्डियन नेशनल कांग्रेसके प्रधान श्रीश्यामसुन्दर प्रसादको कठिनाई ही कठिनाई थी। रहने सहनेका कुछ ऐसा इन्तजाम था कि सबोंसे सब समय मिलना भी असंभव रहता था और उनके मध्यमे (medium) अनिरुद्ध बाबूकी वृद्धा मां जैसी तन्मयताकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। यही कारण था कि श्यामबाबूसे मतभेद रखनेवालोंमे औरोंके साथ साथ शहीद अनिरुद्धके भी कान उनके खिलाफ भर दिये। परिणाम स्वरूप श्याम बाबूकी स्वीकृतिके विना ही सेन्ट्रल स्टूडेन्ट्स कौंसिलकी योजनाके अनुसार कार्यकर्त्ता इकट्ठे हुये और इण्डियन नेशनल

कांग्रेस बिहार शाखाके डायरेक्टरेटका संगठन हुआ। इस डायरेक्टरेटमें सात जगहें थी जिनमें एक जगह रिक्त रखी गई और शेषकी पूर्ति की सर्वश्री सूरजनाथ चौबे, शिवनन्दन मंडल, रामनारायण चौधरी, अनिरुद्धकुमार सिंह, व्रजकिशोर प्रसाद सिंह और श्यामबाबूने। डायरेक्टरेटमें कोई श्यामबाबूकी विचारधाराका जबरदस्त समर्थक न था पर कई जबरदस्त विरोधी जरूर थे। फिर भी इण्डियन नेशनल कांग्रेसने आगेका जो प्रोग्राम बनाया उसे शानके साथ पूरा किया।

ऑल इण्डियाका आदेश आया कि अबकी आगाखां महलपर धावा बोलकर नौ अगस्त मनाया जाय। बिहारने सौ स्वयंसेवकोंको बम्बई रवाना किया जिनमें कुछ तो बंबई पहुँचते न पहुँचते गिरफ्तार हो गये पर बाकी बंबई पहुंचकर पूनेके लिये रवाना हुये और दादरमें पकड़े जाकर वर्ली जेलके मेहमान बने। फिर भी कई आगाखाँ महलके पास पहुँच ही गये जिनमें महनारके श्रीगौरीशंकर सिंह और शिवप्रसाद भी थे। बादको जब कैदी वर्ली जेलसे छूटे तब फिर आगाखां महलकी ओर रवाना हुये। पूना पहुँचकर वे दो दलमें बँट गये। पहले दलने तुरत महलके फाटकपर सत्याग्रह किया और दूसरे दलने ९ सितम्बरको। सत्याग्रहियोंको अच्छी मार लगी, वे सात दिन तक हाजतमें रखे गये और बादको यडवदा सेन्ट्रल जेलमें पहुँचा दिये गये।

प्रान्तमें भी सब जगह प्रदर्शन और गिरफ्तारियां हुई। पर कार्यकर्त्ता वर्गका जोश और जनताकी सहानुभूति ऊपरके कार्यकर्त्ताओंको सुराहपर न ला सकी। श्यामबाबू कहते कि इण्डियन नेशनल कांग्रेसका दृष्टिकोण अहिंसात्मक ही रहना चाहिये, इसके मार्फत सशस्त्र-क्रान्तिकी तैयारी न होनी चाहिये. इसलिये सशस्त्र क्रान्तिकारियोंकी जो संस्था आजाद दस्ता है, उसके सदस्योंको इण्डियन नेशनल कांग्रेसके डायरेक्टरेटमें शामिल नहीं होना चाहिये। उनके सहकारी उनकी बात तो सुन लेते पर काम करते ठीक उलटा और डायरेक्टरेटका चुनाव करके उनने अपनी विरोधिनी विचारधाराको मूर्तरूप भी दे दिया। इसलिये जब श्रीव्रजकिशोरने जयप्रकाश बाबूसे मिलनेका प्रस्ताव किया तब यही सोचकर अन्तमें श्यामबाबू राजी हो गये कि वहां जाकर विचारधाराका स्पष्टीकरण हो सकेगा।

दोनों जब नेपालमें पहुँचे तब श्री सूर्यनारायणने इन दोनोंको जयप्रकाश बाबूके यहां पहुँचानेके लिये अपने एक साथी 'शशि' के हवाले कर दिया। २९ मईकी रात थी। तीनों एक जमींदारके कामतमें टिके। उस कामतमें बाबू श्यामनन्दनको

कुछ चीजें थीं जिनको लेनेके लिये उनको दोपहरतक आ जाना चाहिये था। वे अबतक न पहुँचे थे, इसलिये शशिको चिन्ता हो रही थी। शशिजी रात ही को बाहर कहीं गये शायद श्रीगुलालीके यहां, पूछताछ करने। लौटे चिन्ताकी भारसे दबे हुये और बोले कि यह स्थान निरापद नहीं रहा, हमलोग पासके उस चमारके दालानमे चल सोवें। शिव! शिव! करके रात कटी। तड़के शशि चटपट उठे, देहातीकी तरह केश कपड़े बना लिये और निकले असलियतका पता लगाने। दो घंटेके बाद वह लौटे सिसकते हुए, बोले—श्यामबाबू, गजब हो गया! सेठजी पकड़ा गये! बाबा भी पकड़ा गये। आपलोग हट जाइये। हम जाते हैं श्रीसूर्य-नारायणको खबर देने। श्रीव्रजकिशोरने शशिको छः गोलियां दीं और कहा—उनको गोलियां दे देना। खबर क्या जयप्रकाश बाबूका सन्देश था। जब शशि उनकी टोहमें जा रहे थे तब उनने देखा, जयप्रकाश दल चुपचाप आ रहा है और उसको नेपाली संतरियोंने घेर रखा है। वह सन्न रह गये; पर ज्योंही पाखाना करनेके लिये नदी किनारे जयप्रकाशबाबू ले जाये गये वह उनके पास पहुँच गये। उनने कहा प्रतापको खबर दो, ज्योंही हम सरहद पार करें वे चाहे जैसे हो हमें छुड़ा लें।

इधर श्रीश्याम और व्रजकिशोर किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो रहे थे। उनकी विमूढ़ता दूर की जयप्रकाश दलने वहीं पहुँचकर जिसके संतरियोंने उनको भी गिरफ्तारकर लिया। सब जने इकट्ठे हुए और २० मईकी रात सबोंने काटी एक जगह, उसी कामतमे जहाँ श्यामनन्दन बाबूकी चीजें कबसे उनकी बाट जोह रही थीं।

वहांसे बैलगाड़ियोंपर लदकर सभी रवाना हुए हनुमान नगरको। और ९ बजे रातको वहां पहुँचे। सबके सब गार्ड रूमके बरांडेमें ठहराये गये। एक तरफ छोटा कमरा था और सामने खुली जगह थी। दीवारके सहारे दस-बारह राइफल रखे हुए थे। ये सब वहीं बेंचपर बैठ गये। इतनेमें बड़ा हाकिम आया। सबके सब उठ खड़े हुए और हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

बड़े हाकिमने पूछा—छिप छिपकर तुमलोग रहते थे? श्रीकार्तिकप्रसाद सिंह बोले—खुले आम रहते थे। कई बार यहां हाजिर हुए हैं। हम पीड़ित हैं। शरणार्थी है। बड़ा हाकिम—Who is the doctor? डाक्टर कौन है? डाक्टर वैद्यनाथ झा आगे बढ़े और अपना परिचय देने लगे पर उसने कहा—सब मालूम है। सब मालूम है। फिर वह हरेकसे दो एक बात करके चला गया।

बड़ा हाकिम फूसकी छतरीके नीचे चबूतरेपर रखी हुई कुर्सीपर बैठा, उनको बगलमें बेंचपर सूबा और सामने दरीपर सातो वदी और दो पेशकार। फिर ऐसे दरबारकी शोभा बढानेके लिये कुछ ही सन्तरी; बस।

दरबारमें बाबू श्यामनन्दन सिंह और डाक्टर राममनोहर लोहिया खूब बोले। श्यामनन्दन बाबू तो अपने सताये हुए मालिकके चिन्तातुर मैनेजर थे। एक टांगपर खड़े होकर बोले कि अंगरेजी राज्यमें विपद पड़ी तो मालिक यहां भाग आये पर यहां भी आफत! हमारे सीधे सादे मालिकको जुरमाना लेकर छोड़ दीजिये, हुजूर! डाक्टर साहब एफ० ए० पास जमींदार हैं। शरणागत हैं। कुछ बहिराष्ट्रीय कानून भी जानते हैं। विलायत भी शरणागतकी रक्षा करता है और नेपाल तो हिन्दूराज है। इसलिये हिन्दुत्वके अभिमानी डाक्टर साहब नेपाल राजकी शरण आये हैं। औरोंने भी अपनेको शरणार्थी ही बतलाया।

बड़ा हाकिम सबकी बातें सुन रहा था। उसके हाथमें कुछ फोटो थे जिनसे शरणार्थियोंके चेहरेका मिलान कर रहा था। जयप्रकाश बाबू उदास थे और सर भी झुकाये रहते थे। बड़े हाकिमने पूछा—वह इतना उदास क्यों है? तुरत मैनेजर साहबने कहा—तकलीफने हमारे मालिकको परेशान कर रखा है। × × × फिर दरबार बरखास्त हो गया।

इधर इन बन्दियोंके इष्ट मित्र चुपचाप बैठे न थे। अफसरों वा उनकी नाकके बालकी जेबोंको गरम करके सबोंको छोड़ा लेना चाहते थे। उनने हनुमाननगरसे काठमाण्डू तक अपना सम्पर्क स्थापित कर लिया था। और जब उनको आशा हुई कि छ सात हजारका घूस बन्दियोंको घर लौटवा सकेगा उनने जयप्रकाश बाबूके पास अपना गुप्तचर भेजा। यह गुप्तचर चार बजे शामको वहां पहुंचा जबकि बरंडेपर सातो साथी उदास बैठे थे। एकाएक जयप्रकाश बाबूने देखा—कुछ दूरपर एक आ खड़ा है। वे पेशाब करनेके बहाने उनके पास गये। वह बोला—सब ठीक है। लौटकर उनने साथियोंको सन्देश सुनाया। फिर सबके चेहरे हरे हो गये। उनने समझा घूसने काम किया। रातको हसी खुशीकी बातें हुई जिसके बीच जयप्रकाश बाबू बोले कि अबकी निकलूं तब इस स्वतंत्रभूमिको अन्तिम नमस्कार करूं। (Good bye to th s independant land) सब सोनेकी तैयारीमें लगे। छ सात सिपाही भी बाहे बेरामें उनके साथ सो गये और एक हथियार बन्द पहरा देता रहा।

आधी रात हुई होगी कि दनादन गोलियां चलने लगीं, शोर होने लगा। रोशनीको गोली लगी। अन्धेरा हो गया। फिर गोलीके रुकते ही झंडे लेकर कितने आगनमें आ गये, वरंडेपर चढ़ गये और भागो! भागो! मारो! मारो! चिल्लाने लगे। पर शशि चिल्ला रहे थे—भागिये सेठजी! भागिये सेठजी! तुरत सबके सब भाग गये और सारा खेल खत्म छः सात मिन्टोमे। लेकिन श्यामसुन्दरजी और व्रजकिशोरजी जहां थे वहीं रह गये। फौरन लोग दौड़े और उन्हें भगा लाये।

इस काण्डमे शशिने गजबका पार्ट अदा किया। तीस मील दौड़कर उसने सन्देश दिया श्रीसूर्यनारायणको। सूर्यनारायण इतनी तेजीसे आगे बढ़े कि दस ग्यारह आजाद सैनिक तो पिछड़ गये और मोरचेपर पहुँच सके केवल चौबीस। और शशि साथ! आते ही सबोने छापा मारा। श्री सूर्यनारायणने देखा, इधर सरदार नित्यानन्दका राइफल फेल कर गया है और उधर एक सन्तरी उनका निशाना ले रहा है। उनने उसी दम अपना रिवालवर नित्यानन्दजीकी ओर फेंका और उछलकर सन्तरीके राइफलको झटका दिया। उसका निशाना खाली गया और उसका राइफल भी छीना जाने लगा। इसी बीच नित्यानन्दजीने रोशनी चूर चूर कर दी। फिर तो अन्धेरा हो गया जिसमें श्री नित्यानन्द और गुलालीकी गोलियां जो गुल खिलाने लगीं उसका ख्वाब भी नेपालने नहीं देखा था।

जयप्रकाश बाबू पहुँचे कलकत्ता और उसे अपना अड्डा बनाया। उनमे और ताकत आ गई जो लोगोको अनायास अपनी ओर खींचने लगी। आजाद दस्ता मजबूत हुआ लेकिन इण्डियन नेशनल कांग्रेसकी समस्या ज्योंकी त्यों बनी रही। जुलाईमे जब श्यामसुन्दर बाबू कलकत्ता गये तब फिर उनने जयप्रकाश बाबूसे मिलना चाहा पर उन्हें मिलने नहीं दिया गया। उसी मासमें लेखक जेलसे निकला, उनसे मिला और उनकी कठिनाइयां जानी। उनने कहा कि समाजवादियोके साथ काम करना मुश्किल है; मैं सोच रहा हूँ, मुझे भी यहां सत्याग्रह कमिटी बना लेना चाहिये जैसा कि श्रीअन्नदाप्रसाद चौधरीने बंगालमे किया है। लेखकने उन्हें ऐसा करनेकी राय न दी और एकनाके लिये सचेष्ट रहनेको कहा। वह आजाद दस्तेके चन्द जवानोंसे भी मिला और उनके दृष्टिकोणसे परिचित हुआ। उसने श्यामसुन्दर बाबूसे कहा कि उनको अपना अड्डा ऐसी जगह ले जाना चाहिये जहां सभी कार्यकर्त्ता बेरोक आ सकें। उनने ऐसा किया भी। फिर लेखक उनके साथ रहने लगा और अपने आजाद दलके दोस्तोंसे भी

वहीं विचार-विनिमय करने लगा। लेखकका मत रहा है कि अहिंसामें ही हिन्दुस्तानको पूर्ण स्वतन्त्रता मिल सकती है पर हां ! पूर्ण स्वतन्त्रता दिलानेवाली अहिंसा अभी जनतामें विकसित न हो पायी है, उसका विकास करना है और जान-मालका मोह छोड़ उसमें लग जाना है। साथ ही लेखक मानता आया है कि सशस्त्र-क्रान्तिका उपयोग करके ही दुनियाका कोई राष्ट्र अबतक अपनी आजादी लेता आया है और आज भी दुनिया इतनी सुधर नहीं गई है कि राष्ट्र उस सनातन मार्गको छोड़ देवें। जबतक शोषणका अन्त करनेमें सत्याग्रहको कामयाबी नहीं मिलती तबतक सुपरिचित राहसे चलनेकी प्रवृत्ति उस सनातन मार्गको लुप्त न होने देगी। जिस हदतक अहिंसा अधूरी है उस हदतक समाज सशस्त्र-क्रान्तिको अपनायगा। उसको साधक मिलेंगे और आपत्तिकालमें उनसे सामाजको लाभ भी पहुंचेगा। इसलिये अहिंसाके और सशस्त्र-क्रान्तिके साधकोंको आपसमें लड़ना नहीं है। उन्हें अलग अलग अपना संगठन बनाकर अपने अपने साधनका विकास करना है। एक संगठन द्वारा काम करनेसे दोनों एक दूसरेको पनपने न देंगे। अहिंसावादी जितना खुल सकेगा उतना उसका संगठन मजबूत होगा पर सशस्त्र-क्रान्तिवादी जितना छिप सकेगा उतना अपने संगठनको मजबूत बना सकेगा। इसलिये दोनोंका अलग अलग काम करना ही स्वाभाविक है। और ऐसा करके ही अपने अपने समर्थकोंकी शक्तियोंका दोनों पर्याप्त उपयोग कर सकेंगे। लेखकका यह भी मत था कि इण्डियन नेशनल कांग्रेसको अहिंसावादियोंका ही संगठन बने रहने देना चाहिये और इसमें कोई कठिनाई नहीं लानी चाहिये क्योंकि सशस्त्र क्रान्तिकारियोंके लिये आजाद दस्ता है ही। वह जिन जिन आजाद-दस्तावालोंसे मिला सबोंने उसका समर्थन किया पर साथ ही कहा कि जबतक श्यामसुन्दर बाबू चीफ डाइरेक्टर रहेंगे आन्दोलनका काम ठीकसे नहीं चलेगा। श्यामसुन्दर बाबूके आलोचक आजाद दस्तावाले ही नहीं थे बल्कि स्टूडेन्ट्स कौंसिल और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टीके लोग भी थे। लेखकने सबोंके एक दो कार्यकर्त्ताओंको एक साथ बुलाया और श्याम बाबूसे खुलकर बातें करवायीं। उस समय तो मालूम हुआ कि सारी गलतफहमी मिट गई और अबसे योजनानुसार काम होगा पर दूसरे दिनसे ही वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी सो कायम रही। फिर श्री श्यामसुन्दरजी और शिवनन्दन मण्डल गिरफ्तार कर लिये गये। एक डायरेक्टर ब्रजकिशोर पहले ही पकड़ लिये गये थे और दूसरे शहीद अनिरुद्ध कुमार भी पटनामें रोग ग्रस्त हो

जानेके कारण काम करनेसे असमर्थ हो रहे थे। केवल श्रीसूरजनाथ चौबे और श्रीरामनारायण चौधरी मैदानमें रह गये थे। इसलिये प्रान्तीय डायरेक्टरेटके पूर्ण संगठनका मौका आ गया जिसके लिये २९ अगस्तको जिला जिलाके प्रतिनिधियोंकी बैठक करना तय हुआ।

तारीख ठीक करके लेखक आरा चला गया जहां पहले पहल श्रीअंबिका सिंह, शिवपूजन सिंह वगैरहसे उसकी भेंट हुई। वे छात्र-संघके कार्यकर्त्ता थे। श्रीअंबिका सिंह हिरासतसे भाग आये हुये थे और कर्मठ माने जाते थे। उन सबोंने कहा कि प्रान्तकी नीतिका हमें पता नहीं लगता है। हमारे जिला प्रतिनिधि सूर्यनाथ चौबेजी पिस्तौल लेकर आगे फिरते हैं और सेक्रेटरी गोली सहित गिरफ्तार होते हैं; अगर प्रान्तकी नीतिके अनुसार ही ऐसा हो रहा है तब हमलोग अपना अलग संगठन करेंगे। लेखकने उन सबोंको पटना चलनेके लिये कहा। पर २६ अगस्तको एक पुराना साथी आया और लेखकको जयप्रकाश बाबूसे मिलाने कलकत्ता ले गया। कलकत्ता रवाना होनेके पहले लेखकने अपने औफिस इन्चार्ज श्रीअवधेशनारायण सिंहको अपनी अनुपस्थितिकी सूचना दे दी और यथोचित कार्रवाई करनेके लिये कहा।

कलकत्तेमें जयप्रकाश बाबूने लेखकको अपने सम्पर्कमें आनेका काफी मौका दिया। लेखकने उनसे कहा कि मुझको पार्टीसे नफरत है और मैंने सुना है कि आप कट्टर पार्टीवाले हैं; फिर भी आपकी बुलाहटपर मैं दौड़ आया हूँ क्योंकि मैं मानता हूँ, मनुष्य बदलता रहता है और विश्वास है कि वर्त्तमान संकटने आपको पूरा पूरा बदल दिया है। लेखकने उनसे ऐसा भी कहा कि बिहारकी राजनीतिमें उसका स्थान नहीं है; सत्याग्रहके समय वह खूब आगे आ जाता है और शान्ति-कालमें उतना ही पीछे रह जाता है। उसके साथ कोई गिरोह-विरोह नहीं है। इसलिये उसपर कहाँतक भरोसा किया जा सकता है—इसे जान आप बातें करें। जयप्रकाश बाबूने काफी बातें कीं—साथीकी तरह, मित्रकी तरह और सबसे बड़ी बात—मानवकी तरह और साफ साफ कहा कि मैं मानता हूँ कि (१) इण्डियन नेशनल कांग्रेस बिहार शाखाके लिये प्रचार, प्रकाशन, प्रदर्शन तथा सत्याग्रहके अन्यान्य काम करना ही उचित है, हां! वातावरण अनुकूल हुआ तो इसकी ओरसे तोड़ फोड़ भी हो सकता है। (२) आजाद-दस्तावालोंको उसमें नहीं घुसना है; उनका अपना संगठन है और उन सबोंको उसे मजबूत बनाना है; (३) कांग्रेस

सोशलिस्ट पार्टीके संगठनकी अभी कोई जरूरत नहीं है। पार्टीके जो सदस्य अहिंसात्मक ढंगसे काम करना चाहते हैं वह इण्डियन नेशनल कांग्रेसमें शामिल हो जायें और जो सशस्त्र-क्रान्तिकी ओर हैं वह आज़ाद दस्ताको अपना लें। (४) अहिंसा-मार्गी और सशस्त्र-क्रान्तिकारियोंके संगठन और हिसाब-किताब तो अलग अलग रहेंगे पर दोनोंमें सद्भावना रहेगी, दोनों एक दूसरेका विरोध या एक दूसरेके खिलाफ प्रचार नहीं करेंगे।

आज़ाद-दस्ताको लेकर भी बातें हुयीं। लेखक कहता कि आज़ाद-दस्तावालोंको हथियारका संग्रह और अभ्यास करते रहना चाहिये और जब परिस्थिति परिवर्त्तन कल्कि अवतारका रूप धारण करके हमारे बीच अवतीर्ण हो तब उन्हें निकल पड़ना चाहिये। जयप्रकाश बाबू कहते कि उनको कुछ न कुछ काम तो करते रहना है ताकि मौका आनेपर वे कामके अयोग्य न साबित होवें। इस मुद्देपर मतैक्य अनावश्यक था क्योंकि लेखक आज़ाद-दस्तेका न था।

उनने लेखकको छः हजार रुपये भी दिये जिस रकमको श्यामनन्दन बाबूने एक जगह जमा कर दिया। उसमेंसे लेखक दो बारमें कुल ३५००) रु० ही ले सका। बाकी रुपयेकी जरूरत आज़ाद-दस्तेको थी। इसलिये श्यामनन्दन बाबूने उन रुपयोंको अपने पास ही रख लिया। हालांकि पैंतीस सौमेंसे आठसौ रुपये लेखकके हाथसे ही वे किसी-किसीको दिला चुके थे।

लेखक ३ सितम्बरको कलकत्तेसे लौटा और सुना कि २९ अगस्तको बैठक हुई जिसकी कार्रवाईके फलस्वरूप डायरेक्टरेट आज़ाद-दस्ताके लोगोंकी मुट्ठीमें आ गया है। उसने श्रीसुखदेवेशनारायण सिंहसे बैठककी रिपोर्ट मांगी पर उनने कहा कि कोई रिपोर्ट नहीं है। सुखदेव बाबूपर लेखकका विश्वास था और उनपर सेन्ट्रल स्टूडेण्ट्स कौंसिल, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी और आज़ाद-दस्ता-वालोंका। उनको लेकर वह सभी संस्थाके सूत्रधारोंसे मिला पर किसीने जयप्रकाश बाबूकी बात माननेकी ईमानदारी नहीं दिखलायी। अब जयप्रकाश बाबूकी आशा ही रह गयी थी। उनने कहा था कि निकट भविष्यमें दो सप्ताहमें मिलूँगा और लेखकका विश्वास था कि उनसे भेंट हुई कि सारा मामला सुलझा। पर एकाएक उसे धक्का लगा। २६ सितम्बरको उसे पटनेके एक मित्रने कहा कि दो-एक दिन हुये कहीं पंजाबमें जयप्रकाश बाबू पकड़ लिये गये। उसने उस खबरको सच मान लिया।

जयप्रकाश बाबूने लेखकसे कहा था कि उन्हें कश्मीर जाना है और राहमें पंजाबके कार्यकर्त्ताओंके बीच कुछ काम भी कर लेना है। लेखकने पंजाब जाने और वहांके कार्यकर्त्ताओंके सम्पर्कमें आनेको बड़ा खतरनाक माना था और पंजाबसे प्रत्यक्ष संबन्ध न रखनेकी सलाह दी थी। पर उनने कहा कि मुझको पंजाब नहीं ठहरना है; वहाँके कार्यकर्त्ताओंसे दिल्लीमे ही मिल लेना है। सो वे घूमते-घामते दिल्ली पहुँच गये। वहाँ बुलाहट थी श्रीअरुणा आसफअलीकी जो वहाँ सुपरिचित होनेकी वजहसे न भेजी गईं। दिल्लीमे जिनसे मिलना था उनसे मुलाकात नहीं होती थी। इसलिये वहाँ आठ-दस दिन रुकना पड़ा। वहाँके साथी सावधान न थे, उनके दलमे पंजाबके भेदिये भी शामिल हो गये थे और जयप्रकाश बाबूकी गतिविधिका पता रखते थे। वे चाहते तो दिल्लीमें ही उनको पकड़वा देते। पर थे वे पंजाब-पुलिसके कर्मचारी, इसलिये नहीं चाहते थे कि जयप्रकाश बाबूको पकड़नेका यश दिल्लीकी पुलिस लूटे। १७ सितम्बरको एक छोटे स्टेशनपर सवार होकर वे पेशावरके लिये रवाना हुये। डब्बेमें उनकी जगह रिजर्व थी। पर साथ साथ तीन जगहें और रिजर्व थीं—एक मुस्लिम परिवारकी जिसका कोई कभी आया नहीं; और डब्बा बन्द करके जयप्रकाश बाबू अकेला ही सफर करते रहे। सुबहमे अमृतसर आया। बाहर निकल उनने चाय पी और फिर डब्बा बन्द कर लिया। फिर किसीने दरवाजा खटखटाया। उनने दरवाजा खोल दिया और कहा—आइये, जगहें खाली हैं। पर कोई आया नहीं; सब दरवाजेपर ही रहे। अब उनका माथा ठनका। वे क्या कर सकते हैं क्या नहीं—सोच ही रहे थे कि एक अंगरेज कुछ सिखोंको लेकर अन्दर आया, उनका नाम पूछा, उनकी तलाशी ली और उनको गिरफ्तार कर लिया।

जयप्रकाश बाबूमे दो विशेषतायें है :—यह कि उन्हें सी० आई० डी० फोबिया नहीं सताती—उनसे मिलनेपर लेखकको उन झंझटोंकी याद आ जाती थी जिन्हें औरोंसे मिलनेके लिये बरदाश्त करने पड़ते रहे हैं—और यह कि जहाँ कुछ समय तक निश्चिन्ततासे काम चला कि वे बेपरवाह हो जाते हैं जिसकी वजहसे कई बार मुशीबतोंमें पड़े हैं। इस बार भी वे बेपरवाह थे और अपने साथ पता ठिकानाके कागजात लिये हुए थे। बस पुलिसको पेशावरका ठिकाना मालूम हुआ और वहाँसे श्रीआनन्दजीका पता लग गया जो वहाँ जयप्रकाश बाबूके ठहरनेका प्रबन्ध करते। आनन्दजी गिरफ्तार हुए और उनसे पुलिसने बहुत सी बातें उगलवा लीं और

कितनोंको पकड़ लिया। इधर जब लेखकको फिर जयप्रकाश बाबूसे मुलाकात हुई तब उनने आनन्दजीकी चर्चा की। आनन्दजी उनसे अबकी मिले; अपने बयानपर लज्जित थे पर बोले कि मेरा खयाल है मेरे बयानसे आपको कोई ज्यादा नुकसान न पहुँचा होगा। लेखकने कहा कि हाँ। डाक्टर वैद्यनाथ झाने भी ऐसा ही एक बयान दिया था जिससे आप लोगोंका कोई नुकसान नहीं हुआ। जयप्रकाश बाबूने बात काटी। उनने कहा कि बयान देना ही बुरा है, उससे नुकसान पहुँचता ही है, कमसे कम पुलिसको अपने अनुमानका प्रमाण तो मिल जाता है, और श्रीआनन्दके बयानसे तो बडा नुकसान पहुँचा। मैंने तो बराबर पुलिसवालोंसे इतना ही कहा कि मै आपकी बात नहीं सुनता, मैं आपको कोई जवाब नहीं देता।

और कब ? जब कि लाहौरके किलेकी काल कोठरीमे वे असीम कष्ट पा रहे थे। उन्हें कभी मारा पीटा नहीं गया। पर उससे भी ज्यादा तकलीफ दी गई। इस ढंगसे पारापारी पुलिसवाले इतने सवाल उनसे करते कि सोनेका मौका नहीं मिलता था और सेहत इतनी गिर गयी थी कि खाना-पीना हराम हो गया था। पजाबके तांगेवालोंकी जबान भले ही अच्छी हो पर पुलिसकी जबानमें ता इन्सानीयत नहीं है जिसका खराबसे खराब अनुभव उनको हो रहा था।

इधर कार्यकर्त्ता उनके नामपर शतरजकी गोटी बेठा रहे थे। लेखकको अब उनसे कोई उम्मीद नहीं रह गई थी। फिर भी लेखक कलकत्ता पहुँचा। श्रीअरुणा आसफअली उससे मिलीं और उसके सामने रजो साहब और श्यामनन्दन बाबूसे भी बातें कीं। वे लेखकके स्टैण्डको मानतीं थीं और मुक्त कण्ठसे कहती थीं कि जयप्रकाश बाबूके सम्बन्धमें लेखक जो कहता है ठीक कहता है। उनके सामने तय हुआ कि बिहार शाखाके डायरेक्टरेटका फिरसे और उसी विचारदृष्टिसे चुनाव हो, जिसे लेखक सामने रख रहा है और जो ठीक जयप्रकाश बाबूकी भी विचारदृष्टि रही है। लेखक प्रसन्न हुआ और उसने सारी बातें श्रीसुचेता कृपलानी और अन्नदा प्रसाद चौधरीको कह सुनाई। उन दोनोंने कहा कि अलग होना अनिवार्य है, वे सब जो कहते हैं करते नहीं हैं और जो करते हैं कहते नहीं हैं। लेखकने पूछा—अगर अबकी वैसी बात नहीं हो ? दोनों बोले—फिर मेल हो जाये और पक्का मेल। मेलके लिये इतना ही जरूरी है कि वे सब इण्डियन नेशनल कांग्रेसके प्लॉटफार्मसे सशस्त्र-क्रान्तिकी बात न कहें न करें, और जब तक खुलेआम जनता तोड़ फोड़के

चाहते थे जिसमे उन्हें सफलता भी मिली जब कि उनका प्रधान कोपभाजन सीताराम मंडल उनके हाथ मारा गया।

गोविन्द-दलमें एक बूढ़ा था हेसजापुरका। उसका लड़का एक डकैतीमें मारा गया था। वह अपने पुत्र शोकका कारण श्रीगोविन्द सिहको ही मानता था और उसीने उनको सदलबल पकड़वा दिया। सरकारने १९४५ में उनको और श्री कुशेश्वर सिहको फांसीपर लटका दिया।

उत्तर मुङ्गेरमें श्रीमहेन्द्र चौधरी सदलबल जनताको आतंकित कर रहे थे। लगभग पचास जवान कभी कभी उनके साथ लग जाते जिनमे कितने गोगरी राष्ट्रीय विद्यालयके लड़के होते। फिर डकैतियोका तांता लग जाता, खून होते और बलात्कार भी। राष्ट्रीय वातावरणमें रहते हुये भी, उनने अपने अन्दर ऐसी कामलिप्सा जाग्रत कर ली थी जो भीषण बलात्कारके रूपमें प्रकट होती। आप अपनेको आजाद दस्तेका कहते। कांग्रेस सोशलिष्ट पार्टीका बतलाते। सुडौल शरीर जब फौजी पोशाक पहने पीठपर राइफल बांधे पहले पहल निकला तब सरकारके विरोधियोका सर ऊँचा हो गया। पर दुर्घटनापर दुर्घटना होने लगी। सोनमा बेला और छर्रापट्टी जैसे काण्ड हुये जहां उनने डकैतीके साथ साथ साथियो सहित एक वयस्का और एक बालिकापर बलात्कार किया, फिर सबका सर नीचा हो गया।

१९४३ के पूर्वार्धमें वे सारन जिलेमें जा छिपे थे जहां अपने सुपरिचित अड्डेपर वे पकड़े गये और १९४५ में फांसी लटकाये गये। इनके दलका कारी जोलाहा गोलीसे मारा गया और कितने सुपरिचित अभी जिन्दे हैं। उनको मालूम है कि उनके धनको कितने अच्छो अच्छोने बांटापर आज उनकी बदनामी बांटनेके लिये कोई आगे नही बढ़ रहा है।

मुङ्गेरके तीसरे दलका अड्डा ढोल पहाड़ी कैम्प था। स्थापित तो किया इसको डा० भुवनेश्वरप्रसाद सिहने कांग्रेसका काम करनेके लिये और सो हुआ भी। इसके स्वय-सेवक राष्ट्रीय त्योहारोको मिलिटरीके सब अत्याचार सहते हुये मनाते आये। पर धीरे धीरे यह कैम्प सब तरहके फरारोका अड्डा बनने लगा और शस्त्रास्त्रकी ओर झुका। श्रीमहावीरप्रसाद यादव, वीरन सिह, जगत नारायण पंजियार और गिरजाप्रसाद साहु सशस्त्र क्रान्ति करके सरकारको उलटकर किसान राज स्थापित करनेका मनसूबा बांधने लगे। कुछ दिनोतक इन्हें विहार विद्यापीठके एक विद्यालकारका नेतृत्व मिला। पर वे डकैतीकी ओर

इस तरह झुकने और लोगोंको झुकाने लगे कि इन लोगोने उन्हें हटा दिया।

इनकी जरूरते थोड़ी थीं—गाववाले खानेको दे देते और ठहरनेका स्थान बता देते। अमीर भी उनका खयाल रखते क्योंकि वे समझते थे कि ये कार्यकर्त्ता मेलमें रहेंगे तो हमारे यहा डाका नहीं पड़ेगा। १९४३ के शुरूमें संजीवन और ननमा नामके दो फरार इस दलमे आ मिले। दोनो बहादुर थे और अपने साथ काफी फौजी पोशाक और कुछ हथियार भी लाये थे। इन दोनोके संसर्गसे यह दल सशस्त्र-क्रान्तिकारियोका दल बन गया। पर सजीवन और ननमासे दलकी पटरी बैठती नहीं थी। दोनोंने एक बार डकैती की। दलने बुरा माना पर दोनोंको माफी दे दी। उनके खिलाफ बलात्कारकी शिकायत भी आयी और दोनो सचेत कर दिये गये। फिर सजीवनजी कहीं चले गये और ननमा कैम्पके ही हथियार लेकर नया गाव और कुमैठाके जवानोसे मिलकर डकैती करने लगा। दलवालोंने पकड़ा और कहा—हमारे हथियार वापस करो, वचन दो कि अबसे डाका न डालोगे। वह हीला हवाला करने लगा। तब वह दोपहरको एक कमरेमें बन्दकर दिया गया और निस्तब्ध रात्रिको निकाला गया। उस समय भी उसका रुख दिन जैसा था। अन्तमे दलवालोने उसे एक ओर ले जाकर पटक दिया। एक उसकी टांगपर दूसरा उसकी छातीपर और उसके एक एक हाथपर बैठ गये। फिर एकने सर संभाला और दोने लाठीकी कैंचीसे उसके गलेको पीच डाला।

१९४४ के अप्रिलमे दलने आजाद दस्तेकी ट्रेनिङ्ग भी ली। पर ट्रेनिङ्ग लेते समय बन्दूककी आवाज होती और आसपासके लोग डर जाते। फिर पन्द्रह बीस दिनोंके भीतर इस तरह पुलिस और मिलिटरीका आक्रमण होने लगा कि आजाद तितर बितर हो गये।

भागलपुरके परशुराम दलने जब सरकारके हिमायतियोसे बदला लेनेका प्रोग्राम बनाया तब उसका कर्मक्षेत्र बाका सबडिविजन भरमें फैल गया। ककवाडाके ठाकुर रुद्रेश्वरीप्रसाद सिंह फरारोको ही पकडानेमे नहीं, बल्कि तमाम कांग्रेस-वालोको सतानेमें आगे रहे। इसलिये इस दलने उनकी कचहरिया जलाईं और उनके भेदिया गुलाबी चौधरीका खून कर दिया। पजवाराके ठाकुर युगलकिशोर सिंहने अपने भगिना श्री टी० पी० सिंहको उकसाकर जो उस समय अतिरिक्त जिला मजिष्ट्रेट थे श्रीराघवेन्द्रनारायण सिंहके ८२ बीघा धानको लुटवा दिया। इसलिये उनकी कचहरियां भी जलायी जाने लगीं। फिर जिन जिनने कार्य-

कर्त्ताओंके खिलाफ गवाही दी वे लूटे जाने लगे, पीटे जाने लगे और खास खास तो मारे जाने लगे। बादको श्री परशुराम सिंहने बदलाकी भावनाको नियंत्रित करना चाहापर वह इतनी उग्र हो उठी थी कि इनके काबूके बाहर हो गयो थी। फिर वे अपने दलसे अलग बेलहर थानेमें रहने लगे। धौरी गांव इनका अड्डा हो गया। यहींसे श्री जगदम्बा सिंहके सुप्रबन्धसे विप्लव नामक आजाद अखबार निकलता था जिसने श्री परशुरामके नामको चारों ओर फैलाया था।

परशुराम दलकी विचारधारासे मौके बेमौके डट जानेकी भावना तो कार्यकर्त्ताओमें आ गयी थी। बहारेनामे नरसिंह बाबू थे, २३ कार्यकर्त्ताओके साथ। उनने सुना कि पुलिस और मिलिटरी धमराही सामान जब्त करने गई है। उनने तुरत जलूस निकला और कई गांवकी जनताको उत्तेजित करते हुये उस सरकारी ताकतके सामने डट गये। पुलिस और मिलिटरी संगीन तानकर पैंतरेमें खड़ी हो गई और कार्यकर्त्ता दल झंडे हिला हिलाकर नारोंसे आसमान फाड़ने लगा। काफी जनता भी इकट्ठी हो गई। फिर तो जब्तशुदा चीजोको वहीं छोड़ पुलिस और मिलिटरी नौदो ग्यारह हो गई। पर यह भावना नरसिंह बाबूकी गिरफ्तारीसे कमजोर पड़ गयी। उनकी गिरफ्तारीके बाद उनकी जन्मभूमि बेलडीहाको पुलिसने और तंग करना शुरू किया। अप्रिलके धावेमें वह गांव बहुत लूटा खसोटा गया। मर्दोंको एक जगह इकट्ठा करके भीष्म सिंह दारोगाने घर घरमे बलूचियोको घुसाया। एल० पी० गर्ल्स स्कूलके मास्टर श्रीदामोदर सिंहकी माने खबर दी कि स्त्रियोके शरीरसे गहने छीने जा रहे हैं। दामोदर बाबूने श्रीभीष्म सिंहका ध्यान इस ओर खींचा और भीष्म सिंहजीने बलूचियोंका ध्यान दामोदर बाबूकी ओर खींचा। दामोदर बाबूपर मार पड़ने लगी और इतनी पड़ी कि हिलना डुलना तक कठिन हो गया। इस भीष्म-आततायीपनके अवसरपर गहने छीने जानेकी वजहसे कितनी स्त्रियोके नाक कान फट गये। दो स्त्रियोपर बलात्कार भी हुआ।

यह वह जमाना था जब श्रीपरशुराम सिंह परशुराम दलके नेतृत्वसे वञ्चित हो रहे थे। बादको वे झरिया चले गये जहांसे डाक्टर नरेन्द्रप्रसाद झा नामके उनके साथी उन्हें धौरी बुला लाये। उसी रातको मई १९४३ में पुलिसने गांवपर छापा मारा और दुक्खन चमारके घर इनको पकड़ लिया।

परशुराम दलकी ताकत थी श्रीमहेन्द्र गोपमें; और जब अपनी बनाई राहसे ही

आगे बढ़नेकी हिम्मत परशुराम बाबू, नरसिंह बाबू और राघवेन्द्र बाबू वगैरह नहीं दिखला सके तब श्रीमहेन्द्र गोप उस राहपर आगे बढ़े और नेता बन गये। श्रीमहेन्द्र गोप बदनाम आदमी थे—अनपढ़ और उजड्ड। अगस्त १९४२ में ११० दफाके शिकार होकर आप जेलमें बन्द थे और उसी महीनेमें जमानतपर रिहा हुये थे। रिहाईके मौकेपर श्रीबलभद्रनारायण सिंह मोखतारकी मौजूदगीमें बांका और अमरपुरके दारोगा श्रीनसीरुलहक और हरिहर सिंहने उनसे कहा कि कांग्रेसके नामपर इलाके भरमें चोरी डकैती करो, जबतक पुलिस जीती जागती है कोई तुम्हारा बाल बाका न कर सकेगा। पर छूटते ही अपने जमानतदारों और अपने मोखतारको बखेड़ेमें डाल आप फिरन्ट हो गये और सीधे परशुराम दलमें जा मिले। आप साहसी, बली और फुर्तीले थे। इसलिये तोड़-फोड़ और फूंक-फाकमें आपने काफी नाम कमाया। जब बदला लेनेकी नीति अपनायी गयी तब तो महेन्द्रगोप बेजोड़ हो गये। जिसको बताया गया उसको बेखटक लूटा, निर्दय होकर पीटा वा बेरहमीसे जान ले ली। सबोंने उनकी तारीफ की। फिर तो परशुराम दलके भीतर ही उनका एक गिरोह तैयार हो गया जिसमें लाखोसाही, जागोसाहो, श्रीगोप, श्रीधर, प्रद्युम्न और दयानाथ जैसे लोग शामिल हो गये। अब कार्यकर्त्ता घबड़ाये और गोपके खिलाफ परचा निकाला। उनके परचेका गोपपर क्या असर पडता? सत्तर चूहे खाके बिल्ली चली हजको। वैसे बिल्लीकी बात बिल्ला क्या सुनता? वह और स्वतंत्र हो गये और गोपदलके नायक बने।

परशुराम बाबूकी सगठन शक्तिमें न दृढ़ता थी और न दूरदर्शिता, और महेन्द्र गोपमें तो इसका नितान्त अभाव था। इसलिये जो इनके साथ आये अपने मनसे आये और अपना लाभ देखकर। जब अलग होनेमें लाभ देखा तब बहुतसे अलग हो गये और कितने दल बन गये। किसीके नेता श्रीधर, किसीके प्रद्युम्न और किसीके दयानाथ आदि। पर गोपका नाम बजा हुआ था। इसलिये जहां आग लगती, डकैती वा हत्या होती श्रीमहेन्द्र गोप ही जवाबदेह ठहराये जाते क्योंकि इनका दल तीनों काम करता।

गोप दलमें सथालियों, गरीब ग्वालों, गरीब घटवाल राजपूतों और कानुओंकी भरमार थी। इसलिये गोपदल जिस घरको लूटता उस घरकी हाड़ी खपरी और चटाई गुदड़ी तक न छोड़ता। उसकी आखमें सबकी कीमत थी। दल भुक्खड़ोंका था। इसलिये भोजनपर टूट पड़ना और भोजन चाहिये था फौजियों

जैसा—मास, घी, शराब...... । पर गोपदलने कभी साधारण घरको नहीं लूटा। उसकी लूटके शिकार बने खास-खास लोग ही जो अपनी सरकार परस्तीके लिये बदनाम थे या जो भेदिया समझे गये थे। श्रीमहेन्द्र गोपका अपना खर्च ज्यादा न था और जितना था उससे अधिक ही उन्हें कटोरिया थानेके रायबहादुर ब्रजकुमार सिह घटवालसे मिल जाता था।

जितना पता लगा है उनने तेईस खून किये पर कुछ ही खून है जिनको उनने अपनी वा अपने दलकी रक्षाके लिये किया। अधिकांश खूनोकी जवाब-देही जिला भरके सशस्त्र क्रान्तिकारियोके सर है। इन लोगोंने उन्हें दूर-दूर बोलाया और उनसे ऐसोंके खून करवाये जिनसे कोई मतलब न था। उनने अपने दलके मदुली गोपको मारा क्योकि वह मिलिटरीसे मिल गया था। डहुआघाटके बुन्दू महतो, जमदाहाके दीनाराय और नारायणचकके नारायण मिश्रको मारा क्योकि उनपर भेदिया होनेका शक था और उनकी मौजूदगीसे उनको खतरा था। पर विहपुर इलाकेमे गेंदासिह वगैरह चार व्यक्तियोके जो खून हुये उसमे उनका कोई स्वार्थ न था उन व्यक्तियोके खूनसे उस इलाकेकी इच्छा पूरी होती थी जहांसे श्रीमहेन्द्र गोपको डाकू और देशद्रोही करार देते हुए एक परचा निकला था। श्रीपरशुराम सिहके सम्बन्धी सरैयाके सहदेव सिहको श्रीमहेन्द्र गोपने लाखोसाही और जागोसाहीकी सहायतासे मारा पर उससे उनको कुछ लेना देना न था। और सहदेव सिहकी हत्याके मामलेमे ही श्रीमहेन्द्र गोप और दोनो साही भाई फांसी लटकाये गये। उसी मामलेमे श्रीपरशुरामको दामुल हुआ। हालांकि वे उस समय मोटंगामें कार्यकर्त्ताओकी सबडिविजनल मीटिङ्गमें भाग ले रहे थे।

श्रीमहेन्द्र गोप डाकू थे। पर डकैती छोड़कर क्रान्तिकारी बनने बसमत्ता श्रीपरशुरामके यहां आये थे। वहां बांका सबडिविजन भरके क्या नये क्या पुराने सभी कार्यकर्त्ता मौजूद थे। उनने श्रीमहेन्द्रसे कहा—"घरके भेदियोंसे अन्दोलनकी रक्षा करो।" "सरकारसे लोहा लो।" उस सीधे-सादे बहादुरने अपनी समझ और संस्कारके अनुसार उनके आदेशका अक्षरशः पालन किया। कितनी बार गोपदलकी भिड़न्त मिलिटरीसे हुई। झरना पहाड़पर जिस समय गोपदल खा रहा था उसे मिलिटरीने घेर लिया। दल फौरन पहाड़में घुसकर मिलिटरीका खात्मा करने लगा। दो मिनिट तक दोनो ओर गोली चलती रही फिर धीरे-धीरे फौजको अंगूठा दिखाता हुआ दल गायब हो गया। फौजियोको

पीछा करनेकी हिम्मत नहीं हुई जबकी सारे इलाकेमें फौजियोंका जाल बिछा था। उनके पास तेजसे तेज घोड़े थे; हालसे हालके हथियार थे और बेतारसे खबर करनेका यंत्र था। उसी तरह दुर्जय पहाड़पर भिडन्त हुई। पर इस बार दलको काफी नुकसान पहुँचा। श्रीगोप मारा गया और कुछ साथी पकड़ लिये गये। श्रीगोपका साधा हुआ कुत्ता था जो खतरेसे उसको अगाहकर दिया करता। वह पकड़ा गया। फौजियोंने दो दिन उस कुत्तेको श्रीगोपकी लाशसे बांध रखा ताकि भूख-प्यासके मारे वह लाशपर कौर लगाये। पर वफादार मालिककी लाशकी हिफाजत ही करता रहा।

श्रीमहेन्द्र गोपमें मौकेपर जगनेवाली अक्ल भी थी। १९४४ मे वह सियाराम-दलके साथ ठहरे हुए थे। एकाएक रन्नूचकमे मिलिटरीने सबोको घेर लिया। रबरकी नली लगाकर सियाराम बाबू मटरके भूसेमें छिप गये और इण्डियन नेशनल कांग्रेसके डायरेक्टर श्रीरामनारायण चौधरी सरसोके खेतमें दबक गये और महेद्र गोप मिलिटरीकी आंखोंमें धूल झोंकते हुए सीधे सामनेसे निकल गये। मटरके भूसेकी टालपर फांदकर बलूची दाब-दूब कर खोद-खाद कर भूसोंकी जांच कर ही रहे थे कि जोरकी सीटी हुई। सभी फौजी दौड़ पड़े जहां सरसोके पौधोंके बीच दबके हुए श्रीरामनारायण चौधरी पकड़े गये थे। इस तरह सियाराम बाबू बाल-बाल बचे।

श्रीमहेन्द्र गोपके सद्गुणोंको बुरा संस्कार मिला था और इधर जो संगति मिली थी सो भी अनुकूल न थी। इसको दृष्टिमे रखते हुए मानना पड़ेगा कि उनमें राजनीतिक-चेतना आ गयी थी और वे शहादतकी राहपर थे। जिन श्रीजगदम्बा सिंहके हस्ताक्षरसे उनके खिलाफ परचे बांका सब-डिविजन भरमें बँट रहे थे उनसे एकाएक निर्जन स्थानमें उनकी भेंट हो गई। श्रीजगदम्बा तो डर रहे थे कि अब मर गया तब गया। पर महेन्द्रजी उनके पास आये और बोले—आप लोग मुझको नाहक बदनाम करते फिर रहे हैं। मैं तो आप लोगोंका ही काम कर रहा हूँ। हां, श्रीधर, प्रद्युम्न और दयानाथ वगैरह जो सो कर बैठते हैं। आप लोग जांच कीजिये, फिर मेरा कान पकड़िये। नारायणपुरके बाबू कीर्तिनारायण सिंहका वक्तव्य है कि जब मैं जेलसे निकला तब शाहकुण्डके श्रीठाकुरप्रसाद सिंहने मुझको ४०) रु० दिये और कहा कि महेन्द्र गोपने किसी राजनीतिक पीड़ितकी मददमें इसे खर्च करनेको कहा है। मैंने रुपये नहीं

लिये; कहा—मैं चोरी डकैतीके रुपये नहीं लेता। मुझको सियाराम बाबूने दो-दो तीन-तीन सौ रुपये दिये सो तो मैंने लिया नहीं; फिर उसके रुपये क्यों लूं ? कुछ दिनके बाद ठाकुर बाबू फिर मिले और बोले कि गोप कहता है कि अगर कीर्ति बाबू कह दे कि मैंने पाप किया है तो मैं आत्महत्या कर लूँ। मै उससे मिलनेको तैयार हुआ पर मिल नहीं सका। राय मांगनेपर कहला भेजा कि हाजिर हो जावो और नहीं हो सको तब कहीं दूर जाकर छिप रहो।

महेन्द्र गोपके पकड़ाते ही उस दलके नामी-गिरामी जिनने अलग-अलग अपनी टोलियां बना ली थीं पकड़े जाने लगे। उनसे जनता ऊब गई थी। वे डाका डालते थे और रुपयोसे अपना और कुलटाओंका घर भरते थे। बलात्कार भी किया करते थे। उनके भीषण बलात्कारके परिणाम-स्वरूप एक बारह तेरह सालकी लड़की तड़प-तड़पकर मर गई। ये सब समाजमें मौजूद है। केवल महेन्द्र गोप नहीं है जो कम-से-कम बलात्कारके दोषसे बिलकुल मुक्त थे।

सियाराम दल अप्रिलके आते-न-आते खूब मजबूत हो गया। अपने जवानोंको शस्त्रास्त्रकी शिक्षा देकर इसने पूर्णिया और मुंगेरके सशस्त्र-क्रान्तिकारियोको भी शिक्षित करनेका प्रोग्राम बनाया। फिर इसकी शोहरत फैल गई और नेपालसे जयप्रकाश बाबूकी मांग आई—एक बहादुर सैनिक भेजो। इधर श्रीपार्थ ब्रह्मचारी और सरदार नित्यानन्दमें मतभेद हो गया था सो दूर हो गया और सरदारजी नेपाल कैम्पमें ट्रेनिग देने भेज दिये गये।

एक तो सियारामदल फरारोंकी जमात और दूसरे उसकी सशस्त्र क्रान्तिकी तैयारी! उसको किसी-न-किसी तरह पकड़नेकी सरकार सरतोड़ कोशिश करने लगी। सैकड़ो पुलिस और मिलिटरीवाले बिहपुर इलाकेका कोना-कोना छानने लगे। अफवाह सुनते कि वहां सियारामदलका कोई-न-कोई है तब फौरन गांव घेर लेते। कभी-कभी ऊपर हवाई जहाज मड़राता रहता और नीचे घर-घरकी तलाशी होती। स्त्रियोंका सिन्दूर भी देखा जाता। पर गांववालोंको सियाराम बाबूसे ऐसी सहानुभूति थी कि वे उन्हें जैसे-न-तैसे बचा ही लेते। फिर सरकारने अनगिनत भेदिये बहाल कर रखे थे जिनके शिकञ्जेमे आ जानेकी आशंका पद-पदपर होती रहती थी। यही कारण था कि सियाराम-दल जिसे भेदिया समझता उसको भीमनगर भेजकर ही छोड़ता। उसने जितनोंको भेदिया समझकर मारा है उनकी तादाद थोड़ी नहीं है। अण्डकोश फोड़कर कितने भीम

नगर भेजे गये, घुटने भर पानीमें दमघोट कर कितनोंको वहा पहुँचाया गया और जो भाग्यशाली थे लाठीकी कैंचीके शिकार बनकर भीमनगर जा विराजे। पर हां! वहां का टिकट चटपट न कटता था। अकसरहा जांच-पड़ताल करके और भेदियोंको एक दो बार चेता करके वहां जानेका आदेश मिलता था।

२८ अगस्त १९४३ को सियाराम-दल अपनी सारी शक्ति समेट सोनवरसा पुलिस चौकीके हथियार लूटने नावसे चला। सियाराम वावू, श्रीपार्थ ब्रह्मचारी, सरदार नित्यानन्द, श्रीगुलाली उर्फ गुलाबचन्द्र और श्रीविन्ध्येश्वरी सिंह उर्फ दुर्गादास सभी मिलाकर सब साठ-पैसठ जवान थे। पहुँचना था रात रहते पर पहुँचे पौ फटते-फटते। सिपाही सावधान होगये और जब उनने देखा कि लोग मकान घेर रहे हैं वे सब थानेमें घुसे और पैंतरेमें खड़े होगये। मालूम नहीं क्या सोच कर पांच आजाद थानेके शस्त्रागारमे जा घुसे। लड्डू सिंह और फौदीदास बिहपुर और अर्जुन सिंह नाथनगर खाली हाथ थे; तुरत मार डाले गये और दो निकल भागे। फिर दोनों ओरसे धुआधार गोलिया चलने लगीं। सरदार नित्यानन्दने देखा, आजाद सैनिकोके पैर उखड़ गये हैं, अगर प्राणका मोह न छोड़ा गया तब सब-के-सब मारे जायँगे। वे वीरासनसे बैठ गये और इस ढंगसे गोलिया चलाने लगे कि सब सिपाहियोको उलझा लिया। फिर उनने बार-बार साथियोको चौकोपर धावा करनेका आदेश दिया श्रीविन्ध्येश्वरी सिंह कहते हैं कि "हमारी हिम्मत टूट गई थी, हम भागे, गुलाली भागे और सभी भागे।" इस धावेमें कुल आठ शहीद हुए। तीन शुरूमें, फिर सरदार और श्रीकमलेश्वरी सिंह तेलघीं, श्री रामावतार झा विसपुरिया, निर्मल झा खरीफ और नाविक खुसरू मांझी।

इस दुर्घटनाके बाद दमनने विकराल रूप धारण किया। ३१ मील लम्बे और १७ मील चौड़े थानेमें २३ मिलिटरी कैम्प खोले गये और पुलिसके अतिरिक्त प्रत्येक कैम्पमें दो दर्जन फौजी रख दिये गये। लूट-पाट होने लगी। फरारोंके घर उजाड़ दिये गये, उनपर पहरा बैठा दिया गया और उनके रिश्तेदार गिरफ्तार कर लिये गये।

जयरामपुर निवासी श्रीचामा शर्माके डेढ वर्षके दुधमुहे बच्चेको पकड़ लिया गया और एक सप्ताह मिलिटरी कैम्पमें रखा गया। बार-बार कहा जाता कि मा कैम्पमें आवे और बच्चेको दूध पिला जावे। पुत्र-स्नेहसे विकल होकर मा कैम्प

जानके लिये निकल पड़ती पर लोग पुलिस और फौजियोंको पाशविकताकी याद दिलाकर उसे रोक लेते। फिर जब लड़केकी जानपर आ बनी तब वह लौटा दिया गया। पुलिस दल तो इतना मदान्ध होगया कि शक होते ही गोली दाग देता। इसी मदान्धतामें उसने अठगॉवाके विरंचो मण्डलको सियाराम बाबूके धोखेमे मार डाला।

इन कैम्पोकी कठोरता १६४५के जुलाई तक कायम रही। इसके बाद बाबू श्रीकृष्ण सिंहके (वर्तमान प्रधान मंत्री, विहार सरकार) प्रयत्नसे कुछ जगहोंको छोड़कर बाकी कैम्प तोड़ दिये गये। पर पुलिसके रुखमे परिवर्तन नहीं हुआ। ९ जुलाई '४५ को घटना है। मौजमाबादमे श्रीशुकदेव चौधरीके यहां भोज था। कुटुम्ब अभ्यागत आये हुये थे। एकाएक पुलिस शामको पहुँची और फरार श्रीनागेश्वर सेनको जो बिलकुल निहत्था थे भागते जान उसने उनके सीनेमें दो गोलियां मारी। खैरियत हुई कि गोलियां दोनों ओर सोनेसे जग हटकर लगीं और उनका प्राण बच गया। फिर पुलिसने श्रीशुकदेव चौधरी और उनके कुटुम्ब अभ्यागतोंको बड़ा तग किया। और इस समय सरकार शिमला शैलपर देशके नेताओसे समझौतेकी बात-चीत कर रही थी।

सियारामदलके सब पकड़े गये पर उसके स्तम्भ श्रीसियाराम सिंह, श्रीपार्थ ब्रह्मचारी, श्रीसूर्यनारायण झा, श्रीचन्द्रदेव शर्मा और श्रीअम्बिकासिंह व्यास सरकारकी सारी ताकतको अगूठा दिखाते ही रहे और कांग्रेस मंत्रीमंडल द्वारा मुक्त हो जानेपर ही जनताके बीच प्रकट हुये।

पूर्णियाके सशस्त्र क्रान्तिकारी दलको कुछ लोगोंको सियारामदलसे ट्रेनिङ्ग मिली

पूर्णिया

और कुछ हथियार भी मिले। उनने अपने साथियोंको घुड़सवारी और शूटिङ्ग सिखाई। इन क्रान्तिकारियोंने २७ अप्रैल १६४३ को मिलिटरीसे दो राइफल छीने और पोशाक भी फिर सब तरहसे लैस होकर ये नौजवान देहातोंमें निर्भीक होकर घूमने लगे।

सबसे पहले अव्वल दर्जेका डकैत अमीन मिया जो सरकारका भेदिया बन गया था, इनलोगोके हाथ छुरेसे मारा गया। फिर मकदुम बक्स और दिलावर दफादार वगैरहकी हत्या हुई। फिर भवानीपुर राजकचहरी लूटी गई और खजुरीके एक साहुकारके यहा डाका पड़ा; सम्पत्ति लूट ली गई और एक बूढ़ा और एक नौजवान जानसे मार डाला गया। समेली, सलेमपुर आदि
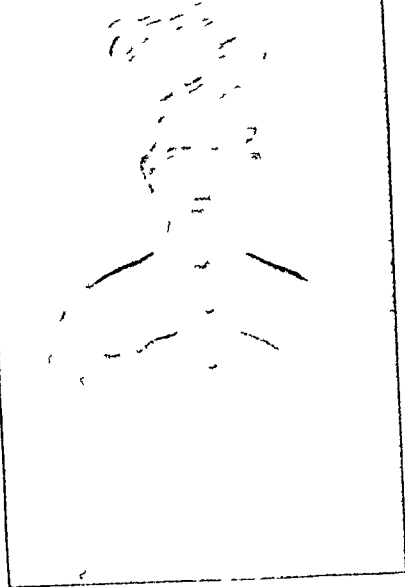
शहीद कैलाश पति सिंह,
शाहाबाद
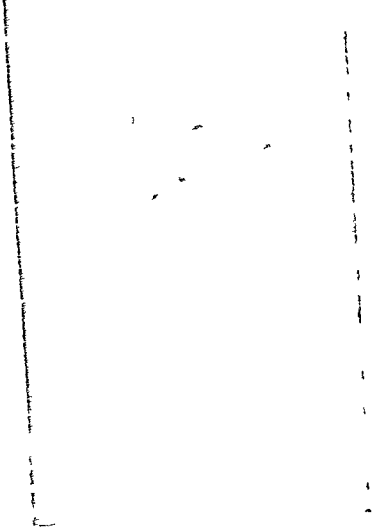
श्रीरामाधार सिंह, विक्रम (पटना
क्रूरताके शिकार।
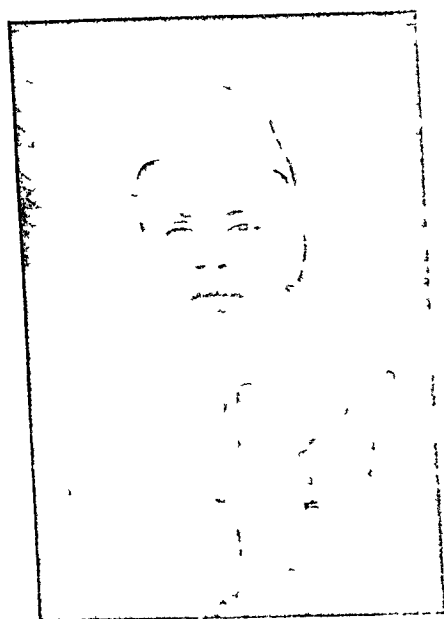
जिनके नाम से ब्रिटिश नौकर शाही थर्रातीथी।
श्रीपरशुराम सिंह, भागलपुर
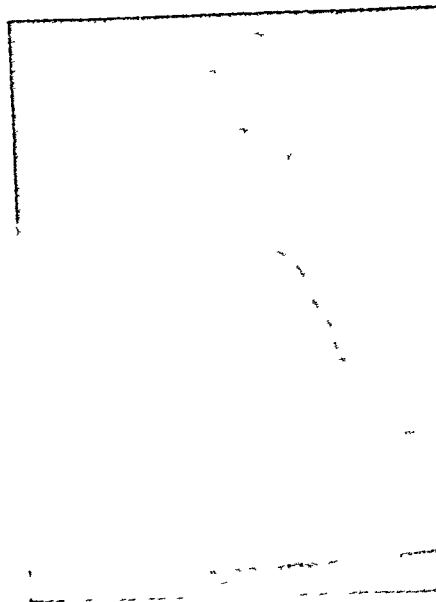
वीर सैनिक।
श्रीप्रफुल्लचन्द्र पट्टनायक, संथालपर

दूधपीते बच्चेको जेलकी हवा खिलायी गयी !

फरार चामा शर्मा, भागलपुरका शिशु अपनी माताकी गोदमें

जिन्हे फांसीकी सजा हुई थी !

श्रीलाला सिंह,
महनार (मुजफ्फरपुर)
दरभगा जिला-जेलके सेलमें
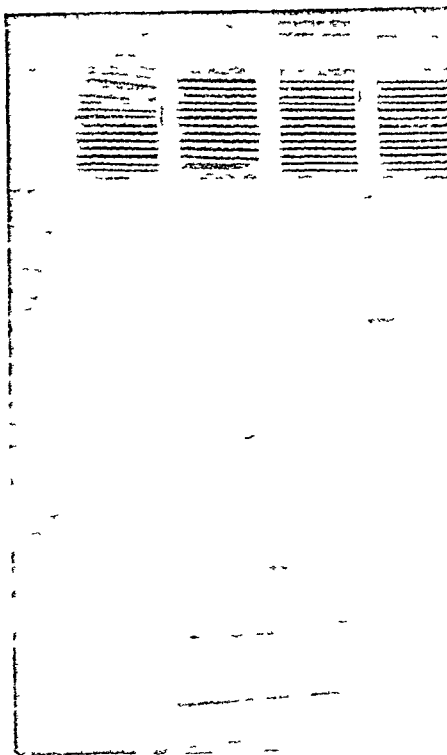
श्रीयमुना प्रसाद,
फुलपास (दरभंगा)
दरभंगा जिला-जेलके सेलमें
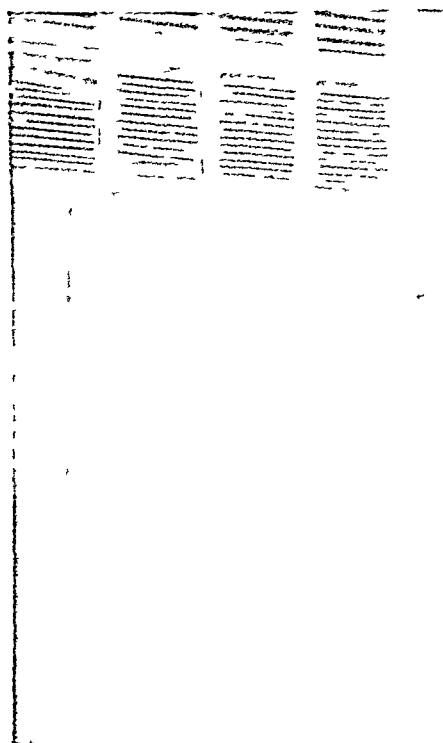
जिन्हे फांसीकी सजा हुई थी!

श्रीशारदानन्द झा,
भुमरुपुर (दरभंगा)
दरभंगा जिला-जेल के सेलमें

श्रीअनूपलाल मेहता,
पूर्णिया

गांवोंके कितने लोगोंकी नाक काट ली गई। धर्मपुरमें तो कितने डाके पड़े और कितनी जानें गईं। तब श्रीवासुदेव सिंहकी आंख खुली और उनने सदल-बल इनलोगोंका साथ छोड़ दिया। वासुदेव बाबूके हटनेसे दल और उच्छृङ्खल हो गया।

अब इसके सदस्य सरकारी अफसरोंके भेषमें रातको निकलते, गांववालोंसे रुपये ऐंठते। जो नहीं देता सो पानीमें खडा रखा जाता, पीटा जाता और गर्म लोहेसे दाग दिया जाता। जो इनलोगोंकी आलोचना करता वा किसी केसमें इनके खिलाफ गवाह बनता वह बड़ी बेरहमीसे इनके छुरेका शिकार बनता। इनलोगोंमेंसे दो भाई श्यामनारायण मल्लिक और हेमनारायण मल्लिक सरकारसे मिल गये। बहुतोंको पकड़वाया और फिर मई १९४५ में श्यामनारायणको धोखेमें हेमनारायणने मार डाला और हेमनारायणको जनताने। अन्तमें दलकी दुर्दशा होगई। कोई हथियार ले उड़ा, कोई धन जेवर और कोई किसीकी स्त्री ही।

संताल परगनाने शस्त्र-साधना की दुमका सब-डिविजनके लाठी पहाड़ इलाकेमें। लाठी पहाड़के आस पास संताल, खेतौरी, भूयां और डोम आदि ज्यादा

संताल परगना

तादादमें रहते हैं जिनकी सहानुभूति अपने शस्त्र-साधकोंसे रही। फौजके आजानेपर जब काफी दमन हुआ और अविचारपूर्वक गोलियां चलीं तब जनताका क्रोध उभड़ा, फारवर्ड ब्लाकके कार्यकर्त्ता आगे बढ़े और श्रीअलखी मांझीके कथनानुसार उनलोगोंने यह मनसूबा किया कि दो हजार सैनिक तैयार हो और दुमकापर हमला करके कचहरीमें आग लगा दें और गारद, खजाना, जेल वगैरहपर क़ब्जा कर लें।

लोग जुटने लगे और फरवरी १९४३ तक तीन सौ इकट्ठे होगये। सभी लाठी पहाड़की चोटीपर एक मैदानमें तीर-कमान और बन्दूक चलानेकी शिक्षा लेने लगे। अपने खर्चके लिये वे पहाड़ोंसे उतरते और आस-पासकी जनतासे चावल वगैरह मांग ले जाते। जब उनका काम बढ़ा तब पुलिसके भेदिये लोकनाथ मांझी और काली दरवेका ध्यान उस ओर गया और उनने अपने अफसरोंको खबर दी। १७ फरवरी '४३ को पुलिस लाठी पहाड़ पहुँची और जटावास्कीको अपने साथियोंको होशियार करनेके लिये ऊपर चढ़ते देख उसने गोली मारी। जटा घायल होगये और कुछ देरके बाद शहीद। फिर पुलिस ऊपर चढ़ी थी कि उनपर ढेले और तीर बरसने लगे। उसने काफी गोलियां चलाईं पर ढेले और तीरोंकी वर्षा बन्द न हुई। पुलिसके पैर उखड़ गये और वह भागी। फिर तो "गान्धीजीकी जय"

"वन्दे मातरम्" "जाने न पावे" का हर्षनाद करते हुये वे पुलिसपर टूट पड़े और दो एक बन्दूके भी छीन ली।

इस घटनाके बाद सरकार अपनी सारी दमन शक्ति लेकर उस इलाकेमें जम गई और लाठी पहाड़-काण्डके नायक श्रीलाल हेम्ब्रम, पगान मरण्डी, अलखो मांझी, जेठा मांझी, दरबारी महैया, भादो हेम्ब्रम आदिके पीछे पड़ी। पर लाल हेम्ब्रम और पगान मरण्डी कभी इसके हाथ नही लगे और फिर दलका संगठन करने लगे। उनके साथी फारवर्ड ब्लाकके सभी मेम्बरोसे जो लाल कुरता पहनते और जिनकी संख्या ढाई हजारके लगभग थी एक-एक रुपयाका जजिया वसूला गया और उनके लाल कुरते छीन लिये गये। उन लोगोने सभी कष्ट सहे पर श्रीलाल हेम्ब्रम और पगान मरण्डीका पता न लगने दिया। इन दोनोंने गान्धीजीके बयान देनेके बाद आत्म-समर्पण किया।

मुजफ्फरपुर जिलेमे आजाद दस्तेका संगठन हुआ हाजीपुरमे १९४३ के मार्च महीनेमें। दस्ताके संचालक थे श्रीअक्षयवट राय, विन्ध्यवासिनी सिह, रामचन्द्र शर्मा और अमीर राय। इस दस्तेके कुछ लोगोको ट्रेनिङ्ग मिली श्रीगोविन्दपुर सखरामें जो नेपालके सप्तरी इलाकेमे है और जिसका मुख्य स्थान हनुमान नगर है। इस दलने पहले हथियार इकट्ठा किया और बन्दूक पिस्तौलके अलावा एक टामीगन तकका सग्रह कर लिया। फिर इसने जुलाईमे बिदुपुर रेलवे स्टेशन और डाकघर और जनदाहा डाकघर लूटे और जलाये। सरकार चौकन्नी हो गयी और धड़पकड़ शुरू हुआ। शहीद विन्ध्यवासिनी बाबू दो बार गिरफ्तार हुए पर पुलिसको घायल करके साथियोने उन्हें छुड़ा लिया। श्रीरामचन्द्र शर्मा तीन-तीनबार पकड़े गये पर तीनोबार सबको चकित करते हुए भाग निकले। बादको चकसेरके हितनारायण सिहने श्रीअक्षयवट रायको पकड़वा दिया जिसलिये उसका घर जला दिया। फिर कुछ भेदियोको पीटा गया।

मुजफ्फरपुर

आगे चलकर दलके कितने सीतामढ़ीके पथपाकड़ और माधोडीह गावमे रहने लगे। १९४४ की घटना है। श्रीअमीर राय, सीताराम राय और श्याम नारायणने पथपाकड़के पास डाकका थैला लूटा और जनतासे खदेड़े जाकर माधोडीह भाग आये। वहाके कुछ लोगोने इनको पकड़वा दिया। फिर इनपर काफी मार पड़ी। आजाद दस्तावाले इस मारको भूल न सके और अप्रिलमें श्रीअंबिकाप्रसाद वर्माके नेतृत्वमे एक रातको गये और माधोडीहके दो

पकड़वानेवालोंकी नाक काटली और एकका कान कतर लिया।

पीछे दस्तेकेप्राण श्रीविन्ध्यवासिनी सिंह जो १९४२ में देसरी हाइ स्कूलके मास्टर थे पकड़े गये और मई १९४५ में जेलमे ही शहीद हो गये।

दरभंगेमें भी आजाद दस्ता संगठित हुआ १९४३ के मार्चमें। इसके संचालक वनर झूला कैम्प, नेपालके सीखे हुये थे। १९४३ का समय हथियारके संग्रह और

दरभंगा

दस्ताके संगठनमें बीता। पर १९४४ से दस्ता अपनी कर्मठता दिखाने लगा। श्रीसूर्यनारायण सिंह आगये थे और गुलाली सोनार, देवनारायण गुड़मैता जो श्रीवशिष्ठ नारायणको लेकर दरभंगा जिला जेल फांद निकले थे और अन्यान्य युवकोंसे सहयोग ले रहे थे। १९४४ के मार्चसे स्टेशन जलाये जाने लगे। मोहिउद्दीन नगर, किसनपुर और झंझारपुर स्टेशन एक-एक करके जले। फिर चकमहेसी, डरसूर, पटोरी और रतिकर आदि स्थानोंसे बन्दूकें लूट ली गई। डरसूरमें तो हजारों रुपयेके माल सामने थे पर महथजीका कहना है कि उन्हें छुआ तक नहीं गया और ऐसा ही चकमहेसीके मुसलमान डाक्टरका भी बयान है।

इधर ऐसे-ऐसे काम हो रहे थे और उधर आजाद सैनिकोंकी ट्रेनिङ्ग भी चल रही थी। कुछ सैनिकोंको जितना हो रहा था उतनेसे संतोष नहीं था। वे कुछ ठोस काम करना चाहते थे। सो ५ सितम्बर १९४४ को जब बाबू उदित नारायण झा दारोगा फरार श्रीरामलोचन सिंहका सामान जब्त करके अन्दामाके बाहर निकले ही थे कि शामको गोलीके शिकार बनाये गये।

जब उदित बाबूके मारे जानेकी खबर बाबू रामनारायण सिंह पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टको मिली तब वे क्रोधान्ध हो गये। फलस्वरूप दूसरे दिन सवेरे चार ट्रकपर लदकर हथियारबन्द सिपाही आतंकित अन्दामामें पहुँचे। गाव तो रातभरमें प्राय खाली हो गया था। वे ही रह गये थे जिनमें राजनीतिकी बू-बास न थी। फिर भी जो सामने आया सो पीटा जाने लगा। बाबू सरयू सिंहके सरसे लहूका फव्वारा फूट निकला, बाबू रामवृक्ष सिंहके हाथमें संगीन भोंक दिये गये और एक साधु बालकृष्ण दासको तो इतना पीटा गया कि कराह-कराहकर दो दिनोंके बाद वे मर गये। फिर तीन घरोंकी बूढ़ी स्त्रियोंको घसीटकर बाहर निकाल दिया गया और उन घरोंमें आग लगा दीगई और उनकी दीवारें पस्त कर दी गई। सारा अन्दामा दो महीने तक ५० पुलिसका अखाड़ा बना रहा। स्त्रियोंकी इज्जतपर

भी कई हमले हुये, और जब दो मासके बाद गांववाले आये तब देखा कि किसीके घरमे सुई जैसी चीज भी नहीं रह गई है।

इस दमनके परिणाम-स्वरूप आजाद-दल भी तितर-बितर हो गया और श्रीसूर्यनारायण सिंह और गुड़मैता आदि पकड़ लिये गये।

पटनाके आजाद-दस्तेकी कहानी केवल एक बलिदानकी कहानी है—शहीद अनिरुद्ध कुमार सिन्हाकी। शहीद अनिरुद्ध कुमार पहले जब पिस्तौल बगैरहकी

पटना

बात सुनते तब उसे फजूल कहकर टाल देते। पर मार्चके अन्तमे श्रीयुगलकिशोरप्रसाद सिन्हाके कथनानुसार उनका सम्पर्क कुछ समाज-वादियोसे हुआ, बादको वे नेपाल गये जहां जयप्रकाश बाबूका ऐसा प्रभाव पड़ा कि सशस्त्र-क्रान्तिवादी होकर लौटे। पर नेपाल जाते-आते जो कठिनाई झेलनी पड़ी उससे उनका सुकुमार शरीर ढीला पड़ गया और उसपर स्टूडेन्टस कौंसिलका गुरुतर भार। वे शय्याशायी होकर अस्पताल पहुँचे और वहा भी जयप्रकाश बाबू आजाद-दस्ता और स्टूडेन्टस कौंसिलकी चिन्ता करते-करते १६४३के अन्तमे शहीद होगये।

विहारके सशस्त्र-क्रान्तिकारियोकी कार्रवाइयोका जिनने आजाद-दस्तेके प्लाट-फार्मसे भी काम किया यही निचोड़ है। जयप्रकाश बाबूका आजाद-दस्ता जन-क्रान्तिके लक्ष्यको सामने रखकर संगठित हुआ था पर कोई भी दल अपनी कार्रवाइयोसे जन-क्रान्तिकी भावनाको भी पुष्ट न कर सका। इसके कई कारण थे; (१) उस समय जब कि जयप्रकाश बाबूने विहारको आजाद-दस्तेका प्रोग्राम दिया विहार दमनकी प्रतिक्रियासे पीड़ित था। आन्दोलनकी उठती भावना अत्यन्त मन्द पड़ गयी थी। (२) निहत्थोको सशस्त्र-क्रान्तिकारी बनाना था और ऐसी जनताके वीच जिसके परदादे तकने हथियार नहीं उठाया था; (३) फिर भी इन निहत्थोमे जो मिलता उसीको हाथमें लेकर उठनेका जोश पैदा हो जाता अगर ब्रिटिश सरकार लगातार हारती जाती, पर हुआ यह कि इधर अगस्त आन्दोलन दबा और उधर अगरेज मोरचा-पर-मोरचा जीतते भी गये और (४) जिन लोगोने सशस्त्र-क्रान्तिकारियोका जामा पहना था उनमें अधिकांश फरार थे और पुलिस वा मिलिटरीको अपनेसे दूर रखनेके लिये उनने हथियार उठाया था। इसलिये जयप्रकाश बाबूकी विचारधारा पाकर भी वे सब क्रान्तिकारी नहीं बन सके। पर उन्हें आतकवादी भी नहीं कहा जा सकता। उनमेंसे किसीने किसी

जुल्मी अफसरको नहीं मारा जिसे सुनकर दमन-पीड़ित जनता सन्तोषकी सास लेवे। उनमेंसे अधिकाश तो पुलिससे ज्यादा जनताके आतकके कारण वने।

सभी क्रान्तिकारियोंमें दो ही ऐसे थे जिनको जन-क्रान्तिकी रीति-नीतिका ज्ञान हो सकता था, वावू सियाराम सिंह और वावू सूर्यनारायण सिंह। पर दोनोंमें विवाद ही चलता रहा और वह इतना कटु होगया कि श्रीअरुणा आसफअली वीचमें पड़ीं, परेशान होगईं पर दोनोंको मिला न सकीं। पर किसी व्यक्तिका कोई दोष न था। दोष था परिस्थितिका जिसको सशस्त्र क्रान्तिके सबसे बड़े साधक श्रीसुभासचन्द्र बोसने समझा और इसीसे निहत्थोंके बीच उसका प्रचार न करके उनने सामयिक हरबे-हथियारसे लैस सैनिकोंके बीचमे उसका प्रचार किया जिसके लिये उनने देश छोड़ा, सकट झेले और सबोंको अचभित करते हुए वर्माके मोरचे पर अपने आजाद हिन्द फौजके बीच पहुँचे। आज उनकी लगायी आग फौजमें धधक रही है। और उनने ही वर्मा छोड़ते हुये कैप्टेन शाहनवाज वगैरहसे कहा कि हिन्दुस्तान जाकर हरबे-हथियारको भूल जाना, गान्धीजीकी बात सुनना और उनके आदेशपर चलना।

सत्याग्रह समिति

कलकत्तेसे समझौतेकी वात लेकर श्रीअन्नदाप्रसाद चौधरी और श्रीसुचेता कृपलानी बम्बई पहुँचे। वहां श्री आर० दिवाकर मिले जिनने उन दोनोंकी वातें पसन्द कीं। श्रीदिवाकर अब तक सयुक्त मोरचेके पक्षमें थे और श्रीपटवर्धन और लोहियाके नजदीक थे। उनका प्रान्त कर्णाटक अगस्त आन्दोलनमें जो जाग्रत हुआ सो अबतक मैदानमें डटा था और सरकारको परेशानकर रहा था। उनने अपने सहकारियोंसे विचार करके तय किया था कि वर्तमान परिस्थितिमें हमें तोड़-फोडके प्रोग्रामको छोड़ देना चाहिए। तीनोंकी राय हुई कि श्रीअच्युत पटवर्धनसे मिला जाय। मिलनेकी कोशिशकी गई पर मुलाकात न हो सकी।

अब तीनों और-और लोगोंसे सलाह लेने लगे जिनमें मद्रासके श्री जी० रामचन्द्रन प्रमुख थे। सबोंने कहा कि पटवर्धन दलकी ओरसे जो कहा जा रहा है और किया जा रहा उसको देखते हुए मानना कठिन है कि सर्वश्री पटवर्धन, लोहिया और अरुणा अपनी नीति बदलेंगे। फिर परिस्थिति बदल गई है, आक्रमणका नहीं बल्कि संगठनका मौका आ गया है; इसलिये अपनी-अपनी विचारधाराको आगे रखकर लंबे अरसेके लिये प्रोग्राम बनाना पड़ेगा। हमारी विचारधारा अहिंसाकी है, हमें अपना प्लाटफॉर्म अलग रखना होगा और चूंकि गान्धीजीकी राय, जैसा सुना गया है, नहीं है कि हम कांग्रेसके नामपर अभी काम करें हमें अपने प्लॉट फार्मका दूसरा नाम देना होगा। बस, इसी विचारधाराने २ नवम्बरको बम्बईमे सत्याग्रह समितिकी सृष्टि की। एक तार पाकर लेखक बम्बई गया और बिहारके प्रतिनिधिकी हैसियतसे सत्याग्रह समितिमें शामिल हो गया।

देशभरके अहिंसामार्गी कार्यकर्त्ताओंके बीच सत्याग्रह समिति तुरत लोकप्रिय बन गई। इण्डियन नेशनल कांग्रेसके सेन्ट्रल डायरेक्टरेटके तीन तो इसमें शामिल हुए ही; साथ ही मद्रास, बिहार, महाराष्ट्र, संयुक्त प्रान्त और गुजरातके प्रतिनिधि भी आये और अपने-अपने प्रान्तमे समितिकी जड़ मजबूत करनेकी जवाबदेही ली नन-वायलेन्ट रिवोल्यूशन (Non-Violent Revolution) नामकी एक साप्ताहिक पत्र निकाला गया। जिसकी जवाबदेही श्री जी० रामचन्द्रन और श्री आर० दिवाकरको सौंपी गयी।

पर सत्याग्रह समितिके आलोचक भी थे, बम्बईमें स्वामी आनन्द और बिहारमें श्रीलक्ष्मी नारायण, तात्कालीन मंत्री बिहार चर्खा सघ। स्वामी आनन्द श्रीनरहरि परीखके आदर्शके कायल थे। श्रीनरहरि परीखने सरकारकी कड़ी आलोचना करते हुये एक पुस्तिका लिखी थी जिसमें सत्याग्रहकी मिमांसा की थी। उस पुस्तिकाको उनने खुलेआम बांटा था जिसके फलस्वरूप वह जेलमें डाल दिये गये थे। श्रीपरीखका कहना था कि सत्याग्रहके संगठनकी आवश्यकता नहीं है और न उसको प्रदर्शन वा प्रचारकी जरूरत है जिसे सत्याग्रह करना है खुलेआम अपनी बाते कहता हुआ सत्याग्रह करेगा और जेल जायगा। उसकी देखा-देखी और भी आगे बढ़ेंगे और जेल यात्री बनेंगे हो सकता है जेल जानेका तांता टूट भी जाये। पर उसकी परवाह नहीं करना चाहिये। सत्याग्रह ठहर-ठहरकर और छिटफुट होते-होते ही व्यापक बन जायगा और

मंजिले मकसूदपर पहुँच जायगा। यदि हम संगठन करेंगे तब गुप्त रहना पड़ेगा और गुप्त कामको व्यवस्थित ढगसे करना कठिन है और वह व्यापक तो हो नहीं सकता। फिर प्रचार कीजियगा तब अखबार पर्चे वगैरह निकालने पड़ेंगे और गोपनीयता और बढ़ेगी। समय तथा सम्पत्तिका अपव्यय होगा जिससे जनताकी दृष्टिमे सत्याग्रहकी मर्यादा घट जायगी।

स्वामी आनन्दसे लेखककी काफी बातें हुई और अनेक बार। उसने कहा कि साधारण परिस्थितिमे वा अत्यन्त जाग्रत समाजमें श्रीपरीखके विचारानुसार सत्याग्रह होगा; पर जहाकी जनतामें सत्याग्रहकी भावना विकसित नहीं हुई है और एकाएक जो ऐसे संकटमें पड़ गया है जिसके टालनेके लिये तत्काल चेष्टा होनी चाहिये उसके बीच श्रीपरीखका सत्याग्रह चल नहीं सकता। परीखजीके अनुसार काम न चले तो देशको बढ़ा नहीं सके। १६३१, '३२ और '४२ के आन्दोलनने जनताकी शिथिलताको भारी धक्के दिये हैं और उन सभी अवसरोंपर सगठन तथा प्रचारकी जरूरत मालूम पड़ी है। परीखजी व्यक्तिगत दृष्टिसे सोच रहे हैं; सामाजिक दृष्टिसे नहीं। सामाजिक दृष्टिसे सोचनेपर मानना पड़ेगा कि या तो कार्यकर्त्तामें ऐसा व्यक्तित्व हो कि उसके जेल जानेसे ही सारे समाजमें हलचल मचता रहे या ऐसे व्यक्तित्वके अभावमें वह संगठन करे और इतने कार्यकर्त्ता जुटा लेवे कि जेल जानेका क्रम न टूटे और हलचल बना रहे। असह्य अत्याचारका इसी तरह सामना किया जा सकता है। एक सचाईपर और गौर करना है। विहार, मिदनापुर, महाराष्ट्र और कर्णाटकमें जोर जुल्म हो रहा है और सारे भारतवर्षमें न हम सचाई बोल सकते हैं, न लिख सकते हैं। ऐसी परिस्थितिमें सरकारसे अपने आदर्शके अनुसार ही सही न लड़ करके कार्यकर्त्ताओंकी आलोचना करना और सत्याग्रहके आदर्शको सामने रख कर उनको सहयोग न देना कायरता समझी जायगी। फिर स्वामी आनन्दने स्वीकार किया कि अगर वे विहारमें होते तो लड़ते हुए पाये जाते, यहां वे आन्दोलनसे अलग इसलिये हैं कि गुजरात और महाराष्ट्रकी ऐसी परिस्थिति है कि वे कार्यकर्त्ताओंको सगठित नहीं कर सकते। उनने माना कि जो सत्य तथा अहिंसाके नामपर आन्दोलनमें शामिल नहीं है वे अपना चाम बचा रहे हैं। बादको सुना कि उनने सत्याग्रह समितिको रुपये दिये और अपने सहयोगका वचन भी दिया।

यद्यपि विहारमें सिद्धान्तके नामपर सत्याग्रह समितिकी आलोचना होती रही

तथापि उसकी जड़ मजबूत होती गयी। ऐसे कार्यकर्त्ताओंकी कमी न थी जो मानते थे कि जबतक हमारे नेता जेलमे है हमे लड़ाई बन्द न करना चाहिये। उनमें जो सशस्त्र-क्रान्तिवादी थे उनका संगठन था और उनकी विचारधारा नौजवानोको अपनी ओर खींच रही थी। अहिंसा मार्गी ही राजनीतिक अनाथ हो रहे थे। सत्याग्रह समितिने उनको प्लॉटफार्म दिया; उनको बल मिला और वे तनकर चलने लगे। स्टूडेन्ट्स फेडरेशन पुनर्जाग्रत हुआ और श्रीअम्बिका सिंह, श्रीबलराम भगत और राणा शिवलाख छात्रोका सत्याग्रह समितिके दृष्टिकोणसे संगठन करने लगे। प्रो० भोलाप्रसाद सिंह आफिस इञ्चार्ज बने। वे अहिंसात्मक-संगठनके अभावमें राजनीतिक मैदानसे अलगसे हो गये थे। दीघाके बाबू फतहनारायण सिंह भी घर बैठे थे। तनमनसे सत्याग्रह समितिको अपनी सेवा दी और हिसाब-किताब रखनेका गुरुतर भार उठा लिया। श्रीहरिनाथ मिश्र और श्रीयुगलकिशोर प्रसाद सिंहने जिला जिलामे सत्याग्रह समितिकी शाखा स्थापित करनेकी जवाबदेही ली। शाहाबाद, दरभङ्गा, चम्पारण और सारन समितिके ही कार्यक्षेत्र बन गये। पूर्णियाको तो बड़ा लाभ पहुँचा। श्रीवासुदेव सिंह सगठनके अभावमे इण्डियन नेशनल काग्रेसके साथ थे और कच्चा पक्का निगलना पड़ता था। सत्याग्रह समितिके संगठित होते ही आपने उधर इस्तीफा दिया और इधर सत्याग्रह समितिके डायरेक्टरेटमे शामिल हुये। संताळ परगनाने भी समितिको ही माना और मुंगेरसे भी काफी सहयोग मिलने लगा। कर्मठ जिलाओमे अगर समिति नहीं जम सकी तो भागलपुर और गयामें। अगर समितिको कुछ समय मिलता तो गयामें भी जड़ जमा लेता। वहां श्रीहरिनाथ मिश्र संगठनका काम कर रहे थे और कामयाबी मिल रही थी।

सत्याग्रह समितिका ऑफिस इस मानेमे तो जरूर गुप्त था कि उसने साइनबोर्ड नहीं लटकाया था और न मकान मालिकको अपना परिचय दे रखा था। उसे इसकी भी चिन्ता थी कि पुलिसको इसका पता न लग जाये। फिर भी वह आफिस इतना खुला रहता था कि अपरिचित कार्यकर्त्ता भी वहां पहुँचते रहते और सत्याग्रह समितिके संचालक वा उनके सहायकोंसे प्रोग्रामके संबन्धमें बातचीत करते और पूरी पूरी खबर ले जाते। संचालक आफिसमें ही खाता पीता और आफिसमे ही सो जाता, सबके साथ, जिनमें आफिसके आदेशवाहकोंका अलावा परिचित अपरिचित स्वयसेवक भी होते। फिर भी संचालक गुप्त था हालाकि कहीं आने-

जाने और किसीको कोई प्रोग्राम देनेमें उसने रात दिनका कभी कोई ख्याल नहीं किया। उसने जिलाकी बैठकोंमें आत्म-समर्पणकी निन्दा की पर कहा कि पुलिसको देखकर भागना तो कदापि उचित नहीं है। हमें काम करते रहना है; काम करते हुये पकड़ा जायें। छिपना और इतना कि काम ठीक तरहसे न हो सके उतना ही बड़ा पाप है जितना बड़ा जेल चला जाना ताकि कामकी जवाबदेहीसे कोई बचा रहे। दोनों छिपना ही है; पहला फूसमें छिपना है दूसरा महलमें—अन्तर इतना ही है।

तौभी सत्याग्रह समिति, विहार शाखाके संचालकको सत्याग्रहके नामसे भय होता था। उसने ऑल इण्डिया सत्याग्रह समितिके सामने सुझाव रखा कि हमें अपने संगठनका कोई दूसरा नाम रखना चाहिये और सत्याग्रहका नाम नहीं लेना चाहिये। मुमकिन है कि गान्धीजीको यह पसन्द नहीं हो जैसे उनको हमारे संगठनके लिये ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीका नाम पसन्द नहीं आया। आखिर हम छिपते तो जरूर हैं। हमारा आदेश-वाहक छिपकर आता जाता है और हमारे पत्रादि छिपे छिपे हमारे ऑफिसोंमें पहुँचते हैं। श्रीसुचेता कृपलानी बोलीं कि स्वामी आनन्दने कहा है कि हम इस नामको रख सकते हैं और वे गान्धीजीकी विचारधाराकी जानकारी रखते हैं; इसलिये घबड़ानेकी जरूरत नहीं है। और श्री जी० रामचन्द्रने वायकम सत्याग्रहकी याद दिलायी। त्रावणकोर रियासतके वायकम गांवमें हरिजनोंको शिवालय होकर जानेवाली सड़कपर चलनेकी सुविधा दिलानेके लिये यह सत्याग्रह हुआ था। इस सत्याग्रहको चलानेके लिये संगठन करना पड़ा था, छिपे छिपे लोगोंसे धन लिया गया था। छिपे छिपे पहले पहल कार्यकर्त्ता जुटे थे और छिपे छिपे परचे लिखे जाते थे। सत्याग्रहके दरमियान ही जब गान्धीजी वायकम पधारे तब श्री जी० रामचन्द्रने उनके आगे वास्तविकता रखी। गान्धीजीने कहा—"परचे छिपकर लिखे जा सकते हैं लेकिन उनपर प्रकाशकका नाम देना होगा और उन्हें खुलेआम बाँटना होगा, चंदा चुपचाप लिया जा सकता है और उनका हिसाब-किताब छिपाकर सुरक्षित रखा जा सकता है। स्वयंसेवक चुपचाप बटोरे जा सकते हैं पर उनका काम खुलेआम ही होना चाहिये।

इस तरह सत्याग्रहकी तैयारी छिपे-छिपे की जा सकती है। उस तैयारीको मैं छिप छिपाव नहीं बल्कि पाक-साफ मानता हूँ।" यहाँ श्रीरामचन्द्रन जरा गंभीर हो गये और बोले—गान्धीजीके शब्द अब भी मेरे कानोंमें गूंज रहे हैं,

उस तयारीको मैं छिप-छिपाव नहीं बल्कि पाकसाफ मानता हूँ—Gandhiji's words are still ringing in my ears He said, such secret preparations are not secret but scared.

श्रीधोत्रेजीने भी एक कहानी सुनाई, बारडोली सत्याग्रहके अवसरको। सरदार पटेल खूब रातको बारडोली जाते और किसानोंसे सब कुछ सुन समझ अगला पैंतरा बतला आते। दिनमें वे न उधर जाते, न पुलिस और किसानोंके घात-प्रतिघातके बीच पड़ते। उनका यह गुप्त कार्य गान्धीजीको मालूम हुआ। उनने सरदारसे पूछा—"तुम क्यो ऐसा करते हो?" सरदार बोले—"आपने गोपनीयताको रोका है, सहज-बुद्धिके उपयोगको तो नहीं।" गान्धीजी चुप हो गये; मतलब यह कि सरदारके आचरणको आदर्श नहीं माना पर उन जैसोंके लिये त्याज्य भी नहीं समझा।

इस तरह श्री जी० रामचन्द्रन और श्रीधोत्रेजीने संचालककी शंकाका समाधान कर दिया और उसने नाम बदलनेपर जोर देना छोड़ दिया।

बिहार सत्याग्रह समितिने १९४३ की तीसरी सितम्बरको राजेन्द्र जयन्ती मनायी। प्रान्त भरमें उत्साह दीख पड़ा, पटनेमे कई जगहसे कई जलूस निकले और लगभग ५० गिरफ्तारियां हुईं। १९४४ में इसने स्वतंत्रता दिवस मनाया। कई दिन पहलेसे सरकार सगीन ताने अपने घोड़ोंकी टापों और लॉरियोंकी आवाजसे आतंक फैलानेकी कोशिश कर रही थी। फिर भी हर शहरमे दिनदहाड़े खुली सड़कपर सीना तानकर स्वतंत्रता दिवसके मनानेवाले निकले-झंडा फहराते हुये, नारा लगाते हुये और लगभग ढाई सौ गिरफ्तारियां हुईं। इस दिन एक घटना घटी महनार बाजारमे। स्वतंत्रता दिवस मनानेके लिये निकले हुये श्रीसुरेन्द्र सिहको पुलिसने पकड़ लिया और उनके मुखपर कालिख-चूना पोता, उनके गलेसे लचनी लटकाई और उन्हें सरे बाजार घुमाया। श्रीलक्ष्मी नारायण तात्कालीन मंत्री चर्खा सघने सचालकका ध्यान उस ओर आकृष्ट किया और कहा कि क्यो इस तरह अपमान सहा जाय? क्यो न वैसे गांवमें ही स्वतंत्रता दिवस मनाया जाय जहां सारा काम बेरोक-टोक हो? क्योंकि सहज-कर्म ही सत्यकर्म है। संचालकका उनसे घोर मतभेद था। सहज-कर्म सत्य-कर्म आज तक नहीं हुआ और तबतक न होगा जबतक अहिंसाकी नींवपर समाजका पुनर्संगठन न हो जाये। और सत्याग्रह तो वहां होना ही चाहिये जहां सचाईका

गला घोंटता अधिकारी वर्ग अपनी अकड़में खड़ा है। सत्याग्रह सतत संघर्ष है प्रतिपक्षीके सहयोगको अपनानेके लिये। अपने अहिंसाबलके आगे अत्याचारकी नगण्यता स्पष्ट करनेके लिये उसे प्रतिपक्षीके सामने आना ही पड़ेगा। संचालकने लक्ष्मीबाबूके सामने ही तय किया कि अगर श्रीसुरेन्द्रने चुप रहकर वा सिर्फ शाब्दिक विरोध करके अपना अपमान होने दिया होगा तब महनार बाजार विहारके सत्याग्रहका अखाड़ा बन जायगा और हम सभी वहां जाकर अपना मुंह रंगवायेंगे। उसने वहांके कार्यकर्त्ताओंको बुलाया और वस्तु स्थिति जाननी चाही। चर्खासंघ खादी भण्डारके मैनेजर श्रीचन्द्रीप नारायण वर्माने कहा कि श्रीसुरेन्द्रसिंहके प्रदर्शनमें मेरी दिलचस्पी रही है और मैंने शुरूसे आखिर तक उसे देखा है। पुलिसने जो किया सो पाशविक बलका प्रयोग करके। तौभी सुरेन्द्र नारे लगा रहे थे जिनको सैकड़ों कण्ठ दुहरा रहे थे। बाजारमें फिर जीवन आ गया है। उनका समर्थन अनेक स्थानोंमें अनेक कार्यकर्त्ताओं द्वारा हुआ। कार्यकर्त्तावर्ग मानता था कि आजादीकी लड़ाईमें ऐसे मोरचे भी आ जाते हैं जहां आततायियोंके हाथ मुंह ही रंगा नहीं जाता, शरीरकी और-और दुर्गति भी होती है। ऐसे मोरचेपर डटकर अपना मुंह रंगवानेसे जो नहीं डरते वही अपने कौमके मुंहकी लाली रखनेमें समर्थ होते हैं, और उसी कौमकी बहनें एक दिन अपने चरित्रबलपर अभिमान करती दीखती हैं जिनको उन बहनोंका बल मिला होता है जिनने वैसे मोरचेपर डटकर सब तरहके खतरे उठाये।

१९४४ के अप्रैल तक विहारके पुराने कार्यकर्त्ता और कांग्रेसके पदाधिकारी जेलके बाहर आ गये पर बाबू श्रीकृष्ण सिंह, वर्तमान प्रधान मंत्री विहार सरकार, बाबू सिंहेश्वर प्रसाद और बाबू शार्ङ्गधर सिंहको छोड़ किसीसे प्रोत्साहनके शब्द न मिलते थे। श्रीकृष्णबाबूसे तो संचालक मिला करता था और बराबर उनकी राय लिया करता था। इधर पुराने-पुराने कार्यकर्त्ता भी कहने लगे थे सत्याग्रह समिति स्थापित करके आन्दोलनको घसीटे चलना महात्मा गान्धी और देशरत्न राजेन्द्रप्रसादके मतके प्रतिकूल जाना है। ऐसी-बातें भी कही जा रही थीं कि राजेन्द्रबाबू चाहते हैं कि हम सरकारका विरोध बन्दकर देवें, मोकद्दमा लड़कर छूटनेकी कोशिश करें और रचनात्मक काममें लग जावें। इन्हीं अफवाहोंके बीच संचालक श्रीहरिनाथ मिश्र और युगल बाबूके साथ गिरफ्तार कर लिया गया और वहीं पहुँचा दिया गया जहाँ

बाँकीपुर जेलमे श्रीराजेन्द्र बाबू नजरबन्द थे। उनका विचार जाननेका मौका संचालकको मिला। मालूम हुआ कि राजेन्द्र बाबू नहीं समझते कि सरकारी हमलेके जवाबमें १९४२ में शुरू की गई हमारी लड़ाई खत्म हो गई। वे अगर जेलसे अभी निकले तो उनका असल काम होगा यह देखना कि कितने आदमी उनकी बात सुनते है। यदि दस साथी मिल गये तब उनको लेकर नहीं तो अकेला ही वे सत्याग्रहीका फर्ज अदा करने निकल पड़ेगे। उनका कहना था कि जो रचनात्मक कार्यक्रममें लग जाना चाहते हैं इसमें शौकसे लग जाएं; उनकी इच्छा है, पर हरगिज ऐसा न समझे कि हमारी लड़ाई खतम हो गयी या जनता अब लड़नेको तैयार नहीं है। सत्याग्रह समितिकी स्थापनाको राजेन्द्र बाबूने पसन्द किया। श्रीनरहरि परीखकी विचारधाराको उनने युक्ति सगत माना पर व्यवहारिक नहीं; बोले कि इसमें कोई शक नहीं कि जब समाज सत्याग्रहके सिद्धान्तपर संगठित हो जायगा तब किसी अत्याचारका प्रतिकार करनेके लिये उसे न परचेकी जरूरत होगी, न प्रचारकोकी, न दफ्तरकी और न धनकी। ये सब तो संगठनके साधन हैं, संगठित समाजको इनकी जरूरत क्या? पर जबतक समाजका वैसा संगठन न हो जाय तबतक इन साधनोका उपयोग करना ही पड़ेगा; नहीं करना समाजमे सत्याग्रहके पौधेको नहीं पनपने देना है।

सचालकने अपनी जानकारीके मुताबिक राजेन्द्र बाबूके विचारका खूब प्रचार कर दिया। कार्यकर्त्ता खूब उत्साहित हुये और दो एक बड़े बड़ेके विरोधकी परवाह न करके उनने राष्ट्रीय सप्ताह मनाया; ६ अप्रैल और १३ अप्रैलको प्रदर्शन किये और प्रान्त भरमे काफी तादादमें गिरफ्तार हुये।

अकस्मात् मई मासमे गान्धीजीको जेलसे छुटकारा मिला। उनने सभी कार्यकर्त्ताओको प्रकट हो जानेके लिये कहा और सत्याग्रह बन्द कर दिया। फिर सत्याग्रह समितिकी जरूरत नहीं रही। अब सत्याग्रह समितिके कार्यकर्त्ता चाहने लगे कि सत्याग्रह समितिकी विहार शाखाको ससम्मान तथा विधिपूर्वक समेट लिया जाय। कुछ लोगोंको इतना भी पसन्द न था। पर उसी समय आचार्य बदरीनाथ वर्मा, वर्तमान शिक्षा मंत्री, विहार सरकार जेलसे छूटकर आये और उनके सभापतित्वमे उनसे तथा अन्य सत्याग्रहियोसे भूरि भूरि प्रशंसा पाकर सत्याग्रह समिति अगस्त आन्दोलनके इतिहासकी अमिट चीज बन गई। उसका जो स्टैण्ड था कि सत्याग्रहके आदर्शका माननेवाला सरकारके जुल्मसे टक्कर लिये

'४२ के बंदी : '४६ के शासक !

माननीय श्री अनुग्रहनारायण सिंह
(अर्थ एवं खाद्य मंत्री)
(बिहार)

माननीय श्री श्रीकृष्ण सिंह,
(प्रधान मंत्री)
(बिहार)

८ अगस्तकी रातको ऑल इण्डिया कांग्रस कमिटीने बड़े-से-बड़े पामानेपर सत्याग्रह छेड़नेका निश्चय किया। आन्दोलन कब छेड़ा जाय ? कैसे छेड़ा जाय ? इसको तय करनेका भार गान्धीजीको मिला। गान्धीजीने एलान किया कि वे बड़े लाट साहबको पत्र लिखेंगे कि मुझको मिलनेकी सुविधा दीजिये और उनसे मिलकर हिन्दुस्तानकी मांगके सम्बन्धमें बात-चीत करेंगे। उचित समझौता होगया तो ठीक; नहीं तो आन्दोलन होगा ही। फिर उनने देशवासियोंसे अपील की कि देशके प्रति अपना कर्त्तव्य-पालन करें और जरूरत हुई तो मरनेके लिये तैयार रहें और अभीसे मानलें कि वे अजाद हैं और आजाद आदमी जैसा अहिंसाको मानते हुये बातें करें और काम करें। सरकारने ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीकी बातें सुनी, अगस्त प्रस्ताव पढ़ लिया। गान्धीजीका इरादा भी जान लिया; और उसने गान्धीजीको बुलाकर शब्दों द्वारा नहीं पर बिना बुलाये ठोस कार्रवाई करके बतला दिया कि उसे कांग्रेसके साथ समझौता करना नहीं है। फिर तो अगस्त प्रस्ताव और गान्धीजीके एलानके मुताबिक आन्दोलनका छिड़ना अनिवार्य्य होगया और आन्दोलन छिड़ा। फिर इसको कांग्रेसका आन्दोलन क्यो न माना जाय ? डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र घोषने ठीक ही कहा है कि अगस्त आन्दोलन तो अगस्त-प्रस्तावका अनिवार्य्य निष्कर्ष (necessary corollary) है। हां आन्दोलन कब और कैसे छिड़े ? इसे जनता जान नहीं सकी क्योंकि अचानक गिरफ्तार करके सरकारने इस सम्बन्धमे कुछ कहनेका मौका गान्धीजीको नहीं दिया। अगर इसीसे जनता मान लेती कि गान्धीजीने आन्दोलन छेड़नेका आदेश नहीं दिया और व्यापक आन्दोलन न करके बैठ रहती तो वह फ्रान्स देशके एक जल-सेनापतिके मूर्ख लड़के कासाबियनकासे भी ज्यादा बेवकूफ मानी जाती। जहाजके किसी स्थानको सुरक्षित समझकर बापने कासाबियनकासे कहा—वहीं खड़े रहना, बिना मेरा आदेश पाये नहीं टलना। फिर बाप मारा गया और उस स्थानमें भी आग लग गई। सब भागे पर कासाबियनका अचल रहा और सहज-बुद्धिसे काम न लेनेकी वजहसे वहीं जल मरा। भविष्यका इतिहास अभिमानपूर्वक लिखेगा कि हिन्दुस्तानकी जनताने सहज-बुद्धिसे काम लिया और जल नहीं मरी। और सच पूछिये तो जनताको लड़ाई छेड़नेका आदेश मिला था। गिरफ्तार होनेके लिये जाते हुये गान्धीजीने श्रीप्यारेलालको आदेश दिया था कि कार्यकर्त्ताओंको समझा देना कि जो आजादीका अहिंसक योद्धा है वह कागज या कपड़ेका "करेंगे वा

मरेंगे" लिखा हुआ बिल्ला अपने वक्षमें साट लेगा, जिससे सत्याग्रह करता हुआ अगर वह मारा गया तब उस चिन्हसे उन सबोंके बीच पहचाना जा सकेगा जिनका अहिंसा रास्ता नहीं है। दूसरे दिन जब आल इण्डिया कांग्रेस-कमिटीके सदस्यगण श्रीप्यारेलालसे मिले तब गान्धीजीका उक्त अन्तिम सन्देश देते हुये उनने कहा कि गान्धीजी दो बातोंको जीते-जी बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे—एक आन्दोलन छेड़नेकी कायरता दिखलाना और दो पागल बन जाना और हिंसा करने लगना। वैसी परिस्थितिमें आन्दोलन छेडनेके लिये गान्धीजी और क्या कह सकते थे? उनके आदेशको देशकी जननी 'बा' ने सुना और सत्याग्रह करनेको निकल पड़ीं, देशकी जनताने भी सुना और सत्याग्रह करनेको निकल पडी। इन सब बातोंपर गौर करते हुये कोई वजह नहीं मालूम होती कि कहा जाय अगस्त आन्दोलनको कांग्रेस वा गान्धीजीने नहीं छेड़ा हा! सरकारने गान्धीजीको नहीं बुलाया, अपनी बातें नहीं सुनायी उनको कांग्रेसके सामने अपना आखरी फैसला रखनेका मौका नहीं दिया और न कांग्रेसको दोबारा सरकारके प्रतिकूल प्रस्ताव पास करनेका अवसर लेने दिया। अगर इसीसे अगस्त आन्दोलन कांग्रेसका आन्दोलन नहीं हो सका तब फिर अगस्त आन्दोलन जैसा आन्दोलन छेडना काग्रेसके लिये कदापि संभव न हो सकेगा। कभी साम्राज्यवादी सरकार काग्रेसको ऐसा मौका नहीं देगी जिससे वह अपनी आखरी लड़ाई बाजाब्ता छेड सके और उसे इस ढंगसे चला सके कि लोकमत उसके अनुकूल हो जावे।

अब रही प्रोग्रामकी बात। सो अब साफ हो गया है कि अगस्त आन्दोलनका प्रोग्राम गान्धीजीका दिया हुआ नहीं था। उनने नारा (Slogan) दिया, जाते-जाते वे सन्देश (parting message) भी देते गये और ज्यादासे ज्यादा इतना ही कहा जा सकता है कि उनकी ओरसे श्रीप्यारेलालने श्रीखुरशेद बेन वगैरहको एक कागज दिया जिसमें बारह आदेश थे। पर अगस्त आन्दोलनका नाम लेते ही तोड़-फोड़ जैसे दृश्य आखोंमें नाचने लगते हैं उनका कोई आधार उक्त नारे, सन्देश वा कागजमें खोजे नहीं मिलता है। आन्दोलन छिड़नेके छठे दिन ही गान्धीजीने बड़े लाटको एक पत्र लिखा था। पत्र स्पष्ट कर देता है कि गान्धीजी तोड़ फोड़ नहीं चाहते थे। यदि उस पत्रको सरकार प्रकाशित करवा देती और उसका व्यापक प्रचार कर देती तब बहुतोंकी आखें खुल जातीं। पर एमरी साहबको काग्रेसके तोड़ फोड़का प्रोग्राम ब्रोडकास्ट करनेकी जरूरत

महसूस हुई क्योंकि नेताओंको गिरफ्तार करना था और गान्धीजीके विचारको ब्रोडकास्ट करनेकी जरूरत नहीं मालूम पड़ी क्योंकि उन्हें गिरफ्तार ही रखना था।

तब सवाल उठता है कि तोड फोड़का प्रोग्राम आया कहांसे ? आत्म-कथामें डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद् लिखते है—"× × × गान्धीजीने कहा कि लोहा-लकड़ी काटने-तोडनेमें हिंसा-अहिंसाकी बात नहीं उठती है, हम तो रोज सधारण रीतिसे लोहा-लकड़ी काटते तोडते रहते हैं; पर रेलकी पटरी उखाड लेना अथवा तार काट देना दूसरी बात है। किस उद्देश्यसे यह काम किया जाता है, किस तरहसे किया जाता है और इसका फल क्या होता है, इन बातोपर इसका हिंसात्मक और अहिंसात्मक होना निर्भर है, यदि इससे हत्या हो अथवा वेकसूर लोगोपर विपत्ति आवे तो यह हिंसात्मक होगा, पर हम ऐसी परिस्थितिका अनुमान कर सकते हैं जब यह अहिंसात्मक भी हो सकता है।

"हमने उनके कहनेका आशय यह समझा कि इसे अहिंसात्मक होना बहुत करके इसपर निर्भर होगा कि इसके कारण किसीकी जानपर खतरा न हो और जो कोई भी ऐसा काम करे वह उसकी जवाबदेही अपने ऊपर साफ-साफ और सीधे लेले ताकि दूसरोको, जिनका इससे कोई सरोकार न रहा हो, इसका फल भुगतना न पड़े।"

गान्धीजीके -आशयको जैसा राजेन्द्र बाबूने समझा वैसा ही श्रीकाका कालेलकर और श्रीकिशोरलाल मशरूवालाने समझा और तीनो विहारमें तोड़ फोड़के प्रचारके कारण बने। गान्धीजीको देशके वातावरणका खयाल करके और तोड़ फोड़को लेकर उनने जो चर्चा की थी उसको याद करके मान लेना चाहिये था कि अगर मै साफ और जोरदार शब्दोमें तोड़ फोड़की मनाही नहीं कर जाता हूँ तब तोड़ फोड़ होगा ही। वे नारे और सन्देश दे गये पर तोड़ फोड़की मनाही करनेसे चूक गये। उनकी चूकपर तोड़ फोड़की जवाबदेही लदेगी ही। पर विहारकी लनताको गान्धीजीकी चूकका सहारा नहीं लेना है। उसे तोड़ फोड़का प्रोग्राम मिला सीधे राजेन्द्र बाबूसे, प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीसे और राजेन्द्र बाबूके सम्पर्कमे आनेवाले कार्यकर्त्ताओंसे। और उसने जो तोड़ फोड़ किया उसके लिये दुखी होनेका कोई कारण उसे नहीं दीखता। रेल, पुल और सड़कको नष्ट करनेकी प्रान्तव्यापी चेष्टा हुई और अनगिनत स्थानोमें सफलता मिली; फिर भी कहीं कोई नहीं मरा। जनताने इस संबन्धमें जो किया, दिनदहाड़े, अधिकारियोंकी

शहीद किशोर ध्रुव (जगन्नाथ कुण्ड),
कटिहार (पूर्णिया)
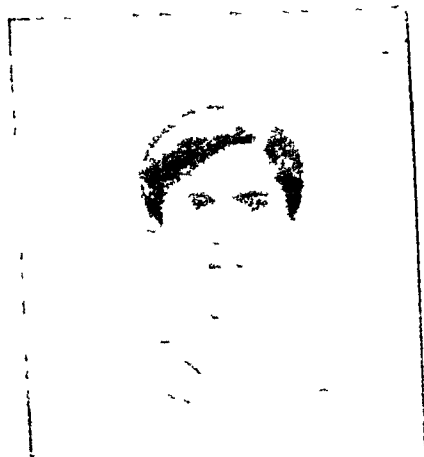
शहीद प्रभुनारायण सिंह,
माडर (भागलपुर)

सदाकत आश्रम
शान्तिकाल निवासस्थान ।

पटना कम्पउण्ड
युद्धकाल निवास स्थान ।

नजरके सामने किया। पर जब राजेन्द्र बाबू कहते हैं कि जबतक अधिकारी वर्ग हमारी संख्या और हिम्मतके आगे कमजोर और विमूढ़-सा बना रहा हम खुलेआम तोड़ फोड़ करते रहे और जब वह फौजको पीठपर बुलाकर मजबूत हो गया हम भाग खड़े हुये—यह सत्याग्रह नहीं हुआ, तब चुप रह जाना पड़ता है। सचमुच वह सत्याग्रह नहीं था। पर जो था सो सत्याग्रहकी दिशामें ही था। उसके पहले जनताने नेतृत्व विहीन होते हुये भी इतनी बड़ी तादादमें कांग्रेस-प्रोग्रामके प्रति इतनी निर्भयता, तन्मयता और श्रद्धाका परिचय नहीं दिया था। एक बात और। तोड़ फोड़ करके तोड़ फोड़की जगहपर डटे रहनेका प्रोग्राम भी तो न था। तोड़ फोड़ तो था अगस्त-क्रान्तिकी एक मंजिल जैसा। जनता वहां पहुँची और उसे पारकर गई। अगर डटनेका प्रोग्राम होता तब राजेन्द्र बाबूको उतना निराश होनेका मौका बिहार हरगिज नहीं देता।

अगस्त-आन्दोलनमें जनताकी ओरसे हिंसा भी हुई है। किसी किसी हिंसामें तो कल्पनातीत निर्दयता दिखलायी गयी है। बिहारको उसका अनुताप है। पर जिस मात्रामें उसने अपनी अहिंसा-शक्तिका परिचय दिया है वह बराबर अहिंसा-मार्गियोंके अभिमान तथा उत्साहका कारण बना रहेगा। आन्दोलन शुरू होता है ९ अगस्तसे और उसी दिनसे पुलिसकी लाठियां जनताके खूनसे लाल होने लगती हैं और ११ अगस्तसे तो गोली भी चलने लगती है। पर सब कुछ बरदाश्त करती हुई जनता आन्दोलनके मैदानमें आगे बढ़ती ही नजर आती है। अगर जनता उसी दिनसे सरकारकी हिंसाका पासंग भी दिखलाना शुरू करती तब कितने जिलेके चौकीदारसे कलक्टर तक लापता हो गये होते। फिर जब लंबे अरसेकी गुलामीसे सतायी हुई जनता दमनकी पीड़ा बरदाश्त करनेमें असमर्थ होकर अपने ढंगसे उत्तेजित होती है और एक आध अंगरेज वा किसी अमलेको घेर लेती है उस मौकेपर भी हम देखते हैं, कोई कार्यकर्त्ता पहुंच जाता है और गान्धीजीकी या राजेन्द्र बाबूकी दुहाई देकर जनताको शान्त करके उस अंगरेज वा अमलेको बचा लेता है। ऐसा भी हुआ है कि पुलिसने गोलियां चलायी हैं, जनता घायल हुई है और उसके आदमी मरे भी हैं पर जब गोली खतम होगयी है और जनताने पुलिसको घेर लिया है तब चटपट पुलिसने आन्दोलनका नारा लगाना शुरू कर दिया है और कांग्रेसकी अधीनता कबूल करली है। फिर जनताने उसे गांधी टोपी पहनाकर उसके हाथमें झंडा देकर उससे गान्धीजीकी जय बोलवा

कर उसको छोड़ दिया है। पुलिसने जनतापर तरह तरहके अत्याचार किये हैं, उसका धन लूटा है, उनकी इज्जत लूटी है और जनताने उनकी व्यक्तिगत सम्पत्तिको छुआतक नहीं है, कितनी जगह उसकी हिफाजत की है। उनके परिवारको इज्जतके साथ रखा है, यथा स्थान पहुँचाया है और पहुँचानेमें मदद की है।

जहां-जहां जनताने खून किया है वहां-वहांकी परिस्थितिका विश्लेषण बतलाता है कि कोई-न कोई ऐसी दुर्घटना हुई थी जिसने जनताको बेहद उभाड़ रखा था। वह उच्छृङ्खल हो रही थी और कोई पढ़ा-लिखा पुराना कांग्रेस-कार्यकर्त्ता मौकेपर मौजूद न था। आन्दोलन इतना व्यापक हुआ था कि ऐसे-ऐसे लोगोंकी भी बडी तादाद इसमें शामिल होगयी थी जिनमें राजनीतिक दृष्टिकोणका सर्वथा अभाव था। अगर प्रान्तमें खूब मजबूत संगठन होता तो ऐसे-ऐसे लोग नियन्त्रणमें रखे जा सकते थे। पर आन्दोलनके अनुकूल संगठन नहीं था इसलिये ऐसे-ऐसे लोगोंमें जब जैसी उत्तेजना आयी उन्होंने तब तैसा काम किया। इनमे कुछ पेशेवर लुटेरे थे जिनने डब्बो और मालगोदामोंके सामानकी लूट शुरू की और कितने ऐसे थे जिनको पुलिससे पुराना बैर था जिसका बदला लेनेके लिये अगस्त आन्दोलनके जैसा अपूर्व सुअवसर उनको मिला। फिर पुलिसके भाड़ेके टट्टू भी काफी तादादमे कार्यकर्त्ताओंकी जमातमे घुस गये थे जो जनताको खतरनाक रास्तेपर पैर देनेके लिये बहकाते रहते थे। स्वयं लेखकका एक मनोरंजक अनुभव है। एक थे श्रीरफाकत खां, विद्यार्थी मिथिला कालिज दरभंगा। आप लेखकसे तकरीबन रोज मिलते और कहते कि आपके पास चुने-चुने साठ जवान हैं जो रातके दस बजेसे तीन बजेतकके ही काम खूबीके साथ कर सकते है। एक महीना दौड़नेके बाद भी जब लेखकने रातका काम उनको नहीं दिया तब वह अपने जवानोके साथ दिनका ही काम करनेको राजी होगये और लेखकको एक जगह उन जवानोसे मिलनेको बुलाया। लेखक वहां पहुँचा, अच्छे-अच्छे जवानोसे मिला जिनने उसको साथ ले लिया और थाना पहुँचाकर हाजतमें बन्द करवा दिया।

जनताकी हिंसाका अन्दाज लगाते समय परिस्थितिकी उक्त जटिलताओंपर ध्यान देना अनिवार्य्य है। अब कहां तक कार्यकर्त्ताओंने हिंसाको अपनाया जाननेके लिये जन-व्यवस्था वा जनताराजका इतिहास देखिये। वहां कार्यकर्त्ता शेर जैसे हो रहे थे। उनके सामने दोस्त थे और दुश्मन भी। उनने जन-व्यवस्था करते हुये दोनोंकी सुख-सुविधाका समान विचार किया। उनके सामने पूंजीपति थे,

दलाल थे और ऐसे लोग भी थे जिनके बारेमें उनको पूरा पता था कि वे कार्यकर्त्ताओंके विरोधी रहे हैं और आगे भी रहेंगे पर उनने किसीके स्वार्थपर आंच नहीं आने दी। लूटपाटको तो बन्द करनेमें एक जगह घोर निन्दनीय कड़ाईसे काम लिया। यदि उनमें लूट वा बदलेकी भावना रहती तब जन-व्यवस्था वा जनता-राजका इतिहास कुछ और तरहका होता। हां, जहांतक सशस्त्र-क्रान्तिकारियोंका संबन्ध है मानना पड़ेगा कि उनने हिंसा की है, पर उनकी हिंसा उस चूहे जैसी हुई है जिसने जानपर खेलकर बिल्लीकी मूछके एक-दो बाल कुतर दिये हैं और मुंहपर एक-दो जगह खरोंच भी लिया है।

इसलिये यह मानना कि देशकी अहिंसात्मक प्रगतिको अगस्त-आन्दोलनसे धक्का लगा है और उसका विकास रुक गया है, निराधार है। सत्यमें जो बल है, अहिंसामें जो आकर्षण है उसका परिचय अबकी बिहारने जैसा दिया वैसा कभी पहले वह न दे सका था। व्यक्तिगत-सत्याग्रहके आन्दोलनसे अगस्त आन्दोलनकी तुलना कीजिये। व्यक्तिगत सत्याग्रहमें बिहार उनको ही शामिल करता था जो सत्याग्रह कैम्पसे निकले हुये होते, जिनको राजेन्द्र बाबूकी सिफारिश मिली होती और जिनको गान्धीजीका आदेश मिला होता। वे सरेआम ब्रिटिश साम्राज्यके खिलाफ नारा लगाते और उमीद रखते कि पुलिस उनको गिरफ्तार कर लेगी। गिरफ्तार न करके पुलिसने बहुतोंको निराश कर दिया। फिर तो जहां-तहां उसके पास सिफारिश पहुँचानी पड़ी कि अमुकको गिरफ्तार करनेकी कृपा करो, अमुकको गिरफ्तार करनेकी कृपा करो। और जो सब गिरफ्तार न हुए वे समाजके लिये एक समस्या होगये। समाज उनके सत्याग्रहसे प्रभान्वित न हो सका और सरकार तो और भी नहीं। पर अगस्त आन्दोलनका सत्याग्रह वैसा न था। उसने ब्रिटिश साम्राज्यवादको अपना लोहा माननेके लिये मजबूर किया। उसने जनताको इस बार दिखला दिया, किस तरह सत्यके लिये अहिंसापूर्वक सत्याग्रही अपनेको मिटा देता है। हां! गान्धीजीके सत्याग्रहकी कसौटीपर अगस्त-आन्दोलनके सत्याग्रहको कसें तब उसमें काफी खामियां नजर आयेंगी। पर कसौटीपर तो सोना खरा उतरता है समाज नहीं। समाजकी प्रगतिका अर्थ तो होता है उसके दुर्गुणोंका जरा दबना और सद्गुणोंका जरा विकसित होना। सो अगस्त आन्दोलनमें सुविधा ढूढने और चाम बचानेकी प्रवृत्तिको बिहारने दबाया और निहत्था गोलीका सामना करनेके बलको बढ़ाया। यह ऐसी प्रगति है जो आगे सत्याग्रहका और विकसित रूप ससारके आगे रख सकेगी। अगर बिहारमें अगस्त-आन्दोलनके अनुकूल सगठन होता तब यह प्रगति कहीं अधिक होती।

पर बिहारमें अगस्त आन्दोलनके विफल होनेका कारण संगठनका अभाव नहीं है। प्रोग्रामका अभाव भी नहीं है। प्रोग्राम तो था झंडा फहरानेसे लेकर जनता-राज कायम करने तकका। जहां शक्ति थी जनता-राज कायम हुआ। पर सारे बिहारमें जनता-राज स्थापित करनेकी ताकत पैदा करना बिहारके लिये

असंभव था। उसके लिये आवश्यक था सारे हिन्दुस्तानका उठ खड़ा होना। जितना विहारकी जनताने किया उसका आधा भी हिन्दुस्तानकी अधिकांश जनता एक साथ कर दिखाती तब अगस्त आन्दोलनका इतिहास कुछ और होता। एक प्रान्तका अकेला आजाद होकर अंगरेजी सरकारकी ताकतके आगे सर उठाय रखना नामुमकिन था। उसे तो हिन्दुस्तानके पिछड़े हुए हिस्सोने पछाड़ दिया। हा! कुछ और बाते भी थीं जो अंगरेजोके अनुकूल पडती थीं; यानी उस मौकेपर हिन्दुस्तानमें वेहिसाव गोरे आगये थे, अमरीका तकके धन जनका साधन हिन्दुस्तानकी आजादीकी लडाईको कुचलनेके लिये अंगरेजोको उपलब्ध था और उनने उसका उपयोग भी किया। फिर विहारकी अगस्त क्रान्ति क्यो न विफल होती? विहारका संगठन उसको विफल होनेसे रोक नहीं सकता था। पर हां! आन्दोलनके सिलसिलेमे इसके कार्यकर्त्ताओसे जो गलतियां हुई उनसे कार्यकर्त्ताओको बचा सकता था।

अगस्त आन्दोलन छिड़नेके पहलेसे-मई माससे ही राजेन्द्र बाबू विहारका दौरा कर रहे थे। जहा जाते वे देशके लिये सरकी मांग करते। कहते कि दो तरहके मरनेवाले होते है—घुल घुलकर और सीना तानकर, इस बार हमे सीना तानकर मरनेवालोकी भी बड़ी जरूरत पड़ेगी। राजेन्द्र बाबूने विहारमें नया जीवन ला दिया और विहार नयी सकल्प शक्ति लेकर नये आन्दोलनकी प्रतीक्षा करने लगा। पर राजेन्द्र बाबू विहारको ऐसा संगठन न दे सके जिसके सूत्रमें बधकर विहारके कार्यकर्त्ता अगस्तके सकट कालमें एक साथ उठ खड़े होते और आन्दोलनके नेतृत्वका भार अकेला विद्यार्थी वर्गके अनभ्यस्त कंधोपर न पड़ने देते। जब तब राजेन्द्रबाबू इस कमीको इतना महसूस करते कि कहते—मैने अपनी जिन्दगी बेकार खोयो; काग्रेसको मजबूत रखनेके लिये दोके झगड़ोके बीच पडता रहा और समय खोता रहा; अगर गांवमे आश्रम खोलकर मै बस जाता जैसा कि महात्माजीने कहा था तब सारे विहारके कार्य कर्त्ताओको राह दिखाता हुआ उनकी कठिनाइयां समझता और दूर करता हुआ मै विहारका सुन्दर संगठन कर लेता।

आज विहारकी वह महान विभूति सारे देशके लिए सुन्दर संगठन तैयार करनेमे लगी है—विहारको इसका सुख है। पर विहारके गांवके कार्यकर्त्ताओंको जिन्हें ज्वालामुखीमे कूदना है एक सूत्रमे संगठित करनेके लिये कोई विभूति आगे बढ़ नहीं रही है—विहारको इसका दुख है।

परिशिष्ट

भारत छोड़ो

(अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी द्वारा ८ अगस्त १९४२ को पास किया हुआ प्रस्ताव)

आल इन्डिया कांग्रेस कमिटीने वर्किंग कमिटीकी १४ जुलाई १९४२ की तजवीजपर जो उसके पास गौर करनेके लिये भेजी गई थी, और उसके बादके वाकयातपर अच्छी तरह गौर किया। लड़ाईके हालातमें जो तबदीलियाँ हुई हैं उनपर, ब्रिटिश हुकूमतके जिम्मेदार नुमायन्दोंके बयानातपर और उस तजवीजपर हिन्दुस्तानमे और गैर मुल्कोंमें जो रायें जाहिर की गयी हैं और जो समालोचनाये की गयी है उनपर भी उसने बखूबी गौर कर लिया है। कमिटी उस तजबीजको पसन्द करती है और उसकी ताईद करती है। उसकी रायमें बादके वाकयातने इस बातको और भी साफ कर दिया है कि वह तजबीज कितनी मुनासिब है और हिन्दुस्तानके लिए व 'यूनाइटेड नेशन्स' के मकसदकी कामयाबीके लिये हिन्दुस्तानसे ब्रिटिश हुकूमतका फौरन उठ जाना कितना जरूरी है। उस हुकूमतके जारी रहनेसे हिन्दुस्तानकी कमजोरी और गिरावट बढ़ती जाती है और वह अपनी हिफाजत करनेमें और दुनियाँकी आजादीके मकसदको पूरा करनेमें रोज-ब-रोज ज्यादा असमर्थ बनता जाता है।

कमिटीको रूसी और चीनी मोर्चोंकी बिगड़ती हुई हालतको देखकर बहुत दुख और परेशानी हुई है और रूसी तथा चीनी जनताने अपनी आजादीकी हिफाजतके लिए जिस वीरताका परिचय दिया है उसके लिये वह उसे बधाई देती है और उसकी कद्रदानी करती है। खतरा बढ़ता जाता है और इसलिये उन सब लोगोंके लिए, जो आजादीकी कोशिश कर रहे हैं और जो उन कौमोंके साथ हमदर्दी रखते हैं जो आज दूसरोंके हमलेकी शिकार बनी हैं, यह अब लाजिमी हो गया है कि वह मित्रराष्ट्रोंकी तरफसे जो पालिसी अबतक बर्ती गई है जो कि

बार-बार नाकाम रही और जिसके नतीजे बहुत ही खतरनाक निकले, उसकी बुनियादोंको अच्छी तरहसे जांच करे। अगर कामयाबीकी सूरत पैदा करनी है तो यह काम ऐसे तरीको और पालिसियोंको बर्तने और ऐसे मकसदोंपर कायम रहनेसे हासिल नहीं हो सकते क्योंकि हमारे पुराने तजरबेने इस बातको साफ जाहिर कर दिया है कि ऐसे मकसद और पालिसियां ही इस नाकामयाबीके लिये जिम्मेदार है। यह पालिसी आजादीकी बिनापर नहीं बनी है बल्कि गुलाम कौमों और नौ-आबादियोंपर हुकूमत कायम रखनेकी गरजसे और साम्राज्यशाहीके सिलसिले और तरीकोंको जारी रखनेकी गरजसे बनाई गई है। साम्राज्य, अब हुकूमत करनेवाली ताकतको मजबूत करनेके बजाय और कमजोर करता है और आज उसके लिये एक बोझ और अभिशाप बन गया है। मौजूदा जमानेकी साम्राज्यशाहीकी सबसे मशहूर मिसाल हिन्दुस्तान है और इसलिए वह सबसे अहम सवाल बन गया है क्योंकि इंगलैंड और 'यूनाइटेड नेशन्स' की ईमानदारीकी कसौटी हिन्दुस्तानकी आजादी है और इसी तरीकेपर एशिया और अफ्रिकाकी कौमोंमें उम्मीद और उत्साह पैदा किया जा सकता है। ब्रिटिश हुकूमतका खतम होना इस तरह एक फौरी जबरदस्त सवाल बन गया है जिसपर युद्धका भविष्य और आजादी और लोकतंत्रकी कामयाबी निर्भर करती है। आजाद हिन्दुस्तान आजादीकी जंगमें और नाजीज्म, फैसिज्म और साम्राज्यशाहीके हमलोंका मुकाबला करनेमें अपने तमाम साधनोंका इस्तेमाल करेगा और इस तरह कामयाबीको पोखता कर देगा। इससे महज जंगका नक्शा ही नहीं बदलेगा बल्कि दुनियांकी जितनी गुलाम और मजलूम कौमें हैं वह सब 'यूनाइटेड नेशन्स' की तरफदार हो जायेगी और ये 'यूनाइटेड नेशन्स' हिन्दुस्तानके साथ दुनियांका नैतिक और अध्यात्मिक नेतृत्व करेंगे। गुलाम हिन्दुस्तान ब्रिटिश साम्राज्यशाहीका प्रतीक बना रहेगा और साम्राज्यशाहीका यह धब्बा तमाम 'यूनाइटेड नेशन्स' के भविष्यपर बुरा असर डालेगा।

इसलिये आजकी संकटपूर्ण अवस्थामे यह आवश्यक है कि हिन्दुस्तान आजाद हो और ब्रिटिश हुकूमतका खात्मा हो। आइन्दाके लिये किये गये किसी किस्मके वादो या गारन्टीसे मौजूदा हालतमें फर्क नहीं पड़ सकता और हम खतरेका भी मुकाबिला नहीं कर सकते। इनसे जनताके दिल और दिमागपर वह असर नहीं डाला जा सकता और उनकी मनोवृतिमे वह तबदीली नहीं पैदा की जा सकती

जिसकी कि आज जरूरत है। सिर्फ आजादीका जज्बा ही करोड़ों लोगोंमें उत्साह और जोश भर सकता है और उनको सक्रिय बना सकता है और इसी तरह लड़ाईकी सकल भी फौरन बदली जा सकती है।

इसलिए अ० भा० का० क० हिन्दुस्तानसे ब्रिटिश हुकूमतके हट जानेकी अपनी मांगको बहुत जोरके साथ दोहराती है। हिन्दुस्तानकी आजादीके एलान हो जानेपर एक आरजी हुकूमत बनाई जायगी और आजाद हिन्दुस्तान 'यूनाइटेड नेशन्स' का साथी हो जायेगा और आजादीकी लड़ाईकी मुश्तरका जद्दोजहदकी कठिन मुसीबतों और आजमाइशोंमें उनका शरीक बन जायेगा। आरजी हुकूमत मुल्ककी खास-खास पार्टियों और गिरोहोंके सहयोगसे ही बन, सकती है। इस तरह यह एक मिली-जुली हुकूमत होगी जो हिन्दुस्तानकी जनताके तमाम खास-खास हल्कोंकी नुमायंदगी करेगी। उसका पहिला और खास काम हिन्दुस्तानकी हिफाजत करना और अपनी सारी सशस्त्र और अहिंसक ताकतोंसे हमलेका मुकाबला करना होगा और दोस्त कौमोंके साथ खेतों, कारखानों और दूसरी जगहोंमें काम करनेवाले लोगोंकी भलाई और तरक्कीके लिये कोशिश करना होगा क्योंकि खसूसियतके साथ इन्हींके हाथमें सारा अख्तियार और सारी ताकत होगी। आरजी हुकूमत 'कान्स्टीट्यूयेन्ट असेम्बली' के लिए एक स्कीम तैयार करेगी और यह असेम्बली हिन्दुस्तानकी हुकूमतका एक ऐसा आईन बनायेगी जो जनताके सब हल्कोंको कबूल और मंजूर होगा। कांग्रेसकी रायके मुताबिक हिन्दुस्तानका आईन संघकी शकलका होना चाहिये जिसमें शामिल होनेवाले हर मुल्कको ज्यादा-से-ज्यादा खुद मुख्तारी हासिल होगी और जिनको बकीया अधिकार भी हासिल होंगे। हिन्दुस्तान और दोस्त कौमोंके बीच भविष्यमें क्या रिश्ता होगा इसका फैसला इन सब आजाद मुल्कोंके नुमायन्दे आपसमें सलाह-मशविरे करके समझौतेसे करेंगे और ऐसा करनेमें एक दूसरेका फायदा और हमलेके रोकनेमें एक दूसरेसे सहयोगका मद्‌नजर होना चाहिये। आजादी हिन्दुस्तानमें कामयाबीके साथ हमला रोकनेकी काबलियत पैदा करेगी और उसी हालतमें इस काममें हिन्दुस्तानकी हुकूमतके पीछे जनताका मजबूत इरादा और उसकी पूरी ताकत लग सकेगी।

हिन्दुस्तानकी आजादी एशियाकी उन तमाम कौमोंकी आजादीका प्रतीक और आरंभक हो जायेगी जो आज विदेशी हुकूमतके मातहत है। बर्मा, मलाया,

हिन्द-चीन, डच इन्डीज, ईराक और इरान भी अपनी मुकम्मिल आजादी हासिल करेंगे। यह बात साफ तौरसे समझ लेना चाहिये कि इनमेंसे ऐसे मुल्क जो आज जापानियोंके कब्जेमें हैं लड़ाईके बाद फिर किसी दूसरी औपनिवेशिक ताकतके मातहत या कब्जेमें नहीं रखे जायेंगे।

इसमें कोई शक नहीं कि ए० आइ० सी० सी० का मुख्य काम तो इस खतरेके वक्त हिन्दुस्तानकी आजादी हासिल करना और उसकी हिफाजत करना है तो भी कमिटी अपनी इस रायको जाहिर करना चाहती है कि दुनियाँकी भावी शान्ति, रक्षा और बाकायदा तरक्कीके लिये यह निहायत जरूरी है कि आजाद कौमोंका एक विश्वसंघ बने। किसी दूसरे ढंगसे आजकी दुनियांके सवाल हल नहीं किये जा सकते। यह 'विश्वसंघ' अपने परिवारके मेम्बरोंकी आजादीकी रक्षा करेगा; एक कौमके जरिये दूसरी कौमपर जो हमला होता है या शोषण चलता है उसे यह संघ रोकेगा; अकलीयतोंकी हिफाजत करेगा, पिछड़े हुए दुनियाके हिस्सों और लोगोंकी तरक्की करेगा और सबकी भलाईके कामके लिये दुनियाके-साधनोंको इकट्ठा करके उनको इस्तेमाल करेगा। ऐसे विश्वसंघके कायम हो जानेपर सब मुल्कोंमें निःशस्त्रीकरण मुमकिन हो सकेगा, हर मुल्कको फौज, समुद्री सेना और हवाई सेना रखनेकी जरूरत बाकी न रह जायेगी और विश्वसंघकी रक्षा सेना संसारमें शाति कायम रखेगी और हमलोंको रोकेगी।

आजाद हिन्दुस्तान खुशीके साथ विश्वसंघमे शामिल होगा और अन्तर्राष्ट्रीय सवालोंके हल करनेमें बराबरीकी हैसियतसे दूसरी कौमोंके साथ सहयोग करेगा।

ऐसा विश्वसंघ उन सब कौमोंके लिए खुला रहेगा जो उसके बुनियादी उसूलोंसे सहमत होंगे। लड़ाईके लिहाजसे यह विश्वसघ शुरूमें लाजिमी तौरपर 'युनाइटेड नेशन्स' का बनेगा। ऐसा कदम अगर आज उठाया जाये तो उसका लड़ाईपर धुरी मुल्कोंकी जनतापर और आनेवाली सुलहपर जबरदस्त असर पड़ेगा।

लेकिन कमिटी अफसोसके साथ महसूस करती है कि बावजूद लड़ाईके दर्दनाक और हिम्मतको पस्त करनेवाले सबकोंके और उन खतरोंके जो दुनियांके सरपर तलवारकी तरह लटक रहे हैं, ये मुल्क अभी विश्वसङ्घ बनानेके लिए हर लाजमी कदमके उठानेके लिए तैयार नहीं हैं। ब्रिटिश हुकूमतका रुख और विदेशी अखबारोंकी बहकी हुई आलोचना भी इस बातको साफ करती है कि हिन्दुस्तानकी

आजादीकी जाहिरा मांगकी भी मुखालिफत की जाती है, हलांकि यह मांग खास तौरपर मौजूदा खतरेका मुकावला करने, हिन्दुस्तानको अपनी रक्षा करनेके काविल वनाने और चीन और रूसकी जरूरतके वक्त मदद करनेके लिए पेश किये गये है। कमिटीको इसकी फिक्र है कि चीन या रूसके हिफाजतके काममें किसी तरहकी रुकावट नहीं क्योंकि इनकी आजादी कीमती है और उसकी हिफाजत होनी चाहिये। कमिटीको इसकी भी फिक्र है कि 'युनाइटेड नेशन्स' की रक्षा करनेकी कावलीयत खतरेमें न पड़ने पाये। लेकिन हिन्दुस्तानका और इन कोमोंका खतरा वढ़ता जाता है और इस मौकेपर हिन्दुस्तानके खामोश रहनेसे और विदेशी हुकूमतके मातहत वने रहनेसे हिन्दुस्तानकी महज गिरावट ही नहीं हो जाती है और हमलेको रोकने और अपनी हिफाजत करनेकी कावलीयत ही नहीं घटती जाती है वलिक यह उस वढ़े हुए खतरेका कोई जवाव ही नहीं है और न इस तरह 'युनाइटेड नेशन्स' को जनताकी कोई सेवा ही हो सकती है। वर्किङ्ग कमेटीने इंगलैड और 'युनाइटेड नेशन्स' से पुरजोश अपील की है उसका कोई इत्मीनानके काविल जवाव नहीं मिला है और विदेशमे कई जगह जो आलोचनाएँ हुई हैं उनमें हिन्दुस्तान और दुनियाके वारेमें उनकी जहालत ही जाहिर होती है और कभी-कभी हिन्दुस्तानकी आजादीकी मुखालिफत भी पायी जाती है। ये वाते हुकूमत करने और अपनी नस्लको दूसरोसे वड़ा समझनेकी मनोवृत्ति ही जाहिर करती है जिसे एक ऐसी स्वाभिमानी कौम नहीं वरदाश्त कर सकती जिसको अपनी ताकत और अपने मकसदके वाजिव होनेका एहसास है।

इस आखिरी लमहेमें ए० आइ० सी० सी० दुनियांकी आजादीके फायदेके लिए इंगलैंड और सयुक्त-राष्ट्रोंसे इस अपीलको एक वार फिर दोहराती है। लेकिन कमिटी महसूस करती है कि उसके लिए यह मुनासिव न होगा कि वह मुल्कको एक ऐसी साम्राज्यशाही हुकूमतके खिलाफ अपने इरादेका पूरा करानेकी जद्दोजेहदसे रोके जो उसपर छायी हुई है और उसको अपने और मानव-जातिके फायदेके लिये काम करनेसे रोकती है। कमिटीका इसलिये यह फैसला है कि वह हिन्दुस्तानकी आजादीके पैदायशी हककी हिफाजत करनेके लिए वड़े पेमानेपर अहिंसात्मक ढंगसे सामूहिक लडाई शुरू करनेकी इजाजत देती ताकि मुल्क अपनी उन तमाम अहिंसक ताकतका उपयोग कर सके जिसे उसने शान्तिमय आन्दोलनके पिछले वाईस सालोंमे इकट्ठा किया है। ऐसी जद्दोजहद गांधोजीकी रहनुमाईमे ही हो सकती

है और कमिटी इनसे प्रार्थना करती है कि वह नेतृत्व लें और मुल्कको बतावें कि उसे क्या कदम उठाने हैं।

कमिटी हिन्दुस्तानके लोगोसे अपील करती है कि वे हिम्मत और धीरजके साथ उन तमाम खतरो और मुसीबतोंका सामना करे जो निश्चय ही उनके हिस्सोंमे पड़ेगी और गांधीजीकी रहनुमाईमे एक साथ मिलकर काम करे और अनुशासनमे रहनेवाले आजादीके सिपाहियोकी तरह उनकी हिदायतोंका पालन करे। उन्हें याद रखना चाहिये कि अहिसा इस आन्दोलनका आधार है। ऐसा वक्त आ सकता है जब हिदायतोका देना नामुमकिन हो जाय, या हिदायते जनता तक न पहुँच सकें और कोई कांग्रेस कमेटी काम न कर सके। जब हालत ऐसी हो जाय तब हर मर्द और औरतको जो इस आन्दोलनमे हिस्सा ले रहा है यह लाजिम हो जाता है कि वह अपनी हिदायत खुद करे, और जो आम हिदायते दी जा चुकी है उनके मुताबिक अमल करे। हर हिन्दुस्तानी जो आजादी चाहता है और उसके लिए कोशिश करता है वह खुद अपना रहनुमा बन जायेगा और उसकी आत्मा ही उसे उस कठिन रास्तेपर आगे बढ़नेको मजबूर करेगी जहाँ कोई आरामगाह नहीं है और जो अन्तमे हिन्दुस्तानको आजादी और मुक्तिकी आखिरी मंजिल तक पहुँचाता है।

आखिरी बात यह है कि हालांकि ए० आई० सी० सी० ने आजाद हिन्दुस्तानके भावी विधानके बारेमे अपनी जाती राय जाहिर कर दी है तो भी वह इस बातको सबपर बिलकुल साफ कर देना चाहती कि सामूहिक लड़ाई शुरू करके उसका इरादा कांग्रेसके लिये ताकत हासिल करनेका नहीं है। जब कभी ताकत हासिल होगी वह हिन्दुस्तानकी तमाम जनताकी मिल्कियत होगी।

नक्शेमें देखिये—

जिलाका नाम	नक्शेमें नम्बर	थाना या स्थानका नाम	जिलाका नाम	नक्शेमें नम्बर	थाना या स्थानका नाम
चम्पारण	१	गोविन्दगंज	मुजफ्फरपुर	२४	कटरा
,,	२	घोड़ासाहन	,,	२५	पारु
,,	३	बेतिया	,,	२६	साहबगंज
,,	४	आदापुर	,,	२७	सोनबरसा
सारन	५	दिघवाडा	,,	२८	बैरगनिया
,,	६	परसा	,,	२९	शिवहर
,,	७	मशरक	,,	३०	बेलसंड
,,	८	मढौडा	,,	३१	पुपरी
,,	९	गरखा	दरभंगा	३२	मधुबनी
,,	१०	एकमा	,,	३३	बेनीपट्टी
,,	११	सीसवना	,,	३४	सिघिया
,,	१२	महाराजगंज	,,	३५	बहेडा
,,	१३	सिवान	,,	३६	झंझारपुर
,,	१४	ठेपहा	,,	३७	मधेपुर
,,	१५	दाउदपुर	,,	३८	फुलपरास
,,	१६	सोनपुर	,,	३९	लौकही
मुजफ्फरपुर	१७	महना	,,	४०	जयनगर
,,	१८	लालगंज	,,	४१	खजौली
,	१९	विदुपुर	,,	४२	लहेरिया सराय
,	२०	पातेपुर	,,	४३	जाले
,,	२१	राघोपुर	,,	४४	दलसिंग सराय
,,	२२	मानापुर	,,	४५	समस्तीपुर
,,	२३	सकरा	,,	१२५	विरौल

जिलाका नाम	नक्शेमें नम्बर	थाना या स्थानका नाम	जिलाका नाम	नक्शेमे नम्बर	थाना या स्थानका नाम
भागलपुर	४६	मधेपुरा	पूर्णिया	७३	रानीगंज
,,	४७	मुरलीगंज	,,	७४	धमदाहा
,,	४८	किसनगंज	,,	७५	पूर्णिया
,,	४९	बनगाँव	,,	७६	कुम्हरी
,,	५०	सोनवरसा	शाहाबाद	७७	आरा
,,	५१	सुपौल	,,	७८	संदेश
,,	५२	डगमारा	,,	७९	बड़हारा
,,	५३	त्रिवेणीगंज	,,	८०	पीरो
,,	५४	प्रतापगंज	,,	८१	सहार
,,	५५	भीमनगर	,,	८२	बक्सर
,,	५६	बाँका	,,	८३	राजपुर
,,	५७	अमरपुर	,,	८४	डुमराँव
,,	५८	रजौन	,,	८५	सासाराम
,,	५९	कटोरिया	,,	८६	चेनारी
,,	६०	बेलहर	,,	८७	भभुआ
,,	६१	धुरैया	,,	८८	दुर्गावती
,,	६२	पीरपैंती	पटना	८९	पटना
,,	६३	सुलतानगंज	,,	९०	पटना सिटी
,,	६४	बिहपुर	,,	९१	बिक्रम
,,	६५	गोपालपुर	,,	९२	नौबतपुर
,,	६६	नाथनगर	,,	९३	फतुहा
,,	६७	भागलपुर	,	९४	बख्तियारपुर
पूर्णिया	६८	रुपौली	,,	९५	मोकामा
,,	६९	आजमनगर	,,	९६	चण्डी
,,	७०	कदवा	,,	९७	हिलसा
,,	७१	कटिहार	,,	९८	बिहार शरीफ
,,	७२	वनमनखी	मुंगेर	९९	सूरजगढ़ा

जिलाका नाम	नक्शेमें नम्बर	थाना या स्थानका नाम
मुंगेर	१००	लखीसराय
,,	१०१	तारापुर
,,	१०२	बरहिया
,,	१०३	तेवड़ा
,,	१०४	चरियारपुर
,,	१०५	खगड़िया
,,	१०६	गोगरी
,,	१०७	चौथम
गया	१०८	गया सदर
,,	१०९	इममागंज
,,	११०	कुरथा
,,	१११	अरवल
,,	११२	कुटुम्बा
,,	११३	गोह
सथाल परगना	११४	मराँवाँ
,,	११५	सारठ
,,	११६	देवघर
सथाल परगना	११७	दुमका
,,	१२९	सिलिंगी
,,	१३०	अमरापारा
,,	१३१	बोकराबाँध
,,	१३२	चाँदवा
,,	१३३	राकशी
हजारीबाग	११८	हजारीबाग
,,	११९	कोडरमा
,,	१२०	डोमचाँच
मानभूमि	१२१	पटमदा
,,	१२२	मान बाजार
सिहभूमि	१२३	जुग सलाई
,,	१२४	गोलमुड़ी
,,	१२६	साकची
,,	१२७	विस्टोपुर
पलामू	१२८	लेस्लीगंज

सरयू नदी
गंगा नदी
सोन

आन्दोलन का क्षेत्र
थाना
जिले की सीमा
नदी

विवरण	सम्पूर्ण बिहार प्रान्तमें	चम्पारण	छपरा	मुजफ्फरपुर	दरभंगा	भागलपुर
जेल जानेवालोंकी संख्या	२३८६१	१३४८	६४६	१६७८	४००० ❀	११४२
साजायफ्ता ...	४३५६	६६३	८१६	८६१	...	४६३
नजरबन्द ...	२१४	१७	३६	३५	...	१८
जिन्हें फाँसीकी सजा हुई थी ...	२६		...	२	४	३
फाँसी लटक गये ...	७	...	...	२	...	३
छूट गये ...	१९	...	...	...	४	...
शहीदोंकी संख्या ...	५६२	१५	१६	४३	४०	२५० ❀
थानोंकी संख्या ...	३६५	२०	२७	२४	२३	२६
जिन थानोंपर हमले हुए	२१६	१०	२७	२३	२१	२०
जिन थानोंपर जनता ने अधिकार किया ...	८०	२	८	१४	१०	१५
जिन स्थानोंपर गोलियाँ चलीं और मृत्यु हुई ...	८४	३	७	८	१०	१४
सामुहिक जुर्माना वसूल हुआ ...	४.२ लाख रु०	...	...	३६७२२४।≡)।	...	...

नोट :—*लगभग तादाद है। सजाकी अधिकतम लम्बाई २१ वर्ष तक गई है। १४ वर्षसे लेकर

एक नजरमें

मुंगेर	पूर्णिया	शाहाबाद	पटना	गया	संथाल परगना	पलामू	राँची	हजारीबाग	सिंहभूम	मानभूम
३००० ❀	१६००	२५०० ❀	४००० ❀	८३५	६०० ❀	२००	२२७	७००	२०० ❀	५८२
..	...	...	...	७८६	...	...	२०३	२००	...	३३४
...	...	...	...	४६	...	...	२४	१०	...	२५
२	२	..	१३	...	...	...	...	...	...	...
२	...	...	...	...	...	...	...	...		...
..	२	...	१३	...	...	...	...	...	...	..
२८ ❀	५२	५० ❀	४१	५	१२	१	.	४	...	२
२२	०	३०	२४	३५	१८	२०	३०	३२	१३	२१
१०	२४	२८	१६	१४	१०	१	६	३	४	४
३	३	८	...	३	७	१	...	...	४	२
	८	६	६	३	३		३३	...	...	२
८६००८)	६६५००)	...	...	२६३६००)	...	...	...	७५०००)	...	...

२१ वर्ष तक सजा देना असाधारण बात न थी। १२१ आई०पी०सी० दफा बहुतसे व्यक्तियोंपर चले हैं।